



॥ श्रीः ॥ १७३५

# अमरकोशः ।

श्रीमदमरसिंहविरचितः ।



मुरादाबादवास्तव्यश्रीयुतगौडवंशावतंसभोलानाथा-  
त्मजपण्डितरामस्वरूपकृतभाषाटीकया  
शब्दानुक्रमणिकया च समेतः ।



सोऽय

खेमराज श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना  
मुम्बय्यां

( खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा छैन )

स्वर्गीये “श्रीवेङ्कटेश्वर” ( स्टीम् )-यन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।



पौष सवत् १९७०, शके १८३९.

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार “श्रीवेङ्कटेश्वर” यन्त्रालयाव्यक्षते

स्वाधीन रक्ता है



श्रीः ।

# अमरकोशस्य अकारादिक्रमेण शब्दानुक्रमणिका ।



| शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.         | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|---------------|--------|--------|--------------|--------|--------|
| अ            | अ      |        | अक्षरविन्यास  | १४६    | १६     | अग्रायी      | १३६    | २१     |
| अक्ष         | २७७    | ११     | अक्षवती       | १९५    | ४४     | अग्नि        | १४     | ५३     |
| अंश          | १८३    | ८९     | अक्षाम्रकीलक  | १५३    | ५६     | अग्निकण      | १४     | ५७     |
| अशु          | २३     | ३३     | अक्षान्ति     | ४३     | २४     | अग्निचित्    | १३४    | १२     |
| अशुक         | १२७    | ११५    | अक्षि         | { १२३  | ९३     | अग्निज्वाला  | ८८     | १२४    |
| अशुमती       | ८७     | ११५    |               | { २९०  | २२     | अग्नित्रय    | १३५    | २०     |
| अशुमत्फला    | ७६     | ११३    | अक्षिकूटक     | १५०    | ३८     | अग्निभू      | १२     | ३९     |
| अस           | १२०    | ७८     | अक्षिगत       | २०५    | ४५     | अग्निमन्य    | ७९     | ६६     |
| अंसल         | ११३    | ४४     | अक्षीव        | { ७३   | ३१     | अग्निमुखी    | ७५     | ४२     |
| अहति         | १३७    | ३०     |               | { १७५  | ४१     | अग्निशिव     | १२९    | १२४    |
| अहस्         | २८     | २३     | अक्षोट        | ७२     | २९     | अग्निशिखा    | { ८१   | ११८    |
| अकरणि        | २२७    | ३९     | अक्षौहिणी     | १५८    | ८१     |              | { ९०   | १३६    |
| अकूपार       | ४९     | १      | अखट           | २०९    | ६५     | अग्न्युत्पात | { २५   | १०     |
| अकृष्णकर्मन् | २०५    | ४६     | अखात          | ५४     | २७     |              | { २३७  | ५८     |
| अक्ष         | { ७७   | ५८     | अखिल          | २०९    | ६५     | अग्र         | { २०७  | ५८     |
|              | { १७३  | ४३     | अग            | २३१    | १९     |              | { २६३  | १८३    |
|              | { १८२  | ८६     | अगद           | ११५    | ५०     | अग्रज        | ११३    | ४३     |
|              | { १९५  | ४५     | अगदंकार       | ११६    | ५७     | अग्रजन्मन्   | १३२    | ४      |
|              | { २६८  | २२१    | अगम           | ६८     | ५      | अग्रतःसर     | १५६    | ७२     |
| अक्षत        | १७४    | ४७     | अगस्त्य       | २१     | २०     | अग्रतस्      | { २७३  | २४६    |
| अक्षदर्शक    | १४४    | ५      | अगाध          | ५२     | १५     |              | { २७६  | ७      |
| अक्षदेविन्   | १९५    | ४३     | अगार          | ६२     | ५      | अग्रमांस     | ११७    | ६४     |
| अक्षधूर्त्त  | १९५    | ४३     |               |        |        | अग्रिय       | { ११३  | ४३     |
| अक्षर        | २६०    | १८२    | अगुरु         | { ७८   | ६२     |              | { २०७  | ५८     |
| अक्षरचञ्चु   | १४५    | १५     |               | { १२९  | १२६    | अग्रीय       | २०७    | ५८     |
| अक्षरचण      | १४५    | १५     | अगुरुक्षिप्रा | ७८     | ६२     | अग्नेदिधिपु  | १०९    | २३     |





| शब्द.         | पृष्ठ.              | श्लोक.         | शब्द.       | पृष्ठ.       | श्लोक.     | शब्द.       | पृष्ठ.       | श्लोक.    |
|---------------|---------------------|----------------|-------------|--------------|------------|-------------|--------------|-----------|
| अणु           | { १६९<br>२०८        | २०<br>६२       | अतिवक्तृ    | २०३          | ३५         | अदर्शन      | २२३          | २२        |
| अड            | १०३                 | ३७             | अतिवाद      | ३६           | १४         | अदितिनन्दन  | ७            | ८         |
| अडकोश         | १२०                 | ७६             | अतिविषा     | ८४           | ९९         | अदृश्       | १७           | ६१        |
| अडज           | { ५२<br>१०२<br>२०६  | १७<br>३३<br>५१ | अतिबेल      | १६           | ६६         | अदृष्ट      | १४८          | ३०        |
| अतट           | ६६                  | ४              | अतिशक्तिता  | १६२          | १०२        | अदृष्टि     | ४६           | ३७        |
| अतर्कित       | २७६                 | ७              | अतिशय       | { १६<br>२२१  | ६६<br>११   | अद्धा       | २७७          | १२        |
| अतलस्पर्श     | ५२                  | १५             | अतिशस्त     | १३४          | ४१         | अद्भुत      | { ४२<br>४२   | १७<br>१९  |
| अतसी          | १६८                 | २०             | अतिशोभन     | २०७          | ५८         | अद्भर       | २००          | २०        |
| अति           | { २७२<br>२७५<br>२७६ | २४१<br>२<br>५  | अतिसस्कृत   | २४१          | ८०         | अद्य        | २७९          | २०        |
| अतिक्रम       | { २२६<br>२५४        | ३३<br>१५०      | अतिसर्जन    | २२५          | २८         | अद्रि       | { ६५<br>२५७  | १<br>६३   |
| अतिचरा        | ९२                  | १४६            | अतिसारकिन्  | ११६          | ५९         | अद्वयवादिन् | ८            | १४        |
| अतिच्छत्र     | ९६                  | १६७            | अतिसौरम     | ७३           | ३३         | अधम         | { २५३<br>२०७ | १४४<br>५४ |
| अतिच्छत्रा    | ९३                  | १५२            | अतीक्ष्ण    | २४४          | ९४         | अधमर्ण      | १६६          | ५         |
| अतिजव         | १५६                 | ७३             | अतीत        | २७८          | १७         | अधर         | { १२२<br>२६२ | ९०<br>१८९ |
| अतिथि         | १३८                 | ३४             | अतीतनौक     | ५१           | १४         | अधरेद्युस्  | २७९          | २१        |
| अतिनिर्हारिन् | ३१                  | १०             | अतीन्द्रिय  | २११          | ७९         | अधस्        | ४६           | १         |
| अतिनु         | ५१                  | १४             | अतीव        | २७५          | २          | अधामार्गव   | ८२           | ८८        |
| अतिपथिन्      | ६१                  | १६             | अत्तिका     | ४१           | १५         | अधिक        | १८१          | ८०        |
| अतिपात        | { १३९<br>२२६        | ३७<br>३३       | अत्यन्तकोपन | २०२          | ३२         | अधिकर्द्धि  | १९८          | ११        |
| अतिप्रसिद्ध   | २६७                 | २१८            | अत्यन्तीन   | १५७          | ७६         | अधिकाग      | १५५          | ६३        |
| अतिमात्र      | १६                  | ६७             | अत्यय       | { १६४<br>२५४ | ११६<br>१५० | अधिकार      | १४८          | ३१        |
| अतिमुक्त      | ८०                  | ७२             | अत्यर्थ     | १६           | ६६         | अधिकृत      | १४४          | ६         |
| अतिमुक्तक     | ७२                  | २६             | अत्यल्प     | २०८          | ६२         | अधिक्षित    | २०५          | ४२        |
| आतोरिक्त      | २१०                 | ७५             | अत्याहित    | २२४          | ७७         | अधित्यका    | ६७           | ७         |
|               |                     |                | अत्रि       | २२           | २७         | अधिप        | १९८          | ११        |
|               |                     |                | अथ          | २७३          | २४७        | अधिभू       | १९८          | ११        |
|               |                     |                | अथो         | २७३          | २४७        |             |              |           |
|               |                     |                | अदञ्ज       | २०८          | ६३         |             |              |           |

| शब्द         | पृ.   | श्लोक | शब्द         | पृ.   | श्लोक | शब्द        | पृ.   | श्लोक |
|--------------|-------|-------|--------------|-------|-------|-------------|-------|-------|
| अप्रेतर      | १५६   | ७९    | अंगुष्मिन्ना | १२६   | १०८   | अभिनपथा     | १     | १९    |
| अप्य         | २०७   | ५८    | अंगुली       | १२१   | ८२    | अभिनवोनि    | ९८    | ८     |
| अप्य         | { २८  | २३    | अंगुलीवक     | १२६   | १०७   | अभिर        | { ६४  | १३    |
|              | { २३२ | २७    | अंगुष्ठ      | १२१   | ८२    |             | { २६० | १८१   |
| अपमर्षज      | १४१   | ४७    | अजि          | १२९   | ७१    | अभिज्ञ      | २१    | ७२    |
| अप्पमा       | १७८   | ६७    | अभिनामक      | ६९    | १२    | अभिज्ञय     | १५९   | ८६    |
| अंक          | { २   | १७    | अभिपरीक्षा   | ८३    | ९२    | अभ्युक्ता   | ४१    | ११    |
|              | { २२८ | ४     | अर्कडी       | १७९   | ७     | अभ्युत्थ    | ८९    | १२७   |
| अंकुर        | ६८    | ४     | अपक          | ६५    | १     | अभ          | { २३  | ३८    |
| अंकुश        | १५१   | ४१    | अवका         | ५८    | २     |             | { २०६ | ४८    |
| अकांट        | ७२    | २९    | अभिज्ञय      | २६९   | २२५   | अक्षाम      | ३१    | ७     |
| अकम्प        | ३९    | ५     | अभ्य         | ५२    | १४    | अभिषि       | २१५   | ९८    |
| अम           | { ११८ | ७     | अभ्यमत्त     | ९७    | ४     | अभिन        | १८    | ३     |
|              | { १७६ | ७     | अभ्युत्थ     | ८     | १९    | अभिनकेयी    | ८९    | ११    |
|              | { २७९ | १९    | अभ्युत्थामज  | ९     | २३    | अभ्युत्थवती | १८    | ५     |
| अंगद         | १२६   | १०७   | अभ           | { १८  | ७६    | अभक्ति      | १२१   | ८५    |
| अंगण         | ६४    | १३    |              | { २११ | ६     | अभय         | { २७५ | २     |
| अंगना        | { १८  | ५     | अभयगणिका     | ९१    | ११९   |             | { २७७ | १२    |
|              | { १५  | ३     | अभयगर        | ४७    | ५     | अटनी        | १५९   | ८४    |
| अंगविधेय     | ४१    | १६    | अभयव         | ११    | १५    | अटस्थ       | ८५    | १३    |
| अंगवर्तस्कार | १२८   | १२१   | अभयव         | ११    | १५    | अटनी        | ६७    | १     |
| अंगवहार      | ४१    | १६    | अभयव         | ११    | १५    | अटनी        | ११८   | १५    |
| अंगार        | १७१   | ३     | अभयव         | ११    | १५    | अटनी        | { ६४  | १२    |
| अंगारक       | २२    | २५    | अभयव         | ११    | १५    |             | { २५  | १११   |
| अंगारबानिका  | १७१   | २९    | अभयव         | ११    | १५    | अपक         | २७    | ५४    |
| अंगारवल्ली   | ७६    | ४८    | अभयव         | ११    | १५    | अपम्य       | १६६   | ७     |
| अंगारवल्ली   | ८३    |       | अभयव         | ११    | १५    | अपि         | १५३   | ५६    |
| अंगारवल्ली   | १७१   | २९    | अभयव         | ११    | १५    | अभिमत       | ११    | १६    |
| अंगीकार      | १०    | ५     | अभयव         | ११    | १५    | अभयव        | २०८   | ६९    |
| अंगीकृत      | २१७   | १८    | अभयव         | ११    | १५    |             |       |       |
| अंगीकृत      | १८३   | ८५    | अभयव         | ११    | १५    |             |       |       |

| शब्द.         | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------|--------|--------|-------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| अणु           | { १६९  | २०     | अतिवक्तृ    | २०३    | ३५     | अदर्शन      | २२३    | २२     |
|               | { २०८  | ६२     | अतिवाद      | ३६     | १४     | अदितिनन्दन  | ७      | ८      |
| अङ्ग          | १०३    | ३७     | अतिविषा     | ८४     | ९९     | अदृश        | १७     | ६१     |
| अङ्गकोश       | १२०    | ७६     | अतिवेल      | १६     | ६६     | अदृष्ट      | १४८    | ३०     |
|               | { ५२   | १७     | अतिशक्तिता  | १६२    | १०२    | अदृष्टि     | ४६     | ३७     |
| अङ्गज         | { १०२  | ३३     | अतिशय       | { १६   | ६६     | अद्धा       | २७७    | १२     |
|               | { २०६  | ५१     |             | { २२१  | ११     | अद्भुत      | { ४२   | १७     |
| अतट           | ६६     | ४      | अतिशस्त     | १३४    | ४१     |             | { ४२   | १९     |
| अतर्कित       | २७६    | ७      | अतिशोभन     | २०७    | ५८     | अद्भार      | २००    | २०     |
| अतलस्पर्श     | ५२     | १५     | अतिसंस्कृत  | २४१    | ८०     | अद्य        | २७९    | २०     |
| अतसी          | १६८    | २०     | अतिसर्जन    | २२५    | २८     | आदि         | { ६५   | १      |
|               | { २७२  | २४१    | अतिसारकिन्  | ११६    | ५९     |             | { २५७  | ६३     |
| अति           | { २७५  | २      | अतिसौरभ     | ७३     | ३३     | अद्वयवादिन् | ८      | १४     |
|               | { २७६  | ५      | अतीक्ष्ण    | २४४    | ९४     | अघम         | { २५३  | १४४    |
| अतिक्रम       | { २२६  | ३३     | अतीत        | २७८    | १७     |             | { २०७  | ५४     |
|               | { २५४  | १५०    | अतीतनौक     | ५१     | १४     | अघमर्ण      | १६६    | ५      |
| अतिचरा        | ९२     | १४६    | अतीन्द्रिय  | २११    | ७९     | अधर         | { १२२  | ९०     |
| अतिच्छत्र     | ९६     | १६७    | अतीव        | २७५    | २      |             | { २६२  | १८९    |
| अतिच्छत्रा    | ९३     | १५२    | अत्तिका     | ४१     | १५     | अघरेद्युस्  | २७९    | २१     |
| अतिजव         | १५६    | ७३     | अत्यन्तकोपन | २०२    | ३२     | अधस्        | ४६     | १      |
| अतिथि         | १३८    | ३४     | अत्यन्तीन   | १५७    | ७६     | अधामार्गव   | ८२     | ८८     |
| अतिनिर्हारिन् | ३१     | १०     | अत्यय       | { १६४  | ११६    | अधिक        | १८१    | ८०     |
| अतिनु         | ५१     | १४     |             | { २५४  | १५०    | अधिकर्द्धि  | १९८    | ११     |
| अतिपथिन्      | ६१     | १६     | अत्यर्थ     | १६     | ६६     | अधिकाग      | १५५    | ६३     |
| अतिपात        | { १३९  | ३७     | अत्यल्प     | २०८    | ६२     | अधिकार      | १४८    | ३१     |
|               | { २२६  | ३३     | अत्याहित    | २२४    | ७७     | अधिकृत      | १४४    | ६      |
| अतिप्रसिद्ध   | २६७    | २१८    | अत्रि       | २२     | २७     | अधीक्षत     | २०५    | ४२     |
| अतिमात्र      | १६     | ६७     | अथ          | २७३    | २४७    | अधित्यका    | ६७     | ७      |
| अतिमुक्त      | ८०     | ७२     | अथो         | २७३    | २४७    | अधिप        | १९८    | ११     |
| अतिमुक्तक     | ७२     | २६     | अदभ्य       | २०८    | ६३     | अधिभू       | १९८    | ११     |
| अतिरिक्त      | २१०    | ७५     |             |        |        |             |        |        |

| शब्द.     | पृष्ठ     | श्लोक | शब्द          | पृष्ठ    | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ.    | श्लोक |
|-----------|-----------|-------|---------------|----------|-------|-----------|-----------|-------|
| अभिरोहिणी | ६५        | १८    | अनञ्ज         | ५२       | १४    | अनिष्ट    | { ७ १०    |       |
| अभिवासन   | १३१       | १३४   | अनङ्ग         | १७७      | ६०    |           | { १५ ६२   |       |
| अभिविधा   | १ ५       | ७     |               | { १७ १   |       | अनिष्ट    | १६        | ६५    |
| अभिभ्रयणी | १७१       | २९    | अनन्त         | { ४७ ४   |       | अमीक      | { १५७ ७८  |       |
| अभिधान    | २४९       | १३६   |               | { १४१ ८१ |       |           | { १६२ १ ४ |       |
| अभीन      | १९९       | १६    |               | { ४८ २   |       | अनीकस्थ   | १४४       | ६     |
| अभीर      | २ १       | २६    | अनन्ता        | { ८३ ९२  |       | अनीकिनी   | { १५७ ७८  |       |
| अभीश्वर   | १४३       | २     |               | { ८६ ११२ |       |           | { १५८ ८१  |       |
| अधुना     | २८        | २३    |               | { ९ १२६  |       | अनु       | २७३       | ४८    |
| अधृष्ट    | २ १       | २६    |               | { ९४ १५८ |       | अनुक      | ९         | २३    |
| अधौष्ठक   | १२७       | ११७   | अकम्प्य       | ९        | ३६    | अनुकम्पा  | ४२        | १८    |
| अधौष्ठज   | ८         | २१    | अकम्प्यवृष्टि | २११      | ७९    | अनुकर्म   | १५४       | ५७    |
| अधौमुपम   | ४६        | १     | अनय           | २५४      | १४९   | अनुकल्प   | १३९       | ४     |
| अधौमुल    | २ १       | ३३    | अनर्थक        | ३७       | २     | अनुकामीन  | १५७       | ७६    |
|           | { १४४ ६   |       | अनल           | १४       | ५४    | अनुकार    | २२९       | १७    |
| अप्यस     | { २६९ २२५ |       | अनवधानता      | ४४       | ३     | अनुक्रम   | १३८       | ३६    |
| अप्यवताव  | ४४        | २९    | अनवरत         | १६       | ६६    | अनुकोद्य  | ४२        | १८    |
| अप्यात्म  | २५३       | १४४   | अनवरत्न       | २ ७      | ५६    | अनुग      | १११       | ७८    |
| अप्यास्क  | १३३       | ७     | अनवरूप्य      | २ ७      | ५७    | अनुग्रह   | २२१       | १३    |
| अप्याहार  | ३         | ३     | अनष्ट         | १५३      | ५२    | अनुभर     | २५६       | ७१    |
| अप्यूता   | १ ५       | ७     | अनागतताय      | १ ६      | ८     | अनुज      | ११६       | ४३    |
| अप्येवना  | १३८       | ३२    | अनातन         | २५६      | १५७   | अनुजीविन् | १४४       | ९     |
| अप्यग     | १४६       | १७    | अनादर         | ४३       | २२    | अनुवपन    | १९५       | ४३    |
| अप्यन्    | ६१        | १५    | अनामय         | ११४      | ५     |           |           |       |
| अप्यनीम   | १४६       | १७    | अनायिका       | १२१      | ८९    | अनुताप    | { ४३ २५   |       |
| अप्यम्य   | १४६       | १७    | अनायासकृत्    | २१४      | ९४    |           | { २५४ १४८ |       |
| अप्यर     | १३८       | १३    | अनारत         | १६       | ६५    | अनुत्तम   | २ ७       | ५७    |
| अप्यर्धु  | १३५       | १७    | अनार्यविष्ट   | ९२       | १४३   | अनुत्तर   | २६२       | १९    |
| अनघर      | ७         | २१    | अनाहत         | १२७      | ११२   | अनुनय     | २७९       | १८    |
| अर्भग     | ९         | ३५    | अनिमित्त      | २१७      | २१८   | अनुरह     | २११       | ७८    |
|           |           |       | आतक           | ९        | २७    | अनुवादीना | १९२       | ३     |

| शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.          | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.         | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|----------------|--------|--------|---------------|--------|--------|
| अनुपमा     | १८     | ४      | अन्तःपुर       | ६३     | ११     | अन्दुक        | १५१    | ४१     |
| अनुप्लव    | १५६    | ७१     | अन्तक          | १४     | ५९     | अन्ध          | { ११७  | ६१     |
| अनुबन्ध    | २४४    | ९८     | अन्तर          | २६१    | १८७    |               | { २४५  | १००    |
| अनुबोध     | १२८    | १२२    | अन्तरा         | २७७    | १०     | अन्धकारिपु    | १०     | ३४     |
| अनुभव      | २२४    | २७     | अन्तराभवसत्त्व | २५१    | १३३    | अन्धकार       | ४६     | ३      |
| अनुभाव     | { ४३   | २१     | अन्तराय        | २२३    | १९     | अन्धतमस्      | ४६     | ३      |
|            | { २६६  | २०९    | अन्तराल        | १८     | ६      | अन्धस्        | १७५    | ४८     |
| अनुमती     | २५     | ८      | अन्तारिक्ष     | १७     | १      | अन्धु         | ५४     | २६     |
| अनुयोग     | ३५     | १०     | अन्तरीप        | ५०     | ८      |               | { १७५  | ४८     |
| अनुरोध     | १४५    | १२     | अन्तरीय        | १२७    | ११७    | अन्न          | { २१८  | १११    |
| अनुलाप     | ३६     | १६     | अन्तरे         | २७७    | १०     | अन्य          | २१२    | ८२     |
| अनुलेपन    | २९१    | २३     | अन्तरेण        | { २७५  | ३      | अन्यतर        | २१२    | ८२     |
| अनुवर्त्तन | १४५    | १२     |                | { २७७  | १०     | अन्यतरेद्युस् | २७९    | २१     |
| अनुवाक     | २८८    | १७     | अन्तर्गत       | २१२    | ८६     | अन्येद्युस्   | २७९    | २१     |
| अनुशय      | २५४    | १४७    | अन्तर्धा       | १९     | १२     | अन्वक्        | २११    | ७८     |
| अनुष्ण     | १९०    | १८     | अन्तर्धि       | १९     | १२     | अन्वक्ष       | २११    | ७८     |
| अनुहार     | २२२    | १७     | अन्तर्द्वार    | ६४     | १४     | अन्वय         | १३२    | १      |
| अनूक       | २३०    | १३     | अन्तर्मनस्     | १९७    | ८      | अन्ववाय       | १३२    | १      |
| अनूचान     | १३३    | १०     | अन्तर्वल्ली    | १०९    | २२     | अन्वाहार्य    | १३७    | ३१     |
| अनूनक      | २०९    | ६५     | अन्तर्वाणि     | १९७    | ६      | अन्विष्ट      | २१७    | १०५    |
| अनूप       | ६०     | १०     | अन्तर्वांशिक   | १४४    | ८      | अन्वेषणा      | १३७    | ३२     |
| अनूरु      | २३     | ३२     | अन्तावसायेन्   | १८८    | १०     | अन्वेषित      | २१७    | १०५    |
| अनृशु      | २०५    | ४६     | अन्तिक         | २०९    | ६७     | अप् ( आप् )   | ४९     | ३      |
| अनृत       | { ३७   | २१     | अन्तिकतम       | २०९    | ६८     | अपकारगी       | ३६     | १४     |
|            | { १६५  | २      | अन्तिकाश्रय    | २२३    | १९     | अपक्रम        | १६४    | १११    |
| अनेकप      | १४९    | ३४     | अन्तिका        | १७१    | २९     | अपघन          | ११८    | ७०     |
| अनेहस्     | २४     | १      | अन्तेवासिन्    | { १३४  | ११     | अपचय          | २२२    | १६     |
| अनोकह      | ६८     | ५      |                | { १९०  | २०     | अपचायित       | २१६    | १०१    |
| अन्त       | { १६४  | ११६    | अन्त्य         | २११    | ८१     | अपचित         | २१६    | १०१    |
|            | { २११  | ८१     | अन्न           | ११८    | ६६     |               |        |        |

| शब्द.        | पृष्ठ     | श्लोक | शब्द.     | पृष्ठ    | श्लोक | शब्द.     | पृष्ठ     | श्लोक |
|--------------|-----------|-------|-----------|----------|-------|-----------|-----------|-------|
| अपचिदि       | { १३८ ३४  |       | अपघात     | १३३      | २     | अप्सरस्   | { ७ ११    |       |
|              | { २३९ ६७  |       | अपघु      | २१२      | ८४    |           | { १३ ५२   |       |
| अपह          | ११३       | ५८    | अपहृ      | १९       | १६    | अफल       | ६८        | ७     |
| अपहव         | ११        | २८    | अपहर्ष    | १९       | १३    | अवह       | ३७        | २०    |
| अपहपा        | ४३        | २३    | अपहस्य    | २१२      | ८४    | अवयमुक्त  | २०३       | ३६    |
| अपहपिण्ड     | २ १       | २८    | अपहस्कर   | १८१      | ५५    | अवका      | १०४       | २     |
| अपहव         | ३१        | १७    | अपहस्ता   | १९९      | १९    | अवाज      | २१२       | ८३    |
| अपहिन्       | ३१        | १७    | अपहार     | २२२      | १६    | अव्य      | { १९ १४   |       |
| अपहान्तर     | २ ९       | ६८    | अपापति    | ४९       | २     |           | { २३३ ३२  |       |
| अपदिश        | १८        | ५     |           |          |       | अव्यवोति  | ८         | १७    |
| अपदेश        | { ४५ ३३   |       | अपात      | { १२३ ९४ |       |           | { २७ २०   |       |
|              | { २३७ २१६ |       |           | { २३१ २१ |       | अव्य      | { २४३ ८८  |       |
| अपहस्त       | २ ४       | ३९    | अपान      | { १५ ६३  |       |           | { २१३ १४६ |       |
| अपहेश        | ३३        | २     |           | { ११९ ७३ |       | अव्य      | { ४९ १    |       |
| अपयान        | १६४       | ११    | अपामार्ग  | ८९       | ८८    |           | { २४५ १ १ |       |
| अपरस्पर      | २१८       | १     | अपावृत्त  | १९९      | १५    | अव्यवक    | १८५       | १०५   |
| अपरामिता     | { ८५ १ ४  |       | अपाचन     | १६४      | ११३   | अव्यव्य   | ४१        | १४    |
|              | { ९३ १४९  |       | अपि       | २७३      | २४९   | अमन       | ९५        | १६४   |
| अपरारुपुस्तक | १५३       | ६८    | अपिबान    | १९       | १३    | अभया      | ७७        | ५९    |
| अपराध        | १४८       | २६    | अपिनद     | १५५      | ३५    | अभाषण     | १३८       | ३६    |
| अपराह        | २४        | ३     | अपूप      | १७४      | ४८    | अभिक      | २ ०       | २४    |
| अपरपुसु      | २७९       | २०    | अपीर्मह   | ११३      | ४३    | अभिक्रम   | १६१       | ९६    |
| अपरा         | ११        | ३७    | अप्यति    | १५       | ६१    | अभिरुप्य  | २५५       | १५६   |
| अपकाय        | ३६        | १७    | अपिष्ट    | १४       | ५३    | अभिग्रह   | २२१       | १३    |
| अपवर्ग       | ११        | ७     | अप्रकाण्ड | ६८       | ९     | अभियज्ञ   | २२२       | १७    |
| अपवजन        | १३७       | ३     | अप्रगुज   | २१       | ७२    | अभिधातिन् | १४५       | ११    |
| अपवाद        | { ३६ १३   |       | अप्रत्यय  | २११      | ७०    | अभिचार    | १५३       | ७१    |
|              | { १४३ ८९  |       | अप्रधान   | २०८      | ६     | अभिचार    | २२३       | १९    |
| अपारण        | { १९ १२   |       | अप्रहत    | ५९       | ५     | अभिजन     | { १३२ १   |       |
|              | { २४९ १२५ |       | अप्राप्त  | २७८      | ६०    |           | { २४३ १ ८ |       |

| शब्द.        | पृष्ठ.              | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ.              | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ.         | श्लोक. |
|--------------|---------------------|--------|------------|---------------------|--------|--------------|----------------|--------|
| अभिजात       | २४२                 | ८२     | अभिशाप     | ३५                  | ११     | अभ्यवकर्षण   | २२२            | १७     |
| अभिज्ञ       | १९६                 | ४      | अभिषङ्ग    | २३१                 | २४     | अभ्यवस्कन्दन | १६३            | ११०    |
| अभितसु       | { २०९ ६७<br>२७५ २५५ |        | अभिषव      | { १९४ ४२<br>१४१ ४२  |        | अभ्यवहृत     | २१८            | १११    |
| अभिधान       | ३५                  | ८      | अभिषेणन    | १६१                 | ९५     | अभ्याख्यान   | ३५             | १०     |
| अभिध्या      | ४३                  | २४     | अभिष्टुत   | २१७                 | ११०    | अभ्यागम      | १६२            | १०५    |
| अभिनय        | ४२                  | १६     | अभिसम्पात  | १६२                 | १०५    | अभ्यागारिक   | २९६            | १२     |
| अभिनव        | २११                 | ७७     | अभिसारिका  | १०६                 | १०     | अभ्यादान     | २२४            | २६     |
| अभिनवोद्भिद  | ६८                  | ४      | अभिहार     | { २२२ १७<br>२५८ १६८ |        | अभ्यान्त     | ११६            | ५८     |
| अभिनिर्मुक्त | १४२                 | ५५     | अभिहित     | २१७                 | १०७    | अभ्यामर्द    | १६२            | १०५    |
| अभिनिर्माण   | १६१                 | ९५     | अभीक       | २००                 | २४     | अभ्याश       | २०९            | ६७     |
| अभिनीत       | { १४७ २४<br>२४१ ८१  |        | अभीक्ष्णम् | { २७५ १<br>२७७ ११   |        | अभ्यासादन    | १६३            | ११०    |
| अभिपन्न      | २५०                 | १२८    | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अभ्युत्थान   | १३८            | ३४     |
| अभिप्राय     | २२३                 | २०     | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अभ्युदित     | १४२            | ५४     |
| अभिभूत       | २०४                 | ४०     | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अभ्युपगम     | ३०             | ५      |
| अभिमर        | २६६                 | २१४    | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अभ्युपपत्ति  | २२१            | १३     |
| अभिमान       | { ४३ २२<br>२४७ ११०  |        | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अभ्युष       | १७४            | ४७     |
| अभियोग       | २२१                 | १३     | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अभ्र         | { १७ १<br>१८ ६ |        |
| अभिरूप       | २५१                 | १३१    | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अभ्रक        | १८४            | १०७    |
| अभिलाव       | २२४                 | २४     | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अभ्रपुष्प    | ७२             | ३०     |
| अभिलाष       | ४४                  | २८     | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अभ्रमातंग    | १३             | ४६     |
| अभिलाषुक     | २००                 | २२     | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अभ्रसु       | १८             | ४      |
| अभिवादक      | २०१                 | २८     | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अभ्रमुवल्लभ  | १३             | ४६     |
| अभिवादन      | १३९                 | ४१     | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अभ्रि        | ५१             | १३     |
| अभिव्याप्ति  | २१९                 | ६      | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अभ्रिय       | १८             | ८      |
| अभिशास्त     | २०४                 | ४३     | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अभ्रेष       | १४७            | २४     |
| अभिशास्ति    | १३८                 | ३२     | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अमत्र        | १७२            | ३३     |
|              |                     |        | अभीष्ट     | { २०७ ५३<br>२१८ ११२ |        | अमर          | ७              | ७      |



| शब्द     | पृष्ठ | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ | श्लोक |
|----------|-------|-------|------------|-------|-------|------------|-------|-------|
| अमरावती  | १२    | ४५    | अम्यद्वा   | ८     | ७१    | अरपट्ट     | २८९   | १८    |
| अमर्य    | ७     | ८     |            | ८२    | ८४    | अरणि       | १३५   | १९    |
| अमरि     | ४३    | २६    |            | ९१    | १४    | अरण्य      | ३७    | १     |
| अमरपत्र  | २०२   | ३२    | अम्या      | ४१    | १४    | अरण्यानी   | ६७    | १     |
| अमरु     | १८४   | १     | अम्यिका    | ११    | ३७    | अरुणि      | १२२   | ८६    |
| अमरु     | ८९    | १२७   | अम्यु      | ४९    | ४     | अरु        | ३२    | १७    |
| अमा      | २७३   | २५    | अम्युकणा   | १९    | ११    | अरु        | ७७    | ५७    |
| अमांत    | ११३   | ४४    | अम्युज     | ७८    | ६१    | अरु        | ५७    | ३९    |
| अमात्य   | १४३   | ४     | अम्युभूत   | १८    | १७    | अरुति      | १४५   | ११    |
| अमावस्या | २५    | ८     | अम्युवैतत् | ७३    | ३०    | अरुति      | २१    | ७१    |
| अमावस्या | २५    | ८     | अम्युचरण   | ५७    | ११    | अरु        | १४५   | १     |
| अमिष     | १४५   | ११    | अम्युक्त   | २७    | २     | अरि        | ५१    | १३    |
| अमुत्र   | २७३   | ८     | अम्युक्त   | ४९    | ४     | अरि        | ७३    | ५०    |
| अमुणा    | १५    | १९४   | अम्युक्त   | ४९    | ५     | अरि        | ६३    | ८     |
| अमृग     | १३    | ४८    | अम्युक्त   | ३१    | ९     |            | ७३    | ३१    |
|          | ३१    | ६     | अम्युक्त   | ९१    | ४     |            | ७८    | ३२    |
|          | ४९    | ३     | अम्युक्त   | ९१    | १४१   |            | ९२    | १४८   |
|          | ११७   | २८    | अम्युक्त   | ८     | ७३    |            | १७५   | ५३    |
|          | १६३   | ३     | अम्युक्त   | ७५    | ४३    |            | ११०   | २     |
|          | २४    | ७३    | अम्युक्त   | २९    | २७    |            | २३३   | ३६    |
| अमृता    | ७७    | ५८    | अम्युक्त   | २३    | १३    | अरिप्रमुखा | २५    | ४४    |
|          | ७७    | ५९    |            | ३१    | १५    |            | २२    | २९    |
|          | ८२    | ८२    |            | १८४   | ९८    |            | २३    | ३२    |
| अमृतान्ध | ७     | ८     | अमृत       | १९३   | ३५    | अरुण       | ३२    | १५    |
| अमृता    | ८५    | १     | अमृत       | १३३   | ३     |            | २३३   | ४८    |
| अमृत     | १७    | १     | अमृत       | २७९   | १८    |            | ८४    | ९९    |
|          | २३    | १८१   | अमृत       | १७    | २५    | अरुण       | २१२   | ८३    |
| अमृत     | १७१   | ३     | अमृत       | २३४   | ३७    | अरुण       | ७५    | ४२    |
| अमृत     | १८७   | ३     | अमृत       | १७    | ३४    |            | २३३   | १८९   |

| शब्द.      | पृष्ठ.           | श्लोक.          | शब्द.       | पृष्ठ.       | श्लोक.     | शब्द.     | पृष्ठ.       | श्लोक.    |
|------------|------------------|-----------------|-------------|--------------|------------|-----------|--------------|-----------|
| अशोक       | २१६              | १००             | अर्थशास्त्र | ३४           | ५          | अशोभ      | ९४           | १५७       |
| अर्क       | { २२<br>२२८      | २९<br>४         | अर्थिन्     | { १४४<br>२०६ | ०<br>४९    | अशोरोगयुत | ११६          | ५९        |
| अर्कपण     | ८१               | ८१              | अर्थ्य      | { १८५<br>२५६ | १०४<br>१६० | अर्हण     | १३८          | ३४        |
| अर्कवन्धु  | ८                | १५              | अर्दना      | २१९          | ६          | अर्हित    | २१६          | १०१       |
| अर्काह     | ८१               | ८०              | अर्दित      | २१५          | ९७         | अलक       | १२३          | ९३        |
| अर्गल      | ६५               | १७              | अर्ध        | { २०<br>२०   | १६<br>१६   | अलका      | १६           | ७०        |
| अर्ध       | २३२              | २७              | अर्धचन्द्रा | ८६           | १०९        | अलक्त     | १२९          | १२५       |
| अर्घ्य     | १३८              | ३३              | अर्धनाव     | ५२           | १४         | अलक्ष्मी  | ४८           | २         |
| अर्चा      | { १३८<br>१९३     | ३५<br>३६        | अर्घरात्र   | २५           | ६          | अलगर्द    | ४७           | ५         |
| अर्चित     | { २१६<br>२४२     | १०१<br>८५       | अर्घर्चा    | २९५          | ३२         | अलकरिष्णु | { १२४<br>२०१ | १००<br>२९ |
| अर्चिस्    | { १४<br>२७०      | ५७<br>२३०       | अर्घहार     | १२५          | १०६        | अलकर्तु   | १२४          | १००       |
| अर्जक      | ८१               | ८०              | अर्घोरुक    | १२८          | ११९        | अलकर्मिण  | १९९          | १८        |
| अर्जुन     | { ३२<br>७५<br>९६ | १३<br>४५<br>१६७ | अर्घुद      | { २८९<br>२९५ | १९<br>३३   | अलकार     | १२४          | १०१       |
| अर्जुनी    | १७८              | ६७              | अर्मक       | १०३          | ३८         | अलकृत     | १२४          | १००       |
| अर्णव      | { ४९<br>२३७      | १<br>५७         | अर्म        | २९५          | ३४         | अलक्रिया  | १२४          | १०१       |
| अर्णस्     | ४९               | ४               | अर्य        | { १६५<br>२५३ | १<br>१४६   | अल्मू     | { २७४<br>२७७ | २५२<br>११ |
| अर्तन      | २२५              | ३२              | अर्यमन्     | २२           | २८         | अलर्क     | { ८१<br>१९१  | ८१<br>२२  |
| अर्ति      | २३९              | ६८              | अर्या       | १०७          | १४         | अल्स      | १९०          | १८        |
| अर्थ       | { १८३<br>२४२     | ९०<br>८६        | अर्याणि     | १०७          | १४         | अलात      | १७१          | ३०        |
| अर्थना     | { १३८<br>२१९     | ३२<br>६         | अर्यी       | १०७          | १५         | अलावू     | ९४           | १५६       |
| अर्थप्रयोग | १६६              | ४               | अर्वन्      | { १५१<br>२०७ | ४४<br>५४   | अलि       | { ९९<br>१०२  | १४<br>२९  |
|            |                  |                 | अर्वाक्     | २७८          | १६         | अलिक      | १२३          | ९२        |
|            |                  |                 | अर्शस्      | ११५          | ५४         | अलिजर     | १७१          | ३१        |
|            |                  |                 | अर्शस       | ११६          | ५९         | अलिन्     | २०२          | २९        |
|            |                  |                 |             |              |            | अलिन्द    | ६४           | १२        |
|            |                  |                 |             |              |            | अलिका     | २२९          | १२        |



| शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.           | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|------------|--------|--------|-----------------|--------|--------|
| अवासस्     | २०४    | ३९     | अश्मगर्भ   | १८३    | ९२     | असतीसुत         | ११०    | २६     |
| अवि        | { १०८  | २०     | अश्मज      | १८५    | १०४    | असन             | ७५     | ४४     |
|            | { २६५  | २०७    | अश्मन्     | ६६     | ४      | असमीक्ष्यकारिन् | १९९    | १७     |
| अविग्र     | ७९     | ६७     | अश्मन्त    | १७१    | २९     | असार            | २०७    | ५६     |
| अवित       | २१७    | १०६    | अश्मपुष्प  | ८८     | १२२    | असि             | १६०    | ८९     |
| अविद्य     | ३१     | ७      | अश्मरी     | ११६    | ५६     | असिक्ती         | १०८    | १८     |
| अविनीत     | २००    | २३     | अश्मसार    | १८४    | ९८     | असित            | ३२     | १४     |
| अविरत      | १६     | ६५     | अश्रान्त   | १६     | ६५     | असिधावक         | १८८    | ७      |
| अविलंबित   | { १५   | ६५     | अश्रि      | १६०    | ९३     | असिधेनुका       | १६०    | ९२     |
|            | { २१२  | ८३     | अश्रु      | १२३    | ९३     | असिपुत्री       | १६०    | ९२     |
| अविस्पष्ट  | ३७     | २१     | अश्लील     | ३६     | १९     | असु             | १६५    | ११९    |
| अवीचि      | ४८     | १      | अश्व       | १५१    | ४३     | असुधारण         | १६५    | ११९    |
| अवीरा      | १०६    | ११     | अश्वकर्णक  | ७५     | ४४     | असुर            | ७      | १२     |
| अवेक्षा    | २२५    | २८     | अश्वत्य    | ७१     | २१     | असूर्क्षण       | ४३     | २३     |
| अव्यक्त    | २३८    | ६२     | अश्वयुक्   | २१     | २१     | असूया           | ४३     | २४     |
| अव्यक्तराग | ३२     | १५     | अश्ववडव    | २८८    | १६     | असुगंधरा        | ११७    | ६२     |
| अव्यण्डा   | ८२     | ८६     | अश्वा      | १५२    | ४६     | असृज्           | ११७    | ६४     |
| अव्यथा     | { ७७   | ५९     | अश्वामरण   | २३५    | ४४     | असौम्यस्वर      | २०३    | ३७     |
|            | { ९२   | १४६    | अश्वारोह   | १५४    | ६०     | अस्त            | { ६६   | २      |
| अव्यय      | २९५    | ३४     | अश्विन्    | १३     | ५१     |                 | { २१३  | ८७     |
| अव्यवहित   | २०९    | ६८     | अश्विनी    | २१     | २१     | अस्तम्          | २१८    | १७     |
| अग्रनाया   | १७६    | ५४     | अश्विचीसुत | १३     | ५१     | अस्ति           | २१९    | १८     |
| अशनायिन    | २००    | २०     | अश्वीय     | १५२    | ४८     | अस्तु           | २७८    | १३     |
| अशनि       | १३     | ४७     | अपढक्षीण   | १४७    | २२     | अस्त्र          | १५८    | ८२     |
| अशि        | २१८    | १११    | अष्टापद    | { १८४  | ९५     | अस्तिन्         | १५६    | ६९     |
| अशिखी      | ११६    | ११     |            | { १९५  | ४६     | अस्थि           | ११८    | ६८     |
| अशुभ       | २९१    | २३     | अष्टीवत्   | ११९    | ७२     | अस्थिर          | २०५    | ४३     |
| अशोप       | २०९    | ६५     | असकृन्     | २७५    | १      | अस्फुटवाच्      | २०३    | ३७     |
| अशोक       | ७८     | ६४     | असती       | १०६    | १०     |                 |        |        |
| अशोकरोहिणी | ८२     | ८५     |            |        |        |                 |        |        |

| शब्द         | पृष्ठ               | श्लोक            | शब्द     | पृष्ठ        | श्लोक       | शब्द      | पृष्ठ             | श्लोक              |
|--------------|---------------------|------------------|----------|--------------|-------------|-----------|-------------------|--------------------|
| अस           | { ११७<br>१२३<br>२५७ | { ६४<br>९३<br>६४ | अह्वा    | २७५          | ७           | आख्यात    | २१७               | १ ७                |
| असप          | १५                  | ५                | आ        |              |             | आख्यायिका | २४                | ५                  |
| अज           | १२३                 | ९३               | आ (आः)   | २७२          | २४          | आगम्य     | ११८               | ३४                 |
| अलम्बज्ज     | १९९                 | १६               | आम्      | २७८          | १६          | आगम्      | { १४८<br>२७       | { २६<br>२३         |
| अलम्ब        | ७                   | ८                | आकम्पित  | २१२          | ८७          | आगू       | ३                 | ८                  |
| अल्लर        | २ ३                 | ६७               | आकर      | ६६           | ७           | आमीष      | १३५               | १७                 |
| अल्लाप्याय   | १४२                 | ५३               | आकय      | २६८          | २२१         | आमहम्पयिक | २६                | १४                 |
| अहस्य        | २ ६                 | ५                | आकस्य    | १२४          | ९९          | आमहामणी   | २१                | २३                 |
| अहंकार       | ४३                  | २२               | आकार     | { २२२<br>२५७ | { १५<br>१६२ | आह        | २७२               | २३०                |
| अहंकारवान्   | २ ६                 | ५०               | आकारगति  | ४५           | ६४          | आहिक      | ४२                | १६                 |
| अहन्         | २४                  | ७                | आकारण    | ६५           | ८           | आहिरव     | २१                | २४                 |
| अहमहमिका     | १६२                 | १ १              | आकाश     | १७           | २           | आचमन      | १३८               | ३६                 |
| अहम्पूर्विका | १६२                 | १                | आकीष     | २१२          | ८५          | आचाम      | १७७               | ४९                 |
| अहम्माति     | ३१                  | ७                | आकुल     | २१           | ७२          | आचार्य    | १३३               | ७                  |
| अहर्षति      | २२                  | ३                | आकृति    | २५७          | १६२         | आचार्या   | १ ७               | १४                 |
| अहर्षक       | २४                  | २                | आफन्द    | २८३          | ९           | आचार्यानी | १ ७               | १                  |
| अहत्कर       | २२                  | २८               | आकीड     | ६७           | ३           | आचित      | १८२               | ८७                 |
| अहह          | २७५                 | २५७              | आकीष     | ३६           | १५          | आच्छादन   | { १९<br>१२७<br>२४ | { १३<br>१७७<br>१२५ |
| अहार्य       | ६७                  | १                | आकीषण    | २१           | ६           | आच्छुरितक | ४७                | ३४                 |
| अहि          | { ४७<br>२७१         | { ६<br>२३८       | आधारण    | ३६           | १५          | आच्छादन   | १९१               | २३                 |
| आहित         | १४५                 | ११               | आधारणा   | ३६           | १५          | आच्छादन   | १८                | ७७                 |
| आहितगुणिका   | ४८                  | ११               | आधारित   | २ ४          | ४२          | आजानेय    | १५१               | ४४                 |
| आहिमव        | १४८                 | ९                | आशेष     | २६           | १३          | आभि       | { १६२<br>२३३      | { १ ६<br>३३        |
| आहिभुज       | २३२                 | ३                | आशेषण    | १९           | ४४          | आभीष      | १६५               | १                  |
| आरेख         | ८४                  | १ १              | आप्तु    | ८            | १७          | आभू       | ४८                | ३                  |
| आरी          | २७७                 | ९                | आप्तुमुह | ७            | ६           | आरा       | १४७               | ७६                 |
| आशेषण        | २६                  | १२               | आपेट     | १९१          | २३          |           |                   |                    |
|              |                     |                  | आपरा     | ३५           | ८           |           |                   |                    |

| शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक | शब्द.          | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द         | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|-------|----------------|--------|--------|--------------|--------|--------|
| आज्य       | १७५    | ५२    | आत्मभू         | { ८    | १६     | आनन          | १२२    | ८९     |
| आटि        | १०१    | २५    | आत्मभू         | { ९    | २६     | आनन्द        | २८     | २५     |
| आढम्बर     | { १६३  | १०८   | आत्मम्मरि      | २००    | २१     | आनन्दशु      | २८     | २५     |
|            | { १५८  | १६८   | आत्रेयी        | १०८    | २०     | आनन्दन       | २१९    | ७      |
| आढि        | १०१    | २५    | आथर्वण         | २२७    | ४३     | आनर्त        | २३८    | ६४     |
| आढक        | १८२    | ८८    | आदर्श          | १३२    | १४०    | आनाय         | ५२     | १६     |
| आढकिक      | १६७    | १०    | आदि            | २११    | ८०     | आनाय्य       | १३६    | २१     |
| आढकी       | { ९०   | १३०   | आदिकारण        | २९     | २८     | आनाह         | ११५    | ५५     |
|            | { २८३  | ७     | आदितेय         | ७      | ८      | आनुपूर्वी    | १३८    | ३६     |
| आढय        | १९८    | १०    | आदित्य         | { ७    | ८      | आन्धसिक      | १७१    | २८     |
| आणवीन      | १६६    | ७     | आदित्य         | { ७    | १०     | आन्वीक्षिकी  | ३४     | ५      |
| आतङ्क      | २२९    | १०    |                | { २२   | २८     | आपक्क        | १५०    | ४७     |
| आतघन       | २४८    | ११५   | आदिनव          | २२५    | २९     | आपगा         | ५५     | ३०     |
| आततायिन्   | २०५    | ४४    | आदृत           | २४२    | ८५     | आपण          | ६२     | २      |
| आतप        | { २३   | ३४    | आदेष्टु ( घा ) | १३३    | ७      | आपणिक        | १८०    | ७८     |
|            | { २८९  | २०    | आद्य           | २११    | ८०     | आपत्प्राप्त  | २०४    | ४२     |
| आतपत्र     | १४९    | ३२    | आद्यमाशक       | १८२    | ८५     | आपद          | १५८    | ८२     |
| आतर        | ५१     | ११    | आद्युन         | २००    | २१     | आपन्न        | २०४    | ४२     |
| आतापि      | १००    | २१    | आद्योत         | २२८    | ३      | आपन्नसत्त्वा | १०९    | २२     |
| आतिथेय     | १३८    | ३३    | आधार           | ५५     | २९     | आपमित्यक     | १६६    | ४      |
| आतिथ्य     | १३८    | ३३    | आधि            | { ४४   | २८     | आपान         | ३९४    | ४२     |
| आतुर       | ११६    | ५८    | आधि            | { २४४  | ९७     | आपीड         | १३१    | १३६    |
| आतोद्य     | ३९     | ५     | आधूत           | २१२    | ८७     | आपीन         | १७९    | ७३     |
| आत्तगर्व   | २०४    | ४०    | आधोरण          | १५४    | ५९     | आपूषिक       | { १७१  | २८     |
| आत्मगुप्ता | ८२     | ८६    | आध्यान         | ४४     | २९     |              | { २२७  | ४०     |
| आत्मघोष    | १००    | २०    | आनक            | { ४०   | ६      | आप्त         | १४५    | १३     |
| आत्मज      | ११०    | २७    | आनक            | { २२८  | ३      | आप्य         | ४९     | ५      |
| आत्मन्     | { २९   | २९    | आनकदुन्दुभि    | ९      | २२     | आप्यायन      | २४८    | ११५    |
|            | { २४७  | १०९   | आनत            | २१०    | ७०     | आप्रच्छन्न   | २२०    | ७      |
|            |        |       | आनद्ध          | ३९     | ४      | आप्रपद       | १२८    | ११९    |

| शब्द      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द     | पृष्ठ | श्लोक |
|-----------|-------|-------|-----------|-------|-------|----------|-------|-------|
| आमदीन     | १२८   | ११९   | आम्रातक   | ७२    | २७    | आरोहण    | १५    | १८    |
| आप्य      | १२८   | १२१   | आम्राष्टि | २५    | १२    | आराम     | ८     | ७४    |
| आप्याव    | १२८   | १२१   | आपत       | २५    | १९    | आरुह     | १८    | ११    |
| आरन्ध्र   | १६८   | ११    | आपतन      | ६२    | ७     | आरु      | १७    | १५    |
| आमरप      | १२४   | १     | आरति      | { १४८ | २०    | आरुह     | १७३   | १७    |
| आमापन     | ३६    | १५    |           | { २४  | ७२    | आरु      | { ४१  | १४    |
| आमास्वर   | ७     | १०    | आरुत      | १     | १६    |          | { १३२ | ३     |
| आमीर      | १७६   | ५७    | आराम      | १२७   | ११४   | आरु      | ११    | ३०    |
| आमीरपक्षी | ६५    | ७     | आरुष      | १५१   | १२    | आरुपक्षी | ८     | ८     |
| आमीरी     | १७    | ११    | आरुषिक    | १७८   | ६७    | आरुष     | १७७   | ६२    |
| आमीर      | ४     | ८     | आरुषीय    | १७८   | ६७    | आरु      | १८५   | १३    |
| आमोय      | १३१   | १३७   | आरुष्या   | १७    | ६     | आरुष     | १६४   | ११५   |
| आमगन्धर्व | ३२    | १२    | आरुष      | १३८   | १७    | आरुष     | ६२    | ५     |
| आमनस्व    | ४०    | १     | आरुष्य    | १६९   | १३    | आरुष     | ५८    | २९    |
| आमव       | ११५   | ५३    | आरुष्ट    | १८४   | ७     | आरुष     | १९    | १८    |
| आमवादिन्  | ११६   | ५८    | आरुष्य    | ७१    | ७१    | आरुष     | १८७   | ११    |
| आमक       | २९५   | ३३    | आरुनाक    | १७३   | १९    | आरुष     | १६    | १५    |
| आमक्री    | ७७    | ५७    | आरुति     | २२३   | ३७    | आरुष     | { ६   | १४    |
| आमिन्ना   | १३६   | २३    | आरुम्     | २२४   | २६    | आरुष     | { ६७  | ४     |
| आमिष      | { ११७ | ६३    | आरुष      | १८    | २३    | आरुष     | { १७  | १२    |
|           | { १६८ | १२३   | आरु       | १९३   | ३४    | आरुष     | ३     | ८     |
| आमिषादिन् | १९९   | १९    | आरुष      | २७९   | २४२   | आरुष     | ६४    | १२    |
| आनुक      | १५५   | ६५    | आरुष्य    | २४९   | १२५   | आरुषी    | २९३   | ११    |
| आमोद      | { २८  | २४    | आरुष      | ६७    | २     | आरुषी    | १८    | ८५    |
|           | { ३१  | १     | आरुषिक    | १७    | २८    | आरुष     | १७१   | ११    |
|           | { २४३ | ११    | आरुष      | ३८    | २३    | आरुष     | २२८   | ५     |
| आमोदिल    | ३५    | ११    | आरुषत     | ७१    | २४    | आरुष     | २२५   | ११    |
| आमाव      | { ३३  | ३     | आरुष      | ११४   | ५     | आरुष     | १७२   | ३३    |
|           | { ७२  | ७     | आरुष      | { १२७ | ११४   | आरुष     | ८     | ६     |
| आम        | ७३    | ३३    | आरुष      | { २११ | २१८   | आरुष     | १७    | ४     |

| शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|------------|--------|--------|------------|--------|--------|
| आवसित     | १७०    | २३     |            | १५     | ६२     | आसार       | { १९   | ११     |
| आवाप      | ५५     | २९     | आशुग       | { १५९  | ८६     |            | { १६१  | ९६     |
| आवापक     | १२६    | १०७    |            | २३१    | १९     | आसुरी      | १६९    | १९     |
| आवाल      | ५५     | २९     | आशुग्रीहि  | १६८    | १५     | आसेचनक     | २०७    | ५३     |
| आविश      | ७९     | ६७     | आशुशुक्षणि | १४     | ५५     | आस्कन्दन   | १६२    | १०४    |
| आविद्ध    | { २१०  | ७१     | आश्रय      | ४२     | १९     | आस्कन्दित  | १५२    | ४८     |
|           | { २१३  | ८७     | आश्रम      | १३२    | ४      | आस्तरण     | १५१    | ४२     |
| आविध      | १२६    | ३६     | आश्रय      | { १४६  | १८     | आस्था      | २४३    | ८८     |
| आविल      | ५२     | १४     |            | { २२१  | ११     | आस्थान     | १३४    | १५     |
| आविस्     | २७७    | १२     | आश्रयाश    | १४     | ५४     | आस्थानी    | १३४    | १५     |
| आवुक      | ४१     | १२     |            | { ३०   | ५      | आस्पद      | २४४    | ९४     |
| आवुत्त    | ४१     | १२     | आश्रव      | { २००  | २४     | आस्फोट     | ८१     | ८०     |
| आवृत्     | १३८    | ३६     |            | { २००  | २४     | आस्फोटनी   | १९३    | ३३     |
| आवृत्त    | २१३    | ९०     | आश्रुत     | २१७    | १०८    |            |        |        |
| आवेगी     | ९१     | १३७    | आश्व       | १५२    | ४८     | आस्फोटा    | { ७९   | ७०     |
| आवेशन     | ६३     | ७      | आश्वत्थ    | ७०     | १८     |            | { ८५   | १०४    |
| आवेशिक    | १३८    | ३४     | आश्वयुज्   | २७     | १७     | आस्य       | १२२    | ८९     |
| आशसितृ    | २०१    | २७     | आश्विन     | २७     | १७     | आस्या      | २२३    | २१     |
| आशसु      | २०१    | २७     | आदिबनेय    | १३     | ५१     | आसव        | २२५    | २९     |
| आशय       | २२३    | २०     | आश्वीन     | १५२    | ४७     | आहत        | { ३७   | २१     |
| आशर       | १५     | ५९     | आषाढ       | { २७   | १६     |            | { २१३  | ८८     |
| आशा       | { १७   | १      | आसक्त      | { १४०  | ४५     | आहितलक्षण  | १९७    | १०     |
|           | { १६७  | २१६    |            | १९७    | ९      | आहव        | १६२    | १०५    |
| आशितगर्जन | १७६    | ५९     | आसन        | { १३१  | १३८    | आहवनीय     | १३५    | १९     |
| आशीविष    | ४७     | ७      |            | { १४६  | १८     | आहार       | १७६    | ५६     |
| आशिसु     | २६९    | २२८    | आसना       | { १५०  | ३९     | आहाव       | ५४     | २६     |
| आशु       | { १५   | ६५     | आसन्दी     | २२३    | २१     | आह्वय      | ४८     | ९      |
|           | { १६८  | १५     | आसन्न      | २८४    | ९      | आहां       | २७६    | ५      |
|           |        |        | आसव        | २०९    | ६६     | आहोपरुषिका | १६२    | १०१    |
|           |        |        | आसादित     | १९४    | ४१     | आह्वय      | ३५     | ७      |
|           |        |        |            | २१६    | १०४    | आह्वा      | ३५     | ८      |



| शब्द      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द     | पृष्ठ | श्लोक | शब्द     | पृष्ठ | श्लोक |
|-----------|-------|-------|----------|-------|-------|----------|-------|-------|
| आम्रपरीत  | २२८   | ११    | आम्नातक  | ७२    | १७    | आरौहण    | ६५    | १८    |
| अ पस्य    | १२८   | १०१   | आर्षेडित | १५    | १२    | आर्तमत्त | ८     | ७४    |
| आप्लाव    | २२८   | १२१   | आयत      | २     | ९     | आतव      | १     | ८     |
| आवम्ब     | १६८   | १३    | आयतन     | ६२    | ७     | आद्र     | १     | ७     |
| आभरण      | १०४   | १     | आपति     | { १४८ | २     | आद्रक    | १०३   | १७    |
| आमापण     | ३६    | १५    |          | { २४  | ७२    | आर्य     | { ४१  | ११    |
| आभास्वर   | ७     | १०    | आयत      | १     | १६    |          | { १३२ | ३     |
| आमीर      | १७३   | ५७    | आयाम     | १२७   | ११४   | आया      | ११    | १७    |
| आमीरपद्मि | ६५    | ७     | आयुष     | १५८   | १२    | आयार्थि  | ५०    | ८     |
| आमीरी     | १     | ७     | आयुषिक   | १७५   | ६७    | आयुष्य   | १७७   | ६२    |
| आमीक      | ४     | ४     | आयुषीय   | १५७   | ६७    | आल       | १८७   | १     |
| आमोम      | १३१   | १३७   | आयुष्यत् | १९७   | ६     | आलम्भ    | १६४   | ११७   |
| आमयन्निवृ | ३२    | १२    | आयुष     | १३५   | १२    | आलष      | ६२    | ५     |
| आमनत्व    | ४९    | ३     | आवाफन    | १६२   | १     | आलवाछ    | ५५    | २९    |
| आमव       | ११५   | ५१    | आरकूठ    | १८४   | ९७    | आलस्य    | १९    | १८    |
| आमयाधि    | ११६   | ५८    | आरम्भ    | ७१    | २३    | आलन      | १५    | ४१    |
| आमकक      | २९५   | ३३    | आरनाक    | १७३   | ३     | आलप      | ३३    | १५    |
| आमककी     | ७७    | ५७    | आरति     | २२६   | ३७    | आलि      | { ६   | १४    |
| आमिष्ठा   | १३३   | २३    | आरम्भ    | २२४   | २६    |          | { ६७  | ४     |
| आमिप      | { ११७ | ३३    | आरव      | ३८    | २३    | आलिम्प   | { १७  | १२    |
|           | { २६८ | २२३   | आरा      | १९३   | ३४    |          | { ३९  | ७     |
| आमिवातिवृ | १     | १     | आरण      | २७२   | २४२   | आलिम्प   | ६४    | १२    |
| आमुच्छ    | १५५   | ६५    | आराधन    | २४९   | १२५   | आली      | २३३   | १९८   |
| आमीव      | { २८  | २४    | आशम      | ३७    | २     | आलीह     | १७    | ८१    |
|           | { ३१  | १     | आराधिक   | १७    | २८    | आल       | १७१   | ३१    |
|           | { ७४३ | ९१    | आराध     | ३८    | २३    | आलीक     | २२८   | २     |
| आमोहिन्   | ३२    | ११    | आरेषण    | ७१    | ७४    | आलीकन    | २२५   | ३१    |
| आम्राप    | { ३३  | २     | आरेष्य   | ११४   | ५     | आलपन     | १७०   | ३३    |
|           | { ७२  | ७     | आरोह     | { १२७ | ११४   | आशी      |       | ६     |
| आम        | ७३    | ३३    |          | { १११ | २३८   | आशति     | ३७    | ४     |

| शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|------------|--------|--------|------------|--------|--------|
| आवसित      | १७०    | २३     | आशुग       | १५     | ६२     | आसार       | १९     | ११     |
| आवाप       | ५५     | २९     |            | १५९    | ८६     |            | १६१    | ९६     |
| आवापक      | १२६    | १०७    |            | २३१    | १९     |            | १६९    | १९     |
| आवाल       | ५५     | २९     | आशुवीहि    | १६८    | १५     | आसेचनक     | २०७    | ५३     |
| आविम       | ७९     | ६७     | आशुशुक्षणि | १४     | ५५     | आस्कन्दन   | १६२    | १०४    |
| आविद्ध     | २१०    | ७१     | आश्चर्य    | ४२     | १९     | आस्कन्दित  | १५२    | ४८     |
|            | २१३    | ८७     | आश्रम      | १३२    | ४      | आस्तरण     | १५१    | ४२     |
|            | १२६    | ३६     | आश्रय      | १४६    | १८     | आस्था      | २४३    | ८८     |
| आविल       | ५२     | १४     | आश्रयाश    | १४     | ५४     | आस्थान     | १३४    | १५     |
| आविस्      | २७७    | १२     | आश्रव      | ३०     | ५      | आस्थानी    | १३४    | १५     |
| आवुक       | ४१     | १२     |            | २००    | २४     | आस्पद      | २४४    | ९४     |
| आवुत्त     | ४१     | १२     |            | २००    | २४     | आस्फोट     | ८१     | ८०     |
| आवृत्      | १३८    | ३६     | आश्रुत     | २१७    | १०८    | आस्फोटनी   | १९३    | ३३     |
| आवृत्त     | २१३    | ९०     | आश्व       | १५२    | ४८     | आस्फोटा    | ७९     | ७०     |
| आवेगी      | ९१     | १३७    | आश्वत्थ    | ७०     | १८     |            | ८५     | १०४    |
| आवेगन      | ६३     | ७      | आश्वयुज्   | २७     | १७     | आस्य       | १२२    | ८९     |
| आवेशिक     | १३८    | ३४     | आश्विन     | २७     | १७     | आस्या      | २२३    | २१     |
| आशसितृ     | २०१    | २७     | आश्विनेय   | १३     | ५१     | आस्रव      | २२५    | २९     |
| आशसु       | २०१    | २७     | आश्वीन     | १५२    | ४७     | आहत        | ३७     | २१     |
| आशय        | २२३    | २०     | आषाढ       | २७     | १६     |            | २१३    | ८८     |
| आशर        | १५     | ५९     |            | १४०    | ४५     | आहितलक्षण  | १९७    | १०     |
| आशा        | १७     | १      | आसक्त      | १९७    | ९      | आहव        | १६२    | १०५    |
|            | १६७    | २१६    | आसन        | १३१    | १३८    | आहवनीय     | १३५    | १९     |
|            | १७६    | ५९     |            | १४६    | १८     | आहार       | १७६    | ५६     |
| आशितगन्धिन | १७६    | ५९     |            | १५०    | ३९     | आहाव       | ५४     | २६     |
| आशीविष     | ४७     | ७      | आसना       | २२३    | २१     | आह्वय      | ४८     | ९      |
| आशिस्      | २२९    | २२८    | आसन्दी     | २८४    | ९      | आहां       | २७६    | ५      |
| आशु        | १५     | ६५     | आसन्न      | २०९    | ६६     | आहोपरुषिका | १६२    | १०१    |
|            | १६८    | १८     | आसव        | १९४    | ४१     | आह्वय      | ३५     | ७      |
|            |        |        | आसादित     | २१६    | १०४    | आह्वा      | ३५     | ८      |

| शब्द      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द    | पृष्ठ | श्लोक |
|-----------|-------|-------|-----------|-------|-------|---------|-------|-------|
| आम्रन्दीन | १२८   | ११९   | आम्रातक   | ७२    | २७    | आरोहण   | ६५    | १८    |
| अ पम्ब    | १२८   | १२१   | आर्द्रवित | १५    | १२    | आर्तगल  | ८     | ७४    |
| आप्यव     | १२८   | १२१   | आयत       | २९    | ६९    | आयन     | १८    | २१    |
| आवन्व     | १६८   | ११    | आयतन      | ६२    | ७     | आय      | १७    | १५    |
| आमरण      | १२४   | ११    | आयति      | { १४८ | २     | आयक     | १७३   | १७    |
| आमापण     | ३३    | १५    |           | { ७४  | ७२    | आय      | { ४१  | १६    |
| आमास्त्रि | ७     | १०    | आयत       | १९    | १६    |         | { १३२ | ३     |
| आमीर      | १७६   | ५७    | आयाम      | १२७   | ११४   | आवा     | ११    | १७    |
| आमीरपत्नी | ६५    | ७     | आयुष      | १५८   | १२    | आवावर्त | ७९    | ८     |
| आमीरी     | १७    | १३    | आयुषिक    | १५५   | ६७    | आयम्ब   | १७७   | ६२    |
| आमीक      | ४९    | ४     | आयुषीय    | १५५   | ६७    | आक      | १८८   | १३    |
| आमोम      | १३१   | १३७   | आयुष्मात् | १९७   | ६     | आकम्भ   | १६६   | ११५   |
| आमयन्विन् | ३२    | १२    | आयुष      | १३५   | १२    | आकथ     | ६२    | ७     |
| आमनत्व    | ४९    | ३     | आयुषम     | १६२   | १३    | आकम्बाक | ५८    | २९    |
| आमय       | ११५   | ५३    | आयकूट     | ११४   | ७     | आकस्य   | १     | १८    |
| आमयावैन्  | ११६   | ५८    | आयम्ब     | ७१    | २३    | आकम्भ   | १५    | ४१    |
| आमम्भ     | २९५   | ३३    | आयमाक     | १७३   | ३९    | आकाप    | ३६    | १५    |
| आमम्भकी   | ७७    | ५७    | आयति      | २२६   | ३७    |         | { ९   | १४    |
| आमिन्ता   | १३६   | २३    | आयम्भ     | २२४   | २६    | आकि     | { ६७  | ४     |
| आमिप      | { ११७ | ३३    | आयक       | ३८    | २३    |         | { ७   | १२    |
|           | { २६८ | २२३   | आय        | १९६   | ३४    | आकिम्ब  | ३०    | ५     |
| आमिषाविन् | १९    | १९    | आयात्     | २७२   | २४२   | आकिम्ब  | ६४    | १२    |
| आमुत्त    | १५५   | ६५    | आयपन      | ७४    | १२५   | आकी     | ७६३   | १०८   |
|           | { २८  | २४    | आगम       | ६७    | २     | आमीश    | १७    | ८५    |
| आमोह      | { ३१  | १     | आयकिक     | १७    | २८    | आण      | १७१   | ३१    |
|           | { २४२ | ९१    | आराक      | ३८    | २३    | आमीक    | ७२८   | ३     |
| आमहिन्    | ३७    | ११    | आरैवत     | ७१    | २४    | आरीचन   | २७५   | ३१    |
| आमाय      | { ३३  | ७     | आरीम्भ    | ११४   | ५     | आयपन    | १७२   | ३३    |
|           | { ७२  | ७     | आरीह      | { १७७ | ११८   | आयत     | ८     | ६     |
| आम        | ७३    | ३३    |           | { ७११ | २३१   | आयति    | ६७    | १     |

| शब्द.    | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------|--------|--------|------------|--------|--------|------------|--------|--------|
| आवसित    | १७०    | २३     | आशुग       | { १५   | ६२     | आसार       | { १९   | ११     |
| आवाप     | ५५     | २९     |            | { १५९  | ८६     |            | { १६१  | ९६     |
| आवापक    | १२६    | १०७    |            | { २३१  | १९     |            | { १६९  | १९     |
| आवाल     | ५५     | २९     | आशुग्रीहि  | १६८    | १५     | आसेचनक     | २०७    | ५३     |
| आविश     | ७९     | ६७     | आशुशुक्षणि | १४     | ५५     | आस्कन्दन   | १६२    | १०४    |
| आविद्ध   | { २१०  | ७१     | आश्वर्य    | ४२     | १९     | आस्कन्दित  | १५२    | ४८     |
|          | { २१३  | ८७     | आश्रम      | १३२    | ४      | आस्तरण     | १५१    | ४२     |
| आविध     | १२६    | ३६     | आश्रय      | { १४६  | १८     | आस्था      | २४३    | ८८     |
| आविल     | ५२     | १४     | आश्रयाश    | १४     | ५४     | आस्थान     | १३४    | १५     |
| आविस्    | २७७    | १२     | आश्रव      | { ३०   | ५      | आस्थानी    | १३४    | १५     |
| आवुक     | ४१     | १२     |            | { २००  | २४     | आस्पद      | २४४    | ९४     |
| आयुक्त   | ४१     | १२     |            | { २००  | २४     | आस्फोट     | ८१     | ८०     |
| आवृत्    | १३८    | ३६     | आश्रुत     | २१७    | १०८    | आस्फोटनी   | १९३    | ३३     |
| आवृत     | २१३    | ९०     | आश्व       | १५२    | ४८     | आस्फोटा    | { ७९   | ७०     |
| आवेगी    | ९१     | १३७    | आश्वत्थ    | ७०     | १८     |            | { ८५   | १०४    |
| आवेगन    | ६३     | ७      | आश्वयुज्   | २७     | १७     | आस्य       | १२२    | ८९     |
| आवेशिक   | १३८    | ३४     | आश्विन     | २७     | १७     | आस्या      | २२३    | २१     |
| आशसितृ   | २०१    | २७     | आश्विनेय   | १३     | ५१     | आसव        | २२५    | २९     |
| आशसु     | २०१    | २७     | आश्वीन     | १५२    | ४७     | आहत        | { ३७   | २१     |
| आशय      | २२३    | २०     | आषाढ       | { २७   | १६     |            | { २१३  | ८८     |
| आशर      | १५     | ५९     |            | { १४०  | ४५     | आहितलक्षण  | १९७    | १०     |
| आशा      | { १७   | १      | आसक्त      | १९७    | ९      | आहव        | १६२    | १०५    |
|          | { १६७  | २१६    | आसन        | { १३१  | १३८    | आहवनीय     | १३५    | १९     |
| आशितगवीन | १७६    | ५९     |            | { १४६  | १८     | आहार       | १७६    | ५६     |
| आशीविष   | ४७     | ७      |            | { १५०  | ३९     | आहाव       | ५४     | २६     |
| आशिस     | २६९    | २२८    | आसना       | २२३    | २१     | आहेय       | ४८     | ९      |
| आशु      | { १५   | ६५     | आसन्दी     | २८४    | ९      | आहो        | २७६    | ५      |
|          | { १६८  | १५     | आसन्न      | २०९    | ६६     | आहोपराषिका | १६२    | १०१    |
|          |        |        | आसव        | १९४    | ४१     | आह्वय      | ३५     | ७      |
|          |        |        | आसादित     | २१६    | १०४    | आह्वा      | ३५     | ८      |

| शब्द        | पृष्ठ. | श्लोक | शब्द.    | पृष्ठ | श्लोक | शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|-------|----------|-------|-------|-----------|--------|--------|
| आप्रन्दन    | १२८    | ११९   | आप्रातक  | ७२    | २७    | आरोहण     | ६५     | १८     |
| अप्य        | १२८    | १२१   | आघोषित   | १५    | १२    | आर्तगण    | ८      | ७४     |
| आप्यम       | १२८    | १२१   | आपत      | २०९   | ६९    | आतन       | १८     | २१     |
| आवन्व       | १६८    | १३    | आवतन     | ६२    | ७     | आघ्न      | १०७    | १५     |
| आभरण        | १७४    | १३    | आवति     | { १४८ | ७९    | आघ्नक     | १७३    | १७     |
| आमापण       | १३     | १५    |          | { २४  | ७२    | आर्ष      | { ४१   | १४     |
| आमास्वर     | ७      | १०    | आवत      | १९    | १६    |           | { १३२  | ३      |
| आमीर        | १७३    | ५७    | आर्षाम्  | १२७   | ११४   | आवा       | ११     | ३७     |
| आमीरपद्मि   | ६५     | ७     | आवुष     | १७८   | ८२    | आर्षावर्त | ५०     | ८      |
| आमीरी       | १७     | १३    | आवुषिक   | १७७   | ६७    | आर्षम्भ   | १७७    | ६२     |
| आमीर        | ४९     | ४     | आवुषीय   | १७७   | ६७    | आरु       | १८७    | १३     |
| आमौग        | १३१    | १३७   | आवुष्यत् | १७    | ६     | आरुम्भ    | १३४    | ११५    |
| आमगन्धिन    | ३२     | १२    | आमुत्    | १७५   | १२    | आरुष      | ६७     | ७      |
| आमनस्व      | ४९     | २     | आवाकन    | १६२   | १३    | आरुवाक    | ५५     | २९     |
| आमय         | ११५    | ५९    | आरुड     | १८४   | ७     | आरुत्व    | १      | १८     |
| आमवाधिन     | ११३    | ५८    | आरुवध    | ७९    | ७३    | आरुन      | १७०    | ४९     |
| आमक         | २९५    | ३३    | आरुनाक   | १७३   | ३९    | आरुप      | ३३     | १५     |
| आमक्री      | ७७     | ५७    | आरुति    | २२३   | ३७    |           |        |        |
| आमिष्टा     | १३३    | २३    | आरुम्भ   | २२४   | २३    | आरुि      | { ६    | १४     |
|             |        |       |          |       |       |           | { ६७   | ४      |
| आमिप        | { ११७  | ६३    | आरुव     | ३८    | २३    |           | { १७   | १२     |
|             | { २६८  | २२३   | आरा      | १९३   | ३४    | आरुम्भ    | ३      | ७      |
| आमिष्टादिन् | १९     | १९    | आरुत्    | ७७२   | २४२   | आरुदिन्   | २६     | १२     |
| आमुत्       | १५५    | ६५    | आराधन    | ७४    | १२५   | आबी       | २६३    | १०८    |
|             | { ९८   | २४    | आगम      | ६७    | २     | आबीर      | १७     | ८५     |
| आमीर        | { ३१   | १     | आराकिक   | १७९   | २८    | आत        | १७१    | ३९     |
|             | { ५४३  | ९१    | आराव     | ३८    | २३    | आरुको     | २०८    | ३      |
| आमादिम्     | ३९     | ११    | आरेवत    | ७१    | २४    | आर्षाकन   | २२५    | ३१     |
| आप्राय      | { ३३   | २     | आरीव्य   | ११४   | ५     | आवपन      | १०२    | ३३     |
|             | { ७९   | ७     |          |       |       |           |        |        |
| आप्रा       | ७३     | २३    | आरीर     | { १७७ | ११४   | आवत       | ७      | ६      |
|             |        |       |          | { २७९ | १३८   | आरति      | ६७     | ६      |

| शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.    | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|----------|--------|--------|--------------|--------|--------|
| ईषिका        | { १५०  | ३८     | उज्ज्वल  | ४२     | १७     | उत्तरेद्युस् | २७९    | २०     |
|              | { १९३  | ३२     | उटज      | ६२     | ६      | उत्तान       | ५२     | १५     |
| ईहा          | ४४     | २७     | उडु      | २१     | २१     | उत्तानशय     | ११२    | ४१     |
| इहामृग       | १०८    | ७      | उडुप     | ५१     | ११     | उत्थान       | १४८    | ११८    |
|              | उ      |        | उड्डीन   | १०३    | ३७     | उत्थित       | २४२    | ८५     |
| उ            | २७९    | १८     |          | { २१६  | १०१    | उत्पत्तितृ   | २०१    | २९     |
| उक्त         | २१७    | १०७    | उत       | { २७२  | २४३    | उत्पत्ति     | २९     | ३०     |
| उक्ति        | ३३     | १      |          | { २७६  | ५      | उत्पत्तिष्णु | २०१    | २९     |
| उक्थ         | २९४    | ३०     | उताहो    | २७६    | ५      | उत्पन्न      | २४२    | ८५     |
| उक्षन्       | १७७    | ५९     | उत्क     | १९७    | ८      | उत्पल        | { ५६   | ३७     |
| उखा          | १७१    | ३१     | उत्कट    | { ९०   | १३४    |              | { ८९   | १२६    |
| उख्य         | १७४    | ४५     |          | { २००  | २३     | उत्पलशारिवा  | ८६     | ११२    |
|              | { १०   | ३२     | उत्कण्ठा | ४४     | २९     | उत्पात       | १६३    | १०९    |
| उग्र         | { ४२   | २०     | उत्कर    | १०४    | ४२     | उत्फुल्ल     | ६८     | ७      |
|              | { १८७  | २      | उत्कर्ष  | २२१    | ११     | उत्स         | ६६     | ५      |
| उग्रगन्धा    | { ८५   | १०२    | उत्कलिका | ४४     | २९     | उत्सर्जन     | १३७    | २९     |
|              | { ९२   | १४५    | उत्कार   | २२६    | ३६     | उत्सव        | { ४६   | ३८     |
| उच्च         | २०९    | ७०     | उत्क्रोश | १०१    | २३     |              | { २६६  | २०९    |
| उच्चटा       | ९५     | १६०    | उत्त     | २१७    | १०५    | उत्सादन      | १२८    | १२१    |
| उच्चण्ड      | २१२    | ८३     | उत्तस    | २६९    | २२७    | उत्साह       | { ४४   | २९     |
| उच्चार       | ११८    | ६७     | उत्तत    | ११७    | ६३     |              | { १४६  | १९     |
| उच्चावच      | २१२    | ८३     | उत्तम    | २०७    | ५७     | उत्साहन      | २४८    | ११५    |
| उच्चैःश्रवस् | १२     | ४५     | उत्तमर्ण | १६६    | ५      | उत्साहवर्धन  | ४२     | १८     |
| उच्चैर्षुष्ट | ३५     | १२     | उत्तमा   | १०५    | ४      | उत्सुक       | १९७    | ९      |
| उच्चैस्      | २७८    | १७     | उत्तमाग  | १२३    | ९५     | उत्सृष्ट     | २१७    | १०७    |
| उच्छ्रय      | ६९     | १०     | उत्तर    | { ३५   | १०     | उत्सेध       | { ६९   | १०     |
| उच्छ्राय     | ६९     | १०     |          | { २६२  | १९०    |              | { २४४  | ९६     |
| उच्छित       | { २०९  | ७०     | उत्तरा   | १७     | २      | उदक्         | २८०    | २३     |
|              | { २४२  | ८५     | उत्तरासग | १२८    | ११७    | उदक          | ४९     | ४      |
| उच्चासन      | १६४    | ११५    | उत्तरीय  | १२८    | ११८    | उदक्या       | १०८    | २१     |

| शब्द      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ | श्लोक |
|-----------|-------|-------|------------|-------|-------|-----------|-------|-------|
| आदान      | २५    | ८     | हस्तीवरी   | ८४    | २०    | हृत्कापय  | ११    | ११५   |
|           | ३     |       | हन्तु      | १९    | १३    | हृत्गन्ध  | ३२    | ११    |
| हनु       | १५    | १३३   | हन्त्र     | १२    | ४१    | हृत्पौष्ट | १९७   | ९     |
|           | ८४    | ९८    |            | १७    | २     | हृत्ति    | २३४   | १९    |
| हृत्गन्ध  | ८५    | १४    | हन्त्रा    | ७५    | ४५    | हृत्पात   | १५९   | ८३    |
|           | ८६    | १     | हन्त्रा    | ७९    | ६७    |           |       |       |
|           | ९८    | १६३   | हन्त्रावली | ९४    | १८६   | हृत्पण    | १२३   | ९३    |
| हन्तर     | ८५    | १४    | हन्त्रावली | ७९    | ६     |           | २२५   | ११    |
| हन्त्रा   | ९४    | १५९   | हन्त्रावली | ७९    | ६८    | हृत्पणिका | १८    | २     |
|           | २१    | ७४    | हन्त्रावली | ११    | ६६    | हृत्पित्त | २१७   | ११    |
| हन्त्रा   | २२२   | १५    | हन्त्रावली | १२    | ४८    | हृत्पित्त | २३९   | ६८    |
| हन्त्रा   | २२७   | १५    | हन्त्रावली | १९    | १     | हृत्पित्त | २३७   | ५७    |
| हृत्पित्त | १४    | ४६    | हन्त्रावली | ७     | १६    | हृत्पित्त | २१३   | ८७    |
| हृत्पित्त | ४४    | २७    | हन्त्रावली | ८     | २     | हृत्पित्त | ११५   | ५४    |
| हृत्पित्त | १६    | ९     | हन्त्रावली | २१    | ८     | हृत्पित्त | ६     | १५५   |
| हृत्पित्त | १३३   | ८     | हन्त्रावली | ११७   | ६२    | हृत्पित्त | ८३    | ७४    |
| हृत्पित्त | १७७   | ६२    | हन्त्रावली | ३१    | ८     | हृत्पित्त | १६०   | १     |
| हृत्पित्त | २३५   | ४९    | हन्त्रावली | ६९    | १३    | हृत्पित्त | २१७   | १     |
|           | १६    | १६    | हन्त्रावली | १४    | ३५    | हृत्पित्त | १९    | १     |
| हन्तर     | २१२   | ८२    | हन्त्रावली | १८    | १     | हृत्पित्त | १     | १     |
|           | २६७   | १३    | हन्त्रावली | १०    | १     | हृत्पित्त | १७    | १     |
| हृत्पित्त | ७७    | २१    | हन्त्रावली | १४    | ३     | हृत्पित्त | १     | २     |
| हृत्पित्त | २७३   | १५    | हन्त्रावली | ७५    | १७३   | हृत्पित्त | ११    | ३६    |
| हृत्पित्त | १३४   | १२    | हन्त्रावली | २१    | २३    | हृत्पित्त | १८    | १७    |
| हृत्पित्त | १८    | १     | हन्त्रावली | २७७   | ९     | हृत्पित्त | १     | ३     |
| हृत्पित्त | १६    | १     | हन्त्रावली | ७७    | १७    | हृत्पित्त | १८    | १     |
| हृत्पित्त | २८    | २३    | हन्त्रावली | १५    | १७    | हृत्पित्त | ११    | ३६    |
| हृत्पित्त | १     | २३    | हन्त्रावली | ७६    | ८८    | हृत्पित्त | २७६   | ८     |
| हृत्पित्त | १७७   | १७७   | हन्त्रावली | ११३   | २८    | हृत्पित्त | २७    | १३    |
| हृत्पित्त | ५६    | १३    | हन्त्रावली | १७    | ५७    | हृत्पित्त | १६८   | १४    |

| शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.         | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|-------------|--------|--------|---------------|--------|--------|
| उपक्रम    | { १३४  | १३     | उपभृत्      | १३६    | २५     | उपसम्पन्न     | { १३६  | २६     |
|           | २२४    | १३९    | उपभोग       | २२३    | २०     |               | १७४    | ४५     |
|           | २५२    | १३९    |             | { १९३  | ३६     | उपसर          | २२४    | २५     |
| उपकोश     | ३६     | १३     | उपमा        | { १९४  | ३७     | उपसर्ग        | १६३    | १०९    |
| उपगत      | २१७    | १०९    | उपमातृ      | २५९    | १७६    | उपसर्जन       | २०८    | ६०     |
| उपगूहन    | २२५    | ३०     | उपमान       | १९३    | ३६     | उपसर्वा       | १७९    | ७०     |
| उपग्रह    | १६५    | ११९    | उपयम        | १४२    | ५६     | उपसूर्यक      | २३     | ३२     |
| उपग्राह्य | १४८    | २८     | उपयाम       | १४२    | ५६     | उपस्कर        | १७२    | ३५     |
| उपग्न     | २२३    | १९     |             | { २५   | १०     | उपस्थ         | १२०    | ७५     |
| उपचारित   | २१६    | १०२    | उपरक्त      | { २०५  | ४३     | उपस्पर्श      | १३८    | ३६     |
| उपचाध्य   | १३५    | २०     | उपरक्षण     | १४९    | ३३     | उपहार         | १४९    | २८     |
| उपचित     | २१३    | ८९     | उपराग       | २५     | ९      | उपह्वर        | २६१    | १८३    |
| उपचित्रा  | ८७     | ८७     | उपराम       | १२६    | ३७     | उपाशु         | १४७    | २३     |
| उपजाप     | १४७    | २१     | उपारि       | २६१    | १८३    | उपाकरण        | १३९    | ४०     |
| उपज्ञा    | १३४    | १३     | उपल         | ६६     | ४      | उपाकृत        | १३६    | २५     |
| उपतप्त    | २२२    | १४     | उपलब्धार्थी | ३४     | ५      | उपात्यय       | { १३९  | ३७     |
| उपताप     | ११५    | ५१     | उपलब्धि     | २९     | १      |               | २२६    | ३३     |
| उपत्यका   | ६७     | ७      | उपलम्भ      | २२४    | २७     | उपादान        | २२२    | १६     |
| उपदा      | १४८    | २८     | उपला        | २६४    | १९९    | उपाधि         | { ४४   | २८     |
| उपधा      | १४७    | २१     | उपवन        | ६७     | २      |               | १९८    | १२     |
| उपधान     | १३१    | १३७    | उपवर्त्तन   | ५९     | ८      | उपाध्याय      | १३३    | ७      |
| उपधि      | ४८     | ३०     | उपवास       | १३९    | ३८     | उपाध्याया     | १०७    | १४     |
| उपनाह     | ४०     | ७      | उपविपा      | ८४     | ९९     | उपाध्यायानी   | १०७    | १५     |
| उपनिधि    | १८१    | ८१     | उपवीत       | १४१    | ४९     | उपाध्यायी     | { १०७  | १४     |
| उपनिषद्   | २४३    | ९३     | उपशाल्य     | ६५     | २०     |               | १०७    | १५     |
| उपनिष्कर  | ६१     | १८     | उपशाय       | २२५    | ३२     | उपानह         | १९२    | ३०     |
| उपन्यास   | ३५     | ९      | उपश्रुत     | २१७    | १०९    | उपाय(चतुष्टय) | १४६    | २०     |
| उपपत्ति   | १११    | ३५     | उपस         | १२७    | ११७    | उपायन         | १४८    | २८     |
| उपवह      | १३१    | १३७    |             |        |        | उपालम्भ       | ३६     | १४     |
|           |        |        |             |        |        | उपावृत        | १५२    | ५०     |



| शब्द.         | पृष्ठ.    | श्लोक | शब्द.    | पृष्ठ. | श्लोक | शब्द.     | पृष्ठ.    | श्लोक |
|---------------|-----------|-------|----------|--------|-------|-----------|-----------|-------|
| उद्यम         | २९        | ७     | उद्यार   | २२६    | ६७    | उद्यान्त  | { १४९ १६  |       |
| उद्यम         | २६७       | २९    | उद्यीय   | २८९    | १९    |           | { २१५ ९७  |       |
| उद्यधि        | ४९        | १     | उद्युष   | २१३    | ८१    | उद्यवत    | ११४       | ११५   |
| उद्यम्य       | ६५        | ७     | उद्यमाह  | २२६    | ३७    | उद्यह     | १४७       | ७६    |
| उद्यम्या      | १७६       | ७५    | उद्यु    | २८     | २७    | उद्येग    | { ९६ १६९  |       |
| उद्यम्यत्     | ४९        | १     | उद्युन   | २२६    | ३५    |           | { २२१ १९  |       |
| उद्यपान       | ५४        | २६    | उद्युम्न | १९२    | २७    | उद्युक्   | ५८        | १२    |
| उद्यव         | ६६        | २     | उद्यव    | २९४    | २६    | उद्यव     | २९        | ७     |
| उद्यर         | १२        | ७७    | उद्यान   | १४८    | २६    | उद्यतान्त | २९        | ६९    |
| उद्यर्क       | १४८       | २९    | उद्यारक  | ७३     | ३४    | उद्यह     | २४२       | ८५    |
| उद्यवित       | ६२        | ४     | उद्यित   | २१४    | ९७    | उद्यव     | २२१       | १९    |
| उद्यवित्      | १७७       | ७३    | उद्यव    | १६४    | ११२   | उद्यव     | २२१       | १९    |
| उद्यव         | ३४        | ४     | उद्यवर्ष | ४६     | ३८    | उद्यव     |           |       |
| उद्यन         | १७        | ६३    | उद्यव    | ४६     | ३८    | उद्यव     | { ८१ ७७   |       |
| उद्यार        | { १९७     | ८     | उद्यव    | २१४    | २६    | उद्यव     | १६४       | ११५   |
|               | { २६२ १९२ |       | उद्यान   | १७१    | २९    | उद्यव     | २         | २३    |
| उद्युदीन      | १४५       | १     | उद्यार   | १६६    | ४     | उद्यवित्  | १९७       | ८     |
| उद्यहार       | ३७        | ९     | उद्युव   | २१३    | ७     | उद्यमन्   | १९७       | ८     |
| उद्यित        | २१७       | १७    | उद्यव    | २९     | ३     | उद्यव     | { १६४ ११७ |       |
| उद्यीची       | १७        | २     | उद्यिज   | ७३     | ७१    | उद्यव     | { १९१ २६  |       |
| उद्यीच        | { ७९      | ७     | उद्यिप्  | २९     | ७१    | उद्यव     | { ४४ २६   |       |
|               | { ८८ १०१  |       | उद्यिद   | २९     | ७१    | उद्यव     | { २ २३    |       |
| उद्युम्न      | { ७१ ७२   |       | उद्युम्न | ७२१    | १२    | उद्यव     | ११७       | ६     |
|               | { १८४ ७   |       | उद्यव    | ७१३    | ८९    | उद्यव     | २९        | ३७    |
| उद्युम्नरश्मी | ७         | १४६   | उद्यम    | २२१    | ११    | उद्यव     | ६३        | १     |
| उद्युम्नक     | १७        | २५    | उद्यन    | २४८    | ११७   | उद्यव     | ६३        | १     |
|               | २१७       | ७     | उद्यन    | २९७    | ३३    | उद्यव     | { ८ ११७   |       |
| उद्यमनीय      | १२७       | ११२   | उद्योग   | ५३     | २     | उद्यव     | { १०२ १७  |       |
| उद्यन         | १६        | ६६    | उद्य     | ५३     | २     | उद्यव     |           |       |
| उद्यन         | १६        | १७    | उद्यन    | १२८    | १२१   | उद्यव     | ८४        | ९६    |

| शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|--------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| ऊर्मिमत्    | २१०    | ७१     | ऊर्मुक्षिन्  | १२     | ४४     | एकाग्र्य  | २११    | ८०     |
| ऊप          | ५८     | ४      | ऊप्य         | ९८     | १०     | एकान्त    | १६     | ६७     |
| ऊपण         | १७२    | ३६     | ऊप्यकेतु     | ९      | २७     | एकान्दा   | १७८    | ६८     |
| ऊपर         | ५८     | ५      | ऊपभ          | ३९     | १      | एकायन     | २११    | ७९     |
| ऊपवत्       | ५८     | ५      |              | ८७     | ११६    | एकायनगत   | २११    | ८०     |
| ऊष्मागम     | २७     | १९     |              | १७७    | ५९     | एकावली    | १२५    | १०६    |
| ऊह          | ३०     | ३      |              | २०८    | ५९     | एकाग्रील  | ८१     | ८१     |
| ऊ           |        |        | ऊपि          | १४०    | ४३     | एकाग्रिला | ८२     | ८५     |
| ऊक्थ        | १८३    | ९०     | ऊष्यप्रोक्ता | ८२     | ८७     | एड        | ११४    | ४८     |
| ऊक्ष        | २१     | २१     |              | ८४     | १०१    | एडक       | १८०    | ७६     |
|             | ७७     | ५७     | ए            | २११    | ८२     | एडगज      | ९२     | १४७    |
|             | ९७     | ४      |              |        | ८२     | एडमूक     | २०३    | ३८     |
| ऊक्षगन्धा   | ९१     | १३७    |              |        | १६     | एडूक      | ६२     | ४      |
| ऊक्षगन्धिका | ८६     | ११०    | एक           | २११    | ८२     |           | ९८     | १०     |
| ऊच्         | ३४     | ३      | एकक          | १३४    | १२     | एत        | ३३     | १७     |
| ऊजीष        | १७२    | ३२     | एकगुरु       | २११    | ७९     | एतर्हि    | २८०    | २३     |
| ऊजु         | २१०    | ७२     | एकतान        | ३९     | ३      | एव        | ६९     | १३     |
| ऊजुरोहित    | १९     | १०     | एकताल        | ११     | ३८     | एधस्      | ६९     | १३     |
| ऊण          | १६६    | ३      | एकदन्त       | २८०    | २२     | एधा       | २२०    | १०     |
| ऊत          | ३७     | २२     | एकदा         | १७८    | ६५     | एधित      | २११    | ७६     |
|             | १६६    | २      | एकधु         | १७८    | ६५     | एनस्      | २८     | २३     |
| ऊतीया       | २२५    | ३२     | एकधुरावह     | १७८    | ६५     | एरण्ड     | ७६     | ५१     |
| ऊतु         | २६     | १३     | एकधुरीण      | ६१     | १५     | एला       | ८८     | १२५    |
|             | २३८    | ६१     | एकपदी        | १६     | ६९     | एलापर्णी  | ९१     | १४०    |
| ऊतुमती      | १०८    | २१     | एकपिङ्ग      | १२५    | १०६    | एलावालुक  | ८८     | १२१    |
| ऊते         | २७५    | ३      | एकयष्टिका    | २११    | ८०     |           | २७४    | २५०    |
| ऊत्विज्     | १३५    | १७     | एकसर्ग       | १७८    | ६८     |           | २७६    | ९      |
| ऊद्ध        | १७०    | २३     | एकहायनी      | २११    | ८२     |           | २७७    | १२     |
| ऊद्धि       | ८६     | ११२    | एकाकिन्      | २११    | ७९     |           | २७८    | १५     |
| ऊमु         | ७      | ८      | एकाग्र       | २६२    | १९०    |           | २७८    | १६     |

| शब्द      | पृष्ठ       | श्लोक     | शब्द   | पृष्ठ       | श्लोक     | शब्द      | पृष्ठ       | श्लोक       |
|-----------|-------------|-----------|--------|-------------|-----------|-----------|-------------|-------------|
| उपास्य    | १६०         | ८८        | उपवी   | १३          | ५२        | उष्णाप    | २६८         | २२          |
| उपासन     | १९          | ८६        | उर्वी  | ५८          | ३         | उष्णोष्णम | २७          | १९          |
| उपासना    | १३८         | ३८        | उषाक   | ९४          | १५५       | उषाक      | ७७          | १८          |
| उपासित    | २१६         | १२        | उषप    | ६९          | ९         | उष        | २३          | ११          |
| उषाहित    | { २५<br>२१४ | { १<br>९२ | उषुक   | { ९०<br>२२८ | { १५<br>६ | उषा       | १७८         | ६६          |
| उषेन्द्र  | ८           | २         | उषुल   | १७          | २         | ऊ         |             |             |
| उषोदिका   | ९४          | १७७       | उसुलसक | ७३          | १४        | ऊत        | २१६         | १०१         |
| उषोद्वय   | ३९          | ९         | उसुपित | ५२          | १८        | ऊपह       | १७          | ७६          |
| उतङ्ग     | ११७         | ८         | उस्फा  | २८४         | १         | ऊन        | २५          | १२८         |
| उभयपुत्र  | २७          | ७१        | उसुक   | १७१         | ३         | ऊम्       | २७९         | १८          |
| उमा       | { ११<br>१६  | { १६<br>२ | उसु    | ११२         | ३१        | ऊरी       | २७४         | २५४         |
| उमापति    | १           | ३४        | उसु    | २११         | ८१        | ऊर्य      | २७४         | २५४         |
| उम्य      | १६६         | ७         | उसुप   | ११६         | ७७        | ऊरील्ल    | २१७         | १८          |
| उर'धुनिका | १२          | १४        | उसुमेय | १७८         | १२        | ऊक        | ११          | ७३          |
| उरग       | ४७          | १         | उसुल   | ८           | ६         | ऊकन       | १६८         | १           |
| उरगुद     | १५८         | ६४        | उसुन   | २२          | २८        | ऊकनर्धन   | ११९         | ७१          |
| उरग       | ११          | ७६        | उसुी   | ८           | १६४       | ऊक        | २७          | १८          |
| उरगात्म   | ७           | १४७       | उपणा   | ८१          | ७         | ऊकस्वय    | १८१         | १५          |
| उरग       | ११          | ७६        | उपकुप  | ११          | ५४        | ऊकस्मिन्  | १८७         | ७           |
| उरगी      | २७८         | २५४       | उपम्   | २४          | ९         | ऊकनाम     |             | १३          |
| उरगीव     | २१७         | १८        | उषा    | २७          | १८        | ऊका       | ७३६         | ५०          |
| उरम्      | १           | ७८        | उपायति |             | ९७        | ऊकानु     | { १८<br>१८६ | { ७६<br>१०७ |
| उरगिग     | १७          | ७६        | उरगा   | ७१८         |           | ऊकानु     |             |             |
| उरग       | ११          | ७८        | उर     | १८          | ७७        | ऊकानु     | ०           | ८           |
| उरग       | १८७         | ७६        | उर     | { ७७<br>१   | { १<br>१  | ऊकानु     | ११६         | ४७          |
| उर        | ७१          | ६१        | उर     |             |           | ऊकानु     | ११४         | १७          |
| उरग       | ७६          | ६१        | उरगिग  | २७          | २९        | ऊकि       | ८           | ८           |
| उरग       | ७८          | ४         | उरगिका | १७          | ८         | ऊकि       | १२६         | १७          |

| शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.          | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|----------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| जर्मित्     | २१०    | ७१     | कसुदिन्        | १२     | ४४     | एकाम्य    | २११    | ८०     |
| ऊप          | ५८     | ८      | ऊप             | ९८     | १०     | एकान्त    | १६     | ६७     |
| ऊषण         | १७२    | ३६     | ऊष्यकेतु       | ९      | २७     | एकाब्दा   | १७८    | ६८     |
| ऊपर         | ५८     | ५      | ऊपम            | ३९     | १      | एकायन     | २११    | ७९     |
| ऊपवत्       | ५८     | ५      |                | ८७     | ११६    | एकायनगत   | २११    | ८०     |
| ऊष्मागम     | २७     | १९     |                | १७७    | ५९     | एकावली    | १२५    | १०६    |
| ऊह          | ३०     | ३      |                | २०८    | ५९     | एकाग्रोल  | ८१     | ८१     |
|             |        |        | ऊपि            | १४०    | ४३     | एकाग्रोला | ८२     | ८५     |
| क           |        |        | कक्ष्यप्रोक्ता | ८२     | ८७     | एउ        | ११४    | ४८     |
| कक्ष्य      | १८३    | ९०     |                | ८४     | १०१    | एउक       | १८०    | ७६     |
| कक्ष        | २१     | २१     | ए              | २११    | ८२     | एउगज      | ९२     | १४७    |
|             | ७७     | ५७     |                |        |        | एउमूक     | २०३    | ३८     |
|             | ९७     | ४      |                |        |        | एउक       | ६२     | ४      |
| कक्षगन्धा   | ९१     | १३७    |                |        |        | एत        | ३३     | १७     |
| कक्षगन्धिका | ८६     | ११०    | एकक            | २११    | ८२     | एतर्हि    | २८०    | २३     |
| कच्         | ३४     | ३      | एकगुरु         | १३४    | १२     | एव        | ६९     | १३     |
| कजीप        | १७२    | ३२     | एकतान          | २११    | ७९     | एधस्      | ६९     | १३     |
| कजु         | २१०    | ७२     | एकताल          | ३९     | ३      | एधा       | २२०    | १०     |
| कजुरोहित    | १९     | १०     | एकदन्त         | ११     | ३८     | एधित      | २११    | ७६     |
| कण          | १६६    | ३      | एकदा           | २८०    | २२     | एनस्      | २८     | २३     |
| कत          | ३७     | २२     | एकधु           | १७८    | ६५     | एण्ड      | ७६     | ५१     |
|             | १६६    | २      | एकगुरावह       | १७८    | ६५     | एला       | ८८     | १२५    |
| कतीया       | २२५    | ३२     | एकधुरीण        | १७८    | ६५     | एलापर्णी  | ९१     | १४०    |
| कतु         | २६     | १३     | एकपदी          | ६१     | १५     | एलावालुक  | ८८     | १२१    |
|             | २३८    | ६१     | एकपिङ्ग        | १६     | ६९     | एवम्      | २७४    | २५०    |
| कतुमती      | १०८    | २१     | एकयष्टिका      | १२५    | १०६    |           | २७६    | ९      |
| कते         | २७५    | ३      | एकसर्ग         | २११    | ८०     |           | २७७    | १२     |
| कत्विज्     | १३५    | १७     | एकहायनी        | १७८    | ६८     |           | २७८    | १५     |
| कद्ध        | १७०    | २३     | एकाकिन्        | २११    | ८२     |           | २७८    | १६     |
| कद्धि       | ८६     | ११२    | एकाम           | २११    | ७९     |           |        |        |
| कमु         | ७      | ८      |                | २६२    | १९०    |           |        |        |

| शब्द.    | पृष्ठ | श्लोक | शब्द.    | पृष्ठ    | श्लोक | शब्द.    | पृष्ठ. | श्लोक |
|----------|-------|-------|----------|----------|-------|----------|--------|-------|
| एपयिका   | १९३   | ३२    | मोपधी    | { ६८     | १     | ककुपती   | ११९    | ७४    |
| ये       |       |       |          | { ९      | १३५   | ककुन्दर  | ११९    | ७५    |
| ऐकागारिक | १९१   | २४    | मोपधीश   | २        | १४    |          | { १७   | १     |
| ऐगुह     | ७     | १८    | मोष्ठ    | १२२      | ९०    | ककुम     | { ४    | ७     |
| ऐण       | ९८    | ८     | मौ       |          |       |          | { ७५   | ४०    |
| ऐणैम     | ९८    | ८     | मौसक     | १७७      | ६     |          | { १२०  | ७९    |
| ऐतिम     | १३४   | १२    | मौषिती   | २९७      | ३९    | कक्ष     | { २६७  | २१९   |
| ऐन्द्रिक | २११   | ७९    | मौषित्य  | २९७      | ३९    |          | { १५१  | ४२    |
| ऐरावत    | १३    | ४६    | मौखनपादि | २१       | २     | करपा     | { २५६  | १०८   |
|          | १३    | ४६    | मौसुक्क  | २६९      | २२९   | कक       | ९९     | १६    |
| ऐरावत    | { १३  | ४६    | मौदिक    | १७१ - २८ |       | ककटक     | १५५    | ६४    |
|          | { १८  | ३     | मौदिक    | २        | २१    | ककष      | १२६    | १६८   |
|          | { ७४  | ३८    | मौपावक   | २२७      | ३९    | ककतिष्ठा | १३२    | ११९   |
| ऐरावती   | १९    | ९     | मौपविक   | १४७      | २४    | ककाल     | ११८    | ६९    |
| ऐकविष्ठ  | १६    | ६     | मौपवत्ता | १३       | ३१    | कक्रोक्क | १३     | १३    |
| ऐकेय     | ८८    | १२१   | मौमीन    | १६६      | ७     | ककु      | १६९    | २०    |
| ऐक्यन    | ११    | ३६    | मौरभक    | १८       | ७७    | ककष      | १२३    | ९५    |
| ऐयमस्    | २७    | २     | मौरस     | ११       | २८    | ककर      | २७     | ५५    |
|          | ओ     |       | मौषेदिक  | १३७      | ३     | ककिय     | २७८    | १४    |
| मौकत्    | २७    | २३३   | मौषै     | १४       | ५६    | ककष      | { ६    | १     |
|          | { ४   | ९     | मौषीर    | २६१      | १८५   | ककष      | { ८९   | १२८   |
| मौष      | { १३  | ३०    | मापय     | { ९      | १३५   | ककष      | { ७३   | २१    |
|          | { २३२ | २७    |          | { ११५    | ३     | ककषी     | २७१    | १३२   |
| मौकार    | ३४    | ४     | मौषक     | १८       | ७७    | ककषू     | ११५    | ५३    |
| मौगम्    | २७    | २३३   | क        |          |       | ककषुर    | ११६    | ५८    |
| मौद्रूप  | /     | ७६    |          | { २२८    | ५     | ककषुष    | ८३     | ९२    |
| मौद्रु   | ७     | ६     |          | { २२८    | ६     |          |        |       |
| मौदन     | १०५   | ४८    | कस       | १७२      | ३२    | ककु      | { ४८   | ९     |
| मौय      | २७७   | १२    | कसारति   | ८        | २१    |          | { १५५  | ६३    |
| मौय      | २२    |       | ककुव     | १४३      | २     | ककुकिन्  | १४४    | ८     |

| शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|------------|--------|--------|------------|--------|--------|
| कट        | ११९    | ७४     | कण         | २०८    | ६२     | कनक        | १८३    | ९४     |
|           | १५०    | ३७     |            | २३५    | ४६     | कनकाध्यक्ष | १४४    | ७      |
|           | १७१    | २६     | कणा        | ८४     | ९६     | कनकालुका   | १४९    | ३२     |
|           | १५०    | ३७     |            | १७२    | ३६     | कनकाह्वय   | ८१     | ७७     |
|           | २३३    | ३४     | कणिका      | ७९     | ६६     | कनिष्ठ     | ११३    | ४३     |
| कटक       | ६६     | ५      | कणिश       | १६९    | २१     | कनिष्ठा    | २३४    | ४१     |
|           | १०६    | १०७    | कटक        | २९५    | ३२     |            | १२१    | ८२     |
| कटभी      | ९३     | १५०    | कटकारिका   | ८३     | ९३     | कनीनिका    | १२३    | ९२     |
| कटम्भरा   | ८२     | ८५     | कण्टकिफल   | ७८     | ६१     | कनीयस्     | २०८    | ६२     |
|           | ९३     | १५३    | कण्ठ       | १२२    | ८८     |            | २७१    | २३५    |
| कटाक्ष    | १२३    | ९४     | कण्ठभूषा   | १२५    | १०४    | कन्या      | २८४    | ९      |
| कटाह      | २९०    | २१     | कण्डूरा    | ८२     | ८६     | कन्द       | ९४     | १५७    |
| कटि       | ११९    | ७४     | कडू        | ११५    | ५३     | कन्दर      | ६६     | ६      |
| कटिप्रोथ  | ११९    | ७५     | कडूया      | ११५    | ५३     | कदराल      | ७२     | २९     |
| कटी       | १२०    | ७५     | कण्डोल     | १७०    | २६     |            | ७५     | ४३     |
|           | २९७    | ३८     | कण्डोलवीणा | १९२    | ३१     | कन्दर्प    | ९      | २५     |
| कटु       | ३१     | ९      | कत्तूण     | ९६     | १६६    | कन्दलिन्   | ९८     | ९      |
|           | ८२     | ८५     | कथा        | ३४     | ६      | कन्दु      | १७१    | ३०     |
|           | २३३    | ३५     | कदध्वन्    | ६१     | १६     | कन्दुक     | १३१    | १३८    |
| कटुतुम्बी | ९४     | १५६    | कदम्ब      | ७५     | ४२     | कन्धरा     | १२२    | ८८     |
| कटुरोहिणी | ८२     | ८५     | कदवक       | १०३    | ४०     | कन्यकाजात  | १०९    | २४     |
| कट्फल     | ७४     | ४०     |            | १६९    | १७     |            | १०६    | ८      |
| कटुवग     | ७७     | ५६     | कदर        | ७६     | ५०     | कपट        | ४४     | ३०     |
| कठिञ्जर   | ८१     | ७९     | कदर्य      | २०६    | ४८     | कपर्द      | ११     | ३५     |
| कठिन      | २१०    | ७६     | कदलिन्     | ८६     | ११३    | कपर्दिन्   | १०     | ३२     |
| कठिण्डक   | ०३     | १५४    |            | ९८     | ९      | कपाट       | ६५     | १७     |
| कठोर      | २१०    | ७६     | कदाचित्    | २७५    | ४      | कपाल       | ११८    | ६८     |
| कडगर      | १६९    | २२     | कटुष्ण     | २३     | ३५     | कपालभृत    | १०     | ३२     |
| कटय       | १७२    | ३५     | कटु        | ३३     | १६     | कपि        | ९७     | ३      |
| कटार      | ३३     | १६     | कद्वद      | २०३    | ३७     | कपिकच्छु   | ८२     | ८७     |

| शब्द.        | पृष्ठ | श्लोक | शब्द        | पृष्ठ | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ | श्लोक |
|--------------|-------|-------|-------------|-------|-------|------------|-------|-------|
| कवित्व       | ७१    | २१    | कमला        | ९     | २७    | करम        | { १२१ | ८१    |
| कविक         | ११    | ११    | कमलासन      | ८     | १७    |            | { ११  | ७     |
| कविता        | { १८  | ४     | कमलोत्तर    | १८६   | १ ६   | करमूषण     | १०६   | १ ८   |
|              | { ७८  | ६३    | कमितु       | २     | २३    | करमर्दक    | ७९    | ६७    |
|              | { ८८  | १२    | कम          | ४६    | १८    | करम्म      | १७१   | ७८    |
| कविमहती      | ८४    | ९७    | कम्यन       | २१    | ७४    | करकह       | १०१   | ८३    |
| कविद्य       | ११    | १६    | कम्य        | २१    | ७४    | करमाक      | १६    | ८९    |
| कपीतन        | { ७२  | २७    | कमल         | { १२७ | ११६   | करवाञ्छिका | १६    | १     |
|              | { ७९  | ४१    |             | { २६१ | १९४   | करवीर      | ८१    | ७७    |
|              | { ७८  | ६३    | कमरकिमलक    | १५१   | ७२    | करवाला     | १२१   | ८२    |
| कपोत         | ९९    | १४    | कमि         | १७२   | १४    | करवीकर     | १     | १७    |
| कपोतपाञ्चिका | १४    | १     | कम्यु       | { ५३  | २३    | करहाट      | ५७    | ४३    |
| कपोताभि      | ८९    | १२९   |             | { २५१ | १३३   | करहाटक     | ७६    | ५२    |
| कपोक         | १२२   | ९     | कम्युप्रीवा | १२९   | ८८    | कराल       | २६१   | २ ५   |
| कप           | ११७   | १२    | कम          | २     | २४    | करगानि     | १६३   | १ ७   |
| कपिल         | ११७   | ६     | कर          | { २२  | ३३    | करिष्य     | १४९   | ३६    |
| कपोली        | १२    | ८     |             | { १४८ | २७    | करिन्      | १४९   | ३४    |
|              |       |       |             | { २ ७ | १३४   |            |       |       |
| कबन्ध        | { ४९  | ४     | करक         | { ७८  | ६६    | करिपिपल्ली | ८४    | ९७    |
|              | { १६१ | ११८   |             | { २२८ | ६     | करिशाक     | १४९   | ३१    |
| कवरी         | { १   | ११९   | करवा        | १     | १२    | करौर       | { ८१  | ७७    |
|              | { १२४ | ९७    |             |       |       |            | { २५१ | १७३   |
|              | { १७३ | ४     | करज         | { ७२  | ४७    | करीव       | १७१   | ५१    |
| कम्          | २७४   | २     | करज         | { ८९  | १२९   | करज        | ४२    | १७    |
| कमठ          | ७३    | २१    | करजक        | ७६    | ४७    | करणा       | ४२    | १८    |
| कमठी         | ७४    | २४    | करड         | { १   | २     | करटु       | १     | १९    |
| कमडगु        | १४    | ४६    |             | { २३३ | ३४    | करणु       | २३६   | ५२    |
| कमन          | २     | २६    | करण         | { १८७ | २     | करपट       | ११८   | ६९    |
|              |       |       |             | { २३७ | ७४    |            |       |       |
| कमल          | { ४९  | ३     | करण्य       | २ ८   | १८    | करक        | १७२   | ४६    |
|              | { ७७  | ४     | करतैया      | ७     | ३३    | करकटक      | ५३    | २१    |
|              | { २६३ | १ ४   | करपय        | १९३   | ३४    | करटी       | १ ४   | १५५   |

[illegible]



| शब्द.   | पृष्ठ | श्लोक | शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक | शब्द.          | पृष्ठ. | श्लोक |
|---------|-------|-------|--------------|--------|-------|----------------|--------|-------|
| कस्माप  | २८    | ३३    | कस्तूरी      | १३     | १२९   | काञ्चनाह्वय    | ७८     | ६५    |
| कस्माप  | ३३    | १७    | कह्लार       | ८६     | ३६    | काञ्चनी        | १७३    | ४१    |
| कल्प    | २४    | २     | कह्ल         | १      | २२    | काञ्चो         | १२६    | १०८   |
|         | ११६   | ७७    | कास्वपाख     | ३      | ४     | काञ्चिक        | १७३    | २९    |
|         | २७६   | १५९   | काक          | १      | २     | काङ            | २३७    | ४३    |
| कस्या   | ३७    | १८    | काकनिषा      | ८४     | ९८    | काण्डपुष्ट     | ११५    | ६७    |
| कस्याग  | २८    | २५    | काकतिन्मुक्त | ७४     | ३९    | काण्डवत्       | १५६    | ६     |
| कस्तूरम | ७     | ६     | काकनासिका    | १७     | ११८   | काण्डीर        | १५६    | ६९    |
| कवच     | १७७   | ६४    | काकपत्र      | १०३    | ९६    | काण्डेष्टु     | १५     | १४    |
| कवल     | १५१   | ५४    | काकपिस्तक    | ७४     | ३९    | कातर           | ७      | २     |
| कपि     | २२    | २५    | काकमाषी      | ३      | १५१   | कात्यायनी      | ११     | ३६    |
|         | १३३   | ७     | काकमुद्रा    | ११     | ११३   |                | १८     | १७    |
| कशिका   | १२    | ४९    | काकली        | ३९     | २     | कादम्ब         | ११     | २३    |
| कक्षि   | ७     | ३७    | काकांगी      | ८७     | ११८   | कादम्बरी       | १४     | ३     |
| कनोष्ण  | २३    | ३५    | काकिणा       | २८४    | ९     | कादम्बिनी      | १८     | ८     |
| कण्ठ    | १३६   | २८    | कानु         | ३६     | १२    | कादम्बेय       | ४७     | ४     |
| कशा     | १९७   | ३१    | काकुव        | १२७    | १     | कामन           | ६७     | १     |
| कशाह    | ७     | ४४    | काकेष्टु     | ७४     | ३९    | कानीन          | १      | २४    |
| कशिपु   | २     | १३    | काकौकुम्भिका | ७१     | ३१    | काम्य          | २६     | ७२    |
| कशेरु   | २१६   | ३३    | काकौदर       | ४७     | ७     | काम्यक         | ८      | १२८   |
| कशेरुना | ११८   | ६९    | काकौक        | ८८     | १     | काम्या         | १७     | ७     |
| कस्मल   | १३३   | १९    | काका         | १      | २१    | काम्यार        | ६१     | १७    |
| कस      | १७    | ४७    |              |        |       | काम्यारक       | २७६    | १७२   |
|         | १८    | ४     | काशी         | ४४     | २७    |                | ९७     | १६३   |
| कप      | १७    | २२    | काष          | ११४    | ९     | कान्त्यार्थिनी | १३     | १     |
|         | १८    | २     | काषी         | १२     | ३     | कान्ति         | ७      | १७    |
| कपाप    | ११    | १     | काषरभ्यागी   | ७७     | ४७    |                | ७२     | ८     |
| कप      | ४     | ४     | कानिन्       | २१३    | १९    | कादिरीक        | १७१    | ७८    |
|         | २७६   | ७     | काशम         | १८३    | ७     | कापय           | ६१     | १६    |

| शब्द.     | पृष्ठ.    | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ.    | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ.    | श्लोक. |
|-----------|-----------|--------|-----------|-----------|--------|--------------|-----------|--------|
| कापोत     | { १०४ ४३  |        | कारम्भा   | ७७        | ५६     | कालक         | ११४       | ४९     |
|           | { १८६ १०९ |        |           | { ८६ १११  |        | कालकठक       | १००       | २१     |
| कापोताजन् | १८४       | १००    | कारवी     | { ९३ १५२  |        | कालकूट       | ४८        | १०     |
|           | { ९ २५    |        |           | { १७२ ३७  |        | कालकूट       | ११८       | ६६     |
| काम       | { ४४ २८   |        |           | { १७३ ४०  |        | कालधर्म      | १६४       | ११६    |
|           | { १७६ ५७  |        | कारवेष्ट  | ९३        | १५४    | कालपृष्ट     | १५९       | ८३     |
|           | { २५२ १३८ |        | कारा      | १६५       | ११९    | कालमेयी      | ८३        | ९६     |
| कामगामिन् | १५७       | ७६     | कारिका    | २३०       | १५     | कालमेपिका    | { ८३ ९०   |        |
| कामन्     | २००       | २४     | कारीप     | २२७       | ४३     |              | { ८६ १०९  |        |
| कामपाल    | १         | २३     | कार       | १८७       | ५      | कालमेपी      | ८३        | ९६     |
| कामम्     | २७७       | १३     | कारणिक    | १९८       | १५     | कालशेय       | १७५       | ५३     |
| कामयितृ   | २००       | २४     | कारण्य    | ४२        | १८     | कालसूत्र     | ४८        | २      |
| कामिनी    | { १०५ ३   |        | कारोत्तर  | १९४       | ४२     |              |           |        |
|           | { २४७ ११२ |        | कारित्वर  | १८३       | ९५     | कालस्कन्ध    | { ७४ ३८   |        |
| कामुक     | २००       | २३     | कार्तातिक | १४५       | १४     |              | { ६९ ६८   |        |
| कामुका    | १०६       | ९      | कार्तिक   | २७        | १७     |              | { ८३ ९४   |        |
| कामुकी    | १०६       | ९      | कार्तिकिक | २७        | १८     | काला         | { ८६ १०९  |        |
| कापिल्य   | ९२        | १४६    | कार्तिकेय | १२        | ३९     |              | { १७२ ३७  |        |
| काम्बल    | १५३       | ५४     | कास्त्र्य | २६०       | १७८    | कालागुरु     | १२९       | १२७    |
| काम्बविक  | १८८       | ८      | कार्पास   | { १२६ १११ |        | कालानुसार्य  | { ८८ १२२  |        |
| काम्बोज   | १५१       | ४५     | कार्पासी  | { २९६ ३५  |        |              | { १२९ १२६ |        |
| काम्बोजी  | ९१        | १३८    | कार्पासी  | ८७        | ११६    | कालाय        | १६८       | १६     |
| काम्यदान  | २१९       | ३      | कार्म     | १९९       | १८     | कालायस       | १८४       | ९८     |
|           |           |        | कार्मण    | २१९       | ४      | कालिका       | २३०       | १५     |
| काय       | { ११९ ७१  |        | कार्मुक   | १५९       | ८३     | कालिन्दी     | ५५        | ३२     |
|           | { १४१ ५०  |        | कार्प्य   | ७५        | ४४     | कालिन्दीभेदन | ९         | २४     |
| कायस्था   | ७७        | ५६     | कार्षापण  | १८२       | ८८     | काली         | ११        | ३६     |
| कारण      | २९        | २८     | कार्षिक   | १८२       | ८८     |              |           |        |
| कारणा     | ४९        | ३      |           | { १४ ५९   |        | कालीयक       | १२९       | १२६    |
| कारणिक    | १९७       | ७      | काल       | { २४ १    |        | कालेयक       | ८४        | १०१    |
| कारण्डव   | १०२       | ३४     |           | { ३२ १४   |        | काल्यक       | ९०        | १३५    |
|           |           |        |           | { २६३ १९४ |        | काल्या       | १७९       | ७०     |

| शब्द             | पृष्ठ       | श्लोक     | शब्द       | पृष्ठ         | श्लोक     | शब्द     | पृष्ठ       | श्लोक |
|------------------|-------------|-----------|------------|---------------|-----------|----------|-------------|-------|
| कावचिक           | १५५         | ६६        | किञ्चित्   | २७९           | ८         | किल्बिष  | { २८ २१     |       |
| कावरी            | ८६          | ३८        | किञ्चुक    | ५३            | २२        |          | { २६८ २२१   |       |
| काव्य            | २२          | २१        | किञ्चस्क   | ५७            | ४३        | किञ्चीर  | १५२         | ४९    |
| काय              | १५          | १६२       | किटि       | ९७            | २         | किञ्जु   | २२९         | ७     |
| कादमरी           | ७४          | ३१        | किट्ट      | ११८           | ६५        | किञ्जल्य | ७           | १४    |
| कादमय            | ७४          | ३६        | किण        | ७८९           | १८        | कीकस     | ११८         | ६८    |
| कास्मीर          | ९२          | १४        | किणिही     | ८२            | ८         | कीचक     | ९५          | १६१   |
| कास्मीरकन्मन्    | १२          | १२४       | किण्व      | १९४           | ४२        | कीनाथ    | २६७         | २१५   |
| काश्चपि          | २३          | ३२        | किण्व      | { ८१ ७७       |           | कीर      | १           | २१    |
| कास्वपी          | ५८          | २         | किण्व      | { १५ ४३       |           | कीर्ति   | ३५          | २१    |
| काठ              | ६९          | १३        | किण्व      | { ७ ११        |           | कीक      | { १४ ७७     |       |
| काठकुहाळ         | ८१          | १३        | किण्व      | { १७ ७९       |           | कीक      | { २६३ १७    |       |
| काष्ठवष्         | १८८         | ९         | किण्वरेण   | १६            | ६९        | कीक      | १९७         | ७३    |
| काष्ठ            | { १७ २५ २३४ | { १ ११ ४१ | किम्       | { २७४ २७६ ७७६ | { २५१ ५ ५ | कीक      | { ४९ २६४ २  |       |
| काष्ठाम्बुवाहिनी | ५१          | ११        | किम्बु     | ७७६           | ५         | कीक      | २४          | ४७    |
| काठीला           | ८६          | ११३       | किम्बुव    | { २७ २७६      | { ७ ५     | कीक      | ९७          | ३     |
| काठ              | ११५         | २         | किम्बुवान  | २६            | ४८        | कु       | { ५८ २७२ २४ |       |
| काठमद            | २८६         | १         | किम्बुरुष  | १७            | ७१        | कुकर     | ११४         | ४८    |
| कासर             | ७           | ४         | किरण       | २३            | ३३        | कुङ्कुमर | ११९         | ७     |
| कासार            | ५४          | २८        | किरात      | १९            | २         | कुङ्कु   | २६४         | ७७    |
| कास              | २३९         | ६७        | किराततिष्ठ | ७             | १४३       | कुङ्कुट  | ९           | १७    |
| किञ्चदन्ती       | ३४          | ७         | किरि       | ७             | २         | कुङ्कुम  | ११          | ३५    |
| किञ्चाक          | { १६ २७     | { २१ १६३  | किरीट      | १२१           | १२        | कुङ्कुम  | { ९ ११२     |       |
| किञ्चक           | ७२          | ७         | किमीर      | ३३            | १७        | कुङ्कुम  | { १९१ २१    |       |
| किङ्कीरिधि       | १६          | ११        | किम        | २७८           | २५४       | कुङ्कु   | १२          | ७७    |
| किङ्कर           | १           | १७        | किम        | २७८           | २५४       | कुङ्कुम  | २           | २१    |
| किङ्किणी         | १२६         | ११        | किम        | ११७           | ६१        | कुङ्कुम  | १२९         | १२३   |
|                  |             |           | किमिजक     | १७७           | २६        | कुष      | १२          | ७७    |

| शब्द.         | पृष्ठ | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------|-------|--------|-----------|-------|--------|-------------|--------|--------|
| कुचन्दन       | १३०   | १३२    | कुड्य     | ६२    | ४      | कुपूय       | २०७    | ५४     |
| कुचर          | २०३   | ३७     | कुणप      | { १६५ | ११८    | कुप्य       | १८३    | ९१     |
| कुचाग्रं      | १२०   | ७७     |           | { २८९ | २०     | कुवेर       | { १६   | ६८     |
| कुज           | २२    | २५     | कुणि      | { ८९  | १२८    |             | { १७   | ३      |
| कुञ्चित       | २१०   | ७१     |           | { ११४ | ४८     | कुवेरक      | ८९     | १२७    |
| कुञ्ज         | { ६७  | ८      | कुठ       | १९९   | १७     | कुवेराधी    | ७७     | ५५     |
|               | { २३३ | ३१     | कुण्ड     | { १११ | ३६     | कुब्ज       | ११४    | ४८     |
| कुञ्जर        | { १४९ | ३४     |           | { १७१ | ३१     |             |        |        |
|               | { २०८ | ५९     | कुण्डलं   | १२५   | १०३    | कुमार       | { १२   | ४०     |
| कुञ्जराशन     | ७१    | २०     | कुण्डलिन् | ४७    | ७      |             | { ४१   | १२     |
| कुञ्जल        | १७३   | ३९     | कुण्डी    | १४०   | ४६     | कुमारक      | ७२     | २५     |
| कुट           | { ६८  | ५      | कुतप      | १३७   | ३१     | कुमारी      | { ८०   | ७३     |
|               | { १७२ | ३२     | कुतुक     | ४४    | ३१     |             | { १०६  | ८      |
| कुटक          | १६८   | १३     | कुतुप     | १७२   | ३३     | कुमुद       | { १८   | ३      |
| कुटज          | ७९    | ६६     | कुतू      | १७२   | ३३     |             | { ५६   | ३७     |
| कुटन्नट       | { ७७  | ५७     | कुतूहल    | ४४    | ३१     | कुमुदप्राय  | ५९     | ९      |
|               | { ९०  | १३१    | कुत्सा    | ३६    | १३     | कुमुदवान्धव | १९     | १३     |
| कुटिल         | २१०   | ७१     | कुत्सित   | २०७   | ५४     | कुमुदिका    | ७४     | ४०     |
| कुटी          | { ६२  | ६      | कुथ       | { ९६  | १६६    | कुमुदिनी    | ५६     | ३९     |
|               | { २९७ | ३८     |           | { १५१ | ४२     | कुमुद्वत्   | ५९     | ९      |
| कुडम्बव्यापृत | १९८   | ११     | कुदाल     | ७१    | २२     | कुमुद्वती   | ५६     | ३८     |
| कुडम्बिनी     | १०५   | ६      | कुनटी     | १८६   | १०८    | कुम्बा      | १३५    | १८     |
| कुट्टनी       | १०८   | १९     | कुनाशक    | ८३    | ९१     | कुम्भ       | { ७३   | ३४     |
| कुट्टिम       | २९५   | ३४     | कुन्त     | १६०   | ९३     |             | { १५०  | ३७     |
| कुठर          | १८०   | ७४     | कुन्तल    | १२३   | ९५     |             | { २५१  | १३४    |
| कुठार         | १६०   | ९२     |           |       |        | कुम्भकार    | १८८    | ६      |
| कुठेरक        | ८१    | ७९     | कुन्द     | { ८०  | ७३     | कुम्भसम्भव  | २१     | २०     |
| कुडगक         | २८८   | १७     |           | { ८८  | १२१    | कुम्भिका    | ५६     | ३८     |
| कुडघ          | १८२   | ८९     | कुन्दुरु  | { २८९ | १९     | कुम्भी      | ७४     | ४०     |
| कुड्मल        | ७०    | १६     | कुन्दुरकी | ८८    | १२१    | कुम्भीर     | ५३     | २१     |
|               |       |        |           | ८८    | १२४    | कुणग        | ९८     | ८      |

| शब्द          | पृष्ठ             | श्लोक         | शब्द      | पृष्ठ       | श्लोक      | शब्द       | पृष्ठ      | श्लोक    |
|---------------|-------------------|---------------|-----------|-------------|------------|------------|------------|----------|
| कुरगक         | १९१               | २४            | कुर्या    | ५           | ३४         | कुरुर      | १९८        | १४       |
| कुरणक         | { ८<br>८०         | ७४<br>७५      | कुरक      | { ७४<br>२९८ | ३६<br>४२   | कुर        | { ८४<br>२४ | १०<br>४३ |
| कुरवक         | ८                 | ७४            | कुरवक     | ५३          | ३७         |            | २३४        | ३७       |
| कुरर          | १ १               | २३            | कुराद     | २ ३         | ३७         | कुर्यन्न   | १९१        | २३       |
| कुरवक         | ८                 | ७५            | कुरिन्द   | १८८         | ३          | कुर्यास्मि | ७३         | ४७       |
| कुरविन्द      | ९५                | १५९           | कुरेणी    | ५२          | १६         | कुर्यत्    | २१         | ७३       |
| कुरवित्त      | १८२               | ८६            |           | { ९६<br>२६७ | १६३<br>२१३ | कुर        | ५४         | २३       |
| कुर           | { १४<br>११२       | ४१<br>१       | कुर       | { २८<br>१७  | २३<br>४    | कुरक       | { ५<br>५१  | १<br>१२  |
| कुरक          | { ७४<br>९६<br>१८८ | ३९<br>१५<br>५ | कुराक     | { १७<br>२३  | ४<br>२४    | कुरर       | १५४        | ५७       |
| कुर्य         | १ ३               | १             | कुरी      | १८४         | ९          | कुर्यदीर्घ | ९१         | १४२      |
| कुरिपिका      | १८५               | १ २           | कुरीक्य   | १८९         | १२         | कुरीका     | १७४        | ४४       |
| कुर्यादिका    | १ ३               | ७             | कुरीय     | ५७          | ४          | कुर्यन     | ४५         | ३३       |
| कुरभेष्टिन्   | १८८               | ५             | कुर       | { ११५<br>२५ | ५४<br>३४   | कुर्यर     | १२८        | ८        |
| कुरातम्म      | १३२               | २             |           |             |            | कुर्यातक   | १२८        | ११८      |
| कुराती        | १ ३               | ७             | कुरीर     | १६६         | ४          | कुर्य      | ५३         | २१       |
| कुरव          | १ ३               | ३७            | कुरीदिक   | १६६         | ५          | कुर्याक    | ५०         | ४        |
| कुराल         | १८८               | ३             | कुरुम     | ७           | १७         | कुर्याक    | ४          | १८५      |
| कुराली        | १८५               | १ २           | कुरुमाञ्ज | १८५         | १ ३        | कुर्याक    | ९८         | १२       |
| कुरिद्य       | १३                | ४७            | कुरुमेपु  |             | २६         | कुर्याक    | ९          | १७       |
| कुरी          | ८३                | ४             | कुरुम्भ   | { १८६<br>२१ | ३ ३<br>१३६ | कुर्यादिका | १२२        | ८८       |
| कुरीन         | १६२               | ३             |           |             |            | कुर्य      | { ४<br>१४७ | ४<br>५७  |
| कुरीर         | ३                 | २१            | कुर्याति  | ४४          | ३          | कुर        | २४१        | ७७       |
| कुर्याप       | { १३<br>२         | १८<br>७१      | कुर्यामु  | १७३         | ३८         | कुर्याप    | १८५        | ६८       |
| कुर्यापामिपुन | १७३               | ३             | कुर्याना  | १४२         | ५३         | कुर्याप    | ७१         | २४       |
| कुर्याप       | १९८               | ६८            | कुर्या    | २१          | १          | कुर्याप    | १९६        | ४        |

| शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक | शब्द          | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.         | पृष्ठ. | श्लोक |
|--------------|--------|-------|---------------|--------|--------|---------------|--------|-------|
| कृतलक्षण     | १९७    | १०    | कृषिक         | { १६६  | ६      | कैलि          | ४५     | ३२    |
| कृतसापत्निका | १०५    | ७     |               | { १६८  | १३     | कैवल          | २६४    | २०३   |
| कृतहस्त      | १५५    | ६८    | कृषीवल        | १६६    | ६      | केश           | १२३    | ९५    |
| कृतान्त      | { १४   | ५८    | कृष्ट         | १६७    | ८      | केशपर्णी      | ८२     | ८९    |
|              | { २३८  | ६४    | कृष्टि        | १३३    | ६      | केशपाशी       | १२४    | ९७    |
| कृताभिपेका   | १०५    | ५     |               | { ८    | १८     | केशव          | { ८    | १८    |
| कृतेन्       | { ११३  | ६     | कृष्ण         | { २६   | १२     |               | { ११३  | ४५    |
|              | { १९६  | ४     |               | { ३२   | १४     | केशवेष        | १२४    | ९७    |
|              |        |       |               | { १७२  | ३६     | केशाम्बुनाम   | ८८     | १२२   |
| कृत्         | २१६    | १०३   | कृष्णपाकफल    | ७९     | ६७     | केशिक         | ११३    | ४५    |
| कृत्ति       | १४०    | ४६    | कृष्णफला      | ८३     | ९६     | केशिन्        | ११३    | ४५    |
| कृत्तिवासस्  | १०     | ३१    | कृष्णभेदि     | ८२     | ८६     | केशिनी        | ८९     | १२६   |
| कृत्या       | २५६    | १५८   | कृष्णला       | ८४     | ९८     |               |        |       |
| कृत्रिमधूपक  | १२९    | १२८   | कृष्णलोहित    | ३३     | १६     | केशर          | { ५७   | ४३    |
| कृत्स्न      | २०९    | ६५    | कृष्णवर्त्मन् | १४     | ५४     |               | { ७२   | २५    |
| कृपण         | २०६    | ४८    | कृष्णवृन्ता   | ७७     | ५५     |               | { ७८   | ६४    |
| कृपा         | ४२     | १८    | कृष्णसार      | ९८     | १०     | कैसरिन्       | ९७     | १     |
| कृपाण        | १६०    | ८९    | कृष्णा        | ८४     | ९६     | कैटभजित्      | ८      | २२    |
| कृपाणी       | १९३    | ३३    | कृष्णिका      | १६९    | १९     | कैडय          | ७४     | ४०    |
| कृपालु       | १९८    | १५    | ककर           | ११४    | ४९     | कैतव          | { ४४   | ३०    |
| कृपीटयोनि    | १४     | ५३    | कैका          | १०२    | ३१     |               | { १९५  | ४४    |
| कृमि         | ९९     | १३    | कैफिन्        | १०२    | ३०     | कैदारक        | १६७    | ११    |
| कृमिकोशोत्थ  | १२६    | १११   | कैतकी         | ९६     | १७०    | कैदारिक       | १६७    | ११    |
| कृमिघ्न      | ८५     | १०६   | कैतन          | { १६२  | ९९     | कैदार्य       | १६७    | ११    |
| कृमिल        | १२९    | १२६   |               | { २४७  | ११४    | कैरव          | ५६     | ३७    |
| कृश          | २०८    | ६१    | कैतु          | २३८    | ६०     | कैलास         | १६     | ७०    |
| कृशानु       | १४     | ५४    | कैदर          | २८९    | २०     | कैवर्त        | ५२     | १५    |
| कृशानुरेतस्  | १०     | ३३    | कैदार         | १६७    | ११     | कैवर्तीमुस्तक | ९०     | १३२   |
| कृशाश्विन्   | १८९    | १२    | केनिपातक      | ५१     | १३     | कैवल्य        | ३१     | ६     |
| कृषि         | १६५    | २     | कैयूर         | १२६    | ११७    | कैशिक         | १२३    | ९६    |

| शब्द       | पृष्ठ | श्लोक   | शब्द      | पृष्ठ    | श्लोक   | शब्द         | पृष्ठ     | श्लोक |
|------------|-------|---------|-----------|----------|---------|--------------|-----------|-------|
| नेत्रम्    | १२३   | ९३      | कोष्ठक    | { १३ १२९ | कौमोदकी | १            | २८        |       |
| कोक        | { ८८  | ७       | { १०२ १६  | कौमटिनेय | ११      | २०           |           |       |
| कोकनद      | ५७    | ४२      | कोकदण्ड   | ८९       | ११      | कौमटेय       | { १९ २१   |       |
| कोकनरञ्जवि | ३२    | १५      | कोकम्बक   | ४        | ७       | { ११ २०      |           |       |
| कोकिल      | १     | १९      | कोकमक्षी  | ८४       | ९७      | कौमटेर       | १९ २६     |       |
| कोकिलस     | ८७    | १४      | कोका      | ८४       | ९७      | कौम्बिन      | २४८ ११६   |       |
| कोटर       | ६९    | ११      | कोकाहल    | १८       | २५      | कोलेयक       | १९१ २१    |       |
| कोट्यी     | १ ८   | १७      | कोली      | ७४       | ३६      | कोधिक        | { ७२ ३४   |       |
| काटि       | { १५९ | ८४      | कोषिद     | १३३      | ८       | { २२ १       |           |       |
| { १६       | १     | कोषिदार | ७१        | २२       | कोषेय   | १२६ १११      |           |       |
| { २३४      | ३८    | कोष     | { १३ ३७   | कौस्तुभ  | १       | २८           |           |       |
| काटिवपा    | ९     | १२३     | { २६८ २२१ | ककष      | १९३ ३४  |              |           |       |
| कोटिग      | १६७   | १२      | कोषफळ     | १६       | १३      | ककर          | { ८१ ७७   |       |
| कोट्टार    | २८    | १८      | कान्यातकी | २२       | ८       | { १ १९       |           |       |
| कोठ        | ११७   | ७४      | कोप       | १८३      | ११      | कतु          | १३४ १३    |       |
| कोण        | { ४   | ६       | कोष्ठ     | २३४      | ४       | कतुर्ध्वनिन् | १ ३४      |       |
| { १६       | १     | काण्य   | २३        | ३७       | कतुमुन् | ७ ९          |           |       |
| कोर्दड     | १ ९   | ९३      | कोकुरुटिक | २३       | १७      | कयम          | १६४ ११५   |       |
| काद्रप     | १६८   | १६      | कोलेयक    | १६       | ८९      | कर्दम        | { १६३ १ ७ |       |
| काप        | ६३    | २६      | कोटतण्ड   | १८८      | ९       | { २४ १२३     |           |       |
| कोपना      | १ ७   | ४       | कोटिक     | १८       | १४      | कम्बित       | १४७ ३७    |       |
| कोविन्     | २ ७   | ३२      | कोषर      | १७       | ७       | कम           | १३ ३९     |       |
| कोमल       | २०१   | ७८      | कातुक     | ४८       | ३१      | { ७८ ४१      |           |       |
| कोर्वाष्टक | १ ३   | ३७      | कोतुहल    | ४८       | ३३      | { ७ ४१       |           |       |
| कोरक       | ७     | ३७      | काव्रीण   | १६७      | ८       | { १ १६       |           |       |
| कोरली      | ८     | १२७     | कोन्ती    | ८८       | १२      | कमलक         | १८ ७५     |       |
| कारण्य     | १६८   | १६      | कोन्तीक   | १७६      | ७       | कपयिषपिक     | १८७ ७८    |       |
| कात        | { ५१  | ११      | कीर्णन    | २४       | १२२     | कपिक         | १८१ ७९    |       |
| { ७४       | ३६    | कीमारी  | १३        | ३५       | कय्य    | १८१ ८१       |           |       |
| { ९७       | २     | कीमुदी  | २७        | १६       | कय्य    | ११७ ६३       |           |       |

| शब्द.          | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.         | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------------|--------|--------|-------------|--------|--------|---------------|--------|--------|
| कव्यात्        | १५     | ५९     | क्लिशित     | १२५    | ९८     | क्षपाकर       | २०     | १५     |
| कव्याद         | १५     | ५९     | क्लिष्ट     | { ३७   | १९     | क्षम          | २५३    | १४२    |
| कायिक          | १८१    | ७      | { २१५       | ९८     | क्षमा  | २५३           | १४२    |        |
| क्रिया         | { २१८  | १      | क्षीतक      | ८६     | १०९    | क्षमितृ       | २०२    | ३१     |
|                | { २५५  | १५७    | क्षीतकिका   | ८३     | ९४     | क्षमिन्       | २०२    | ३१     |
| क्रियावत्      | १९९    | १८     | क्षीव ( व ) | { ११२  | ३९     | क्षतृ         | २०२    | ३१     |
| क्रीडा         | { ४५   | ३२     | { २६६       | २१३    |        |               |        |        |
|                | { ४५   | ३३     | क्षेत्र     | २२५    | २९     |               | { २८   | २२     |
| कुच्           | १००    | २२     | क्षोमन्     | ११८    | ६५     | क्षय          | { ११५  | ५१     |
| कुध्           | ४३     | २६     | क्षण        | { ३८   | २४     |               | { २२०  | ७      |
| कुष्ट          | ४५     | ३५     |             | { २२०  | ८      |               | { २५३  | १४५    |
|                | { २०६  | ४७     | क्षणन       | ३८     | २४     | क्षव          | { ११५  | ५२     |
| कूर            | { २१०  | ७६     | क्षथित      | २१४    | ९५     |               | { १६९  | १९     |
|                | { २६२  | १९१    | क्षाण       | ३८     | २४     | क्षवथु        | ११५    | ५२     |
| कृतव्य         | १८१    | ८१     |             | { २६   | ११     | क्षान्त       | २१५    | ९७     |
| क्रेय          | १८१    | ८१     | क्षण        | { ४६   | ३८     | क्षान्ति      | ४३     | २४     |
| क्रोड          | { ९७   | २      |             | { २३५  | ४७     | क्षार         | १८४    | ९९     |
|                | { १२०  | ७७     | क्षणदा      | २४     | ४      | क्षारक        | ७०     | १६     |
| क्रोध          | ४३     | २६     | क्षणन       | १६४    | ११४    | क्षारमृत्तिका | ५८     | ४      |
| क्रोधन         | २०२    | ३२     | क्षणप्रभा   | १९     | ९      | क्षारित       | २०४    | ४३     |
| क्रौञ्चयुग     | ६१     | १८     | क्षतज       | ११७    | ६४     | क्षिति        | { ५८   | २      |
| क्रोष्टु       | ९७     | ५      | क्षतव्रत    | १४२    | ५४     |               | { २३९  | ७०     |
| क्रोष्टुविज्ञा | ८३     | ९३     |             | { १५४  | ५९     | क्षिपा        | २२१    | ११     |
| क्रोष्टु       | ८६     | ११०    | क्षत्       | { १८७  | ३      | क्षित         | २१३    | ८७     |
| क्रौंच         | १००    | २२     |             | { २३८  | ६३     | क्षिप्नु      | २०२    | ३०     |
| क्रौञ्चदारण    | १२     | ४०     | क्षत्रिय    | १४३    | १      | क्षिप्र       | { १५   | ६४     |
| क्रम           | २२१    | १०     | क्षत्रिया   | १०७    | १४     | क्षिया        | { २१८  | ११२    |
| क्रमथ          | २२१    | १०     | क्षत्रियी   | १०७    | १५     |               | २२०    | ७      |
| क्लिन्न        | २१७    | १०५    | क्षत्रियाणी | १०७    | १४     | क्षीर         | { ४९   | ४      |
| क्लिन्नाक्ष    | ११६    | ६०     | क्षपा       | २४     | ४      |               | { १७५  | ५९     |
|                |        |        |             |        |        |               | { २६०  | १८२    |



| शब्द               | पृष्ठ | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ | श्लोक |
|--------------------|-------|-------|-----------|-------|-------|-----------|-------|-------|
| खीरविकृति          | १७४   | ४४    | खेत्र     | { १६७ | ११    | खोशर      | १     | २९    |
| खीरविहारी          | ८६    | ११    |           | { २६  | १८    | खवाका     | १७२   | १४    |
| खीरशुद्ध           | ८६    | ११    | खेत्रज    | { २९  | २९    | खंज       | ११४   | ४     |
| खीरानी             | ८४    | १     |           | { २३३ | ३३    | खंजन      | ९९    | १५    |
| खीरिका             | ७५    | ४५    | खेत्राजीव | १६६   | ६     | खंजरीट    | ९०    | १५    |
| खीरोद              | ४९    | २     | खपण       | २२१   | ११    | खट        | २८८   | १७    |
| खीर                | २     | २३    | खेपनी     | ७१    | १३    | खट्वा     | १३१   | १६८   |
| खुत्               | ११५   | ५२    | खण्डि     | २१८   | १११   |           |       |       |
| खुत्               | ११५   | ५२    |           | { २८  | २६    | खज        | { ९७  | ४     |
| खुत्तामिन्न        | १६९   | १९    | खेम       | { ८९  | १२८   | खजिन्     | { १६  | ८९    |
|                    |       |       |           | { २९७ | ३४    |           | ९७    | ४     |
| खुद्र              | { २६  | ४८    | खोपी      | ५८    | २     | खण्ड      | { २   | १६    |
|                    | { १५९ | १७७   | खोद       | १६१   | ९०    |           | { ७७  | ४२    |
| खुद्रपटिका         | १२६   | ११    | खोदिष्ट   | २१८   | १११   | खंजपरशु   | १     | ३१    |
| खुद्रघोष           | ५३    | २३    | खोद्र     | १८६   | १७    | खंजविकार  | १७३   | ४३    |
| खुद्रा             | { ८१  | ४     | खीम       | { ६४  | २२    | खंजिक     | १६८   | १६    |
|                    | { २७९ | १७७   |           | { १२७ | ११३   | खंजिर     | ७६    | ४९    |
| खुद्राव्यमस्वसंघात | २     | १९    | खुत्त     | २१४   | ९१    | खंजिप     | ९१    | १४१   |
| खुब्ब              | १७६   | ७४    | खमा       | ५८    | १     | खंजोत     | १२    | २८    |
| खुब्बित            | २     | २     | खमाकर     | { ६१  | १     | खनि       | ६६    | ७     |
| खुप्               | ६८    | ८     |           | { १४३ | १     | खनिज      | १६८   | १२    |
| खुमा               | १६९   | २     | खेह       | ४८    | ९     | खपुर      | ९६    | १६९   |
| खुर                | { ८७  | १४    | खेडा      | { १६३ | १७    | खर        | { २३  | ३७    |
|                    | { १७२ | ४९    |           | { २३५ | ४३    |           | { १८  | ७७    |
| खुरक               | ७४    | ४     | खेडित     | २७    | ३४    | खरपाण     | ११३   | ४६    |
| खुरम               | २८९   | २     |           | २७    | ३४    | खरपत      | ११३   | ४६    |
| खुरिन्             | १८८   | १     | ख         | { १७  | १     | खरपुण्या  | ९१    | १३९   |
|                    |       |       |           | { २३१ | १८    | खरमन्त्री | ८२    | ८     |
| खुरक               | { १   | १६    |           | { १२  | ३२    | खय        | ७९    | ६९    |
|                    | { १२  | १     | खग        | { १५९ | ८६    | खय्या     | ८६    | १११   |
|                    | { २७८ | ६१    |           | { २३१ | १९    | खम्ब      | ११५   | ७३    |

| शब्द.       | पृष्ठ.   | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ.   | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ.    | श्लोक. |
|-------------|----------|--------|-----------|----------|--------|--------------|-----------|--------|
| खजूर        | { ९६ १७० |        | ग         | १        |        | गण्डकारी     | ९१        | १४१    |
| खजुरी       | { १८४ ९६ |        | गगन       | १७       | १      | गण्डशैल      | ६६        | ६      |
| खर्व        | { ११३ ४६ |        | गङ्गा     | ५५       | ३१     | गंडाली       | ९४        | १५९    |
| खल          | { २०९ ७० |        | गङ्गाधर   | १०       | ३४     | गडर          | ९४        | १५७    |
| खलपू        | २०५ ४७   |        | गज        | १४९      | ३४     | गडूपद        | ५३        | २२     |
| खलिनी       | १९९ १७   |        | गजता      | १४९      | ३६     | गडूपदी       | ५४        | २४     |
| खलीन        | २२७ ४२   |        | गजबन्धनी  | १५१      | ४३     | गडूषा        | २८४       | १०     |
| खलु         | १५२ ४९   |        | गजभक्ष्या | ८८       | १२३    | गतनासिक      | ११४       | ४६     |
| खलेदारु     | २७४ २५५  |        | गजानन     | ११       | ३८     | गद           | ११५       | ५१     |
| खल्या       | १६८ १५   |        | गजा       | ६३       | ८      | गद्य         | २९४       | ३१     |
| खात         | २२७ ४२   |        | गडक       | ५२       | १७     | गत्री        | १५३       | ५२     |
| खादित       | ५४ २७    |        | गडु       | २८९      | १८     | गघ           | ३१        | ७      |
| खारी        | १८२ ८८   |        | गडुल      | ११४      | ४८     | गंधकुटी      | ८८        | १२३    |
| खारीक       | १६७ १०   |        | गण        | { १०३ ४० |        | गघन          | २४७       | ११५    |
| खारीवाप     | १६७ १०   |        | गणक       | { १५८ ८१ |        | गघनाकुली     | ८७        | ११४    |
| खिल         | ५९ ५     |        | गणदेवता   | { २३५ ४६ |        | गंधफली       | { ७७ ५६   |        |
| खुरणस्      | ११४ ४७   |        | गणनीय     | १४५      | १४     |              | { ७८ ६४   |        |
| खुरणस       | ११४ ४७   |        | गणरात्र   | ६        | १०     | गन्धमादन     | ६६        | ३      |
| खेट         | २०७ ५४   |        | गणरूप     | २०८      | ६४     | गन्धमूली     | ९३        | १५४    |
| खेय         | ५५ २९    |        | गणहासक    | ८१       | ८०     | गन्धरस       | १८५       | १०४    |
| खेला        | ४५ ३३    |        | गणाधिप    | ८९       | १२८    |              | { ७ ११    |        |
| खोड         | ११४ ४९   |        | गणिका     | ११       | ३८     | गन्धर्व      | { १४ ५२   |        |
| ख्यात       | २९७ ९    |        | गणकारिका  | { ८० ७१  |        |              | { ९८ ११   |        |
| ख्यातगहिर्ण | २१४ ९३   |        | गणित      | { १०८ १९ |        |              | { १५१ ४४  |        |
| ख्याति      | २२० ९    |        | गणय       | { ७९ ६६  |        |              | { २५१ १३३ |        |
|             |          |        | गण्ड      | २०८      | ६४     | गन्धर्वहस्तक | ७६        | ५०     |
|             |          |        | गण्डक     | २०८      | ६४     | गन्धवह       | १५        | ६२     |
|             |          |        |           | { १२२ ९० |        | गन्धवहा      | १२२       | ८९     |
|             |          |        |           | { १५० ३७ |        | गन्धवाह      | १५        | ६२     |
|             |          |        |           | ९७       | ४      | गन्धसार      | १३०       | १३१    |

| शब्द              | पृष्ठ | श्लोक | शब्द    | पृष्ठ | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ | श्लोक |
|-------------------|-------|-------|---------|-------|-------|------------|-------|-------|
| धीरविद्वति        | १७४   | ४४    | धो      | { १६७ | ११    | धोमधर      | १     | ७७    |
| धीरविद्वधी        | ८६    | ११    |         | { २६  | १८    | धोमका      | १७२   | १     |
| धीरज्ञा           | ८६    | ११    | धोमस    | { २   | २०    | धोम        | ११८   | १     |
| धीरणी             | ८४    | १     |         | { २११ | ११    | धोमन       | १     | १     |
| धीरिका            | ७     | ४७    | धोनाभीप | १६६   | ६     | धोमपीठ     | ९०    | १     |
| धीरोद             | ४९    | २     | धोप     | २२१   | ११    | धोद        | २८८   | १     |
| धीव               | २     | २१    | धोपणी   | ७१    | ११    | धोका       | १११   | ११    |
| धुत्              | ११७   | ७२    | धोपिठ   | २१८   | १११   |            |       |       |
| धुव               | ११७   | ५२    |         | { २८  | २६    | धो         | { ९७  | ८     |
| धुतामिबनन         | १६९   | १     | धोम     | { ८   | १२८   | धोमि       | ९७    |       |
|                   |       |       |         | { २९७ | १४    |            |       |       |
| धुत्र             | { २ ६ | ४८    | धोषी    | ५८    | २     | धोष        | { २   | ११    |
|                   | { १५९ | १७७   | धोव     | १६१   | १९    | धोषपत्र    | १     | ११    |
| धुत्रपटिका        | १२६   | ११    | धोविद्य | २१८   | १११   | धोषिकार    | १७१   | ४१    |
| धुत्रपत्र         | ५१    | २१    | धोत्र   | १८६   | १ ७   | धोषिक      | १६८   | १६    |
| धुत्रा            | { ८१  | ९४    | धोम     | { ६४  | १२    | धोरि       | ७६    | ४९    |
|                   | { २५९ | १७७   |         | { १२७ | १११   | धोरिप      | ९१    | १४१   |
| धुत्राधमस्वर्षपात | २     | १९    | धोव     | २१४   | १९    | धोषोव      | १ २   | २८    |
| धुत्र             | १७६   | ७४    | धोमा    | ५८    | १     | धोमि       | ६६    | ७     |
| धुत्रित           | २     | २     | धोमभूत  | { १४  | १     | धोमिभ      | १६८   | १२    |
| धुत्र             | ६८    | ८     |         | { १४१ | १     | धोपुर      | ९६    | १६९   |
| धुना              | १६९   | २     | धोम     | ४८    | ९     |            |       |       |
| धुर               | { ८५  | १ ४   | धोम     | { १६१ | १ ७   | धुर        | { २३  | १५    |
|                   | { १७२ | ४९    | धोम     | { २१५ | ४१    | धुरण       | १११   | ४६    |
| धुरक              | ७४    | ४     | धोम     | २ ५   | १४    | धुरणस      | १११   | ४६    |
| धुरप्र            | २८९   | २     | धोम     | ४     |       | धुरणु      | ९१    | ११९   |
| धुरिन्            | १८८   | १     | धोम     | { १७  | १     | धुरमन्त्री | ८२    | ८९    |
|                   |       |       |         | { २११ | १८    | धुर        | ७९    | ६९    |
| धुरक              | { १   | १६    |         | { १ २ | १२    | धुर        | ८६    | १११   |
|                   | { २२  | १     | धोम     | { १५९ | ८६    | धुर        | ११५   | ५१    |
|                   | { २७८ | ६१    |         | { २११ | १     |            |       |       |

| शब्द.       | पृष्ठ    | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ.   | श्लोक | शब्द.        | पृष्ठ.    | श्लोक. |
|-------------|----------|--------|-----------|----------|-------|--------------|-----------|--------|
| खजूर        | { ९६ १७० |        | ग         | १        |       | गण्डकारी     | ९१        | १४१    |
| खजूसी       | { १८४ ९६ |        | गगन       | १७       | १     | गण्डशैल      | ६६        | ६      |
| खर्व        | { ११३ ४६ |        | गङ्गा     | ५५       | ३१    | गंडाली       | ९४        | १५९    |
| खल          | { २०९ ७० |        | गङ्गाधर   | १०       | ३४    | गङ्गीर       | ९४        | १५७    |
| खलपू        | २०५ ४७   |        | गज        | १४९      | ३४    | गङ्गपद       | ५३        | २२     |
| खलिनी       | १९९ १७   |        | गजता      | १४९      | ३६    | गङ्गपदी      | ५४        | २४     |
| खलीन        | १५२ ४९   |        | गजबन्धनी  | १५१      | ४३    | गङ्गषा       | २८४       | १०     |
| खलु         | २७४ २५५  |        | गजभक्ष्या | ८८       | १२३   | गतनासिक      | ११४       | ४६     |
| खलेदार      | १६८ १५   |        | गजानन     | ११       | ३८    | गद           | ११५       | ५१     |
| खल्या       | २२७ ४२   |        | गजा       | ६३       | ८     | गद्य         | २९४       | ३१     |
| खात         | ५४ २७    |        | गडक       | ५२       | १७    | गङ्गी        | १५३       | ५२     |
| खादित       | २१८ ११०  |        | गडु       | २८९      | १८    | गघ           | ३१        | ७      |
| खारी        | १८२ ८८   |        | गडुल      | ११४      | ४८    | गंघकुटी      | ८८        | १२३    |
| खारीक       | १६७ १०   |        | गण        | { १०३ ४० | ४०    | गघन          | २४७       | ११५    |
| खारीवाप     | १६७ १०   |        | गणक       | { १५८ ८१ | ८१    | गंघनाकुली    | ८७        | ११४    |
| खिल         | ५९ ५     |        | गणदेवता   | { २३५ ४६ | ४६    | गंघफली       | { ७७ ५६   | ५६     |
|             | { ८९ १३० |        | गणनीय     | { १४५ १४ | १४    |              | { ७८ ६४   | ६४     |
|             | { १५२ ४९ |        | गणरात्र   | { २०८ ६४ | ६४    | गन्धमादन     | ६६        | ३      |
| खुरणस       | ११४ ४७   |        | गणरूप     | { २४ ६   | ६     | गन्धमूली     | ९३        | १५४    |
| खुरणस       | ११४ ४७   |        | गणहासक    | { ८१ ८०  | ८०    | गन्धरस       | १८५       | १०४    |
| खेट         | २०७ ५४   |        | गणाधिप    | { ८९ १२८ | १२८   |              | { ७ ११    | ११     |
| खेय         | ५५ २९    |        | गणिका     | { ११ ३८  | ३८    | गन्धर्व      | { १४ ५२   | ५२     |
| खेला        | ४५ ३३    |        | गणकारिका  | { ८० ७१  | ७१    |              | { ९८ ११   | ११     |
| खोड         | ११४ ४९   |        | गणित      | { १०८ १९ | १९    |              | { १५१ ४४  | ४४     |
| ख्यात       | २९७ ९    |        | गणैय      | { ७९ ६६  | ६६    |              | { २५१ १३३ | १३३    |
| ख्यातगर्हिण | २१४ ९३   |        | गण्ड      | { २०८ ६४ | ६४    | गन्धर्वहस्तक | ७६        | ५०     |
| ख्याते      | २२० ९    |        | गण्डक     | { १२२ ९० | ९०    | गन्धवह       | १५        | ६२     |
|             |          |        |           | { १५० ३७ | ३७    | गन्धवहा      | १२२       | ८९     |
|             |          |        |           | { ९७ ४   | ४     | गन्धवाह      | १५        | ६२     |
|             |          |        |           |          |       | गन्धसार      | १३०       | १३१    |

| शब्द.      | पृष्ठ    | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ     | श्लोक. | शब्द.          | पृष्ठ     | श्लोक. |
|------------|----------|--------|--------------|-----------|--------|----------------|-----------|--------|
| गन्धारमन्  | १८७      | १०२    | गदमांघ       | ७७        | ४३     | गम्भ           | १७        | ५      |
| गन्धिक     | १८५      | १ २    | गद्वन        | २         | २२     | गम्मा          | १७७       | ६०     |
| गन्धिम्री  | ८८       | १२३    | गर्भ         | { ११२ ३९  |        | गम्पूत         | ६१        | १८     |
| गन्धोत्तमा | १९४      | ३९     |              | { २५१ १३५ |        | गहन            | { ६७ १    |        |
| गंधोष्ठी   | १ १      | २७     | गमक          | १३१       | १३५    |                | { २१२ ८   |        |
| गमस्ति     | २३       | ३३     | गमागार       | ६३        | ८      | गह्वर          | { ६६ ३    |        |
| गमीर       | ७२       | १५     | गमाशय        | ११२       | १८     |                | { २६१ १८१ |        |
| गम         | १३१      | ९५     | गर्भिणी      | १०९       | २२     | गगिय           | { १८३ ९४  |        |
| गमन        | १३१      | ०५     | गर्भोपपाठिनी | १७९       | ६९     |                | { २७७ १५७ |        |
| गमायी      | ७४       | ३५     | गर्भुष       | ९६        | १६७    | गगिबकी         | ८७        | ११७    |
| गम्भीर     | ५२       | १५     | गर्भ         | ४३        | २२     | गाढ            | १६        | ६७     |
| गम्भ       | २१४      | ०२     | गर्भित       | २४६       | १ ३    | गाविकय         | १ ०       | २२     |
| गरज        | २२३      | ३७     | गर्भ         | ३६        | १३     | गार्हप         | १७        | ८४     |
| गरक        | ४८       | ०      | गर्भ         | २ ७       | ५४     | गार्हीप        | १७        | ८४     |
| गद्य       | ७०       | ६९     | गर्भवादिन्   | २०३       | ३७     | गाय            | { ११० ७०  |        |
| गरिमन्     | ११       | ३६     | गर्भ         | १२७       | ८८     | गाय            | { १७० ४   |        |
| गर्ह       | २१८      | ११२    | गर्भकग्रस्त  | १७७       | ६३     | गात्रानुष्ठानी | ११        | १३३    |
| गरी        | ७        | ६०     | गर्भन्तिका   | १७१       | ३१     | गान            | ३८        | २६     |
| गर्ह       | १०       | २०     | गर्भित       | २१६       | १ ४    | गाग्भार        | ३८        | १      |
| गर्हम्भ    | ८        | १९     | गर्भोदय      | १७२       | ४८     | गायत्री        | ७६        | ४९     |
| गर्हाम्भ   | २३       | ३२     | गम्भा        | २२७       | ४२     | गादामय         | १८१       | २      |
| गदय        | १ ३      | ३६     | गद्वन        | ०८        | ११     | गार्भिज        | १०        | २३     |
|            | { १० २९  |        | गदक          | १८४       | १००    | गादतय          | १३५       | १९     |
| गदामय      | { १०७ ३४ |        | गदाय         | ६३        | ९      | गाहय           | ७१        | ३३     |
|            | { २३७ ५८ |        | गदायी        | ९४        | १७६    | गिर            | ३३        | १      |
| गदो        | १८       | ७४     | गदीधर        | १७६       | ५८     | गिरि           | { ६७ १    |        |
| गर्भित     | { १० ८   |        | गदो          | १७        | २५     |                | { २२१ ११  |        |
|            | { १४० ३६ |        | गदोपका       | १७०       | २५     | गिरिकर्णी      | ८५        | १०४    |
| गद         | ४६       | २९     | गदगता        | १३७       | ३२     | गिरिका         | ८         | १२     |
| गद         | १८०      | ७०     | गदीधर        | २१७       | १०५    | गिरिक          | १८५       | १०४    |

| शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|-----------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| गिरिजा      | ११     | ३७     | गुन्द्र   | ९५     | १६२    | गृक्षन      | ९२     | १४८    |
| गिरिजामल    | १८४    | १००    | गुन्द्रा  | { ७७   | ५५     | गृधु        | २००    | २२     |
| गिरिमल्लिका | ७९     | ६६     |           | { ९५   | १६०    | गृध्र       | १००    | २१     |
| गिरिश       | १०     | ३१     | गुप्त     | { २१३  | ८९     | गृध्रसी     | २८४    | १०     |
| गिरीश       | १०     | ३१     |           | { २१७  | १०६    | गृष्टि      | ९३     | १५०    |
| गिलित       | २१८    | ११०    | गुप्तवाद  | २५८    | १६७    |             | { ६२   | ४      |
| गीत         | ३८     | २६     | गुप्त     | २४०    | ७४     | गृह         | { ६२   | ५      |
| गीर्णि      | २२१    | ११     | गुरण      | २२१    | ११     |             | { २७१  | २३८    |
| गीर्वाण     | ७      | ९      |           | { २१   | २४     | गृहगोधिका   | ९८     | १२     |
| गीष्पति     | २१     | २४     | गुरु      | { १३३  | ७      | गृहपति      | १४५    | १५     |
| गुग्गुलु    | ७३     | ३४     |           | { २५७  | १६२    | गृहयालु     | २०१    | २७     |
| गुच्छ       | { १२५  | १०५    | गुर्विणी  | १०९    | २२     | गृहस्थूण    | २९४    | ३०     |
|             | { १६९  | २१     | गुल्फ     | ११९    | ७२     | गृहागत      | १३८    | ३४     |
| गुच्छक      | ७०     | १६     |           | { ६८   | ९      | गृहाराम     | ६७     | १      |
| गुच्छार्द्ध | { १२५  | १०५    | गुल्म     | { ११८  | ६६     | गृहावग्रहणी | ६४     | १३     |
| गुजा        | ८४     | ९८     |           | { १५८  | ८१     | गृहिन       | १३२    | ३      |
| गुड         | २३४    | ४२     |           | { २५३  | १४२    | गृहीतृ      | २०१    | २७     |
| गुडपुष्प    | ७२     | २७     | गुल्मिनी  | ६९     | ९      |             |        |        |
| गुडफल       | ७२     | २८     | गुवाक     | ९६     | १६९    | गृह्यक      | { १०४  | ४३     |
| गुडा        | ८५     | १०५    | गुह       | १२     | ३९     |             | { १९९  | १६     |
| गुह्यची     | ८२     | ८२     | गुहा      | { ६६   | ६      | गन्दुक      | १३१    | १३८    |
|             |        |        |           | { ८३   | ९३     | गेह         | ६२     | ४      |
|             | { २९   | २९     | गुह्य     | २५५    | १५४    | गैरिक       | { ६७   | ८      |
|             | { १५९  | ८५     | गुह्यक    | ७      | ११     | गैरेय       | { २२९  | १२     |
| गुड         | { १७१  | २८     | गुह्यकेसर | १६     | ६८     |             | { १७७  | ६०     |
|             | { १९१  | २७     | गूढ       | २१३    | ८९     | गो ( गौ )   | { १७८  | ६६     |
|             | { १३५  | ४७     | गूढपाद    | ४७     | ७      |             | { २३२  | २५     |
| गुणवृक्षक   | ५१     | ५२     | गूढपुरुष  | १४५    | १३     | गोकण्टक     | ८४     | ९३     |
| गुणत        | २१३    | ८८     | गूय       | ११८    | ६८     |             | { ९८   | १०     |
| गुटित       | २१३    | ८९     | गून       | २१५    | ९६     | गोकर्ण      | { १२१  | ८३     |
| गुद         | ३१९    | ७३     |           |        |        |             |        |        |

| शब्द     | पृष्ठ | श्लोक | शब्द    | पृष्ठ | श्लोक | शब्द     | पृष्ठ | श्लोक |
|----------|-------|-------|---------|-------|-------|----------|-------|-------|
| गोकर्णी  | ८२    | ८४    | गोपाक   | १७६   | ५७    | गोस्तनी  | ८५    | १७    |
| गोकुल    | १७६   | ५८    | गोपी    | १७६   | ११२   | गोस्थानक | ६     | १३    |
| गोसुरक   | १४    | ९९    |         | ६४    | १३    | गौतम     | ८     | १७    |
| गोधर     | २१    | ८     | गोपुर   | ९     | १३२   | गोभार    | ९७    | ६     |
| गोविन्दा | ८८    | ११९   |         | २६    | १८२   | गोभय     | ९७    | ६     |
| गोहृन्वा | ९४    | १७६   | गोप्यक  | १९    | १७    | गाधर     | ९७    | ६     |
| गोह      | २८९   | १८    | गोमल    | १७६   | ५८    |          | ३२    | १३    |
|          | ६१    | १     | गामव    | १७१   | ५     | योर      | ३२    | १४    |
| गोन      | १३२   | १     | गौमाधु  | ७     | ७     |          | २६२   | १८९   |
|          | २६    | १८    | गोमिन्  | १७६   | ५८    | मौरी     | ११    | २६    |
| गोमिन्   | १२    | ४२    | गोरथ    | १७७   | ५६    |          | १६    | ८     |
|          | ७१    | ३     | गोर्द   | ११८   | ६५    | गौपीन    | ६     | १३    |
| गोना     | १७७   | ६     | गाळ     | २८९   | २     | गम्य     | २६    | १७९   |
| गोदारव   | १६८   | १४    | गोळक    | १११   | ३६    | गम्य     | ७७    | १६२   |
| गोधुह    | १७६   | ७     | गोळा    | १८६   | १८    | गम्यक    | १८६   | ११    |
| गामन     | १७६   | ७८    | गोळीढ   | ७४    | ३९    | गम्यि    | २१२   | ८६    |
| गोषा     | १५७   | ८६    |         | ८४    | १२    | गम्यिष   | ९     | १३२   |
| गोषापदी  | ८७    | ११९   | गोळीमी  | ४     | १५९   | गम्यि    | ७४    | ३७    |
| गोषि     | १२३   | २     |         | १८६   | १११   | गम्यि    | ८१    | ७७    |
| गोषिका   | ५३    | २२    | गोळीमयी | ७७    | ५५    | गम्य     | ३७    | २     |
| गोषूम    | १६९   | १८    | गोळीम   | १७    | ५     |          | ११८   | १११   |
| गोमर्द   | ९     | ११२   | गोळीम्व | ८     | १९    |          | २५    | ९     |
| गोमल     | ४७    | ४     |         | १४३   | ९१    | गम       | २२    | ८     |
|          | १४४   | ७     | गोळीपी  | १३    | १३१   | गमणीकम्  | ११३   | ५५    |
| गोप      | १७६   | ५७    | गोळ     | ६     | १३    | गमपाति   | २२    | ३     |
|          | २७    | १३    | गोळपति  | ७     | १३    | गमि      | २१    | २७    |
| गोपति    | १७७   | ६३    | गोळी    | १३६   | १५    | गमि      | ३५    | १९    |
| गोप्तर   | १८५   | १४    | गोष्णह  | २४४   | ९४    | गम       | २५२   | १४१   |
| गोपानदी  | ६४    | १५    | गोष्णय  | १७६   | ५७    | गमणी     | २३३   | १४९   |
| गोपित    | २१७   | १३    | गोस्तन  | १२५   | १०५   |          |       |       |

| शब्द.       | पृष्ठ | श्लोक. | शब्द.    | पृष्ठ | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|-------|--------|----------|-------|--------|-------------|--------|--------|
| ग्रामतक्ष   | १८८   | ९      | घण्टारवा | ८५    | १०७    | घोणिन्      | ९७     | २      |
| ग्रामता     | २२७   | ४०     |          | १८    | ७      | घोंटा       | ७४     | ३७     |
| ग्रामार्धान | १८८   | ९      |          | ३९    | ४      |             | ९६     | १६९    |
| ग्रामान्त   | ६५    | २०     | घन       | ४०    | ९      | घोर         | ४२     | २०     |
| ग्रामीणा    | ८३    | ९४     |          | १६०   | ९१     | घोष         | ६५     | २०     |
| ग्राम्य     | ३७    | १९     |          | २०९   | ६६     | घोषक        | ८७     | ११७    |
| ग्राम्यधर्म | १४२   | ५७     | घनरस     | ४९    | ५      | घोषणा       | ३५     | १२     |
|             | ६५    | १      | घनसार    | १३०   | १३०    | घ्राण       | १२२    | ८९     |
| ग्रावन्     | ६६    | ४      | घनाघन    | १४७   | ११०    |             | २१३    | ९०     |
|             | २४६   | १०६    | घर्म     | ४५    | ३३     | घ्राणतर्पण  | ३२     | ११     |
| ग्रास       | १७६   | ५४     | घस्मर    | २००   | २०     | घ्रात       | २१३    | ९०     |
| ग्राह       | ५३    | २१     | घल       | २४    | २      | घ           |        |        |
|             | २२०   | ८      | घाटा     | १२२   | ८८     | च           | २७२    | २४१    |
| ग्राहिन्    | ७१    | २१     | घाटिक    | १६१   | ९७     |             | २७६    | ५      |
| ग्रीवा      | १२२   | ८८     | घात      | १६४   | ११५    | चकोरक       | १०३    | ३५     |
| ग्रीष्म     | २७    | १८     |          | २०१   | २८     |             | १०     | २८     |
| ग्रीवेयक    | १२५   | १०४    | घातुक    | २०६   | ४७     |             | ५०     | ७      |
| ग्लस्त      | २१८   | १११    | घास      | ९६    | १६७    | चक्र        | १००    | २२     |
| ग्लह        | १९५   | ४५     | घुटिका   | ११९   | ७२     |             | १५३    | ५६     |
| ग्लान       | ११६   | ५८     | घुण      | २८९   | १८     |             | १५७    | ७८     |
| ग्लास्तु    | ११६   | ५८     | घूर्णित  | २०२   | ३२     | चक्रकारक    | ८९     | १२९    |
| ग्लौ        | १९    | १४     |          | ४२    | १८     | चक्रपाणि    | ८      | २०     |
| घ           |       |        | घृणा     | २२५   | ३२     | चक्रमर्दक   | ९२     | १४७    |
| घट          | १७२   | ३२     |          | २३६   | ५१     | चक्रयान     | १५३    | ५१     |
| घटना        | १६३   | १०७    | घृणि     | २३    | ३३     | चक्रला      | ९५     | १६०    |
| घटा         | १६३   | १०७    | घृत      | १७५   | ५२     | चक्रवर्तिन् | १४३    | २      |
| घटीयन्त्र   | १९२   | २७     |          | २४०   | ७६     | चक्रवर्तिनी | ९३     | १५३    |
| घट्ट        | २८९   | १८     | घृष्टि   | ९७    | २      | चक्रवाक     | १००    | २२     |
| घण्टापथ     | ६१    | १८     | घोटक     | १५१   | ४३     | चक्रवाल     | १८     | ६      |
| घण्टापाटलि  | ७४    | ३९     | घोणा     | १२२   | ८९     |             | ६५     | २      |



| शब्द.       | पृष्ठ     | श्लोक | शब्द        | पृष्ठ     | श्लोक | शब्द     | पृष्ठ     | श्लोक |
|-------------|-----------|-------|-------------|-----------|-------|----------|-----------|-------|
| चक्राङ्ग    | ११        | २३    | चतुर्मुख    | ८         | २     | चमसी     | २८४       | १०    |
| चक्राङ्गी   | ८९        | ८६    | चतुर्बाण    | १४३       | ५७    | चम्पू    | { १५७ ७८  |       |
| चक्रिन्     | ४७        | ७     | चतुष्पथ     | ३१        | १७    |          | { १५८ ८१  |       |
| चक्रिण      | १८        | ७७    | चतुर्भुजा   | १७८       | ३८    | चम्पू    | ९८        | ९     |
| चक्रुः भवत् | ४७        | ७     | चतुर्हारीणी | १७८       | ६८    | चम्पूक   | ७८        | ६३    |
| चक्रुः      | १२३       | ९३    | चक्र        | { ६४ १३   | १८    | चम्पू    | { ६२ १    |       |
| चक्रुः      | १८५       | १२    | चक्र        | { १३१ १८  |       | चम्पू    | { १०३ ४०  |       |
| चक्रुः      | ७१०       | ७५    | चक्र        | २७५       | ३     | चक्र     | { १४५ १३  |       |
| चक्रुः      | ९९        | १     | चक्र        | { १२२ १२४ |       | चक्र     | { २१ ७४   |       |
| चक्रुः      | { ७३ ५१   |       | चक्र        | { १३ १३१  |       | चक्र     | २         | २३    |
| चक्र        | १         | १८    | चक्र        | { २९ १३   |       | चक्र     | ११९       | ७१    |
| चक्रा       | १         | १८    | चक्र        | { १२ १४१  |       | चक्रायुध | १०        | १७    |
| चक्राधिक    | १८६       | ११    | चक्र        | { २३ १८२  |       | चक्र     | २११       | ८१    |
| चक्र        | १३०       | १८    | चक्र        | १२        | ३१    | चक्रकामा | ३६        | ७     |
| चक्र        | २२        | ३२    | चक्र        | ८८        | १२५   | चक्र     | २१        | ७४    |
| चक्र        | ८९        | १२८   | चक्र        | १         | ३     | चक्र     | २१        | ७४    |
| चक्राङ्ग    | ७३        | ३१    | चक्र        | ११        | १३    | चक्र     | १३३       | २७    |
| चक्राङ्ग    | ८१        | ७६    | चक्र        | १३०       | ८९    | चक्र     | ७८६       | १०    |
| चक्राङ्ग    | १२८       | ११९   | चक्र        | ७         | १३    | चक्र     | { ३ ७     |       |
| चक्राङ्ग    | { १८७ १८७ |       | चक्र        | { १५ ६५   |       | चक्र     | { १२८ १२९ |       |
| चक्राङ्ग    | १         | १९    | चक्र        | { १४ १४   |       | चक्र     | { १४ ४६   |       |
| चक्राङ्ग    | १२        | ३१    | चक्र        | { १४ १४   |       | चक्र     | १२८       | ७     |
| चक्राङ्ग    | ११        | ३७    | चक्र        | { १४ १४   |       | चक्र     | १२८       | १३    |
| चक्राङ्ग    | ६२        | ३     | चक्र        | { १४ १४   |       | चक्र     | १२८       | १३    |
| चक्र        | १०        | १     | चक्र        | १२१       | ८४    | चक्र     | { ७५ ४६   |       |
| चक्र        | ७१        | ७३    | चक्र        | ८         | १     | चक्र     | { १८१ ७१  |       |
| चक्र        | १         | १३    | चक्र        | ७१        | २२    | चक्र     | १२८       | १३    |
| चक्र        | १४३       | ५८    | चक्र        | २०८       | १५    | चक्र     | २१८       | ११    |

| शब्द.        | पृष्ठ.    | श्लोक. | शब्द.         | पृष्ठ.      | श्लोक.    | शब्द.         | पृष्ठ.       | श्लोक.    |
|--------------|-----------|--------|---------------|-------------|-----------|---------------|--------------|-----------|
| चल           | २१०       | ७४     | चाप           | ९९          | १६        | चित्रशिखंडिन् | २२           | २७        |
| चलदल         | ७१        | २०     | चिकित्सक      | ११६         | ५७        | चित्रशिखंडिज  | २१           | २४        |
| चलन          | २१०       | ७४     | चिकित्सा      | ११४         | ५०        | चित्रा        | { ८२ ८७      |           |
| चलाचल        | २१०       | ७४     | चिकुर         | { १२३ २०५   | ९५ ४६     | चिन्ता        | ४४           | २९        |
| चलित         | { १६१ २१२ | ९६ ८७  | चिकण          | १७४         | ४६        | चिपिटक        | १७४          | ४७        |
| चषिका        | ८४        | ९८     | चिकस          | २९६         | ३५        | चिबुक         | १२२          | ९०        |
| चव्य         | ८४        | ९८     | चिचा          | ७५          | ४३        | चिरक्रिय      | १९९          | १७        |
| चषक          | १९५       | ४३     | चित्          | { २९ २७५    | १ ३       | चिरतन         | २११          | ७७        |
| चषाल         | १३५       | १८     | चिता          | ४४          | २९        | चिरप्रसूता    | १७९          | ७१        |
| चाक्रिक      | १६१       | ९७     | चिता          | १६५         | ११७       | चिरविल्व      | ७६           | ४७        |
| चाङ्गरी      | ९१        | १४०    | चिति          | १६५         | ११७       | चिररात्राय    | २७५          | १         |
| चाटकैर       | १००       | १८     | चिति          | १६५         | ११७       | चिरस्य        | २७५          | १         |
| चाण्डाल      | १९०       | २०     | चित्त         | २९          | ३१        | चिराय         | २७५          | १         |
| चाण्डालिका   | १९२       | ३१     | चित्तविभ्रम   | ४४          | २६        | चिरिटी        | १०६          | ९         |
| चातक         | ९९        | १७     | चित्तसमुन्नति | ४३          | २२        | चिञ्चिम       | ५२           | १८        |
| चातुर्वर्ण्य | १३२       | २      | चित्ताभोग     | ३०          | २         | चिल्ल         | { १०० ११६    | २१ ६०     |
| चाप          | १५९       | ८३     | चित्या        | १६५         | ११७       | चिह्न         | २०           | १७        |
| चामर         | १४८       | ३१     | चित्र         | { ३३ ४२ २६० | १७ १९ १७८ | चीन           | ९८           | ९         |
| चामीकर       | १८३       | ९५     | चित्र         | { ७६ ८१ १२९ | ५१ ८० १२३ | चीर           | २९४          | ३१        |
| चामुण्डा     | ११        | ३५     | चित्रक        | { ७६ ८१ १२९ | ५१ ८० १२३ | चीरी          | १०२          | २८        |
| चाम्पेय      | { ७८ ७८   | ६३ ६५  | चित्रकर       | १८८         | ७         | चीवर          | २९४          | ३१        |
| चार          | { १४५ २२२ | १३ १४  | चित्रकृत      | ७२          | २७        | चुक           | { ९१ १७२ २८९ | १४१ ३५ २० |
| चारटी        | ९२        | १४६    | चित्रतडुला    | ८५          | १०६       | चुक्रिका      | ९१           | १४०       |
| चारण         | १८९       | १२     | चित्रपर्णी    | ८३          | ९२        | चुल्ल         | ११६          | ६०        |
| चारु         | २०६       | ५२     | चित्रभानु     | { १४ २२ २४६ | ५६ ३० १०५ | चुलि          | १७१          | २९        |
| चाचिम्प      | १२८       | १२२    | चित्रभानु     | { १४ २२ २४६ | ५६ ३० १०५ | चूचुक         | १२०          | ७७        |
| चालनी        | १७०       | २६     |               |             |           |               |              |           |

| शब्द,   | पृष्ठ                | रक्षक                        | शब्द,                        | पृष्ठ   | रक्षक               | शब्द, | पृष्ठ | रक्षक |
|---------|----------------------|------------------------------|------------------------------|---------|---------------------|-------|-------|-------|
| पूडा    | { १ २ ३१<br>१२४ ९७   | कमलक                         | १८० ७२                       | छित     | २१६ १ ३             |       |       |       |
| पूडामणि | १९५ १ २              | कमलकी                        | ९१ १३७                       | छित     | ४६ २                |       |       |       |
| पूडाल   | ९५ १६                | कन                           | १४० ३२                       | छित     | २१६ ९९              |       |       |       |
| पूत     | ७३ ३३                | { ८५ १ ५<br>९६ १६७<br>१७३ ३७ | छित                          | २१६ १ ३ |                     |       |       |       |
| पूत     | { १३ १३४<br>१६१ ९९   | कना                          | { ८५ १ ५<br>९६ १६७<br>१७३ ३७ | छित     | ८२ ८२               |       |       |       |
| पूतकुलस | १२३ ९६               | कनाकी                        | ८० १२७                       | छित     | १६० ९२              |       |       |       |
| पूति    | २८४ ०                | { ६९ १४<br>१ ३ ३६            | ज                            | २०४ ४३  |                     |       |       |       |
| पूति    | १७ ३८                | कन                           | { ६९ १४<br>१ ३ ३६            | ज       | २१९ ७               |       |       |       |
| पूतक    | १९ १७                | कन                           | ६ १४                         | ज       | { ८९ ६<br>२४१ ८     |       |       |       |
| पूत     | २७७ १२               | कन                           | ६४ १४                        | ज       | { ९ ६<br>२४ ७१      |       |       |       |
| पूतकी   | ७७ ७९                | कन                           | ८४ ३                         | ज       | १५ ३२               |       |       |       |
| पूतन    | २९ ३                 | { २७३ २<br>२४२ ८८            | ज                            | १५५ ६४  |                     |       |       |       |
| पूतना   | २० १७                | { १३६ २९<br>२७ २६९           | ज                            | १९७ ४१  |                     |       |       |       |
| पूतव    | ३९ ३१                | { १४७ २२<br>२१६ ०८           | ज                            | २१८ १११ |                     |       |       |       |
| पूत     | ६७ ७                 | कन                           | { १४७ २२<br>२१६ ०८           | ज       | १७६ ८८              |       |       |       |
| पूत     | ७६ १६                | कन                           | १६३ १०८                      | ज       | ११ ७४               |       |       |       |
| पूतरस   | १३ ७                 | कन                           | १६३ १०८                      | ज       | ७८ ६१               |       |       |       |
| पूतिक   | ३६ १५                | कन                           | १६३ १०८                      | ज       | { २११ ८१<br>२७६ १७९ |       |       |       |
| पूत     | { १९० ११५<br>२६४ २ २ | कन                           | { २ १७<br>७३ १४              | ज       | { ११३ ४३<br>१८७ १   |       |       |       |
| पूत     | { १३४ ११<br>१ ४ ३    | कन                           | १८ ७६                        | ज       | २१ ७४               |       |       |       |
| पूतपुली | ८९ १२३               | कन                           | { ११३ ४४<br>२१६ १०३          | ज       | २१ ७३               |       |       |       |
| पूत     | १२८ १२८              | कन                           | १३४ १३                       | ज       | ११० ७२              |       |       |       |
| पूत     | १९१ २४               | कन                           | १३४ १३                       | ज       | १५६ ७३              |       |       |       |
| पूतिका  | १ १ २५               | कन                           | १३४ १३                       | ज       | १५६ ७३              |       |       |       |
| पूत     | १ १ २५               | कन                           | १३४ १३                       | ज       | १५६ ७३              |       |       |       |
| पूत     | ११६ १ ४              | कन                           | १३४ १३                       | ज       | १५६ ७३              |       |       |       |

| शब्द.    | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------|--------|--------|-----------|--------|--------|------------|--------|--------|
| जटा      | ६९     | ११     | जनि       | २९     | ३०     | जयन्त      | १३     | ४६     |
|          | १२४    | ९७     | जनी       | ९३     | १५३    | जयन्ती     | ७९     | ६५     |
|          | २३४    | ३८     |           | १०६    | ९      | जया        | ७९     | ६५     |
| जटाजूट   | ११     | ३५     | जनुस्     | २९     | ३०     | जय्य       | १५७    | ७४     |
| जटामांसी | ९०     | ९३४    | जन्तु     | २९     | ३०     | जरण        | १७२    | ३६     |
| जटिन्    | ७३     | ३२     | जन्तुफल   | ७१     | २२     | जरत्       | ११३    | ४२     |
| जटिला    | ९०     | १३४    | जन्मन्    | २९     | ३०     | जरद्भव     | १७७    | ६१     |
| जठर      | २२०    | ७७     | जन्मिन    | २९     | ३०     | जरा        | ११२    | ४१     |
|          | २१०    | ७६     | जन्य      | १४३    | ५८     | जरायु      | ११२    | ३८     |
|          | २६२    | १८९    |           | १६२    | १०३    | जरायुज     | २०६    | ५०     |
| जड       | २०     | १९     | जन्यु     | २५६    | १५९    | जल         | ४९     | ३      |
|          | २०३    | ३८     |           | २९     | ३०     |            | २९१    | २३     |
| जडुल     | ११४    | ४९     | जप        | १४१    | ४७     | जलजन्तु    | ५३     | २०     |
| जतु      | १२९    | १२५    | जपापुष्प  | ८०     | ७६     | जलघर       | १८     | ७      |
| जतुक     | १७३    | ४०     | जम्पती    | ११२    | ३८     | जलनिधि     | ४९     | २      |
| जतुका    | १०१    | २६     | जम्बाल    | ५०     | ९      | जलनिर्गम   | ५०     | ७      |
| जतुकृत्  | ९३     | १५३    | जम्बीर    | ७२     | २४     | जलनीली     | ५६     | ३८     |
| जतूका    | ९३     | १३५    |           | ८१     | ७९     | जलपुष्प    | २९१    | २३     |
| जत्रु    | १२०    | ७८     | जम्बु     | ७१     | १९     | जलप्राय    | ६०     | १०     |
| जतक      | ११०    | २८     | जम्बुक    | ९७     | ५      | जलमुक्     | १८     | ७      |
| जनगम     | १९०    | १९     |           | २२८    | ३      | जलव्याल    | ४७     | ५      |
| जनता     | २२७    | ४२     | जम्बू     | ७१     | १९     | जलशुक्ति   | ५३     | २३     |
| जनन      | २९     | ३०     | जम्भ      | ७२     | २४     | जलाधार     | ५४     | २५     |
|          | १३२    | १      | जम्भमेदिन | १२     | ४३     | जलाशय      | ५४     | २५     |
| जननी     | ११०    | २९     | जम्भल     | ७२     | २४     |            | ९५     | १६४    |
| जनपद     | ५९     | ८      | जम्भीर    | ७२     | २४     | जलोच्छ्वास | ५०     | १०     |
| जनयित्री | ११०    | २९     | जय        | ७९     | ६०     |            | ५३     | २२     |
| जनश्रुति | ३४     | ७      |           | १६३    | ११२    | जलौकस्     | ५३     | २२     |
| जनार्दन  | ८      | १९     | जयन       | २३१    | १६     | जलौका      | ५३     | २२     |
| जनाश्रय  | ६३     | ९      |           | २३१    | १२     | जल्पाक     | २०३    | ३६     |

| शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक |
|------------|--------|-------|------------|--------|-------|-------------|--------|-------|
| अस्मिन्    | २१७    | १०७   | आमि        | २५३    | १४२   | आरक         | १७२    | ३३    |
| अव         | { १५   | ६४    | आम्ब       | ७१     | १९    | आर्ष        | ११३    | ४२    |
|            | { १५३  | ७२    | आम्बूनव    | १८४    | ९६    | आर्षवक्र    | १२७    | ११८   |
| अवन        | { १५३  | ४५    | आपक        | १२९    | १२५   | आर्षि       | २२     | ९     |
|            | { १५३  | ७३    | आपा        | १८५    | ६     | आर्षि       | { २१   | २४    |
|            | { २२६  | १८    | आपावीथ     | १८९    | १२    | आर्षि       | { १५८  | ११९   |
| अवनिका     | १२८    | १२    | आपापती     | ११२    | ३८    | आर्षक       | { ७१   | ४४    |
| अङ्गुतनवा  | ५५     | ३१    | आपु        | ११८    | ८     | आर्षक       | { ९१   | १४२   |
| आम्भ       | २२३    | १९    | आर         | १११    | ३५    | आर्षवीथ     | १३     | ३५    |
| आगरितु     | २२     | ३२    | आर         | { ५२   | १६    | आर्ष        | { ४९   | १     |
| आम्भक      | २२     | ३२    | आर         | { २३४  | २     | आर्ष        | { १६८  | २     |
| आतापा      | २२३    | १९    | आरक        | ७      | १३    | आर्षनी      | ९१     | १४२   |
| आर्षात्मिक | ४८     | ११    | आर्षात्मिक | १८९    | १४    | आर्षनीया    | १      | १४२   |
| आर्षिक     | १५६    | ७३    | आर्षी      | ८७     | ११८   | आर्षनीयप    | १६५    | १७    |
| आय         | { २९   | ३१    | आस्म       | { १९   | १९    | आर्षात्मिका | { ८२   | ८२    |
|            | { २४२  | ८५    | आस्म       | { १९९  | १७    | आर्षात्मिका | { ८२   | ८३    |
| आयक        | १८३    | ९५    | आस्म       | २      | २     | आर्षात्मिका | ९१     | १४२   |
| आयवेद      | १४     | ५३    | आस्म       | ८३     | ९     | आर्षा       | ९१     | १४२   |
| आयाम्भ     | १८     | १६    | आस्म       | १५७    | ७७    | आर्षा       | १६५    | १२    |
| आदि        | { २९   | ३१    | आस्म       | ८      | १३    | आर्षा       | १८९    | १४    |
|            | { ८    | ७२    | आस्म       | { १२   | ४२    | आर्षा       | ३५     | १     |
|            | { २३९  | १८    | आस्म       | { १५७  | ७७    | आर्षा       | १६५    | १२    |
| आदी        | ७१     | १९    | आस्म       | २१     | ७१    | आर्षा       | ३३     | १३    |
| आदीकोश     | १३     | १३२   | आस्म       | { २५२  | १४१   | आर्षा       | १      | १३७   |
| आदीक       | १३     | १३२   | आस्म       | ४७     | ८     | आर्षा       | १३३    | २५    |
| आदी        | २७८    | ४     | आस्म       | १२३    | ९२    | आर्षा       | २२३    | ३८    |
| आदी        | १७७    | ३१    | आस्म       | ११३    | ४२    | आर्षा       | ४५     | ३५    |
| आदी        | ११९    | ७२    | आस्म       | { १८   | ७     | आर्षा       | ४५     | ३५    |
| आदी        | १८९    | ११    | आस्म       | { ७९   | ३९    | आर्षा       | { १५७  | ७४    |
| आदी        | १११    | ३२    | आस्म       | { २३७  | ५८    | आर्षा       | { १५७  | ७७    |

| शब्द.          | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.    | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------------|--------|--------|------------|--------|--------|----------|--------|--------|
| जैमन           | १७६    | ५६     | ज्योतिष्   | २७०    | २३०    | डयन      | १५३    | ५२     |
| जेय            | १५७    | ७४     | ज्योत्स्ना | २७     | १६     | डहु      | ७८     | ६०     |
| जैत्र          | १५७    | ७४     | ज्योत्स्नी | ८७     | ११८    | डिडिम    | ४०     | ८      |
| जैवानृक        | १९     | १४     | ज्योत्स्नी | २४     | ५      | डिडोर    | १८५    | १०५    |
|                | १९७    | ६      | ज्वर       | ११६    | ५६     | डिम्ब    | २२२    | १४     |
|                | २२९    | ११     | ज्वलन      | २२६    | ३८     | डिम्ब    | १०३    | ३८     |
| जौगक           | १२९    | १२६    | ज्वाल      | १४     | ५३     | डिम्भा   | २५१    | १३४    |
| जोत्स्नी       | ८७     | ११८    | झ          | १४     | ५७     | डिम्भा   | ११२    | ४१     |
| जोषम्          | २७४    | २५१    | झाटा       | ८९     | १२७    | डुडुम    | ४७     | ५      |
| ज              | १३३    | ५      | झटिति      | २७५    | २      | डुलि     | ५४     | २४     |
| जपित           | २१५    | ९८     | झर         | ६६     | ५      | ढ        |        |        |
| ज्ञप्त         | २१५    | ९८     | झर्झर      | ४०     | ८      | ढका      | ३९     | ६      |
| ज्ञप्ति        | २९     | १      | झर्री      | २८४    | १०     | त        |        |        |
| ज्ञातसिद्धान्त | १४५    | १५     | झप         | ५२     | १७     | तक       | १७५    | ५३     |
| ज्ञाति         | १११    | ३४     | झषा        | ८७     | ११७    | तक्षक    | २२८    | ४      |
| ज्ञातृ         | २०२    | ३०     | झाटल       | ७४     | ३९     | तक्षन्   | १८८    | ९      |
| ज्ञातेय        | १११    | ३५     | झाटलि      | २९७    | ३८     | तट       | ५०     | ७      |
| ज्ञान          | ३०     | ६      | झावुरु     | ७४     | ४०     | तटिनी    | ५५     | ३०     |
| ज्ञानिन्       | १४५    | १४     | क्षिटी     | ८०     | ७४     | तडाग     | ५४     | २८     |
| ज्या           | ५८     | २      | क्षिटी     | ८०     | ७५     | तडित्    | १९     | ९      |
| ज्याघातवारण    | १५९    | ८४     | क्षिष्टिका | १०२    | २८     | तडित्वत् | १८     | ७      |
| ज्यानि         | २२०    | ९      | क्षीरका    | १०२    | २८     | तण्डक    | २९५    | ३३     |
| ज्यायस्        | ११३    | ४३     | टक         | १९३    | ३४     | तण्डुल   | ८५     | १०६    |
|                | २७१    | २३५    | टिट्ठिमक   | १०३    | ३५     | तण्डुलीय | ९०     | १३६    |
| ज्येष्ठ        | २६     | १६     | टीका       | २८३    | ७      | तत       | ३९     | ४      |
|                | २३४    | ४१     | टुटुक      | ७७     | ५६     |          | २१२    | ८६     |
| ज्योतिरिंगण    | १०२    | २८     | ड          |        |        | ततस्     | २७५    | ३      |
| ज्योतिषिक      | १४५    | १४     | डमर        | २२२    | १४     | तत्काल   | १४८    | २९     |
| ज्योतिष्मती    | ९३     | १५०    | डमरु       | ४०     | ८      | तत्त्व   | ४०     | ९      |

| शब्द.    | पृष्ठ | श्लोक    | शब्द.    | पृष्ठ | श्लोक     | शब्द.    | पृष्ठ | श्लोक |  |
|----------|-------|----------|----------|-------|-----------|----------|-------|-------|--|
| तत्पर    | १९७   | १        | तपःश्रवण | १४    | ४२        | तारक     | { १२१ | १२    |  |
| तथा      | २७६   | १        | तपन      | { २२  | ३१        | { २१     | ७५    |       |  |
| तथागत    | ८     | ११       | { ४८     | १     | तारक      | १७५      | ५     |       |  |
| तथ्य     | ३७    | २२       | तपनीय    | १८३   | ९४        | तारसू    | { १५  | ३४    |  |
| तद्      | २७    | ३        | { २६     | १७    | तारसू     | { १६२    | १२    |       |  |
| तद्वर्ष  | १८१   | ८१       | तपसू     | { २७  | २३२       | तारसू    | ११७   | ६३    |  |
| तदा      | २८    | २२       | तपस्य    | २३    | १५        | तारस्विन | { १५६ | ७३    |  |
| तदात्त   | १४८   | २९       | तपस्विन् | १३९   | ४२        | { २७     | १२८   |       |  |
| तदानीम्  | २८    | २२       | तपस्विनी | •     | १३४       | तारि     | ७१    | १     |  |
| तनय      | ११    | २७       | तम       | २२    | २६        | तार      | ६८    | ७     |  |
| तनु      | { ११  | ७१       | तमसू     | { २२  | २६        | तारण     | ११३   | ४२    |  |
| { २८     | ६१    | { ४६     | ३        | ३     | तारणी     | १६       | ८     |       |  |
| { २९     | ६६    | { २७     | १३१      | ३     | तार्क     | ३        | ३     |       |  |
| २४७      | ११३   | तमस्विनी | २४       | ४     | तार्कभिरा | ३४       | ५     |       |  |
| तनुन     | १७७   | ६४       | तमाक     | { ७९  | ६८        | तार्कापी | •     | ६५    |  |
| तनु      | ११९   | ७१       | { २९५    | ३३    | तार्कनी   | १२१      | ८१    |       |  |
| तनुकृत   | २१५   | ९९       | तमाकपत्र | १२९   | १२३       | तार्कक   | १७७   | ६१    |  |
| तनूनपाद् | १४    | ८३       | तमिस     | ४६    | ३         | तार्क    | १७२   | ३४    |  |
| तनूकद    | { १३  | ३३       | तमिस्ता  | २४    | ५         | तार्क    | { १३४ | १४    |  |
| { १२४    |       | तमी      | २४       | ४     | { १७६     | ७६       |       |       |  |
| तन्तु    | १९२   | २८       | तमोगुद्  | २४३   | ८९        | २१       | ४     |       |  |
| तानुम    | १६९   | १७       | तमोपद्   | २७१   | २३८       | तार्कन   | १३५   | १९    |  |
| तानुनाय  | { ९९  | १३       | तरण      | ९७    | १         | तार्क    | { ४४  | ७८    |  |
| { १८८    | ६     | तरंग     | ५७       | १     | { १७६     | ७७       |       |       |  |
| तप       | ७६१   | १८५      | तरंग     | ७     | ५         | तार्क    | { १५  | ८४    |  |
| तपक      | १२७   | ११२      | तरीगिणी  | ७५    | ३         | { २६४    | २७    |       |  |
| तत्रिका  | ८२    | ८७       | तरवि     | { ७२  | ३         | तार्किन  | २५०   | १७७   |  |
| तन्त्री  | { ४६  | ३७       | { ७१     | १     | तार्क     | २५       | १३१   |       |  |
| { २७     | १७६   | { ८      | ७३       | ७३    | तार्क     | २८       | २७    |       |  |
| तन       | २७    | १        | तारण्य   | ५१    | ११        | तार्क    | २१७   | ९९    |  |

| शब्द.        | पृष्ठ.    | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ.   | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ.    | श्लोक. |
|--------------|-----------|--------|--------------|----------|--------|--------------|-----------|--------|
| तस्कर        | १९१       | २४     | तालपत्र      | १२५      | १०३    | तिरन्        | { २७५ २५६ |        |
| तांडव        | { ४० १०   |        | तालपर्णी     | ८८       | १२३    |              | { २७६ ६   |        |
|              | { २९५ ३४  |        | तालमूलका     | ८७       | ११९    | तिरस्करिणी   | १२८       | १२०    |
| तात          | ११०       | २८     | तालवृन्तक    | १३२      | १४०    | तिरस्किया    | ४३        | २२     |
| तात्रिक      | १४५       | १५     | ताला         | ९        | २४     | तिरोट        | { ७३ ३३   |        |
| तापस         | १३९       | ४२     | ताली         | { ८९ १२७ |        |              | { २९४ ३०  |        |
| तापसतरु      | ७५        | ४६     |              | { ९६ १७० |        | तिरोधान      | १९        | १३     |
| तापिन्ध्र    | ७९        | ६८     | तालु         | १२२      | ९१     | तिरोहित      | १६४       | ११२    |
| तामरस        | ५७        | ४०     | तावत्        | २७३      | २४६    | तिर्यच्      | २०३       | ३४     |
| तामलकी       | ८९        | १२७    | तिक्त        | ३१       | ९      |              | { ७४ ४०   |        |
| तामसी        | २४        | ५      | तिक्तक       | { ३१ ९   |        |              | { ११४ ४९  |        |
| ताम्बूलवल्ली | ८८        | १२०    |              | { ९४ १५५ |        | तिलक         | { ११८ ६५  |        |
| ताम्बूली     | ८८        | १२०    | तिक्तशाख     | ७२       | २५     |              | { १२९ १२३ |        |
| ताम्रक       | १८४       | ९७     | तिग्म        | २३       | ३५     |              | { १७३ ४३  |        |
| ताम्रकर्णी   | १८        | ५      | तिट्मुवन्तचय | ३३       | २      | तिलकालक      | ११४       | ४९     |
| ताम्रकुट्टक  | १८८       | ८      | तितउ         | १७०      | २६     | तिलपर्णी     | १३०       | १३२    |
| ताम्रचूड     | ९९        | १७     | तितिधा       | ४३       | २४     | तिलपिज       | १६९       | १९     |
| तीर          | { ३९ २    |        | तितिधु       | ०००      | ३१     | तिलपेज       | १६९       | १९     |
|              | { २५७ १६६ |        | तित्तिरि     | १०२      | ३५     | तिलित्स      | ४७        | ५      |
| ताकरजित्     | १२        | ४०     | तिथि         | २८       | १      | तित्य        | १६६       | ७      |
| तारका        | { २१ २१   |        | तिनिश        | ७२       | २६     | तित्व        | ७३        | ३३     |
|              | { १२३ ९२  |        | तित्तिडी     | ७५       | ४३     |              |           |        |
| तारा         | २१        | २१     | तित्तिडीक    | १७२      | ३५     | तिष्य        | { २१ २२   |        |
| तारुण्य      | ११२       | ४०     | तिन्दुक      | ७४       | ३८     |              | { २५४ १४७ |        |
| ताक्ष्य      | { १० २९   |        | तिन्दुकी     | २८४      | ८      | तिष्यफला     | ७७        | ५७     |
|              | { २५३ १४५ |        | तिमि         | ५३       | १९     |              | { २३ ३५   |        |
| ताक्ष्यशैल   | १८५       | १९२    | तिमिगिल      | ५३       | २०     | तीक्ष्ण      | { १८४ ९८  |        |
|              | { ४० ९    |        | तिमित        | २१७      | १०५    | तीक्ष्णगन्धक | { २३६ ५३  |        |
|              | { ९६ १६८  |        | तिमिर        | ४६       | ३      | तीर          | { ५० ७    |        |
| ताल          | { १२१ ८३  |        |              |          |        |              |           |        |
|              | { १८५ १०३ |        |              |          |        |              |           |        |



| शब्द.          | पृष्ठ | श्लोक | शब्द.      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द.       | पृष्ठ | श्लोक |
|----------------|-------|-------|------------|-------|-------|-------------|-------|-------|
| तीर्थ          | { १११ | ५०    | गुरुक      | १५१   | ४३    | गुणीकाम     | २००   | ९     |
|                | { २४२ | ८६    | गुरगम      | ११    | ४३    | गुण         | { ९६  | १६५   |
| तीव्र          | १६    | ४०    | गुरगवदन    | १७    | ७१    |             | { ९६  | १६७   |
| तीमवेदना       | ४९    | ३     | गुराघाह    | १२    | ४४    | गुणप्रम     | ९६    | १७    |
| तु             | { २७७ | २४२   | गुरुक      | १२९   | १२८   | गुणवान्य    | १७०   | २५    |
|                | { २७८ | १५    | गुरु       | १८२   | ८७    | गुणध्वज     | ९५    | १६    |
|                | { २७६ | ५     | गुणाकीर्ति | १२६   | १०९   | गुणरज       | ९६    | १६८   |
| तुल            | { ७२  | २५    | गुणामात्र  | १८२   | ८१    | गुणस्थ      | ७९    | ६०    |
|                | { २९  | ७०    | गुण        | १९१   | ३६    | गुणा        | ९६    | १६१   |
| द्विती         | ९१    | १३९   | गुण्यगण    | १७६   | ५५    | गुणीबाक्य   | १६७   | ९     |
| गुण्य          | २७    | ५६    | गुण        | ३१    | ९     | गुणियामकृति | ११०   | ३     |
| गुण            | १२२   | ८९    | गुणिका     | ९     | १३१   | गुण         | २१६   | १३    |
| गुणिकरी        | { ८०  | ११३   | गुण        | { ७७  | ५८    | गुणित       | १७९   | ५६    |
|                | { ९१  | १२९   | गुण        | { १६९ | ९२    |             | { ४४  | २७    |
| गुण            | १८५   | १०१   | गुण        | { २०  | १८    | गुण         | { १०९ | ५५    |
| गुण्य          | { ८३  | ९५    | गुणार      | { २   | १०    | गुणक        | २     | २२    |
|                | { ८९  | १२५   |            |       |       | गुणा        | २३६   | ७१    |
| गुणवान         | १८५   | ११    | गणित       | ७     | १     | गुण्य       | ९५    | १६१   |
| गुण्य          | ११    | ७७    | गुणिन      | २     | १८    | गुण्य       | ९५    | १६२   |
| गुण्यपरिमृज    | १९०   | १८    | गुण        | १३    | ८८    | गुण्यक      | ९५    | १६२   |
| गुणिन्         | ११३   | ४४    | गुणी       | १३    | ८९    | गुण्यनी     | ८२    | ८३    |
| गुणिम          | { ११३ | ४४    | गुणीर      | १३    | ८८    |             | { ११७ | ६२    |
|                | { ११७ | ३१    | गुण        | ७५    | ४१    | गुण्य       | { ७७  | २३४   |
| गुणिक          | { ११३ | ४४    | गुण        | १     | ६५    | गुणित       | २१४   | ९१    |
|                | { ११७ | ३१    |            | { ७५  | ४२    |             |       |       |
| गुण            | ८९    | १२७   | गुण        | { १८७ | १     | गुण्य       | २२५   | ९     |
| गुण्यव         | १८८   | ६     | गुणिका     | १०९   | ३०    | गुण्य       | १०४   | ४४    |
| गुण ( व ) रिका | ११३   | १३१   | गुण        | २५७   | १६५   | गुण्य       | १८४   | ९९    |
| गुण्य          | १६३   | १     | गुणीय      | २७७   | ९     | गुण्य       | १९३   | ३३    |
| गुणी           | ९४    | ११५   | गुणीक्षी   | २४    | ३९    | गुणित       | १४    | ४६    |
| गुण्य          | १५१   | ४३    | गुणीक      | ९४    | ३९    | गुण्यनिक    | १३    | १३१   |

| शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|--------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| तैलपायिकः  | १०१    | २६     | त्रास        | ४२     | २१     | त्रिसव्य    | २४     | ३      |
| तैलपाता    | २८३    | ६      | त्रिक        | { ४०   | १०     | त्रिसीत्य   | १६७    | ९      |
| तैलान      | १६६    | ७      |              | { १२०  | ७६     | त्रिस्रोतस् | ५५     | ३१     |
| तैष        | २६     | १५     | त्रिककुद्    | ६६     | २      | त्रिहल्य    | १६७    | ९      |
| तोफ        | ११०    | २८     | त्रिकटु      | १८६    | १११    | त्रिहायणी   | १७८    | ६८     |
| तोकक       | ९९     | १७     | त्रिका       | ५४     | २७     |             | { ८९   | १२५    |
| तोकम       | १६८    | १६     | त्रिक्ट      | ६६     | २      | त्रुटि      | { २०८  | ६२     |
| तोटक       | २९४    | ३०     | त्रिखट्ट     | २९८    | ४१     |             | { २३४  | ३७     |
| तोत्र      | { १५०  | ४१     | त्रिखट्वा    | २९८    | ४१     | त्रेता      | { १३५  | २०     |
|            | { १६७  | १२     | त्रिगुणाकृत  | १६७    | ९      |             | { २३९  | ६९     |
| तोदन       | १६७    | १२     | त्रितक्ष     | २९८    | ४१     | त्रोटि      | १०३    | ३६     |
| तोमर       | १६०    | ९३     | त्रितक्षी    | २९८    | ४१     | त्र्यन्दा   | १७८    | ६८     |
| तोय        | ४९     | ४      | त्रिदश       |        | ७      | त्र्यबक     | १०     | ३३     |
| तोयपिप्पली | ८६     | १११    | त्रिदशालय    | ६      | ६      | त्र्यम्बकसख | १६     | ६८     |
| तोरण       | ६४     | १६     | त्रिदिव      | ६      | ६      | त्र्यूपण    | १८६    | १११    |
| तौर्यत्रिक | ४०     | १०     | त्रिदिवेश    | ७      | ७      | त्व         | २१२    | ८२     |
| त्यक्त     | २१७    | १०७    | त्रिपथगा     | ५५     | ३१     | त्वक्षीरी   | १८६    | १०९    |
| त्वाग      | १३७    | २९     | त्रिपुटा     | { ८५   | १०८    | त्वकूपत्र   | ९०     | १३४    |
| त्रषा      | ४३     | २३     |              | { ८९   | १२५    | त्वक्सार    | ९५     | १६०    |
| त्रप्सु    | १८५    | १०५    | त्रिपुरान्तक | १०     | ३३     | त्वच्       | { ६९   | १२     |
| त्रथी      | { ३३   | ३      | त्रिफला      | १८७    | १११    |             | { ११७  | ६२     |
|            | { ३४   | ३      | त्रिमण्डो    | ८५     | १०८    | त्वच        | ९०     | १३४    |
| त्रस       | २१०    | ७४     | त्रियामा     | २४     | ४      | त्वचिसार    | ९५     | १६०    |
| त्रसर      | २२४    | २४     | त्रिलोचन     | १०     | ३२     | त्वरा       | २२४    | २६     |
| त्रस्त     | २०१    | २६     | त्रिवर्ग     | { १४३  | ५७     | त्वरित      | { १५   | ६४     |
| त्राण      | { २१७  | १०६    |              | { १४६  | १९     |             | { १५६  | ७३     |
|            | { २२०  | ८      | त्रिविक्रम   | ८      | २०     | त्वरितोदित  | ३७     | २०     |
| त्रात      | २१७    | १०६    | त्रिविष्टप   | ६      | ६      | त्वष्ट      | २१५    | ९९     |
| त्रायन्ती  | ९३     | १५०    | त्रिवृत्     | ८५     | १०८    | त्वष्टृ     | { १८८  | ९      |
| त्रायमाणा  | ९३     | १५०    | त्रिवृता     | ८५     | १०८    |             | { २३३  | ३५     |

| शब्द       | पृष्ठ | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द        | पृष्ठ | श्लोक |
|------------|-------|-------|-----------|-------|-------|-------------|-------|-------|
| विह (पृ)   | २३    | २४    | दवाहव     | १७५   | ५३    | विपित       | २७    | ६१    |
| विपाम्यति  | २२    | १     | वह्म      | १७५   | ५३    | व           | ४२    | २१    |
| सद         | १६    | १     | वह्म      | ११६   | ५०    |             | २६१   | १८४   |
|            |       |       | दहुरेयिम् | ११६   | ५१    | दर          | २८४   | १     |
|            |       |       | वधित      | ७१    | २१    | वजि         | २६    | ४९    |
| वैद्य      | ११    | २७    | वधितक     | ७१    | २१    | वरी         | ६६    | ६     |
| वैद्यन     | १५१   | ६४    | वधितक     | १७५   | ७८    | वजुर        | ५४    | २४    |
| वधित       | १५५   | ६     | वजु       | ७     | १२    | वर्षक       | ९     | २५    |
| वशी        | ११    | २७    | वन्त      | १२२   | ५१    | वर्षण       | १३२   | १४    |
| वैद्वन्    | १७    | २     | वन्तपावन  | ७६    | ६०    | वर्म        | ६     | १६६   |
| वद्य       | १९    | १     | वन्तभागा  | ७     | ४     | वर्षि       | १७२   | १४    |
| वधित       | १९७   |       | वन्तघाट   | ७१    | २१    | वर्षीकर     | ४७    | ८     |
| वधितस्व    | १५४   | ६     |           | ७२    | २१    | वद्य        | २५    | ८     |
| वधिता      | १७    | १     | वन्तघाटा  | ११    | १४    |             | १६१   | ४८    |
| वधित्यामि  | १३५   | १     | वन्तावक   | १४१   | १४    | वर्षक       | १४४   | ६     |
| वधित्याद   | ११    | २४    | वन्तिका   | ९२    | १४४   | वर्षान      | २२५   | ११    |
| वधित्याई   | १७    | ७     | वन्तिन्   | १६९   | १४    | वक          | ६९    | १४    |
| वधित्याम   | १९७   | ५     | वन्तघाट   | ४७    | ८     | वक          | २६५   | २६    |
| वधित्यामन् | ११    | २४    | वम        | २८    | ६१    | वनिष्ठ      | ७९    | ६९    |
| वधित्या    | १७    | ५     | वम        | १४६   | २१    | वन्धीयस्    | २     | ६९    |
| वधित्या    | २१५   | १     |           | २१    | १     | वद्यन       | १२२   | १     |
| वधित्या    | १७    | ४९    | वम        | २१    | १     | वद्यमवावत   | १२२   |       |
|            |       |       | वमित      | २१५   | ९७    | वद्यवद्य    | ८     | १४    |
|            |       |       | वमुना     | १४    | ५६    | वद्यमिन्    | १११   | ४१    |
| वद्य       | १६६   | २१    | वम्यती    | ११२   | १८    | वद्यमीत्य   | २४३   | ८७    |
|            | १८८   | ७९    | वम्य      | ४४    | १     |             | १२७   | ११४   |
|            | ७७४   | ४९    | वम्यीति   | १३    | ७७    |             | २६७   | ७१६   |
| वद्यपर     | १४    | ५     | वम्य      | १७७   | ७७    | वद्यानीकिनी | १८    | ८१    |
| वद्यनीति   | १४    | ५     | वया       | ४२    | १८    |             | १८    | ११    |
| वद्यनीति   | १८    | ७४    | वया       | १८    | १८    |             | १८    | १४    |

| शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक.   | शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|-------------|--------|----------|--------------|--------|--------|
| दक्ष        | १३     | ५१     | दारु        | { ६९   | १३       | दिवस         | २४     | २      |
| दहन         | १४     | ५५     | { ७७        | ५३     | दिवस्पति | १२           | ४२     |        |
| दाक्षायणी { | ११     | ३७     | दारुण       | ४२     | २०       | दिवा         | २७६    | ६      |
|             | २१     | २१     | दारुहरिद्रा | ८४     | १०२      | दिवाकर       | २२     | २८     |
| दाक्षाय्य   | १००    | २१     | दारुहस्तक   | १७२    | ३४       | दिवाकीर्ति { | १८८    | १०     |
| दाढिम       | ७८     | ६४     | दार्वाघाट   | ९९     | १७       |              | १९०    | १९     |
| दाढिमपुष्पक | ७६     | ४९     | दार्विका    | { ८८   | ११९      | दिविषद्      | ७      | ८      |
| दाढपाता     | २८३    | ६      | { १८५       | १०१    |          | दिवौकस् {    | ७      | ७      |
| दात         | २१६    | १०३    | दार्वा      | ८४     | १०२      |              | २६९    | २२६    |
| दात्यूह     | १००    | २१     | दाव         | २६५    | २०६      | दिव्यगायन    | २५१    | १३३    |
| दात्र       | १६८    | १३     | दाविक       | ५६     | ३६       | दिव्योपपादुक | २०६    | ५०     |
|             | { १३७  | २९     | दाग         | ५२     | १५       | दिश्         | १७     | १      |
| दान         | { १४६  | २०     | दाशपुर      | ९०     | ३३१      | दिश्य        | १७     | २      |
|             | { १५०  | ३७     | दास         | १९०    | १७       |              | २४     | १      |
| दानव        | ७      | १२     | दासी        | ८०     | ७४       | दिष्ट        | { २९   | २८     |
| दानवारि     | ७      | ९      | दासीसम      | २९२    | २७       |              | २३३    | ३५     |
| दानशौड      | १९७    | ६      | दासेय       | १९०    | १७       | दिष्टान्त    | १६४    | ११६    |
| दांत        | { १४०  | ४२     | दासेर       | १९०    | १७       | दिष्टया      | २७७    | १०     |
|             | { २१५  | ९७     | दिगम्यर     | २०४    | ३९       | दीक्षान्त    | १३७    | २७     |
| दाति        | २१९    | ३      | दिग्गज      | १८     | ४        | दीक्षित      | १३३    | ८      |
| दापित       | २०४    | ४०     | दिग्ध       | { १६०  | ८८       | दीदिवि       | १७५    | ४८     |
| दामन्       | १७९    | ७३     |             | { २१३  | ९०       | दीधिति       | २३     | ३३     |
| दामनी       | १७९    | ७३     | दित         | २१६    | २०३      | दीन          | २०६    | ४९     |
| दामोदर      | ८      | १८     | दितिमुत्त   | ७      | १२       | दीप          | १३१    | १३८    |
| दाम्भिक     | २३०    | १७     | दिधिपु.     | १०९    | २३       | दीपक         | २२९    | ११     |
| दायाद       | २४३    | ८९     | दिधिपू      | १०९    | २३       | दीप्ति       | २३     | ३४     |
| दारद        | ४८     | ११     | दिन         | २४     | २        | दीप्य        | ८६     | १११    |
| दारा        | १०५    | ६      | दिनान्त     | २४     | ३        | दीर्घ        | २०९    | ६९     |
| दारित       | २१६    | १००    | दिव         | { ६    | ६        | दीर्घकोशिका  | ५४     | २५     |
|             |        |        |             | { १७   | २        | दीर्घदर्शिन  | १३३    | ६      |

| शब्द         | पृष्ठ    | श्लोक | शब्द        | पृष्ठ    | श्लोक | शब्द        | पृष्ठ     | श्लोक |
|--------------|----------|-------|-------------|----------|-------|-------------|-----------|-------|
| त्वित् ( ५ ) | { २३ २४  | २४    | हवाहव       | १७१      | ८३    | दायित       | २ ७       | ६३    |
| त्वियाम्पति  | २७       | ३     | दक्षुम      | १२       | १४७   | दर          | { ४२ २१   |       |
| स्व          | २६       | ९     | दक्षुष      | ११६      | ५९    |             | { २६१ १८४ |       |
|              | ६        |       | दक्षुरेगिम् | ११६      | ५९    | दरत्        | २/४       | ९     |
|              |          |       | दक्षित्य    | ७१       | २१    | दारद        | २ ६       | ४०    |
| दक्ष         | १ १      | २७    | दक्षिकछ     | ७१       | २१    | दरी         | ६६        | ६     |
| दक्षान       | १८५      | ६४    | दक्षिकवन्तु | १७५      | ७८    | दक्षुर      | ५४        | २४    |
| दक्षित       | १८५      | ६५    | दक्षुष      | ७        | १२    | दर्पक       | ९         | २५    |
| दक्षी        | १ १      | २७    | दन्त        | १२२      | ०१    | दर्पण       | ११२       | १४    |
| दक्षिन्      | ९७       | २     | दन्तपावन    | ७६       | ४०    | दर्म        | ९६        | १६६   |
| दक्ष         | १९       | १०    | दन्तमाग     | ५        | ४     | दर्शि       | १७२       | ३४    |
| दक्षिण       | १९७      |       | दन्तघात     | { ७१ २१  |       | दर्शीकर     | ४७        | ८     |
| दक्षिणस्य    | १५४      | ६     |             | { ७२ २४  |       | दशा         | { २५ ८    |       |
| दक्षिणा      | १७       | १     | दन्तघाता    | ९१       | १४    |             | { १४१ ४८  |       |
| दक्षिणामि    | १३५      | १९    | दन्तावध     | १४०      | ३४    | दशाक        | १४४       | ६     |
| दक्षिणार     | १ १      | २४    | दक्षिण्य    | ९२       | १४४   | दर्शन       | २२५       | ३१    |
| दक्षिणार्ह   | १९७      | ५     | दक्षिन्     | १४९      | ३४    | दक्ष        | ६०        | १४    |
| दक्षिणीन     | १९७      | ५     | दन्तशूक     | ४७       | ८     | दक्ष        | २६५       | २ ६   |
| दक्षिणैर्यम् | १९१      | २४    | दक्ष        | २ ८      | ६१    | दक्षिण      | ७ ०       | ६९    |
| दक्षिण्य     | १ ७      | ५     | दक्ष        | { १४६ २१ |       | दक्षिणम्    | २ ९       | ६९    |
| दक्ष         | २१५      | ९     |             | { २१ ३   |       | दक्षान      | १२२       | १     |
| दक्षिणका     | १०५      | ४९    | दक्षय       | २१९      | ३     | दक्षानपातय  | १२२       |       |
|              | { २३ ३१  |       | दक्षित      | २१५      | ९७    | दक्षवध      | ८         | १४    |
|              | { १४६ २  |       | दक्षुमा     | १८       | ५६    | दक्षमिन्    | १११       | ४३    |
|              | { १४६ २१ |       | दक्ष्यती    | ११२      | ३८    | दक्षमीस्थ   | २४३       | ८७    |
|              | { १५८ ७९ |       | दक्ष्म      | ४४       | ३     | दक्षा       | { १२७ ११४ |       |
|              | { २३४ ४२ |       | दक्ष्मीक्षि | १३       | ४७    |             | { २६७ २१६ |       |
| दक्षर        | १८       | ५९    | दक्ष्य      | १७७      | ६२    | दक्षानीकिनी | १८८       | ८१    |
| दक्षणीति     | ३४       | ५     | दक्ष        | ४२       | १८    | दक्ष्य      | { १४५ ११  |       |
| दक्षिणकम्म   | १८०      | ७४    | दक्ष        | १९८      | १८    |             | { १९१ २४  |       |

| शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|-------------|--------|--------|--------------|--------|--------|
| दस्त        | १३     | ५१     | दारु        | { ६९   | १३     | दिवस         | २४     | २      |
| दहन         | १४     | ५५     | { ७७        | ५३     |        | दिवस्पति     | १२     | ४२     |
| दाक्षायणी { | ११     | ३७     | दारुण       | ४२     | २०     | दिवा         | २७६    | ६      |
|             | २१     | २१     | दारुहरिद्रा | ८४     | १०२    | दिवाकर       | २२     | २८     |
| दाक्षाय्य   | १००    | २१     | दारुहस्तक   | १७२    | ३४     | दिवाकीर्ति { | १८८    | १०     |
| दाढिम       | ७८     | ६४     | दार्वाघाट   | ९९     | १७     |              | १९०    | १९     |
| दाढिमपुष्पक | ७६     | ४९     | दार्विका    | { ८८   | ११९    | दिविषद्      | ७      | ८      |
| दाढपाता     | २८३    | ६      | { १८५       | १०१    |        | दिवौकस् {    | ७      | ७      |
| दात         | २१६    | १०३    | दार्वी      | ८४     | १०२    |              | २६९    | २२६    |
| दात्यूह     | १००    | २१     | दाव         | २६५    | २०६    | दिव्यगायन    | २५१    | १३३    |
| दात्र       | १६८    | १३     | दाविक       | ५६     | ३६     | दिव्योपपादुक | २०६    | ५०     |
|             | { १३७  | २९     | दाश         | ५२     | १५     | दिश्         | १७     | १      |
| दान         | { १४६  | २०     | दागपुर      | ९०     | ३३१    | दिश्य        | १७     | २      |
|             | { १५०  | ३७     | दास         | १९०    | १७     |              | २४     | १      |
| दानव        | ७      | १२     | दासी        | ८०     | ७४     | दिष्ट        | { २९   | २८     |
| दानवारि     | ७      | ९      | दासीसभ      | २९२    | २७     |              | २३३    | ३५     |
| दानशौढ      | १९७    | ६      | दासेय       | १९०    | १७     | दिष्टान्त    | १६४    | ११६    |
|             | { १४०  | ४२     | दासेर       | १९०    | १७     | दिष्टया      | २७७    | १०     |
| दांत        | { २१५  | ९७     | दिगम्बर     | २०४    | ३९     | दीक्षान्त    | १३७    | २७     |
| दाति        | २१९    | ३      | दिग्गज      | १८     | ४      | दीक्षित      | १३३    | ८      |
| दापित       | २०४    | ४०     | दिग्ध       | { १६०  | ८८     | दीदिवि       | १७५    | ४८     |
| दामन्       | १७९    | ७३     |             | { २१३  | ९०     | दीधिति       | २३     | ३३     |
| दामनी       | १७९    | ७३     | दित         | २१६    | २०३    | दीन          | २०६    | ४९     |
| दामोदर      | ८      | १८     | दितिमुत     | ७      | १२     | दीप          | १३१    | १३८    |
| दाम्भिक     | २३०    | १७     | दिधिपु.     | १०९    | २३     | दीपक         | २२९    | ११     |
| दायाद       | २४३    | ८९     | दिधिपू      | १०९    | २३     | दीप्ति       | २३     | ३४     |
| दारद        | ४८     | ११     | दिन         | २४     | २      | दीप्य        | ८६     | १११    |
| दारा        | १०५    | ६      | दिनान्त     | २४     | ३      | दीर्घ        | २०९    | ६९     |
| दारित       | २१६    | १००    | दिव         | { ६    | १७     | दीर्घकोशिका  | ५४     | २५     |
|             |        |        |             |        |        | दीर्घदर्शिनू | १३३    | ६      |

| शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक | शब्द.    | पृष्ठ. | श्लोक | शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक |
|--------------|--------|-------|----------|--------|-------|--------------|--------|-------|
| शोषपुत्र     | ४७     | ८     | वषट्     | ११३    | ४४    | हमरभस्       | १ १    | ८     |
| शीर्षबुध     | ७७     | ५७    | वृमनस्   | १९७    | ८     | हवाम्य       | २३८    | ६२    |
| शीर्षेष्ट    | १९९    | १७    | वृमुञ्च  | २ ३    | ३३    | हशि          | { १२३  | ३     |
| शीर्षिका     | ५५     | २८    | वृषर्ष   | १८४    | ९३    | हश्वि        | { २३४  | ३८    |
| शुक्ल        | { ४९   | ३     | वृषिष    | २ ३    | ४९    | हस्ति        | २९     | ९     |
|              | { २१   | २२    | वृहद्    | १४५    | १     | हव           | { ७    | ७     |
| शुक्लार्पिणी | ८६     | ११४   | वृहत्तवन | १२     | ४४    | देवकीनन्दन   | ८      | २१    |
| शुःपमन्      | २७८    | १४    | वृहत्त   | २८     | २३    | देवकुसुम     | १२     | १२५   |
| शुःस्पष्ट    | ८३     | ९१    | वृहत्    | २७९    | १९    | देवसातक      | ५४     | २७    |
| शुःस्पष्टा   | ८३     | ९४    | वृष्यत्र | ८९     | १२८   | देवसातविष    | ६३     | ३     |
| शुकुल        | १२७    | ११३   | वृषित    | ११     | २८    | देवस्यम्     | १२९    | १ ७   |
| शुक्ल        | १७५    | ५१    | वृत्     | १४३    | १३    | देवस्यक      | १३     | ५     |
| शुक्लिका     | ८४     | १     | वृत्ती   | १ ८    | १७    | देवता        | ७      | ९     |
| शुभ्रम       | २      | १४८   | वृत्त    | १४६    | १६    | देवताक       | ७९     | ६९    |
| शुम्भुमि     | { ४    | ३     | वृत्त    | २१३    | १ २   | देवत्व       | १४१    | ५२    |
|              | { २५१  | ११६   | वृत्त    | २७९    | ३८    | देवदाय       | ७७     | ५४    |
| शुरण         | ६१     | १३    | वृषाधिन् | १३३    | ३     | देवदाय       | ७७     | ५४    |
| शुषकमा       | ८३     | ९२    | वृषा     | ९४     | १५८   | देवदाय       | ७७     | ५४    |
| शुष्य        | २८     | २३    | वृषिका   | ११८    | ३७    | देवदाय       | ७७     | ५४    |
| शुषेष्ट      | २७८    | १७१   | वृष्य    | १२८    | १२    | देवदाय       | { १९५  | ४५    |
| शुग          | १४६    | १७    | वृष्या   | १५१    | ४२    | देवदाय       | { २४८  | ११७   |
| शुर्ग        | १ ३    | ४९    |          | { १३   | ३७    | देवदाय       | ७२     | २५    |
| शुर्गति      | ४८     | १     | वृह      | { २१   | ७६    | देवदाय       | १४१    | ५२    |
| शुर्गव       | ३२     | १२    |          | { २३५  | ४५    | देवदाय       | ३      | १२    |
| शुर्गवर्च    | १२४    | २५    | वृहत्तमि | २१     | ७५    | देवदाय       | ७      | ११    |
| शुर्ग        | ११     | ३७    | वृत्ति   | २८९    | १९    | देवदाय       | १११    | ३२    |
| शुभ्र        | २ ५    | ४७    | वृष्य    | २१२    | ८३    | देवदाय       | १८९    | ११    |
| शुर्दिम      | १०     | १२    | वृष्टा   | १२१    | ९३    | देवदायस्थिन् | २३३    | ३५    |
| शुभामक       | ११५    | ५४    | वृष्ट    | ३३     | ४     | देवदाय       | १३     | ४८    |
| शुभ्रमन्     | ५४     | २५    | वृष्ट    | १४८    | २०    | देवदाय       | १४१    | ५२    |

| शब्द.     | पृष्ठ.                        | श्लोक.                | शब्द.        | पृष्ठ.                                    | श्लोक.       | शब्द.                         | पृष्ठ.                                  | श्लोक. |     |
|-----------|-------------------------------|-----------------------|--------------|---|--------------|-------------------------------|---|--------|-----|
| देवाजीव   | १८९                           | ११                    | दोहदवती      | १०९                                       | २१           | द्रुणी                        | २८४                                     | ९      |     |
| देवी      | { ४१ ६३<br>८२ ८३<br>९० १३३ }  | { १ २<br>३ ४<br>५ ६ } | गुः (स्)     | १७  | २            | द्रुत                         | { १५ ६४<br>२१३ ८९<br>२१६ १००<br>२७५ २ } |        |     |
|           |                               |                       | द्युति       | २०  | १७           |                               |   |        |     |
|           |                               |                       | द्युमणि      | २३  | ३४           |                               |   |        |     |
| देवृ      | १११                           | ३२                    | द्युमणि      | १२  | ३०           | द्रुम                         | ६८                                      | ५      |     |
| देश       | ५९                            | ८                     | द्युम्न      | १८३                                       | ९०           | द्रुमामय                      | १२९                                     | १२५    |     |
| देशरूप    | १४७                           | २४                    | द्युत        | १९५                                       | ४४           | द्रुमोत्पल                    | ७८                                      | ६०     |     |
| देह       | ११९                           | ७१                    | द्युतकारक    | १९५                                       | ४४           | द्रुवय                        | १८२                                     | ८५     |     |
| देहली     | ६४                            | १३                    | द्युतकृत्    | १९५                                       | ४३           | द्रुहिण                       | ८                                       | १७     |     |
| दैतेय     | ७                             | १२                    | द्यौ (द्योः) | { ६ ६<br>१७ १ }                           | द्रोण        | { ९९ १४<br>१८२ ८८<br>२३६ ४९ } |   |        |     |
| दैत्य     | ७                             | १२                    |              |   |              |                               |   |        |     |
| दैत्यगुरु | २२                            | २५                    | द्यौत        | २३  | ३४           | द्रोणकाक                      | १००                                     | २१     |     |
| दैत्या    | ८८                            | १२३                   | द्रष्ट       | १७५                                       | ५१           | द्रोणक्षीरा                   | १७९                                     | ७२     |     |
| दैत्यारि  | ८                             | १९                    | द्रव         | { ४५ ३२<br>१६४ १११ }                      | द्रोणदुग्धा  | १७९                           | ७२                                      |        |     |
| दन्य      | २५५                           | १५३                   |              |   |              |                               |   |        |     |
| दैर्घ्य   | १२७                           | ११४                   | द्रवन्ती     | ८२  | ८७           | द्रोणी                        | { ५१ ११<br>८३ ९५ }                      |        |     |
| दैव       | { २९ २८<br>१३६ २४<br>१४१ ५० } | { २८ २४<br>५० ५० }    | द्रविण       | { १६२ १०२<br>१८३ ९०<br>२३६ ५२<br>२९० २२ } | द्रोहिचिन्तन | ३०                            | ४                                       |        |     |
|           |                               |                       | द्रा         |   |              |                               |   | २७५    | २   |
|           |                               |                       | द्राक्ष      |   |              |                               |   | ८५     | १०७ |
| दैवज्ञ    | १४५                           | १४                    | द्राक्षिष्ठ  | २१८                                       | ११२          | द्रापर                        | { ३० ३<br>२५७ १६२ }                     |        |     |
| दैवजा     | १०८                           | २०                    | द्राविडक     | ९०  | १३५          | द्वार                         | ६४                                      | १६     |     |
| दैवत      | { ७ ९<br>२७ २१ }              | { ९ २१ }              | द्रा         | २७५                                       | २            | द्वारु                        | ६४                                      | १६     |     |
|           |                               |                       | द्राक्षी     | ८५  | १०७          | द्वारपाल                      | १४४                                     | ६      |     |
| दोला      | { ८३ ९५<br>१५३ ५३ }           | { ९५ ५३ }             | द्राक्षिष्ठ  | २१८                                       | ११२          | द्वारस्थ                      | १४४                                     | ६      |     |
| दोषज्ञ    | १३३                           | ५                     | द्राविडक     | ९०  | १३५          |                               |   |        |     |
| दोषा      | २७६                           | ६                     | द्रु         | ६८  | ५            |                               |   |        |     |
| दोषैकहश   | २०५                           | ४६                    | द्रुफिलिम    | ७७  | ५३           |                               |   |        |     |
| दोस्      | १२०                           | ८०                    | द्रुषण       | १६०                                       | ९१           |                               |   |        |     |
| दोहद      | ४४                            | २७                    | द्रुण        | ९९  | १४           |                               |   |        |     |



| शब्द          | पृष्ठ    | श्लोक | शब्द    | पृष्ठ | श्लोक | शब्द         | पृष्ठ | श्लोक |
|---------------|----------|-------|---------|-------|-------|--------------|-------|-------|
| आश्रित        | १४४      | ६     | इषा     | १८४   | ९७    |              | २८    | २४    |
| आश्रितदर्शक   | १४४      | ६     | घ       |       |       | बभ           | ३३    | ३     |
| दिगुणाद्य     | १६७      | ०     | घट      | २८८   | १७    |              | २५२   | ११९   |
| द्विज         | { १ २ ४२ | ४२    | घण्ट    | ८१    | ७७    | धर्मचिन्ता   | ४४    | २८    |
|               | { २३३    | ३     | घन      | १८३   | ०     | धर्मपञ्चिन्  | १४२   | ५४    |
| द्विजराज      | २०       | १७    | घनबन्ध  | १४    | ७३    | धर्मपञ्चन    | १७२   | ३६    |
| द्विजा        | ८८       | १२    | घनद     | १६    | ६८    |              | ८     | १३    |
| द्विजाति      | १३२      | ४     | घनहरी   | ८९    | १२८   | धर्मराज      | { २४  | ५१    |
| द्विजिह्व     | २७१      | १३३   | घनापिन  | १६    | ६८    |              | २३३   | ३१    |
| द्विजीवा      | १ ७      | ७     | घनिन्   | १९८   | १     | धर्मरीहिता   | ३४    | ६     |
| द्विजीवाकृत्य | १६७      | ०     | घनिष्ठा | २१    | २२    | धर्मिणी      | १ ६   | १     |
| द्विप         | १४९      | ३४    | घनु     | ७३    | ३५    | धव           | { १११ | २७    |
| द्विपाप       | १४८      | २७    | घनुपट   | ७३    | ३५    |              | २६७   | २ ६   |
| द्विरद        | १४९      | ३४    | घनुर्धर | १५६   | ६९    | धवक          | ३२    | १३    |
| द्विरद        | १ २      | २९    | घनुमान् | १५६   | ६९    | धवसा         | १७८   | ३७    |
| द्विपर्वा     | १७८      | ६८    | घनुर्   | १५९   | ८३    | धविन         | १३३   | २३    |
| द्विर्        | १४५      | ११    | घन्य    | १९१   | ३     | धातकी        | { ८८  | १२४   |
| द्विर्पु      | १४१      | १     | घन्य    | १५९   | ८३    |              | २८९   | ७     |
| द्विर्पुत्र   | १६७      | ९     | घन्यन्  | ५८    | ५     | धातु         | { ६७  | १     |
| द्विहस्व      | १६७      | ९     | घन्यवाच | ८३    | १     |              | २३८   | ६७    |
| द्विहासनी     | १७८      | ६८    | घनिन्   | १५६   | ६९    | धातुपुष्पिका | ८८    | १२४   |
| द्वीप         | ५        | ८     | घमन     | ७     | १३२   | धातु         | ८     | १७    |
| द्वीपवती      | ५५       | ३     | घमामि   | ११८   | ६५    | धानी         | १५    | १७६   |
| द्वीपिन्      | ९७       | २     | घमनी    | ८९    | ११    | धाना         | १७४   | ४७    |
| द्वेकष        | १४५      | १     | घमिह्व  | १२४   | ९७    | धानुष्क      | १७६   | ६९    |
| द्वेष         | २ ५      | ४५    | घर      | ६१    | १     | धाम्य        | १६    | २१    |
| द्वेष         | १४६      | १८    | घराधि   | ५८    | २     | धाम्यक       | १७३   | ३८    |
| द्वेष         | १७३      | ५१    | घरा     | ५८    | २     | धाम्योषा     | २३१   | ४६    |
| द्वैमातुर     | ११       | ३८    | घरीरी   | ५८    | २     | धाम्यार्क    | १७३   | ३९    |
|               |          |       |         |       |       | धाम्यन्      | २४६   | १२४   |

| शब्द.      | पृष्ठ.    | श्लोक   | शब्द.    | पृष्ठ  | श्लोक.              | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|-----------|---------|----------|--------|---------------------|-------|--------|--------|
| धामार्गव   | { ८२ ८८   | धूत     | २१७      | १०७    | { २१ २०             |       |        |        |
| वाय्या     | १३६ २२    | धूपायित | २१६      | १०२    | { ६८ ८              |       |        |        |
| घारणा      | १४७ २६    | धूपित   | २१६      | १०२    | { २१० ७२            |       |        |        |
| घारा       | १५२ ४९    | धूमकेतु | २३७      | ५८     | { २६६ २११           |       |        |        |
| धाराघर     | १८ ७      | धूमयोनि | १८       | ७      | { ८७ ११५            |       |        |        |
| धारासम्पात | १९ ११     | धूमल    | ३३       | १६     | { १३६ २५            |       |        |        |
| धार्तरा    | १०१ २४    | धूम्या  | २२७      | ४२     | व्यज १६२ ९९         |       |        |        |
| धावनी      | ८३ ९३     | धूम्याट | ९९       | १६     | व्यजिनी १५७ ७८      |       |        |        |
| धिक        | २७२ २४०   | धूम्र   | ३३       | १६     | व्यनि ३८ २२         |       |        |        |
| धिककृत     | { २०४ ३९  | धूर्जटि | १०       | ३३     | व्यनित २१४ ९४       |       |        |        |
| धिपण       | २१ २४     | धूर्त   | { ८१ ७७  | १९५ ४३ | ध्वस्त २१६ १०४      |       |        |        |
| धिषणा      | २९ १      | धूर्त   | { १९५ ४३ | २०६ ४७ | व्याक्ष { १०० २०    |       |        |        |
| धिष्य      | २५५ १५५   | धूर्त   | १७८      | ६५     | व्याक्ष { २६७ २१९   |       |        |        |
| धी         | २९ १      | धूर्त   | १६१      | ९८     | ध्वान ३८ २२         |       |        |        |
| धीन्द्रिय  | ३१ ८      | धूर्त   | ३२       | १३     | ध्वान्त ४६ ३        |       |        |        |
| धोमत्      | १३३ ६     | धूर्त   | २४०      | ७४     | न                   |       |        |        |
| धोमती      | १०७ १२    | धूर्त   | २०१      | २५     | न २७७ ११            |       |        |        |
| धीर        | { १२९ १२४ | धूर्त   | १७९      | ७१     | नकुलेष्टा ८७ ११५    |       |        |        |
| धीवर       | ५२ १५     | धूर्त   | १४९      | ३६     | नक्तक १२७ ११५       |       |        |        |
| धीशक्ति    | २२४ २५    | धूर्त   | २३०      | १५     | नक्तम् २७६ ६        |       |        |        |
| धीसचिव     | १४३ ४     | धूर्त   | १७९      | ७२     | नक्तमाल ७६ ४७       |       |        |        |
| धुत        | २१२ ८७    | धूर्त   | १७७      | ६०     | नक्त ५३ २१          |       |        |        |
| धुनी       | ५५ ३०     | धूर्त   | १७७      | ६०     | नक्षत्र २१ २१       |       |        |        |
| धुर        | १५३ ५५    | धूर्त   | १७७      | ६०     | नक्षत्रमाला १२५ १०६ |       |        |        |
| धुरन्धर    | १७८ ६५    | धूर्त   | १७७      | ६०     | नक्षत्रेश २० १५     |       |        |        |
| धुरीण      | १७८ ६५    | धूर्त   | १७७      | ६०     | नख { ८९ १३०         |       |        |        |
| धुर्य      | १७८ ६५    | धूर्त   | १७७      | ६०     | { १२१ ८३            |       |        |        |
|            |           | धूर्त   | १७७      | ६०     | नखर १२१ ८३          |       |        |        |
|            |           | धूर्त   | १७७      | ६०     | नग २३१ १९           |       |        |        |
|            |           | धूर्त   | १७७      | ६०     | नगरी ६१ १           |       |        |        |

| शब्द        | पृष्ठ             | श्लोक              | शब्द      | पृष्ठ      | श्लोक   | शब्द       | पृष्ठ | श्लोक |
|-------------|-------------------|--------------------|-----------|------------|---------|------------|-------|-------|
| नगीकृत्     | १२                | ३३                 | नन्धानर्त | ६३         | १       | नग्नी      | ८९    | १२९   |
| नम          | ३४                | ३९                 | नपुङ्गव   | ११२        | ३       | नरय        | ६१    | १८    |
| नमहू        | १९४               | ४३                 | नग्री     | ११         | २९      | नव         | २११   | ७७    |
| नमिका       | { १३<br>१८        | ८<br>१७            | नमत्      | { १७<br>२७ | १<br>१६ | नमदस       | ८७    | ४३    |
| नट          | { ७७<br>१८९       | ७६<br>१२           | नमसंगम    | १०२        | ३४      | नमनीत      | १७५   | ६२    |
| नटम         | ४                 | १                  | नमस्व     | २७         | १७      | नममाहिका   | ८     | ७२    |
| नटी         | ८९                | १२९                | नमस्का    | १७         | ६३      | नमवृत्तिका | १७९   | ७१    |
| नट          | { ९५<br>९६<br>२९७ | { ११२<br>१६५<br>३३ | नमस्त     | २७         | १८      | नवाभर      | १२७   | १६१   |
| मडमाय       | ७९                | ९                  | नमस्तु    | ११         | १४१     | नवीन       | २११   | ७७    |
| मडबंहति     | ९६                | १६८                | नमस्तु    | ११८        | ३४      | नवोद्धत    | १७७   | ७२    |
| मडपा        | ९६                | १६८                | नमस्तु    | ११८        | ३४      | नव्य       | २११   | ७७    |
| मडुत्       | ७९                | ९                  | नमस्तु    | ११८        | ३४      | नव्य       | १६४   | ११२   |
| मडुत्       | ७९                | ९                  | नमस्तु    | ११८        | ३४      | नव्य       | १६४   | ११२   |
| नट          | २१                | ७९                 | नर        | १४         | १       | नव्य       | १६४   | ११२   |
| नटनासिक     | ११३               | ४५                 | नरक       | ४८         | १       | नव्य       | १६४   | ११२   |
| नट          | २३७               | ७७                 | नरकाहन    | १३         | ६९      | नव्य       | १६४   | ११२   |
| मदी         | ५५                | २९                 | नरक       | ४९         | ११      | नव्य       | १६४   | ११२   |
| नदीमानुष    | ६०                | १२                 | नरक       | ४९         | ११      | नव्य       | १६४   | ११२   |
| मदीसर्ब     | ७५                | ४५                 | नरक       | ४९         | ११      | नव्य       | १६४   | ११२   |
| मदी         | १९२               | ३१                 | नमरा      | ५५         | ३२      | नव्य       | १६४   | ११२   |
| मनाह        | ११                | २९                 | नमरा      | ५५         | ३२      | नव्य       | १६४   | ११२   |
| नट          | { २७३<br>२७८      | { २४८<br>१४        | नमरा      | १६         | ७       | नव्य       | १६४   | ११२   |
| मन्त्रक     | १                 | २८                 | नमरा      | ५२         | १८      | नव्य       | १६४   | ११२   |
| मन्त्रम     | १२                | ४५                 | मन्त्र    | ५७         | ३९      | नव्य       | १६४   | ११२   |
| मन्त्रिहृत् | ८९                | १२८                | मन्त्रि   | ५३         | ३९      | नव्य       | १६४   | ११२   |

| शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|-----------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| नागनिहिका    | १८६    | १०८    | नाम       | २७४    | २५१    | निःषमम्   | २७८    | १४     |
| नागवला       | ८७     | ११७    | नामधेय    | ३५     | ८      | निःसरण    | ६५     | १९     |
| नागर         | { १७३  | ३८     | नामन्     | ३५     | ८      | निःस्व    | २०६    | ४९     |
|              | { २६१  | १८८    | नाय       | २२०    | ९      | निकट      | २०९    | ६६     |
| नागरङ्ग      | ७४     | ३८     | नायक      | १९८    | ११     | निकर      | २०३    | ३९     |
| नागलोक       | ४६     | १      |           |        |        | निकर्षण   | ६५     | १९     |
| नागवल्ली     | ८८     | १२०    | नारक      | { ४८   | १      | निकष      | १९३    | ३२     |
| नागसम्भव     | १८५    | १०५    |           | { ४८   | २      |           |        |        |
| नागान्तक     | १०     | २९     | नारद      | १३     | ४८     | निकषा     | { २७६  | ७      |
| नाट्य        | ४०     | १६     | नाराच     | १५९    | ८७     |           | { २७९  | १९     |
| नाहिका       | १७२    | ३४     | नाराची    | १९३    | ३२     | निकषात्मज | १५     | ६०     |
| नाहिन्यम     | १८८    | ८      | नारायण    | ८      | १८     | निकाम     | १७६    | ५७     |
|              |        |        | नारायणी   | ८४     | १०१    | निकाय     | १०४    | ४२     |
| नाडी         | { ११८  | ६५     | नारी      | १०४    | २      | निकाय्य   | ६२     | ५      |
|              | { १६९  | २२     |           |        |        |           |        |        |
|              | { २३५  | ४३     | नाल       | { ५७   | ४२     | निकार     | { २२२  | १५     |
| नाडीव्रण     | ११५    | ५४     |           | { ५७   | ४२     |           | { २२६  | ३६     |
| नाथवत्       | १९९    | १६     |           | { १६९  | २२     | निकारण    | १६४    | ११२    |
| नाद          | ३८     | ३३     | नालिकेर   | ९६     | १६८    | निकुञ्चक  | १८२    | ८८     |
|              | { ७३   | ३०     | नाविक     | ५१     | १२     | निकुञ्ज   | ६७     | ८      |
| नादेयी       | { ७४   | ३८     | नाव्य     | ५०     | १०     | निकुम्भ   | ९२     | १४४    |
|              | { ७९   | ६५     | नाश       | १६४    | ११६    | निकुरम्ब  | १०३    | ४०     |
|              | { ८७   | ११८    | नासत्य    | १३     | ५१     | निकृत     | { २०४  | ४१     |
| नाना         | { २७३  | २४७    | नासा      | { ६४   | १३     |           | { २०५  | ४६     |
|              | { २७५  | ३      |           | { १२२  | ८९     | निकृति    | ४४     | ३०     |
| नानारूप      | २१४    | ९३     | नासिका    | १२२    | ८९     | निकृष्ट   | २०७    | ५४     |
| नान्दीकर     | २०३    | ३८     | नास्तिकता | ३०     | ४      | निकेतन    | ६२     | ४      |
| नान्दीवादिन् | २०३    | ३८     | निःशलाक   | १४७    | २२     | निकोचक    | ७२     | २९     |
| नापित        | १८८    | १०     | निःशेष    | २०९    | ६५     | निकण      | ३८     | २४     |
|              | { १५३  | ५६     | निःशोध्य  | २०७    | ५६     | निक्काण   | ३८     | २४     |
| नाभि         | { २५१  | १३७    | निःश्रेणि | ६५     | १८     | निखिल     | २०९    | ६५     |
|              | { २८४  | ९      | निःभयस    | ३१     | ६      | निगड      | १५१    | ४१     |
|              | { २८९  | २०     |           |        |        |           |        |        |

| शब्द.      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द.     | पृष्ठ | श्लोक | शब्द.                  | पृष्ठ. | श्लोक |
|------------|-------|-------|-----------|-------|-------|------------------------|--------|-------|
| मिमाद      | २२१   | १२    | निषन      | { १६४ | ११६   | नियामक                 | ८१     | १२    |
| नियम       | { ६१  | १     | { २४९     | १२६   | निधुव | २९१                    | २४     |       |
|            | { १८  | ७८    | निधि      | १७    | ७१    | निमुद्य                | १६३    | १६    |
|            | { २५२ | १४    | निधुवन    | १४२   | ५७    | नियौष्य                | १९     | १७    |
| निगाद      | २२१   | १३    | निध्यान   | २२५   | ६१    | निर्                   | २७४    | २५३   |
| निगार      | २२६   | ६७    | निनह      | ३८    | २२    | निर्तर                 | २९     | ६६    |
| निगाढ      | १५२   | ४८    | निनाह     | ३८    | २२    | निरय                   | ४८     | १     |
| निग्रह     | २२१   | १३    | निन्वा    | ३३    | १३    | निरर्गळ                | २१२    | ८३    |
| निष        | २२६   | ६६    | निप       | १७२   | ६२    | निरणक                  | २११    | ८१    |
| निषष्ठ     | १७६   | ५६    | निपठ      | २२५   | २९    | निरषमह                 | १९     | १५    |
| निम        | १९९   | १३    | निपाठ     | २२५   | २९    | निरष्म                 | २२५    | ३१    |
| निष्ठुळ    | ७८    | ६१    | निपाठन    | २२४   | २७    | निरस्त                 | { ३७   | २     |
| निष्ठोळ    | १२७   | ११३   | निपान     | ५४    | २६    |                        | { १६   | ८८    |
| निब        | २३३   | ३२    | निपुण     | १९३   | ४     |                        | { २४   | ४     |
|            |       |       | निबन्ध    | ११५   | ५५    | निष्करिण्यु            | २०२    | ३     |
| नितम्ब     | { ६३  | ५     | निबन्धन   | ४     | ७     | निष्कृत                | २४     | ४     |
|            | { ११९ | ७४    | निबर्हण   | १६४   | ११२   | निरुक्ताति             | { १४२  | ५३    |
| नितम्बिनी  | १५    | ३     | निम       | १९४   | ३७    |                        | { २२५  | ३१    |
| नितम्ब     | १३    | ६७    | निमृव     | २०    | २५    | निराम्ब                | ११६    | ५७    |
| नित्य      | { १६  | ६६    | निमय      | १८१   | ८     | निरीघ                  | १६८    | १३    |
|            | { २१  | ७२    | निमिष्ठ   | २४१   | ७६    | निष्ठाति               | ४८     | २     |
| निबाध      | { २७  | १९    | निमेष     | २५    | ११    | निर्गुण्य              | { ७९   | ६८    |
|            | { ४५  | ३३    | निम       | ५२    | १५    |                        | { ७९   | ७     |
| निदान      | २९    | २८    | निमया     | ५५    | ३     | निर्गुण्यम             | १६४    | ११३   |
| निदिग्ध    | २१३   | ८९    | निम्ब     | ७८    | ६२    | निर्घोष                | ३८     | २३    |
| निदिग्धिका | ८३    | ९३    | निम्बस्तव | ७२    | २६    | निर्ग                  | ७      | ७     |
| निदेश      | { १४७ | २५    | निषति     | २९    | २८    | निर्दिष्टेन्द्रियग्राम | १४     | ४९    |
|            | { २६  | १७९   | निम्बु    | १५४   | ५९    | निर्हार                | ६६     | ५     |
| निद्रा     | ४६    | ३३    | नियम      | { ३   | ५     | निर्णय                 | ३      | ३     |
| निद्राध    | २२    | ३३    |           | { १३९ | ३७    |                        |        |       |
| निद्रात    | २२    | ३३    |           | { १४१ | ४९    | निर्णय                 | २७     | ५६    |

| शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.         | पृ.   | श्लोक. |
|------------|--------|--------|-----------|--------|--------|---------------|-------|--------|
| निर्णेजक   | १८९    | १०     | निलय      | ६२     | ५      | निष्कुटि      | ८८    | १२५    |
| निर्देश    | १४७    | २५     | निवह      | १०३    | ३९     | निष्कुह       | ६९    | १३     |
| निर्भर     | { १६   | ६६     | निवात     | २४२    | ८४     | निष्काम       | २२४   | २५     |
|            | { २७५  | २      | निवाप     | १३७    | ३१     | निष्ठा        | { ४१  | १५     |
| निर्मद     | १४९    | ३६     | निवीत     | { १२७  | ११३    | निष्ठान       | { २३४ | ४१     |
| निर्मुक्त  | ४७     | ६      |           | { १४१  | ५०     |               | { १७४ | ४४     |
| निर्मोक    | ४८     | ९      | निवृत     | २१३    | ८८     |               | { २४८ | ११६    |
| निर्याण    | १५०    | ३८     | निवेश     | १४९    | ३३     | निष्ठीवन      | २२६   | ३८     |
| निर्यातन   | २४८    | १२०    | निगा      | २४     | ४      | निष्ठुर       | { ३७  | १९     |
| निर्यास    | २८६    | १३     | निशाख्या  | १७३    | ४१     |               | { २१० | ७६     |
| निर्वपण    | १३७    | ३०     | निशान्त   | ६२     | ५      | निष्ठ्यूत     | २१३   | ८७     |
| निर्वर्णन  | २२५    | ३१     | निशापति   | १९     | १४     | निष्ठ्यूति    | २२६   | ३८     |
| निर्वहण    | ४१     | १५     | निश्चित   | २१४    | ९१     | निष्ठेव       | २२६   | ३७     |
| निर्वाण    | { ३१   | ६      | निशीय     | २५     | ६      | निष्ठेवन      | २२६   | ३८     |
|            | { २१५  | ९६     | निशीथिनी  | २४     | ४      | निष्णात       | १९६   | ४      |
| निर्वात    | २१५    | ९६     | निश्चय    | ३०     | ३      | निष्पक्व      | २१४   | ९५     |
| निर्वाद    | { ३६   | १३     | निश्रोणे  | ६५     | १८     | निष्पतिसुता   | १०६   | ११     |
|            | { २४३  | ९०     | निषंग     | १६०    | ८८     | निष्पन्न      | २१६   | १००    |
| निर्वापण   | १६४    | ११४    | निषागिन्  | १५६    | ६९     | निष्पाव       | २२४   | २४     |
| निर्वार्य  | १९८    | १३     | निषद्या   | ६२     | २      | निष्प्रभ      | २१६   | १००    |
| निर्वासन   | १६४    | ११३    | निषद्वर   | ५०     | ९      | निष्प्रवाणिन् | १२७   | ११२    |
| निर्वृत्त  | २१६    | १००    | निषघ      | ६६     | ३      | निसर्ग        | ४६    | ३८     |
| निर्वेश    | { १९४  | ३८     | निषाद     | { ३८   | १      | निसृष्ट       | २१३   | ८८     |
|            | { २२३  | २०     |           | { १९०  | २०     | निस्तल        | २०९   | ६९     |
|            | { २६७  | २१५    | निषादिन्  | १५४    | ५९     | निस्तर्हण     | १६४   | ११४    |
| निर्व्यथन  | ४६     | २      | निषूदन    | १६४    | ११३    | निर्लिश       | १६०   | ८९     |
| निर्व्यूह  | २७१    | २३६    | निष्क     | २३०    | १४     | निस्त्राव     | १७५   | ४९     |
| निर्हार    | २२२    | १७     | निष्कला   | १०९    | २१     | निस्वन        | ३८    | २३     |
| निर्हारिन् | ३२     | ११     | निष्कासित | २०४    | ३९     | मिस्वान       | ३८    | २३     |
| निर्हाद    | ३८     | २३     | निष्कुट   | ६७     | १      | निहनन         | १६४   | ११६    |

| शब्द        | पृष्ठ | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ | श्लोक | शब्द        | पृष्ठ | श्लोक |
|-------------|-------|-------|------------|-------|-------|-------------|-------|-------|
| निहन्ता     | ५३    | ३९    | नीहार      | २२८   | २२८   | नैगम        | { १८  | ७८    |
| निहिचन      | २६४   | २२३   | नीहार      | २     | १८    |             | { २५२ | २४०   |
| निहीन       | २९    | २३    | नु         | २७३   | २४८   | नैपिच्छी    | १७८   | ६७    |
| निहृष       | { ३३  | २७    | नुष्ठि     | ३५    | ११    | नैपासी      | १८६   | १०८   |
|             | { २६५ | २८    | नुत        | २२३   | ८७    | नैमिग       | १८१   | ८     |
| नीकाद्य     | २९४   | ३७    | नुत्त      | २१३   | ८७    | नैयप्रोष    | ७०    | १८    |
| नीष         | { १०  | २६    | नुत्तन     | २११   | ७७    | नैनीय       | { १५  | ६     |
|             | { २९  | ७     | नुत्तन     | २११   | ७८    |             | { १७  | २     |
| नीषेष्      | २७८   | १७    |            | { २७४ | २७    | नीक्षिक     | १४४   | ७     |
| नीड         | १३    | ३७    | नुम्भ      | { २७८ | २६    | नीक्षिप्रिक | १५६   | ७     |
| नीडोद्भव    | १२    | ३४    | नुष्टर     | २२६   | १०९   | नो          | २७७   | ११    |
| मीप्र       | ६४    | १४    | नु         | १४    | १०    | नी          | ५१    | १     |
| मीप         | ७७    | ४२    | नुत्प      | ४     | १     | नीकाईव      | ७१    | १३    |
| मीर         | ४     | ४     | नप         | १४३   | १     | नीतार्थ     | ८     | १     |
| मीक         | ३२    | १४    | नृपक्षरमन् | २४९   | ३२    | न्यस        | २६९   | २२५   |
| मीककण्ठ     | { १२  | ३     | नृपसम      | २९३   | २७    |             | { ७३  | ३२    |
|             | { २३४ | ४     | नृपासन     | २४८   | ३१    | न्यप्रोष    | { २४४ | ९६    |
| मीकंगु      | ९९    | १३    | नृपास      | २     | ६     | न्यप्रोषी   | ८९    | ८७    |
| मीकमेहित    | १     | ३३    | नृपेन      | २९७   | ४०    | न्यष्ट      | २९    | ७     |
| मीष         | ११    | २६    | नैतु       | १०८   | २१    | न्यकु       | ९८    | १     |
| मीषम्बर     | ९     | ३४    |            | { १२३ | ९३    | न्यस्त      | २१३   | ८८    |
| मीषम्बुबन्ध | ५६    | ३७    | नैन        | { ३६  | १८    | न्याह       | १७६   | ५६    |
| मीक्षिका    | ७९    | ७     | भायु       | १२३   | ९३    | न्याय       | १४७   | २४    |
| मीक्षिनी    | ८३    | ९५    | नरिष्ठ     | २९    | ६८    | न्याय्य     | { १४७ | २५    |
| मीक्षी      | ८३    | ९४    | नैयव्य     | १२४   | ९९    |             | { १५६ | १६१   |
| मीकाक       | २२४   | २३    |            | { ५४  | २७    | न्यात       | १८१   | ८१    |
| नाथर        | १७    | ३५    | नैभि       | { १५३ | ५६    | न्युव्य     | ११७   | ६१    |
| नैवी        | { १८१ | ८     | नैमी       | ७९    | २६    | न्यूल       | २८८   | १७    |
|             | { २३६ | २१२   | नैमि       | २१२   | ८६    | न्युन       | २५    | १२८   |
| मीरु        | ५     | ८     | नैमिष      |       |       |             |       |       |

| शब्द.     | पृष्ठ.             | श्लोक | शब्द.      | पृष्ठ.                                 | श्लोक. | शब्द.      | श्लोक.   |
|-----------|--------------------|-------|------------|--|--------|------------|--|
| प         |                    |       | पचता       | १६४                                    | ११६    |            |  |
| पक्ष      | ६५                 | २०    | पचदशी      | २५                                     | ७      | पण         | { १८२ ८८<br>१९४ ३८<br>१९५ ४५<br>२३५ ४६<br>१९५ ४४ |
| कि        | { २१४ ९१<br>२१५ ९६ |       | पचम        | ३९                                     | १      |            |  |
|           |                    |       | पचलक्षण    | ३४                                     | ५      |            |  |
|           | { २६ १२<br>१०३ ३६  |       | पचशर       | ९                                      | २५     | पणव        | ४० ८   |
| पक्ष      | { १२४ ९८<br>१५९ ८७ |       | पचशास्त्र  | १२१                                    | ८१     | पणायित     | २१७ १०९  |
|           | { २६७ २२०          |       | पचागुल     | ७६                                     | ५१     | पणित       | २१७ ४०९  |
|           |                    |       | पचास्य     | ९७                                     | ३      | पणितव्य    | १८१ ८२   |
| पक्षक     | ६४ १४              |       | पजिका      | २८३                                    | ७      | पण्ड       | ११२ ३९   |
|           | { २४ १<br>१०३ ३६   |       | पट         | { ७३ ३५<br>१२७ ११६                     |        | पण्डित     | १३३ ५  |
| पक्षति    | { २४० ७२           |       | पटच्चर     | १२७ ११५                                |        | पण्य       | १८१ ८२   |
|           |                    |       | पटल        | { ६४ १४<br>२६४ २०१                     |        | पण्यवीथिका | ६२ २   |
| पक्षद्वार | ६४ १४              |       | पटलप्रान्त | ६४ १४                                  |        | पण्या      | ९३ १५०   |
| पक्षभाग   | १५० ४०             |       | पटवासक     | १३२ १३९                                |        | पण्याजीव   | १८० ७८   |
| पक्षमूल   | १०३ ३६             |       | पटह        | { ४० ६<br>१६३ १०८                      |        | पतग        | १०२ ३३   |
| पक्षान्त  | २५ ७               |       | पटु        | { ९४ १५५<br>१९० १९<br>२०३ ३५<br>२३४ ३९ |        | पतग        | { १०२ २८<br>२३१ २०                               |
| पक्षिन्   | १०२ ३३             |       | पटुपर्णी   | ९१ १३८                                 |        | पतगिका     | १०१ २७   |
| पक्षिणी   | २४ ५               |       | पटोल       | ९४ १५५                                 |        | पतत्       | १०२ ३३   |
| पक्ष्मन्  | २४८ १२१            |       | पटोलिका    | ८७ ११८                                 |        | पतत्र      | १०३ ३६   |
| पक्ष      | { २८ २३<br>५० ९    |       | पटु        | २८८ १७                                 |        | पतत्रि     | १०२ ३३   |
| पक्षिल    | ६० १०              |       | पटुपर्णी   | ९१ १३८                                 |        | पतत्रिन्   | १०२ ३३   |
| पक्षेरुह  | ५७ ४०              |       | पटोल       | ९४ १५५                                 |        | पतद्ग्रह   | { १३२ १३९<br>२९० २१                              |
| पक्षि     | { १८२ ८४<br>२४० ७२ |       | पटुपर्णी   | ९१ १३८                                 |        | पतयालु     | २०१ २७   |
| पक्षु     | ११४ ४८             |       | पटुपर्णी   | ९१ १३८                                 |        | पताका      | १६२ ९९   |
| पक्षपचा   | ८४ १०२             |       | पटुपर्णी   | ९१ १३८                                 |        | पताकिन्    | १५६ ७१   |
| पक्षा     | २२० ८              |       | पटुपर्णी   | ९१ १३८                                 |        | पति        | { १११ ३५<br>१९८ १०                               |
| पक्षजन    | १०४ १              |       | पटुपर्णी   | ९१ १३८                                 |        |            |  |



| शब्द       | पृष्ठ | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ    | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ     | श्लोक |
|------------|-------|-------|------------|----------|-------|------------|-----------|-------|
| पतिवरा     | १६    | ७     | पदय        | १५५      | ६६    |            |           |       |
| पतिवली     | १७    | १२    | पदवी       | ७१       | १५    | पदसू       | { ४९ २    |       |
| पतिमहा     | १५    | ६     | पदाभि      | १५५      | ६६    |            | { १७५ ५१  |       |
| पत्तन      | ६१    | १     | पदादि      | १५५      | ६६    | पदस्य      | १७५       | ५१    |
|            | { १५५ | ६६    | पदिक       | १५५      | ६७    | पयोधर      | १५७       | १६३   |
| पति        | { १५८ | ८     | पद्म       | १५५      | ६७    | पर         | { १४५ ११  |       |
|            | २४    | ७२    | पद्मादि    | ६१       | १५    |            | { १६२ १९१ |       |
| पतिवहति    | १५५   | ६७    | पद्म       | { १७ ७१  |       | परभाष      | १९        | १८    |
| पत्नी      | १५    | ५     |            | { ५७ ३९  |       | परमन्त्र   | १९९       | १६    |
|            | { ६९  | १४    | पद्मक      | १५       | ३९    | परपिच्छाद  | २         | २०    |
| पत्र       | { १६  | ६६    | पद्मचारिणी | ९२       | १४६   | पद्मसू     | १         | २     |
|            | { १५४ | ५८    | पद्मनाम    | ८        | २     | परमसू      | १         | १९    |
|            | २६०   | १७९   | पद्मिनी    | ५६       | ३९    | परमसू      | २७७       | १२    |
| पत्रपरशु   | १९३   | १२    | पद्मपत्र   | ९२       | १४५   | परमसू      | १३६       | २४    |
| पत्रपास्या | १२५   | १३    | पद्मराग    | १८३      | ९२    | परमैश्वर   | ८         | १६    |
| पत्ररस     | १२    | ३३    |            | { ९      | २७    | परम्पराक   | १३६       | २६    |
| पत्रकेटा   | १२८   | १२२   | पद्मा      | { ८३ ८९  |       | परकसू      | १९९       | १६    |
|            | { १३७ | १३२   |            | { ९२ १४६ |       | परकसू      | १६        | ९२    |
| पद्माक्ष   | { १८६ | १११   | पद्माकर    | ५४       | २८    | परकसू      | १६        | ९२    |
| पद्मागुणि  | १२८   | १२२   | पद्माद     | ९२       | १४७   | परकसू      | २८        | २२    |
|            | { ९   | १५    | पद्माब्जा  | ९        | २७    | परकसू      | { १६२ १२  |       |
| पद्मिन्    | { १२  | १३    | पद्मिन्    | १४९      | १५    |            | { २५२ १३८ |       |
|            | { १५९ | ८७    | पद्म       | २४९      | ११    |            |           |       |
|            | २४६   | १३    | पद्मा      | ६१       | १५    | पद्मा      | { ७ १७    |       |
|            | { ७७  | ५६    | पद्म       | ७८       | ६१    | पद्माङ्गुल | २२        | १३    |
| पद्मोर्ध्व | { १२७ | ११३   | पद्म       | ७८       | ६१    | पद्मापि    | १९        | १८    |
| पद्मि      | १४६   | १७    | पद्मापि    | २१७      | १९    | पद्मीन     | २२        | १३    |
| पद्मिन्    | ६१    | १५    | पद्मिन्    | २१७      | १९    | पद्मीन     | २२        | १३    |
| पद्मा      | ७७    | ५६    | पद्म       | २१६      | १४    | पद्मज      | १६४       | १११   |
| पद्मे      | ११९   | ७१    | पद्मग      | ४७       | ८     | पद्माक्षित | १६४       | ११०   |
| पद्म       | २४४   | ९३    | पद्मवाहन   | १        | १९३   |            |           |       |

| शब्द         | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| परान्न       | २००    | २०     | परित्राण   | २१९    | ५      | परिव्राज  | १३९    | ४१     |
| पराभूत       | १६४    | ११२    | परिदान     | १८१    | ८०     | परिषद्    | १३४    | १५     |
| परायण        | २१८    | २      | परिदेवन    | ३६     | १६     | परिष्कार  | १२४    | १०१    |
| परारि        | २७९    | २०     | परिधान     | १२७    | १९७    | परिष्कृत  | १२४    | १००    |
| परार्थ       | २०७    | ५८     | परिधि      | २३     | ३२     | परिष्वङ्ग | २२५    | ३०     |
| परासन        | १६४    | ११३    | परिधि      | २४४    | ९७     | परिसर     | ६०     | १४     |
| परासु        | १६४    | ११७    | परिधिस्थ   | १५४    | ६२     | परिसर्प   | २२३    | २०     |
| परास्कन्दिन् | १८१    | २५     | परिपण      | १८१    | ८०     | परिसर्या  | २२३    | २१     |
| परिकर        | २५७    | १६५    | परिपंथिन्  | १४५    | ११     | परिसार    | २२३    | २१     |
| परिकर्मन्    | १२८    | १२१    | परिपाटी    | १३८    | ३६     | परिष्कन्द | १९०    | १८     |
| परिक्रम      | २२२    | १६     | परिपूर्णता | १३१    | १३७    | परिस्तोम  | १५१    | ४२     |
| परिक्रिया    | २२३    | २०     | परिपेलव    | ९०     | १३१    | परिस्पन्द | १३१    | १३७    |
| परिक्षित     | २१३    | ८८     | परिप्लव    | २१०    | ७५     | परिस्तुत  | १९४    | ३९     |
| परिखा        | ५५     | २९     | परिवर्ह    | २७२    | २३९    | परिस्तुता | १९४    | ३९     |
| परिग्रह      | २७१    | २३७    | परिभव      | ४३     | २२     | परीक्षक   | १९७    | ७      |
| परिघ         | { १६०  | ९१     | परिभाषण    | ३६     | १४     | परीभाव    | ४३     | २२     |
|              | { २३२  | २७     | परिभूत     | २१७    | १०६    | परीवर्त   | १८१    | ८०     |
| परिघातिन्    | १६०    | ९१     | परिमल      | { ३१   | १०     | परीवाद    | ३६     | १३     |
| परिचय        | २२३    | २३     | परिमल      | { २२१  | १३     | परीवाप    | २५०    | १२९    |
| परिचर        | १५४    | ६२     | परिरम्भ    | २२५    | ३०     | परीवार    | २५८    | १६९    |
| परिचर्या     | १३८    | ३५     | परिवर्जन   | १६४    | ११४    | परीवाह    | ५०     | १०     |
| परिचान्य     | १३५    | २०     | परिवाद     | ३६     | १३     | परीष्टि   | १३७    | ३२     |
| परिचारक      | १९०    | १७     | परिवादिनी  | ३९     | ३      | परीसार    | २२३    | २१     |
| परिणत        | २१५    | ९६     | परिवापित   | २१२    | ८५     | परीहास    | ४५     | ३२     |
| परिणय        | १४२    | ५६     | परिवित्ति  | १४२    | ५६     | परुत्     | २७९    | २०     |
| परिणाम       | २२२    | १५     | परिवृढ     | १९८    | ११     | परुप      | ३७     | १९     |
| परिणाय       | १९५    | ४५     | परिवेत्तु  | १४२    | ५५     | परुस्     | ९५     | १६२    |
| परिणाद       | १२७    | ११४    | परिवेष     | २३     | ३२     | पेरत      | १६४    | ११७    |
| परितम्       | २७७    | १३     | परिव्याघ   | { ७३   | ३०     | परेतराज   | १४     | ५८     |
|              |        |        |            | { ७८   | ६०     |           |        |        |

| शब्द.       | पृष्ठ | श्लोक | शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक | शब्द.          | पृष्ठ | श्लोक |
|-------------|-------|-------|--------------|--------|-------|----------------|-------|-------|
| परेधावि     | २७९   | २१    | पक           | { १८९  | ८९    | पक्वात्ताप     | ४३    | ९५    |
| परेधुका     | १७९   | ७     |              | { २६४  | २०२   | पक्षिम         | २११   | ८१    |
| परोधित      | १९    | १८    | पक्षगण्ड     | १८८    | ६     | पक्षिमा        | १७    | १     |
| परोष्णी     | १०१   | २६    | पक्षङ्गुपा   | ८४     | ९८    | पक्षमोक्षर     | ५९    | ७     |
| पर्कटीन्    | ७३    | १२    | पक्ष्म       | ११७    | ६३    | पक्ष्म         | ६२    | ५     |
| पर्कन्ती    | ८४    | १ २   | पक्ष्मण्ड    | ९२     | १४७   | पक्ष्म         | १०३   | ११    |
| पर्कन्त्य   | २५३   | १४३   | पक्ष्म       | १७९    | २२    | पक्ष्म         | १६१   | ९८    |
| पर्क        | { ६९  | १४    |              | { ६९   | १४    | पक्ष्म         | { १३  | ३८    |
|             | { ७२  | २९    | पक्ष्म       | { ७२   | २९    |                | { २२  | ८     |
|             | { २९  | २२    |              | { ९३   | १५४   | पक्ष्म         | ८९    | १२६   |
| पर्कशास्त्र | ६२    | ६     | पक्ष्मशिव    | ६८     | ५     | पक्ष्मशास्त्र  | ३२    | ४१    |
| पर्जात      | ८१    | ७९    | पक्ष्मिनी    | १ ७    | १२    | पक्ष्मशास्त्रि | १३    | ४६    |
| पर्ज        | १३१   | १३८   | पक्षित       | ११२    | ४१    | पक्ष्मस्थान    | १७१   | २७    |
| पर्जट       | १३८   | १५    | पक्ष्म       | १३१    | १३८   | पक्ष्म         | { १७३ | ४२    |
| पर्ज्यासू   | ६     | १४    | पक्ष्म       | ७      | १४    |                | { १८६ | १०९   |
| पर्ज        | { १३९ | १७    | पक्ष्म       | ५४     | २८    | पक्ष्म         | १४    | ४५    |
|             | { २२६ | १३    | पक्ष्म       | २२४    | २४    | पक्ष्म         | १     | २८    |
| पर्जवस्था   | २२३   | २१    | पक्ष्मनाशन   | ४७     | ८     | पक्ष्मशक्ति    | १९२   | २९    |
| पर्जात      | १७६   | ५७    | पक्ष्म       | { १५   | ६३    | पक्ष्म         | २७६   | ७     |
| पर्जाति     | २१९   | ५     |              | { २२४  | २४    | पक्ष्म         | १ १   | २५    |
| पर्जा       | { १३८ | १७    | पक्ष्ममात्र  | १५     | ६३    | पक्ष्म         | { ३२  | १५    |
|             | { २५४ | १४३   | पक्ष्म       | १३     | ४७    |                | { १६८ | १५    |
| पर्जाक्षम   | २२५   | १२    |              | { ९६   | १६६   | पक्ष्म         | { ७१  | २     |
| पर्जुह्यन   | १६६   | १     | पक्ष्मिन्    | { १४   | ४५    |                | { ७७  | ५४    |
| पर्जवणा     | १३७   | १२    |              | { २ ७  | ५५    | पक्ष्मि        | ७७    | ५४    |
| पर्जत       | ६५    | १     | पक्ष्मिन्    | ५२     | १३    | पक्ष्म         | { १३४ | १४    |
| पर्जन्      | { ९५  | १६२   | पक्ष्मपति    | १      | ३     |                | { २२५ | २९    |
|             | { २४९ | १२१   | पक्ष्मप्रेरण | २२७    | १९    | पक्ष्म         | ८२    | ८४    |
| पर्जतीप     | २५    | ७     | पक्ष्मप्रेरण | १७९    | ७३    | पक्ष्मिन्      | ८१    | ८     |
| पर्जुका     | ११८   | ६९    | पक्ष्मात्    | २७२    | २४३   | पक्ष्मिन्      | ५२    | १८    |

| शब्द.        | पृष्ठ.    | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ.    | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ.   | श्लोक. |
|--------------|-----------|--------|--------------|-----------|--------|--------------|----------|--------|
| पाणि         | १२१       | ८१     | पादाग्र      | ११९       | ७१     | पारसीक       | १५१      | ४५     |
| पाणिगृहीती   | १०५       | ५      | पादागद       | १२६       | १०९    | पारस्त्र्णेय | १०९      | २४     |
| पाणिघ        | १८९       | १३     | पादात        | १५५       | ६७     | पारायण       | २१८      | २      |
| पाणिपीडन     | १४२       | ५६     | पादातिक      | १५५       | ६६     | पारावत       | ९९       | १४     |
| पाणिवाद      | १८९       | १३     | पादुका       | १९२       | ३०     | पारावताघ्नि  | ९३       | १५०    |
| पांडर        | ३२        | १२     | पादू         | १९२       | ३०     | पारावार      | { ४९ १   |        |
| पांडु        | ३२        | १३     | पादूकृत      | १८८       | ७      |              | { २९६ ३५ |        |
| पाडुकम्बलिन् | १५३       | ५४     | पानगोष्ठिका  | १९४       | ४२     | पाराशरिन्    | १३९      | ४१     |
| पाडुर        | ३२        | १३     | पानपात्र     | १९५       | ४३     | पारिकाक्षिन् | १३९      | ४२     |
| पातक         | २९५       | ३३     | पानभाजन      | १७२       | ३२     | पारिजातक     | { १३ ५०  |        |
|              |           |        | पानीय        | ४९        | ४४     |              | { ७२ २६  |        |
| पाताल        | { ४६ १    |        | पानीयशालिका  | ६३        | ७      | पारितथ्या    | १२५      | १०३    |
|              | { २६४ २०२ |        | पान्थ        | १४६       | १७     | पारिप्लव     | २१०      | ७५     |
| पातुक        | २०१       | २७     | पाप          | { २८ २३   |        | पारिभद्र     | ७२       | २६     |
|              | { ५० ८    |        |              | { २०६ ४७  |        | पारिभद्रक    | ७७       | ५३     |
| पात्र        | { १३३ २४  |        | पापचेली      | ८२        | ८५     | पारिभाव्य    | ८९       | १२६    |
|              | { १७२ ३३  |        | पामन्        | २८        | २३     | पारियात्रिक  | ६६       | ३      |
|              | { २६० १७९ |        | पामन्        | ११५       | ५३     | पारिषद       | ११       | ३५     |
| पात्री       | २९८       | ४२     | पामन         | ११६       | ५८     | पारिहार्य    | १२६      | १०७    |
| पात्रीव      | २९६       | ३५     | पामर         | १९०       | १६     | पारी         | २८८      | १०     |
| पाथस्        | ४९        | ४      | पामा         | ११५       | ५३     | पारुष्य      | ३६       | १४     |
|              | { ६६ ७    |        | पायस         | { १२९ १२८ |        | पार्थिव      | १४३      | १      |
| पाद          | { ११९ ७१  |        |              | { १३६ २४  |        | पार्वती      | ११       | ३७     |
|              | { १८३ ८९  |        | पायु         | ११९       | ७३     | पार्वतीनदन   | १२       | ३९     |
|              | { २४३ ८९  |        | पाय्य        | १८२       | ८५     | पार्श्व      | { १२० ७९ |        |
| पादकटक       | १२६       | ११०    | पार          | ५०        | ८      |              | { २२७ ४१ |        |
| पादग्रहण     | १३९       | ४१     | पारद         | १८४       | ९९     | पार्श्वभाग   | १५०      | ४०     |
| पादप         | ६८        | ५      | पारपर्योपदेश | १३४       | १२     | पार्श्वस्थि  | ११८      | ६९     |
| पादवन्धन     | १७६       | ५८     | पारशव        | २६६       | २१०    | पार्णि       | ११९      | ७२     |
| पाद्य        | १३८       | ३३     | पारश्वधिक    | १५६       | ७०     | पार्णिग्राह  | १४५      | १०     |
| पादस्नेह     | ११५       | ५२     |              |           |        |              |          |        |

| शब्द.      | पृष्ठ | श्लोक  | शब्द.     | पृष्ठ | श्लोक         | शब्द.      | पृष्ठ | श्लोक |
|------------|-------|--------|-----------|-------|---------------|------------|-------|-------|
| पाकम       | १६    | २४७    | पिच्छ     | { १०२ | ३१            | पितृपित    | १११   | २३    |
| पाकंकी     | ८८    | १२१    |           | { २९४ | १             | पतप्रसू    | २४    | ३     |
| पाकघ       | ३२    | १४     | पिच्छा    | { ७५  | ४७            | पितृवन     | १६८   | ११८   |
| पाकि       | { १६० | १३     |           | { २८४ | ९             | पतृभ्य     | ११    | ११    |
| { २६३      | १९७   | पिच्छक | १७४       | ४६    | पितृसंक्षिप्त | १९८        | १३    |       |
| पाकिन्दी   | ८९    | १०८    | पिच्छिभ   | { ७५  | ४६            | पत्त       | ११७   | ६२    |
| पावक       | १४    | ५४     |           | { ७८  | ६२            | पभ्य       | १४१   | ५१    |
| पाश        | { १२४ | ९८     | पिच्छ     | १६४   | ११५           | पिच्छत्    | १     | २     |
| पाशक       | १९५   | ४५     | पिच्छर    | { १८५ | १             | पिच्छान    | १९    | १३    |
| पाशिन      | १५    | ६१     |           | { २९४ | ३१            | पिनर       | १५८   | ६२    |
| पाशुपत     | ८१    | ८१     | पिच्छ     | १६२   | ९९            | पिनाक      | { ११  | २५    |
| पाशुपात्र  | १६५   | २      |           | १७    | २६            | { २३       | १४    |       |
| पाश्यात्र  | २११   | ८१     | पिच्छर    | { ११५ | ६३            | पिनाकिन्   | १     | ११    |
| पाश्या     | २९७   | ४२     |           | { १९२ | २९            | पिपासा     | १७६   | ७८    |
| पाश्या     | ६९    | ४      |           | { १७१ | ३१            | पिपीलिक्का | २८४   | ८     |
| पाश्याहारण | १९३   | १४     |           | { २६१ | १८८           | पिपस       | ७१    | २     |
| पिक        | १     | १९     |           | { १८४ | ९८            | पिपसी      | ८४    | ७     |
| पिक्क      | १३    | १९     |           | { १८५ | १४            | पिपसीमूल   | १८६   | ११    |
| पिक्कल     | { २३  | ११     |           | { २८  | १८            | पिपु       | ११४   | ४९    |
| { ३३       | १६    | पिक्क  | १२        | १२८   | पिपु          | ११६        | ६     |       |
| पिक्कल     | १८    | ४      | पिक्किका  | १५१   | ५६            | पिपुग      | ११    | १६    |
| पिक्क      | { १२  | ७७     | पिक्कित्त | ७६    | ५२            | पिपुष      | ७     | ११    |
| { २८       | १८    | पिक्क  | { २९५     | १२    | १३७           | पिपुष      | ११७   | ६३    |
| पिक्कित्त  | १११   | ४४     | पिक्क     | ११२   | १७            | पिपुष      | { १९  | ११४   |
| पिपु       | १८५   | १      | पिक्क     | { ८   | ११            | { २७       | १७    |       |
| पिपुष      | ७८    | ६२     | पिक्क     | १११   | ३३            | { २५९      | १२७   |       |
| पिपुष      | ७४    | ८      | पिक्क     | ११०   | २८            | पिपुष      | १     | १३३   |
| पिपुष      | १८५   | ५      | पिक्क     | ११०   | ३१            | पिपुष      | १७६   | ४८    |
|            |       |        | पिक्क     | { १४  | ५८            | पिपुष      | १७२   | १०    |
|            |       |        |           | { १७  | ७             | पिपुष      | ११२   | ११    |

| शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक.                      | शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक.                  | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक.                             |
|-----------|--------|-----------------------------|--------------|--------|-------------------------|------------|--------|------------------------------------|
| पीठ       | १३१    | १३८                         | पुज          | १०४    | ४२                      | पुर्       |        | ६१ १                               |
| पीडन      | १६३    | १०९                         | पुटभेद       | ५०     | ७                       | पुर        | {      | ७३ ३४<br>२६१ १८३                   |
| पीडा      | ४९     | ३                           | पुटभेदन      | ६१     | १                       | पुरस्      |        | २७६ ७                              |
| पीत       | ३२     | १४                          | पुटी         | २९८    | ४२                      | पुर.सर     |        | १५६ ७२                             |
| पातदारु   | ७७     | ५३                          | पुडरीक       | {      | १८ ३<br>५७ ४१<br>२२९ ११ | पुरतस्     |        | २७६ ७                              |
| पीतद्वु   | {      | ७८ ६०<br>८४ १०१             | पुडरीकाक्ष   | ८      | १९                      | पुरद्वार   |        | ६४ १६                              |
| पीतन      | {      | ७२ २७<br>१२९ १२४<br>१८५ १०३ | पुङ्ग        | ९५     | १६३                     | पुरन्दर    |        | १२ ४१                              |
| पीतसारक   | ७५     | ४३                          | पुङ्क        | ८०     | ७२                      | पुरन्ध्री  |        | १०५ ६                              |
| पीता      | १७३    | ४१                          | पुण्य        | {      | २८ २४<br>२५६ १६०        | पुरस्कृत   |        | २४२ ८४                             |
| पीताम्बर  | ८      | १९                          | पुण्यक       | १३९    | ३७                      | पुरस्तात्  |        | २७३ २४६                            |
| पीन       | २०८    | ६१                          | पुण्यजन      | १५     | ६०                      | पुरा       |        | २७४ २५३                            |
| पीनस      | ११५    | ५१                          | पुण्यजनेश्वर | १६     | ६९                      | पुराण      | {      | ३४ ५<br>२११ ७७                     |
| पीनोन्नी  | १७९    | ७१                          | पुण्यभूमि    | ५९     | ८                       | पुरातन     |        | २११ ७७                             |
| पीयूष     | {      | १३ ४८<br>१७६ ५४             | पुण्यवत्     | १९६    | ३                       | पुरावृत्त  |        | ३४ ४                               |
| पीड       | {      | ७२ २८<br>२६३ १९३            | पुत्तिका     | १०१    | २७                      | पुरी       |        | ६१ १                               |
| पीडपणीं   | {      | ८२ ८४<br>९१ १३९             | पुत्र        | ११०    | २७                      | पुरीतत्    |        | ११८ ६६                             |
| पीवन      | २०८    | ६१                          | पुत्रिका     | १९२    | २९                      | पुरीष      |        | ११८ ६८                             |
| पीवर      | २०८    | ६१                          | पुत्री       | ११२    | ३७                      | पुरु       |        | २०८ ६३                             |
| पीवरस्तनी | १७९    | ७१                          | पुद्गल       | २४५    | २०                      | पुरो       | {      | २९ २९<br>७२ २५<br>१०४ १<br>२६७ २१८ |
| पुंश्चली  | ११०    | १०                          | पुनःपुनर्    | २७५    | २                       | पुरोत्तम   |        | ८ २१                               |
| पुष्कस    | १९०    | २०                          | पुनर्        | {      | २७४ २५३<br>२७८ १५       | पुरुहू     |        | २०८ ६३                             |
| पुख       | २८८    | १७                          | पुनर्नवा     | ९२     | १४९                     | पुरुहूत    |        | १२ ४१                              |
| पुंगव     | २०८    | ५९                          | पुनर्मव      | १२१    | ८३                      | पुरोग      |        | १५६ ७२                             |
| पुम्छ     | १५२    | ५०                          | पुनर्भू      | १०९    | २३                      | पुरोगम     |        | १५६ ७२                             |
|           |        |                             | पुनाग        | ७२     | २५                      | पुरोगामिन् |        | १५६ ७२                             |
|           |        |                             | पुम्स        | १०४    | १                       |            |        |                                    |

| शब्द.      | पृष्ठ     | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ     | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ     | श्लोक |
|------------|-----------|-------|------------|-----------|-------|------------|-----------|-------|
| पुरोडाश    | २०        | २१    | पुष्पखिहू  | १ २       | २९    | पूर्णकुम्भ | १४९       | ३२    |
| पुरोपसू    | १४४       | ५     | पुष्पकती   | १ ८       | २     | पूर्णमा    | २५        | ७     |
| पुरोमासिन् | २ ५       | ४६    | पुष्पवन्तो | २५        | १     | पूर्व      | १३७       | २८    |
| पुरोहित    | १४४       | ५     | पुष्पसमय   | २७        | १८    | पूर्व      | { २११ ८   |       |
| पुकाक      | २२८       | ५     | पुष्प      | { २१ २२   |       | पूर्व      | { २५१ १३४ |       |
| पुकिन्     | ५         | ०     |            | { २५४ १४६ | ३३    | पूर्व      | ११३       | ४३    |
| पुकिन्     | १९        | २     | पुस्त      | १०२       | २८    | पूर्व      | ७         | १२    |
| पुलोमना    | १२        | ४५    | पूग        | { ९६ १६९  |       | पूर्व      | ६६        | २     |
| पुलित      | २१५       | ९७    |            | { २३१ २   |       | पूर्व      | १७        | १     |
|            | { १७ १    |       | पूना       | १३८       | ३४    | पूर्व      | २७९       | २१    |
|            | { ४९ ४    |       | पुणित      | २१५       | ३८    | पूर्व      | २२        | २९    |
| पुष्कर     | { ५७ ४१   |       | पूष्य      | { १९६ २५४ | १५    | पूष्य      | ३५        | १     |
|            | { ९२ १४५  |       |            | { २५४ १५  |       | पूष्य      | ३५        | १     |
|            | { २३१ १८३ |       |            | { १४ ४५   |       | पूष्य      | { १५७ ७८  |       |
| पुष्कराक्ष | १ ०       | १२    | पूत        | { १७ २३   |       | पूष्य      | { १५८ ८१  |       |
| पुष्करिणी  | ५४        | २७    |            | { २ ७ ५५  |       | पूष्य      | २७५       | ३     |
| पुष्क      | २ ७       | ५८    | पूतना      | ७७        | ५९    | पूष्य      | ८३        | ९२    |
| पुष्ट      | २१५       | ९७    | पूतिक      | ७६        | ४८    | पूष्य      | { २९ ३१   |       |
|            | { ७ १७    |       | पूतिकर     | ७६        | ४८    | पूष्य      | { १३९ ३८  |       |
| पुष्ट      | { १ ८ २१  |       | पूतिकर     | { ७७ ५४   |       | पूष्य      | { १९ १६   |       |
|            | { २९१ २३  |       | पूतिकर     | { ७८ ६    |       | पूष्य      | { २४६ १ ५ |       |
| पुष्ट      | { १६ ७    |       | पूतिकर     | ३२        | १२    | पूष्य      | २१४       | ९३    |
|            | { १८५ १ ३ |       | पूतिकर     | ८३        | ९६    | पूष्य      | ५८        | ३     |
| पुष्ट      | १८५       | १ ३   | पूष        | १७४       | ४८    | पूष्य      | { १७२ ३७  |       |
| पुष्ट      | १८        | ४     | पूर        | २८९       | २     | पूष्य      | { १७३ ४   |       |
| पुष्ट      |           | २६    | पूरणी      | ७५        | ४६    | पूष्य      | { २ ८ ३   |       |
| पुष्ट      | ७५        | ४४    | पूरित      | २१५       | ९८    | पूष्य      | { १ ३ ३८  |       |
| पुष्ट      | ७१        | २१    | पूरय       | १ ४       | १     | पूष्य      | { १७४ ४७  |       |
| पुष्ट      | १५३       | ७१    | पूर्ण      | { २ ९ ६५  |       | पूष्य      | { २२८ ३   |       |
| पुष्ट      | ७         | १७    |            | { २१५ ९८  |       | पूष्य      | ५२        | १७    |

| शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द       | पृष्ठ. | श्लोक | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|------------|--------|-------|------------|--------|--------|
| पृथुल       | ६०     | २०८    | पैतृष्वलीय | १०९    | २५    | प्रकाश     | { २३   | ३४     |
| पृथ्वी      | { ५८   | ६      | पोटगल      | { ९५   | १६२   | प्रकीर्णक  | { २६७  | २१८    |
|             | { १७२  | ३७     |            | { ९५   | १६३   |            | { १४८  | ३१     |
|             | { १७३  | ४०     |            | { १०७  | १५    |            | { ७६   | ४८     |
| पृथ्वीका    | ८८     | १२५    | पोत        | { १०३  | ३८    | प्रकृति    | { २९   | २९     |
| पृदाकु      | ४७     | ६      | पोतवणिज्   | { २३८  | ६०    |            | { ४६   | ३७     |
| पृश्नि      | ११४    | ४८     |            | { ५१   | १२    |            | { १४६  | १८     |
| पृश्निपर्णी | ८३     | ९२     | पोतवाह     | { ५१   | १२    | प्रकोष्ठ   | { २४०  | ७३     |
| पृषत्       | ५०     | ६      | पोताघान    | { ५२   | १९    |            | { १२०  | ८०     |
| पृषत        | { ५०   | ६      | पोत्र      | { २६०  | १८०   |            | { २२४  | २६     |
|             | { ९८   | १०     | पोत्रिन्   | { ९७   | २     | प्रक्रिया  | { १४८  | ३१     |
| पृष्क       | १५९    | ८६     | पौढर्य     | { ८९   | १२७   | प्रक्कण    | { ३८   | २४     |
| पृषदश्च     | १५     | ६२     | पौत्री     | { ११०  | २९    | प्रक्काण   | { ३८   | २४     |
| पृषदाज्य    | १३६    | २४     | पौर        | { ९६   | १६६   | प्रक्षेडन  | { १५९  | ८७     |
| पृष्ठ       | १२०    | ७८     | पौरस्त्य   | { २११  | ८०    | प्रगंड     | { १२०  | ८०     |
| पृष्ठवशाघर  | १२०    | ७६     | पौरुष      | { १२२  | ८७    | प्रगतजानुक | { ११४  | ४७     |
| पृष्ठास्थि  | ११८    | ६९     |            | { २६८  | २२३   | प्रगल्भ    | { २०१  | २५     |
| पृष्ठथ      | { १५१  | ४६     | पौरोगव     | { १७१  | २७    | प्रगाढ     | { २३५  | ४४     |
|             | { २२७  | ४१     | पौर्णमास   | { १४१  | ४८    | प्रगुण     | { २१०  | ७२     |
| पेचक        | { ९९   | १५     | पौर्णमासी  | { २५   | ७     | प्रगे      | { २७९  | १९     |
|             | { २२८  | ६      | पौलस्त्य   | { १६   | ६९    | प्रग्रह    | { १६५  | ११९    |
| पेटक        | १९२    | २९     | पौलि       | { १७४  | ४७    |            | { २७१  | २३७    |
| पेटा        | १९२    | २९     | पौष        | { २६   | १५    | प्रग्राह   | { २७१  | २३७    |
| पेटी        | २९८    | ४२     | पौष्पक     | { १८५  | १०३   | प्रग्रीव   | { २९६  | ३५     |
| पेलव        | २०९    | ६६     | प्याट्     | { २७६  | ७     | प्रघण      | { ६४   | १२     |
| पेशल        | { १९०  | १९     | प्रकांड    | { २८   | २७    | प्रघाण     | { ६४   | १२     |
|             | { १६५  | २०५    |            | { ६९   | १०    | प्रचक्र    | { १६१  | ९६     |
| पेशी        | १०३    | ३७     | प्रकाम     | { १७६  | ५७    | प्रचलायित  | { २०२  | ३२     |
| पैटर        | १७४    | ४५     | प्रकार     | { २५७  | १६२   | प्रचुर     | { २०८  | ६३     |
| पैतृष्वसेय  | १०९    | २५     |            |        |       | प्रचेतस्   | { १५   | ६      |



| शब्द.       | पृष्ठ     | श्लोक    | शब्द.        | पृष्ठ   | श्लोक | शब्द.        | पृष्ठ     | श्लोक  |
|-------------|-----------|----------|--------------|---------|-------|--------------|-----------|--------|
| प्रचोदनी    | ८३        | १४       | प्रवाप       | १४६     | २     | प्रतिभू      | १९५       | ४४     |
| प्रच्छन्नपट | १२७       | ११६      | प्रवापत्     | ८१      | ८१    | प्रतिमा      | १९३       | ३५     |
| प्रच्छन्न   | १४        | १४       | प्रति        | २७३     | २४५   | प्रतिमान     | { १५ १९   |        |
| प्रच्छिन्ना | ११९       | ५५       | प्रतिकर्मन्  | १२४     | ९९    |              | { १९३ ३५  |        |
| प्रच्छन्न   | २२४       | २५       | प्रतिकृच्छ   | २१२     | ८४    | प्रतिमुच्छ   | १५५       | ६५     |
| प्रच्छिन्न  | १५६       | ७३       | प्रतिकृष्टि  | १९३     | ३६    | प्रतिरोक्ति  | १९१       | २५     |
| प्रज्ञा     | २३३       | ३२       | प्रतिकृष्ट   | २ ७     | ४४    | प्रतिस्वच्छ  | २४६       | १ ७    |
| प्रज्ञाता   | १ ८       | १६       | प्रतिक्षिप्त | २ ४     | ४२    | प्रतिवातन्ता | १९३       | ३६     |
| प्रज्ञापति  | ८         | १७       | प्रतिस्फाति  | २२५     | २८    | प्रतिवाक्य   | ३५        | १      |
| प्रज्ञावती  | ११        | ३        | प्रतिग्रह    | १५८     | ७९    | प्रतिविद्या  | ८४        | ९९     |
| प्रज्ञा     | { २९ १७   | { १ १२   | प्रतिग्रह    | १३२     | १३९   | प्रतिग्राह्य | २२६       | ३४     |
|             |           |          | प्रतिषा      | ४३      | २६    | प्रतिस्था    | ११५       | ५१     |
| प्रज्ञान    | २४९       | १२२      | प्रतिपातन    | १६४     | ११४   | प्रतिभय      | २५५       | १५२    |
| प्रज्ञ      | ११४       | ४७       | प्रतिष्ठापना | १९३     | ३५    | प्रतिभय      | ३         | ५      |
| प्रज्ञीन    | १ ३       | ३७       | प्रतिभागर    | २२५     | २८    | प्रतिभुत्    | ३८        | २६     |
| प्रधय       | { १२४ २५४ | { २५ १५३ | प्रतिष्ठात   | २१७     | १ ८   | प्रतिष्ठान   | २२४       | २७     |
| प्रधय       | ३४        | ४        | प्रतिष्ठान   | ३       | ५     | प्रतिष्ठार   | २५९       | १७४    |
| प्रणात्     | ३५        | ११       | प्रतिष्ठान   | १८१     | ८१    | प्रतिष्ठि    | १२८       | १२     |
| प्रणाडी     | ५३        | ३५       | प्रतिष्ठान   | ३८      | २३    | प्रतिष्ठि    | २ ४       | ४१     |
| प्रणिभि     | { १४५ २४५ | { १३ १   | प्रतिनिधि    | १९३     | ३६    | प्रतिहारक    | १८९       | ११     |
| प्रणिहित    | २१२       | ८६       | प्रतिपत्     | { २४ २९ | { १ १ | प्रति        | ८१        | ७६     |
| प्रणिति     | { १३५ १७४ | { २ ४५   | प्रतिपत्ता   | २१७     | १ ८   | प्रतीक       | { ११८ २२९ | { ७ ७  |
| प्रणुत      | २१७       | १ ९      | प्रतिपादन    | १३७     | २     | प्रतीकार     | १६३       | ११     |
| प्रणव       | २         | २५       | प्रतिपक्ष    | २ ४     | ४१    | प्रतीकाम्य   | १९४       | ३७     |
| प्रणग       | २११       | ७७       | प्रतिपक्ष    | २२४     | २७    | प्रतीक्ष     | १९६       | ५      |
| प्रणव       | { १२१ १२१ | { ८४ ८५  | प्रतिपक्ष    | ४२      | २     | प्रतीक्षी    | १७        | १      |
|             |           |          | प्रतिपक्ष    | २ १     | २५    | प्रतीक्ष     | { १९७ २४२ | { ९ ८२ |

| शब्द.            | पृष्ठ.    | श्लोक.     | शब्द.         | पृष्ठ.    | श्लोक.     | शब्द.     | पृष्ठ.    | श्लोक. |
|------------------|-----------|------------|---------------|-----------|------------|-----------|-----------|--------|
| प्रतीपदर्शिनी    | १०४       | २          | प्रथम         | { २११ ८०  | प्रभव      | २६६       | २१०       |        |
| प्रतीर           | ५०        | ७          |               | { २५३ १४४ | प्रभा      | २३        | ३४        |        |
| प्रतीहार         | { ६४ १६   | प्रथा      | २२०           | ९         | प्रभाकर    | २२        | २८        |        |
|                  | { १४४ ६   | प्रथित     | १९७           | ९         | प्रभात     | २४        | ३         |        |
|                  | { २५८ १७० | प्रदर      | २५७           | १६४       | प्रभाव     | { १४६ १९  |           |        |
| प्रतोली          | ६२        | ३          | प्रदीप        | १३१       | १३८        | { १४६ २०  |           |        |
| प्रल             | २१        | ७७         | प्रदीपन       | ४८        | १०         | प्रभिन्न  | १४९       | ३६     |
| प्रत्यक्         | २८०       | २३         | प्रदेशन       | १४८       | २७         | प्रभु     | १९८       | ११     |
| प्रत्यक्षपणी     | ८२        | ८९         | प्रदेशिनी     | १२१       | ८१         | प्रभूत    | २०८       | ६३     |
| प्रत्यक्षेत्रेणि | { ८२ ८८   | प्रदोष     | २४            | ५६        | प्रभ्रष्टक | १३१       | १३५       |        |
|                  | { ९२ १४४  | प्रद्युम्न | ९             | २५        | प्रमय      | ११        | ३५        |        |
| प्रत्यक्ष        | २११       | ७९         | प्रद्राव      | १६४       | १११        | प्रमथन    | १६४       | ११५    |
| प्रत्यग्र        | २११       | ७७         | प्रघन         | १६२       | १०३        | प्रमथाधिप | १०        | ३१     |
| प्रत्यन्त        | ५९        | ७          |               |           |            | प्रमद     | २८        | २४     |
| प्रत्यन्तपर्वत   | ६६        | ७          |               | { २९ २९   | प्रमदवन    | ६७        | ३         |        |
| प्रत्यय          | २५४       | १४७        | प्रधान        | { १४४ ५   | प्रमदा     | १०५       | ३         |        |
| प्रत्ययित        | १४५       | १३         |               | { २०७ ५७  | प्रमनस्    | १९७       | ७         |        |
| प्रत्यर्थिन्     | १४५       | ११         |               | { २४९ १२२ | प्रमा      | २२०       | १०        |        |
| प्रत्यवसित       | २१८       | ११०        | प्राधि        | १५३       | ५६         | प्रमाण    | २३७       | ५३     |
| प्रत्याख्यात     | २०४       | ४०         | प्रपच         | २३२       | २८         | प्रमाद    | ४४        | ३०     |
| प्रत्याख्यान     | २२५       | ३१         | प्रपद         | ११९       | ७१         | प्रमापण   | १६४       | ११२    |
| प्रत्यादिष्ट     | २०४       | ४०         | प्रपा         | ६३        | ७          | प्रमिति   | २२०       | १०     |
| प्रत्यादे        | २२५       | ३१         | प्रताप        | ६६        | ४          |           | { १३६ २६  |        |
| प्रत्यालीढ       | १५९       | ८५         | प्रपितामह     | १११       | ३३         | प्रमीत    | { १६४ ११७ |        |
| प्रत्यासार       | १५८       | ७९         | प्रपुत्राढ    | ९२        | १४७        |           | { ४६ ३७   |        |
| प्रत्याहार       | २२२       | १६         | प्रपौडरीक     | ९१        | १२७        | प्रमीला   | { २५९ १७६ |        |
| प्रत्युत्क्रम    | २२४       | २६         | प्रफुल्ल      | ६८        | ७          | प्रमुख    | २०७       | ५७     |
| प्रत्युषस्       | २४        | २          | प्रबन्धकल्पना | ३५        | ६          | प्रमुदित  | २१६       | १०३    |
| प्रत्यूप         | २४        | २          | प्रबोधन       | १२८       | १२२        | प्रमोद    | २८        | २४     |
| प्रत्यृह         | २२३       | १९         | प्रभजन        | १५        | ६३         | प्रयत     | १४०       | ४५     |

| शब्द         | पृष्ठ     | श्लोक    | शब्द        | पृष्ठ   | श्लोक | शब्द         | पृष्ठ          | श्लोक  |
|--------------|-----------|----------|-------------|---------|-------|--------------|----------------|--------|
| प्रचौदनी     | ८३        | ९४       | प्रताप      | १४६     | २     | प्रतिभू      | १९५            | ४४     |
| प्रच्छदपट    | १२७       | ११६      | प्रतापव     | ८१      | ८१    | प्रतिमा      | १९३            | ३५     |
| प्रच्छन्न    | ६४        | १४       | प्रति       | २७३     | २४५   | प्रतिमान     | { १५ ३९ १९३ ३५ |        |
| प्रच्छर्विका | ११६       | ५५       | प्रतिकर्मन् | १२४     | ९९    |              |                |        |
| प्रचन        | २२४       | २५       | प्रतिकूल    | २१२     | ८४    | प्रतिमुक्त   | १५५            | ६५     |
| प्रचयिन      | १५६       | ७३       | प्रतिक्रति  | १९३     | ३६    | प्रतिरोधिन   | १९१            | २५     |
| प्रच्य       | २३३       | ३२       | प्रतिक्रय   | २ ७     | ४४    | प्रतिमन्त्र  | २४६            | १ ७    |
| प्रच्यता     | १ ८       | १६       | प्रतिक्षित  | २ ४     | ४२    | प्रतिवाक्यता | १९३            | ३६     |
| प्रचापति     | ८         | १७       | प्रतिस्फाति | २२५     | २८    | प्रतिवाक्य   | ३५             | १      |
| प्रचावली     | ११        | ३        | प्रतिग्रह   | १५८     | ७९    | प्रतिविषा    | ८४             | ९९     |
| प्रच्य       | { २९ १ ७  | { १ १२   | प्रतिग्रह   | १३२     | १३९   | प्रतिघातन    | २२६            | ३४     |
|              |           |          | प्रतिषा     | ४३      | २६    | प्रतिष्या    | ११५            | ५१     |
| प्रचान       | २४९       | १२२      | प्रतिघातन   | १६४     | ११४   | प्रतिभय      | २५५            | १५२    |
| प्रच         | ११४       | ४७       | प्रतिष्ठाभा | १९३     | ३५    | प्रतिमन्त्र  | ३              | ५      |
| प्रचनी       | १ ३       | ३७       | प्रतिशामर   | २२५     | २८    | प्रतिभु      | ३८             | २६     |
| प्रचम        | { १२४ २५४ | { २५ १५१ | प्रतिष्ठात  | २१७     | १ ८   | प्रतिहृग्म   | २२४            | २७     |
| प्रचव        | ३४        | ४        | प्रतिष्ठान  | ३       | ५     | प्रतिहर      | २५९            | १७४    |
| प्रपाद       | ३५        | १३       | प्रतिष्ठान  | १८१     | ८१    | प्रतिधीरा    | १२८            | १२     |
| प्रपाळी      | ५६        | ३५       | प्रतिष्ठात  | ३८      | २६    | प्रति        | २ ४            | ४१     |
| प्रप्रिधि    | { १४५ २४५ | { १३ १   | प्रतिनिधि   | १९३     | ३६    | प्रतिहारक    | १८९            | ११     |
| प्रप्रिहित   | ११२       | ८६       | प्रतिपु     | { २४ २९ | { १ १ | प्रतीक       | { ११८ २२९      | { ७ ७  |
| प्रप्रीत     | { ११५ १७४ | { २ ४५   | प्रतिपन्न   | २१७     | १ ८   | प्रतीकार     | १६३            | ११     |
| प्रपुत       | २१७       | १ ७      | प्रतिपन्न   | २ ४     | ४१    | प्रतीकान्न   | १९४            | ३७     |
| प्रनेय       | २ ७       | २५       | प्रतिपन्न   | २२४     | २७    | प्रतीक       | १९६            | ५      |
| प्रपन्न      | २११       | ७७       | प्रतिपिन्न  | १ ३     | ३५    | प्रतीधी      | १७             | १      |
| प्रपन्न      | { १२१ १३१ | { ८४ ८५  | प्रतिपय     | ४२      | २     | प्रतीध       | { १९७ २४२      | { ९ ८२ |

| शब्द.           | पृष्ठ. | श्लोक | शब्द.         | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------------|--------|-------|---------------|--------|--------|------------|--------|--------|
| प्रतीपदर्शिनी   | १०४    | २     | प्रथम         | { २११  | ८०     | प्रभव      | २६६    | २१०    |
| प्रतीर          | ५०     | ७     |               | { २५३  | १४४    | प्रभा      | २३     | ३४     |
| प्रतीहार        | ६४     | १६    | प्रथा         | २२०    | ९      | प्रभाकर    | २२     | २८     |
|                 | १४४    | ६     | प्रथित        | १९७    | ९      | प्रभात     | २४     | ३      |
|                 | २५८    | १७०   | प्रदर         | २५७    | १६४    | प्रभाव     | { १४६  | १९     |
| प्रतोली         | ६२     | ३     | प्रदीप        | १३१    | १३८    |            | { १४६  | २०     |
| प्रत्न          | २१     | ७७    | प्रदीपन       | ४८     | १०     | प्रभिन्न   | १४९    | ३६     |
| प्रत्यक्        | २८०    | २३    | प्रदेशन       | १४८    | २७     | प्रभु      | १९८    | ११     |
| प्रत्यकूपणी     | ८२     | ८९    | प्रदेशिनी     | १२१    | ८१     | प्रभूत     | २०८    | ६३     |
| प्रत्यक्षेत्रणि | ८२     | ८८    | प्रदोष        | २४     | ५६     | प्रभ्रष्टक | १३१    | १३५    |
|                 | ९२     | १४४   | प्रद्युम्न    | ९      | २५     | प्रमथ      | ११     | ३५     |
| प्रत्यक्ष       | २११    | ७९    | प्रद्राव      | १६४    | १११    | प्रमथन     | १६४    | ११५    |
| प्रत्यग्र       | २११    | ७७    | प्रघन         | १६२    | १०३    | प्रमथाधिप  | १०     | ३१     |
| प्रत्यन्त       | ५९     | ७     |               | { २९   | २९     | प्रमद      | २८     | २४     |
| प्रत्यन्तपर्वत  | ६६     | ७     | प्रघान        | { १४४  | ५      | प्रमदवन    | ६७     | ३      |
| प्रत्यय         | २५४    | १४७   |               | { २०७  | ५७     | प्रमदा     | १०५    | ३      |
| प्रत्ययित       | १४५    | १३    |               | { २४९  | १२२    | प्रमनस्    | १९७    | ७      |
| प्रत्यर्थिन्    | १४५    | ११    | प्राधि        | १५३    | ५६     | प्रमा      | २२०    | १०     |
| प्रत्यवसित      | २१८    | ११०   | प्रपन्न       | २३२    | २८     | प्रमाण     | २३७    | ५३     |
| प्रत्याख्यात    | २०४    | ४०    | प्रपद         | ११९    | ७१     | प्रमाद     | ४४     | ३०     |
| प्रत्याख्यान    | २२५    | ३१    | प्रपा         | ६३     | ७      | प्रमापण    | १६४    | ११२    |
| प्रत्यादिष्ट    | २०४    | ४०    | प्रताप        | ६६     | ४      | प्रमिति    | २२०    | १०     |
| प्रत्यादे       | २२५    | ३१    | प्रपितामह     | १११    | ३३     | प्रमीत     | { १३६  | २६     |
| प्रत्यालीढ      | १५९    | ८५    | प्रपुत्राढ    | ९२     | १४७    |            | { १६४  | ११७    |
| प्रत्यासार      | १५८    | ७९    | प्रपौडरीक     | ९१     | १२७    | प्रमीलि    | { ४६   | ३७     |
| प्रत्याहार      | २२२    | १६    | प्रफुल्ल      | ६८     | ७      |            | { २५९  | १७६    |
| प्रत्युत्क्रम   | २२४    | २६    | प्रबन्धकल्पना | ३५     | ६      | प्रमुख     | २०७    | ५७     |
| प्रत्युषस्      | २४     | २     | प्रबोधन       | १२८    | १२२    | प्रमुदित   | २१६    | १०३    |
| प्रत्यूप        | २४     | २     | प्रभजन        | १५     | ६३     | प्रमोद     | २८     | २४     |
| प्रत्युह        | २२३    | १९    |               |        |        | प्रयत      | १४०    | ४५     |

| अध्याय    | पृष्ठ | श्लोक | अध्याय | पृष्ठ | श्लोक | अध्याय         | पृष्ठ | श्लोक |
|-----------|-------|-------|--------|-------|-------|----------------|-------|-------|
| अथस्त     | १७४   | ४५    | अथेणी  | { १२४ | ९८    | अथस्त          | २४६   | १ ४   |
| अथाम      | २२४   | २३    |        | { १५१ | ४२    |                | { ११  | २९    |
| अथामार्ग  | २२४   | २६    | अथस्त  | १२    | ८     | अथस्त          | { २६९ | २२९   |
| अथाम्ब    | ९     | २३    | अथस्त  | २११   | ८१    | अथस्त          | १ ८   | १६    |
| अथाम्ब    | { २८  | २२    | अथस्त  | ३५    | १     | अथस्त          | २२१   | १     |
|           | { ४५  | ३३    | अथस्त  | २२४   | २५    | अथस्तिका       | १ ८   | १६    |
|           | { ११४ | ११६   | अथस्त  | २     | २५    | अथस्तिका       | ५९    | ३     |
| अथाम्ब    | ३६    | १५    | अथस्त  | १५६   | ७२    | अथस्त          | { ७१  | १७    |
| अथाम्ब    | २३७   | ५६    | अथस्त  | १७७   | ३३    | अथस्त          | { २४९ | १२३   |
| अथाम्ब    | ११३   | ४२    | अथस्त  | १ ९   | ७     | अथस्तिकापिठायी | ११२   | ३७    |
| अथाम्ब    | २ ७   | ५७    | अथस्त  | ५२    | १४    | अथस्त          | २१३   | ८८    |
| अथाम्ब    | २२२   | १८    | अथस्त  | २     | १६    | अथस्त          | ११९   | ७२    |
| अथाम्ब    | १५३   | ५२    | अथस्त  | १९४   | ३९    | अथस्त          | १२१   | ८५    |
| अथाम्बिका | १४    | ३     | अथस्त  | १६३   | १ ८   | अथस्त          | १७    | २३    |
| अथाम्ब    | २१९   | ३     | अथस्त  | २२४   | २३    | अथस्त          | ४     | ७     |
| अथाम्ब    | { ४   | ७     | अथस्त  | १६१   | ९६    | अथस्त          | { ६६  | ८     |
|           | { १८३ | ९३    | अथस्त  | { २९१ | १     | अथस्त          | { २५७ | १६१   |
|           | { २६५ | २ ४   | अथस्त  | { २६५ | २ ८   | अथस्त          | २२४   | २८    |
| अथाम्ब    | २२२   | १८    | अथस्त  | ७     | १५    | अथस्त          | { ६६  | ५     |
| अथाम्ब    | १६४   | ११३   | अथस्त  | २१२   | ८४    | अथस्त          | { १८२ | ८९    |
| अथाम्बिका | ११६   | ५५    | अथस्त  | २७७   | १     | अथस्त          | { २४३ | ८८    |
| अथाम्ब    | १६२   | १ ३   | अथस्त  | { २   | १६    | अथस्त          | ८१    | ७९    |
| अथाम्ब    | २२३   | २     | अथस्त  | { २४३ | ९१    | अथस्त          | १८२   | ८५    |
| अथाम्ब    | १९६   | ४     | अथस्त  | १२४   | ९९    | अथस्त          | १३१   | ९५    |
| अथाम्ब    | { ३४  | ७     | अथस्त  | १३०   | १७९   | अथस्त          | १७    | २३    |
|           | { २२२ | १८    | अथस्त  | १२४   | १     | अथस्त          | ६६    | ५     |
|           | { १११ | ७६    | अथस्त  | ९३    | १५२   | अथस्त          | ११८   | ६६    |
| अथाम्ब    | { २१३ | ८८    | अथस्त  | २ २   | ३१    | अथस्त          | २५    | ६     |
|           | { २४९ | ८५    | अथस्त  | १९७   | ९     | अथस्त          | १५८   | ८२    |
| अथाम्ब    | २७७   | ५७    | अथस्त  | २२२   | १४    | अथस्त          | १२१   | ८४    |

| शब्द.                           | पृष्ठ | श्लोक. | शब्द.          | पृष्ठ | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------------------------|-------|--------|----------------|-------|--------|-------------|--------|--------|
| प्रदि                           | ५४    | २६     | प्राज्ञी       | १०७   | १२     | प्रालम्बिका | १२५    | १०४    |
| प्रहेलिका                       | ३४    | ६      | प्राप्य        | २०८   | ६३     | प्रालय      | २०     | १८     |
| प्रहस                           | २१६   | १०३    | प्राड्विचार    | १४४   | ५      | पावरण       | १२८    | ११८    |
| प्रांशु                         | २०९   | ७०     | प्राण          | { १५  | ६३     | प्रावार     | १२८    | ११७    |
| प्राक्                          | { २७८ | १६     |                | { १६२ | १०२    | प्रावृत     | १२७    | ११३    |
|                                 | { २८० | २३     |                | { १६५ | ११९    | प्रावृष्    | २७     | १९     |
|                                 |       |        |                | { १८५ | १०४    | प्रावृषायणी | ८२     | ८६     |
| प्राकाम्य                       | ११    | ३६     | प्राणिन्       | २९    | ३०     | प्रास       | १६०    | ९३     |
| प्राकार                         | ६२    | ३      | प्राणिद्युत    | १५५   | ४६     | प्रासग      | १५४    | ५७     |
| प्राकृत                         | १८९   | १६     | प्रातर         | २७९   | १९     | प्रासग्य    | १७७    | ६४     |
| प्राग्दक्षिण                    | ५९    | ७      | प्राथमकालिक    | १३४   | ११     | प्रासाद     | ८३     | ९      |
| प्राग्वश                        | १३५   | १६     |                |       |        | प्रासिक     | १५६    | ७०     |
| प्राग्रहर                       | २०७   | ५८     | प्राहुस्       | { २७४ | २५६    | प्राह्      | २४     | ४      |
| प्राग्र्य                       | २०७   | ५८     |                | { २७७ | १२     |             |        |        |
| प्राघार                         | २२१   | १०     | प्रादेश        | १२१   | ८३     | प्रिय       | { १११  | ३५     |
| प्राघुणक                        | १३८   | ३४     | प्रादेशन       | १३७   | ३०     |             | { २०७  | ५३     |
| प्राघूर्णिक                     | १३८   | ३४     | प्राध्यम्      | २७५   | ४      | प्रियक      | { ७५   | ४२     |
| प्राचक्षा                       | २८४   | ८      | प्रान्तर       | ६१    | १७     |             | { ७५   | ४४     |
| प्राची                          | १७    | १      | प्राप्त        | { २१२ | ८६     |             | { ७७   | ५६     |
| प्राचीन                         | ६२    | ३      |                | { २१६ | १०४    |             | { ९८   | ९      |
| प्राचीना                        | ८२    | ८५     | प्राप्तपञ्चत्व | १६४   | ११७    | प्रियगु     | { ७७   | ५५     |
| प्राचीनावीत                     | १४१   | ५०     | प्राप्तरूप     | २५१   | १३१    |             | { १६९  | २०     |
| प्राच्य                         | ५९    | ७      | प्राप्ति       | { ११  | ३६     | प्रियता     | ४४     | २७     |
| प्राजन                          | १६७   | १२     |                | { २३९ | ६९     | प्रियमद     | २०३    | ३६     |
| प्राजितृ                        | १५४   | ५९     | प्राप्य        | २१४   | ९२     | प्रियाळ     | ७३     | ३५     |
| प्राश                           | १३३   | ५      | प्राभृत        | १४८   | २७     | प्रिणन      | २१९    | ४      |
| प्राशा                          | १०७   | १२     | प्राय          | { १४३ | ५२     | प्रीत       | २१६    | १०३    |
|                                 |       |        |                | { २५५ | १५३    | प्रीति      | २८     | २४     |
|                                 |       |        | प्रायस्        | २७८   | १७     | प्रुष्ट'    | २१५    | ९९     |
| १-(प्राघूर्णिक प्राघुणक-प्राथित |       |        |                | २१५   | ९७     | प्रेक्षा    | { २९   | १      |
| श्राम्युत्यान व गौरवम् ) ।      |       |        | प्रालम्ब       | १३१   | १३६    |             | { २६८  | २२४    |

| शब्द.      | पृष्ठ | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ | श्लोक. | शब्द.   | पृष्ठ | श्लोक. |
|------------|-------|--------|-----------|-------|--------|---------|-------|--------|
| प्रेक्षा   | १५३   | ५३     | प्रीहयानु | ७३    | ४९     | फणित    | १७३   | ४३     |
| प्रेक्षित  | २१२   | ८७     | प्रुत     | १५२   | ४८     | फोट     | २१४   | ९४     |
| प्रेत      | { ३९  | २      | प्रष्ट    | २७५   | ९९     | फाळ     | { १२६ | १११    |
|            | { १६४ | ११७    | प्रीप     | १२२   | ९      |         | { १६८ | १३     |
|            | { २३८ | ३०     | प्रात     | २१८   | ११     | फागुन   | २६    | १५     |
| प्रेतप     | २७३   | ८      | फ         |       |        | फासुमिक | २६    | १५     |
| प्रेमन्    | { ४४  | २७     | फना       | ४८    | ९      | फारगुनी | २८३   | ६      |
|            | { ४४  | २७     | फनिमक     | ८१    | ७९     | फुल     | ६८    | ८      |
| प्रेष्ठ    | २१८   | १११    | फणित      | ४७    | ७      | फेन     | { १८५ | १०५    |
| प्रेष      | २६७   | २१९    |           |       |        |         | { १८९ | १९     |
| प्रेष्य    | २९०   | १७     |           | { १६  | ९      |         |       |        |
| प्रीक्षण   | १३३   | २६     |           | { १६८ | १३     | फेनि    | { ७३  | ३१     |
| प्रीक्षित  | १३६   | २६     |           | { १८१ | ८      |         | { ७४  | ३३     |
| प्रीक्ष    | १५३   | ४९     |           | { १६४ | २      | फिरा    | ९७    | ५      |
| प्रीक्षपदा | २१    | २२     |           | { १९१ | २३     | फेक     | ९७    | ५      |
| प्रीक्षी   | ५२    | १८     | फकक       | १६    | ९      | फेका    | १७६   | ५६     |
| प्रीक्षरद  | २७    | १७     | फककपावि   | १५६   | ७१     | व       |       |        |
| प्रीक्ष    | २११   | ७३     | फकनिक     | १८७   | १११    | वैक     | १     | २१     |
| प्रव       | { ७३  | ३२     | फकपाकाला  | ३८    | ३      | वकुल    | ७८    | ६४     |
|            | { ७५  | ४३     | फकपूर     | ८१    | ७८     | वविश    | ५२    | १६     |
|            | { ५१  | ११     | फकपु      | ६८    | ७      | वत      | २७३   | २४     |
| प्रव       | { ५४  | २४     | फकपाकाल   | ७५    | ४५     | वदर     | ७४    | ३७     |
|            | { ९   | १३९    | फकित      | ६८    | ७      | वदरा    | { ८७  | ११६    |
|            | { १२  | ३४     | फकित      | ६८    | ७      |         | { ९३  | १५१    |
| प्रवग      | { १०  | १९     | फकित      |       |        | वदरी    | ७४    | ३६     |
|            | { ९६  | ३      | फकित      | { ७७  | ५५     |         |       |        |
|            | { २३१ | २४     | फकित      | { ९   | १३६    | वद      | { २४  | ४२     |
| प्रवग      | ९६    | ३      | फकित      | ७७    | ५५     |         | { २१४ | ५      |
| प्रवगम     | २५२   | १३८    | फकित      | ७७    | ५४     | वदिर    | ११४   | ४८     |
| प्रव       | ७     | १८     | फकित      | { ७८  | ६१     | वदिर    | १६१   | ९७     |
| प्रीह      | ११८   | ३३     | फकित      | { २७  | ५३     | वदरी    | १६५   | ११     |
|            |       |        |           |       |        | वदरी    | १६    | १०     |

| शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| वन्धन     | { १४८  | २६     | बलवत्      | { ११३  | ४४     | बहुकर       | १९९    | १७     |
|           | { २२२  | १४     |            | { २७५  | २      | बहुगर्हवाक् | २०३    | ३६     |
| बन्धु     | १११    | ३४     | बलविन्यास  | १५७    | ७९     | बहुपाद      | ७३     | ३२     |
| बन्धुजीवक | ८०     | ७३     | बला        | ८५     | १०७    | बहुप्रद     | १९७    | ६      |
| बन्धुता   | १११    | ३५     | बलाका      | १०१    | २५     | बहुमूल्य    | १२७    | ११३    |
| बन्धुर    | २०९    | ६९     | बलात्कार   | १६३    | १०८    | बहुरूप      | १२९    | १२८    |
| बन्धुल    | १०९    | २६     | बलाराति    | १०२    | ४३     |             | { २०८  | ६३     |
| बन्धुक    | ८०     | ७३     | बलाहक      | १८     | १६     | बहुल        | { २१८  | ११२    |
| बन्धूक    | ८०     | ७३     |            | { १३४  | १४     |             | { २६३  | १९९    |
| बधूक      | ७५     | ४४     | बलि        | { १४८  | २७     | बहुला       | ८८     | १२५    |
| बभ्रु     | २५८    | १७०    |            | { २६३  | १९५    | बहुलीकृत    | १७०    | २३     |
| बर्वर     | ८३     | ९०     | बलिध्वसिन् | ९      | २१     | बहुवारक     | ७३     | ३४     |
| बर्वरा    | ९१     | १३९    | बलिन       | ११३    | ४५     | बहुविधि     | २१४    | ९३     |
| वई        | { १०२  | ३१     | बलिपुष्ट   | १००    | २०     | बहुवेतस     | ४९     | ९      |
|           | { २७१  | २३६    | बलिभ       | ११३    | ४५     | बहुसुता     | ८४     | १००    |
| वईपुष्प   | ९०     | १३२    | बलिभुज्    | १००    | २०     | बहुसूति     | १७९    | ७०     |
| बहि       | १४     | ५४     | बलिर       | ११४    | ४९     | बाकुची      | ८३     | ९६     |
| बहिण      | १०२    | ३०     | बलिसन्नन्  | ४६     | १      | बाढ         | { १६   | ६७     |
| बहिन्     | १०२    | ३०     | बलीवर्द    | १७७    | ५९     |             | { २३५  | ४४     |
| बहिपुष्प  | ९०     | १३२    | बल्लव      | { १७१  | २७     | बाण         | { १५९  | ८६     |
| बहिर्मुख  | ७      | ९      |            | { १७६  | ५७     | बाणा        | { २३५  | ४५     |
| बहिष्ठ    | ८८     | १२२    | बल्लवज     | ९५     | १६३    | बादर        | १२६    | १११    |
|           | { ९    | २४     | बष्कयिणी   | १७९    | ७१     | बाघा        | ४९     | ३      |
| बल        | { १५७  | ७८     | बस्त       | १८०    | ७६     | बाघकिनेय    | १०९    | २६     |
|           | { १६२  | १०२    | बस्ति      | ११९    | ७३     | बाघव        | १११    | ३४     |
|           | { २६३  | १९५    | बहिर्द्वार | ६४     | १६     | बाहृत       | ७०     | १९     |
|           | { २९०  | २२     | बहिष्ठ     | २१८    | १११    |             | { ८८   | १२२    |
| बलदेव     | ९      | २३     | बहिस्      | २७८    | १७     | बाल         | { ११३  | ४२     |
| बलभद्र    | ९      | २३     | बहु        | २०८    | ६३     |             | { २६५  | २०५    |
| बलभद्रिका | ९३     | १५०    |            |        |        |             |        |        |



| शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ.    | श्लोक.    |    |
|-----------|--------|--------|------------|--------|--------|-----------|-----------|-----------|----|
| मेला      | १५३    | ५३     | प्रीहयु    | ७६     | ४९     | काचित     | १७३       | ४१        |    |
| मंथित     | २१२    | ८७     | पुत्र      | १५२    | ४८     | काट       | २१४       | ९४        |    |
| प्रेष     | {      | १९     | २          | पुत्र  | २१५    | ९९        | काक       | { १२३ १२१ |    |
|           |        | ११४    | ११७        | पुत्र  | १७०    | ९         |           |           |    |
|           |        | २१८    | १०         | पुत्र  | २१८    | ११        | कास्तुन   | २६        | १५ |
| प्रेष     | २७९    | ८      | फ          |        |        | कास्तुमिक | ७६        | १५        |    |
| प्रेमद    | {      | ४४     | २७         | कला    | ६८     | ९         | कास्तुनी  | २८३       | ६  |
|           |        | ४४     | २७         | कलिकक  | ८१     | ७९        | कल        | ६८        | ८  |
| प्रेम     | २१८    | १११    | कलिक       | ४७     | ७९     | केन       | { १८५ १ ५ |           |    |
| प्रेम     | २१७    | २१९    | कलिक       |        |        |           | { २८९ १९  |           |    |
| प्रीक्ष   | {      | १९     | १७         | कल     | {      | १६ ९      | केनि      | { ७३ ३१   |    |
|           |        | १३३    | २६         |        |        |           |           |           |    |
| प्रीक्षण  | १३३    | २६     | केर        |        |        |           | ९७ ७      |           |    |
| प्रीक्षित | १३३    | २६     |            |        |        |           |           |           |    |
| प्रीष     | १५२    | ६९     | केर        |        |        |           | ९७ ५      |           |    |
| प्रीषपरा  | २१     | २२     | कलक        | १६     | ९      | केला      | १७६       | ५६        |    |
| प्रीषी    | ५२     | १८     | कलकपाणि    | १५३    | ७१     | व         |           |           |    |
| प्रीषपद   | २७     | १७     | कलनिक      | १८७    | १११    | के        | १         | २२        |    |
| प्रीष्ट   | २११    | ७६     | कलपाकान्ता | ६८     | ६      | केकुल     | ७८        | ६४        |    |
| प्र       | {      | ७७     | ३२         | कलपूर  | ८१     | ७८        | केडि      | ५२        | १६ |
|           |        | ७९     | ४३         | कलपूर  | ६८     | ७७        | केड       | २७३       | २४ |
| प्र       | {      | ५१     | ११         | कलपूर  | ७५     | ४५        | केड       | ७४        | ३७ |
|           |        | ५४     | २४         | कलपूर  | ७८     | ७         | केड       | { ८७ ११६  |    |
|           |        | १३२    | १३         | कलपूर  | ६८     | ७         | केड       | { ९३ १५१  |    |
|           |        | १ २    | १४         | कलपूर  | ६८     | ७         | केड       | { ७४ ३६   |    |
| प्र       | {      | १      | १९         | कलपूर  | ७७     | ५५        | केड       | { २०४ ४२  |    |
|           |        | १६     | ३          | कलपूर  | ७७     | ५५        | केड       | { २१४ ५   |    |
| प्र       | २३१    | २४     | कलपूर      | ७७     | ५५     | केड       | ११४       | ४८        |    |
| प्र       | ६      | ३      | कलपूर      | ७७     | ५५     | केड       | ११४       | ४८        |    |
| प्र       | २७२    | १३८    | कलपूर      | ७७     | ५५     | केड       | ११४       | ४८        |    |
| प्र       | ७      | १८     | कलपूर      | ७७     | ५५     | केड       | ११४       | ४८        |    |
| प्र       | ११८    | ६६     | कलपूर      | ७७     | ५५     | केड       | ११४       | ४८        |    |

[illegible]

| शब्द       | पृष्ठ     | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ    | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ    | श्लोक |
|------------|-----------|-------|-----------|----------|-------|-----------|----------|-------|
| वाक्यनय    | ७६        | ४९    | वामिका    | ९१       | ११९   | वृमुक्षित | २०       | २०    |
| वाक्यपुत्र | ९६        | १६७   | विक       | ४६       | १     | वृष       | १६९      | २२    |
| वाक्यपिका  | ९८        | १२    | विकेक्षय  | ४७       | ८     | वृत्त     | २९५      | ३४    |
| वाक्य      | ४१        | १४    | विस्व     | ७३       | ३२    | वृद्धित   | १६३      | १७    |
| वाक्यि     | { २६ ४८   |       | वित       | ५७       | ४२    | वृषी      | १४०      | ४६    |
|            | { २६७ २१८ |       | वितकठिका  | ११       | २५    | वृषत्     | २८       | ६०    |
| वाक्ये     | १८        | ७७    | वितप्रसून | ५७       | ४१    | वृषयिका   | १२८      | ११७   |
| वाक्येवाक  | ८३        | ९     | विषीनी    | ५६       | ३९    | वृषी      | { ८३ ९३  |       |
| वाक्य      | ११२       | ४     | विस्त     | १८३      | ४६    |           | { २४० ७५ |       |
| वाक्य      | २५        | १३    | वाक       | { २९ २८  |       | वृषकुक्षि | ११६      | ४४    |
| वाक्यि     | १७३       | ४     |           | { ११७ ६० |       | वृषनाग    | १४       | ५४    |
| वाक्य      | १२        | ८     | वीचकौश    | ५७       | ४३    | वृषस्थिति | २१       | २४    |
| वाक्य      | १४३       | १     | वीमपूर    | ८१       | ७८    | वृषकर     | १६१      | ९७    |
| वाक्य      | ५५        | ३३    | वीमोद्धत  | १६७      | ८     | वृषिद्रुम | ७१       | २     |
| वाक्यमूक   | १२        | ७९    | वीम       | १३३      | २     | वृष       | १८५      | १४    |
| वाक्यमुद   | १३३       | १६    |           | { ४२ १७  |       | वृष       | २२       | २८    |
| वाक्य      | २७        | १८    | वीमस्व    | { ४२ १९  |       | वृषचारि   | { १३२ ३  |       |
| वाक्ये     | १२        | ४     |           | { २७ २३४ |       |           | { १४ ४२  |       |
| वाक्यि     | { १५१ ४५  |       | वृक       | ८१       | ८२    | वृषज      | ७५       | ४३    |
|            | { २९५ ३३  |       | वृका      | ११७      | ६४    | वृषाण     | १४१      | ५१    |
| वाक्यि     | { १२९ १२४ |       | वृक       | { ८ १३   |       | वृषवर्मा  | २        | १४५   |
|            | { १७३ ४   |       | वृक       | { २१७ १८ |       | वृषाण     | ७५       | ४१    |
|            | { २२९ ९   |       | वृदि      | १९       | १     | वृषान्    | { ८ १६   |       |
| वाक्य      | २७८       | १७    | वृमुद     | २८९      | १९    |           | { २७ ११४ |       |
| विड        | १७३       | ४२    |           | { २२ २६  |       | वृषपुत्र  | ४८       | १     |
| विडक       | ९७        | ३     | वृष       | { १३३ ५  |       | वृषकम्पु  | २४६      | १४    |
| विडोक्त    | १२        | ४१    |           | { ३४५ १  |       | वृषदिम्बु | १३९      | ३९    |
| विन्दु     | ५०        | ३     | वृषित     | २१७      | २८    | वृषमूत्र  | १४१      | ५१    |
| विन्दुवाक  | १५        | ३९    | वृष       | ६९       | १२    | वृषक      | ११४      | १४    |
| विम्ब      | २         | १५    | वृमुखा    | १७६      | ५४    | वृषवर्ज   | १३९      |       |

| शब्द.       | पृष्ठ.                      | श्लोक. | शब्द.              | पृष्ठ. | श्लोक.             | शब्द.                         | पृष्ठ. | श्लोक.  |     |    |         |     |    |
|-------------|-----------------------------|--------|--------------------|--------|--------------------|-------------------------------|--------|---------|-----|----|---------|-----|----|
| भूनिम्ब     | ९२                          | १४३    | भूतिमुज्           | १८९    | १५                 | भ्रमि                         | २०     | ९       |     |    |         |     |    |
| भूप         | १४३                         | १      | भृत्या             | १९४    | ३८                 | भ्रष्ट                        | २१६    | १०४     |     |    |         |     |    |
| भूपदी       | ७९                          | ७०     | भृत्य              | १९०    | १७                 | भ्रष्टयव                      | १७४    | ४७      |     |    |         |     |    |
| भूभृत्      | २३८                         | ६१     | भृशम्              | १६     | ६६                 | भ्राजिष्णु                    | १२४    | १०१     |     |    |         |     |    |
| भूमन्       | २७८                         | १७     | भेक                | ५४     | २४                 | भ्रातरौ                       | १११    | ३६      |     |    |         |     |    |
| भूमि        | ५८                          | २      | भेकी               | ५४     | २४                 | भ्रातृज                       | १११    | ३६      |     |    |         |     |    |
| भूमिजम्बुका | { ७४ ३८<br>८७ ११८           | भेद    | { १४६ २०<br>१४७ २१ | भेद    | { १४६ २०<br>१४७ २१ | भ्रातृजाया                    | ११०    | ३०      |     |    |         |     |    |
|             |                             |        |                    |        |                    | भ्रातृभगिन्यां                | १११    | ३६      |     |    |         |     |    |
| भूमिस्पृक्  | १६५                         | १      | भेदित              | २१६    | १००                | भ्रातृव्य                     | २५३    | १४६     |     |    |         |     |    |
| भूयस्       | २०८                         | ६३     | भेरी               | ४०     | ६                  | भ्रात्रीय                     | १११    | ३६      |     |    |         |     |    |
| भूयिष्ठ     | २०८                         | ६३     | भेषज               | ११५    | ५०                 | भ्रान्ति                      | ३०     | ७       |     |    |         |     |    |
| भूरि        | { २०८ ६३<br>२६० १८२         | भिक्ष  | १४०                | ४६     | भ्रकुंस            | ४१                            | ११     |         |     |    |         |     |    |
|             |                             |        |                    |        |                    |                               |        | भ्रकुटि | ४६  | ३७ |         |     |    |
| भूरिकेना    | ९२                          | १४३    | भेषज्य             | ११५    | ५०                 | भ्रू                          | १२३    | ९२      |     |    |         |     |    |
| भूरिमाय     | ९७                          | ५      | भोग                | २३     | १२३                | भ्रुकुस                       | ४१     | ११      |     |    |         |     |    |
| भूरुडी      | ७९                          | ६९     | भोगवती             | २३९    | ७०                 | भ्रुकुटि                      | ४६     | ३७      |     |    |         |     |    |
| भूर्ज       | ७५                          | ४६     | भोगिन्             | ४७     | ८                  | { २३६ ४५<br>११२ ३९<br>२५१ १३५ | १४७    | २३      |     |    |         |     |    |
| भूषण        | १२४                         | १०१    | भोगिनी             | १०५    | ५                  |                               |        |         |     |    |         |     |    |
| भूषित       | १२४                         | १००    | भोजन               | १७६    | ५५                 |                               |        |         |     |    |         |     |    |
| भूष्णु      | २०१                         | २९     | भोस्               | २७६    | ७                  | भ्रेष                         | १४७    | २३      |     |    |         |     |    |
| भूस्तृण     | ९६                          | १६७    | भौम                | २२     | २५                 | म                             |        |         |     |    |         |     |    |
| भृगु        | ६६                          | ४      | भौरिक              | १४४    | ७                  | मकर                           | ५३     | २०      |     |    |         |     |    |
| भृङ्ग       | { ९० १३४<br>९९ १६<br>१०२ २९ | भ्रंश  | १४७                | २३     | मकरध्वज            | ९                             | २६     |         |     |    |         |     |    |
|             |                             |        |                    |        |                    |                               |        | भ्रकुंस | ४०  | ११ | मकरन्द  | ७०  | १७ |
|             |                             |        |                    |        |                    |                               |        | भ्रकुटि | ४६  | ३७ | मकुष्टक | १६८ | १७ |
| भृङ्गराज    | ९३                          | १५१    | { ३०<br>५९<br>२२०  | ४      | मकुलक              | ९२                            | १४४    |         |     |    |         |     |    |
| भृङ्गार     | १४९                         | ३२     |                    |        | भ्रम               | १०१                           | २६     |         |     |    |         |     |    |
| भृङ्गारी    | १०२                         | २८     |                    |        | भ्रमर              | १०२                           | २९     | मख      | १३४ | १३ |         |     |    |
| भृतक        | १८९                         | १५     | भ्रमर              | १०२    | २९                 | मगध                           | १६१    | ९७      |     |    |         |     |    |
| भृति        | १९४                         | ३८     | भ्रमरक             | १२३    | ९६                 | मघवन्                         | १२     | ४१      |     |    |         |     |    |

| शब्द.     | पृष्ठ | श्रीक. | शब्द.       | पृष्ठ | शब्द. | पृष्ठ      | शब्द. | पृष्ठ | श्रीक. |
|-----------|-------|--------|-------------|-------|-------|------------|-------|-------|--------|
| मंशु      | २७५   | २      | मण्डहारक    | १८९   | २     | मदस्तान    | १९४   | १     |        |
| मंगल      | ९८    | २५     | मण्डित      | १२४   | १     | महिरा      | १९४   | ४     |        |
| मंगस्तक   | १९८   | १७     | मंजीरी      | ८३    | ९१    | महिरागह    | ३३    | ८     |        |
| मंगस्ता   | १२०   | १२७    | मंजूक       | ५४    | २४    | मदोस्तक    | १४९   | ११    |        |
| मन्त्रिका | २८    | २७     | मंजूकपर्ण   | ७७    | ८६    | मंजु       | १२    | १४    |        |
| मन्त्र    | ६९    | १२     | मंजूकपर्णी  | ८३    | ९१    | मन्त्र     | ५३    | १३    |        |
| मंष       | १३१   | १३८    | मंजूर       | १८४   | ९८    | मष         | १९४   | १०    |        |
| मंषरि     | ३९    | ६३     | मंशगज       | १४९   | ३४    |            | २६    | १५    |        |
| मंषिडा    | ८३    | ९०     | मंशसिन्धु   | २८    | २७    |            | १८३   | १७    |        |
| मंशीर     | १२६   | १९     | मंशि        | २९    | १     |            | १९४   | ४१    |        |
| मंशु      | २३    | ५२     |             | १८९   | ३६    |            | २४०   | १३    |        |
| मंशुक     | २३    | ५२     | मंश         | २     | २३    | मंशुक      | ८६    | १९    |        |
| मंशुश     | १०९   | २९     |             | २२३   | १३    | मंशुकर     | १२    | २९    |        |
| मठ        | ३३    | ८      | मंशकाधिमिनी | १५    | ४     | मंशुकम     | १९४   | ४     |        |
| मंहु      | ४०    | ८      | मंशर        | २५९   | १७९   | मंशुकम     | ७२    | २७    |        |
| मंषि      | { १   | ९८     | मंशरम       | ५२    | १७    | मंशुर      | १२    | २९    |        |
|           | { १८३ | ९३     | मंशरपंजी    | १७३   | ४३    |            |       |       |        |
| मंषिक     | १७१   | २१     | मंशरपिशा    | ८२    | ८६    | मंशुरपिशा  | { ७४  | ३५    |        |
| मंषिप     | १२१   | ८९     | मंशरपेकन    | ५२    | १६    |            | { ८३  | ९४    |        |
|           | { ७६  | ५१     | मंशरपाधी    | ९१    | १३७   | मंशुरपी    | ८२    | ८३    |        |
| मंष       | { १७५ | ४९     | मंशरपास्तग  | २६७   | २१९   | मंशुरमसिका | ११    | २६    |        |
|           | { १९४ | १०१    | मंशरपापानी  | ५२    | १३    | मंशुरसिका  | ८६    | १९    |        |
| मंषक      | { १०१ | २९     | मंषि        | १७५   | ५३    | मंषुर      | { ३१  | ९     |        |
|           | { १०१ | २९     | मंषिने      | १८    | ७४    |            | { २३२ | १     |        |
| मंषक      | ११    | ९      |             | १५    | १७    | मंषुरक     | ९१    | १४२   |        |
|           | { ११  | ९      | मंष         | २२१   | १९१   | मंषुरा     | { ८२  | ८३    |        |
| मंषक      | { १०  | १९     |             | २४२   | ९१    |            | { ८५  | १७    |        |
|           | { २२  | ११     | मंष         | ११    | २५    | मंषुर      | १२५२  |       |        |

| शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|--------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| मधुवार     | १९४    | ४०     | मनुष्य       | १०४    | १      | मन्दोष्ण  | २३     | ३५     |
| मधुव्रत    | १०२    | २९     | मनुष्यधर्मन् | १६     | ६८     | मन्द्र    | ३९     | २      |
| मधुशिश्रु  | ७३     | ३१     | मनोगुप्ता    | १८६    | १०८    | मन्मथ     | { ९    | २५     |
| मधुश्रेणी  | ८२     | ८४     | मनोजवस्      | १९८    | १३     |           | { ७१   | २१     |
| मधुष्ठील   | ७२     | २८     | मनोज्ञ       | २०६    | ५२     | मन्या     | ११८    | ६५     |
| मधुस्रवा   | ९१     | १४२    | मनोरथ        | ४४     | २७     | मन्यु     | { ४३   | २५     |
| मधूक       | ७२     | २७     | मनोरम        | २०६    | ५२     |           | { २५५  | १५३    |
| मधूच्छिष्ट | १८६    | १०७    | मनोहत        | २०४    | ४१     | मन्वन्तर  | २८     | २२     |
| मधूलक      | ७२     | २८     | मनोह्रा      | १८६    | १०८    | मय        | १८०    | ७५     |
| मधूलिका    | ८२     | ८४     | मन्तु        | १४८    | २६     | मयु       | १७     | ७१     |
| मध्य       | { १२०  | ७९     | मन्त्र       | २५८    | १६७    | मयुष्टक   | १६८    | १७     |
|            | { २५६  | १६१    |              | { १४३  | ४      |           | { २३   | ३३     |
| मध्यदेश    | ५९     | ७      | मन्त्रिन्    | { २६५  | २०६    | मयूख      | { २३०  | १८     |
|            |        |        |              |        |        |           |        |        |
| मध्यम      | { ३८   | १      | मन्य         | १८०    | ७४     | मयूर      | { ८६   | १११    |
|            | { ५९   | ७      | मन्यदडक      | १८०    | ७४     |           | { १०२  | ३०     |
|            | { १२०  | ७९     | मन्यन्       | १८०    | ७४     | मयूरक     | { ८२   | ८८     |
| मध्यमा     | { १०६  | ८      | मन्यनी       | १८०    | ७४     |           | { ११८५ | १०१    |
|            | { १२१  | ८२     | मन्यर        | १५६    | ७२     | मरकत      | १८३    | ९२     |
| मध्याह्न   | २४     | ३      | मन्यान्      | १८०    | ७४     | मरण       | १६४    | ११६    |
| मध्वास्रव  | १९४    | ४१     | मन्द         | { १९०  | १८     | मरीच      | १७२    | ३६     |
| मनःशिला    | १८६    | १०८    |              | { २४४  | ९५     | मरीचि     | { २२   | २७     |
| मनस्       | २९     | ३१     | मन्दगामिन्   | १५६    | ७२     |           | { २३   | ३३     |
| मनसिज      | ९      | २६     | मन्दाकिनी    | १३     | ४९     | मरीचिका   | २३     | ३५     |
| मनस्कार    | ३०     | २      | मन्दाक्ष     | ४३     | २३     | मरु       | { ५८   | ५      |
| मनाक्      | २७६    | ८      |              | { १३   | ५०     |           | { २५७  | १६३    |
| मनित       | २१७    | १०८    | मन्दार       | { ७२   | २६     | मरुत्     | { १५   | ६२     |
| मनीषा      | २९     | १      |              | { ८१   | ८१     |           | { १७   | २      |
| मनीषिन्    | १३३    | ५      | मन्दिर       | { ६२   | ५      | मरुत      | २३७    | ५९     |
| मनु        | २५१    | ३८     |              | { २६१  | १८४    | मरुत्वत्  | १२     | ४१     |
| मनुण       | १०४    | १      | मन्दुरा      | ६२     | ७      | मरुन्माला | ९०     | १३३    |

| शब्द         | पृष्ठ | श्लोक | शब्द           | पृष्ठ | श्लोक | शब्द          | पृष्ठ | श्लोक |
|--------------|-------|-------|----------------|-------|-------|---------------|-------|-------|
| मंजु         | २७५   | २     | मन्त्रहारक     | १८९   | १     | मन्त्रज्ञान   | १९४   | ४     |
| मंगल         | २८    | २५    | मन्त्रित       | १२४   | १     | मन्त्रिण      | १९४   | ४     |
| मंगलवक       | १९८   | १७    | मन्त्रिणी      | ८३    | ९१    | मन्त्रिणगह    | ६३    | ८     |
| मंगलवा       | १२९   | १२७   | मन्त्रक        | ५४    | २४    | मन्त्रोक्त    | १४९   | ३५    |
| मन्त्रबिम्बा | २८    | २७    | मन्त्रकर्ण     | ७७    | ७६    | मन्त्र        | १२    | ३४    |
| मन्त्रन्     | ३९    | १२    | मन्त्रकर्णी    | ८३    | ९१    | मन्त्रर       | ५३    | १९    |
| मन्त्र       | १३१   | १३८   | मन्त्र         | १८४   | ९८    | मन्त्र        | १९४   | ४     |
| मन्त्ररि     | ६९    | १३    | मन्त्रगज       | १४९   | ३४    |               | २६    | १५    |
| मन्त्रिद्रा  | ८३    | ९     | मन्त्रलिका     | २८    | २७    | मन्त्र        | १८६   | १७    |
| मन्त्रीर     | १२६   | १९    | मन्त्रि        | २०    | १     | मन्त्र        | १९४   | ४१    |
| मन्त्र       | २६    | ५२    |                | १४९   | ३६    | मन्त्र        | २४५   | १३    |
| मन्त्रक      | २६    | ५२    | मन्त्र         | २     | २३    | मन्त्रक       | ८६    | १९    |
| मन्त्रता     | १०२   | २९    |                | २७६   | १३    | मन्त्रकर      | १२    | २९    |
| मन्त्र       | ६३    | ८     | मन्त्रकायिनी   | १७    | ४     | मन्त्रक्रम    | १९४   | ४     |
| मन्त्रु      | ४     | ८     | मन्त्रर        | २५९   | १७३   | मन्त्रदम      | ७२    | २७    |
|              | १     | ३८    | मन्त्रर        | ५२    | १७    | मन्त्रर       | १२    | २९    |
| मन्त्रि      | १८३   | ९३    | मन्त्रवर्दी    | १७३   | ४३    |               |       |       |
| मन्त्रिक     | १७१   | ३१    | मन्त्रवर्षिणा  | ८२    | ८६    | मन्त्रवर्षिका | ७४    | ३५    |
| मन्त्रिग्न   | १२१   | ८१    | मन्त्रवर्षेधन  | ५२    | १६    |               | ८३    | ९४    |
|              | ७६    | ७१    | मन्त्रवर्षी    | ९१    | १३७   | मन्त्रवर्षी   | ८२    | ८३    |
| मन्त्र       | १७५   | ४९    | मन्त्रवाल्मीकि | २३७   | २१९   | मन्त्रमधिका   | ११    | २६    |
|              | १२४   | २     | मन्त्रवाधानी   | ५२    | १६    | मन्त्रवर्षिका | ८६    | १     |
| मन्त्रम      | ११    | २९    | मन्त्रि        | १७७   | ५३    | मन्त्र        | ३१    |       |
| मन्त्रर      | ६३    | ९     | मन्त्रिन्      | १८    | ७४    | मन्त्र        | २६९   | ११    |
|              | १९    | ६     |                | १५    | ३७    | मन्त्रक       | ९१    | १४२   |
| मन्त्रल      | १     | १५    | मन्त्र         | ७१    | १९    | मन्त्रता      | ८२    | ८     |
|              | २३    | ३२    |                | ७४३   | ७९    |               | ८५    | १     |
|              | ११५   | ७४    | मन्त्रल        | १४    | ३१    | मन्त्रर       | ९३    | १५    |
| मन्त्रवक     | ११५   | ७४    |                |       | २५    | मन्त्रवर्षा   | ८५    | ११    |
| मन्त्रवर्ष   | १६    | ८९    | मन्त्रम        | ७१    | ५३    | मन्त्रिधु     | ८     | ३     |
| मन्त्रवर्षर  | १४१   | १     |                | ८१    | ७८    | मन्त्रिधु     | १२    | ३     |

| शब्द.       | पृष्ठ     | श्लोक          | शब्द      | पृष्ठ | श्लोक      | शब्द     | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|-----------|----------------|-----------|-------|------------|----------|--------|--------|
| मागधी       | { ८० ७१   | मातृष्वसेय     | १०९       | २५    | माग        | { २६ १४  |        |        |
|             | { ८४ ९६   | मातृष्वस्त्रीय | १०९       | २५    |            | { ६१ १५  |        |        |
| माघ         | २६        | मात्र          | २६०       | १७८   |            | { १५९ ८७ |        |        |
| माघ्य       | ८०        | मात्रा         | { २०८ ६२  |       | मार्गण     | { २०६ ४९ |        |        |
| माठर        | २३        | मात्रा         | { २६० १७७ |       |            | { २२५ ३० |        |        |
| माढि        | २८४       | माद            | २२१       | १२    | मार्गशीर्ष | २६       | १४     |        |
| माणवक       | { ११३ ४२  | माघव           | { ७८ १८   |       | मार्गित    | २१७      | १०५    |        |
|             | { १२५ १०६ |                | { २६ १६   |       | मार्जन     | ७३       | ३३     |        |
| माणव्य      | २२७       | ४०             |           |       | मार्जना    | १२८      | १२१    |        |
| माणिक्य     | २९४       | ३१             | माघवक     | १९४   | ४१         | मार्जार  | ९७     | ६      |
| माणिमन्थ    | १७३       | ४२             | माघवी     | ८०    | ७२         | मार्जिता | १७४    | ४४     |
| मातग        | { १९० १९  | माव्यीक        | १९४       | ४१    | मार्तण्ड   | २२       | २९     |        |
|             | { २३१ २१  | मान            | ४३        | २२    | मार्दङ्गिक | १८९      | १३     |        |
| मातरपितरौ   | ११२       | ३७             | मानव      | १०४   | १          | मार्ष्टि | १२८    | १२१    |
| मातरिश्वन्  | १५        | ६१             | मानस      | २९    | ३१         | मालक     | ७८     | ६२     |
| मातालि      | १२        | ४५             | मानसोकस्  | ९७    | २३         | मालती    | ८०     | ७२     |
| मातापितरौ   | ११२       | ३७             | मानिनी    | १०५   | ३          | माला     | १३१    | १३५    |
| मातामह      | १११       | ३३             | मानुष     | १०४   | १          | मालाकार  | १८८    | ५      |
| मातुल       | { ८१ ७८   | मानुष्यक       | २२७       | ४२    | मालातृणक   | ९६       | १६७    |        |
|             | { ११० ३१  | माया           | १८९       | ११    | मालिक      | १८       | ५      |        |
| मातुलपुत्रक | ८१        | ७८             | मायाकार   | १८९   | ११         | मालुधान  | ४७     | ६      |
| मातुलानी    | { ११० ३०  | मायादेवीसुत    | ८         | १५    | मालूर      | ७३       | ३२     |        |
|             | { १४२ २०  | मायु           | ११७       | ६२    | माल्य      | १३१      | १३५    |        |
| मातुलाहि    | ४७        | ६              | मायूर     | १०४   | ४३         | माल्यवत् | ६६     | ३      |
| मातुली      | ११०       | ३०             | मार       | ९     | २५         | माषपर्णी | ९१     | १३८    |
| मातुलोज्जिक | ८१        | ७८             | मारजित    | ८     | १३         | माषीण    | १६६    | ७      |
|             | { ११ ३५   | मारण           | १६४       | ११४   | माष्य      | १६६      | ७      |        |
| मातृ        | { ४१ १४   | मारिष          | ४१        | २४    | मास        | २६       | १२     |        |
|             | { ११० २९  | मारुत          | १५        | ६२    | मासर       | १७५      | ४९     |        |
|             | { १७८ ६६  | मार्कव         | ९३        | १५१   | मासिक      | १३७      | ३१     |        |



| शब्द.        | पृष्ठ    | श्लोक | शब्द          | पृष्ठ    | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ    | श्लोक |
|--------------|----------|-------|---------------|----------|-------|------------|----------|-------|
| मात्स्य      | २७७      | ११    | मुक्ता        | १८१      | १३    | मुषिकम्ब   | २२१      | १४    |
| माहिष्य      | १८७      | १     | मुक्ताबन्धी   | १२५      | १५    | मुसल       | १७०      | २५    |
| माह्वी       | १७८      | ६६    | मुक्तास्त्रोट | ५३       | २३    | मुसलिन्    | ९        | २४    |
| माह्वरी      | ११       | २५    | मुक्ति        | २१       | ६     | मुसली      | { ८७ ११९ |       |
| मिर्तपत्र    | २ ३      | ४८    | मुख           | { १५ १९  |       | मुसली      | { ९८ १२  |       |
|              | २२       | २     | मुख           | { १२२ ८९ |       | मुसल       | २ ५      | ४५    |
| मित्र        | १४४      | ९     | मुपर          | २ ३      | १६    | मुस्तक     | ९५       | १५९   |
|              | १४५      | १२    | मुतबासन       | ३२       | ११    | मुस्ना     | ९७       | १५९   |
|              | २७८      | १६७   |               |          |       | मुद्र      | २७५      | १     |
| मिथस्        | २७४      | २७६   | मुग्य         | { ११९ ४  |       | मुद्रमार्ग | ३६       | १     |
| मिथुन        | १०३      | ३८    |               | { २ ७    | ५७    | मुद्रमार्ग | २६       | ११    |
| मिथ्या       | २७८      | १७    |               | { ११४ ४८ |       | मुद्र      | १९८      | १३    |
| मिथ्याद्वि   | ३        | ४     | मुष्ण         | { २ ५    | २४    | मुद्र      | २ ६      | ४८    |
| मिथ्याभिषेग  | ३५       | १     | मक्षित        | { ११४ ४८ |       | मुद्र      | २१४      | ९५    |
| मिथ्याभिषासन | ३५       | १     |               | { २१२ ८५ |       | मून        | ११८      | ६७    |
| मिथ्यामाति   | ३        | ४     | मुष्णिम्      | १८८      | १     | मूनकषण     | ११६      | ५६    |
| मित्री       | ९०       | ११४   | मुद्          | २८       | २४    | मूर्तिपट   | २१५      | ६     |
| मिथ्रेय      | ८५       | १ ५   | मुदित         | २१४      | ५     | मूर्ता     | २ ६      | ४८    |
| मिथि         | { ८५ १ ५ |       | मुदिर         | १८       | ७     | मूर्धन     | १६३      | १ ९   |
|              | ३ १५७    |       | मुद्रपर्वी    | ८६       | ११३   | मूर्धन     | ११७      | १७    |
| मिहिका       | २        | १८    | मुन्          | १६       | ९१    | मूर्धन     | { ११७ ६१ |       |
| मिहिर        | २२       | २९    | मुदा          | २७५      | ४     | मूर्धन     | { २४२ ८२ |       |
| मीढ          | २१७      | १     | मुनि          | { ८ १४   |       | मूर्ता     | { ११७ ६१ |       |
| मीन          | ७३       | १७    | मुनि          | { १४ ४२  |       | मूर्ता     | { २१ ७६  |       |
| मीनकेटन      |          | ७५    | मुनीन्द्र     | ८        | १४    | मूर्ति     | { ११९ ७१ |       |
| मुष्ट        | १२७      | १ ७   | मुस्त         | ३        |       | मूर्ति     | { २३ ६९  |       |
| मुष्ट        |          | १०१   | मुस्ता        | ८१       | १०३   | मूर्ति     | ५१       | ७६    |
| मुष्ट        | १०       | ७८    | मुस्ता        | १३       | ११    | मूर्ति     | १२३      | ७     |

| शब्द.      | पृष्ठ    | श्लोक.   | शब्द.     | श्लोक     | शब्द            | पृष्ठ.    | श्लोक.   |
|------------|----------|----------|-----------|-----------|-----------------|-----------|----------|
| मूर्वा     | ८२       | ८३       | मृगाक     | १९ १४     | मेकलकन्यका      | ५५        | ३२       |
| मूल        | { ६९ १२  | २६४ २००  | मृगादन    | ९७ १      | मेखला           | { १२६ १०८ | { १६० ९० |
| मूलक       | ९४       | १५७      | मृगित     | २१७ १०५   | मेघ             | १८        | ६        |
| मूलकर्मन्  | २१९      | ४        | मृगेन्द्र | ९७ १      | मेघज्योतिस्     | १९        | १०       |
| मूलधन      | १८१      | ८०       | मृजा      | १२८ १२१   | मेघनादानुलासिन् | १०२ ३०    | ३०       |
| मूल्य      | { १८१ ७९ | { १९४ ३८ | मृड       | १० ३१     | मेघनामन्        | ९५        | १५९      |
| मूपक       | ९८       | १२       | मृडानी    | ११ ३७     | मेघनिर्घोष      | १९        | ८        |
| मूषा       | { १९३ ३३ | { २९७ ३८ | मृणाल     | ५७ ४२     | मेघपुष्प        | ४९        | ५        |
| मूषिकपर्णी | ८२       | ८८       | मृणाली    | २८३ ७     | मेघमाला         | १८        | ८        |
| मूषित      | २१३      | ८८       | मृत्      | ५८ ४      | मेघवाहन         | १२        | ४४       |
| मृग        | { ९८ ८   | { २२५ ३० | मृत       | { १६४ ११७ | मेचक            | { ३२ १४   | { १०२ ३१ |
| मृगणा      | २२५      | ३०       | मृतस्नात  | १९९ १९    | मेढ्र           | { १२० ७६  | { १८० ७६ |
| मृगतृष्णा  | २३       | ३५       | मृत्तालक  | ९० १३१    | मेदक            | १९४       | ४१       |
| मृगदशक     | १९१      | २१       | मृत्तिका  | ५८ ४      | मेदस्           | ११७       | ६४       |
| मृगवूर्तक  | ९७       | ५        | मृत्यु    | १६४ ११६   | मेदिनी          | ५८        | ३        |
| मृगनाभि    | १३०      | १२९      | मृत्युजय  | १० ३१     | मेदुर           | २०२       | ३०       |
| मृगवधाजीव  | १९०      | २१       | मृत्वा    | ५८ ४      | मेघा            | ३०        | २        |
| मृगवन्धनी  | १९१      | २६       | मृत्ज्ञा  | { ५८ ४    | मेघि            | १६८       | १५       |
| मृगमद      | १३०      | १२९      | मृदङ्ग    | ३९ ५      | मेध्य           | २०७       | ५५       |
| मृगया      | १९१      | २३       | मृदु      | { २११ ७८  | मेनकात्मजा      | ११        | ३७       |
| मृगयु      | १९०      | २१       | मृदुत्वच् | ७५ ४६     | मेरु            | १३        | ४९       |
| मृगरौमज    | १२७      | १११      | मृदुल     | २११ ७८    | मेलक            | २२५       | २९       |
| मृगव्य     | १९१      | २३       | मृद्रीका  | ८५ १०७    | मेष             | { २२ २७   | { १८० ७६ |
| मृगाशिरस्  | २१       | २३       | मृध       | १६२ १०४   | मेषकम्बल        | १८६       | १०७      |
| मृगशीर्ष   | २१       | २३       | मृषा      | २७८ १५    | मेह             | ११६       | ५६       |
|            |          |          | मृषार्थक  | ३७ २१     | मेहन            | १२०       | ७६       |
|            |          |          | मृष्ट     | २०७ ५६    |                 |           |          |

| शब्द.         | पृष्ठ   | श्लोक | शब्द.         | पृष्ठ    | श्लोक | शब्द.      | पृष्ठ    | श्लोक |
|---------------|---------|-------|---------------|----------|-------|------------|----------|-------|
| मास्म         | २७७     | ११    | मुक्ता        | १८३      | ९३    | मुद्रिबन्ध | २२३      | १४    |
| माद्विष्य     | १८७     | २     | मुक्ताबली     | १२५      | १५    | मुसळ       | १७       | २५    |
| माद्विषी      | १७८     | ३६    | मुक्तास्त्रोट | ५३       | २३    | मुसलिन     | ९        | २४    |
| माद्विषरी     | ११      | ३५    | मुक्ति        | ३१       | ६     | मुसली      | { ८७ ११९ |       |
| मिर्तपत्र     | २३      | ४८    | मुक्त         | { ६५ १९  |       | मुसली      | { ९८ १२  |       |
| मित्र         | { २२ ३  |       | मुक्त         | { १२२ ८९ |       | मुसल्य     | २५ ४५    |       |
|               | १४४     |       | मुक्तर        | २३       | ३३    | मुस्तक     | ९५ १५    |       |
|               | १४५     | १२    | मुक्तावाहन    | ३२       | १२    | मुखा       | ९८ १५९   |       |
|               | २५८     | ३६७   |               |          |       |            |          |       |
| मिथस्         | २७४     | २७३   | मुत्तय        | { ११९ ४  |       | मुकुत्     | २७५ १    |       |
| मिथुन         | १०३     | ३८    |               | { २७ ५७  |       | मुकुर्मशा  | २६ १     |       |
| मिथ्या        | २७८     | १७    |               | { २९ २२  |       | मुकुर्त    | २६ ११    |       |
| मिथ्याद्यि    | ३       | ४     | मुण्ड         | { ११४ ४८ |       | मूक        | १९८ १३   |       |
| मिथ्याभिर्बोग | ३७      | १     |               | { २९५ १४ |       | मूक        | २६ ४८    |       |
| मिथ्याभिवाहन  | ३५      | १     | मुञ्जित       | { ११४ ४८ |       | मूक        | २१४ ९७   |       |
| मिथ्यामात्रि  | ३०      | ४     | मुञ्जित       | { २१२ ८५ |       | मूक        | ११८ ६७   |       |
| मिथी          | ९       | १३४   | मुञ्जित       | १८८      | १     | मूककण्ठ    | ११६ ५६   |       |
| मिथेय         | ८५      | १५    | मुञ्जित       | २८       | २४    | मूकट       | २१५ ९६   |       |
| मिथि          | { ८५ १५ |       | मुञ्जित       | २१४      | ९५    | मूर्त      | २०९ ४८   |       |
|               | ३ १५२   |       | मुञ्जित       | १८       | ७     | मूर्त      | १६३ १९   |       |
| मिथिका        | २       | १८    | मुञ्जित       | ८६       | ११३   | मूर्त      | ११७ ६१   |       |
| मिथिर         | २२      | २९    | मुञ्जित       | १६       | ९१    | मूर्त      | { ११७ ६१ |       |
| मीठ           | २१७     | ९३    | मुञ्जित       | २७५      | ४     | मूर्त      | { २४२ ८२ |       |
| मीन           | ७३      | १७    | मुनि          | { ८ १४   |       | मूर्त      | { ११७ ६१ |       |
| मीनकेतन       |         | २५    | मुनीन्द्र     | ८        | १४    | मूर्त      | { २१ ७६  |       |
| मुकट          | १२७     | ३     | मुन्य         | ३        | ३     | मूर्ति     | { ११९ ७१ |       |
| मुकन्द        | //      | १०१   | मुन्य         | //       | १२३   | मूर्तिधर   | २१ ७६    |       |
| मुकुर         | १३२     | १८    | मुनि          | ७१३      | ८८    | मूदन       | १२३ ७    |       |
| मुकुर         | ७       | १६    | मुकुर         | १७       | ७     | मुदामेयि   | { ११३ १  |       |
| मुकुरमुकुर    | ४७      | ६     | मुकुर         | ७४       | ३     | मुदामेयि   | { २१८ ६६ |       |

| शब्द.      | पृष्ठ     | श्लोक. | शब्द      | श्लोक     | शब्द            | पृष्ठ.    | श्लोक. |
|------------|-----------|--------|-----------|-----------|-----------------|-----------|--------|
| मूर्वा     | ८२        | ८३     | मृगाक     | १९ १४     | मेकलकन्यका      | ५५        | ३२     |
| मूल        | { ६९ १२   | १२     | मृगादन    | ९७ १      | मखला            | { १२६ १०८ |        |
|            | { २६४ ३०० | ३००    | मृगित     | २१७ १०५   |                 | { १६० ९०  |        |
| मूलक       | ९४        | १५७    | मृगेन्द्र | ९७ १      | मेघ             | १८        | ६      |
| मूलकर्मन्  | २१९       | ४      | मृजा      | १२८ १२१   | मेघज्योतिस्     | १९        | १०     |
| मूलधन      | १८१       | ८०     | मृड       | १० ३१     | मेघनादानुलासिन् | १०२       | ३०     |
| मूल्य      | { १८१ ७९  | ७९     | मृडानी    | ११ ३७     | मेघनामन्        | ९५        | १५९    |
|            | { १९४ ३८  | ३८     | मृणाल     | ५७ ४२     | मेघनिर्घोष      | १९        | ८      |
| मूपक       | ९८        | १२     | मृणाली    | २८३ ७     | मेघपुष्प        | ४९        | ५      |
| मूषा       | { १९३ ३३  | ३३     | मृत्      | ५८ ४      | मेघमाला         | १८        | ८      |
|            | { २९७ ३८  | ३८     | मृत       | { १६४ ११७ | मेघवाहन         | १२        | ४४     |
| मूषिकपर्णी | ८२        | ८८     |           | { १६६ ३   | मेचक            | { ३२ १४   |        |
| मूषित      | २१३       | ८८     | मृत्स्नात | १९९ १९    |                 | { २०२ ३१  |        |
| मृग        | { ९८ ८    | ८      | मृत्तालक  | ९० १३१    | मेढ्र           | { १२० ७६  |        |
|            | { २२५ ३०  | ३०     | मृत्तिका  | ५८ ४      |                 | { १८० ७६  |        |
|            | { २३१ २०  | २०     | मृत्यु    | १६४ ११६   | मेदक            | १९४       | ४१     |
| मृगणा      | २२५       | ३०     | मृत्युजय  | १० ३१     | मेदस्           | ११७       | ६४     |
| मृगतृष्णा  | २३        | ३५     | मृत्ता    | ५८ ४      | मेदिनी          | ५८        | ३      |
| मृगदशक     | १९१       | २१     | मृत्तना   | { ५८ ४    | मेदुर           | २०२       | ३०     |
| मृगधूर्तक  | ९७        | ५      | मृत्तना   | { ९० १३१  | मेघा            | ३०        | २      |
| मृगनाभि    | १३०       | १२९    | मृदङ्ग    | ३९ ५      | मेघि            | १६८       | १५     |
| मृगवधाजीव  | १९०       | २१     | मृदु      | { २११ ७८  | मेघ्य           | २०७       | ५५     |
| मृगवन्धनी  | १९१       | २६     |           | { २४४ ९४  | मेनकात्मजा      | ११        | ३७     |
| मृगमद      | १३०       | १२९    | मृदुत्वच् | ७५ ४६     | मेरु            | १३        | ४९     |
| मृगया      | १९१       | २३     | मृदुल     | २११ ७८    | मेलक            | २२५       | २९     |
| मृगयु      | १९०       | २१     | मृद्रीका  | ८५ १०७    | मेष             | { २२ २७   |        |
| मृगरोमज    | १२७       | १११    | मृष       | १६२ १०४   |                 | { १८० ७६  |        |
| मृगव्य     | १९१       | २३     | मृषा      | २७८ १५    | मेषकम्बल        | १८६       | १०७    |
| मृगाशिरस्  | २१        | २३     | मृषार्थक  | ३७ २१     | मेह             | ११६       | ५६     |
| मृगशीर्ष   | २१        | २३     | मृष्ट     | २०७ ५६    | मेहन            | १२०       | ७६     |

| शब्द.        | पृष्ठ    | श्लोक | शब्द.         | पृष्ठ    | श्लोक | शब्द.      | पृष्ठ    | श्लोक |
|--------------|----------|-------|---------------|----------|-------|------------|----------|-------|
| मास्म        | २७७      | २१    | मुक्ता        | १८३      | ९३    | मुद्रिगम्भ | २२१      | १४    |
| माहिष्य      | १८७      | ३     | मुक्तायली     | १२५      | १५    | मुसळ       | १७०      | २५    |
| माहेयी       | १७८      | ६३    | मुक्तास्त्रोट | ५३       | २३    | मुसळिम्    | ९        | २४    |
| माह्वरी      | ११       | ३५    | मुक्ति        | ३१       | ६     | मुसळी      | { ८७ ११९ |       |
| मितपञ्च      | २६       | ४८    | मुसळ          | { ६५ १   |       | मुसळी      | { ९८ १२  |       |
|              | २२       | ३     |               | { १२२ ८९ |       | मुसळ्य     | २५       | ४५    |
| मिष          | १४४      | ९     | मुसर          | २३       | ६६    | मुसळक      | ९५       | २५०   |
|              | १४५      | १२    | मुसबासन       | ३२       | ११    | मुला       | ९५       | १५०   |
|              | २५८      | १६७   |               |          |       |            |          |       |
| मिषस्        | २७४      | २५६   | मुस्य         | { ११९ ४  |       | मुसु       | २७५      | १     |
| मिथुन        | १०३      | ३८    |               | { २ ७    |       | मुसुर्मांश | ३३       | ३     |
| मिथ्या       | २७८      | १७    |               | { २ २२   |       | मुसुर्व    | २३       | ११    |
| मिथ्याहृदि   | ३        | ४     | मुष्ट         | { ११४ ४८ |       | मुस        | १९८      | १३    |
| मिथ्यामिदोम  | ३५       | १     |               | { २ ५    |       | मुड        | २६       | ४८    |
| मिथ्यामिधक्न | ३५       | १     | मेडित         | { ११४ ४८ |       | मुल        | २१४      | ९५    |
| मिथ्यामसि    | ३        | ४     |               | { २१२ ८५ |       | मुन        | ११८      | ६७    |
| मिथी         | ९०       | ११४   | मुष्टिन्      | १८८      | १     | मुनहृष्य   | ११६      | ५६    |
| मिमेय        | ८५       | १५    | मुष्ट         | २८       | २४    | मुनिट      | २१५      | ९६    |
|              | ८५       | १५    | मुहित         | २१४      | ९५    | मुर्ग      | २०६      | ४८    |
| मिमे         | { ८५ १ ५ |       | मुदिर         | १८       | ७     | मुष्य      | १६३      | १९    |
|              | १ १५२    |       | मुद्रपनी      | ८६       | ११३   | मुष्यार्क  | ११७      | ६१    |
| मिहिका       | ९        | १८    | मुद्रर        | १६       | ९१    | मुष्टिन्   | { ११७ ६१ |       |
| मिहिर        | २७       | २९    | मुषा          | २७५      | ४     |            | { २४२ ८९ |       |
| मीढ          | २१५      | ९६    |               |          |       |            |          |       |
| मीन          | ७६       | १७    | मुनि          | { १४ १४  |       | मुस        | { ११७ ६१ |       |
| मनिकेतम      |          | २५    | मुनीन्द्र     | ८        | १४    | मुति       | { ११ ७१  |       |
| मुकुट        | १२७      | १७    | मुस्य         | ३        | ७     |            | { २३९ ६६ |       |
| मुकुट        | १८       | १७१   | मुस           | ८८       | १७१   | मुर्तिमू   | २१       | ७६    |
| मुकुट        | ११२      | १४    | मुशग          | २१३      | ८८    | मुटन       | १२३      | ५     |
| मुगल         | ७        | १६    | मुस           | १२       | ७६    | मुर्दाभणिक | { १४३ १  |       |
| मुगलमुस      | ४७       | ६     | मुसक          | ७४       | २     |            | { ११८ ६१ |       |

| शब्द.      | पृष्ठ    | श्लोक.  | शब्द.      | श्लोक     | शब्द            | पृष्ठ.    | श्लोक.   |
|------------|----------|---------|------------|-----------|-----------------|-----------|----------|
| मूर्वा     | ८२       | ८३      | मृगाक      | १९ १४     | मेकलकन्यका      | ५५        | ३२       |
| मूल        | { ६९ १२  | २६४ २०० | मृगादन     | ९७ १      | मेखला           | { १२६ १०८ | { १६० ९० |
| मूलक       | ९४       | १५७     | मृगित      | २१७ १०५   | मेघ             | १८        | ६        |
| मूलकर्मन्  | २१९      | ४       | मृगेन्द्र  | ९७ १      | मेघज्योतिस्     | १९        | १०       |
| मूलघन      | १८१      | ८०      | मृजा       | १२८ १२१   | मेघनादानुलासिन् | १०२ ३०    |          |
| मूल्य      | { १८१ ७९ | १९४ ३८  | मृह        | १० ३१     | मेघनामन्        | ९५        | १५९      |
| मूपक       | ९८       | १२      | मृडानी     | ११ ३७     | मेघनिर्घोष      | १९        | ८        |
| मूषा       | { १९३ ३३ | २९७ ३८  | मृणाल      | ५७ ४२     | मेघपुष्प        | ४९        | ५        |
| मूपिकपर्णी | ८२       | ८८      | मृणाली     | २८३       | मेघमाला         | १८        | ८        |
| मूषित      | २१३      | ८८      | मृत्       | { १६४ ११७ | मेघवाहन         | १२        | ४४       |
| मृग        | { ९८ ८   | २२५ ३०  | मृत्त      | { १६६ ३   | मेचक            | { ३२ १४   | { १०२ ३१ |
| मृगणा      | २२५      | ३०      | मृत्तज्ञात | १९९ १९    | मेढ्र           | { १२० ७६  | { १८० ७६ |
| मृगतृष्णा  | २३       | ३५      | मृत्तालक   | ९० १३१    | मेदक            | १९४       | ४१       |
| मृगदशक     | १९१      | २१      | मृत्तिका   | ५८ ४      | मेदस्           | ११७       | ६४       |
| मृगधूर्तक  | ९७       | ५       | मृत्त्यु   | १६४ ११६   | मेदिनी          | ५८        | ३        |
| मृगनाभि    | १३०      | १२९     | मृत्त्युजय | १० ३१     | मेदुर           | २०२       | ३०       |
| मृगवधाजीव  | १९०      | २१      | मृत्सा     | ५८ ४      | मेघा            | ३०        | २        |
| मृगबन्धनी  | १९१      | २६      | मृत्स्ना   | { ५८ ४    | मेघि            | १६८       | १५       |
| मृगमद      | १३०      | १२९     | मृदङ्ग     | { ९० १३१  | मेध्य           | २०७       | ५५       |
| मृगथा      | १९१      | २३      | मृदु       | { २११ ७८  | मेनकात्मजा      | ११        | ३७       |
| मृगसु      | १९०      | २१      | मृदुत्वच्  | { २४४ ९४  | मेरु            | १३        | ४९       |
| मृगरौमज    | १२७      | १११     | मृदुल      | ७५ ४६     | मेलक            | २२५       | २९       |
| मृगव्य     | १९१      | २३      | मृदुली     | २११ ७८    | मेष             | { २२ २७   | { १८० ७६ |
| मृगाशिरस्  | २१       | २३      | मृद्वीका   | ८५ १०७    | मेषकम्वल        | १८६       | १०७      |
| मृगशीर्ष   | २१       | २३      | मृष        | १६२ १०४   | मेह             | ११६       | ५६       |
|            |          |         | मृषा       | २७८ १५    | मेहन            | १२०       | ७६       |
|            |          |         | मृषार्थक   | ३७ २१     |                 |           |          |
|            |          |         | मृष्ट      | २०७ ५६    |                 |           |          |

| शब्द       | पृष्ठ | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द        | पृष्ठ | श्लोक |
|------------|-------|-------|-----------|-------|-------|-------------|-------|-------|
| भैत्रावरणि | २१    | २     | ष         |       |       |             |       |       |
| भैत्री     | २९७   | ३९    | यकृत्     | ११८   | ६६    | यम          | १४    | ५८    |
| भैष्म      | २९७   | ३९    | यक्ष      | ७     | ११    |             | १४१   | ४८    |
| भैथुन      | { १४२ | ५७    |           | { १९  | ६९    | यमराज       | १४    | ५८    |
|            | { २४९ | १२२   | यक्षकदम्ब | १३    | १३३   | यमुना       | ५५    | ३२    |
| भैरव       | १९४   | ४१    | यक्षपुत्र | १२९   | १२७   | यमुनाभ्रातृ | १४    | ५८    |
| भौल        | { ३१  | ७     | यक्षराज   | १६    | ६८    | यमु         | १५१   | ४५    |
|            | { ७४  | ३९    | यक्षमान   | ११५   | ५१    | यव          | १६८   | १५    |
| भौष        | २११   | ८१    | यक्षमान   | १३३   | ८     | यवस्य       | १६६   | ७     |
| भौषा       | ७७    | ५४    | यक्षुस्   | १४    | ३     | यवसार       | १८९   | १८    |
| भौषक       | ७३    | ३१    | यश        | १३४   | १३    | यवफल        | ९५    | १६१   |
| भौजा       | { ७५  | ४६    | यज्ञांग   | ७१    | २२    | यवस्य       | ९६    | १६७   |
|            | { ८६  | ११३   | यज्ञिय    | १३७   | २७    | यवागू       | १७५   | ५     |
| भौहक       | - २९५ | ३३    | यज्ञ      | १३३   | ८     | यवाग्रज     | १८६   | १८    |
| भौरठ       | १८६   | ११    | यत्       | २७५   | ३     | यवानिका     | ९२    | १८५   |
| भौरव       | ८२    | ८३    | यतत्      | २७५   | ३     | यवास        | ८३    | ९१    |
| भोपक       | १९१   | २४    | यति       | १४    | ४३    | यसीयत्      | ११३   | ४३    |
| भोह        | १६३   | १     | यतिन्     | १४    | ४३    | यम्ब        | १६६   | ७     |
| भौहिक      | १८३   | ९२    | यथ        | २७६   | ९     | यथापट्ट     | ३९    | ६     |
| भौह्रीन    | १६७   | ८     | यथाभाव    | २६    | ४८    | यथासु       | ३५    | ११    |
| भौन        | १३८   | ३२    | यथावयम्   | २७८   | १५    | यथि         | २९७   | ३८    |
| भौपिक      | १८    | १३    | यथावयम्   | २७८   | १४    | यथिमयुक्त   | ८६    | १९    |
| भौर्षी     | १५९   | ८५    | यथावयम्   | २७८   | १५    | यपु         | १३३   | ८     |
| भौर्षि     | २६२   | १९३   | यथावर्षा  | १४५   | १३    | याग         | ११४   | १३    |
| भौषा       | २८३   | ५     | यथावयम्   | २७८   | १४    | याचक        | २६    | ४९    |
| भाहूत      | १४५   | १४    | यथे प्यत  | १७६   | ५७    | याचनक       | २६    | ४९    |
| भौहूर्तक   | १४५   | १४    | यदि       | २७७   | १२    | याचना       | १३८   | ३२    |
| भिरु       | ३७    | २१    | यदृष्टा   | २१८   | २     | याचिन       | १६६   | ३     |
| भौष्टरेय   | ५     | ७     |           |       |       | याचयेतक     | १६६   | ४     |
| भौष्टरुग   | १८४   | ९७    | यन्       | { १५४ | ५९    | याचना       | { १३८ | ३२    |
|            |       |       |           | { २६७ | ५९    |             | { २१९ | ६     |

| शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|-------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| याजक      | १३५    | १७     | युगकालिक    | १६८    | १४     | योग्य     | ८६     | ११२    |
| यातना     | ४९     | ३      | युगान्धर    | १५४    | ५७     | योजन      | २९४    | ३०     |
| यातयाम    | २५३    | १४५    | युगपत्      | २८०    | २२     | योजनवल्ली | ८३     | ९१     |
| यातु      | १५     | ६०     | युगपत्रक    | ७१     | २२     | योत्र     | १६८    | १३     |
| यातुधान   | १५     | ६०     | युगपार्श्वग | १७७    | ६३     | योद्धृ    | १५४    | ६१     |
| यातृ      | ११०    | ३०     | युगल        | १०३    | ३८     | याघ       | १५४    | ६१     |
| यात्रा    | { १६१  | ९५     | युगाद्यग    | १५४    | ५७     | योधसराव   | १६३    | १०७    |
|           | { २५९  | १७५    | युग्म       | १०३    | ३८     | योनि      | १२०    | ७६     |
| यादःपति   | ४९     | २      | युग्य       | { १५४  | ५८     | योषा      | १०४    | २      |
| यादस्     | ५३     | २०     |             | { १७७  | ६४     | योषित्    | १०४    | २      |
| यादसम्पति | १५     | ६१     | युद्ध       | १६२    | १०३    | यौतक      | १४८    | २८     |
| यान       | { १४६  | १८     | युष्        | १६२    | १०६    | यौतव      | १८२    | ८५     |
|           | { १५४  | ५८     | युवति       | १०६    | ८      | यौवत      | २०९    | २२     |
| यानमुख    | १५३    | ५५     | युवन्       | ११३    | ४२     | यौवन      | ११२    | ४०     |
| याप्य     | २०७    | ५४     | युवराज      | ४१     | १२     |           |        |        |
| याप्ययान  | १५३    | ५३     | युय         | १०४    | ४१     | रहस्      | १५     | ६४     |
| याम       | { २५   | ६      | यूथनाथ      | १४९    | ३५     |           | { ३२   | १५     |
|           | { २२२  | १८     | यूथप        | १४९    | ३५     | रक्त      | { ११७  | ६४     |
| यामिनी    | २४     | ४      | यूथिका      | ८०     | ७१     |           | { १२९  | १२४    |
| यामुन     | १८४    | १००    | यूप         | { ७५   | ४१     | रक्तक     | { २४१  | ८०     |
| यायजूक    | १३३    | ८      | यूपक        | { २९६  | ३५     | रक्तचन्दन | { १३०  | १३२    |
| याव       | १२९    | १२५    | यूपकटक      | २८९    | १९     |           | { १८६  | १११    |
| यावक      | १६९    | १८     | यूपखड       | २५८    | १६७    | रक्तपा    | ५३     | २२     |
| यावत्     | २७३    | २४६    | यूगग्र      | १३५    | १९     | रक्तफला   | ९१     | १३९    |
| यावन      | १२९    | १२८    | यूष         | २९६    | ३५     | रक्तसध्यक | ५६     | ३६     |
| याष्टीक   | १५६    | ७०     | यौत्क       | १६८    | १३     | रक्तसरोसह | ५७     | ४१     |
| यास       | ८३     | ९१     | योग         | २३१    | २२     | रक्ताङ्ग  | ९२     | १४६    |
| युक्त     | १४७    | २४     | योगेष्ट     | १८५    | १०५    | रक्तोत्पल | ५७     | ४२     |
| युक्तरसा  | ९१     | १४०    |             |        |        | रक्षसभ    | २९३    | २७     |
| युग       | { १०३  | ३८     |             |        |        |           |        |        |
|           | { २३१  | २४     |             |        |        |           |        |        |



| शब्द.     | पृष्ठ | श्लोक | शब्द.          | पृष्ठ | श्लोक | शब्द.  | पृष्ठ | श्लोक |
|-----------|-------|-------|----------------|-------|-------|--------|-------|-------|
| रक्ष      | { ७   | ११    | रत्नछानु       | ११    | ४९    | रख     | १८    | २२    |
| रक्षित    | २१७   | १     | रत्नाकर        | ४९    | २     | रखण    | २३    | १८    |
| रक्षित्व  | १४४   | ६     | रत्नि          | १२२   | ८६    | रखि    | २२    | ११    |
| रक्षा     | २२    | ८     | रथ             | { ७२  | १     | रखाना  | १२१   | १८    |
| रक्ष      | ९८    | १     | रथकल्या        | १५१   | ५१    | रखिम   | { २१  | ११    |
| रक्ष      | १८७   | १     | रथकार          | { १८७ | ४     |        | { २५२ | ११८   |
| रक्षणीव   | १८८   | ७     | रथगति          | १५१   | ५७    | रख     | { १११ | ७     |
| रक्षना    | १११   | १३७   | रथदु           | ७२    | २१    |        | { ११  | ९     |
| रक्षक     | १८९   | १     | रथांग          | { १५१ | ५५    |        | { ४२  | १७    |
| रक्षत     | { १८४ | ९१    | रथांगप्रयमामकर | २२    | २२    |        | { १८४ | ९९    |
|           | { २४१ | ७९    | रथिक           | १५७   | ७६    | रखार्थ | { २१९ | २२७   |
| रक्षनी    | { २४  | ४     | रथिन्          | { १५४ | १     | रखार   | १८५   | १२    |
|           | { ९३  | १५३   | रथिन           | १५७   | ७१    | रखार   | १२१   | ९१    |
| रक्षनीमुख | २४    | १     | रथ             | १५२   | ४१    | रखती   | १२३   | ९१    |
|           | { २९  | २९    | रथ्या          | { १२  | १     |        | १७१   | २७    |
| रक्ष      | { १८  | २१    | रथ्या          | { १५१ | ५८    |        | { ५८  | २     |
|           | { १६१ | ९८    | रथ             | १२२   | ९१    |        | { ८२  | ८४    |
|           | { २७  | २३१   | रथ             | १२२   | ९१    |        | { ८८  | १२१   |
| रक्षस्वभा | १८    | २     | रथ             | १२२   | ९१    | रथांग  | १८५   | ११    |
| रक्षु     | १९१   | २७    | रथ             | १२२   | ९१    | रथांग  | ४१    | १     |
| रक्षन     | १११   | ११२   | रथ             | १२२   | ९१    | रथांग  | { ७१  | ११    |
| रक्षनी    | ८१    | ९५    | रथ             | १२२   | ९१    | रथांग  | { ९५  | १११   |
|           | { ११२ | १     | रथ             | १२२   | ९१    | रथांग  | { १७४ | ४४    |
| रख        | { २२  | ८     | रथ             | १२२   | ९१    | रथित   | १९    | ८     |
|           | { २३१ | ४९    | रथ             | १२२   | ९१    | रथीन   | ९२    | १४८   |
| रक्षा     | ८१    | ८८    | रथ             | १२२   | ९१    | रथ     | १४७   | २१    |
| रथ        | १४२   | ५७    | रथ             | १२२   | ९१    | रथ     | १४७   | २२    |
| रथिपति    | ९     | २१    | रथ             | १२२   | ९१    | रथ     | १४७   | २१    |
| रथ        | { १८१ | १     | रथ             | १२२   | ९१    | रथ     | २५    | ८     |
|           | { २४९ | १२१   | रथ             | १२२   | ९१    | रथ     | १५    | ८     |

| शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.          | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|-----------|--------|--------|----------------|--------|--------|
| राक्षसी    | ८९     | १२८    | राजीव     | ५३     | १९     | रिष्टि         | १६०    | ८९     |
| राक्षा     | १२९    | १२५    | राज्याङ्ग | ५७     | ४१     | रीढा           | ४३     | २३     |
| रांकव      | १२७    | १११    | रात्रि    | १४६    | १८     | रीण            | २१४    | ९२     |
| राज्       | १४३    | १      | रात्रिचर  | २४     | ४      | रीति           | १८४    | ९७     |
| राजक       | १४३    | ३      | रात्रिचर  | १५     | ६०     | रीतिपुष्प      | २३९    | ६८     |
| राजकशेरु   | २६१    | १८८    | रात्रिचर  | १५     | ६०     | रूपप्रतिक्रिया | १८५    | १०३    |
| राजन्      | ४१     | १३     | रात्रिचर  | ३०     | ४      | रूपप्रतिक्रिया | ११४    | ५०     |
|            | १४३    | १      | रात्रिचर  | २६     | १६     | रूपप्रतिक्रिया | १८३    | ९५     |
|            | २४७    | १११    | रात्रिचर  | २१     | २२     | रूपप्रतिक्रिया | १८८    | ८      |
| राजन्य     | १४३    | १      | रात्रिचर  | ९      | २३     | रूपप्रतिक्रिया | २३९    | २२५    |
| राजन्यक    | १४३    | ४      | रात्रिचर  | ९८     | ११     | रूपप्रतिक्रिया | २१४    | ९१     |
| राजन्यत्   | ६०     | १३     | रात्रिचर  | २५२    | १४०    | रूपप्रतिक्रिया | २३     | ३४     |
| राजवला     | ९३     | १५३    | रात्रिचर  | १७३    | ४०     | रूपप्रतिक्रिया | ७६     | ५१     |
| राजवर्जिन् | १३२    | २      | रात्रिचर  | १०५    | ४      | रूपप्रतिक्रिया | ८१     | ७८     |
| राजरा      | १६     | ६८     | रात्रिचर  | १४१    | ४५     | रूपप्रतिक्रिया | १७३    | ४३     |
| राजालङ्क   | २४३    | ९२     | रात्रिचर  | १२९    | १२७    | रूपप्रतिक्रिया | १८६    | १०९    |
| राजवंश्य   | १३२    | २      | रात्रिचर  | १०४    | ४२     | रूपप्रतिक्रिया | २३     | ३४     |
| राजवत्     | ६०     | १३     | रात्रिचर  | २६६    | २१४    | रूपप्रतिक्रिया | २३२    | २९     |
| राजवृक्ष   | ७१     | २३     | रात्रिचर  | २६१    | १८४    | रूपप्रतिक्रिया | २०६    | ५२     |
| राजसदन     | ६३     | १०     | रात्रिचर  | ८३     | ९४     | रूपप्रतिक्रिया | २०६    | ५२     |
| राजसभा     | २८४    | ९      | रात्रिचर  | ४१     | १४     | रूपप्रतिक्रिया | ११५    | ५१     |
| राजस्य     | २९४    | ३१     | रात्रिचर  | १८०    | ७७     | रूपप्रतिक्रिया | ११५    | ५१     |
| राजहंस     | १०१    | २४     | रात्रिचर  | ८७     | ११४    | रूपप्रतिक्रिया | ३८     | २५     |
| राजादन     | ७३     | ३५     | रात्रिचर  | ९१     | १४०    | रूपप्रतिक्रिया | ४५     | ३५     |
|            | ७५     | ४५     | रात्रिचर  | २२     | २६     | रूपप्रतिक्रिया | २१३    | ९०     |
| राजाई      | १२९    | १२६    | रात्रिचर  | २०७    | ५६     | रूपप्रतिक्रिया | ७      | १०     |
| राजि       | ६७     | ४      | रात्रिचर  | १८३    | ९०     | रूपप्रतिक्रिया | १०     | ३४     |
| राजिका     | १६९    | १९     | रात्रिचर  | ४५     | ३६     | रूपप्रतिक्रिया | ११     | ३७     |
| राजिल      | ४७     | ५      | रात्रिचर  | १४५    | १०     | रूपप्रतिक्रिया | ११७    | ६४     |
|            |        |        | रात्रिचर  | २३३    | ३६     | रूपप्रतिक्रिया | २९०    | २२     |

| शब्द       | पृष्ठ | श्लोक | शब्द    | पृष्ठ | श्लोक | शब्द     | पृष्ठ | श्लोक |
|------------|-------|-------|---------|-------|-------|----------|-------|-------|
| बद्ध       | ९८    | १     | रोहणी   | ८३    | ९२    | अरमणा    | १     | १ २५  |
| बुधती      | ३७    | १८    | रोहसी   | २६९   | २२९   | अरमन्    | { २   | १७    |
| बुध्       | ४२    | २६    | रादस्थी | २६९   | १२९   |          | { २४९ | १२४   |
| बुध        | ९४    | १५८   | राधस्   | ५     | ७     |          | { १   | २७    |
| बुध        | ३१    | ७     | रोष     | १५९   | ८७    | अरमी     | { ८६  | ११२   |
| क्यामीना   | १ ८   | १९    | रोमन    | १२४   | ९९    |          | { १५८ | ८२    |
|            | { १८३ | ९१    | रोमन्ध  | २८९   | १९    | अरमीपत्  | १९८   | १४    |
| कृष्य      | { १८४ | ९६    | रोमहपण  | ४५    | ३५    | अर्य     | { ४५  | ३३    |
|            | { २५६ | १६    | रोमांघ  | ४५    | ३५    |          | { १५० | ८६    |
| कृष्णाप्यध | १४४   | ७     | रोष     | ४३    | २६    | सगुड     | २८९   | १८    |
| रूपित      | २१३   | ८९    | रोहिणी  | १७८   | ६७    | राम      | २२    | २७    |
| रेखित      | १५२   | ४८    |         | { ३२  | १७    | रामक     | १९५   | ४४    |
| रेणु       | १६१   | ९८    | रोहित   | { ५३  | १९    | रामिम्   | ११    | ३६    |
| रेणुका     | ८८    | १२    |         | { ९८  | १     |          | { १५  | १४    |
| रेतस       | ११७   | ६२    | रोहितक  | ७६    | ४९    | रघु      | { ९   | ११३   |
|            | { २ ७ | ५४    | रोहिताघ | १४    | ८७    |          | { २३२ | २८    |
| रेफ        | { २५१ | १३२   | रोहिन   | ७६    | ४९    | सगुल्य   | ९५    | १६७   |
| रेवतारमन्  |       | ३३    | रोह     | { ४२  | १७    | रंका     | २८३   | ७     |
| रेवा       | ५५    | २२    |         | { ४२  | २     | रंकोपिका | ०     | ११३   |
| रे (रा)    | { १८३ |       | रोमक    | १७२   | ४२    | रामा     | ४३    | २३    |
|            | { २५७ | १६५   | रोरय    | ४८    | १     | रामाति   | २ १   | ९८    |
| रोक        | १६    | २     | राहन्व  |       | २४    | रामित    | २१४   | ९१    |
| रोग        | ११७   | ८९    |         | { २२  | २६    | रय       | १८४   | १     |
| रागहारिन्  | ११६   | ५७    | राहण    | { ७६  | १६६   |          | { १८  | ९     |
| रोचन       | ७६    | ४७    |         | { १७  | १     |          | { १९  | ११    |
| रायनी      | { ८५  | १ ८   |         | { ७   |       | रा       | { ७७  | ५५    |
|            | { ९२  | १४६   | रुप     | ७८    | ६     |          | { ८   | ७२    |
| रविण्      | १२४   | १     | राय     | १५    | ८६    |          | { ९   | ११३   |
| री, रम     | ६३    | ३४    | राय     | १     | ११    | राय      | २     | १४८   |
| री, रन     | १२३   | ३     | राय     | १९८   | १४    | राय      | ११२   | ८९    |

| शब्द.         | पृष्ठ               | श्लोक | शब्द.      | पृष्ठ.             | श्लोक | शब्द.       | पृष्ठ.             | श्लोक. |
|---------------|---------------------|-------|------------|--------------------|-------|-------------|--------------------|--------|
| लपित          | { ३३ १<br>२१७ १०७   |       | लागलदण्ड   | १६८ १४             |       | लीला        | { ४५ ३२<br>२६४ ११९ |        |
| लब्ध          | २१६ १०४             |       | लागलपद्धति | १६८ १४             |       | लुठित       | १५२ ५०             |        |
| लब्धवर्ण      | १३३ ६               |       | लागलिकी    | ८७ ११८             |       | लुब्ध       | २०० २२             |        |
| लब्धानुज्ञ    | १३४ १०              |       | लागली      | { ९६ १६८<br>८६ १११ |       | लुब्धक      | १९० २१             |        |
| लभ्य          | १४७ २४              |       | लागूल      | १५२ ५०             |       | लुलाय       | ९७ ४               |        |
| लम्बन         | १२५ १०४             |       | लाज        | १७४ ४७             |       | लूता        | ९९ १३              |        |
| लम्बोदर       | ११ ३८               |       | लाञ्छन     | २० १७              |       | लून         | २१६ १०३            |        |
| लय            | ४० ९                |       | लाभ        | १८१ ८०             |       | लूम         | १५२ ५०             |        |
| ललना          | १०५ ३               |       | लाभजक      | ९५ १६५             |       | लेख         | ७ ८                |        |
| ललतिका        | १२५ १०४             |       | लालसा      | { ४४ २८<br>२६९ २२९ |       | लेखक        | १४५ १५             |        |
| ललाट          | १२३ ९२              |       | लाला       | ११८ ६७             |       | लेखपत्र     | १२ ४२              |        |
| ललाटिका       | १२५ १०३             |       | लालाटिक    | २३० १७             |       | लेखा        | ६७ ४               |        |
| ललाम          | २५३ १४३             |       | लाव        | १०३ ३५             |       | लेपक        | १८८ ६              |        |
| ललामक         | १३१ १३५             |       | लासिका     | ४० ८               |       | लेश         | २०८ ६२             |        |
| ललित          | ४५ ३१               |       | लास्य      | ४० १०              |       | लेष्टु      | १६७ १२             |        |
| लव            | { २०८ ६२<br>२२४ २४  |       | लकुच       | ७८ ६०              |       | लेह         | १७६ ५६             |        |
| लवङ्ग         | १२९ १२५             |       | लिक्षा     | २८४ १०             |       | लोक         | { ५९ ६<br>२२८ २    |        |
| लवण           | { ३१६ ९<br>२९१ २३   |       | लिखि       | १४६ १६             |       | लोकजित्     | ८ १३               |        |
| लवणोद         | ४९ २                |       | लिंग       | २३२ २५             |       | लोकायत      | २९५ ३२             |        |
| लवन           | २२४ २४              |       | लिंगवृत्ति | १४२ ५४             |       | लोकालोक     | ६५ २               |        |
| लवित्र        | १६८ १३              |       | लिपि       | १४६ १६             |       | लोकेश       | ८ १६               |        |
| लशुन          | ९२ १४८              |       | लिपिकर     | १४५ १५             |       | लोचन        | १२३ ९३             |        |
| लस्तक         | १५९ ८५              |       | लित        | २१३ ९०             |       | लोचमस्तक    | ८६ १११             |        |
| लाक्षा        | { १२९ १२५<br>२८४ १० |       | लितक       | १६० ८८             |       | लोघ्र       | ७३ ३३              |        |
| लाक्षाप्रसादन | ७४ ४१               |       | लिप्सा     | ४४ २७              |       | लोपांमुद्रा | २१ २०              |        |
| लागल          | १६८ १३              |       | लिबि       | १४६ १६             |       | लोष्व       | १९१ २५             |        |
|               |                     |       | लीढ        | २१८ ११०            |       | लोमन्       | १२४ ९९             |        |
|               |                     |       |            |                    |       | लोमशा       | ९० १३४             |        |

| शब्द.     | पृष्ठ     | श्लोक       | शब्द.     | पृष्ठ | श्लोक     | शब्द. | पृष्ठ | श्लोक |
|-----------|-----------|-------------|-----------|-------|-----------|-------|-------|-------|
| छोम       | { २१० ७४  | मंथन        | २१९ ७३    | मत्सक | १ ६६      |       |       |       |
|           | { २१५ २ ५ | संग         | २८५ १ ६   | मत्सक | १७७ ६२    |       |       |       |
| छोमप      | २ २२      | मथन         | २३ १      | ।     | ४८ ११     |       |       |       |
| छोमम      | २ २२      | मथनोत्थित   | २० २४     |       | { २६ १६   |       |       |       |
| छोम       | १६७ १२    | मथन         | ३३ १      |       | { २७ २    |       |       |       |
| छोममेदन   | १६७ १२    | म           | ८४ १ २    | मत्सक | १९८ १४    |       |       |       |
|           | { १२९ १२६ |             | { १३ ४७   | मत्सक | ८२ ८२     |       |       |       |
| छोम       | { १८४ ९८  | मत्स        | { ८५ १ ५  | मद    | २ ३ ३५    |       |       |       |
|           | { १८४ ९९  |             | { २६१ १८४ | मद    | १२२ ८९    |       |       |       |
|           | { २९१ २३  | मत्सनिर्घोष | १९ १      |       |           |       |       |       |
| छोमकारक   | १८८ ७     | मत्सपुष्प   | ८ ७६      | मद    | { १३७ ६   |       |       |       |
| छोमपुष्प  | ९९ १६     | मत्सिन्     | १२ ४२     | मद    | { २५६ १६  |       |       |       |
| छोम       | २ ३ ३७    | म           | { ९७ ५    | मद    | २ ३ ३५    |       |       |       |
| छोमामिहार | १६१ ९४    | म           | { २ ६ ४७  | मद    | १६४ ११५   |       |       |       |
| छोमि      | { ३२ १५   | म           | २ ४ ४१    | मद    | २ ५ ४५    |       |       |       |
|           | { ११७ ६४  |             | { ७२ २७   | मद    | ६८ ७      |       |       |       |
| छोमि      | १८१ ९२    | मत्सक       | { ७२ ३    | मद    | १७८ ६९    |       |       |       |
| छोमि      | १२९ १२४   |             | { ७८ ६४   | मद    | १ २ ३१    |       |       |       |
| छोमि      | २२ २५     | मद          | ७३ ३२     |       |           |       |       |       |
|           | ६         | मद          | २८८ १७    | मद    | { ९ १३३   |       |       |       |
| म         | २७३ ९     | मद          | १९१ २७    | मद    | { १ ४ २   |       |       |       |
|           | { ९५ १६   | म           | १५२ ४६    | मद    | { १ ६ ९   |       |       |       |
| म         | { १३२ २६६ | म           | १४ ५६     | मद    | { २४५ १ २ |       |       |       |
|           | { २१४ २१४ | म           | २ ८ ६३    | मद    | { ४९ ३    |       |       |       |
| म         | १८६ १ ९   | म           | १८ ७८     | मद    | { ६७ १    |       |       |       |
| म         | १२९ १२६   | म           | २६३ ५२    | मद    | { २७ १२६  |       |       |       |
| म         | २५६ १५९   | म           | १८१ ७९    | मद    | ८५ ८५     |       |       |       |
| म         | २ ३ ३५    | मद          | १८१ ८९    | मद    | १ १ २७    |       |       |       |
| म         | १२२ ८९    |             | { १२ ७८   | मद    | ८ २१      |       |       |       |
| म         | २१ ७१     | मद          | { १७७ ६२  | मद    | १६८ १७    |       |       |       |
| म         | १२ ७८     |             | { २६९ २२६ | मद    | ८४ ९      |       |       |       |

| शब्द.   | पृष्ठ.    | श्लोक.    | शब्द.     | पृष्ठ.  | श्लोक.    | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------|-----------|-----------|-----------|---------|-----------|-------------|--------|--------|
| वनसमूह  | ६७        | ४         | वरण       | { ६२ ३  | वर्ग      | १०४         | ४१     |        |
| वनस्पति | ६८        | ६         | { ७२ २५   | वर्चस्  | २७०       | २३१         |        |        |
| वनायुज  | १५१       | ४५        | वरण्ड     | २८९     | १८        | वर्चस्क     | ११८    | ६८     |
| वनिता   | { १०४ २   | वरजा      | { १५१ ४२  | वर्ग    | { १३२ १   |             |        |        |
|         | { २४० ७४  |           | { १९२ ३१  |         | { १५१ ४२  |             |        |        |
| वनीयक   | २०६       | ४९        | वरद       | १९७     | ७         |             | २३६    | ४८     |
| वनौकस्  | ९७        | ३         | वरवर्णिनी | { १०५ ४ | वर्णक     | { १३० १३३   |        |        |
| वन्दा   | ८२        | ८२        | { १७३ ४१  |         | { २९७ ३८  |             |        |        |
| वन्दारु | २०१       | २८        | वराग      | २३२     | २६        | वर्णित      | २१७    | ११०    |
| वन्था   | ६७        | ४         | वरागक     | ९०      | १३४       | वर्णिन्     | १४०    | ४२     |
| वपा     | { ४६ २    | वराटक     | { ५७ ४३   | वर्तक   | { १०३ ३५  |             |        |        |
|         | { ११७ ६४  |           | { १९१ २७  |         | { २२९ ११  |             |        |        |
| वपुस्   | ११९       | ७०        | { २९७ ३८  | वर्त्तन | { १६५ १   |             |        |        |
|         | { ६२ ३    | वरारोहा   | १०५       | ४       | { २०२ २९  |             |        |        |
| वप्र    | { १६७ ११  | वराशि     | १२७       | ११६     | वर्त्तनी  | { ६१ १५     |        |        |
|         | { १८९ १०५ | वराह      | ९७        | २       | { १९३ ३३  |             |        |        |
| वमथु    | { ११६ ५५  | वरिवसित   | २१६       | १०२     | वर्त्ति   | १३०         | १३३    |        |
|         | { १५० ३७  | वरिवस्या  | १३८       | ३५      | वर्त्तिका | १०३         | ३५     |        |
| वमि     | ११६       | ५५        | वरिवस्थित | २१६     | १०२       | वर्त्तिण्यु | २०२    | २९     |
| वयस्    | २७०       | २३०       | वरिष्ठ    | १८४     | ९७        | वर्तुल      | २०९    | ६९     |
|         | { ७७ ५८   | वरिष्ठ    | २१८       | १११     | वर्त्मन्  | { ६१ १५     |        |        |
| वयस्था  | { ९१ १३७  | वरी       | ८४        | १००     | { २४९ १२१ |             |        |        |
|         | { ९२ १४४  | वरीयस्    | २७१       | २३५     | वर्धक     | ८३          | ९०     |        |
| वयस्य   | { ११३ ४२  |           | { १५ ६१   | वर्धकि  | १८८       | ९           |        |        |
|         | { १४५ १२  | वरुण      | { १७ २    | वर्धन   | { २०१ २८  |             |        |        |
| वयस्या  | १०७       | १२        | { ७२ २५   |         | { २१९ ७   |             |        |        |
|         | { १२९ १२४ | वरणात्मजा | १९४       | ३९      | वर्धमान   | ७६          | ५१     |        |
| वर      | { २२० ८   | वरुय      | १५३       | ५७      | वर्धमानक  | १७२         | ३२     |        |
|         | { २५९ १७३ | वरुथिनी   | १५७       | ७८      | वर्धिण्यु | २०१         | २८     |        |
| वरटा    | { १०१ २५  | वरेण्य    | २०७       | ५७      | वर्मन्    | १५५         | ६४     |        |
|         | { १०१ २७  | वर्कर     | १९१       | २३      | वर्मित    | १५५         | ६५     |        |

| शब्द    | पृष्ठ | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ | श्लोक |
|---------|-------|-------|-----------|-------|-------|------------|-------|-------|
| वय      | २७    | ५७    | गह्वरि    | ३९    | ११    | वास्त      | १२७   | ११४   |
| वमा     | १६    | ७     | गह्वी     | ३८    | ९     | वम्भ       | १२७   | ११५   |
| वर्चसा  | ११    | २६    | गह्वर     | ११७   | ६१    | वम्भयोनि   | १२६   | ११    |
| वर्ष    | १९    | ११    | गहा       | २२    | ८     | वम्भनमन्   | १२८   | १२    |
|         | ५९    | ६     | गहाक्रिया | २१९   | ४     | वम्भ       | १८१   | ७९    |
|         | २६८   | २२४   |           | १४९   | ३६    | वम्भता     | ११८   | ३६    |
| वयवर    | १४४   | ९     | गहा       | १७८   | ३९    | वह         | १७७   | ३३    |
| वर्षा   | २७    | १९    |           | २६७   | २१७   | वह्नि      | १४    | ५३    |
| वयामू   | ५४    | २४    | गधिक      | २७    | ७६    |            | १७    | २     |
| वयाम्नी | ५४    | २४    | गधित्व    | ११    | ३६    | वाद्यतञ्जक | ८१    | ८     |
| वर्णयस् | ११३   | ४३    | गधिर      | ८४    | ९७    | वह्नि      | १८६   | १६    |
| वर्णयस  | १९    | १२    |           | १७३   | ४१    | वा         | २७३   | २४९   |
| वध्मन्  | ११९   | ७     | गध        | २     | २५    |            | २७६   | ७     |
|         | २४९   | १२३   | गध्       | २७६   | ८     |            | २७८   | १५    |
| वसद्य   | ३२    | १३    | गध्पुठ    | १३७   | २७    | वाक्यति    | २३    | ३५    |
| वसज     | २३३   | ३१    | गधनि      | २३    | ६७    | वाक्य      | ३२    | २     |
| वसजा    | २३३   | ३१    | गधने      | १२७   | ११५   | वागधि      | २३    | ३५    |
| वसधी    | ६४    | १७    | गधन्त     | २७    | १८    | वागुप      | ११    | २६    |
| वसप     | १२६   | १७    | गधा       | ११७   | ६४    | वागुरेक    | १८९   | १४    |
| वसपि    | २१३   |       |           | ७     | १     | वागमन्     | २३    | ३५    |
| वसीक    | ६४    | १४    | मु        | ८१    | ८१    | वाग्मुग    | ३५    |       |
| वर्मुग  | ७     | ३     |           | १८३   |       | वाच        | ३३    | १     |
| वड      | ६     | १०    | मुक       | २६९   | २२८   | वाचवम      | १४०   | ४२    |
| वड      | ६     | १०    |           | ८१    | ८     | वाचक       | ३३    | २     |
| वधित्व  | १२    | ४८    |           | १७३   | ४३    | वाग्मति    | २३    | ३४    |
| वजु     | २५३   | १४४   | गुग्गु    |       | २२    | वापाट      | २३    | ३६    |
| वर्धक   | ६     | १४    | गुग्गु    | ५८    | ३     | वाग्मन्    | २३    | ३६    |
| वर्धकी  | ३     | ३     | गुग्गुपा  | ८     | ३     | वाग्मि     | ३६    | १७    |
| वर्ध    | ७     | ७     | गुग्गुनी  | ५८    | ३     | वाग्मि     | ३३    | ३५    |
|         | १५२   | १३७   | गुग्गु    | २८६   | १३    | वाग्म      | ३५    | ८७    |

| शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द      | पृष्ठ. | श्लोक | शब्द.      | पृष्ठ | श्लोक |
|-----------|--------|--------|-----------|--------|-------|------------|-------|-------|
| वाजपेय    | २९४    | ३१     | वात्सर    | १७७    | ६०    | वारण       | १४९   | ३४    |
| वाजिदन्तक | ८५     | १०३    | वादित्र   | ३९     | ५     | वारणनुसा   | ८६    | ११३   |
| वाजिन्    | १०२    | ३३     | वाद्य     | ३९     | ५     | वारवाण     | १५५   | ६३    |
|           | १५१    | ४४     | वान       | ७०     | १५    | वारमुख्या  | १०८   | १९    |
|           | २४६    | १०७    | वानप्रस्थ | ७२     | २८    | वारस्त्री  | १०८   | १९    |
| वाजिशाला  | ६२     | ७      | वानर      | ९७     | ३     | वाराही     | ११    | ३५    |
| वाछा      | ४४     | २७     | वानस्पत्य | ६८     | ६     | वार्       | ४९    | ३     |
| वाटी      | २९८    | ४२     | वानीर     | ७२     | ३०    | वारद       | १८    | ७     |
| वाट्यालका | ८५     | १०७    | वानेय     | ९०     | १३१   | वारिपर्णी  | ५६    | ३८    |
| वाडव      | १४     | ५६     | वापी      | ५५     | २८    | वारिप्रवाह | ६६    | ५     |
|           | १३२    | ४      | वाम       | २५३    | १४४   | वारिवाह    | १८    | ६     |
|           | १५२    | ४६     | वामदेव    | १०     | ३२    | वारी       | १५१   | ४३    |
| वाडवानल   | १४     | ५६     | वामन      | १८     | ३     | गरुणी      | २३६   | ५२    |
| वाडव्य    | २२७    | ४१     |           | ११३    | ४६    | वार्त      | ११६   | ५७    |
| वाणि      | १९२    | २८     |           | २०९    | ७०    | वार्त      | २४०   | ७६    |
| वाणिज     | १८०    | ७८     | वामलूर    | ६०     | १४    | वार्ता     | ३४    | ७     |
| वाणिज्य   | १६५    | २      | वामलोचना  | १०५    | ३     |            | १६५   | १     |
|           | १८१    | ७९     | वामा      | १०४    | २     |            | २४०   | ७५    |
| वाणिनी    | २४७    | ११२    | वामी      | १५२    | ४६    | वार्ताकी   | ८६    | ११४   |
| वाणी      | ३३     | १      | वायदण्ड   | १९२    | २८    | वार्ताविह  | १९०   | १५    |
| वात       | १५     | ६३     | वायस      | १००    | २०    | वार्धक     | ११२   | ४०    |
| वातक      | ९३     | १४९    | वायसाराति | ९९     | १५    | वार्धुषि   | १६६   | ५     |
| वातकिन्   | ११६    | ५९     | वायसी     | ९३     | १५१   | वार्धुषिक  | १६६   | ५     |
| वातपोथ    | ७२     | २९     | वायसोली   | ९२     | १४४   | वार्मण     | २२७   | ४३    |
| वातप्रमी  | ९८     | ७      | वायु      | १५     | ६१    | वार्धिक    | ९३    | १५०   |
| वातमृग    | ९८     | ७      | वायुसख    | १४     | ५५    | वाल        | १२३   | ९५    |
| वातरोगिन् | ११६    | ५९     | वार       | ४९     | ३     | वालाधि     | १५२   | ५०    |
| वातायन    | ६३     | ९      | वार       | १०३    | ३९    | वालपाश्या  | १२५   | १०३   |
| वातायु    | ९८     | ८      |           | २५६    | १६१   | वालहस्त    | १५२   | ५०    |
| वातूल     | २६३    | १९६    |           |        |       |            |       |       |
| वात्या    | २६३    | १९६    |           |        |       |            |       |       |



| शब्द         | पृष्ठ | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ | श्लोक |
|--------------|-------|-------|-----------|-------|-------|------------|-------|-------|
| वाञ्छक       | ८८    | १२१   |           | १५७   | ७८    | विह्वल     | २५    | ४४    |
| वाञ्छका      | १४    | ७३    | वाहिनी    | १५८   | २८    | विह्वल     | २२४   | ३७    |
| वाञ्छक       | १२४   | १११   |           | २४७   | १११   | विगत       | २१४   | १०    |
| वाञ्छक       | २३    | ३५    | वाहिनीपति | १५५   | ६२    | विगतार्तता | १०९   | २१    |
| वाञ्छिका     | ८५    | १३    | वि        | १२    | ३२    | विम        | ११४   | ४६    |
| वाञ्छित      | ३८    | २५    | विमति     | १८१   | ८३    |            | ११९   | ७०    |
| वाञ्छ        | ६२    | ६     | विमकट     | ७४    | ३७    | विमह       | १४६   | १८    |
| वाञ्छक       | ८५    | १३    | विमच      | ६८    | ७     |            | १६२   | १४    |
| वाञ्छगृह     | ६३    | ८     | विमर्तन   | २२    | २९    |            | २२३   | २२    |
| वाञ्छन्ती    | ८     | ७२    | विमर्तांग | ११३   | ४६    | विमस       | १३७   | २८    |
| वाञ्छयोग     | १३    | १३४   | विमभर     | २२    | ३     | विम        | २२३   | १९    |
| वाञ्छ        | २४    | २     | विमर      | ८     | ९     | विमराज     | ११    | ३८    |
| वाञ्छ        | १२    | ४२    | विमसित    | ६८    | ८     | विमराज     | १३३   | ६     |
| वाञ्छ        | १२७   | ११५   | विमस्वर   | २२    | ३     | विमपन      | २२५   | ६     |
| वाञ्छित      | { १३  | १३४   | विमर      | २२२   | १५    | विमर्चिका  | ११५   | ५३    |
|              | { १७४ | ४३    | विमरिन्   | २२    | ३     | विमरणा     | ३     | २     |
| वाञ्छिता     | २४    | ७५    | विमि      | १२    | ३३    | विमरित     | २१६   | ९९    |
| वाञ्छिक      | ४७    | ४     | विमरिण    | ८१    | ८     | विमरिणा    | ३     | ३     |
| वाञ्छदेव     | ८     | २     | विमरिण    | १९७   | ७     | विमरिण     | ६३    | ११    |
| वाञ्छ        | ४१    | १४    | विमर      | { ४२  | १९    | विमर       | २९२   | २६    |
| वाञ्छ        | ६५    | १९    |           | { ११६ | ५८    | विमर       | { १४७ | २२    |
| वाञ्छक       | ९४    | १५८   | विमरि     | २२२   | १५    | विमर       | { २४२ | ८२    |
| वाञ्छोपपत्ति | १२    | ३     | विमर      | { १६२ | १०२   | विमर       | १६३   | ११    |
| वाञ्छ        | १५३   | ५४    | विमर      | २५२   | १४१   | विमर       | १७४   | ४६    |
|              | { १५१ | ४४    | विमर      | १८१   | ८३    | विमर       | १९३   | ४     |
|              | { १८२ | ८८    | विमरि     | १८    | ७९    | विमर       | १९७   | ९     |
| वाञ्छिपत्    | ९७    | ४     | विमर      | १५७   | ७७    | विमर       | ३     | ६     |
| वाञ्छन       | १५४   | ५८    | विमरि     | २२    | १५    | विमर       | { ११८ | ६८    |
| वाञ्छ        | ४७    | ५     | विमर      | १८    | ७९    | विमर       | { १६५ | १     |
| वाञ्छिय      | १५    | ३९    | विमर      | १८१   | ८३    | विमर       | २८८   | १७    |
|              |       |       |           |       |       | विमर       | ६४    | १५    |

| शब्द.       | पृष्ठ.                        | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ.                       | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ.                   | श्लोक. |
|-------------|-------------------------------|--------|-------------|------------------------------|--------|--------------|--------------------------|--------|
| विटप        | { ७० १४<br>२५० १३१            |        | विदु        | १५० ३७                       |        | विधुर        | २२३ २०                   |        |
| विटपिन्     | ६८ ५                          |        | विदुर       | { ७३ ३०<br>२०२ ३०            |        | विधुवन       | २१९ ४                    |        |
| विट्खदिर    | ७६ ५०                         |        | विदुल       | ७३ ३०                        |        | विधूनन       | २१९ ४                    |        |
| विट्चर      | १९१ २३                        |        | विद्व       | २१६ ९९                       |        | विधेय        | २०० २४                   |        |
| विड         | १७३ ४२                        |        | विद्वकर्णी  | ८२ ८४                        |        | विनयग्राहिन् | २०० २४                   |        |
| विडङ्ग      | ८५ १०६                        |        | विद्याधर    | ७ ११                         |        | विना         | २७५ ३                    |        |
| वितहा       | २८४ ९                         |        | विद्रुत     | १९ ९                         |        | विनायक       | { ८ १४<br>११ ३८<br>२२८ ६ |        |
| वितथ        | ३७ २१                         |        | विद्रवि     | ११६ ५६                       |        | विनाश        | २ २२                     |        |
| वितरण       | १३७ २९                        |        | विद्रव      | १६४ १११                      |        | विनाशोन्मुख  | २१४ ९१                   |        |
| वितर्दि     | ६४ १६                         |        | विद्रुत     | २१६ १००                      |        | वि           | { १५१ ४४<br>२०० २५       |        |
| वितस्ति     | १२१ ८४                        |        | विद्रुम     | १८३ ९३                       |        | विन्दु       | २०२ ३०                   |        |
| वितान       | { १२८ १२०<br>२४७ ११३          |        | विद्रुमलता  | ८९ १२९                       |        | विन्ध्य      | ६६ ३                     |        |
| वितुन्न     | ९३ १४९                        |        | विद्वस्     | { १३३ ५<br>२७० २३४           |        | वन्न         | { २१६ ९९<br>२१६ १०४      |        |
| वितुन्नक    | { ८९ १२६<br>१७३ ३७<br>१८५ १०१ |        | विद्वप      | ४३ २५                        |        | विपक्ष       | १४५ ११                   |        |
| वित्त       | { १८३ ९०<br>१९७ ९९            |        | विघवा       | १०६ ११                       |        | विपची        | ३९ ३                     |        |
| विदर        | २१९ ५                         |        | विषा        | { १९४ ३८<br>२४५ १०१          |        | विपण         | १८१ ८३                   |        |
| विदल        | २९५ ३२                        |        | वितृ        | ८ १७                         |        | विपणि        | { ६२ २<br>२३६ ५२         |        |
| विदारक      | ५० १०                         |        | विधि        | { २९ २८<br>१३९ ३९<br>२४५ १०० |        | विपत्ति      | १५८ ८२                   |        |
| विदारी      | { ७१ १२०<br>८६ ११०            |        | विधिदर्शिन् | १३५ १६                       |        | विपथ         | ६१ १६                    |        |
| विदारिगन्धा | ८७ ११५                        |        | विधु        | { ८ २२<br>१९ १४<br>२४५ ९९    |        | वपद          | १५८ ८२                   |        |
| विदित       | { २१७ १०८<br>२१७ १०९          |        | विधुत्त     | २१७ १०७                      |        | विपर्यय      | २२६ ३३                   |        |
| विदिश       | १८ ५                          |        | विधुत्तद    | ३२ २६                        |        | विपर्यास     | २२६ ३३                   |        |
|             |                               |        |             |                              |        | विपाश्चित्   | १३३ ५                    |        |
|             |                               |        |             |                              |        | विपाद्       | ५५ ३३                    |        |
|             |                               |        |             |                              |        | विपादिका     | ११५ ५२                   |        |

| शब्द.       | पृष्ठ | श्लोक | शब्द        | पृष्ठ   | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ    | श्लोक |
|-------------|-------|-------|-------------|---------|-------|------------|----------|-------|
| विपाशा      | ५५    | ३३    | विमनस्      | १९७     | ८     | विधीन      | २१६      | १     |
| विपिन       | ६७    | १     | विमर्दन     | २२१     | १३    | विछपन      | { १३ १३३ |       |
| विपुळ       | २ ८   | ६१    | विमला       | ९२      | १४३   |            | २२५      | २७    |
| विप्र       | { १३२ | २     | विमलार्थक   | २ ७     | ५५    | विसेयी     | १७५      | ५     |
|             | { १३२ | ४     | विमातृश्र   | १ ९     | २५    | विशध       | २४४      | ९६    |
| विप्रकार    | २२२   | १५    | विमान       | १३      | ४८    | विशर       | ४६       | १     |
| विप्रकृत    | २ ४   | ४३    | विषय        | १७      | ९     | विश्वर्ष   | १०       | १६    |
| विप्रकृष्टक | २०९   | ६८    | विषयद्रव्या | १३      | ४९    | विश्या     | २ ५      | ४४    |
| विप्रतीसार  | ४३    | २५    | विषय        | २२२     | १८    | विषयस्वर   | { २२ २९  |       |
| विप्रयोग    | २२५   | २८    | विषात       | २०१     | २५    |            | २३७      | ५७    |
| विप्रकम्प   | २ ४   | ४३    | विषाम       | २२२     | १८    | विषाह      | ३५       | ९     |
| विप्रकम्प   | { ४५  | ३३    | विषयसाम     | १४      | ४४    | विषाह      | १४२      | ५६    |
|             | { २२५ | २८    | विगति       | २२६     | ३७    | विषिक्त    | { १४७ २२ |       |
| विप्रकाप    | ३६    | १६    | मिरक        | २ ९     | ६६    |            | २४२      | ८२    |
| विप्रभिक्षा | १ ८   | २०    | मिराज       | १४९     | १     | विषिष      | २१४      | ९३    |
| विमुष्      | ५     | १     | मिराज       | १८      | २३    | विषेक      | १३९      | ३८    |
| मिन्न       | २३२   | १४    | मिर्दिषि    | ८       | १७    | विम्बोक्त  | ४५       | ३१    |
| मिर्वच      | ११५   | ५५    | मिरुपाय     | १       | ३२    | मिष्ट      | १६५      | १     |
| विमुष       | ७     | ७     |             |         |       | मिष्टकट    | २ ८      | ६     |
| विम्व       | १८३   | ९     | मिरीकन      | { २२ २४ | १ ८   | मिष्टार    | ३२ १२    |       |
| विमाकर      | २२    | २८    |             |         |       |            | १६४      | ११७   |
| विम बरी     | २४    | ४     | मिरीष       | ४३      | २५    |            | ८२       | ८३    |
|             | { १४  | ५६    | मिराबन      | २२३     | २१    | मिष्टास्मा | { ९ १३६  |       |
| विमाबहु     | { २२  | ३     | मिरीबोकि    | ३६      | १६    |            | २५५      | १५५   |
|             | { २६९ | २२६   | मिष्टय      | २ १     | २६    | मिष्टयन    | १६४      | ११४   |
| विभीतक      | ७७    | ५८    | मिष्टयन     | २१८     | २     | मिष्टास्त  | १२       | ४     |
| विमृति      | ११    | ३६    | मिष्टयित    | ४७      | ९     | मिष्टास्ता | २१       | २२    |
| विमृचन      | १३४   | १ १   | मिष्टम्भ    | २२५     | २८    | मिष्टाय    | २२५      | ३२    |
| विभ्रम      | ४५    | ३१    | मिष्टाप     | ३६      | १६    | मिष्टारण   | १६४      | ११२   |
| विभ्राज     | १२४   | १ १   | मिष्टयस     | ४५      | ३१    | मिष्टारह   | २४४      | ९५    |

| शब्द        | पृष्ठ. | श्लोक | शब्द.            | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द         | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|-------|------------------|--------|--------|--------------|--------|--------|
| विशाल       | २०८    | ६०    |                  | { ३१   | ७      | वसत्राद      | ४५     | ३६     |
| विशालता     | १२७    | ११४   | विषय             | { ५९   | ८      | विमर         | १०३    | ३९     |
| विशालत्वच्  | ७१     | २३    |                  | { २२१  | ११     | विमर्जन      | १३७    | २९     |
| विशाला      | ९४     | १५६   | विषयिन्          | { २५४  | १५२    | विसर्पण      | २२४    | २३     |
| विशिख       | १५९    | ८६    | विषयंघ           | ३१     | ८      | वसार         | ५२     | १७     |
| विशिखा      | ६२     | ३     | विषा             | ४८     | ११     | विसारिन्     | २०२    | ३१     |
| विशषक       | १२९    | १२३   | विपा             | ८४     | ९९     | विसृत        | २१२    | ८६     |
| विश्राणन    | १३७    | २९    | विपाक्त          | १६०    | ८८     | विसृत्वर     | २०२    | ३१     |
| विश्राव     | २२५    | २८    | विपाण            | २३७    | ५६     | विसृमर       | २०२    | ३१     |
| विश्रुत     | १९७    | ९     | विपाणी           | ८८     | १३९    | विस्तर       | २२३    | २२     |
|             |        |       | विपुत्र          | २६     | १४     |              |        |        |
| विश्व       | { ७    | १०    | विपुवत्          | २६     | १४     | विस्तार      | { ७०   | १४     |
|             | { १७३  | ३८    | विष्किर          | १०२    | ३३     |              | { २२३  | २२     |
|             | { २०९  | ६५    | विष्कम्भ         | ६५     | १७     | विस्तृत      | २१२    | ८६     |
| विश्वकद्रु  | १९१    | २२    | विष्टप           | ५९     | ६      | विस्फार      | १६३    | १०८    |
| विश्वकर्मन् | २४६    | १०९   | विष्टर           | २५८    | १६९    | विस्फोट      | ११५    | ५३     |
| विश्वद्यच्  | २०३    | ३४    | विष्टशत्रवस्     | ८      | १८     | विस्मय       | ४२     | १९     |
| विश्वमेवज   | १७३    | ३८    | विष्ट            | ४८     | ३      | विस्मयान्वित | २०१    | २६     |
| विश्वभर     | ८      | २२    | विष्टा           | ११८    | ६८     | विस्मृत      | २१२    | ८६     |
| विश्वम्भरा  | ५८     | २     | विष्णु           | ८      | १८     | विस्त्र      | ३२     | १२     |
| विश्वसृज    | ८      | १७    | विष्णुकान्ता     | ८५     | १०४    | विस्त्रम्भ   | { १४७  | २३     |
| विश्वस्ता   | १०६    | ११    | विष्णुगद         | १७     | २      |              | { २५१  | १३५    |
| विश्वा      | ८४     | ९९    | विष्णुपदी        | ५५     | ३१     | विस्त्रमा    | ११२    | ४१     |
| विश्वास     | १४७    | २३    | विष्णुरथ         | १०     | २९     | विहग         | १०३    | ३२     |
| विष्णु      | ११८    | ६८    | विष्य            | २०५    | ४५     | विहग         | १०३    | ३२     |
|             |        |       | विष्कृ           | २७७    | १३     | विहगम        | १०३    | ३२     |
| विष         | { ४८   | ९     | विष्वद्यच्       | २०३    | ३४     | विहसित       | ४५     | ३५     |
|             | { २६६  | २१४   | विष्वक्सन        | ८      | १९     | विहस्त       | २०५    | ४३     |
|             | { २६८  | २२३   | विष्वक्सेना      | ७७     | ५६     | विहापित      | १३७    | २९     |
| विषधर       | ४७     | ७     | विष्वक्सेनप्रिया | ९३     | १५१    |              |        |        |
| विषमच्छद    | ७१     | २३    |                  |        |        |              |        |        |

| शब्द        | पृष्ठ       | श्लोक    | शब्द       | पृष्ठ   | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ    | श्लोक |
|-------------|-------------|----------|------------|---------|-------|-----------|----------|-------|
| विपाद्या    | ५५          | ३३       | विमनसु     | १९७     | ८     | विछीन     | २१६      | १     |
| विपिन       | ६७          | १        | विमर्शन    | २२१     | १३    | विच्छपन   | { १३ १३३ |       |
| विपुल       | २ ८         | ६१       | विमर्षा    | ९२      | १४३   |           | { २२५ २७ |       |
| विप्र       | { १३२ १३२   | २ ४      | विमलायक    | २ ७     | ५५    | विशेषी    | १७५      | ५     |
| विप्रकार    | २२२         | १५       | विमातुल    | १ ९     | २५    | विषय      | २४४      | ९६    |
| विप्रहृत    | २०४         | ४१       | विमान      | १३      | ४८    | विषर      | ४६       | १     |
| विप्रहृत्यक | २ ९         | ६८       | विमत्त     | १७      | ९     | विषण      | १०       | १६    |
| विप्रतीसार  | ४३          | २५       | विमर्शना   | १३      | ४९    | विषय      | २ ५      | ४४    |
| विप्रयोग    | २२५         | २८       | विषम       | २२२     | १८    | विषयत्व   | { २२ २९  |       |
| विप्रकम्प   | २०४         | ४१       | विषात      | २०१     | २५    |           | { २३७ ५७ |       |
| विप्रकम्प   | { ४५ २२५    | ३६ २८    | विषाम      | २२२     | १८    | विषाद     | ३५       | ९     |
|             |             |          | विरजस्तमसु | १४०     | ४४    | विषाह     | १४२      | ५६    |
| विप्रकाप    | ३६          | १६       | विगति      | २२६     | ३७    | विषिक्त   | { १४७ २७ |       |
| विप्रासका   | १ ८         | २०       | विरक्त     | २ ९     | ६१    |           | { २४२ ८२ |       |
| विप्रु      | ५           | ६        | विशज       | १४३     | १     | विषिष     | २१४      | ९३    |
| विप्रव      | २२२         | १४       | विशज       | १८      | २३    | विषेक     | १३९      | ३८    |
| विषेय       | ११७         | ५५       | विशिषि     | ८       | १७    | विष्मोक्त | ४५       | ३१    |
| विशुष       | ७           | ७        | विरूपाक्ष  | १       | २२    | विष्      | १६८      | १     |
| विमय        | १८३         | ९        | विरीचन     | { २२ २४ | ३ ८   | विष्मोक्त | २ ८      | ६     |
| विमाकर      | २२          | २८       |            |         |       | विशद      | ३२       | १२    |
| विम बरी     | २४          | ४        | विरीच      | ४३      | २५    | विशर      | १६४      | ११८   |
| विमावतु     | { १४ २९ २६९ | ५६ २ २२६ | विशजन      | २९३     | २१    | विशल्या   | { ८२ १३६ |       |
|             |             |          | विरीषोक्ति | ३६      | १६    |           | { ९ १३६  |       |
| विभीषक      | ७७          | ५८       | विलस       | २ १     | २६    | विशजन     | १६४      | ११४   |
| विभीषा      | ११          | ३६       | विश्या     | २१८     | २     | विश्या    | १२       | ४     |
| विभूय       | १७४         | १ १      | विश्यात    | ४०      |       | विश्याग   | २१       | २२    |
| विभ्रम      | ४५          | ३१       | विश्या     | २२५     | २८    | विश्या    | २२५      | २२    |
| विभ्रान     | १२४         | १०१      | विश्याप    | ३६      | १६    | विश्याप   | १६४      | ११२   |
|             |             |          | विश्या     | ४५      | २१    | विश्याप   | २४४      | ९५    |

| शब्द        | पृष्ठ | श्लोक | शब्द.          | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द         | पृष्ठ | श्लोक. |
|-------------|-------|-------|----------------|--------|--------|--------------|-------|--------|
| विशाल       | २०८   | ६०    |                | ३१     | ७      | विसवाद       | ४५    | ३६     |
| विशालता     | १२७   | ११४   | विषय           | ५९     | ८      | विमर         | १०३   | ३९     |
| विशालत्वच्  | ७१    | २३    |                | २२१    | ११     | विमर्जन      | १३७   | २९     |
| विशाला      | ९४    | १५६   | विप्रयिन्      | २५४    | १५२    | विसर्पण      | २२४   | २३     |
| विशिख       | १५९   | ८६    | विप्रवैद्य     | ३१     | ८      | वसार         | ५२    | १७     |
| विशिखा      | ६२    | ३     | विषा           | ४८     | ११     | विसारिन्     | २०२   | ३१     |
| विशषक       | १२९   | १२३   | विषाक्त        | ८४     | ९९     | विसृत        | २१२   | ८६     |
| विश्राणन    | १३७   | २९    | विषाण          | १६०    | ८८     | विसृत्वर     | २०२   | ३१     |
| विश्राव     | २२५   | २८    | विषाणी         | २३७    | ५६     | विसृमर       | २०२   | ३१     |
| विश्रुत     | १९७   | ९     | विषाणी         | ८८     | ११९    | विस्तर       | २२३   | २२     |
|             |       |       | विषुव          | २६     | १४     |              |       |        |
| विश्व       | ७     | १०    | विषुवत्        | २६     | १४     | विस्तार      | ७०    | १४     |
|             | १७३   | ३८    | विष्किर        | १०२    | ३३     |              | २२३   | २२     |
|             | २०९   | ६५    | विष्कम्भ       | ६५     | १७     | विस्तृत      | २१२   | ८६     |
| विश्वकद्रु  | १९१   | २२    | विष्टप         | ५९     | ६      | विस्फार      | १६३   | १०८    |
| विश्वकर्मन् | २४६   | १०९   | विष्टर         | २५८    | १६९    | विस्फोट      | ११५   | ५३     |
| विश्वद्यच्  | २०३   | ३४    | विष्टश्रवस्    | ८      | १८     | विस्मय       | ४२    | १९     |
| विश्वमेपज   | १७३   | ३८    | विष्टि         | ४८     | ३      | विस्मयान्वित | २०१   | २६     |
| विश्वभर     | ८     | २२    | विष्टा         | ११८    | ६८     | विस्मृत      | २१२   | ८६     |
| विश्वभरा    | ५८    | २     | विष्णु         | ८      | १८     | विस्त्र      | ३२    | १२     |
| विश्वसृज्   | ८     | १७    | विष्णुकान्ता   | ८५     | १०४    | विस्त्रम्भ   | १४७   | २३     |
| विश्वस्ता   | १०६   | ११    | विष्णुगद       | १७     | २      |              | २५१   | १३५    |
| विश्वा      | ८४    | ९९    | विष्णुपदी      | ५५     | ३१     | वित्तमा      | ११२   | ४१     |
| विश्वास     | १४७   | २३    | विष्णुरथ       | १०     | २९     | विहग         | १०३   | ३२     |
| विष्        | ११८   | ६८    | विष्य          | २०५    | ४५     | विहग         | १०३   | ३२     |
|             |       |       | विष्कृ         | २७७    | १३     | विहगम        | १०३   | ३२     |
| विप         | ४८    | ९     | विष्कृच्च      | २०३    | ३४     | विहगिका      | १९२   | २९     |
|             | २६६   | २१४   | विष्वक्सेन     | ८      | १९     | विहसित       | ४५    | ३५     |
|             | २६८   | २२३   | विष्वक्सेना    | ७७     | ५६     | विहस्त       | २०५   | ४३     |
| विपधर       | ४७    | ७     | विष्वक्सेनमिया | ९३     | १५१    | विहापित      | १३७   | २९     |
| विपमच्छद    | ७१    | २३    |                |        |        |              |       |        |



| शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.           | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|-----------------|--------|--------|--------------|--------|--------|
| वृष        | २२     | २७     | वैत्रवती        | ५६     | ३४     | वैकुण्ठ      | ८      | १८     |
|            | २८     | २४     | वेद             | ३३     | ३      | वैजयन्त      | ११२    | ३९     |
|            | ८५     | १०३    | वेदना           | २१९    | ६      | वैजयन्तिक    | १३     | ४६     |
|            | ८७     | ११६    | वेदि            | १३५    | १८     | वैजयन्तिका   | १५६    | ७१     |
|            | १७७    | ५९     | वेदिका          | ६४     | १६     | वैजयन्तिका   | ७९     | ६५     |
|            | २६८    | २२०    | वेध             | २२०    | ८      | वैजयन्ती     | १६२    | ९९     |
| वृषण       | १२०    | ७६     | वेधनिका         | १९३    | ३३     | वैज्ञानिक    | १९६    | ४      |
| वृषदशक     | ९७     | ६      | वेधमुख्यक       | ९०     | १४५    | वैणव         | ७०     | १८     |
| वृषध्वज    | १०     | ३४     | वेधस्           | ८      | १७     | वैणविक       | १८९    | १३     |
| वृषभ       | १७७    | ५९     | वेधित           | २६९    | २२८    | वैणिक        | १८९    | १३     |
| वृषल       | १८७    | १      | वेपथु           | २१६    | ९९     | वैणुक        | १५०    | ४१     |
| वृषस्यन्ती | १०६    | ९      | वेमन्           | ४६     | ३८     | वैतसिक       | १८९    | १४     |
| वृषा       | १२     | ४२     | वेमन्           | १९२    | २८     | वैतानिक      | १८९    | १५     |
|            | ८२     | ८७     | वेला            | २६३    | १९८    | वैतरणी       | ४८     | २      |
| वृषाकपायी  | २५५    | १५६    | वेल्            | ८५     | १०६    | वैतालिक      | १६१    | ९७     |
| वृषाकपि    | २५०    | १३०    | वेल्ज           | १७२    | ३५     | वैदेहक       | १८७    | ३      |
| वृष्टि     | १९     | ११     | वेल्लित         | २१०    | ७१     | वैदेही       | १८०    | ७८     |
| वृष्णि     | १८०    | ७६     | वैश             | २१२    | ८७     | वैद्य        | ८४     | ९६     |
| वेग        | २३१    | २०     | वैशन्त          | ६१     | २      | वैद्य        | ११६    | ५७     |
| वेगिन्     | १५६    | ७३     | वैश्मन्         | ५४     | २८     | वैद्यमातृ    | ८५     | १०३    |
| वेणि       | १२४    | ९८     | वैश्या          | ६२     | ४      | वैधात्र      | १३     | ५१     |
| वेणी       | ७९     | ६९     | वैश्याजनसमाश्रय | १०८    | १९     | वैधेय        | २०६    | ४८     |
| वेणु       | ९५     | १६१    | वेप             | १२४    | ९९     | वैनतेय       | १०     | २९     |
| वेणुक      | १५०    | ४१     | वेपवार          | १७२    | ३५     | वैनतिक       | १५४    | ५८     |
| वेणुधम     | १८९    | १३     | वेष्टित         | २१३    | ९०     | वैमात्रेय    | १०९    | २५     |
| वैतन       | १९४    | ३८     | वेहत्           | १७९    | ६९     | वैयाघ्र      | १५३    | ५३     |
| वैतस       | ७२     | २९     | वै              | २७६    | ५      | वैर          | ४३     | २५     |
| वैतस्वत्   | ५९     | ९      | वै              | २७८    | १५     | वैरनिर्यातिन | १६३    | ११०    |
| वैताल      | २९०    | २१     | वैकक्षिक        | १३१    | १३६    | वैरशुद्धि    | १६३    | ११०    |
|            |        |        |                 |        |        | वैरिन्       | १४५    | १०     |



| शब्द      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द         | पृष्ठ | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ | श्लोक |
|-----------|-------|-------|--------------|-------|-------|-----------|-------|-------|
| बैभर्षिक  | १९    | १५    | व्यसन        | २४८   | १२    | व्याहार   | ३३    | १     |
| वैवस्वत   | १४    | ५९    | व्यसनात्     | २५    | ४३    | व्युत्थान | २४८   | ११८   |
| वैद्यात्  | { २६  | १६    | व्यस्त       | २१    | ७२    | व्युष्टि  | २३४   | ३८    |
|           | { १८  | ७४    | व्याकुल      | २५    | ४३    | व्युद्ध   | २३५   | ४५    |
| वैस्व     | १६५   | १     | व्याकोश      | ६८    | ७     | व्युदकटक  | १५५   | ६७    |
| वैभरण     | १६    | ६९    | व्याम        | { ९७  | १     | व्युत्ति  | १९२   | २८    |
| वैश्वानर  | १४    | ५३    |              | { २८  | ५९    |           | { १३  | ३९    |
| वैष्णवी   | ११    | ३५    | व्यामनस      | ८९    | १२९   | व्युह     | { १५७ | ७     |
| वैश्वरिण  | ५२    | १७    | व्यामपाद्    | ७४    | ३७    |           | { २७१ | २३८   |
| वैषट्     | २७६   | ८     | व्यामपुच्छ   | ७६    | ५     | व्युहपाणि | १५८   | ७९    |
| व्यस      | २३८   | ३२    | व्यामाट      | ९९    | १५    | व्योकार   | १८८   | ७     |
| व्यक्ति   | २     | ३१    | व्यामी       | ८३    | ९३    | व्योमकश   | १     | ३४    |
| व्यग्र    | २३२   | १९    | व्याम        | { ४४  | ३     | व्योमन्   | १७    | १     |
| व्यग्रा   | २५९   | १७७   |              | { ४५  | ३३    | व्योमयान  | १३    | ४८    |
| व्यसन     | १३२   | १४    | व्याम        | २३५   | ४२    | व्योष     | १८६   | १११   |
| व्यञ्जक   | ४२    | १६    | व्यामालुष    | ८९    | १२९   | व्यम      | { १३  | ३९    |
|           | { २४८ | ११६   | व्याष        | १९    | २१    |           | { २३३ | ३     |
| व्यञ्जन   | { २९१ | २३    |              | { ८९  | १२६   | व्याया    | { १३८ | ३७    |
|           | { ७६  | ५३    | व्याधि       | { ११५ | ५३    |           | { १६१ | ९५    |
| व्यङ्ग्यक | ७६    | ५३    |              |       |       | व्यम      | ११५   | ५४    |
| व्यात्मय  | २२६   | ३३    | व्याधिष्यत्  | ७१    | २४    | व्यमकाय   | २६२   | १८    |
| व्यात्मय  | २२६   | ३३    | व्यानेत      | ११६   | ७८    | व्यम      | १३९   | ३७    |
| व्यथा     | ४९    | ३     | व्यान        | १७    | ६३    | व्यमति    | { ६८  |       |
| व्यथ      | २२    | ८     | व्यापाह      | ३     | ४     |           | { २९९ | ६७    |
| व्यथ      | ६४    | १६    | व्याप्य      | ८९    | १२६   | व्यतिन्   | १३३   | ७     |
| व्यय      | २२    | १७    | व्याम        | १२९   | ८७    | व्यमन     | १९३   | ३२    |
| यसीक      | २२    | १२    | याक          | { ४७  | ७     | व्यात     | १३    | ३९    |
| यस्यपा    | १     | १२    |              | { २६३ | १३    | व्याय     | १४२   | ५३    |
| व्यवस्थाप | २६६   | २१३   | व्यवस्थादिन् | ४८    | ११    | व्रीडा    | ४३    | ९३    |
| व्यवहार   | ३४    |       | व्यावृत्त    | २३४   | ९     | व्रीदि    | { १६८ | १५    |
| यशाय      | १४२   | ५७    | व्यावृत्त    | २३३   | २२    |           | { १६९ | २१    |

| शब्द.    | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक.  | शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक.  |
|----------|--------|--------|--------------|--------|---------|-----------|--------|---------|
| शाखिक    | १८८    | ८      | शाल          | {      | ५३ १९   | शिखर      | {      | ६६ ४    |
| शाटक     | २९५    | ३३     |              |        | ६८ ५    |           | {      | ६९ १२   |
| शाटी     | २९७    | ३८     |              |        | ६९ ११   | शिखरिन्   | {      | ६५ १    |
| शाट्य    | ४४     | ३०     | शालपर्णी     |        | ८७ ११५  |           | {      | २४६ १०६ |
| शाण      | १९३    | ३२     | शाला         | {      | ६२ ६    | शिखा      | {      | १४ ५७   |
| शाणी     | २८४    | ९      |              |        | ६९ ११   |           |        | १०२ ३१  |
| शांडिल्य | ७३     | ३२     | शालावृक्ष    |        | २३९ १२  |           |        | १२४ ९७  |
| शात      | {      | २८ २५  | शालि         |        | १७० २४  |           |        | २३१ १९  |
|          | {      | २१४ ९१ | शालीन        |        | २०१ २६  | शिखावत्   |        | २४ ५५   |
| शातकुम्भ | १८३    | ९४     | शालूक        |        | ५६ ३८   | शिखावल    |        | १०२ ३०  |
| शात्रव   | १४५    | ११     | शालर         |        | ५४ २४   | शिखिग्रीव |        | १८५ १०१ |
| शाद      | {      | ५० ९   | शालेय        | {      | ८५ १०५  | शिखिन्    | {      | १०२ ३०  |
|          | {      | २४३ ९० |              |        | १६६ ६   |           | {      | २४६ १०६ |
| शादहरित  | ६०     | १०     | शात्मलि      |        | ७५ ४६   | शिखिवाहन  |        | १२ ४०   |
| शाद्वल   | ६०     | १०     | शात्मलीवेष्ट |        | ७५ ४७   | शिग्रु    | {      | ७३ ३१   |
| शान्त    | २१५    | ९७     | शावक         |        | १०३ ३८  |           | {      | १७२ ३४  |
| शान्ति   | २१९    | ३      | शावर         |        | ७३ ३३   | शिग्रुज   |        | १८६ ११० |
|          | ७३     | ३३     | शाश्वत       |        | २१० ७२  | शिजित     |        | ३८ २४   |
|          | १८९    | ११     | शाष्कुलिक    |        | २४७ ४०  | शिजिनी    |        | १५९ ८५  |
|          | २५८    | १६६    | शासन         |        | १४७ २५  | शितशूक    |        | १६८ १९  |
| {        | {      | ७१ २३  | शास्तृ       |        | ८ १४    | शिति      |        | २४२ ८३  |
|          |        | २४४ ९५ | शास्त्र      |        | २६० १७९ | शितिकण्ठ  |        | १० ३२   |
|          | ८६     | १११    | शास्त्रविद्  |        | १९७ ६   | शितिसारक  |        | ७४ ३८   |
| ४        | १९५    | ४६     | गिक्य        |        | १९२ ३०  | शिपिविष्ट |        | २३३ ३४  |
|          | ८६     | ११२    | शिक्यित      |        | २१३ ८९  | शिफा      |        | ६९ ११   |
|          | ६०     | ११     | शिक्षा       |        | ३४ ४    | शिफाकन्द  |        | ५७ ४३   |
| ५        | ८      | १९     | शिक्षित      |        | १९६ ४   | शिविका    |        | १५३ ५३  |
| {        | {      | ९७ ५९  | शिखण्ड       |        | १०२ ३१  | शिविर     |        | १४९ ३३  |
|          |        | २०८ ५९ | शिखण्डक      |        | १२३ ९६  | शिम्व     |        | १७० २३  |
|          | २६२    | १८८    |              |        |         | शिरस्     |        | १२३ ९५  |

| शब्द.    | पृष्ठ.    | श्लोक.    | शब्द. | पृष्ठ.    | श्लोक.    | शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------|-----------|-----------|-------|-----------|-----------|-----------|--------|--------|
| शमी      | { ७१ ५२   |           |       | { २७ १९   | शान       | ११५ ११८   |        |        |
|          | { १७ २३   | शरत्      |       | { २७ २०   | शश        | ९८ ११     |        |        |
| शमीनाम्प | १७० २४    |           |       | { २४४ ९३  | शशधर      | २० १५     |        |        |
| शमीर     | ७१ ५२     | शरम       |       | ९८ ११     | शशभोमन्   | १८६ १०७   |        |        |
| शम्पा    | १९ ९      | शरष्य     |       | १५९ ८६    | शशादन     | ९९ १४     |        |        |
| शम्पाक   | ७१ २३     | शराम्पाध  |       | १५९ ८६    | शशोनी     | १८६ १७    |        |        |
| शम्प     | १३ ४७     | शरारि     |       | १ १ २५    |           |           |        |        |
| शम्बर    | { ४९ ४    | शराव      |       | २ १ २८    | शम्बर     | { २७२ २४३ |        |        |
|          | { ९८ १    | शराव      |       | १७२ ३२    |           | { २७५ १   |        |        |
| शम्बरारि | ९ २६      | शरावती    |       | ५६ ३४     | शष्य      | १ १६ ११७  |        |        |
| शम्बरी   | ८२ ८७     | शरासम     |       | १५९ ८६    |           | { २८ २६   |        |        |
| शम्बक    | २९५ ३४    | शरीर      |       | ११९ ७     |           | { २१७ १ ९ |        |        |
| शम्बाकृत | १६७       | शरीरिन्   |       | २९ ३      |           | { १५८ ८२  |        |        |
| शम्बूक   | ५३ २३     |           |       |           |           | { २६ २७९, |        |        |
| शम्भनी   | १ ८ १९    | शर्करा    |       | { १७४ ४३  | शान       | १८४ ९८    |        |        |
|          |           |           |       | { २५९ १७५ | शम्भमार्ज | १८८ ७     |        |        |
| शम्भु    | { १ ३     | शर्करावत् |       | ३ ११      | शम्भानीय  | १५५ ६७    |        |        |
|          | { २५१ ११५ | शर्करिक   |       | ३ ११      | शमी       | १६ ९२     |        |        |
| शम्पा    | १६८ १४    | शर्मन्    |       | २८ २५     |           |           |        |        |
| शव       | १२१ ८१    | शर्व      |       | १ ३       | शाक       | { ९ ११६   |        |        |
| शवन      | { ४३ ३३   | शर्वरी    |       | २४ ३      |           | { १७२ ३४  |        |        |
|          | { १३१ १३८ | शर्वाणी   |       | ११ १७     | शाकट      | १७७ ६४    |        |        |
| शवनीय    | १३१ १३७   | शक        |       | ९८ ७      | शाकुनिक   | १८ १४     |        |        |
| शवाह     | २ २ ३३    | शकम       |       | १ २ २८    | शाकीक     | १५३ ६९    |        |        |
| शवित     | २ २ ३३    | शकस       |       | ९८ ७      | शाक्यमुनि | ८ १४      |        |        |
| शमु      | ४७ ५      | शकनी      |       | ९८ ७      | शाक्यसिंह | ८ १५      |        |        |
| शम्पा    | १३१ १३७   | शकट       |       | ७ १५      | शाका      | ६९ ११     |        |        |
| शर       | { ५५ १३२  | शस्क      |       | २३० १३    | शाकानगर   | ६१ २      |        |        |
|          | { १५९ ८७  |           |       | { ७३ ५३   | शाकामग    | ९७ ३      |        |        |
| शरकमन्   | १२ ३९     | शस्य      |       | { ९७ ७    | शाकाधिका  | ६९ ११     |        |        |
| शरण      | २३३ ५३    |           |       | { १३ १३   | शासिन्    | ६८ ५      |        |        |

| शब्द.      | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|--------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| शांखिक     | १८८    | ८      | शाल          | { ५३   | १९     | शिखर      | { ६६   | ४      |
| शाटक       | २९५    | ३३     |              | { ६८   | ५      |           | { ६९   | १२     |
| शाटी       | २९७    | ३८     |              | { ६९   | ११     | शिखरिन्   | { ६५   | १      |
| शाटय       | ४४     | ३०     | शालपर्णी     | ८७     | ११५    |           | { २४६  | १०६    |
| शाण        | १९३    | ३२     | शाला         | { ६२   | ६      | शिखा      | { १४   | ५७     |
| शाणी       | २८४    | ९      |              | { ६९   | ११     |           | { १०२  | ३१     |
| शाडिल्य    | ७३     | ३२     | शालावृक      | २३९    | १२     |           | { १२४  | ९७     |
| शात        | { २८   | २५     | शालि         | १७०    | २४     |           | { २३१  | १९     |
|            | { २१४  | ९१     | शालीन        | २०१    | २६     | शिखावत्   | २४     | ५५     |
| शातकुम्भ   | १८३    | ९४     | शालूक        | ५६     | ३८     | शिखावल    | १०२    | ३०     |
| शात्रव     | १४५    | ११     | शालूर        | ५४     | २४     | शिखिग्रीव | १८५    | १०१    |
| शाद        | { ५०   | ९      | शालेय        | { ८५   | १०५    | शिखिन्    | { १०२  | ३०     |
|            | { २४३  | ९०     |              | { १६६  | ६      |           | { २४६  | १०६    |
| शादहरित    | ६०     | १०     | शात्मलि      | ७५     | ४६     | शिखिवाहन  | १२     | ४०     |
| शाद्वल     | ६०     | १०     | शात्मलीवेष्ट | ७५     | ४७     | शिथु      | { ७३   | ३१     |
| शान्त      | २१५    | ९७     | शावक         | १०३    | ३८     |           | { १७२  | ३४     |
| शान्ति     | २१९    | ३      | शावर         | ७३     | ३३     | शिथुज     | १८६    | ११०    |
| शावर       | ७३     | ३३     | शाश्वत       | २१०    | ७२     | शित       | ३८     | २४     |
| शावरी      | १८९    | ११     | शाष्कुलिक    | २४७    | ४०     | शिजिनी    | १५९    | ८५     |
| शार        | २५८    | १६६    | शासन         | १४७    | २५     | शितशूक    | १६८    | १९     |
| शारद       | { ७१   | २३     | शास्तृ       | ८      | १४     | शिति      | २४२    | ८३     |
|            | { २४४  | ९५     | शास्त्र      | २६०    | १७९    | शितिकण्ठ  | १०     | ३२     |
| शारदी      | ८६     | १११    | शास्त्रविद्  | १९७    | ६      | शितिसारक  | ७४     | ३८     |
| शारिफल     | १९५    | ४६     | शिक्ष्य      | १९२    | ३०     | शिपिविष्ट | २३३    | ३४     |
| शारिवा     | ८६     | ११२    | शिक्षित      | २१३    | ८९     | शिफा      | ६९     | ११     |
| शार्कर     | ६०     | ११     | शिक्षा       | ३४     | ४      | शिफाकन्द  | ५७     | ४३     |
| शार्ङ्गिन् | ८      | १९     | शिक्षित      | १९६    | ४      | शिविका    | १५३    | ५३     |
| शार्दूल    | { ९७   | ०      | शिक्षण       | १०२    | ३१     | शिविर     | १४९    | ३३     |
|            | { २०८  | ५९     | शिक्षण्ड     | १२३    | ९६     | शिव्वा    | १७०    | २३     |
| शार्वर     | २६२    | १८८    | शिक्षण्डक    | १२३    | ९६     | शिरस्     | १२३    | ९५     |

| शब्द     | पृष्ठ | श्लोक | शब्द     | पृष्ठ | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ | श्लोक |
|----------|-------|-------|----------|-------|-------|------------|-------|-------|
| शिरस्त्र | १५५   | ६४    | शिष्ट    | १ ३   | ३८    | शुक्र      | { ९   | ११२   |
| शिरस्त्र | १२४   | ९८    | श्लोक    | ५२    | ३८    | { १        | २१    |       |
| शिरा     | ११८   | ६५    | श्लोक    | ११२   | ४     | शुक्रनाश   | ७७    | ५७    |
| शिरीष    | ७८    | ६३    | शिशुमार  | ५३    | २     | शुक्र      | २४२   | ८१    |
| शिरोम    | ६९    | १२    | शिरा     | १२    | ७६    | शुक्र      | { ५३  | २१    |
| शिरोप    | १२२   | ८८    | शिशिरान  | २ ५   | ४६    | शुक्र      | { ८९  | १३    |
| शिरोरत्न | १२५   | १ २   | शिरी     | १४७   | २६    | { १४       | ५६    |       |
| शिरोरुह  | १२३   | ७५    | शिष्य    | १३४   | ११    | शुक्र      | { २२  | २५    |
| शिर      | १३३   | २     | शीकर     | १९    | ११    | { २६       | १६    |       |
| शिखा     | { ६४  | १३    | शील      | १७    | ३४    | { ११७      | ६२    |       |
| { ६६     | ४     |       |          |       |       | शुक्र      | २६८   | २२    |
| शिक्षण   | १८५   | १ ४   | शीत      | { २   | १९    | शुक्रशिष्य | ७     | १२    |
| शिखी     | ५४    | २४    | { २      | १९    |       | { २६       | १२    |       |
| शिखीमुख  | २३०   | १८    | { ७२     | ३     | शुक्र | { ३२       | १२    |       |
| शिक्षण   | ६५    | १     | { ७३     | ३४    | शुक्र | { ४३       | २५    |       |
| शिर      | १९३   | ३५    | { २९१    | २२    | शुक्र | { १४       | ५६    |       |
| शिरि     | १८७   | ५     | शीतक     | १९    | १८    | { २६       | १६    |       |
| शिरि     | ६३    | ७     | शीतमीक   | ७९    | ७     | { ३२       | १२    |       |
| शिर      | { १   | ३     | शीतल     | { २   | १९    | { ४३       | १७    |       |
| { २८     | २५    |       | { ९३     | १४९   |       | { २३२      | २८    |       |
| शिरक     | १७९   | ७३    | शीतशिर   | { ८५  | १ ५   | शीत        | १७३   | ३८    |
| शिरमाली  | ८१    | ८२    | { ८८     | १२२   |       | शीतपत्र    | १९४   | ४     |
|          |       |       | { १७३    | ४२    |       | शीतजि      | ५५    | ३३    |
|          |       |       | शीतु     | २९५   | ३४    | शीतल       | { ६३  | १२    |
|          |       |       | शीर्ष    | १२३   | ९५    | { २३९      | ६६    |       |
|          |       |       | शीर्षक   | १५५   | ६३    | शुक्र      | १९१   | २२    |
|          |       |       | शीर्षकोप | २ ५   | ४५    | शुक्रासीर  | १२    | ४१    |
|          |       |       | शीर्षज्य | { १२४ | ९८    | शुनी       | १९१   | २२    |
|          |       |       | { १५५    | ६४    |       | { २८       | २५    |       |
| शिरि     | { १   | १९    | शी       | { ४४  | २६    | शुम        | { १८  | ७६    |
| { २७     | १८    |       | { २६४    | २ १   |       | { २४६      | २१    |       |

| शब्द.      | पृष्ठ.    | श्लोक.   | शब्द.     | पृष्ठ.    | श्लोक.    | शब्द.     | पृष्ठ.   | श्लोक. |
|------------|-----------|----------|-----------|-----------|-----------|-----------|----------|--------|
| शुभयु      | २०६       | ५०       | शृङ्खल    | { १२६ १०९ | शैवल      | ५६        | ३८       |        |
| शुभान्वित  | २०६       | ५०       |           | { १५१ ४१  | शैवलिनी   | ५५        | ३०       |        |
| शुभ्र      | { ३२ १२   | शृङ्खलक  | १८०       | ७५        | शैशव      | ११२       | ४०       |        |
|            | { २६२ १९२ |          | { ६६ ४    | शोक       | ४३        | २५        |          |        |
| शुभदन्ती   | १८        | ५        | शङ्ख      | { ९१ १४२  | शोचिष्केश | १४        | ५४       |        |
| शुभ्राशु   | १९        | १४       |           | { २३२ २६  | शाचिस्    | २३        | ३४       |        |
| शुल्क      | १४८       | २७       | शृङ्गवेर  | १७३       | ३७        | शोण       | { ३२ १५  |        |
|            | { १८४ ९७  | शृङ्गाटक | ६१        | १७        |           | { ५५ ३४   |          |        |
| शुल्ब      | { १९१ २७  | शृङ्गार  | ४२        | १७        | शोणक      | ७७        | ५७       |        |
|            | { २९१ २३  | शृङ्गिणी | १७८       | ६६        | शोणरत्न   | १८३       | ९२       |        |
| शुश्रूषा   | १३८       | ३५       |           | { ५४ २५   | शोणित     | ११७       | ६४       |        |
| शुषि       | ४६        | २        | शृङ्गी    | { ८४ १००  | शोथ       | ११५       | ५२       |        |
| शुष्कमांस  | ११७       | ६३       |           | { ८७ १३६  | शोथघ्नी   | ९२        | १४९      |        |
| शुष्म      | १६२       | १०२      | शृङ्गीकनक | १८४       | ९६        | शोघनी     | ६५       | १८     |
| शुष्मन्    | १४        | ५४       | शृत       | २१४       | ९५        | शोधित     | { १७४ ४६ |        |
| शूक        | १७०       | २३       | शेखर      | १३१       | १३६       |           | { २०७ ५६ |        |
| शूककीट     | ९९        | १४       | शेफस्     | १२०       | ७६        | शोफ       | ११५      | ५२     |
| शूकधान्य   | १७०       | २४       | शेफालिका  | { ७९ ७०   | शोभन      | २०६       | ५२       |        |
| शूकर       | ९७        | २        |           | { २८३ ७   | शोभा      | २०        | १७       |        |
| शूकाशेम्भि | ८२        | ८७       | शेमुषी    | २९        | १         | शोभांजन   | ७३       | ३१     |
| शूद्र      | १८७       | १        | शेलु      | ७२        | ३४        | शाष       | ११५      | ५१     |
| शूद्रा     | १०७       | १३       | शेवधि     | १७        | ७१        | शौक       | १०४      | ४३     |
| शूद्री     | १०७       | १३       | शेवाल     | ५६        | ३८        | शौलिकेय   | ४८       | १०     |
| शून्य      | २०७       | ५६       | शेष       | ४७        | ४         | शौक्य     | ११२      | ४१     |
| शूर        | १५७       | ७७       | शैक्ष     | १३४       | ११        | शौड       | २००      | २३     |
| शूर्प      | १७०       | २६       | शैखारिक   | ८२        | ८८        | शौडिक     | १८९      | १०     |
| शूल        | २६३       | १९७      | शैल       | ६५        | १         | शौडी      | ८४       | ९७     |
| शूलाकृत    | १७४       | ४५       | शैलालिन्  | १८९       | १२        | शौद्धोदनि | ८        | १५     |
| शूलिन्     | १०        | ३०       |           | { ७३ ३२   | शौरि      | ८         | २१       |        |
| शूल्य      | १७४       | ४५       | शैलूष     | { १८९ १२  | शौर्य     | १६२       | १०२      |        |
| शूगाल      | ९७        | ५        | शैलेय     | ८९        | १२३       | शौस्विक   | १८८      | ८      |

| शब्द.     | पृष्ठ   | श्लोक    | शब्द.     | पृष्ठ    | श्लोक    | शब्द.    | पृष्ठ.   | श्लोक   |
|-----------|---------|----------|-----------|----------|----------|----------|----------|---------|
| शोषुल     | १९९     | १९       | भीकण्ड    | १        | १२       | भेड      | २७       | ५८      |
| श्योत     | २२१     | १        | भीषन      | ८        | १४       | भीषण     | ११४      | ४८१     |
| शमगान     | १४५     | ११८      | भीद       | १६       | ६९       | भीषि     | ११९      | ७४      |
| शमभु      | १२४     | ९९       | भीषति     | ८        | २१       | भीषिकक   | ११९      | ७४      |
| श्याम     | { ३२ १४ | { १४ १४  | भीषर्ण    | { ७९ ४६  | { २३३ ५३ | भीष      | १२३      | ९४      |
| श्यामक    | ३२      | १४       | भीषर्णिङा | ७४       | ४        | भीषट्    | २७६      | ८       |
| श्यामा    | { ७७ ८६ | { ८७ ११२ | भीषर्षी   | ७४       | ३६       | भक्ष्य   | २०८      | ६१      |
| श्याल     | ११२     | ३२       | भीषल      | ७३       | ३२       | भक्ष्य   | २२१      | ११      |
| श्याष     | ३३      | १६       | भीषली     | ८३       | ९५       | भक्ष्यन् | ११७      | ६९      |
| श्वेत     | ३२      | १२       | भीमत्     | ११९      | १४       | भक्ष्यक  | ११७      | ६       |
| श्वेन     | ९       | १५       | भीमत्     | ७४       | ४        | भक्ष्यक  | ७३       | १४      |
| श्वेनगाढा | २८३     | ६        | भीम       | ११८      | १४       | भक्ष्यक  | २२८      | २       |
| भद्रा     | २४५     | १२       | भीमसंज्ञन | ८        | २२       | भक्ष्यक  | २८       | २७      |
| भद्रालु   | { १ २   | { २१ २७  | भीमा      | १२९      | १२९      | भक्ष्यक  | ८४       | ९८      |
| भय        | २२१     | १२       | भीमेट     | १२९      | १२९      | भक्ष्यक  | १९१      | १२      |
| भय        | १२३     | ९४       | भीमल      | १२९      | १२५      | भक्ष्यक  | २९७      | ४       |
| भय        | १२३     | ९४       | भीमिनी    | ७९       | ६९       | भक्ष्यक  | १९०      | २       |
| भयि       | २१      | २२       | भय        | २४१      | ७७       | भक्ष्यक  | { ४६ २९० | { २ २२  |
| भय        | १७      | ७        | भयि       | { ३३ १२३ | { १४० ७३ | भक्ष्यक  | { २९ ११५ | { २२ ५२ |
| भय        | १३७     | ३१       | भयि       | ६७       | ४        | भक्ष्यक  | ११५      | २       |
| भयदेव     | १४      | ५        | भयि       | { ६७ १८८ | { ५ ५    | भक्ष्यक  | ११०      | ११      |
| भय        | २२१     | १२       | भयि       | २८       | २४       | भक्ष्यक  | ११२      | १७      |
| भय        | १७      | १६       | भयि       | ३१       | ६५       | भक्ष्यक  | २५३      | १४६     |
| भय        | ७७      | १६       | भयि       | { २ ७७   | { ७८ ५   | भक्ष्यक  | ११२      | १७      |
| भय        | ७७      | १६       | भयि       | { ७७ ८९  | { ७८ ७७  | भक्ष्यक  | { १५ ७६  | { ११ ५२ |

| शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक.         | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक.     | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|----------------|-------|--------|------------|-------|--------|--------|
| श्वाविध्    | ९७     | ७ सराव         | ३८    | २३     | सस्ताव     | २२६   | ३४     |        |
| श्विन       | ११५    | ५४ संलाप       | ३६    | १६     | सस्त्याय   | २५४   | १५१    |        |
| श्वेत       | ३२     | १२ सवत्        | २७८   | १६     | सस्त्या    | १४७   | २६     |        |
|             | १८४    | ९६ संव         | २७    | २०     | सस्थान     | २४९   | १२४    |        |
|             | २४१    | ७९ संवनन       | २१९   | ४      | सस्थित     | १६४   | ११७    |        |
| श्वेतगस्त   | १०१    | २३ सवर्त       | २८    | २२     | संस्पर्शा  | ९३    | १५४    |        |
| श्वेतमरिच   | १८६    | ११० सवर्तिका   | ५७    | ४३     | सस्फोट     | १६२   | १०५    |        |
| श्वेतरक्त   | ३२     | १५ संवसथ       | ६५    | १९     | सहत्       | २१०   | ७५     |        |
| श्वेतसुरसा  | ७९     | ७१ संवाहन      | २२३   | २२     | सहत्तजानुक | ११४   | ४७     |        |
| ष           |        |                | २९    | १      | सहत्तल     | १२१   | ८५     |        |
| षट्कर्मन्   | १३२    | ४ सोवद्        | ३०    | ५      | सहति       | १०३   | ४०     |        |
| षट्पद       | १०२    | २९             | २४३   | १२     | सहनन       | ११९   | ७०     |        |
| षडभिज्ञ     | ८      | १४ सवीक्षण     | २२५   | ३०     | सहार       | ४८    | २      |        |
| पढानन       | १२     | ३९ संवीत       | २१३   | ९०     | सहूति      | ३५    | ८      |        |
| पडग्रन्थ    | ७६     | ४८ सवेग        | ४५    | ३४     | सकल        | २०९   | ६५     |        |
| पडग्रन्था   | ८४     | १०२ सवेद       | २१९   | ६      | सकृत्      | २७२   | २४२    |        |
| पडग्रन्थिका | ९३     | १५४ सवेश       | ४६    | ३६     | सकृत्पत्र  | १००   | २०     |        |
| षड्ज        | ३८     | १ सव्यान       | १२८   | ११८    | सक्तुफला   | ७६    | ५२     |        |
| षण्ड        | १७७    | ६२ संशतक       | १६१   | ९८     | सक्थि      | ११९   | ७३     |        |
| षण्ड        | ११२    | ३९ सशय         | ३०    | ३      | सखि        | १४५   | १२     |        |
|             | १४४    | ९ सशयापन्नमानस | १९७   | ५      | सखी        | १०७   | १२     |        |
|             |        | ९ सश्रव        | ३०    | ५      | सख्य       | १४५   | १२     |        |
| षष्टिक      | १७०    | २४ सश्रुत      | २१७   | १०९    | सगन्ध      | १११   | ३४     |        |
| षष्टिक्य    | १६६    | ७ सश्लेष       | २२५   | ३०     | सगोत्र     | १११   | ३४     |        |
| षाण्मातुर   | १२     | ४० संसक्त      | २०९   | ६८     | सग्धि      | १७६   | ५५     |        |
| स           |        |                | १३४   | १५     | सकट        | २१२   | ८५     |        |
| सयत्        | १६२    | १०६ ससर्ग      | ६१    | १८     | सकर        | ६५    | १८     |        |
| सयत         | २०४    | ४२ ससिद्धि     | ४६    | ३७     | सकर्षण     | ९     | २४     |        |
| सयम         | २२२    | १८ सस्कृत      | २४१   | ८१     | सकलित      | २२४   | ९३     |        |
| सयाम        | २२२    | १८ सस्तर       | २५७   | १६१    | सकल्प      | ३०    | २      |        |
| संयुग       | १६२    | १०५ सस्तव      | २२३   | २३     | सकलुक      | २०५   | ४३     |        |
| सयोजित      | २१४    |                |       |        |            |       |        |        |



| शब्द      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द     | पृष्ठ | श्लोक |
|-----------|-------|-------|-----------|-------|-------|----------|-------|-------|
| संकाय     | १९४   | ३७    | सम्पन्ना  | १५१   | ४२    | सहन      | ६२    | ५     |
| संकीर्ण   | १९६   | १     | संचय      | १३    | ३९    | सहस्र    | १३४   | १५    |
|           | २१२   | ८५    | संचारिका  | १८    | १७    | सहस्र    | १३५   | १६    |
|           | २३७   | ५७    | संयवन     | ३२    | ३     | सहा      | २८    | २२    |
| संकुल     | ३७    | १९    | सम्बर     | १४    | ५७    | सदागति   | १५    | ६१    |
|           | २१२   | ८५    | संयुक्त   | १५४   | ११३   | सद्यः    | २१    | ७२    |
| संकोच     | १२९   | १२४   | संज्ञा    | २३३   | ३३    | सदानीय   | ५५    | ३३    |
| संक्रमण   | १२    | ४४    | संज्ञ     | ११४   | ४७    | सदक      | १९३   | ३६    |
| संक्रम    | २२४   | २५    | सद्य      | १२४   | ५७    | सदस्य    | १९३   | ३६    |
| संक्षेप   | २२३   | २१    | संज्ञीन   | १३    | ३७    | सदस्य    | १९३   | ३६    |
| संक्षय    | १६२   | १४    | सद्य      | १३३   | ५     | सदस्य    | २९    | ६७    |
| संक्षया   | ३     | २     | सद्य      | २४२   | ८३    | सद्यः    | ३२    | ४     |
| संक्षयाव  | २८    | ३४    | सद्यः     | १६    | ६५    | सद्यः    | २७७   | ९     |
| संक्षयवत् | १३३   | ५     | सद्यः     | १५    | ३     | सद्यः    | २१    | २     |
| संक्षय    | २२५   | २९    | सद्यः     | १६८   | १३    | सद्यः    | २३    | ५१    |
| संक्षय    | ३७    | १८    | सद्यः     | १३४   | १२    | सना      | २७८   | १७    |
| संगम      | २२५   | २९    | सद्यः     | २७    | ५८    | सनातन    | ३१    | ७२    |
|           | २९५   | ३४    | सद्यः     | २९    | २९    | सनामि    | १११   | ३३    |
| संगर      | २५८   | १६३   | सद्यः     | २३३   | २१३   | सनि      | १३८   | ३२    |
| संगीर्ष   | २१७   | १९    | सद्यः     | ३१    | १३    | सानीय    | ३७    | २     |
| संगूह     | २१४   | ९३    | सद्यः     | ३७    | २२    | सनीय     | २९    | ६६    |
| संग्रह    | ३४    | ३     | सद्यः     | २५    | १५४   | सन्तत    | १६    | ६५    |
| संग्राम   | १६२   | १५    | सम्पन्ना  | १८१   | ८२    | सन्तत    | ४७    | ४     |
| संग्रह    | १६    | ९     | सम्पन्नसु | १४    | ४३    | सन्तति   | १३२   | १     |
|           | २२३   | १४    | सम्पन्नसु | १८१   | ८२    | सन्तति   | २१६   | १२    |
| सध        | १४    | ४१    | सम्पन्नसु | १६३   | ३     | सन्त     | १३    | ५     |
| सधात      | १३    | ३९    | सम्पन्नसु | १८१   | ८२    | सन्त     | १३२   | १     |
| सधिन      | २६५   | २३    | सध        | २३    | १८१   | सन्ताप   | १४    | ५७    |
| सध        | १५५   | ६५    | सधा       | २७५   | ४     | सन्तापित | २१६   | १२    |
| सधन       | १६२   | ३     | सधिन      | १४५   | १५    | सन्तान   | १७९   | ७३    |
|           | १४९   | ३३    | सधन       | १५    | ६५    | सन्तानित | २१४   | ९५    |

| शब्द.       | पृष्ठ.   | श्लोक. | शब्द.         | पृष्ठ.    | श्लोक. | शब्द.      | पृष्ठ.    | श्लोक. |
|-------------|----------|--------|---------------|-----------|--------|------------|-----------|--------|
| सन्दाव      | १६४      | १११    | सप्तला        | { ८० ७२   |        | समया       | { २७४ २५२ |        |
| सन्दित      | { २१२ ८६ |        | सप्तार्चिस्   | ९२ १४३    |        |            | { २७६ ७   |        |
|             | { २१४ ९५ |        | सप्ताश्व      | १४ ५६     |        | समर        | १६२ १०४   |        |
| सन्देशवाच्  | ३६       | १७     | सप्ताश्व      | २२ २९     |        | समर्थ      | २४२ ८७    |        |
| सन्देशहर    | १४६      | १६     | सप्ति         | १५१ ४४    |        | समर्थन     | १४७ २५    |        |
| सन्देश      | ३०       | ३      | सप्तसत्चारिन् | १३४ ११    |        | समर्थक     | १९७ ७     |        |
| सन्दोह      | १०३ ३९   |        | सभर्तृका      | १०७ १२    |        | समर्याद    | २०९ ६७    |        |
| सन्द्राव    | १६४ १११  |        |               | { ६२ ६    |        | समवर्तिन्  | १४ ५८     |        |
| सन्धा       | २४५ १०२  |        | सभा           | { १३४ १५  |        | समवाय      | १०३ ४०    |        |
| सन्धान      | १९४ ४२   |        |               | { २५२ १३७ |        | समष्टिला   | ९४ १५७    |        |
| सन्धि       | { १४६ १८ |        | सभाजन         | २१९ ७     |        | समसन       | २२३ २१    |        |
|             | { २०१ ११ |        | सभासद्        | १३५ १६    |        | समस्त      | २०९ ६५    |        |
| सन्धिनी     | १७९ ६९   |        | सभास्तार      | १३५ १६    |        | समस्या     | ३४ ७      |        |
| सन्ध्या     | २४ ३     |        | सभिक          | १९५ ४४    |        | समाः       | २७ २०     |        |
| १ सन्नकद्रु | ७३ ३५    |        | सभ्य          | { १३२ ३   |        | समानभीना   | १७९ ७२    |        |
| सन्नद्ध     | १५५ ३५   |        |               | { १३५ १६  |        | समाकर्षिन् | ३२ ११     |        |
| सन्नय       | २५४ १५१  |        | सम            | { १९३ ३६  |        | समाघात     | १६२ १०५   |        |
| सन्निधि     | २२४ २३   |        |               | { २०९ ६४  |        | समाज       | १०४ ४२    |        |
| सन्निकर्षण  | २२४ २३   |        | समग्र         | २०९ ६५    |        | समाधि      | { ३० ५    |        |
| सन्निकृष्ट  | २०९ ६६   |        | समङ्गा        | { ८३ ९०   |        |            | { २४४ ९८  |        |
| सन्नवश      | ६५ १९    |        |               | { ९१ १४१  |        |            | { १५ ६३   |        |
| सपत्न       | १४५ १०   |        | समज           | १०४ ४२    |        | समान       | { १९७ ३७  |        |
|             |          |        | समज्ञा        | ३५ ११     |        |            | { २५० १२७ |        |
| सपदि        | { २७५ २  |        | समज्या        | १३४ १५    |        | समानोदर्य  | १११ ३४    |        |
|             | { २७७ ९  |        | समक्षस        | १४७ २४    |        | समालम्भ    | २२५ २७    |        |
| सपर्या      | १३८ ३४   |        | समाधिक        | २१० ७५    |        | समावृत्त   | १३४ १०    |        |
| सपिण्ड      | १११ ३२   |        | समतनसु        | २७७ १३    |        | समासाद्य   | २१४ ९२    |        |
| १ सपीति     | १७६ ५५   |        | समतदुग्धा     | ८५ १०६    |        | समासार्था  | ३४ ७      |        |
| सप्तकी      | १२६ १०८  |        | समन्तभद्र     | ८ १३      |        | समाहार     | २२२ १६    |        |
| समतन्तु     | १३४ १३   |        | समम्          | २७५ ४     |        | समाहित     | २१७ १०९   |        |
| सप्तपर्ण    | ७१ २३    |        | समय           | { २४ १    |        | समाहृति    | ३४ ६      |        |
| सप्तिधि     | २२ २७    |        |               | { २५४ १४८ |        | समाह्वय    | १९५ ४६    |        |

| शब्द.       | पृष्ठ   | श्लोक   | शब्द.         | पृष्ठ   | श्लोक         | शब्द.      | पृष्ठ.  | श्लोक |
|-------------|---------|---------|---------------|---------|---------------|------------|---------|-------|
| समिधि       | {       | १३४ १५  | समूह          | १३५ २   | सरक           | {          | ७८ ६०   |       |
|             |         | १३२ १ ३ | समूह          | १९८ ११  | १९७ ८         |            |         |       |
|             |         | २३९ ७   | समूहि         | २२ १    | सरकप्रब       |            | १२९ १२९ |       |
| समित्       | १३२ १ ३ | समष्ट   | १७४ ४३        | सरक्य   | ८५ १०८        |            |         |       |
| समिष        | ६९ १३   | सम्पधि  | १५८ ८२        | सरसु    | ५४ २८         |            |         |       |
| समीक        | १३२ १ ४ | सम्पद्  | १५८ ८१        | सरसी    | ५४ २८         |            |         |       |
| समीप        | २ ९     | ३६      | सम्पराज       | २५४ १५० | सरसीबह        | ५७ ४       |         |       |
| समीर        | १५ ३३   | ३३      | सम्पिधान      | २४९ १२५ |               |            |         |       |
| समीरण       | {       | १५ ३२   | सम्पुटक       | १३१ १३९ | सरस्वत्       | {          | ४९ १    |       |
|             |         | ८१ ७९   | सम्पति        | २८८ २३  | सरस्वती       |            | ५३ ३४   |       |
| समुच्चय     | २२२ १३  | ३३      | सम्प्रदाय     | २२ ७    |               |            |         |       |
| समुच्छ्रय   | २५४ १५२ | १५२     | सम्प्रधान     | २५५ १५३ | सरित्         | ५५ २९      |         |       |
| समुक्षित    | २१७ १ ७ | ७       | सम्प्रधारणा   | १४७ २५  | सरिम्पति      | ४९ १       |         |       |
| समुत्पिन्न  | १३२ ९९  | ९९      | सम्प्रहार     | १३२ १ ५ | सरिष्प        | ४७ ७       |         |       |
| समुत्पल     | २१३ ९   | ९       | सम्प्राप्त    | ६८ ७    | सर्ग          | २३१ ३२     |         |       |
| समुदय       | १ ३ ४   | ४       | सम्प्राप्त    | २१२ ८५  | सर्ग          | ७५ ४४      |         |       |
| समुदाय      | {       | १ ३ ४   | सम्प्राप्तन   | २७३ ३   | सर्गक         | {          | ७५ ४४   |       |
|             |         | १३२ १ ३ | सम्प्रेह      | ५३ ३५   | सर्गरस        |            | १२९ १२७ |       |
| समुद्र      | २८८ १७  | १७      | सम्प्रम       | {       | ४५ ३४         | सर्गिकासार | १८९ १ ९ |       |
| समुद्रक     | १३१ १३९ | १३९     |               |         | २२४ २३        | सर्प       | ४७ ३    |       |
| समुद्रिरण   | २३७ ५५  | ५५      | सम्प्रद       | २८ २४   | सर्पराज       | ४७ ४       |         |       |
| समुद्रव     | २ २३    | २३      | सम्प्राप्तिनी | ३५ १८   | सर्पिन्       | १७५ ५२     |         |       |
| समुद्र      | ४९ १    | १       | सम्प्राप्ति   | २१९ ३   | सर्प          | २ ९ ३४     |         |       |
| समुद्रान्ता | {       | ८१ ९२   | सम्पद्        | ३७ २२   | सर्पवहा       | {          | ५८ ३    |       |
|             |         | ८७ ११३  | सम्प्राप्त    | १४३ ३   | सर्गक         |            | ८ १३    |       |
|             |         | ९ १३३   | सरक           | १९५ ४३  | सर्गस         |            | २७७ १३  |       |
| समुद्भन     | २२५ २९  | २९      | सरपा          | १ १ २३  | सर्गतीमद्र    | {          | ३३ १    |       |
| समुभ        | २१७ १ ५ | ५       | सरट           | ९८ १२   |               | {          | ७८ ३२   |       |
| समुभद्र     | २४३ १०३ | १०३     | सरपा          | ९३ १५२  | सर्गतीमन्त्रा | ७४ ३५      |         |       |
| समुपवीपम्   | २७ १    | १       | सरणि          | ६१ १५   | सर्गतीमुत्त   | ४९ ४       |         |       |
| समूह        | ८ ९     | ९       | सरणि          | १२२ ८३  | सर्गवहा       | २८ २२      |         |       |
| समूह        | १ ३ ३९  | ३९      | सरमा          | १९१ २२  | सर्गपुत्रवह   | १०८ ६६     |         |       |

| शब्द.          | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.          | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------------|--------|--------|--------------|--------|--------|----------------|--------|--------|
| सर्वधुरीण      | १७८    | ६६     | सहभोजन       | १७६    | ५५     | सात्विक        | ४२     | १६     |
| सर्वमगला       | ११     | ३७     | सहस्र        | २६     | १४     | सादिन्         | { १५४  | ६०     |
| सर्वरस         | १२९    | १२७    |              | १६२    | १०२    | साधन           | { २४६  | १०७    |
| सर्वला         | १६०    | ९३     |              | २७०    | २३२    | साधारण         | { १९३  | ३७     |
| सर्वलिङ्गिन्   | १४०    | ४५     | सहसा         | २७६    | ७      | साधित          | { २११  | ८२     |
| सर्ववेदस्      | १३३    | ९      | सहस्य        | २६     | १५     | साधिष्ठ        | २०४    | ४०     |
| सर्वसन्नह्न    | १६१    | ९४     | सहस्र        | १८२    | ८४     | साधीयस्        | २१८    | ११२    |
| सर्वानुभूति    | ८५     | १०८    | सहस्रदंष्ट्र | ५२     | १८     | साध्वीयस्      | २७१    | २३५    |
| सर्वान्नभोजिन् | २००    | २२     | सहस्रपत्र    | ५७     | ४०     |                | { १३२  | ३      |
| सर्वान्नीन     | २००    | २२     | सहस्रवीर्या  | ९४     | १५८    |                | { २०६  | ५२     |
| सर्वाभिसार     | १६१    | ९४     | सहस्रवेधिन्  | ९१     | १४१    | स              | { २४५  | १०१    |
| सर्वार्थसिद्ध  | ८      | १५     |              | १७३    | ४०     | साधुवाहिन्     | १५१    | ४४     |
| सर्वौघ         | १६१    | ९४     |              | २२     | ३१     | साध्य          | ७      | १०     |
| सर्वप          | १६९    | १७     | सहस्राक्ष    | १२     | ४४     | साध्वस         | ४२     | २१     |
| सलिल           | ४९     | ३      | सहास्रन्     | १५४    | ६२     | साध्वी         | १०५    | ६      |
| सल्लकी         | ८८     | १२४    | सहा          | ८०     | ७३     | सानु           | ६६     | ५      |
| सव             | १३४    | १३     |              | ८६     | ११३    | सान्तपन        | १४२    | ५२     |
| सवन            | १४१    | ४७     |              | १५६    | ७१     | सान्त्व        | { ३७   | १८     |
| सवयस्          | १४५    | १२     | सहायता       | २२७    | ४०     |                | { १४६  | २१     |
| सवितृ          | २२     | ३१     | सहिष्णु      | २०२    | ३१     | सान्द्राष्टक   | १४८    | २९     |
| सविध           | २०९    | ६७     | सायात्रिक    | ५१     | १२     | सान्द्र        | २०९    | ६६     |
| सवेश           | २०९    | ६७     | सायुर्गीन    | १५७    | ७७     | सान्द्रक्षिग्ध | २०२    | ३०     |
| सव्य           | २१२    | ८४     | सावत्सर      | १४५    | १४     | सान्नाय्य      | १३६    | २७     |
| सञ्चेष्ट       | १५४    | ६०     | सांशयिक      | १९७    | ५      | साप्तपदीन      | १४५    | १२     |
| सस्य           | ७०     | १५     | साकम्        | २७५    | ४      | सामन्          | १४६    | २०     |
| सस्यमजरी       | १६९    | २१     | साकल्य       | २१८    | २      | सामन्          | { ३४   | ३      |
| सस्यशूक        | १६९    | २१     | साक्षात्     | २७३    | २४३    |                | { १४६  | २१     |
| सस्यसम्बर      | ७५     | ४४     | सागर         | ४९     | १      |                | { १३५  | १६     |
| सह             | २७५    | ४      | सान्चि       | २७६    | ६      | सामान्य        | { २९   | ३१     |
| सहकार          | ७३     | ३३     | सातला        | ९२     | १४३    | सामि           | { २११  | ८२     |
| सहचरी          | ८०     | ७५     | साति         | २२६    | ३८     |                | { २७३  | २४९    |
| सहज            | १११    | ३४     |              | २३९    | ६७     |                | { १३६  | २२     |
| सहधर्मिणी      | १०५    | ५      |              | २८४    | ३      | सामिधेनी       | १७३    | ४१     |
| सहन            | २०२    | ३१     | सातिसार      | ११६    | ५९     | सामुद्र        |        |        |

| शब्द       | पृष्ठ | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ | श्लोक | शब्द       | पृष्ठ | श्लोक |
|------------|-------|-------|------------|-------|-------|------------|-------|-------|
| साम्यदायक  | १६२   | १०४   | निष्पुच्छी | ८३    | ९३    | सिम्बूर    | { १८५ | १५    |
| साम्प्रतम् | { २०० | ११    | निष्पुच्छन | १९८   | १२    |            | { २९४ | ११    |
|            | २८०   | २३    | निष्पुच्छ  | १८४   | ९८    |            | { ४८  | १     |
| सायक       | २२८   | २     | निष्पुच्छन | १४९   | ३३    | सिम्बु     | { ४९  | २     |
| सायम्      | { २४  | ३     | निष्पुच्छ  | ८५    | ११३   |            | { २४५ | ११    |
|            | २०९   | १९    |            | { ८५  | १०३   | सिम्बुज    | १०३   | ४२    |
| सार        | { १९  | १२    | सिंहरी     | { ८६  | ११४   | सिम्बुवर्म | ५६    | ३५    |
|            | २५८   | १०१   | सिंहरी     | २४०   | ७३    | नहु        | १२९   | १२८   |
| सारंग      | { ९९  | १०    | सिंहरी     | ५०    | ९     | नीला       | १६८   | १४    |
|            | २३१   | २३    | सिंहरी     | ६     | ११    | सिंह       | १६०   | ८     |
| सायसि      | १५४   | ५९    | सिंहरी     | १८६   | १७    | सीधु       | १९४   | ४१    |
| सारमेव     | १९१   | २१    |            | { ३२  | १३    | सीमन्      | ६५    | २     |
| सारव       | ५६    | ३६    |            | २१४   | ९५    | सीमन्त     | २८९   | १९    |
|            | { ५०  | ४०    | सत         | { ३१५ | ९८    | सीमन्तिनी  | १०४   | २     |
|            | १     | २२    |            | २४१   | ८     | सीमा       | ६५    | २     |
| सारधन      | { १२३ | १९    | सितम्भरा   | ९३    | १५२   | सीर        | १६८   | १४    |
|            | १५५   | ६३    |            | { ७९  | ७३    | सीरपाणि    | ९     | २४    |
| सा रेका    | २८४   | ८     | सिता       | { १०४ | ४३    | सीरन       | २१९   | ५     |
| सा रे      | १४    | ४१    |            | १३    | १३    | सीरक       | १८५   | १०५   |
| सा रेवाह   | १८    | ७८    | सिता       | ५०    | ४१    | सीरुष्ट    | ८५    | १५    |
| स र        | २१०   | १५    | सितामी     | { ७   | ११    |            | { २०१ | २     |
| सायम्      | २०५   | ४     | सिता       | { २१६ | १०    |            | { २०६ | ५     |
| सायभाम     | { १८  | ४     | सिता       | ३     | ४     | सुन्दरक    | २     | १४०   |
|            | १४३   | २३    | सिता       | १६९   | १८    | सुन्दर     | १०९   | ७     |
| साय        | { ७५  | ४४    | सिता       | ८६    | ११३   | सुन्दर     | १९०   | ८     |
| सायगी      | ८०    | ११५   | सिता       | ११५   | ५३    | सुन्दर     | २११   | ७८    |
| साय        | १००   | ६३    | सिता       | ११०   | ६१    | सुन्दर     | २८    | २१    |
| साय        | १४६   | २१    | सिता       | २८४   | १     | सुन्दर     | १९६   | २     |
| साय        | { १५४ | ६     | सिता       | २१    | २२    | सुन्दर     | { २८  | २५    |
|            | २२०   | ४३    | सिता       | २८४   | ८     | सुन्दर     | { २११ | २३    |
| सिंह       | { १   | १     | सिता       | २५    | ९     | सुन्दर     | १८६   | १९    |
|            | १८    | ५९    | सिता       | ७९    | ६८    | सुन्दर     | १०९   | ७१    |
| सिंह       | १६१   | १०    | सिता       | ७९    | ६८    | सुन्दर     | ८     | १३    |
|            |       |       | सिता       | ७९    | ६८    | सुन्दर     | ८०    | ११४   |

| शब्द.         | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------|--------|--------|-------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| सुगन्धि       | { ३२   | ११     | सुमनस्      | ७      | ७      | सुवासिनी    | १०६    | ९      |
|               | { ८८   | १२१    | सुमनस्      | ७०     | १७     | सुव्रता     | १७९    | ७१     |
| सुचरित्रा     | १०५    | ६      | सुमना       | ८०     | ७२     | सुषम        | २०६    | ५२     |
| सुचेलक        | १२७    | ११६    | सुमनोरजस्   | ७०     | १७     | सुषमा       | २०     | १७     |
| सुत           | { ११०  | २७     | सुमेरु      | १३     | ४९     | सुषवी       | { ९३   | १५५    |
|               | { २३८  | ६०     | सुर         | ७      | ७      |             | { १७२  | ३७     |
| सुतश्रेणि     | ८२     | ८८     | सुरगा       | २८४    | ८      | सुषि        | ४६     | २      |
| सुतात्मजा     | ११०    | २९     | सुरज्येष्ठ  | ८      | १६     |             | { ३९   | ४      |
| सुत्या        | १४१    | ४७     | सुरदोर्घिका | १३     | ४९     | सुषिर       | { ४६   | १      |
| सुत्रामन्     | १२     | ४२     | सुरद्विप्   | ७      | १२     |             | { ४६   | २      |
| सुत्वन्       | १३४    | १०     | सुरनिम्नगा  | ५५     | ३१     | सुषिरा      | ८९     | १२९    |
| सुदर्शन       | १०     | २८     | सुरपति      | १२     | ४३     | सुषीम       | २०     | १९     |
| सुदाय         | १४८    | २८     | सुरभि       | { २७   | १८     | सुषेण       | ७९     | ६७     |
| सुदूर         | २०९    | ६९     |             | { ३२   | ११     | सुषणिका     | ८६     | १०८    |
| सुधर्मा       | १३     | ४८     | सुरभी       | ८८     | १२३    | सुष्टु      | { २७५  | २      |
| सुधा          | { १३   | ४८     | सुरर्षि     | १३     | ४८     |             | { २७९  | १९     |
|               | { २४५  | १०२    | सुरलोक      | ६      | ६      | सुसंस्कृत   | १७४    | ४५     |
| सुधांशु       | १९     | १४     | सुरवर्त्मन् | १७     | १      | सुहृद       | १४५    | १२     |
| सुधी          | १३३    | ५      | सुरसा       | ८७     | ११४    | सुहृदय      | १९६    | ३      |
| सुनासीर       | १२     | ४१     | सुरा        | १९४    | ३९     | सुकर        | ९७     | २      |
| सुनिषण्णक     | ९३     | १४९    | सुराचार्य   | २१     | २४     |             | { २०८  | ६१     |
| सुन्दर        | २०६    | ५२     | सुरामण्ड    | १९४    | ४२     | सूक्ष्म     | { २५३  | १४४    |
| सुन्दरी       | १०५    | ४      | सुरालय      | १३     | ४९     | सूचक        | २०५    | ४७     |
| सुपथिन्       | ६१     | १६     | सुराष्ट्रज  | ९०     | १३१    | चि          | २८४    | ८      |
| सुपर्ण        | १०     | २९     | सुवचन       | ३६     | १७     |             | { १५४  | ५९     |
| सुपर्वन्      | ७      | ७      | सुवर्ण      | { १८२  | ८६     | सूत         | { १८४  | ९९     |
| सुगर्श्वक     | ७५     | ४३     | सुवर्णक     | { १८३  | ९४     |             | { १८७  | ३      |
| सुप्रतीक      | १८     | ४      | सुवर्णक     | ७१     | २४     |             | { २३८  | ६२     |
| सुप्रयागविशिख | १५५    | ६८     | सुवर्णक     | ८३     | ९५     | सूतिकागृह   | ६३     | ८      |
| सुप्रलाप      | ३६     | १७     |             | { ७९   | ७०     | सूतिमास     | ११२    | ३९     |
| सुभगासुत      | १०९    | २४     |             | { ८७   | ११५    | सूत्यान     | १९०    | १९     |
| सुभिक्षा      | ८८     | १२४    | सु          | { ८७   | ११९    | सूत्र       | १९२    | २८     |
| सुम           | ७०     | १७     |             | { ८८   | १२३    | सूत्रवेष्टन | २२४    | २४     |
| सुमन          | १६९    | १८     |             | { ९१   | १४०    |             |        |        |

| शब्द      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द        | पृष्ठ | श्लोक | शब्द      | पृष्ठ | श्लोक |
|-----------|-------|-------|-------------|-------|-------|-----------|-------|-------|
| सूद       | { १७१ | २८    | सिक्क       | १४४   | ९     | सौगन्धिक  | { ५६  | १६    |
|           | २४३   | ९१    | सिक्कन      | २१९   | ५     |           | ९६    | १६६   |
| सुना      | २४७   | ६१३   | सिक्का      | १६५   | २     |           | १८५   | १२    |
| सुनु      | ११    | २७    | सिक्क       | ९५    | १६४   | सौधिक     | १८८   | ६     |
| सुसुत     | ३७    | १९    | सिक्कैक     | २२    | २६    | सौदामिनी  | १९    | ९     |
| सुपकार    | १७१   | २७    | सिक्कत      | ५     | ९     | सौध       | ६३    | १     |
| सुर       | २२    | २८    | सिक्कवाहिनी | ५५    | ३३    | सौमागिनीय | १९    | २४    |
| सुरज      | ९४    | १५७   | सैनिक       | १५४   | ६१    | सौम्य     | { २२  | २६    |
| सुख       | १९८   | १५    | सौम्य       | { १५१ | ४४    |           | { २५६ | १६१   |
| सुरि      | १३३   | ६     |             | { १७३ | ४२    | सौरमेय    | १७७   | ६     |
| सुमी      | १९३   | ३५    | सौम्य       | { १५४ | ६१    | सौरमेयी   | १७८   | ६६    |
| सुप       | २२    | २८    |             | { १५७ | ७८    | सौपायिक   | ४८    | १     |
| सुसंवनवा  | ५९    | ३२    | सौम्य       | { १५७ | ७८    | सौरि      | २२    | २६    |
| सुपमिवा   | २५६   | १५७   |             | १५८   | ७९    | सौम्य     | { १७३ | ४६    |
| सुसंनुसगम | २५    | ८     | सौरमी       | १८    | १८    |           | { १८६ | १९    |
| सुकिणी    | १२३   | ९१    | सौरिक       | १७८   | ६४    | सौम्य     | १४४   | ८     |
| सुग       | १६    | ९१    | सौरिम       | ९७    | ४     | सौम्य     | १४४   | ८     |
| सुधि      | १५१   | ४१    | सौरिक       | ८     | ७५    | सौम्य     | { ७४  | १७    |
| सुजिका    | ११८   | ६७    | सौरि        | २१५   | ९७    |           | { १७३ | ४९    |
| सुति      | ६१    | १५    | सौरय        | १११   | ६४    |           | { १८४ | १     |
| सुपाटी    | २९७   | ३८    | साम्माद     | २     | २३    | सौहृद     | १७६   | ५६    |
| सुमर      | ९८    | ११    | सोपक        | २५    | १     | सुहृद     | १२    | ३९    |
| सुत्र     | २३४   | ३८    | सोपान       | ६५    | १८    | सुहृद     | { ६९  | १     |
| सुक्कपान  | ५१    | १३    | सामाजन      | ७३    | ३१    |           | { १२  | ७८    |
| सुवन      | ५१    | १३    | साम         | १९    | १४    |           | { २४५ | १     |
| सुवनक     | २७    | ५३    | सोमपा       | १३३   | ९     | सुहृद     | १९    | ११    |
| सुनु      | { ६   | १४    | सोमपीथिन    | १३३   | ९     | सुहृद     | २१६   | १४    |
|           | { ७२  | २५    | सोमराजी     | ८३    | १५    | सुहृद     | ४५    | ३६    |
|           |       |       |             |       |       | सुहृद     | १६३   | १८    |
| सुना      | १५७   | ७८    | सोमवस्क     | { ७६  | ५     | सुहृद     | १२    | ७७    |
| सुनाग     | १४९   | ३३    | सोमवस्क     | { २२९ |       | सुहृद     | ११२   | ४१    |
| सुमानि    | { १२  | ३९    |             | ९१    | १३७   | सुहृद     | ११२   | ४१    |
|           | { १५५ | ६२    |             | ८३    | ९५    | सुहृद     | १८    | ६     |
| सुनामुन   | १५८   | ८१    | सोमवस्क     | ८२    | ८३    | सुहृद     | १९    | ८     |
| मारु      | १५४   | ६१    | सोमवस्क     | ५५    | ३२    | सुहृद     |       |       |

| शब्द.         | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.       | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.    | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------|--------|--------|-------------|--------|--------|----------|--------|--------|
| स्तवक         | ७०     | १६     | स्थविष्ठ    | २१८    | १११    | स्थौरिन् | १५१    | ४६     |
| स्तव्वरोमन्   | ९७     | २      |             | १०     | ३४     | स्थौल्य  | २६३    | १९५    |
| स्तम्भ        | { ६८   | ९      | स्थाणु      | { ६८   | ८      | स्तव     | २२०    | ९      |
|               | १६९    | २१     |             | २३६    | ४९     | स्तातक   | १४०    | ४३     |
| स्तम्भकारि    | १६९    | २१     | स्थांडिल    | १४०    | ४४     | स्तान    | १२८    | १२२    |
| स्तम्भघ्न     | २२६    | ३५     |             | { १४६  | १९     | स्तायु   | ११८    | ६६     |
| स्तम्भघ्न     | २२६    | ३५     | स्थान       | { २४८  | ११७    |          | { १४५  | १२     |
| स्तम्भेरम     | १४९    | ३५     | स्थानीय     | ६१     | १      | स्निग्ध  | { १७४  | ४६     |
| स्तम्भ        | २५१    | १३५    | स्थाने      | २७७    | ११     |          | { १९८  | १४     |
| स्तव          | ३५     | ११     | स्थापत्य    | १४४    | ८      | स्तु     | ६६     | ५      |
| स्तिमित       | २१७    | १०५    | स्थापनी     | ८२     | ८४     | स्तुक    | ८५     | १०५    |
| स्तुत         | २१७    | ११०    | स्थामन्     | १६२    | १०२    | स्तुत    | २१४    | ९२     |
| स्तुति        | ३५     | ११     | स्थायुक     | १४४    | ७      | स्तुषा   | १०६    | ९      |
| स्तुतिपाठक    | १६१    | ९७     | स्थाल       | २९५    | ३२     | स्तुही   | ८५     | १०५    |
| स्तूप         | २८९    | १९     | स्थाली      | १७१    | ३१     | स्तोह    | ४४     | २७     |
| स्तैन         | १९१    | २४     | स्थावर      | २१०    | ७३     | स्पर्श   | { ३१   | ७      |
| स्तेम         | २२५    | २९     | स्थाविर     | ११२    | ४०     |          | { २२२  | १४     |
| स्तेय         | १९१    | २५     | स्थासक      | १२८    | १२२    | स्पर्शन  | { १५   | ६१     |
| स्तैन्य       | १९१    | २५     | स्थाल       | २१०    | ७३     |          | { १३७  | २९     |
| स्तोक         | २०८    | ६१     | स्थीत       | { १४७  | २६     | स्पश     | { १४५  | १३     |
| स्तोत्र       | ३५     | ११     |             | { २२३  | २१     |          | { २६६  | २१४    |
| स्तोम         | { १०३  | ३९     | स्थिरतर     | २१०    | ७३     | स्पष्ट   | २११    | ८१     |
|               | २५२    | १४१    |             |        |        | स्पृक्का | ९०     | १३३    |
| स्त्री        | १०४    | २      | स्थिरा      | { ५९   | २      | स्पृशी   | ८३     | ९३     |
| स्त्रीधर्मिणी | १०८    | २०     | स्थिरायु    | { ८७   | ११५    | स्पृष्टि | २२०    | ९      |
| स्त्रीपुंस    | १०३    | ३८     | स्थूणा      | { १९३  | ३५     | स्पृष्टा | ४४     | २७     |
| ऊयगार         | ६३     | ११     |             | { २३६  | ५१     | स्पृष्ट  | २२२    | १४     |
| स्थंडिल       | १३५    | १८     | स्थूल       | { २०८  | ६१     | स्फटा    | ४८     | ९      |
| स्थंडिलशायिन् | १४०    | ४४     |             | { २६५  | २०४    | स्फाति   | २२०    | ९      |
| स्थपति        | { १३३  | ९      | स्थूललक्ष्य | १९७    | ६      | स्फार    | २०८    | ६३     |
|               | २३८    | ६१     | स्थूलशाटक   | १२७    | ११६    | स्फिच्   | ११९    | ७५     |
| स्थल          | ५८     | ५      | स्थूलोच्चय  | २५४    | १४८    | स्फुट    | { ६८   | ७      |
| स्थली         | ५८     | ५      | स्थेयम्     | २१०    | ७३     |          | { २११  | ८१     |
| स्थविर        | ११३    | ४२     | स्थौण्य     | ९०     | १३२    | स्फुटन   | २१९    | ५      |



| शब्द.       | पृष्ठ | श्लोक | शब्द.      | पृष्ठ | श्लोक | शब्द.          | पृष्ठ | श्लोक |
|-------------|-------|-------|------------|-------|-------|----------------|-------|-------|
| स्फुरण      | २२    | १     | सुषाण      | ७४    | १७    | स्वर्माणु      | २२    | २६    |
| स्फुरण      | २२    | १     | सीतल       | { ५१  | ११    | स्वर्मेष्ट्या  | ११    | ५२    |
| स्फुरेण     | १४    | ५७    |            | { २७  | २३३   | स्वर्मेष्ट     | ११    | ५१    |
| स्फूर्जक    | ७४    | ३८    | सीतस्वती   | १५५   | ३     | स्वस्त         | ११    | २९    |
| स्फूर्जपु   | १९    | १     | सातोन्न    | १८४   | १     | स्वस्ति        | २७२   | २४१   |
| स्नेह       | २१८   | ११२   |            | { १११ | २४    | स्वास्तिक      | ६३    | १     |
|             | { २७६ | ५     | स्व        | { २६६ | २११   | स्वस्तय        | १११   | ३३    |
| स्म         | { २७८ | १७    | स्वच्छन्द  | १९९   | १५    | स्वाति         | २९७   | ३८    |
| स्मर        | ९     | २५    | स्वजन      | १११   | ३४    | स्वादु         | २४४   | ९४    |
| स्मरहर      | १     | ३३    | स्वर्तण    | १९९   | १५    | स्वातुर्लङ्क   | { ७४  | ३७    |
| स्मिन्      | ४७    | ३४    | स्वधा      | २७६   | ८     |                | { ८४  | ९८    |
| स्मृति      | { ३४  | ६     | स्वधिति    | १३    | ९२    | स्वापुरसा      | ९२    | १४४   |
|             | { ४४  | २९    | स्वन       | ३८    | २२    | स्वाही         | ८५    | १०७   |
| स्वद        | १५    | ३४    | स्वानिठ    | २१४   | ९४    | स्वाध्याय      | १४१   | ४७    |
| स्वानन्दन   | { ७२  | २६    | स्वप्न     | ४६    | ६६    | स्वान          | ३८    | २३    |
|             | { १५२ | ५१    | स्वप्नञ्च  | ७     | २     | स्वाम्य        | २९    | ३१    |
| स्वन्दनारीह | १७४   | ६     | स्वमाव     | ४६    | ३८    | स्वाप          | ४६    | ३६    |
| स्वन्दिनी   | ११८   | ३७    | स्वमू      | ८     | १८    | स्वापठेय       | १८३   | ९     |
| स्वप्न      | २१४   | ९२    | स्वमेकण    | १     | ६     | स्वामिन्       | १९८   | १     |
| स्फुल       | { १७  | २६    | स्वयमू     | २७८   | १६    | स्वामिन् ( इ ) | १२    | ४३    |
|             | { २१६ | १     | स्वयर्मू   | ८     | १६    | स्वाहा         | { १३६ | २१    |
| स्फुटि      | २१९   | ५     | स्वर्      | { २७४ | २५४   |                | { २७६ | ८     |
| स्फोनाक     | ७७    | ५७    |            | { ३४  | ४     | स्विकृ         | २७२   | २४२   |
| स्फीचिन्    | ७२    | २८    | स्वर       | { ३९  | १     | स्वेष्ट        | ४५    | ३३    |
| स्फु        | १३१   | १३५   |            | { ३९  | १     | स्वेदक         | १     | ५१    |
| स्फव        | २२    | ९     | स्वक       | { १३  | ४७    | स्वेदनी        | १७१   | ३     |
| स्वह्रमा    | १७८   | ३९    |            | { २५८ | १३७   | स्वेर          | २३२   | १९२   |
| स्वह्रमी    | ५५    | ३     | स्वरूप     | { ४६  | ३८    | स्वैरिणी       | १     | ११    |
| स्वभा       | ८२    | ८३    |            | { २५१ | १३१   | स्वैरिवा       | २१८   | २     |
| स्वपु       | ८     | १७    | स्वर्ग     | ६     | ३     | स्वैरिन्       | १९९   | १५    |
| स्वरा       | २१३   | १     | स्वर्ग     | १८३   | ९४    |                | २७३   | ५     |
| स्वार्      | २७५   | २     | स्वर्गकार  | १८८   | ८     |                | { २२  | ३१    |
| स्वव        | २१४   | ९२    | स्वर्गसीरी | ९१    | १३८   | स्व            | { १   | २१    |
| स्वन        | १३६   | २५    | स्वर्गसीरी | १३    | ४९    |                | { २६९ | २६६   |

| शब्द.        | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द.     | पृष्ठ.    | श्लोक. | शब्द.    | पृष्ठ.     | श्लोक. |     |     |
|--------------|--------|--------|-----------|-----------|--------|----------|------------|--------|-----|-----|
| हसक          | १२६    | ११०    | हरिताल    | २९५       | ३२     | हव्य     | १३६        | २४     |     |     |
| हंजिका       | ८६     | ८९     | हरिदश्व   | २२        | २९     | हव्यपाक  | १३६        | २२     |     |     |
| हजे          | ४१     | १५     | हरिद्राम  | ३२        | १४     | हव्यवाहन | १४         | ५५     |     |     |
| हट्ट         | २८९    | १८     | हग्निद्रा | १७३       | ४१     | हस       | ४२         | १८     |     |     |
| हट्टविलासिनी | ८९     | १३०    | हरिद्र    | ८४        | १०१    | मनी      | १७१        | ३०     |     |     |
| हठ           | १६३    | १०८    | हरिन्माण  | १८३       | ९२     | मती      | १७१        | २९     |     |     |
| हड           | ४१     | १५     | हरिप्रय   | ७५        | ४२     | त्त      | १२२        | ८६     |     |     |
| हत           | २०५    | ४१     | हरिप्रिया | ९         | २७     |          | १२४        | ९८     |     |     |
| हनु          | {      | ८९     | १३०       | हरिमन्यक  | १६९    |          | १८         | २३७    | ५९  |     |
|              |        | १२२    | ९०        | हरिवालुक  | ८८     | १२१      | हस्तधारण   | २१९    | ५   |     |
| हन्त         | २७३    | २४४    | हरिहय     | १२        | ४३     | हस्तिन्  | १४९        | ३४     |     |     |
| हन्न         | २१५    | ९६     | हरीतकी    | ७७        | ५९     | हस्तिनख  | ६४         | १७     |     |     |
| हय           | १५१    | ४४     | हरेणु     | {         | ८८     | १२०      | हस्तिनक    | १५४    | ५९  |     |
| हयपुच्छी     | ९१     | १३८    | हर्म्य    |           | १६८    | १६       | हस्त्यारोह | १५४    | ५९  |     |
| हयमारक       | ८१     | ७६     | हर्म्य    | ६३        | ९      | हा       | २७५        | २५६    |     |     |
| हर           | १०     | ३३     | हर्म्यक्ष | ९७        | १      | हाटक     | १८३        | ९४     |     |     |
| हरण          | १४८    | २८     | हर्ष      | २८        | २४     | हायन     | {          | २७     | २०  |     |
| हरी          | {      | ९७     | १         | हर्षमाण   | १९७    | ७        |            | २४६    | १०८ |     |
|              |        | २५९    | १७५       | हल        | १६८    | १३       | हार        | १२५    | १०५ |     |
| हरिचन्दन     | {      | १३     | ५०        | हला       | ४१     | १५       | हारीत      | १०२    | ३४  |     |
|              |        | १३०    | १३१       | हलायुध    | ९      | २३       | हार्द      | ४४     | २७  |     |
| हारिण        | {      | ३२     | १३        | हलाहल     | ४८     | १०       | हाला       | १९४    | ३९  |     |
|              |        | ९८     | ८         | हलिन      | ९      | २४       | हालिक      | १७८    | ६४  |     |
|              |        | २३६    | ५१        | हलिप्रिया | १९४    | ३९       | हाव        | ४५     | ३२  |     |
| हारिणी       | २३६    | ५०     | हल्य      | १६७       | ८      | हास      | ४२         | १९     |     |     |
| हारित्       | {      | १७     | १         | हल्या     | २२७    | ४१       | हास्तिक    | १४९    | ३६  |     |
|              |        | ३२     | १४        | हल्लक     | ५६     | ३६       | हास्य      | {      | ४२  | १७  |
| हारित        | {      | ३२     | १४        | हव        | {      | २२०      | ८          |        | ४२  | १९  |
|              |        | २८९    | १९        | हविस्     |        | २६५      | २०७        | हाहा   | १४  | ५२  |
| हारितक       | १७२    | ३४     | हविस्     | {         | १३६    | २७       | हि         | {      | २७५ | २५७ |
| हरितालक      | १८५    | १०३    | हविस्     |           | १७५    | ५२       | २७६        |        | ५   |     |

| शब्द        | पृष्ठ | श्लोक | शब्द        | पृष्ठ | श्लोक | शब्द           | पृष्ठ | श्लोक |
|-------------|-------|-------|-------------|-------|-------|----------------|-------|-------|
| हिंसा       | २६९   | २२९   | हुतमुग्ध    | १४    | ५५    | हिरण्य         | ११    | ३८    |
| हिंसाकर्मण  | २२९   | १९    | हुम्        | { २७४ | २५२   | हिम्न          | ४५    | ११    |
| हिंस        | २ १   | २८    |             | { २७९ | १८    | हिपा           | १५२   | ४७    |
| हिंसा       | २८४   | ८     | हुति        | { ३५  | ८     | हि             | २७६   | ७     |
| हिगु        | १७९   | ४०    |             | { २२  | ८     | हिम            | १४९   | २२    |
| हिगुभी      | ८९    | ११४   | हुह         | १४    | ५२    |                |       |       |
| हिगुनिर्वाण | ७८    | ६२    | हुपीया      | २२५   | ३२    |                | { ११  | ३६    |
| हिमक        | ७८    | ६१    |             | { २९  | ३१    | हिमपत्नी       | ७७    | ७९    |
| हिमताक      | ९१    | १६९   | हुइ         | { ११७ | ६४    |                | ८५    | १३    |
|             | { २   | १८    |             | { २९  | ३१    | हिमगन्ती       | १७५   | ५२    |
| हिम         | { २   | १९    | हुदय        | { ११७ | ६४    | होतु           | १३५   | १७    |
|             | { २९  | २२    | हुदयवर्गम   | ३७    | १८    | होम            | १३४   | १४    |
| हिमकट       | ६९    | ३     | हुदयपुत्र   | १९६   | ३     | होरा           | २८४   | १०    |
| हिमवाञ्छका  | १३    | १३    | हुप         | २ ७   | ५३    | होय            | २७९   | २३    |
| हिमर्षहवि   | २     | १८    | हुपीक       | ३१    | ८     | हुद            | ५४    | २५    |
| हिमागु      | १९    | १३    | हुपीकेश     | ८     | १८    | हुविष्ट        | २१८   | ११२   |
| हिमानी      | २     | १८    | हुष         | २१६   | १०३   |                | { ११३ | ४६    |
| हिमावती     | ९१    | १३८   | हुषमानस     | १९७   | ७     | हुत्स          | { २ ९ | ७     |
|             | { १८३ | ९०    | हु          | २७६   | ७     | हुत्सगविमुक्ता | ८७    | ११७   |
| हिरण्य      | { १८३ | ९१    | हुति        | { १४  | ५७    | हुत्सांग       | ९१    | १४२   |
|             | { १८३ | ९४    |             | { २४  | ७१    |                | { १३  | ४७    |
| हिरण्यगर्भ  | ८     | १६    | हुष्ट       | २९    | २८    | हुदिनी         | { १९  | ९     |
| हिरण्यबाह   | ५५    | ३४    | हुमकूट      | ६६    | ३     |                | { ५५  | ३     |
| हिरण्यरेतस  | १४    | ५५    | हुमकुण्ड    | ७१    | २९    |                | { २४७ | ११२   |
| हिक         | { २७५ | ३     | हुमकुण्ड    | ७१    | २९    | ही             | ४३    | २३    |
|             | { २७६ | ७     | हुमन्       | { १८३ | ९४    | हीन            | २१४   | ९१    |
| हिकमीपिका   | ९४    | १५७   |             | { २९१ | २३    | हीन            | २१४   | ९१    |
| ही          | २७७   | ९     | हुमन्त      | २७    | १८    | हीन            | २१४   | ९१    |
|             | { २१७ | १     | हुमपुष्पक   | ७८    | ६३    | हीनेर          | ८८    | १२१   |
| हीन         | { २५  | १२८   | हुमपुष्पिका | ८     | ७१    | हीपा           | १५२   | ४७    |
| हुतमुग्धिया | १३६   | २१    | हुमात्रि    | १३    | ४९    | हुयिमा         | ८८    | १९४   |

श्रीः ।

# ❀ अथाऽमरकोशः ❀

## भाषाटीका समेतः ।

प्रथम काण्ड १.

अथ स्वर्गवर्गः १.

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्या-  
नघा गुणाः ॥ सेव्यतामक्षयो  
धीराः स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥

यस्य भासा जगद्धाति सदैव सच  
राचरम् । त नौमि परमात्मान भक्ता-  
नाममयङ्करम् ॥ १ ॥ जटाट्वीगलद्रुद्ध  
चन्द्रचूडामणिं शिवम् । स्मृत्वा मरकतेः  
कुर्वे भाषा व्याख्या सुधानुगाम् ॥ २ ॥

अन्वयः—हे अनघाः ! भवद्वि, स,  
अक्षयः, धीराः, श्रिये, च, अमृताय, च,  
सेव्यताम् । ज्ञानदयासिन्धोः, आगाधस्य,  
अस्य, ई, अस्ति, गुणाः, च, सन्ति ॥ १ ॥

अर्थ—हे सज्जनो ! तुम उस अविनाशी  
ज्ञानदाता गुरुकी भोग और मोक्षकी

१ धिय राति ददाति । 'रा दाने'  
अस्मात्किप् । धीरा ज्ञानप्रदो गुरुरित्यर्थः ।

भाषा—ज्ञानके देनेवाले गुरुको धीरा  
कहते हैं ।

प्राप्ति होनेके अर्थ सेवा करो कि, शास्त्र  
करिके सपन्न और दयाकरिके पूर्ण तथा  
विषयोसे विरक्त ऐसे इन गुरुके पास  
अखण्डलक्ष्मी और सत्य, शौच, दया,  
क्षमा आदिक गुण हैं ॥ १ ॥

ग्रन्थमें वक्तव्य विषय दिखलाते हैं.—

समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः  
प्रतिसंस्कृतैः ॥ सम्पूर्णमुच्यते  
वर्गे नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥

अन्वयः—मया, अन्यतन्त्राणि, समा-  
हृत्य, संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः, वर्गैः युक्त,  
नामलिङ्गानुशासन, सम्पूर्णम् उच्यते ॥ २ ॥

अर्थ—मैं व्याडि आदिकोंके नामलि-  
ङ्गानुशासन अथवा सिद्धार्थोंका सग्रह  
करके शब्दोंके क्रमानुसार कथन कर-  
नेसे सुशोभित ऐसे थोड़े २ शब्दोंके  
वर्गोंसे अर्थात् पृथक् २ प्रकरणोंसे युक्त  
ऐसा शब्द और उनके लिङ्गोंका स्पष्ट  
रीतिसे बोध करनेवाला कोश परिपूर्ण  
रीतिसे कहता हूँ ॥ २ ॥

इस ग्रंथमें छिन्नादिभ्यवस्था विसृष्ट  
प्रकारसे की है वह कहताहै—

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च  
कृत्रचित् । स्त्रीपुनपुंसक श्लेष तद्वि  
श्लेषविधेः कश्चित् ॥ ३ ॥

अन्वय—अत्र, प्रायशः, रूपभेदेन,  
स्त्रीपुनपुंसकं, श्लेषम्, च, कृत्रचित्, साहचर्य  
यात्, स्त्रीपुनपुंसकं, श्लेषम्, कश्चित्,  
तद्विश्लेषविधेः, स्त्रीपुनपुंसकं, श्लेषम् ॥ १ ॥

अर्थ—इस ग्रंथमें बहुत करके इष्ट,  
आप्त, विसर्ग और अनुस्वार इनसे स्त्रीलिङ्ग  
पुलिङ्ग, और नपुंसकलिङ्ग जानना  
जैसे 'पद्मालया' और 'पद्मा' यहाँ

आप् हानसे 'पद्मालया' और 'पद्मा'  
यह स्त्रीलिङ्ग है 'पिनाकाऽजगत्तम धनुः'  
यहाँ 'पिनाक' यहाँपर विसर्ग है इससे  
'पिनाक' शब्द पुलिङ्ग है 'अजगत्तमम्'

यहाँपर अनुस्वार हानसे 'अजगत्तम' शब्द  
नपुंसक है कहींपर विशेषणमें स्थित अथवा  
सर्नामवाचक शब्दमें स्थित रूपक भदसे

लिङ्गोंमें भेद होता है ऐसा—'तत्परोष्ठनु'  
यहाँपर 'तत्पर' इस विशेषणका पुलिङ्ग  
रूप हानसे उसका विशय्य जो 'हनु'  
शब्द है उमरा भी पुलिङ्गहीमें रूप  
चलाता है तथा 'पुनः कृत भद्रान्'  
सेवाया पुनुर पुमान्' यहाँ 'सा' यह

जो सर्वनामसंज्ञकशब्द है वह 'पुनः'  
शब्दका विरोध है इससे 'सा' इसका  
स्त्रीलिङ्ग होनेसे उसका विरोध्य जो  
'पुनः' शब्द है उसकामी स्त्रीलिङ्ग है  
और निश्चित है कि जिसका ऐसा शब्द  
समीप उच्चारण करनेसे उसका जो लिङ्ग  
है वही लिङ्ग उस समीप पड़े हुए अनि-  
श्चितलिङ्गवाले शब्दका जानना जैसे  
'अश्वयुगभिनी' 'मानु कर' 'विपद्भिष्णु'  
पदम्' यहाँपर 'अश्वयुग्', 'मानु' और  
'विपद्' इन अनिश्चित लिङ्गवाले शब्दोंके  
समीप निश्चित लिङ्गवाले 'अश्विनी'  
'कर' और 'विष्णुपद' ये शब्द होनेसे  
उनके जो लिङ्ग हैं वही लिङ्ग उन अनि-  
श्चित लिङ्गवाले शब्दोंके जानन अर्थात्  
'अश्वयुग्' शब्दका स्त्रीलिङ्ग, 'मानु'  
शब्दका पुलिङ्ग, और 'विपद्' शब्दका  
नपुंसकलिङ्ग है इस प्रकारसे जानन  
और कहीं कहींपर उन स्त्री, पुं,  
नपुंसक इनके विशेषणोंमें स्थित कथन कर  
नेसे स्त्रीलिङ्ग, पुलिङ्ग, और नपुंसक लिङ्ग  
जानना जैसे 'मरी स्त्रीदुन्दुभि पुमान्'  
'रोधि शोचिष्ये क्षीमे' यहाँपर  
'मरी' शब्दके समीप 'स्त्री' ऐसा  
विशय्यीतिसे कथन किया है इसनास्त्र  
'मरी' यह शब्द स्त्रीलिङ्ग है और  
'दुन्दुभि' शब्दके समीप 'पुमान्' यह

११ ॥ २८ ॥ भास्वत् १२ विस्वत्  
१३ सप्ताश्व १४ हरिदश्व १५ उष्ण-  
रश्मि १६ विकर्चन १७ अर्क १८  
मार्तण्ड १९ मिहिर २० अरुण २१  
पृषन् २२ ॥ २९ ॥ द्युमणि २३  
तशणि २४ मित्र २५ चित्रमानु २६  
विरोचन २७ विभावसु २८ ग्रहपति  
२९ त्रिषाम्पति ३० अहर्षति ३१ ॥  
॥ ३० ॥ भानु ३२ हस्त ३३ सहस्राशु  
३४ तपन ३५ सवितृ ३६ रवि ३७

माठरः पिगलो दण्डश्चण्डांशोः  
पारिपार्श्विकाः ॥ ३१ ॥

सूर्यपार्श्ववर्तीतीनोंके एक एक नाम ॥

माठर १ पिगल २ दण्ड ३ ॥ ३१ ॥

सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपि-  
गरुडाग्रजः ॥

सूर्यके सारथिके नाम ५ ॥ सूरसूत

१ अरुण २ अनूरु ३ काश्यपि ४  
गरुडाग्रज ५ ॥

परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकम  
पहले ॥ ३२ ॥

सूर्यके मण्डलके अर्थात् जो कभी २

उनके चारोंओर घेरासा वन जाता  
है उसके नाम ४ ॥ परिवेष १ परिधि  
२ उपसूर्यक ३ मण्डल ४ ॥ ३२ ॥

किरणोत्समयूखांशुगभस्तिघृणि-

रश्मयः ॥ भानुः करो मरीचिः  
स्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

सूर्यकिरणके नाम ११ ॥ किरण १

उत्त २ मयूख ३ अशु ४ गभस्ति ५  
घृणि ६ रश्मि ७ भानु ८ कर ९ मरीचि  
१० दीधिति ११ ॥ ३३ ॥

स्युः प्रभारुग्गुचिस्त्विद्धूभाभाश्छ-  
विद्युतिदीप्तयः ॥ रोचिः शोचि-  
रुभे क्लीबे-

दीप्तिके नाम ११ ॥ प्रभा १ रुच्

२ रुचि ३ त्विप् ४ भा ५ भास् ६  
छवि ७ द्युति ८ दीप्ति ९ रोचिस् १०  
शोचिस् ११ ॥

-प्रकाशो द्योत आतपः ॥ ३४ ॥

धूपके नाम ३ ॥ प्रकाश १ द्योत  
२ आतप ३ ॥ ३४ ॥

कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं  
कदुष्णं त्रिषु तद्वति ॥

थोडे गरमके नाम ४ ॥ कोष्ण १  
कवोष्ण २ मन्दोष्ण ३ कदुष्ण ४ ॥

तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्व-

बहुत गरमके नाम ३ ॥ तिग्म १  
तीक्ष्ण २ खर ३ ॥

-मृगतृष्णा मरीचिका ३५ ॥

मृगतृष्णाके नाम १ ॥ मृगतृष्णा  
१ मरीचिका २ ॥ ३५ ॥

इति दिग्दर्श. ॥ ३ ॥

अथ कालवर्गः ४

कालोदिष्टोप्यनेहापि समयो-

समयके नाम १ ॥ काठ १ दिष्ट २

अन्तस् ३ समय ४ ॥

-प्यथ पक्षतिः ॥

प्रतिपद् द्वे इमे स्त्रीत्वे-

प्रतिपदाके नाम २ ॥ पक्षति १

प्रतिपत् २ ॥

-तदाद्यास्तिथयो द्वयोः ॥ १ ॥

प्रतिपदादिका नाम १ ॥ तिथि १ ॥ १ ॥

घस्रो दिनाहनी वा तु स्त्रीष्वे  
दिवसवासरा ॥

दिनके नाम १ ॥ घस्र १ दिन २

अहन् ३ दिवस ४ वासर ५ ॥

प्रत्युपोऽहर्मुख कल्पमुपः प्रत्यु  
पत्नी अपि ॥ २ ॥

प्रभात च-

प्रातः कालके नाम १ ॥ प्रत्युप १

अहर्मुख २ कल्प ३ उप ४ प्रत्युप  
५ ॥ २ ॥ प्रभात ॥ ६ ॥

-दिनान्ते तु सार्यसञ्ज्ञा  
पितृमसः ॥

सार्यकालके नाम ४ ॥ दिनान्त १

सायम् २ सञ्ज्ञा ३ पितृमसः ४ ॥

माह्वापराह्ममध्याह्नसिद्धय-

प्रातःकालका नाम १ ॥ प्राह १ ॥

मध्याह्नकालका नाम १ ॥ मध्याह्न १ ॥

मध्याह्नोच्चर कालोका नाम १ ॥ अप-

राह १ ॥ इन तीनों कालोका इकट्ठा

नाम ॥ प्रिसम्भ १ ॥

-मय शर्वरी ॥ ३ ॥

निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रि

यामा क्षणदाक्षपा ॥ विमावरतिम

स्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥

रात्रिके नाम १ २ ॥ शर्वरी १ ॥

३ ॥ निशा २ निशीथिनी ३ रात्रि ४

प्रियामा ५ क्षणदा ६ क्षपा ७ विमा

वरी ८ तमस्विनी ९ रजनी १०

यामिनी ११ तमी १२ ॥ ४ ॥

समिक्ता सामसी रात्रि-

अम्बिकारी रात्रिका नाम १ तमिक्ता १ ॥

-ज्यौस्त्री चन्द्रिक्यान्विता ॥

टजमाळी रात्रिका नाम १ ॥ ज्यौस्त्री १ ॥

आगामिबर्तमानाहर्मुक्तायां

निशि पक्षिणी ॥ ५ ॥

वर्तमान और आगामिदिनोंके

मध्यकी रात्रिका नाम १ पक्षिणी १ ॥ ५ ॥

गणरात्रि निशा बह्वच-

बहुतरात्रियोक्ता नाम १ गणरात्रि ॥

-प्रदोषो रजनीमुखम् ॥

रात्रिके प्रथमभागके नाम २ ॥

प्रदोष १ रजनीमुख २ ॥

अर्धगत्रनिशीथौ द्वौ-

आधीरात्रिके नाम २ ॥ अर्धरात्र १  
निशीथ २ ॥

-द्वौ यामप्रहरौ समौ ॥ ६ ॥

प्रहरके नाम २ ॥ याम १ प्रहर २ ॥ ६ ॥

स पर्वसन्धिः प्रतिपत्पञ्चदश्यो-  
र्यदन्तरम् ॥

प्रतिपदा १ और पञ्चदशी १९ । ३०  
के मध्यके कालका नाम १ ॥ पर्वसन्धि १ ॥

पक्षान्तौ पञ्चदश्यौ द्वे-

अमावास्या और पूर्णिमाका नाम  
१ ॥ पक्षान्त १ ॥

-पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥

पूर्णिमाके नाम २ ॥ पौर्णमासी १  
पूर्णिमा २ ॥ ७ ॥

कलाहीने सानुमतिः-

जिस पूर्णमासीमें प्रतिपदाके योगसे  
चन्द्रमाकी कला हीन हो उसका नाम  
१ ॥ अनुमति १ ॥

-पूर्णे राका निशाकरे ॥

जिसमें पूर्ण चन्द्रमा हो उस पूर्णिमाका  
नाम १ ॥ राका १ ॥

अमावास्या त्वमावस्या दर्शः  
सूर्येन्दुसङ्गमः ॥ ८ ॥

अमावास्याके नाम ४ ॥ अमावास्या  
१ अमावस्या २ दर्श ३ सूर्येन्दुस-  
गम ४ ॥ ८ ॥

२

सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली-

जिसमें चतुर्दशीके योगसे चन्द्रमाका  
दर्शन होय उस अमावास्याका नाम १ ॥  
सिनीवाली १ ॥

-सा नष्टेन्दुकला कुहूः ॥

जिसमें बिलकुल चन्द्रदर्शन न होय  
उस अमावास्याका नाम १ ॥ कुहू १ ॥

उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ  
च पूणि च ॥ ९ ॥

सोपप्लवोपरक्तौ द्वा-

चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहणके नाम  
४ ॥ उपराग १ ग्रह २ ॥ ९ ॥  
सोपप्लव ३ उपरक्त ४ ॥

-वग्न्युत्पात उपाहितः ॥

धूम्रकेतुके नाम २ ॥ वग्न्युत्पात  
१ उपाहित २ ॥

एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवा-  
करनिशाकरौ ॥ १० ॥

सूर्य और चन्द्र दोनोंका इकट्ठा  
नाम १ ॥ पुष्पवन्त १ ॥ १० ॥

अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा-

पलकमारनेका नाम निमेष ॥  
अठारह निमेषोंका नाम १ ॥ काष्ठा १ ॥

-त्रिशन्तु ताः कला ॥

तीस काष्ठाओंका नाम १ ॥  
कला १ ॥



तास्तु त्रिंशत्क्षण—

तीस क्षणोंका नाम १ ॥ क्षण १॥

—स्तेषु मुहूर्त्तौ द्वादशास्त्रियाम् ११॥

बारह क्षणोंका नाम १॥ मुहूर्त्त १॥ ११॥

ते तु त्रिंशद्द्वयोरात्रः—

तीस मुहूर्त्तोंका नाम १ ॥ अहारात्र १॥

पक्षस्ते दक्षपञ्च च ॥

पंद्रह दिनरातका नाम १ ॥ पक्ष १॥

पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ—

पक्ष दो हैं १ ॥ शुक्ल १ कृष्ण २॥

—मासस्तु तावुमौ ॥ १२ ॥

दो पक्षोंका नाम १॥ मास १॥ १२॥

द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ स्याद्वतु—

मार्गशीर्षादि दो दो मासोंका नाम

१ ॥ ऋतु १ ॥

—स्त्वैरयनं त्रिभिः ॥

तीन ऋतुओंका नाम १ ॥ अयन १॥

अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य

दो अयनोंके २ भेद ॥ उत्तरायण १॥

दक्षिणायन २ ॥

—वत्सरः ॥ १३ ॥

दो अयनोंका नाम १ ॥ वत्सर १॥ १३॥

समरात्रिन्दिषे फाले विप्रुषदि

पूर्वं च सप्त ॥

निसर्गे दिनरात समान होते हैं

उत्त सक्रांति ( तुल्य और मप ) के

नाम २ ॥ विप्रुषत् १ विप्रुष २ ॥

मार्गशीर्षे सदा मार्ग आमहा

यणिकम् स\* ॥ १४ ॥

अगहन महानेके नाम ४ ॥ मार्ग-

शीर्ष १ स्रह्म २ मार्ग ३ आमहा

यणिक ४ ॥ १४ ॥

पौषे तैपसहस्यौ द्वौ—

पूसमासके नाम २॥ पौष १ तैप २ सहस्य ३॥

—तथा माघेऽ

माघमासके, नाम २॥ तपस्य १ माघ २॥

—थ फाल्गुने ॥

स्यात्तपस्याः फाल्गुनिक—

फाल्गुनमासके नाम ३ ॥ फाल्गुन

१ तपस्य २ फाल्गुनिक ३ ॥

—स्याच्चैत्रे चैत्रिको मघुः ॥ १५ ॥

चैत्रमासके नाम ३ ॥ चैत्र १

चैत्रिक २ मघु ३ ॥ १५ ॥

वैशाखे माघस्यो राघो—

वैशाखमासके नाम ३ ॥ वैशाख

१ माघ २ राघ ३ ॥

—ज्येष्ठे शुक्ल—

ज्येष्ठके नाम २॥ ज्येष्ठ १ शुक्ल २॥

—इधुधिसत्त्वयम् ॥

भाषादे—

आषाढमासके नाम २ ॥ शुचि १  
आषाढ २ ॥

—श्रावणे तु स्यान्नभाः

श्रावणिकश्च सः ॥ १६ ॥

श्रावणमासके नाम ३ ॥ श्रावण १

नभस् २ श्रावणिक ३ ॥ १६ ॥

स्युर्नभस्यः प्रौष्ठपदभाद्रभाद्र-  
पदाः समाः ॥

भाद्रो मासके नाम ४ ॥ नभस्य १

प्रौष्ठपद २ भाद्र ३ भाद्रपद ४ ॥

स्यादाश्विन इषोप्याश्वयुजोऽपि—

कारमासके नाम ३ ॥ आश्विन १

इष २ आश्वयुज ३ ॥

—स्यात्तु कार्तिके ॥ १७ ॥

वाहुलोर्जो कार्तिकिको—

कार्तिकमासके नाम ४ ॥ कार्तिक

१ ॥ १७ ॥ वाहुल २ ऊर्ज ३

कार्तिकिक ४ ॥

हेमन्तः—

अगहन पूस माससे सिद्ध हुई ऋतुका  
नाम १ ॥ हेमन्त १ ॥

—शिशिरोऽस्त्रियाम् ॥

माघ फाल्गुनसे सिद्ध हुई ऋतुका  
नाम १ ॥ शिशिर १ ॥

वसन्ते पुष्पसमयः सुरभि—

चैत्र वैशाखसे सिद्ध ऋतुके नाम ३ ॥

वसन्त १ पुष्पसमय २ सुरभि ३ ॥

—ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥

निदाघ उष्णोपगम उष्ण

ऊष्मागमस्तपः ॥

ज्येष्ठ आषाढके समयके नाम ७ ॥

ग्रीष्म १ ऊष्मक २ ॥ १८ ॥ निदाघ ३

उष्णोपगम ४ उष्ण ५ ऊष्मागम ६ तप ७ ॥

स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूम्नि वर्षा—

सावन भाद्रोके ऋतुके नाम २ ॥

प्रावृट् १ वर्षा २ ॥

—अथ शरत् स्त्रियाम् ॥ १९ ॥

कार कार्तिकके समयका नाम १

शरद् १ ॥ १९ ॥

षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां

युगैः क्रमात् ॥

मार्गशीर्ष आदि दो २ महीनोंके

ये छः ऋतु होते हैं ॥

संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनो-

ऽस्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥

वर्षके नाम ६ ॥ संवत्सर १ वत्सर

२ अब्द ३ हायन ४ शरद् ५ समा

६ ॥ २० ॥

मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रो—

मनुष्योंके एकमहीनेका पितरोंका

दिनरात्रि होता है ॥

—वर्षेण दैवतः ॥

और एकवर्षका देवताओंका दिन-

रात्रि होता है ॥

दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः—

दशोके दो हजार युगका ब्रह्माका  
दिनरात्रि होता है ॥

—कल्पौ तु सौ नृणाम् ॥ २१ ॥

उन दो युगसहस्रोंका मनुष्योंका  
कल्प कहलेंहैं ब्रह्माका दिन मनुष्योंका  
स्थितिकाल और ब्रह्माकी रात्रि मनुष्यों  
का प्रलयकाल होता है ॥ २१ ॥

मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानां  
मेकसप्ततिः ॥

इकहत्तर दिव्यवर्षका मास १ ॥  
मन्वन्तर १ ॥

संवर्त प्रलयः कल्पः सप्तः  
कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥

प्रलयके नाम १ ॥ संवर्त १ प्रलय  
२ कल्प ३ क्षय ४ कल्पान्त १ ॥ २२ ॥

अस्त्री पंक पुमान्पाप्मा पार्ष  
किलिषपकसप्तमम् ॥ कल्पं इमि  
नेनोऽधर्महो दुरितदुष्कृतम् ॥ २३ ॥

पापके मास १२ ॥ पंक १ पाप्मन्  
२ पाप ३ किलिष ४ कल्प ५ कल्प  
६ इति ७ एतन् ८ अय ९ अहस  
१० दुरित ११ दुष्कृत १२ ॥ २३ ॥

स्याद्धर्ममतिषां पुण्यश्रेयसी  
मुहूर्तं वृष ॥

धर्मके नाम १ ॥ धर्म १ पुण्य २

श्रेयस् ३ सुकृत ४ वृष १ ॥

मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षप्रमोदामो  
दर्समदाः ॥ २४ ॥ स्यादानन्दयु  
रानन्दः क्षमशातसुखानि च ॥

हर्षके मास १२ ॥ मुद् १ प्रीति २  
प्रमद ३ हर्ष ४ प्रमोद ५ आमोद ६  
सम्पद ७ ॥ २४ ॥ आनन्दयु ८ आ  
नन्द ९ शर्मन् १० शात ११ सुख १२ ॥

अश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं  
मंगलं शुभम् ॥ २५ ॥

माधुकं भविकं भव्यं कुशलं  
क्षेममस्त्रियाम् ॥ शस्तं चा—

कल्याणके नाम १२ ॥ अश्रेयस्  
१ शिव २ भद्र ३ कल्याण ४ मंगल  
५ शुभ ६ ॥ २५ ॥ माधुक ७ भविक ८  
भव्य ९ कुशल १० क्षेम ११ शस्त १२ ॥

—अथ शिषु द्रव्ये पार्ष पुण्यं  
सुखादि च ॥ २६ ॥

पाप और पुण्यशब्द तथा  
मुखाशब्दसं छकर शास्त्राशब्द पयत जो  
शब्दहैं वो यदि द्रव्यवाचक हों तो  
तीनों ङिगोमें हातहैं ॥ २६ ॥

मत्तलिका मर्चदिका मका  
ण्डमुदतलजी ॥ प्रशस्तवाचका  
न्यम्—

अच्छेके नाम ९ ॥ मतल्लिका १  
मर्चाचिका २ प्रकाण्ड ३ उद्ध ४  
तल्लज ९ ॥

—न्ययः शुभावहो विधिः॥२७॥

शुभकारक विधिका नाम १ ॥

अय १ ॥ २७ ॥

दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री  
नियतिर्विधिः ॥

भाग्यके नाम ६ ॥ दैव १ दिष्ट २ भाग-  
धेय ३ भाग्य ४ नियति ५ विधि ६ ॥

हेतुर्ना कारणं बीज—

कारणके नाम ३ ॥ हेतु १ कारण  
२ बीज ३ ॥

—निदानं त्वादिकारणम्॥२८॥

आदिकारणका नाम १ ॥ निदान १ ॥ २ ॥

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः—

चैतन्यके नाम ३ ॥ क्षेत्रज्ञ १  
आत्मन् २ पुरुष ३ ॥

—प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ॥

प्रकृतिके नाम २ ॥ प्रधान १  
प्रकृति २ ॥

विशेषः कालिकोऽवस्था—

उमरका नाम १ ॥ अवस्था १ ॥

—गुणाः सत्त्वं रजस्तमः॥२९॥

गुणोंके नाम ३ ॥ सत्त्व १ रजस्  
२ तमस् ३ ॥ २९ ॥

जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्ति-  
रुद्भवः ॥

जन्मके नाम ६ ॥ जनुम् १ जनन  
२ जन्मन् ३ जनि ४ उत्पत्ति ५ उद्भव ६ ॥

प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तु-  
जन्युश्शरीरिणः ॥ ३० ॥

प्राणीके नाम ६ ॥ प्राणिन् १  
चेतन २ जन्मिन् ३ जन्तु ४ जन्यु  
५ शरीरिन् ॥ ६ ॥ ३० ॥

जातिर्जातं च सामान्यं—

जातिमात्रके नाम ३ ॥ जाति १  
जात २ सामान्य ३ ॥

—व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ॥

व्यक्तिवाचकके नाम २ ॥ व्यक्ति  
१ पृथगात्मता २ ॥

चित्तं तु चेतो हृदयं स्वातं  
हन्मानसं मनः ॥ ३१ ॥

मनके नाम ७ ॥ चित्त १ चेतस्  
२ हृदय ३ स्वान्त ४ हृद् ५ मानस  
६ मनस् ७ ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

अथ धीवर्गः ५.

बुद्धिर्मनीषा विषणा धीः प्रज्ञा  
शेमुषी मतिः ॥ प्रेक्षोपलब्ध्याश्चि-  
त्संवित्प्रातिपञ्ज्ञासिचेतनाः ॥ १ ॥

दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मण-  
दशके दो हजार युगका ब्राह्मणका  
दिनरात्रि होता है ॥

—कल्पौ तु सौ नृणाम् ॥२१॥

उन दो युगसहस्रोंका मनुष्योंका  
कल्प कहतेहैं ब्राह्मणका दिन मनुष्योंका  
स्मृतिकाल और ब्राह्मणकी रात्रि मनुष्यों  
का प्रलयकाल होता है ॥ २१ ॥

मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगाना  
मेकस्मिन् ॥

इकहत्तर दिव्यवर्षका नाम १ ॥  
मन्वान्तर १ ॥

संवर्तं प्रलयं कल्प क्षयं  
कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥

प्रलयके नाम १ ॥ संवर्त १ प्रलय  
२ कल्प ३ क्षय ४ कल्पान्त ५ ॥२२॥

अस्त्री पंक पुमान्पाप्मा पापं  
किलिपकस्मपम् ॥ कलुषं वृमि  
नेनोऽधर्महो दुरितदुष्कृतम् ॥२३॥

पापके नाम १२ ॥ पंक १ पाप्मन्  
२ पाप ३ किलिप ४ कस्मप ५ कलुष  
६ वृमि ७ पनम् ८ भव ९ अहम्  
१ दुरित ११ दुष्कृत १२ ॥२३॥

स्याद्वर्ममतिर्या पुण्यश्रेयसी  
सुकृतं वृष ॥

धर्मके नाम १ ॥ धर्म १ पुण्य २  
श्रेयस् ३ सुकृत ४ वृष ५ ॥

सुखीति ममदो हर्षप्रमोदामो  
वसमदा ॥ २४ ॥ स्यादानन्दसु  
रानन्द शर्मशाठसुरावाणि च ॥

हर्षके नाम १२ ॥ सुख १ प्रीति २  
ममद ३ हर्ष ४ प्रमोद ५ आमोद ६  
सम्मद ७ ॥ २४ ॥ आनन्दसु  
रानन्द ९ शर्मन् १० शाठ ११ सुख १२ ॥

श्वश्रेयसं शिष मद्रं कल्याण  
मगलं शुभम् ॥ २५ ॥

मायुकं भविकं भव्यं कुशल  
क्षेममस्त्रियाम् ॥ अस्तं चा-

कल्याणके नाम १२ ॥ श्वश्रेयस्  
१ शिष २ मद्र ३ कल्याण ४ मगल  
५ शुभ ६ ॥ २५ ॥ मायुक ७ भविक ८  
भव्य ९ कुशल १० क्षेम ११ अस्त १२ ॥

—यश्च शिषु वृज्ये पापं पुण्यं  
सुखादि च ॥ २६ ॥

पाप और पुण्यशब्द तथा  
सुखशब्दसे ऊपर वास्तवम् पर्यन्त जो  
शब्दहैं जो यदि प्रत्येकाधक हो तो  
तीनों छिगोंमें होतेहैं ॥ २६ ॥

महादिका मघादिका मका  
ण्डमुदतल्लजी ॥ महास्तवाधका,  
न्यम्—

मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिः-  
श्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥

मोक्षोऽपवर्गो-

मोक्षके नाम ८ ॥ मुक्ति १ कैवल्य  
२ निर्वाण ३ श्रेयस् ४ निःश्रेयस ५  
अमृत ६ ॥ ६ ॥ मोक्ष ७ अपवर्ग ८ ॥

-स्थाज्ञानमविद्याहंमतिः स्त्रियाम् ॥

अज्ञानके नाम ३ ॥ अज्ञान १  
अविद्या २ अहम्मति ३ ॥

रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शश्च-  
विषया अमी ॥ ७ ॥

गोचरा इन्द्रियार्थाश्च-

पञ्चविषयोंके नाम ५ ॥ रूप १  
शब्द २ गन्ध ३ रस ४ स्पर्श ५ ॥ ७ ॥

इकट्ठे रूपरसादिके नाम ३ ॥  
विषय १ गोचर २ इन्द्रियार्थ ३ ॥

-हृषीकं विषयीन्द्रियम् ॥

इन्द्रियके नाम ३ ॥ हृषीक १

विषयि २ इन्द्रिय ३ ॥

कर्मेन्द्रियं तु पायवादि-

कर्मेन्द्रियोंके नाम ॥ गुदा १ आदि ॥

-मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥

१ पायूपस्थे पाणिपादौ वाक्चेतीन्द्रिय-  
समूहः । भाषा-पायु १ उपस्थ २  
पाणि ३ पाद ४ और वाक् ५ यह पांच  
कर्मेन्द्रिय हैं ॥

ज्ञानेन्द्रियोके नाम २ ॥ मनस् १ नेत्र  
२ आदि ॥ ८ ॥

तुवरस्तु कषायोऽध्वी मधुरो  
लवणः कटुः ॥ तिक्तोऽम्लश्च रसाः  
पुंसि-

छः रसोंके नाम ६ ॥ तुवर-  
कषाय १ मधुर २ लवण ३ कटु ४  
तिक्त ५ अम्ल ६ ॥

-तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥

कषाय आदि रसवाचक शब्द यदि  
द्रव्यवाचक होयें तो तीनों लिंगोंमें  
होते हैं ॥ ९ ॥

विमर्दोऽत्ये परिमलो गन्धे जन-  
मनोहरे ॥

मनुष्योंके मनको हरनेवाले विसनेसे  
उत्पन्न हुए सुगन्धका नाम १ ॥ परिमल १ ॥

आमोदः सोऽतिनिर्हारी-

अत्यन्त मनको हरनेवाले सुगंधिका  
नाम १ ॥ आमोद १ ॥

-वाच्यलिङ्गत्वमागुणात् १०

यहासे लेकर "गुणे शुक्लादयः पुंसि",  
इससे पहले जो शब्द हैं वह वाच्यलिंग  
अर्थात् विशेष्यलिंग होते हैं ॥ १० ॥

१ मनः कर्णस्तथा नेत्र रसना च  
त्वचा सह । नासिका चिति षट् तानि धीन्द्रि-  
याणि प्रचक्षते ॥ भाषा-मन १ कर्ण २  
नेत्र ३ जिह्वा ४ त्वचा ५ और नासिका  
यह ६ ज्ञानेन्द्रिय ( धीन्द्रिय ) हैं ॥

बुद्धिके नाम १४ ॥ बुद्धि १  
मत्तीया २ विष्णा ३ घी ४ प्रज्ञा ५  
शमुपी ६ मत्ति ७ प्रेक्षा ८ उपलब्धि  
९ धित् १० सविद् ११ प्रतिपद्  
१२ इति १३ चतना १४ ॥ १ ॥

धीर्धारणावती मेधा-

कड़ीहुई वार्त्ताको धारण रखने  
वाली बुद्धिका नाम १ ॥ मेधा १ ॥

-संकल्प कर्म मानसम् ॥

मनकरी कामनाका नाम १ ॥ संकल्प १ ॥

चिन्तामोगो मनस्कार-

किस्ती बस्तुमें चिन्तके तापर हो जाने  
के नाम २ ॥ चिन्तामोग १ मनस्कार २ ॥

ध्वर्चा संख्या विचारणा ॥ २ ॥

विचारके नाम ३ ॥ चर्चा १

संख्या २ विचारणा ३ ॥ २ ॥

अध्याहारस्तक ऊहों-

अध्यामेचारके नाम ३ ॥ अध्या  
हार १ तर्क २ ऊह ३ ॥

-विचिकित्सा शु सशय ॥

संवेददापरी धा-

संवेदके नाम ४ ॥ विचिकित्सा  
१ सशय २ संवेद ३ दापर ४ ॥

-उय समी निर्णयनिश्चयो ॥ ३ ॥

निश्चयन नाम २ ॥ निर्णय १  
निश्चय २ ॥ ३ ॥

मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता-

परलोक्षको मिथ्या ज्ञाननेके नाम २ ॥

मिथ्यादृष्टि १ नास्तिकता २ ॥

-व्यापादो ब्रह्मचिन्तनम् ॥

परब्रह्मके नाम २ ॥ व्यापाद १

ब्रह्मचिन्तन २ ॥

समी सिद्धान्तराद्धान्तौ-

निश्चयकरी हुई बातके नाम २ ॥

सिद्धान्त १ राद्धान्त २ ॥

-भ्रान्तिर्मिथ्यामातिर्भ्रमः ॥ ४ ॥

भ्रमके नाम ३ ॥ भ्रान्ति १

मिथ्यामति २ भ्रम ३ ॥ ४ ॥

संविदागू प्रतिज्ञानं नियमा

भवसञ्चया ॥ अङ्गीकाराभ्युपगम

प्रतिश्वसमाधय ॥ ५ ॥

प्रतिज्ञाके नाम १० ॥ संविद् १

आगू २ प्रतिज्ञान ३ नियम ४ आशय

५ सञ्चय ६ अङ्गीकार ७ अभ्युपगम

८ प्रतिश्वस ९ समाधि १० ॥ ५ ॥

मोक्षे धीर्ज्ञान-

मोक्षमें बुद्धिज्ञानेका नाम १ ॥

ज्ञान १ ॥

मन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ॥

मोक्षमें अन्यत्र विज्ञान शिल्पशास्त्रों

शास्त्रमें बुद्धिज्ञानेका नाम १ ॥

विज्ञान १ ॥

मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिः-

श्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥

मोक्षोऽपवर्गो-

मोक्षके नाम ८ ॥ मुक्ति १ कैवल्य

२ निर्वाण ३ श्रेयस् ४ निश्श्रेयस ५

अमृत ६ ॥ ६ ॥ मोक्ष ७ अपवर्ग ८ ॥

-ऽथाज्ञानमविद्याहंमतिः स्त्रियाम् ॥

अज्ञानके नाम ३ ॥ अज्ञान १

अविद्या २ अहम्मति ३ ॥

रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च-

विषया अमी ॥ ७ ॥

गोचरा इन्द्रियार्थाश्च-

पञ्चविषयोंके नाम ५ ॥ रूप १

शब्द २ गन्ध ३ रस ४ स्पर्श ५ ॥ ७ ॥

इकट्ठे रूपरसादिके नाम ३ ॥

विषय १ गोचर २ इन्द्रियार्थ ३ ॥

-हृषीकं विषयीन्द्रियम् ॥

इन्द्रियके नाम ३ ॥ हृषीक १

विषयि २ इन्द्रिय ३ ॥

कर्मेन्द्रियं तु पाखादि-

कर्मेन्द्रियोंके नाम ॥ गुदा १ आदि ॥

-मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥

१ पायूपस्थे पाणिपादौ वाक्चेतीन्द्रिय-  
सग्रह । भाषा-पायु १ उपस्थ २  
पाणि ३ पाद ४ और वाक् ५ यह पाच  
कर्मेन्द्रिय हैं ॥

ज्ञानेन्द्रियोंके नाम २ ॥ मनस् १ नेत्र  
२ आदि ॥ ८ ॥

तुवरस्तु कषायोऽस्त्री मधुरो

लवणः कटुः ॥ तिक्तोऽम्लश्च रसाः

पुंसि-

छः रसोंके नाम ६ ॥ तुवर-

कषाय १ मधुर २ लवण ३ कटु ४

तिक्त ५ अम्ल ६ ॥

-तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥

कषाय आदि रसवाचक शब्द यदि

द्रव्यवाचक होयें तो, तीनों लिंगोंमें

होते हैं ॥ ९ ॥

विमर्दोऽत्ये परिमलो गन्धे जन-

मनोहरे ॥

मनुष्योंके मनको हरनेवाले घिसनेसे

उत्पन्न हुए सुगन्धका नाम १ ॥ परिमल १ ॥

आमोदः सोऽतिनिर्हारी-

अत्यन्त मनको हरनेवाले सुगंधिका

नाम १ ॥ आमोद १ ॥

-वाच्यलिङ्गत्वमागुणात् १०

यहासे लेकर "गुणे शुक्लादयः पुंसि",

इससे पहले जो शब्द हैं वह वाच्यलिङ्ग

अर्थात् विशेष्यलिङ्ग होते हैं ॥ १० ॥

१ मन. कर्णस्तथा नेत्र रसना च

त्वचा सह । नासिका चेति षट् तानि धीन्द्रि-

याणि प्रचक्षते ॥ भाषा-मन १ कर्ण २

नेत्र ३ जिह्वा ४ त्वचा ५ और नासिका

यह ६ ज्ञानेन्द्रिय ( धीन्द्रिय ) हैं ॥



समाकर्षी तु निर्हारी-

दूहीति जिसकी गन्ध आये उसके  
नाम २ ॥ समाकर्षिन् १ निर्हारिन् २ ॥

-सुरमिघ्राणतर्पण\* ॥

इष्टगन्धं सुगन्धिं स्या-

अत्युत्तमगन्धके नाम ४ ॥ सुरमि १  
घ्राणतर्पण २ इष्टगन्ध ३ सुगन्धि ४ ॥

-दामोदी मुखवासन ॥ ११ ॥

मुखको सुगन्धितकरनेवाले ता' छ  
आदिकी गन्धके नाम २ ॥ दामो-  
दिन् १ मुखवासन २ ॥ ११ ॥

पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो-

दुर्गन्धके नाम २ ॥ पूतिगन्धि १  
दुर्गन्ध २ ॥

-विक्त स्यादामगन्धि यत् ॥

कन्ध मृतादिके गन्धका नाम १ ॥  
विक्त १ ॥

शुक्लशुभ्रशुचिमेतविशदस्येत

पाण्डुराः ॥ १२ ॥ अवदातः  
सितो गौरो बलक्षो धवलोऽर्जुनः ॥

एतन्मले नाम १३ ॥ शुक्ल १ शु-  
भ्र २ शुचि ३ श्वेत ४ विशद ५ श्वेत  
६ पाण्डुर ७ ॥ १२ ॥ अवदात ८ सित  
९ गौर १ ( ५ ) छक्ष ११ धवल  
१२ अर्जुन १३ ॥

हरिणं पाण्डुरं पाण्डु-

कृष्ण पीलापनमिच्छेद्भयं सफेदवर्णके

नाम ३ ॥ हरिण १ पाण्डुर २ पाण्डु ३

-रीपत्पाण्डुस्तु धूसर\* ॥ १३ ॥

किमिह उज्ज्वलस्त नाम १ ॥  
धूसर १ ॥ १३ ॥

कृष्णो नीलासितश्चामकाल

स्यामलमेचका\* ॥

काळे वर्णके नाम ७ ॥ कृष्ण १  
नील ३ अस्ति ३ श्याम ४ काळ ५  
स्यामल ६ मेचक ७ ॥

पीतो गौरो हरिद्राम-

पीळे वर्णके नाम १ पीत १ गौर  
२ हरिद्राम ३ ॥

-पालाशो हरितो हरित् १४ ॥

हरेर्लक्षके नाम ३ पालाश १ हरित  
२ हरित् ३ ॥ १४ ॥

रोहितो लोहितो रक्ता-

लाजवर्णके नाम ३ ॥ रोहित १  
लोहित २ रक्त ३ ॥

-शोणं कोकनदच्छवि\* ॥

छाळ कमलके समानवर्णके नाम  
२ ॥ शोण १ कोकनदच्छवि २ ॥

अव्यक्तरागस्त्वरुणः-

थोळे छाळका नाम १ ॥ मरुण १ ॥

-श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥

मिले हुए सफेद और लालवर्णका

नाम १ ॥ पाटल १ ॥ १५ ॥

श्यावः स्यात्कपिशो-

मिले हुए काले और पीले रंगके  
नाम २ ॥ श्याव १ कपिश २ ॥

-धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ॥

मिले हुए काले और लालवर्णके नाम  
३ ॥ धूम्र १ धूमल २ कृष्णलोहित ३ ॥

कडारः कपिलः पिङ्गपिशंगौ  
कद्रुपिङ्गलौ ॥ १६ ॥

वानरकेसे रंगके नाम ६ ॥ कडार १  
कपिल २ पिङ्ग ३ पिशङ्ग ४ कद्रु ५  
पिङ्गल ६ ॥ १६ ॥

चित्रं किर्मीरकल्माषशबलैताश्च  
कर्बुरे ॥

चित्रवर्णके नाम ६ ॥ चित्र १ किर्मीर  
२ कल्माष ३ शबल ४ एत ५ कर्बुर ६ ॥

गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणि-  
लिङ्गास्तु तद्वति ॥ १७ ॥

गुणवाचक शुक्ल आदि शब्द पुल्लिङ्ग  
होते हैं, और द्रव्यवाचक शब्द द्रव्यके  
अनुसार लिङ्गमें होते हैं ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥

अथ शब्दादिवर्गः ६.

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वा-  
ज्याणी सरस्वती ॥

सरस्वतीके नाम ७ ॥ ब्राह्मी १  
भारती २ भाषा ३ गिर, गिरा ४ वाच्  
५ वाणी ६ सरस्वती ७ ॥

व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं  
वचनं वचः ॥ १ ॥

बोलनेके नाम ६ ॥ व्याहार १  
उक्ति २ लपित ३ भाषित ४ वचन ५  
वचस् ॥ ६ ॥ १ ॥

अपभ्रंशोऽपशब्दः स्या—

अपभ्रष्ट अर्थात् व्याकरणकी रीतिसे  
अशुद्ध शब्दका नाम १ ॥ अपभ्रश १ ॥

—च्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ॥

व्याकरणशास्त्रानुसार शुद्धशब्दका  
नाम १ ॥ शब्द १ ॥

तिङ्मुखान्तचयो वाक्यं क्रिया वा  
कारकान्विता ॥ २ ॥

तिङ्मुखान्तचयोंके समूह और कारक  
युक्त क्रियाका नाम १ ॥ वाक्य १ ॥ २ ॥

श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी—  
वेदके नाम ४ ॥ श्रुति १ वेद २  
आम्नाय ३ त्रयी ४ ॥

—धर्मस्तु तद्विधिः ॥

वेदमें कही हुई सच्चा तर्पण आदि  
विधिका नाम १ ॥ धर्म १ ॥

स्त्रियामृक्छामयशुपी—

कदोके नाम १॥ ऋष् १ यजुस् २  
सामन् ३ ॥

—इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥

इन्ही तीनों कदोका इच्छा नाम १॥  
त्रयी १ ॥ ३ ॥

शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्ग—

केदके छः अंगोंके नाम १ ॥ शिक्षा  
१ कस्य २ व्याकरण ३ निस्क ४  
व्योतिष ५ छन्दस् ६ ॥

मौकारप्रणवौ समौ ॥

मौकारके नाम २ ॥ मौकार १  
प्रणव २ ॥

इतिहास पुरावृत्त—

इतिहासके नाम २ ॥ इतिहास १  
पुरावृत्त २ ॥

मुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥ ४ ॥

उदात्त अनुदात्त स्वरितका नाम  
१ ॥ स्वर १ ॥ ४ ॥

आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्त्वर्क-

विद्यार्थशास्त्रयो ॥  
तर्कविद्याका नाम १ ॥ आन्वीक्षिकी १ ॥

अर्थशास्त्रका नाम १ ॥ दण्डनीति १ ॥

आरूप्यायिकोपलब्धार्था—

मिसका अर्थ जान लिया हो उस  
कथाके नाम २ ॥ आरूप्यायिका १  
उपलब्धार्था २ ॥

—पुराण पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥

पुराणोंके नाम २ ॥ पुराण १  
पञ्चलक्षण २ ॥ ५ ॥

प्रबन्धकल्पना कथा—

कल्पना करी ॥ कादम्बरी आदि  
कथाके नाम २ ॥ प्रबन्धकल्पना १  
कथा २ ॥

—प्रवहिका प्रहेलिका ॥

जिसके सुनतेसे मतलब जाना  
जाय और विचार करनेसे दूसरा मत  
जब मिसले उस ( कहानी ) के नाम  
२ ॥ प्रवहिका १ प्रहेलिका २ ॥

—स्मृतिस्तु धर्मसंहिता—

धर्म जनानेको रचना किये हुए स्मो  
कोंके समूहके नाम १ ॥ स्मृति १  
धर्मसंहिता २ ॥

—समाह्वतिस्तु समहः ॥ ६ ॥

संग्रहके नाम २ ॥ समाह्वति १ स-  
मह २ ॥ ६ ॥

समस्या तु समासार्था—

जिसमें कुछ अर्थ पूरा किया जाय  
उसके नाम २ ॥ समस्या १ समासार्था २ ॥

—किंवदन्ती अनश्रुतिः ॥

छोकेप्रवाद अर्थात् दुर्ग्रहके नाम २ ॥  
किंवदन्ती १ अनश्रुति २ ॥

नार्ता प्रवृत्तिवृत्तान्त उदन्त-  
स्या—

मधैवताः ॥ पञ्चमश्चेत्यमी सप्तत-  
न्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः ॥ १ ॥

वीणासे वा कठसे उत्पन्न होनेवाले  
स्वरोंके नाम ७ ॥ निषाद १ ऋषभ २  
गान्धार ३ षड्ज ४ मध्यम ५ धैवत ६  
पञ्चम ७ ॥ १ ॥

काकली तु कले सूक्ष्मे-

सूक्ष्मशब्दका नाम १ ॥ काकली १ ॥

-ध्वनौ तु मधुरास्फुटे ॥

कली-

मीठी और अस्फुट आवाजका नाम  
१ ॥ कल १ ॥

-मन्द्रस्तु गम्भीरे-

गम्भीर शब्दका नाम १ ॥ मन्द्र १ ॥

-तारोऽत्युच्चै-

अत्युच्च शब्दका नाम १ ॥ तार १ ॥

-स्त्रयस्त्रिषु ॥ २ ॥

कल आदि तीन शब्द तीनों लिंगों-  
में होतेहैं ॥ २ ॥

समन्वितलयस्त्वेकतालो-

वाद्यगानादिके एकसंग तालस्वरका

नाम १ ॥ एकताल १ ॥

-वीणा तु बलकी ॥

विपश्ची

वीणाके २ म ३ ॥ वीणा १ बलकी

२ विपश्ची ३ ॥

-सा तु तन्त्रीभिः सप्ताभिः परि-  
वादिनी ॥ ३ ॥

सात तारोंसे बोलनेवाली वीणाका  
नाम १ ॥ परिवादिनी १ ॥ ३ ॥

ततं वीणादिकं वाद्य-

वीणादिक वाजेका नाम १ ॥ तत १ ॥

-मानद्धं मुरजादिकम् ॥

मृदगआदि वाजेका नाम १ ॥ आनद्ध १ ॥

वंशादिकं तु सुषिरं-

वशीआदिवाजेका नाम १ ॥ सुषिर १ ॥

-कांस्यतालादिकं घनम् ॥ ४ ॥

झांझ मजीरा आदि वाजेका नाम

१ ॥ घन १ ॥ ४ ॥

चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्य-  
नामकम् ॥

तत आदि चारों वाजोंका इकट्ठा  
नाम ३ ॥ वाद्य १ वादित्र २ आतोद्य ३ ॥

मृदङ्गा मुरजा-

मृदगके नाम २ ॥ मृदग १ मुरज २ ॥

-भेदास्त्वङ्ग्यालिङ्ग्योर्ध्वका-

स्त्रयः ॥ ५ ॥

मृदगके भेद ३ ॥ अङ्ग्य १ आ-  
लिङ्ग्य २ ऊर्ध्वक ३ ॥ ५ ॥

स्याद्यशःपटहो ढका-

नगाढेके नाम २ ॥ यशःपटह १  
ढका २ ॥

-भेर्यामानककुन्दुमी ॥ १ ॥  
 घोसानपीरि आदिके नाम १ ॥  
 मेरी १ आनक २ दुन्दुभि ३ ॥  
 आनक पटहोप्प्री स्या-  
 धोछके नाम २ ॥ आनक १ पटह २ ॥  
 -त्कोणो वीणादिवादनम् ॥ ६ ॥  
 जिस्से वीणादि बजातहें उस मक्खी  
 आदिका नाम १ ॥ कोण १ ॥ १ ॥  
 वीणावण्डः प्रवालः स्या-  
 वीणाकी डंडीका नाम १ ॥ प्रवाल १ ॥  
 -त्ककुम्भस्तु प्रसेवकः ॥  
 वीणाके नीचे जो गोल गोल घर्ष  
 से मटाहुमा होवाहै उसक नाम २ ॥  
 ककुम्भ १ प्रसेवक १ ॥  
 कोलम्बकस्तु कायोप्प्या-  
 वीणाके सर्वांगका नाम १ ॥ कोलम्बक १ ॥  
 उपनाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥  
 वीणामें बंधा तार बांधे जातेहैं उसके  
 नाम २ ॥ उपनाह १ निबन्धन २ ॥ ७ ॥  
 वाद्यप्रमेदा बभरुमङ्गुडिण्डिम  
 शर्शरा ॥ मर्वल पणवोप्प्ये च  
 बभरुका नाम १ ॥ बभरु १ ॥ बरे  
 बभरुका नाम १ ॥ मङ्गु १ ॥ डिण्डि  
 मका नाम १ ॥ डिण्डि १ ॥ शर्शरा  
 नाम १ ॥ शर्शर १ ॥ तथा मर्वल  
 पणव आदि और भी बाज हैं १ ॥

-नर्तकीलासिके समे ॥ ८ ॥  
 नाचनेवालीके नाम २ ॥ नर्तकी १  
 लासिका २ ॥ ८ ॥  
 शिलम्बितं वृत्तं मध्यं तत्त्वमोवो  
 धन क्रमात् ॥  
 धीरे धीरे नाचका नाम १ ॥ तत्त्व  
 १ ॥ शीघ्र नाचका नाम १ ॥ ओव  
 १ ॥ मध्यम नाचकर नाम १ ॥ धन १ ॥  
 तालः कालक्रियामान-  
 समय और क्रियाके प्रमाणका  
 नाम १ ॥ ताल १ ॥  
 -छयः साम्यः-  
 बाना और नाचका एक संग ताल  
 छटनेका नाम १ ॥ छय १ ॥  
 -मघास्त्रियाम् ॥ ९ ॥  
 भाषा-इस्से आगे कहे ये शब्द  
 जीर्णिग वाची नहीं अर्थात् पुँछिया  
 मनुस्क छिग वाची होते हैं ॥ ९ ॥  
 साण्डर्व मटनं नाट्यं आस्यं नृत्यं  
 च नर्तने ॥  
 नाचके नाम ९ ॥ साण्डर्व १ मटन  
 २ नाट्य ३ आस्य ४ नृत्य ५ नर्तन १ ॥  
 तौर्धैत्रिकं नृत्यगीतवाद्य मान्य  
 सिद्ध त्रयम् ॥ १० ॥

नाच गीत बाजा इन तीनके इकट्ठे  
नाम २॥ तौर्यत्रिक १ नाट्य २ ॥ १० ॥

भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्चोत्ति  
नर्त्तके ॥ स्त्रीवेषधारी पुरुषो-

स्त्रीवेषधारी नाचनेवाले पुरुषके नाम ३॥  
भ्रुकुस १ भ्रुकुस २ भ्रुकुस ३ ॥

नाट्योक्तौ गणिकाज्जुका ११  
केवल नाटकमें नाचने गानेवाली  
वेश्याका नाम १॥ अज्जुका १॥ ११ ॥

भगिनीपतिरावुत्तो-  
बहनोईका नाम १ ॥ आवुत्त १ ॥

-भावो विद्वा-  
विद्वान्का नाम १ ॥ भाव १ ॥

नथावुकः ॥  
जनको-

पिताका नाम १ ॥ आवुक १ ॥

युवराजस्तु कुमारो  
भर्तृदारकः ॥ १२ ॥

युवराजके नाम २ ॥ कुमार १ भर्तृ-  
दारक २ ॥ १२ ॥

राजा भट्टारको देव-  
राजाके नाम २ ॥ भट्टारक १ देव २ ॥

-स्तत्सुता भर्तृदारिका ॥  
राजकन्याका नाम १ ॥ भर्तृदारिका १ ॥

देवी कृताभिषेकाया-  
अभिषेक की हुई रानीका नाम १ ॥

देवी १ ॥

-मितरासु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥

अन्य राजस्त्रियोंका नाम १ ॥  
भट्टिनी १ ॥ १३ ॥

अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ-  
अवध्य वचनका नाम १ ॥ अब्र

हण्य १ ॥

-राजश्यालस्तु राष्ट्रियः ॥  
राजाके शालेका नाम १ ॥ राष्ट्रिय १ ॥

अम्बा माता-  
माताके नाम २ ॥ अम्बा १ मातृ २ ॥

-ऽथ बाला स्याद्वासू-  
कुमारीके नाम २ ॥ बाला १ वासू २ ॥

रार्यस्तु मारिषः ॥ १४ ॥  
श्रेष्ठके नाम २ ॥ आर्य १ मारिष २ ॥ १४ ॥

अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा-  
जेठी बहनका नाम १ ॥ अत्तिका १ ॥

--निष्ठानिर्वहणे समे ॥  
नाटककी सधियोंके नाम २ ॥ निष्ठा १

निर्वहण २ ॥

हण्डे हज्रे हलाहाने नीचां चे-  
टीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥

नीचस्त्रीके पुकारनेमें हण्डे १ ॥  
चेटीके पुकारनेमें हजे १ ॥ सखीके

पुकारनेमें हला १ ॥ १५ ॥

अंगहारोंगविक्षेपो-  
लचकनेके नाम २ ॥ अगहार १

अगविक्षेप २ ॥

—अप्यञ्जकाभिनयौ समौ ॥

भाव भ्रतानके नाम २ ॥ अप्यञ्जक १

अभिनय २ ॥

निर्वृत्ति त्वद्भ्रतत्त्वाभ्या द्वे त्रि-  
ष्वान्निकस्तात्त्विके ॥ १६ ॥

मोह मटकानेका नाम १ ॥ आंगिक

१ ॥ अन्त करणके माकका नाम १ ॥

सात्त्विक १ ॥ १६ ॥

शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यमया  
नकाः ॥ भीमत्सरौद्रौ च रसाः—

दश रसोक्ति नाम १० ॥ शृङ्गार १

वीर २ करुण ३ अद्भुत ४ हास्य ५

मयानक ६ भीमत्स ७ रौद्र ८

( शांति ९ वात्सल्य १० )

—शृङ्गारं शुचिरुज्ज्वलं ॥ १७ ॥

शृङ्गारके नाम १ ॥ शृङ्गार १

शुचि २ उज्ज्वल ३ ॥ १७ ॥

उत्साहवर्धनो वीरः—

वीररत्न नाम २ ॥ उत्साहवर्धन १

वीर २ ॥

—कारुण्य करुणा घृणा ॥

कृपादयानुकम्पा स्यादनुक्रोशो

करुणा रसके नाम ७ ॥ कारुण्य १

करुणा २ घृणा ३ कृपा ४ दया ५ अनु

कम्पा ६ अनुक्रोश ७ ॥

—अप्ययो हसः ॥ १८ ॥

हासो हास्य च—

हास्य २ रसके नाम १ ॥ हास १ ॥ १८ ॥

हास हास्य ३ ॥

—भीमत्स विकृत त्रिभिर्द्वयम् ॥

भीमत्स रसके नाम २ ॥ भीमत्स १

विकृत २ ॥

विस्मयोऽद्भुतैर्माधुर्यं चित्र—

अद्भुतरसके नाम ४ ॥ अद्भुत १

माधुर्य २ विस्मय ३ चित्र ४ ॥

—मप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥

दारुण मीपण भीष्म घोरं भीम

मयानकम् ॥ भयंकरं प्रतिमय—

मयानकरसके नाम ९ ॥ भैरव १ ॥

॥ १९ ॥ दारुण २ मीपण ३ भीष्म ४

घोर ५ भीम ६ मयानक ७ भयंकर ८

प्रतिमय ९ ॥

रौद्र वृम—

रौद्ररसके नाम २ ॥ रौद्र १ उग्र २ ॥

—ममी त्रिषु ॥ २० ॥

चतुर्दश—

अत्रादि चोदह शब्द द्रव्यवाचक-

हो तो निरोप्यनिर्दिष्टा आनमा ॥ २० ॥

—दरस्थासो भोतिर्भो साध्वसं

मयम् ॥

भयके नाम ६ ॥ दर १ त्रास २

भीति ३ भी ४ साध्वस ५ भय ६ ॥

विकारो मानसो भावो-

मनके विकारका नाम १ ॥ भाव १ ॥

-ऽनुभावो भावबोधकः ॥ २१ ॥

भावप्रकाशकका नाम १ ॥ अनु-

भाव १ ॥ २१ ॥

गर्वोऽभिमानोऽहंकारो-

अहंकारके नाम १ ॥ गर्व १ अभि-  
मान २ अहंकार ३ ॥

-मानश्चित्तसमुन्नतिः ॥

वडप्पनका नाम १ ॥ मान १ ॥

अनादरः परिभवः परीभावस्तिर-  
स्क्रिया ॥ २२ ॥ रीढावमानना-  
वज्ञावहेलनमसूक्ष्णम् ॥

निरादरके नाम ९ ॥ अनादर १ परि-  
भव २ परीभाव ३ तिरस्क्रिया ४ ॥

॥ २२ ॥ रीढा ५ अवमानना ६ अव-  
ज्ञा ७ अवहेलन ८ असूक्ष्ण ९ ॥

मेन्दाक्षं हीस्त्रपा व्रीडा लज्जा-

लज्जाके नाम ५ ॥ मेन्दाक्ष १ हीर

त्रपा ३ व्रीडा ४ लज्जा ५ ॥

-सापत्रपान्यतः ॥ २३ ॥

दूसरेसे लजानेके नाम १ ॥ अप-

त्रपा १ ॥ २३ ॥

क्षान्तिस्तितीक्षा-

क्षमाके नाम २ ॥ क्षान्ति १ तितिक्षा २ ॥

-ऽभिध्यातुपरस्यविषयेस्पृहा ॥

परधनलेनेकी इच्छाका नाम १ ॥

अभिध्या १ ॥

अक्षान्तिरीर्ष्या-

ईर्ष्याका नाम २ ॥ अक्षान्ति १ ईर्ष्या २ ॥

-ऽसूया तु दोषारोपो गुणे-  
ष्वपि ॥ २४ ॥

पराये गुणोका दोष प्रसिद्ध करनेका  
का नाम १ ॥ असूया १ ॥ २४ ॥

वैरं विरोधो विद्वेषो-

वैरके नाम ३ ॥ वैर १ विरोध २  
विद्वेष ३ ॥

मन्युशोकौ तु शुक् स्त्रियाम् ॥

शोकके नाम ३ ॥ मन्यु १ शोक  
२ शुक् ३ ॥

पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार  
इत्यपि ॥ २५ ॥

पछितानेके नाम ३ ॥ पश्चात्ताप १  
अनुताप २ विप्रतीसार ३ ॥ २५ ॥

कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिधा रुद्विधौ  
स्त्रियौ ॥

क्रोधके नाम ७ ॥ कोप १ क्रोध २  
अमर्ष ३ रोष ४ प्रतिधा ५ रूप ६ कुष् ७ ॥



घर्मसे चलायमान होनेके अथवा  
बाळकोंके धुट्टोंसे फलनेके नाम २ ॥  
विष्ण १ स्वच्छ २ ॥

स्यामिद्रा शयन स्वापः स्वप्नः  
सवेद्य इत्यादि ॥ ३६ ॥

शयन करनेके नाम १ ॥ निद्रा १  
शयन २ स्वाप ३ स्वप्न ४ सवेद्य ५ ॥ ३६ ॥

तन्त्री प्रमीला-  
ओंघनेके नाम २ ॥ तन्त्री १ प्रमीला २ ॥

भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः स्त्रियाम् ॥  
कोषसहित मौह चढानेके नाम ३ ॥

भ्रुकुटि १ भ्रुकुटि २ भ्रुकुटि ३ ॥  
अदृष्टिः स्यादसौम्येष्टिः-

कूटदृष्टिका नाम १ ॥ अदृष्टि १ ॥  
-सविद्धिमकृती त्विमे ॥ ३७ ॥

स्वरूप च स्वभावश्च निसर्गश्चा  
स्वभावके नाम १ ॥ सविद्धि १ प्रकृति २  
॥ ३७ ॥ स्वरूप ३ स्वभाव ४ निसर्ग ५ ॥

-इय वेपथुः ॥  
-कम्पो-

कापन्क नाम २ ॥ वेपथु १ कम्प २ ॥  
-इय क्षण उद्वर्षा मह उद्वव

उत्तवः ॥ ३८ ॥  
उत्तरक नाम १ ॥ क्षण १ उद्वर्ष २  
मह ३ उद्वव ४ उत्तर ५ ॥ ३८ ॥

इति मातृयवर्गः ॥ ७ ॥

अथ पातालमोगिवर्गः ८

अधोमुखनपातालं बलिस्तप्त रसा  
सलम् ॥ नागलोको-

पातालके नाम १ ॥ अधोमुखन १ पाता  
ल २ बलिस्तप्त ३ रसातल ४ नागलोक ५ ॥

-इय कुहर सुपिर विवर विल  
म् ॥ १ ॥ छिद्रं निर्व्ययनं रोक

रन्ध्रं चर्भं वपा शुपिः ॥  
छेदक नाम १ १ ॥ कुहर १ सुपिर २

विवर ३ विल ४ ॥ १ ॥ छिद्र १ निर्व्ययन २  
रोक ३ रन्ध्र ४ चर्भ ५ वपा ६ शुपि १ १ ॥

गर्तावटौ सुवि चर्भे-  
पृष्ठीक गड्ढेके नाम २ ॥ गर्त १ ॥

अवट २ ॥  
-सरन्ध्रे सुपिरं त्रिपु ॥ २ ॥

छेद्युक्त वस्तुका नाम १ ॥ सुपिर  
१ ॥ २ ॥

अन्धकारोऽस्त्रिया ध्वान्त तमिस्र  
तिमिरं तमः ॥

अन्धकारके नाम १ ॥ अन्धकार १  
ध्वान्त २ तमिस्र ३ तिमिर ४ तमः ५ ॥

ध्वान्ते गाढेऽन्धतमस-  
आपन्त अन्धकारका नाम १ ॥ अन्ध  
तमस १ ॥

-क्षीणवतमस-

थोड़ी अन्धियारीका नाम १ ॥

सन्तमस १

—तमः ॥ ३ ॥

विष्वक्सन्तमस—

सब और फैले हुए अधिकारका नाम

॥ सन्तमस १ ॥ ३ ॥

—नागाः काद्रवेया—

फन और पूछवाले मनुष्याकार  
पोंके नाम २ ॥ नाग १ काद्रवेय २ ॥

स्तदीश्वरः ॥ शेषोऽनन्तो—

शेषनागके नाम २ ॥ शेष १ अनन्त २ ॥

—वासुकिस्तु सर्पराजो—

सर्पराजके नाम २ ॥ वासुकि १  
सर्पराज २ ॥

५थ गोमसे ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

तिलित्सः स्या—

गौकी समान नासिकावाले सर्पके  
नाम २ ॥ गोमस १ ॥ ४ ॥  
तिलित्स २ ॥

—दजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ॥

अजगरके नाम ३ ॥ अजगर १  
शयु २ वाहस ३ ॥

अलगदौ जलव्यालः—

पानीके सर्पके नाम २ ॥ अल-  
द १ जलव्याल २ ॥

समौ राजिलडुण्डुभौ ॥ ५ ॥

द्विमुही सर्पके नाम २ ॥ राजिल

१ डुण्डुम २ ॥ ५ ॥

मालुधानो मातुलाहि—

चीतेसर्पके नाम २ ॥ मालुधान  
१ मातुलाहि २ ॥

निर्मुक्तो मुक्तकंचुकः ॥

कैचुलीके छोडेघुए सब सर्पोंके  
नाम २ ॥ निर्मुक्त १ मुक्तकचुक २

सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजङ्गोऽहिर्भु-  
जंगमः ॥ ६ ॥ आशीविषो विष-

धरश्चक्री व्यालः सरीसृपः ॥

कुण्डली गूढपाञ्चक्षुःश्रवाः काको-

दरः फणी ॥ ७ ॥ दर्वीकरो

दीर्घपृष्ठो दन्दशूको विलेशयः ॥

उरगः पन्नगो भोगी जिह्वगः

पवनाशनः ॥ ८ ॥

सर्पके नाम २ ५ ॥ सर्प १ पृदाकु २

भुजग ३ भुजग ४ अहि ५ भुजगम

६ ॥ आशीविष ७ विषधर ८ चक्रिन्

९ व्याल १० सरीसृप ११ कुडलिन् १२

गूढपाद् १३ चक्षुःश्रवस् १४ काकोदर

१५ फणिन् १६ ॥ ७ ॥ दर्वीकर १७

दीर्घपृष्ठ १८ दन्दशूक १९ विलेशय

२० उरग २१ पन्नग २२ भोगिन्

२३ जिह्वग २४ पवनाशन २५ ॥ ८ ॥

धर्मसं चलापमान होनेके अथवा  
घातकोंके घुटुओंस चटनेके नाम २ ॥  
विज्ज १ स्वच्छन २ ॥

स्याभिद्रा शयनं स्वाप स्वप्न  
संवेश इत्यादि ॥ ३६ ॥

शयन करनेके नाम १ ॥ निद्रा १  
शयन २ स्वाप ३ स्वप्न ४ संवेश ५ ॥ ३६ ॥

चन्द्री प्रमीला—  
ओघनक नाम २ ॥ चन्द्री १ प्रमीला २ ॥

भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः स्त्रियाम् ॥  
क्रावसहित मौढ्य चढानके नाम ३ ॥

भ्रुकुटि १ भ्रुकुटि २ भ्रुकुटि ३ ॥  
अद्यष्टिः स्यादसौम्येक्षिण—

क्रूरदृष्टिका नाम १ ॥ अद्यष्टि १ ॥  
—सविद्धिमकृती त्विमे ॥ ३७ ॥

स्वरूप च स्वभावश्च नितर्गभ्या  
स्वभावके नाम १ ॥ सविद्धि १ मकृति २  
॥ ३७ ॥ स्वरूप ३ स्वभाव ४ नितर्ग ५ ॥

—ऽय वेपथुः ॥  
—कम्पो—

कापनेके नाम २ ॥ वेपथु १ कम्प २ ॥  
—ऽय क्षण उद्धर्षो मह उद्धव

उत्सवः ॥ ३८ ॥  
उत्सवः नाम १ ॥ क्षण १ उद्धर्ष २

मह ३ उद्धव ४ उत्सव ५ ॥ ३८ ॥  
इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

अथ पातालमोगि  
अधोमुवनपातालं धः

सलम् ॥ नागलोका—  
पातालके नाम १ ॥ मध

छरवडिसमन् ३ रसातल  
—ऽय कुहर मुपि

म ॥ १ ॥ छिद्र वि  
रन्ध्र चम्र वपा शु

छदके नाम १ ॥ १ ॥  
विपर १ विछ ४ ॥ १ ॥ १ ॥

रोष ७ रन्ध्र ८ चम्र ९ वपा  
गतावटौ मुवि

पृथ्वीके गडहके ना  
मवट २ ॥

—सरन्ध्रे मुपिरः  
छेदयुक्त वस्तुका

१ ॥ २ ॥  
अम्यकारोऽस्त्रिमा

विमिरं समः ॥  
अम्यकारके नाम

आन्त २ तमिस ३ वि  
ध्वान्ते गाढेऽन्ध

अत्यन्त अथकार  
तमस १ ॥

—शीणेवतमस—

नरकमे जवरदस्ती ढकेलनेके नाम  
२ ॥ विष्टि १ आजू २ ॥

-कारणा तु यातना तीव्रवेदना ॥

नरककी पीडाके नाम ३ ॥ कारणा

१ यातना २ तीव्रवेदना ३ ॥

पीडावाधाव्यथादुःखमामनस्यं  
प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥ स्यात्कष्टं  
कृच्छ्रमाभीलं-

पीडाके नाम ९ ॥ पीडा १ वाधा  
२ व्यथा ३ दुःख ४ आमनस्य ५  
प्रसूतिज ६ ॥ ३ ॥ कष्ट ७ कृच्छ्र ८  
आमील ९ ॥

-त्रिष्वेषां भेद्यगाभि यत् ॥ ४ ॥

इन शब्दोंमें जो द्रव्यवाचक हो  
वह तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ४ ॥

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

अथ वारिवर्गः १०.

समुद्रोब्धिरकूपारः पारावारः  
सरित्पतिः ॥ उदन्वानुदधिः  
सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः ॥ १ ॥  
रत्नाकरो जलनिधिर्यादः पतिरपां-  
पतिः ॥

समुद्रके नाम १५ ॥ समुद्र १  
अब्धि २ अकूपार ३ पारावार ४ सारि-  
त्पति ५ उदन्वत् ६ उदधि ७ सिन्धु  
८ सरस्वत् ९ सागर १० अर्णव  
३

११ ॥ १ ॥ रत्नाकर १२ जलनिधि १३  
यादः पति १४ अपाम्पति १५ ॥

तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणो-  
दस्तथापरे ॥ २ ॥

समुद्रके भेद ७ ॥ क्षीरोद १  
लवणोद २ ( इक्षुरसोद ३ सुरोद ४ दधि-  
मण्डोद ५ स्वादूद ६ घृतोद ७ ) ॥ २ ॥

आपः स्त्री भूमिनि वार्वारि सलिलं  
कमलं जलम् ॥ पयः कीलालम-  
मृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥  
कवन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्व-  
तोमुखम् ॥ अम्भोऽर्णस्तोयपानी-  
यनीरक्षीराम्बु शम्बरम् ॥ ४ ॥

मेघपुष्पं घनरस-

जलके नाम २७ ॥ अप् १ वार  
२ वारि ३ सलिल ४ कमल ५ जल  
६ पयस ७ कीलाल ८ अमृत ९  
जीवन १० भुवन ११ वन १२ ॥  
॥ ३ ॥ कवन्ध १३ उदक १४ पाथस्  
१५ पुष्कर १६ सर्वतोमुख १७ अम्भस्  
१८ अर्णस् १९ तोय २० पानीय  
२१ नीर २२ क्षीर २३ अम्बु २४  
शम्बर २५ ॥ ४ ॥ मेघपुष्प २६  
घनरस २७ ॥

-स्त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् ॥

जलविकारके नाम २ ॥ आप्य १  
अम्मय २ ॥

भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मिर्वा स्त्रिया  
वीचि-

जङ्गकी तरंगके नाम ४ ॥ भग १  
तरंग २ ऊर्मि ३ वीचि ४ ॥

-रपोर्मिषु ॥ ५ ॥

महत्सुल्लोलकल्लोलौ-

बड़ीतरंगके नाम २ ॥ ५ ॥  
उल्लोल १ कल्लोल २ ॥

-स्यादावर्चोऽम्मसां भ्रम ॥

जलममरका नाम १ ॥ आवर्त्त १ ॥

पृपन्ति बिन्दुपृपतां पुमासो

विपुषा स्त्रियाम् ॥ ६ ॥

बिन्दुओंके नाम ४ ॥ पृपत् १

बिन्दु २ पृपत् ३ विपुष ४ ॥ ६ ॥

चक्राणि पुटमेदां स्यु-

ममरपङ्कजके जलके नीचेको जानेके

नाम २ ॥ चक्र १ पुटमेद २ ॥

-र्धमाश्च जलनिर्गमा ॥

जलक निकलनेके जलके नाम

२ ॥ अम १ जलनिर्गम २ ॥

कूल रोधश्च तीरं च प्रतीर च

तटं त्रिषु ॥ ७ ॥

नदीके किनारेके नाम ५ ॥ कूल

१ रोधस् २ तीर ३ प्रतीर ४

तट ५ ॥ ७ ॥

पाराधारे परार्वाची तीरे-

उस पारका नाम १ ॥ पार १ ॥

इस पारका नाम १ ॥ अवार १ ॥

-पार्श्व सदन्तरम् ॥

नदीके पाटका नाम १ ॥ पात्र १ ॥

द्वीपोऽस्त्रियामन्तरिर्षु यदन्त

वोरिणस्तटम् ॥ ८ ॥

झेके नाम २ ॥ द्वीप १ ॥ अन्त-  
रीप २ ॥ ८ ॥

-तोषोत्थित तत्पुलिन-

छावेका नाम १ ॥ पुलिन १ ॥

-सिक्तं सिक्ततामयम् ॥

बालरुधिकस्थानक नाम २ ॥

सिक्त १ सिक्ततामय २ ॥

निपदरस्तु जम्बालः पङ्कोऽस्त्री  
शादकर्ममौ ॥ ९ ॥

बोदा ( कीच ) के नाम ५ ॥

निपदर १ जम्बाल २ पङ्क ३ शाद  
४ कर्म ५ ॥ ९ ॥

जलोष्णसाः परीवाहा-

उपलानेके नाम २ ॥ जलोष्णस  
१ परीवाह २ ॥

-कूपकास्तु विदारका ॥

चूहा ( सूखी नदीके गहरे ) के नाम  
२ ॥ कूपक १ विदारक २ ॥

नाव्य त्रिलिङ्गं नौतायै-

नौकासे टतरमेके योग्य जलका  
नाम १ ॥ नाव्य १ ॥

स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥ १० ॥

नावके नाम ३ ॥ नौ १ तरणि २  
तरि ३ ॥ १० ॥

उडुपं तु एवः कोलः—

घनईके नाम ३ उडु १ एव ३  
कोल ३ ॥

—स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः ॥

स्रोतका नाम १ ॥ स्रोतस् १ ॥

आतरस्तरपण्यं स्या—

उतराईके नाम २ ॥ आतर १  
तरपण्य २ ॥

—द्रोणीकाष्ठाम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥

पथर वा काष्ठनिर्मित नौकाके  
खेडीके नाम २ ॥ द्रोणी १ काष्ठाम्बु-  
वाहिनी २ ॥ ११ ॥

सांयात्रिकः पोतवणिक—

नाव लादनेवाले उद्यमीके नाम २ ॥  
सांयात्रिक १ पोतवणिज् २ ॥

—कर्णधारस्तुनाविकः ॥

खेवा लगानेवालेके नाम २ ॥ कर्ण-  
धार १ नाविक २ ॥

नियामकाः पोतवाहाः—

जो नौकाके पीछे खडाहुआ लकड़ी  
धुमाया करताहै उसके नाम २ नियाम-  
क १ पोतवाह २ ॥

—कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥

जिस खूटेमें नौका बांधी जातीहै उसके  
नाम २ ॥ कूपक १ गुणवृक्षक २ ॥ १२ ॥

नौकादण्डः क्षेपणी स्या—

पाता ( नौकाके दोनो पसवाडोंमें  
बधेहुए चलानेके काष्ठ ) के नाम २ ॥  
नौकादण्ड १ क्षेपणी २ ॥

—अरित्रं केनिपातकः ॥

करिया ( नौकाकी पीठमें लगे हुए  
चलानेके काठ ) के नाम २ ॥ अरित्र  
१ केनिपातक २ ॥

अग्निः स्त्री काष्ठकुदालः—

नौका साफ करनेके कुदालके नाम  
२ ॥ अग्नि १ काष्ठकुदाल २ ॥

—सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३ ॥

जिससे नावका जल उलीचा जाता  
है उसके नाम २ ॥ सेकपात्र १ सेचन  
२ ॥ १३ ॥

ह्र्दीवेऽर्धनावं नावोऽर्धे—

आधीनावका नाम १ ॥ अर्धनाव १ ॥

—ऽतीतनौकेऽतितु त्रिपु ॥

जो नावलायक जल न हो उसका  
नाम १ ॥ अतितु १ ॥

त्रिष्वागाधात्—

अगाध शब्दपर्यंत जितने शब्द हैं  
वे तीनों लिंगोंमें चलतेहैं ॥

—प्रसन्नोऽयं—

निर्मलजङ्घके नाम २ ॥ प्रसन्न १  
अयं २ ॥

—कलुपोनच्छ आविल ॥ १४ ॥

मैले जङ्घके नाम ३ ॥ कलुप १  
अनच्छ २ आविल ३ ॥ १४ ॥

निम्न गमीर गम्भीर—

गहरे जङ्घके नाम ३ ॥ निम्न १  
गमीर २ गम्भीर ३ ॥

—मुत्तानं तद्विपर्यय ॥

पाहजङ्घा नाम १ ॥ उत्तान १ ॥  
अगाधमतलस्पर्श—

अयाह जङ्घा नाम २ ॥ अगाध १  
मतलस्पर्श २ ॥

—कैवर्ते दाशधीवरौ ॥ १५ ॥

मल्लहारके नाम ३ ॥ कैवर्त १ दाश  
२ धीवर ३ ॥ १५ ॥

आनाय पुंलिङ्गं स्या—

जाङ्घे नाम २ ॥ आनाय १ जाङ्घ २ ॥  
—च्छणसूत्र पवित्रकम् ॥

शणसूत्र जाङ्घके नाम २ ॥ शण  
सूत्र १ पवित्रक २ ॥

मत्स्याधानी कुम्भीणी स्या—

त्रिमर्मे मछली भरीगार्धे उसके नाम  
२ ॥ मत्स्याधानी १ कुम्भीणी २ ॥

—द्विदिश मत्स्यबोधनम् ॥ १६ ॥

मछली पकड़नेके कामके नाम २ ॥

द्विदिश १ मत्स्यबोधन २ ॥ १६ ॥

पृथुरोमाश्रपोमत्स्योमीनैर्विसारि

णोऽण्डम ॥ विसार शकुलीवा-

मछलीके नाम ८ ॥ पृथुरोम् १

शप २ मत्स्य ३ मीन ४ विसारिण ५

अण्डम ६ विसार ७ शकुलिन् ८ ॥

—ऽय गडकः शकुलार्भक ॥ १७ ॥

मछलीके बरोंके नाम २ ॥ गडक १

शकुलार्भक २ ॥ १७ ॥

सहस्रदंष्ट्र पाठीन—

पन्हा मछलीके नाम २ ॥ सहस्रदंष्ट्र  
१ पाठीन २ ॥

—उलूपी शिशुकः समौ ॥

सूत मछलीके नाम २ ॥ उलूपिन् १  
शिशुक २ ॥

नलमीनभिलिङ्गिमा—

चेन्दा मछलीके नाम २ ॥ नल  
मीन १ भिलिङ्गिमा २ ॥

—प्रोष्ठी मु क्षफरी द्वयो ॥ १८ ॥

सहरी मछलीके नाम २ ॥ प्रोष्ठी १  
क्षफरी २ ॥ १८ ॥

मुद्राण्डमत्स्यसघात पोता

धान—

अडोसे निकली हुई छोटी मछलीस

मृत्का नाम १ ॥ पोसाधान १ ॥

-मथो ज्ञषाः ॥

रोहितो मद्गुर. शालो राजीवः  
शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥ तिमि-  
गिलादयंश्चा-

रोहूमछलीका नाम १ ॥ रोहित १ ॥  
मगरी मछलीका नाम १ ॥ मद्गुर  
१ ॥ सौरीमछलीका नाम १ ॥ शाल  
१ ॥ राया मछलीका नाम १ ॥ राजीव  
१ ॥ सौरा मछलीका नाम १ ॥  
शकुल १ ॥ बडीभारी मछलीका नाम  
१ ॥ तिमि १ ॥ १९ ॥ तिमिके  
निगलनेवाली मछलीका नाम १ ॥  
तिमिगिल १ ॥ आदि ॥

-ऽथ यादांसि जलजन्तवः ॥

सर्वजलजन्तुओके नाम २ ॥ यादस्  
१ जलजन्तु २ ॥

तद्देदाः शिशुमारोद्रशंकवो म-  
करादयः ॥ २०

शिरसका नाम १ ॥ शिशुमार १ ॥  
ओदका नाम १ ॥ उद्र १ ॥ शफका  
नाम १ ॥ शकु १ ॥ मगरका नाम  
१ ॥ मकर १ आदि ॥ २० ॥

स्यात्कुलीरः कर्कटकः-

कैकडाके नाम २ ॥ कुलीर १  
कर्कटक २ ॥

-कूर्मे कमठकच्छपौ ॥

कछुहेके नाम ३ ॥ कूर्म १ कमठ

२ कच्छप ३ ॥

ग्राहोऽवहारो-

वडियालके नाम २ ॥ ग्राह १  
अवहार २ ॥

-नक्रस्तु कुम्भीरो-

नाकेके नाम २ ॥ नक्र १ कुम्भीर २ ॥

-ऽथ महीलता ॥ २१ ॥

गण्डूपदः किचुलको-

केचुवाके नाम ३ ॥ महीलता १  
॥ २१ ॥ गण्डूपद २ किचुलक ३ ॥

-निहाका गोधिका समे ॥

गोहेके नाम २ ॥ निहाका १  
गोधिका २ ॥

रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां  
भूमि जलौकसः ॥ २२ ॥

जोकके नाम ३ ॥ रक्तपा १ जलौका  
२ जलौकस् ३ ॥ २२ ॥

मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः-

समुद्रकी सीपीके नाम २ ॥ मुक्ता-  
स्फोट १ शुक्ति २ ॥

-शंखः स्यात्कम्बुरास्त्रियौ ॥

शखके नाम २ ॥ शख १ कम्बुर २ ॥

क्षुद्रशंखाः शंखनखाः-

छोटे शखके नाम २ ॥ क्षुद्रशख १  
शंखनख २ ॥

-शम्बूका जलशुक्तयः ॥ २३ ॥



सव सीपीके नाम २ ॥ शम्बूक १  
जलशुक्ति २ ॥ २७ ॥

मेके मङ्कवर्षामृशालूरधुवद  
दुरा ॥

मेदूकेके नाम १ ॥ मङ्क १ मण्डूक  
२ वर्षामू ३ शालूर ४ शृण ५ दर्दुर ६ ॥

शिली गण्डूपदी-

काधुकेके नाम २ ॥ शिली १  
गण्डूपदी २ ॥

-मेकी वर्षाभ्वी-

मङ्ककेके नाम २ ॥ मेकी १  
वर्षाभ्वी २ ॥

-कमठी डुलि ॥ २८ ॥

कडुईके नाम २ ॥ कमठी १  
डुली २ ॥ २८ ॥

मद्गुरस्य मिया झझी

शीगीका नाम १ ॥ शृगी १ ॥

-दुनामा दीघकोशिका ॥

सिक्काके नाम २ ॥ दुनामा १  
दीर्घकोशिका २ ॥

जलागया जलाधारा-

तदागशीनादि सत्र जलाशयोके  
नाम २ ॥ जलाशय १ ॥ जलाधार २ ॥

-तत्रागायजली हृद ॥ २९ ॥

गुग्गुला नाम १ ॥ २९ ॥ २९ ॥

भादावस्तु निपान स्मादुपकू  
मजलागये ॥

कूपके निकटकी चरही ( जलके  
छिये बनाई हुई) के नाम २ ॥ भादाव  
१ निपान २ ॥

पुंस्येवान्धुः प्राहेः कूप उदपान  
तु पुंसि वा ॥ २९ ॥

कूपके नाम ४ ॥ जगु १ प्राहे २  
कूप ३ उदपान ४ ॥ २९ ॥

नेमिस्रिकाऽस्य-

कुरकी पाठिकाका नाम १ ॥  
त्रिका १ ॥

-वीनादो मुखवन्धनमस्य यत् ॥

पट्टा जगतका नाम १ ॥ वीनाद १ ॥

पुष्करिण्यां तु खात स्या-

घोषान तात्पत्रके नाम २ ॥  
पुष्करिणी १ खात २ ॥

-दखातं देवखातकम् ॥ ३० ॥

नहीं छोदेदुर तात्पत्रके नाम २ ॥  
अखात १ देवखातक २ ॥ ३० ॥

पद्माकरस्वडागोऽस्त्री-

त्रिम तात्पत्रके कम्पठ हों उसके  
नाम २ ॥ पद्माकर १ तदाग २ ॥

-कामारः सरसो सर ॥

सामान्य तात्पत्रके नाम ॥  
कामार १ सरसी २ सर ३ ॥

वेगन्त पन्वल चान्पगरो-

छोटी-पारु नाम ३ ॥ वेगन्त  
१ पन्वल २ चान्पगरो ३ ॥

—वापी तु दीर्घिका ॥ २८ ॥  
वावडीके नाम २ ॥ वापी १ दी-  
र्घिका ॥ २ ॥ २८ ॥

खेयं तु परिखा—  
खौंचा ( खाही ) के नाम २ ॥ खेय  
१ परिखा २ ॥

—ऽऽधारस्त्वम्भमां यत्र धारणम् ॥  
वाधका नाम १ ॥ आधार १ ॥

स्यादालवालमावालमावापो—  
थाल्हाके नाम ३ ॥ आलवाल १  
आवाल २ आवाप ३ ॥

—ऽथ नदी सरित् ॥ २९ ॥  
तरङ्गिणी शैवालिनी तटिनी  
हादिनी धुनी ॥ स्रोतस्वती द्वीप-  
पवती स्रवन्ती निम्नगापगा ॥ ३० ॥

नदीके नाम १२ ॥ नदी १ सरित् २  
॥ २९ ॥ तरङ्गिणी ३ शैवालिनी ४ तटिनी  
५ हादिनी ६ धुनी ७ स्रोतस्वती ८  
द्वीपवती ९ स्रवन्ती १० निम्नगा ११  
आपगा १२ ॥ ३० ॥

गङ्गा विष्णुपदी जह्नतनया सुरनि-  
म्नगा ॥ भागीरथी त्रिपथगा त्रि-  
स्रोता भीष्मसुरापि ॥ ३१ ॥

गगाजीके नाम ८ ॥ गगा १ वि-  
ष्णुपदी २ जह्न तनया ३ सुरनिम्नगा ४  
भागीरथी ५ त्रिपथगा ६ त्रिस्रोतस् ७  
भीष्मम् ८ ॥ ३१ ॥

कालिन्दी सूर्यतनया यमुना  
शमनस्वसा ॥

यमुनाके नाम ४ ॥ कालिन्दी १  
सूर्यतनया २ यमुना ३ शमनस्वसृ ४ ॥

रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मे-  
कलकन्यका ॥ ३२ ॥

नर्मदाके नाम ४ ॥ रेवा १ नर्मदा  
२ सोमोद्भवा ३ मेकलकन्यका ४ ॥ ३२ ॥

कर्तोया सदानीरा—

गौरीविवाहमें जो कन्यादानजलसे  
उत्पन्नहुई उस नदीके नाम २ ॥ कर्तो-  
या १ सदानीरा २ ॥

—वाहुदा सैतवाहिनी ॥

सहस्रवाहुकी नदीके नाम २ ॥  
वाहुदा १ सैतवाहिनी २ ॥

शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्या—

शतलजके नाम २ ॥ शतद्रु १ शुतुद्रि २ ॥

—द्विपाशा तु विपादस्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

व्यासनदीके नाम २ ॥ विपाशा १  
विपाश् २ ॥ ३३ ॥

शोणो हिरण्यवाहः स्या—

शोणमडके नाम २ ॥ शोण १  
हिरण्यवाह २ ॥

—कुल्याल्पा कृत्रिमा सरित् ॥

नहरका नाम १ ॥ कुल्या १ ॥

शरावती वेप्रवती चन्द्रभागा  
सरस्वती ॥ ३४ ॥ कावेरी-

शरावतीका नाम १ ॥ शरावती १ ॥  
वप्रवतीका नाम १ ॥ वप्रवती १ ॥ चि  
मावका नाम १ ॥ चन्द्रभागा १ ॥  
सरस्वतीका नाम १ ॥ सरस्वती १ ॥ ३४ ॥  
कावेरीका नाम १ ॥ कावेरी १ ॥

-सरितोऽन्याश्च-

जैसे भी कौशिकी आदि नदियाँ हैं ॥  
-संभेद' सिन्धुसंगम' ॥  
जहाँ एक नदी दूसरीसे मिलती है  
उस संगमके नाम २ ॥ संभेद १  
सिन्धुसंगम २ ॥

द्वयो' प्रणाली पयसः पवध्यां-

पनारका नाम १ ॥ प्रणाली १ ॥  
-त्रिषु तूचरी ॥ ३५ ॥  
भागो होनवाले दोनों शब्द तीनों  
किन्तोंमें बँटते हैं ॥ ३५ ॥

देविकायां सरय्यां च भवेदा  
विकसारवौ ॥

देविका मदीमें जो २ उत्पन्न हों  
उनका नाम १ ॥ दाविक १ ॥ सरयूमें  
जो २ उत्पन्न हों उनका नाम १ ॥ सारव १ ॥

सौगन्धिकं तु कङ्गारं-

कुर्वा (सम्पन्न लिखनेवाला) उन्नतक्रमक) २ ॥  
के नाम २ ॥ सौगन्धिक १ कङ्गार २ ॥

-इत्युक्त रक्तसंध्यकम् ॥ ३६ ॥

छाळ कुर्वाके नाम २ ॥ इत्युक्त

रक्तसंध्यक २ ॥ ३६ ॥

स्यादुत्पल कुवलय-

कुमुदकमलसाधारणके नाम २ ॥  
उत्पल १ कुवलय २ ॥

-मथ नीलाम्बुजन्म च ॥

इन्दीवर च नीलेस्मिन्-

काळे कमलके नाम २ ॥ नीला  
म्बुजन्म १ ॥ इन्दीवर २ ॥

-सिते कुमुदकैरवे ॥ ३७ ॥

उज्ज्वल कमलके नाम २ ॥ कुमुद  
कैरव २ ॥ ३७ ॥

ग्राहकमेयां कन्द' स्या-

कमलोंके कन्दका नाम १ ॥ ग्राहक १ ॥

-दारिपर्णी तु कुम्भिका ॥

जलकुम्भीके नाम २ ॥ दारिपर्णी १  
कुम्भिका २ ॥

जलनीलो तु शेषालं क्षेपलो

शशाङ्कके नाम २ ॥ जलनीली १  
शेषाल २ शेषाल २ ॥

-अथ कुमुदती ॥ ३८ ॥

कुमुदिन्यां-

कुमुदिनी वा कुमुदयुक्त देशके नाम  
२ ॥ कुमुदती १ ॥ ३८ ॥ कुमुदिनी २ ॥

-नलिन्यां तु यिसिनीपद्मिनी

मुख

कमलिनीके नाम ३ ॥ नलिनी १  
विसिनी २ पद्मिनी ३ आदि ॥  
वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं  
महोत्पलम् ॥ ३९ ॥ सहस्रपत्रं  
कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ॥  
पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसी-  
रुहम् ॥ ४० ॥ विसप्रसूनराजी-  
वपुष्कराम्भोरुहाणि च ॥

कमलमात्रके नाम १६ ॥ पद्म १  
नलिन २ अरविन्द ३ महोत्पल ४ ॥ ३९ ॥  
सहस्रपत्र ५ कमल ६ शतपत्र ७ कुशेशय  
८ पङ्केरुह ९ तामरस १० सारस ११  
सरसीरुह १२ ॥ ४० ॥ विसप्रसून १३  
राजीव १४ पुष्कर १५ अम्भोरुह १६ ॥

पुण्डरीकं सिताम्भोज-

उज्ज्वलकमलके नाम २ ॥ पुण्ड-  
रीक १ सिताम्भोज २ ॥

-मथ रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥

रक्तोत्पलं कोकनदं-

लालकमलके नाम ३ ॥ रक्तसरो-  
रुह १ ॥ ४१ ॥ रक्तोत्पल २ कोकनद ३ ॥

-नालो नाल-

कमलकी डांडीके नाम २ ॥ नाल  
( पुँल्लिग ) १ नाल ( नपुंसकलिग ) २ ॥

-मथास्त्रियाम् ॥

मृणालं विस-

मसीङ्गके नाम २ ॥ मृणाल १ विस २ ॥

-मञ्जादिकदम्बे खण्डमस्त्रि-  
याम् ॥ ४२ ॥

कमलादिके समूहका नाम १ ॥ खण्ड १ ॥  
केवलमी नाम १ ॥ खण्ड १ ॥ ४२ ॥

करहाटः शिफाकन्दः-

कमलकी जड़के नाम २ ॥ करहाट  
१ शिफाकन्द २ ॥

-किंजल्कः केसरोऽस्त्रियाम् ॥

कमलपुष्पके मध्यमें जो झालर होती  
है उसके नाम २ ॥ किंजल्क १ केसर २ ॥

संवर्तिका नवदलं-

कमलके नवे पत्तोंके नाम २ ॥  
संवर्तिका १ नवदल २ ॥

-बीजकोशो वराटक. ॥ ४३ ॥

कमलाक्षके नाम २ ॥ बीजकोश  
१ वराटक २ ॥ ४३ ॥

उक्तं स्वव्योमदिकालधाशिब्दा-  
दि सनाट्यकम् ॥ पातालभोगि-  
नरकं वारि चैषां च सङ्गतम् ॥ ४४ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गा-  
नुशासने ॥ स्वरादिकाण्डः प्रथमः  
साङ्ग एव समर्थितः ॥ १ ॥

इति श्रीमदमरसिंहविरचितामरकोशस्य  
भाषाटीकायां वारिवर्गः ॥ १० ॥

॥ श्री ॥

## अथ द्वितीयः काण्डः ।

अथ भूमिवर्गः १

वशां पृथ्वीपुरदमाम्बुदनीपधि  
मृगादिभिः ॥ चमससत्रावदृष्ट  
त्रै सांगोपांगैरिहोदिताः ॥ १ ॥

इस द्वितीय काण्डमें भूमिवर्ग १  
पुरवर्ग २ देशवर्ग ३ जमीनपर्वत ४  
सिंहादिवर्ग ५ मनुष्यवर्ग ६ जलवर्ग ७  
क्षेत्रवर्ग ८ वेश्यवर्ग ९ और शूद्रवर्ग  
१० सांगोपांग कह्यो ॥ १ ॥

भूभूमिभरवृत्तानन्ता रसा विश्व  
भय स्थिरा ॥ घरा धीरव्री घर  
णि सोणिज्या काश्यपी सि  
ति ॥ २ ॥ सर्वसहा वसुमती  
वसुधोर्वी वसुधरा ॥ गोत्रा कुः  
पृथिवी पृथ्वी दमावनिर्मेदिनी  
मही ॥ ३ ॥

पृथ्वीके नाम १७ ॥ मू १ भूमि २  
भवता ३ अनन्ता ४ रसा ५ विश्वभरा  
६ स्थिरा ७ घरा ८ धीरव्री ९ घरणि  
१ सोणि ११ ज्या १२ काश्यपी १३  
मृति १४ ॥ २ ॥ सप्तसहा १५ वसुमती  
१६ वसुधा १७ उर्वी १८ वसुधरा १९

गात्रा २० कुः १ पृथिवी २ पृथ्वी ३  
दमा ४ अवनि ५ मेदिनी ६  
मही ७ ॥ ३ ॥

मृन्मृत्तिका-

मिट्टीके नाम २ ॥ मृत् १ मृत्तिका २ ॥

-प्रकृष्टा तु मृत्ता मृत्त्रा च  
मृत्तिका ॥

अच्छी मिट्टीके नाम २ ॥ मृत्ता १  
मृत्त्रा २ ॥

उर्वरा सर्वसस्यादद्या-

जिस मिट्टीसे सब कस उपजै  
उसका नाम १ ॥ उर्वरा १ ॥

-स्पादुषा कारमृत्तिका ॥ ४ ॥

खारीमिट्टी अर्थात् नौनीक नाम  
२ ॥ ऊष १ कारमृत्तिका २ ॥ ४ ॥

ऊषधानूपरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ-

ऊषधभूमिक नाम २ ॥ ऊषध १  
ऊष २ ॥

-स्थल स्थली ॥

स्थलके नाम २ ॥ स्थल १ स्थली २ ॥  
समानौ मरुधन्वानौ-

|                                     |  |
|-------------------------------------|--|
| निर्जल अर्थात् मरुदेशके नाम २॥      | दक्षिण कुर्क्षेत्रसे पूर्व प्रयागसे पश्चिम |
| मरु १ धन्वन् २ ॥                    | देशके नाम २ ॥ मध्यदेश १ मध्यम              |
| -द्वे खिलाप्रहते समे ॥ ५ ॥          | २ ॥ ७ ॥                                    |
| त्रि-                               | आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं वि-            |
| विनजोते खेतके नाम २ ॥ खिल           | न्ध्यहिमालयोः ॥                            |
| १ अप्रहत २ ॥ ५ ॥                    | बगालके समुद्रसे पश्चिम अरबसमु-             |
| -ष्वथो जगती लोको विष्टपं            | द्रसे पूर्व हिमाचलसे दक्षिण विन्ध्याच-     |
| भुवनं जगत् ॥                        | लसे उत्तर देशके नाम २ ॥ आर्यावर्त          |
| जगत्के नाम ५ ॥ जगती १ लोक           | १ पुण्यभूमि २ ॥                            |
| २ विष्टप ३ भुवन ४ जगत् ५ ॥          | नीवृज्जनपदो-                               |
| लोकोयं भारतं वर्षे-                 | राजाओंके वसाये हुए मगध आदि                 |
| हिमालयसे दक्षिण, समुद्रसे उत्तरके   | देशोंके नाम २ ॥ नीवृत् १ जनपद २ ॥          |
| देशतक अर्थात् हिन्दुस्थानका नाम     | -देशविषयौ तूपवर्त्तनम् ॥ ८ ॥               |
| १ ॥ भारतवर्ष १ ॥                    | देशमात्रके नाम ३ ॥ देश १                   |
| -शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६ ॥         | विषय २ उपवर्त्तन ३ ॥ ८ ॥                   |
| देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य-         | त्रिष्वागोष्ठा-                            |
| शरावती नदीके ॥ ६ ॥ पूर्व दक्षिण     | गोष्ठपर्यन्त जे शब्द हैं वे तीनों          |
| देशका नाम १ ॥ प्राच्य १ ॥           | लिगोमें होते हैं ॥                         |
| -उदीच्यः पश्चिमोत्तरः ॥             | -न्नडप्राये नङ्गान्नङ्गल इत्यपि ॥          |
| शरावती नदीके पश्चिमोत्तरदेशका       | नङ्गाधिकदेशके नाम २ ॥ नङ्गत् १             |
| नाम १ ॥ उदीच्य १ ॥                  | नङ्गल २ ॥                                  |
| प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्या-        | कुमुदान्कुमुदप्राये-                       |
| फारस रूस रूम आदि देशोंके            | जहा बहुत कुमुद हों उस देशका                |
| नाम २ ॥ प्रत्यन्त १ म्लेच्छदेश २ ॥  | नाम १ ॥ कुमुदत् १ ॥                        |
| -न्मध्यदेशस्तु मध्यमः ॥ ७ ॥         | -वेतस्वान्वहुवेतसे ॥ ९ ॥                   |
| विन्ध्याचलसे उत्तर हिमालयसे नाम १ ॥ | जहा बहुत वेत हो उस देशका                   |
|                                     | वेतम्बत् ॥ १ ॥ ९ ॥                         |

शादल आदहरिते—

जहाँ हरी घास हो उसका नाम १ ॥  
शादल १ ॥

—सजम्बाळे तु पंक्ति ॥

जहाँ बहुत पक्षी हो उस देशका  
नाम १ ॥ पंक्ति १ ॥

जलप्रापमनूप स्यात्पुंसि कच्छ  
स्तथाविधः ॥ १० ॥

जहाँ बहुत पानी हो उस देशके  
नाम १ ॥ जलप्राप १ अनूप २  
कच्छ ३ ॥ १० ॥

श्री शर्करा शर्करिल शर्करा  
शर्करावति ॥

जहाँ रेत हा उस देशक नाम ४ ॥  
शर्करा १ शर्करिल २ शर्करा ३ शर्करा-  
रावत् ४ ॥

देश प्रवादिमा—

ऊपर कहलए शर्करा आदि शब्दोंमें  
पड़े शर्करा १ और शर्करिल यह  
दोनों देशकेही नाम हैं ॥

वेवमुत्थेया सिकतावति ११ ॥

इसीप्रकार सिकता १ और सिक-  
तिल यह शब्द भी रेतपूरक देशकेही  
नाम हैं ॥ ११ ॥

देशो नद्यभ्युष्टधम्युसपमग्री  
दिपालित ॥ स्यान्नदीमातृको  
नद्यमातृकश्च यथाक्रमम् ॥ १२ ॥

जहाँ केवल नदीजलसे खेत सींच  
जाय वर्षा न होतीहो उस देशका  
नाम १ ॥ नदीमातृक १ ॥ जहाँ  
वर्षाकेही जलसे सींचे जाय उसका  
नाम १ ॥ नद्यमातृक १ ॥ १२ ॥

सुरासि देशे राजन्वान्स्या-  
धर्मिमा राजाके देशका नाम १ ॥  
राजन्वात् १ ॥

—सतोऽन्यत्र राजवान् ॥  
सामान्य राजाके देशका नाम १ ॥  
राजन्वात् १ ॥

गोष्ठं गोस्थानक—  
गोष्ठके नाम २ ॥ गोष्ठ १ गोस्थान २ ॥  
—चतु गौष्टीन भूतपूर्वकम् ॥ १३ ॥  
जहाँ पूर्वकालमें गाये रही हों उसका  
नाम १ ॥ गौष्टीन १ ॥ १३ ॥

पर्यन्तमू परिसरा—  
नदी पर्यन्तादिके समीपकी भूमिके  
नाम २ ॥ पर्यन्तमू १ परिसर २ ॥

—सेतुराखी स्त्रियां—  
पुलके नाम २ ॥ सेतु १ आठि २ ॥  
—पुमान् ॥

नामलृक्च नाहुश्च वर्त्मीकश्च  
पुनपुस्तकम् ॥ १४ ॥  
वर्म्मेके नाम ३ ॥ नामलृ १ नाहु  
वर्मीक २ ॥ १४ ॥

अयनं वर्त्ममार्गाध्वपन्थानः पदवी  
सृतिः ॥ सरणिः पद्धतिः पद्या  
वर्त्तन्येकपदीति च ॥ १५ ॥

मार्गके नाम १२ ॥ अयन १ वर्त्मन्  
२ मार्ग ३ अध्वन् ४ पथिन् ५ पदवी  
६ सृति ७ सरणि ८ पद्धति ९ पद्या  
१० वर्त्तनी ११ एकपदी १२ ॥ १५ ॥  
अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चा-  
र्चितेऽध्वानि ॥

अच्छे मार्गके नाम ३ ॥ अतिपथिन् १  
सुपथिन् २ सत्पथ ३ ॥  
व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा  
कापथः समाः ॥ १६ ॥

खराब मार्गके नाम ५ ॥ व्यध्व १  
दुरध्व २ विपथ ३ कदध्वन् ४ कापथ  
५ ॥ १६ ॥

अपन्थास्त्वपथं तुल्ये-  
जहां मार्ग न हो उसके नाम २ ॥  
अपथिन् १ अपथ २ ॥

-शृंगाटकचतुष्पथे ॥  
चौहद्दा वा चौकके नाम २ ॥

शृंगाटक १ चतुष्पथ २ ॥  
प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा-

जहां बड़ी दूरतक छाया वा मनु-  
ष्यादि न हों उस मार्गका नाम १ ॥  
प्रान्तर १ ॥

-कान्तारं वर्त्म दुर्गमम् ॥ १७ ॥  
चोरकण्टकादियुक्त मार्गका नाम १ ॥  
कान्तार १ ॥ १७ ॥

गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगं-  
दो कोशका नाम १ ॥ गव्यूति १ ॥  
-नल्वः किष्कुचतुःशतम् ॥

४०० हाथका नाम १ ॥ नल्व १ ॥  
घण्टापथः संसरणं-  
राजमार्ग अर्थात् सड़कके नाम २ ॥  
घण्टापथ १ संसरण २ ॥

-तत्पुरस्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥  
ग्रामके निकासका नाम १ ॥ उप-  
निष्कर १ ॥ १८ ॥

इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

अथ पुरवर्गः २.  
पूः स्त्री पुरीनगर्यौ वा पत्तनं पुटमे-  
दनम् ॥ स्थानीयं निगमे-  
शहरके नाम ७ ॥ पुर १ पुरी २ नगरी  
३ पत्तन ४ पुटमेदन ५ स्थानीय ६  
निगम ७ ॥

-ऽन्यजु यन्मूलनगरात्पुरम् ॥ १ ॥  
तच्छाखानगरं-  
शहरसम्बन्धी छोटे नगरोका नाम १ ॥  
१ ॥ १ ॥ शाखानगर १ ॥  
-वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ॥



वेश्याके स्थानके नाम २ ॥ वेश १  
वेश्याजनसमाश्रय २ ॥

आपणस्तु निपद्याया-

बजारके नाम २ ॥ आपण १ निपद्या २ ॥

-विपणिं पण्यवीथिका ॥ २ ॥

जहाँ बाजार न हो परन्तु वस्तु बि  
फती हों उसके नाम २ ॥ विपणि १

पण्यवीथिका २ ॥ २ ॥

गृह्या प्रसोली विशिखा-

बीचगाँवकी गलीके नाम ३ ॥ गृह्या

१ प्रसोली २ विशिखा ३ ॥

-स्याश्रयो वप्रमस्त्रियाम् ॥

किलेके इधर उधरकी मिट्टीका नाम

२ ॥ वय १ वप्र २ ॥

प्राकारो वरणाः साला-

किलेके नाम ३ ॥ प्राकार १ वरण

२ साल ३ ॥

-प्राचीन प्रान्ततो धृतिः ॥ ३ ॥

चारों ओर काँटोंकी बाड़के नाम १ ॥

प्राचीन १ ॥ ३ ॥

भित्ति स्त्री कुड्य-

दीवारके नाम २ ॥ भित्ति १ कुड्य २ ॥

-मेहकं यदन्तर्ध्वस्तकीकसम् ॥

जिस दीवारमें मजदूरीके नास्ते हट्टी

भादि लगाइ गइ हो मजदूरी नाम २ ॥

मेहक ॥

गृहं गेहोदवासित वेश्म सद्य निके

तनम् ॥ ४ ॥ निशान्तपस्त्य

सदन भवनागारमन्दिरम् ॥ गृहाः

पुंसि च भूम्न्येव निकायानिलया

लया ॥ ५ ॥ वासं कुटी

द्वयोः शाला सभा-

गृहके नाम २० ॥ गृह १ गेह २

उदवासित ३ वेश्म ४ सदन ५ निकेतन

६ ॥ ४ ॥ निशान्त ७ पस्त्य ८ सदन ९

मवन १० अगार ११ मन्दिर १२ गृह

( पुं० बहुवचन ) १३ निकाय १४

निलय १५ आलय १६ ॥ ५ ॥ वास

१७ कुटी १८ शाला १९ समा २० ॥

-संजवन त्विदम् ॥

चतुःशाल-

जिस गृहमें आग्ने सामने एकसे चार

मकान हों उसके नाम २ ॥ संजवन १

चतुःशाल २ ॥

-मुनीनां तु पर्णशालाटजो-

स्त्रियाम् ॥ ६ ॥

मुनियोंकी कुटीके नाम २ ॥ पर्ण

शाला १ उटज २ ॥ ६ ॥

चेत्यमापतन तुल्ये-

पत्रशालाके नाम २ ॥ चेत्य

मापतन ॥

-वाजिनाला तु मन्दरा ॥

बुडसालके नाम २ ॥ वाजिशाला  
१ मन्दुरा २ ॥

आवेशनं शिल्पिशाला—  
कारीगरीके स्थानके नाम २ ॥ आवे-  
शन १ शिल्पिशाला २ ॥

—प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥  
पौशाला अर्थात् पानी पिलानेके  
स्थानके नाम २ ॥ प्रपा १ पानीयशा-  
लिका २ ॥ ७ ॥

मठश्छात्रादिनिलयः—  
विद्यार्थी और सन्यासी आदिके  
रहनेके स्थानका नाम १ ॥ मठ १ ॥

—गञ्जा तु मदिरागृहम् ॥  
जहा मद्य बनाया जाय अथवा  
तहाँ मद्य रक्खा जाय उस स्थानके  
नाम २ ॥ गञ्जा १ मदिरागृह २ ॥

—सगृह—  
सगृहके नाम २ ॥  
सगृह २ ॥

—सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥  
( प्रसूतीके ) गृहके नाम  
२ ॥ अरिष्ट १ सूतिकागृह २ ॥ ८ ॥

वातायनं गवाक्षो—  
झरोखोंके नाम २ ॥ वातायन १  
गवाक्ष २ ॥

अथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ॥

मण्डपके नाम २ ॥ मण्डप १  
जनाश्रय २ ॥

हर्म्यादि धनिनां वासः—  
धनवानोंके गृहका नाम १ ॥ हर्म्य  
१ आदि ॥

—प्रासादो देवभूभुजाम् ॥ ९ ॥  
देवता और राजाओंके गृहका  
नाम १ प्रासाद १ ॥ ९ ॥

सौधोऽस्त्री राजसदन—  
राजाओंके गृहके नाम २ ॥ सौध १  
राजसदन २ ॥

—मुपकार्योपकारिका ।  
राजाओंके साधारण गृहोंके नाम  
२ ॥ उपकार्या १ उपकारिका २ ॥

स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्या-  
वर्त्तादयोऽपि च ॥ १० ॥ विच्छ-  
न्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरस-  
न्नाम ॥

राजगृहोंके भेद जिनमे ४ दरवाजे  
आदि भेद हैं स्वस्तिक १ सर्वतोभद्र २  
नन्द्यावर्त्त ३ ॥ १० ॥ विच्छन्दक ४ इत्यादि ॥

रूपगारं भूभुजामन्तःपुरं स्या-  
दवरोधनम् ॥ ११ ॥

शुद्धान्तश्चावरोधश्च—  
राजद्विषयोंके रहनेके स्थानके नाम  
४ ॥ अन्तःपुर १ अवरोधन २ ॥ ११ ॥

शुद्धान्त ३ अवरोध ४ ॥

|                                |                                     |
|--------------------------------|-------------------------------------|
| —स्यादृष्टः क्षौममस्त्रियाम् ॥ | धरौमीक नाम १ ॥ मल्लीक ।             |
| गृहके ऊपरके घरके नाम २ ॥       | नीघ्र २ पटलप्रान्त ३ ॥              |
| अट १ क्षौम २ ॥                 | —अथ पटल छदि ॥ १४ ॥                  |
| प्रधानप्रधणालिन्दा बदिर्दार    | छानिक नाम १ ॥ पटल १ छरि             |
| प्रकोष्ठके ॥ १२ ॥              | २ ॥ १४ ॥                            |
| दहलीजके नाम १ ॥ प्रधान १       | गोपानसी तु बलभी छादे                |
| प्रधण २ अस्त्रिन्द ३ ॥ १२ ॥    | बकवारुणि ॥                          |
| गृहावग्रहणी देह—               | छजेके नाम २ ॥ गोपानसी १ कडमी २ ॥    |
| देहलीके नाम २ ॥ गृहावग्रहणी १  | कपोतपालिकामां तु विटर्ष             |
| देहली २ ॥                      | पुनपुंसकम् ॥ १५ ॥                   |
| —स्यऽङ्गण चत्वरजिरे ॥          | कम्पूतरुवानेक नाम २ ॥ कपोत          |
| आंगनके नाम १ ॥ अंगण १          | पालिका १ विटर्ष २ ॥ १५ ॥            |
| चत्वर २ अजिर ३ ॥               | स्त्री दादरिं प्रसीहारः—            |
| अघस्ताहारुणि शिला—             | शरक नाम १ ॥ शार् १ शार २            |
| दरवाजेके नीचेके काठका नाम १ ॥  | प्रसीहार ३ ॥                        |
| शिला १ ॥                       | —स्याद्विर्विस्तु वेदिका ॥          |
| —नासा वाक्परि स्थितम् ॥ १३ ॥   | कदिके नाम २ ॥ स्तिर्दि १ वेदिका २ ॥ |
| दरवाजेके ऊपरके काठका नाम       | तोरणोऽस्त्री बदिर्दार—              |
| १ ॥ नासा १ ॥ १३ ॥              | घरके बाहरके फाटकके नाम २ ॥          |
| प्रच्छन्नमन्तर्दार स्या—       | तोरण १ बदिर्दार २ ॥                 |
| खिडकीके नाम २ ॥ प्रच्छन्न १    | —पुरदार तु गोपुरम् ॥ १६ ॥           |
| अन्तर्दार २ ॥                  | नगरके बाहरके फाटकके नाम १ ॥         |
| —स्पसदारं तु पक्षकम् ॥         | पुरदार १ गोपुर २ ॥ १६ ॥             |
| बगलके द्वारक नाम २ ॥ पक्ष      | कूटे पृथरि यदस्तिनखस्व स्मि—        |
| शर १ पक्षक २ ॥                 | नगरके द्वारके द्वारके लिये उतार     |
| बैलीकनीघ्रे पटलप्रान्ते—       | बगलकी भूमिका नाम १ ॥ अस्तिनख १ ॥    |

-त्रय त्रिषु ॥

कपाटमरं तुल्ये-

रोंके नाम २ ॥ कपाट १ अरर २ ॥

तद्विष्कम्भोऽर्गलं न ना ॥ १७ ॥

किवाडोंके ढण्डेलेका नाम १ ॥

॥ १ ॥ १७ ॥

आरोहणं स्यात्सोपानं-

मिट्टी पत्थर आदिकी सीढीके नाम

॥ आरोहण १ सोपान २ ॥

-निश्रेणिस्त्वधिरोहणी ॥

काठकी सीढीके नाम २ ॥ निश्रेणि

अविरोहणी २ ॥

ममार्जनी शोधनी स्या-

बुहारी अर्थात् झाड़ूके नाम २ ॥

मार्जनी १ शोधनी २ ॥

-त्संकरोऽवकरस्तथा ॥ १८ ॥

क्षिप्ते-

करकट वा कूडेके नाम २ ॥ सकर

अवकर २ ॥ १८ ॥

-मुखं निःसरणं-

निकासके नाम २ ॥ मुख १

निःसरण २ ॥

-संनिवेशो निकर्षणम् ॥

नगर इत्यादिमें स्थानके निमित्त

पीड्डई भूमिके नाम २ ॥ संनिवेश

१ निकर्षण २ ॥

समौ संवसथग्रामौ-

ग्रामके नाम २ ॥ संवसथ १ ग्राम २ ॥

वेश्मभूर्वास्तुरस्त्रियाम् ॥ १९ ॥

घरकी भूमिका नाम १ ॥ वास्तु

१ ॥ १९ ॥

ग्रामान्त उपशल्यं स्या-

ग्रामके समीपका नाम १ ॥ उपशल्य १ ॥

-त्सीमसीमे स्त्रियामुभे ॥

सीमाके नाम २ ॥ सीमन् १ सीमा २ ॥

घोष आभीरपल्ली स्या-

अहीरोंके ग्रामके नाम २ ॥ घोष

१ आभीरपल्ली २ ॥

-त्पक्कणः श्वरालयः ॥ २० ॥

जगलियोंके ग्रामके नाम २ ॥ पक्कण

१ श्वरालय २ ॥ २० ॥

इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

अथ शैलवर्गः ३

महीध्रे शिखरिक्ष्माभृदहार्यध-

रपर्वताः ॥ अद्रिगोत्रगिरिग्रा-

वाचलशैलशिलोच्चयाः ॥ १ ॥

पर्वतके नाम १३ ॥ महीध्र १

शिखरिन् २ क्ष्माभृत् ३ अहार्य ४

ध्र २ पर्वत ६ अद्रि ७ गोत्र ८

गिरि ९ प्रावन् १० अचल ११ शैल

१२ शिलोच्चय १३ ॥ १ ॥

लोकालोकश्चक्रवाल-

जो पर्वत पृथ्वीको घरे है उसके नाम

२ ॥ लोकालोक १ चक्रवाल २ ॥

—खिकूटखिककुत्समी ॥

त्रिकूट कि जिसपर छंफा बसी है  
उत्सक नाम १ ॥ त्रिकूट १ त्रिकुदुर ॥

अस्वस्तु चरमदमामृ-

अस्तावच्छके नाम १ ॥ अस्त १  
चरमदमामृत् २ ॥

—बुदया पृर्वपर्वत ॥ २ ॥

उदयावच्छके नाम २ ॥ उदय १  
पूर्वपर्वत २ ॥ २ ॥

हिमवाग्नियधो विन्ध्यो माल्य  
वा पारियात्रक ॥ गन्धमादनमन्ये  
च हेमकूटादयो नगा ॥ ३ ॥

पर्वतोंके मेद १ ॥ हिमवत् १ निपव  
२ विन्ध्य ३ माल्यवत् ५ पारियात्रक  
५ गन्धमादन ६ तथा हेमकूट आदि  
अन्यमी पर्वत हैं ॥ ३ ॥

पापाणप्रस्तरमाबोपलाश्मान  
शिला हपत् ॥

पत्थरके नाम ७ ॥ पापाण १  
प्रस्तर २ प्राबन् ३ उपल ४ अश्मन्  
५ शिला ६ हपत् ७ ॥

कूटोऽखी शिखर शृङ्ग-

पदावधौ चोनी वा कंगूराके नाम  
१ ॥ कूट १ शिखर २ शृङ्ग ३ ॥

—प्रपातस्त्वतनो भृगु ॥ ४ ॥

बीहडक नाम १ ॥ प्रपात १ अतट  
२ भग ३ ॥ ४ ॥

फटकोऽखी नितम्बोऽद्रे-

बीध पर्वतका नाम १ ॥ फटक १ ॥

—स्तु प्रमथ सानुरात्रियाम् ॥

पर्वतके किनारेके नाम ३ ॥ स्तु १

प्रमथ २ सानु ३ ॥

उत्सः प्रस्रवण-

जहां पर्वतसे झर पानी बहुरता  
है अर्थात् कुण्डक नाम २ ॥ उत्स १  
प्रस्रवण २ ॥

—वारिप्रवाहो निशरो शर ॥ ५ ॥

शरनोंके नाम ३ ॥ वारिप्रवाह १  
निशर २ शर ३ ॥ ५ ॥

दूरी सु कन्दरो वा खी-

बनार्ह ईई गुफाके नाम २ ॥ दूरी  
१ कन्दर-कन्दरा २ ॥

—द्वेखावधिले गुहा ॥

गहर-

अपने आप बनीईई गुफाके नाम ४ ॥  
द्वेखावत् १ द्वि २ गुहा ३ गहर ४ ॥

—गण्डशैलास्तु व्युताः स्थूलो

पला गिरोः ॥ ६ ॥

जो कि पर्वतसे भारी भारी पत्थर गिरते  
हैं उनका नाम १ ॥ गण्डशैल १ ॥ ६ ॥

स्निग्ध स्त्रियामाकरं स्पा-

स्नानिके नाम १ ॥ स्निग्ध १ आकर २ ॥

—स्पादाः प्रस्थन्तपर्वता ॥

पर्वतके धोरेके छोटे पर्वतके नाम  
। पाद १ प्रत्यन्तपर्वत २ ॥

यकाद्रेरासन्ना भूमिरूर्ध्वम-  
यका ॥ ७ ॥

पहाडके नीचेकी भूमिका नाम १ ॥  
।यका १ ॥ पहाडकी ऊपरकी भूमिका

म १ ॥ अधित्यका १ ॥ ७ ॥

।तुर्मनःशिलाद्यद्रेगैरिकं तु वि-  
।षतः ॥

पर्वतसे उत्पन्न हुए जो मन शिल-  
आदि तिनका नाम १ ॥ धातु १ ॥ गैरिक  
(गैरू) तो धातु शब्दसेही विख्यात है ॥

निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीवे लतादिपि-  
हितोदरे ॥ ८ ॥

जहा कि बहुत लता तृणादिसे घिरा  
हो उसके नाम २ ॥ निकुञ्ज १ कुञ्ज २ ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

अथ वनौषधिवर्गः ४.

अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं  
वनम् ॥

वनके नाम ६ ॥ अटवी १ अरण्य २

विपिन ३ गहन ४ कानन ५ वन ६ ॥

महारण्यमरण्यानी-

बड़े वनके नाम २ ॥ महारण्य

१ अरण्यानी २ ॥

—गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥

गृहके समीप बनायेहुए बगीचेके  
नाम २ ॥ गृहाराम १ निष्कुट २ ॥ १ ॥

आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वन-  
मेव यत् ॥

गृहसमीपके वनके नाम २ ॥

आराम १ उपवन २ ॥

अमात्यगणिकागेहोपवने वृक्ष-  
वाटिका ॥ २ ॥

जहा राजाके नौकर चाकर और  
उनकी वेश्या रहें उस बगीचेका नाम

१ ॥ वृक्षवाटिका १ ॥ २ ॥

पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधा-  
रणं वनम् ॥

राजाके उस बगीचेका नाम जिसका  
सब पुरुष भोग करसकें १ ॥ आक्रीड १ ॥

स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुरो-  
चितम् ॥ ३ ॥

जहा राजा स्त्रियोंसहित क्रीडा करै  
उस बगीचेका नाम १ ॥ प्रमदवन १ ॥ ३ ॥

वीथ्यालिरावलिः पंक्तिः श्रेणी-

पंक्तिके नाम ५ ॥ वीथी १ आलि २

आवलि ३ पंक्ति ४ श्रेणी ५ ॥

—लेखास्तु राजयः ॥

लकीरके नाम २ ॥ लेखा १ राजि २ ॥

वन्या वनसमूहे स्या-

वनके शृङ्खले नाम २ ॥ वन्या

१ वनसमूह २ ॥

—दकुरोगभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥

अकुरके नाम २ ॥ अकुर १

अभिनवोद्भिद् २ ॥ ४ ॥

वृक्षो महीरुहः शारवी विटपी

पादपस्तरुः ॥ अनोकहः कुटः

शालः पलाशी वृद्धमागमाः ॥ ५ ॥

वृक्षक नाम ११ ॥ वृक्षः १ महीरुहः २

शार्विन् ३ विटपिन् ४ पादप ५ तरु ६

अनोकह ७ कुटः ८ शालः ९ पलाशिनः १०

वृ ११ वृम १२ अगम १३ ॥ ५ ॥

वानस्पत्यः फलेः पुष्पात्—

जो वृक्ष फलकर फले वसका

नाम १ ॥ वानस्पत्य १ ॥

—वेरपुष्पादनस्पतिः ॥

जो कि फलमे बिना फले जैसे गूजर

कन्हार आदि उनका नाम १ ॥ वानस्पति

१ ॥ ( वृक्षमात्रको मी वानस्पति कहतहै )

ओषध्यः फलपाकान्ताः स्युः—

फलकर पकनेपर मट होनेवाले

अथात् अम आदिकानाम् १ ॥ ओषधी १ ॥

—रवन्ध्य फलेमहिः ॥ ६ ॥

फलनेवाले वृक्षके नाम २ ॥ रवन्ध्य

१ फलेमहि २ ॥ ६ ॥

जो नहीं फले उस वृक्षके नाम २

रवन्ध्य १ अफल २ अरवन्धिन् १ ॥

—फलवान् फालिनः कमी ॥

फलयुक्त वृक्षक नाम १ ॥ फलान्

१ फलिम २ फलिन् ३ ॥

प्रफुल्लोत्फुल्लसफुल्लव्याकोशविक

चस्फुटाः ॥ ७ ॥

फुल्लवैते विकसित—

फल्लयुक्त ( विकसित ) वृक्षके

नाम ८ ॥ प्रफुल्ल १ उत्फुल्ल २ सफुल्ल

३ व्याकोश ४ विकच ५ स्फुट ६

७ ॥ फुल्ल ७ विकसित ८ ॥

—स्युरवन्ध्यादयस्त्रिषु ॥

अवन्ध्यादि शब्द तीनों छिगोंमें होवें

स्यापुर्वा ना ध्रुवः शंकुः—

दूर वृक्षके नाम ३ ॥ स्यापु १

ध्रुव २ शंकु ३ ॥

—ईश्वशाखाक्षिफः क्षुपः ॥ ८ ॥

जिस वृक्षमें छोटी २ बालें और जैसे

हों उसका नाम १ ॥ क्षुप १ ॥ ८ ॥

अप्रकाण्डे स्तम्भगुहमी—

जिसमें आखियें न हों उस वृक्षके

नाम २ ॥ स्तम्भ १ गुहमी २ ॥

—बद्धी तु प्रवतिर्छेता ॥

बद्धके नाम ३ ॥ बद्धी १ प्रवति

२ छेता ३ ॥

लता प्रतानिनी वीरुहुलिमन्युलप  
इत्यपि ॥ ९ ॥

बड़ी लवी बेलके नाम ३ ॥ वीरुत्  
१ गुलिनी २ उलप ३ ॥ ९ ॥

नगाद्यारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चो-  
च्छ्रायश्च सः ॥

वृक्षादिककी उचाईके नाम ३ ॥  
उच्छ्राय १ उत्सेध २ उच्छ्राय ३ ॥

अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः स्यान्मू-  
लाच्छाखावधिस्तरोः ॥ १० ॥

जड़से शाखातक पेड़के नाम २ ॥  
प्रकाण्ड १ स्कन्ध २ ॥ १० ॥

समे शाखालते-  
डालके नाम २ ॥ शाखा १  
लता २ ॥

-स्कन्धशाखाशाले-  
प्रधानशाखा ( मोटे डगो ) के नाम  
२ ॥ स्कन्धशाखा १ शाल २ ॥

-शिफाजटे ॥  
जड़के नाम २ ॥ शिफा १ जटा २ ॥

शाखाशिफावरोहः स्या-  
वरोहका नाम १ ॥ अवरोह १ ॥

-न्मूलाच्चाग्रं गता लता ॥ ११ ॥  
मूलसे लेकर अग्रभागपर्यंत गई हुई  
गिलोय आदिके बेलका नामभी अवरोह  
है ॥ ११ ॥

शिरोऽग्रं शिखरं वा ना-

टैनीके नाम २ ॥ शिरोऽग्रं १ शिखर २ ॥

-मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिग्रनामकः ॥

मिट्टीके भीतरकी जड़के नाम ३ ॥

मूल १ बुध्न २ अङ्घ्रिनामक सब शब्द ३ ॥

सारो मजा नरि-

गूदेके नाम २ ॥ सार १ मज्जन् २ ॥

-त्वक् स्त्री वल्कं वल्कलमस्त्रि-  
याम् ॥ १२ ॥

वृक्षकी छालके नाम ३ ॥ त्वक् १  
वल्क २ वल्कल ३ ॥ १२ ॥

काष्ठं दा-

काठके नाम २ ॥ काष्ठ १ दारु ॥

-विन्धनं त्वेध इधममेधः समि-  
त्स्त्रियाम् ॥

ईधनके नाम ३ ॥ इन्धन १ एध २  
इधम ३ यज्ञादिके इधनके नाम २ ॥  
एधस् १ समिध २ ॥

निष्कुहः कोटरं वा ना-

खोकलके नाम २ ॥ निष्कुह १ कोटर २ ॥

-वल्हरिर्मञ्जरिः स्त्रियौ ॥ १३ ॥

मजरीके नाम २ ॥ वल्हरि १ मजरी  
२ ॥ १३ ॥

पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः  
पुमान् ॥

पत्तोंके नाम ६ ॥ पत्र १ पलाश  
२ छदन ३ दल ४ पर्ण ५ छद ६ ॥



पल्लवोऽस्त्री किसलय-  
 फोंपलके नाम २॥ पल्लव १ किसलय २॥  
 विस्तारी विटपोऽस्त्रियाम् ॥ १४॥  
 बालोंके फेड़नेके नाम २ ॥ विस्तार १ विटप २॥ १४ ॥  
 वृक्षादीनां फल सस्य-  
 वृक्षादिकोंके फलका नाम १ ॥  
 सस्य १ ॥  
 -वृन्त प्रसवय-वनम् ॥  
 नारक नाम २ ॥ वृन्त १ प्रसव  
 कन्यन २ ॥  
 आम्रे फले शलाटु स्या-  
 कवेकलका नाम १ ॥ शलाटु १ ॥  
 -छट्टके वान-  
 सूखे फलका नाम १ ॥ वान १ ॥  
 -मुमे त्रिषु ॥ १५ ॥  
 शलाटु और वान शब्द तीनोंछिगों  
 में होतेह ॥ १५ ॥  
 क्षारको जालक ऋषि-  
 नक्ष कली व कलीकी छडीके नाम  
 २ ॥ क्षारक १ जालक २ ॥  
 कलिका कोरका पुमान् ॥  
 बिना शूली कलीके नाम २ ॥  
 कलिका १ कोरक २ ॥  
 स्याद्बुच्छकस्तु स्तवक -  
 गुच्छका नाम १ ॥ स्तवक १ ॥

-कुहमलो मुकुलो त्रियाम् १  
 अधकली कलीके नाम २ ॥ कुह  
 मल १ मुकुल २ ॥ १६ ॥  
 क्षिय सुमनस पुष्प प्रसून कुसुम  
 सुमम् ॥  
 फूलके नाम ॥ १ सुमनस् १ कुसुम  
 २ प्रसून ३ पुसुम ४ सुम ५ ॥  
 मकरन्द पुष्परसः-  
 फूलके रसके नाम २ ॥ मकर  
 १ पुष्परस २ ॥  
 परागः सुमनोरज ॥ १७ ॥  
 फूलकी धुलिके नाम २ ॥ पराग १  
 सुमनोरजस् २ ॥ १७ ॥  
 दिहीन प्रसवे सर्व-  
 आगे अश्वत्थ आदिकोंके जो फल  
 पुष्पादिकोंके नाम कहेंगे वह शब्द केस  
 नपुसकछिगाहीमें होंगे ॥  
 -हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ॥  
 मापा-हरीतकी आदिकोंके फलोंके शब्द  
 क(हरीतकी)आदि शब्द छिगिमें होंगे  
 आश्वत्थवैष्णवप्लासनैयमोर्ध्वमुव फले  
 ॥ १८ ॥ वार्हतं च-  
 (पीपलके फलका नाम ) आश्वत्थ  
 १ ॥ ( वासका फल ) वैष्णव १ ॥  
 ( पाकलके फलका नाम ) प्लासनैय १ ॥  
 ( कर्के फलका नाम ) नैयमोर्ध्व १ ॥

(इगुदीके फलका नाम) ऐंगुद १॥१८॥

(भटकटेयाके फलका नाम ) बार्हत १ ॥

-फले जम्बूवा जम्बूः स्त्री जम्बु

जाम्बवम् ॥

जामुनके फलके नाम ३ ॥ जम्बू १

जम्बु २ जाम्बव ३ ॥

पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वलिङ्गा-

जुहीके फलका नाम १॥ जाती १॥

-व्रीहयः फले ॥ १९ ॥

यव आदि वान्योके फलभी यव  
आदि नामसे ही कहे जाते हैं जैसे

यवका फल यव, माषका फल माष,

मुद्गका फल मुद्ग ॥ १९ ॥

विदार्याद्यास्तु मूलेपि-

विदारी आदिकोंके जड़ पुष्प और  
फलभी विदारी आदि नामवाले ही  
होते हैं अर्थात् जाती आदि शब्दोंके  
पुष्पादिकभी स्वलिङ्ग ही होते हैं ॥

-पुष्पे क्लीवेऽपि पाटला ॥

पाटलाके पुष्पका नाम १॥ पाटला १॥

यह शब्द पुष्पका नाम होकरभी स्वलिङ्ग  
अर्थात् पाटलाका लिङ्ग जो स्त्रीलिङ्ग  
होता है ॥

बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्ज  
राशनः ॥ २० ॥

अश्वत्थे-

पीपलके नाम ५॥ बोधिद्रुम १ चल-

दल २ पिप्पल ३ कुजराशन ४ ॥ २० ॥

अश्वत्थ ५ ॥

-ऽथ कपित्थे स्युर्दधित्थग्राहिम-  
न्मथाः ॥ तस्मिन्दाधेफलः पुष्प-  
फलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥

कैथके नाम ७ ॥ कपित्थ १ दधित्थ

२ ग्राहिन् ३ मन्मथ ४ दधिफल ५

पुष्पफल ६ दन्तशठ ७ ॥ २१ ॥

उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो  
हेमदुग्धकः ॥

गूलरके नाम ४ ॥ उदुम्बर १ जन्तु-

फल २ यज्ञाङ्ग ३ हेमदुग्धक ४ ॥

कोविदारे चमरिकः कुदालो  
युगपत्रकः ॥ २२ ॥

कचनारके नाम ४ ॥ कोविदार १

चमरिक २ कुदाल ३ युगपत्रक ४ ॥ २२ ॥

सप्तपर्णो विशालत्वक्छारदो विष-  
मच्छदः ॥

छतिवतीके नाम ४ ॥ सप्तपर्ण १

विशालत्वक् २ शारद ३ विषमच्छद ४ ॥

आरग्वधे राजवृक्षशम्याकच-  
चतुर्गुलाः ॥ २३ ॥ आरेवतव्या-

धिवातकृतमालसुवर्णकाः ॥

अमलतासके नाम ८ ॥ आरग्वध १

राजवृक्ष २ शम्याक ३ चतुर्गुल ४ ॥ २३ ॥

स्यारक्त ५ व्याधिवात ६ कृत्तमास ७  
सुर्गक ८ ॥

स्युर्मन्वीरे दन्तशठजम्भजम्भीर  
जम्भला ॥ २४ ॥

जम्भीरी मीमूक नाम १ ॥ जम्भीर १  
दन्तशठ २ जम्भ ३ जम्भीर ४ जम्भल  
५ ॥ २४ ॥

वरणो वरुण\* संतुस्तिक्तशाख\*  
कुमारक\* ॥

वरुण ( वरणा ) के नाम १ ॥ वरण  
१ वरुण २ संतु ३ त्तिक्तशाख ४ कुमारक ५ ॥  
पुष्पागे पुरुषस्तुङ्ग केतरो देव  
वल्हम\* ॥ २५ ॥

नागकस्तके नाम १ ॥ पुष्पाग १  
पुरुष २ तुङ्ग ३ केतरो ४ देव ५ ॥ २५ ॥  
पारिमद्रे निम्बतरुर्मन्दार\* पारि  
जातकः ॥

वक्रायनके नाम ४ ॥ पारिमद्र १  
निम्बतरु २ मन्दार ३ पारिजातक ४ ॥  
विनिशे स्पन्दनो नेमी रघदुर  
तिमुक्तकः ॥ २६ ॥

वन्जुलक्षिप्रकृशा-  
वन्जुल वृद्धे नाम ७ ॥ विनिश १  
स्पन्दन २ नेमी ३ रघदुर ४ अतिमुक्तक ५ ॥  
॥ २६ ॥ वन्जुल ६ विप्रकृश ७ ॥  
-ऽय द्रो पातनकपीतनी ॥

आघ्रातके-

आम्बादेके नाम ३ ॥ पीतन १ क्ली  
तन २ आघ्रातक ३ ॥

मधूके तु गुडपुष्पमधुदुमा ॥ २७ ॥  
वानप्रस्थमधुघीलौ-

मधुयेके नाम १ ॥ मधूक १ गुडपुष्प २  
मधुदुम ३ ॥ २७ ॥ वानप्रस्थ ४ मधु-  
घील ५ ॥

-जलजेऽत्र मधूलक\* ॥

जलके मधुयका नाम १ ॥ मधूलक १ ॥  
पीलौ गुडफल\* ससी-

देशी अक्षरोटके नाम १ ॥ पीलु १  
गुडफल २ ससिन् ३ ॥

-तस्मिस्तु गिरिसमवे ॥ २८ ॥ }  
अक्षोटकन्दरालौ द्वा-

पहाडी अक्षरोटके नाम २ ॥ २८ ॥  
अक्षो १ कन्दराळ २ ॥

-वैकोटे तु निकोचक\* ॥

वैकोटके नाम २ ॥ अकोट १  
निकोचक २ ॥

पलाशे किशुक\* पर्णो वातपोषो-  
पलाशके नाम ४ ॥ पलाश १ किशुक  
२ पर्ण ३ वातपोष ४ ॥

-ऽय वेवसे ॥ २९ ॥

रथाधपुष्पविदुरदीतवानीरव  
वन्जुलाः ॥

वैवसे नाम ७ ॥ वन्जुल १ ॥ २९ ॥ रथ २

अभ्रपुष्प ३ विदुर ४ शीत ५ वानीर ६  
वज्रुल ७ ॥

द्वौ परिव्याधविदुलौ नादेयी  
चाम्बुवेतसे ॥ ३० ॥

पानीके वेतके नाम ४ ॥ परिव्याध १  
विदुल २ नादेयी ३ अम्बुवेतस ४ ॥ ३० ॥

सोभाञ्जने शिश्रुतीक्ष्णगन्धका-  
क्षीवमोचकाः ॥

सँहिजनेके नाम ५ ॥ सोभाञ्जन १  
शिश्रु २ तीक्ष्णगन्धक ३ अक्षीव ४  
मोचक ५ ॥

रक्तोऽसौ मधुशिश्रुः स्या-

लालफूलवाले सँहिजनका नाम १ ॥  
मधुशिश्रु १ ॥

-दरिष्टः फेनिलस्समौ ॥ ३१ ॥

रीठेके नाम २ ॥ अरिष्ट १ फेनिल  
२ ॥ ३१ ॥

बिल्वे शाण्डिल्यशैलूषौ मालूर-  
श्रीफलावपि ॥

बेलके नाम ५ ॥ बिल्व १ शाण्डिल्य २  
शैलूष ३ मालूर ४ श्रीफल ५ ॥

पुक्षो जटी पर्कटी स्या-

पाकरके नाम ३ ॥ पुक्ष १ जटिन्  
२ पर्कटिन् ३ ॥

-न्यग्रोधो बहुपादः ॥ ३२ ॥

४

वटके नाम ३ ॥ न्यग्रोध १ बहुपाद्  
२ वट ३ ॥ ३२ ॥

गालवः शावरो लोध्रस्तिरीट-  
स्तिल्वमार्जनौ ॥

लोधके नाम ६ ॥ गालव १ शावर २  
लोध्र ३ तिरीट ४ तिल्व ५ मार्जन ६ ॥

आम्रश्रूतो रसालो-

आमके नाम ३ ॥ आम्र १ चूत २  
रसाल ३ ॥

-ऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ३३

सुगन्धित आमका नाम १ ॥ सह-  
कार १ ॥ ३३ ॥

कुम्भोलूरखलकं क्लीबे कौशिको  
गुग्गुलुः पुरः ॥

गूगलके नाम ५ ॥ कुम्भ १ उल्ल-  
खलक २ कौशिक ३ गुग्गुलु ४  
पुर ५ ॥

शेलुः श्लेष्मातृकः शीत उद्दालो  
बहुवारकः ॥ ३४ ॥

लसोढेके नाम ५ ॥ शेलु १ श्लेष्मा-  
तृक २ शीत ३ उद्दाल ४ ॥ बहुवा-  
रक ५ ॥ ३४ ॥

राजादनं प्रियालः स्यात्सन्नक-  
दुर्धनुष्पटः ॥

चिरोजीके नाम ४ ॥ राजादन १  
प्रियाल २ सन्नक ३- धनुष्पट ४ ॥

गम्भारी सर्वतोमद्रा काश्मरी  
मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥ श्रीपर्णी  
मधुपर्णी च काश्मर्यम्भा-

खंमारीके नाम ७ ॥ गम्भारी १  
सर्वतोमद्रा २ काश्मरी ३ मधुपर्णिका ४  
॥ ३५ ॥ श्रीपर्णी ५ मधुपर्णी ६  
काश्मर्य ७ ॥

-प्यय द्वयोः ॥

कर्कन्धूर्ध्वदरी कोली-

केरु नाम ३ ॥ कर्कषू १ बदरी २  
कोली ३ ॥

-कोल कुबलफेनिले ॥ ३६ ॥

सौवीर बदर घोष्ठा-

यरेके फलक नाम ६ ॥ काळ १  
कुबळ २ फलिङ ३ ॥ ३६ ॥ सौवीर ४  
बदर ५ घोष्ठा ६ ॥

-प्यय स्यात्स्वादुकण्टके ॥

विकटूत सुवाहसो ग्रन्थिलो  
ध्याग्रपादपि ॥ ३७ ॥

टैमिके नाम ५ ॥ स्वादुकण्टक १  
विकटूत २ सुवाहस ३ ग्रन्थिल ४  
ध्याग्रपाद ५ ॥ ३७ ॥

ऐरावतो नागरज्जो नादेयी भू  
मिजम्बुका ॥

नारलीके नाम ४ ॥ ऐरावत १ नाग  
रज्ज २ नादेया ३ भूमिजम्बुका ४ ॥

तिन्दुक स्फूर्जक कालस्क  
न्धश्च शितिसागके ॥ ३८ ॥

तैन्दूके नाम ४ ॥ तिन्दुक १ स्फूर्जक २  
कालस्कन्ध ३ शितिसारक ४ ॥ ३८ ॥  
काकेन्दु कुलका काकतिन्दु  
का काकपीलुके ॥

कुबळेके नाम ४ ॥ काकेन्दु १  
कुलक २ काकतिन्दुक ३ काकपीलुक ४ ॥

गोलीडो शाटलो घण्टापाद  
लिमोभमुष्ककौ ॥ ३९ ॥

छोषके मेद मोखाके नाम ५ ॥  
गोलीड १ शाटल २ घण्टापादलि ३ मोक्ष  
४ मुष्कक ५ ॥ ३९ ॥

तिलक धुरक श्रीमान-  
तिळकके नाम ३ ॥ तिलक १ धुर  
क २ श्रीमत ३ ॥

-समो पिबुलशावुकौ ॥  
शाऊके नाम २ ॥ पिबुल १  
शावुक २ ॥

श्रीपाणका कुमुदिका कुम्भी  
पेडर्यदृष्टली ॥ ४० ॥

कावफलक नाम ५ ॥ श्रीपाणका १  
कुमुदिका २ कुम्भी ३ केदव ४ पद  
पत्र ५ ॥ ४० ॥

फसुक पाटिकारय स्यात्पटी  
लाभामसादन ॥

पठानी लोधके नाम ४॥ क्रमुक १  
पट्टिकाख्य २ पट्टी ३ लाक्षाप्रसादन ४॥

तूदस्तु यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो  
ब्रह्मदारु च ॥ ४१ ॥ तूलं च—

पार्श्वपिप्पल वा तूतके नाम ६॥ तूद  
१ यूप २ क्रमुक ३ ब्रह्मण्य ४ ब्रह्मदारु ५  
॥ ४१ ॥ तूल ६ ॥

—नीपप्रियककदम्बास्तु हरीप्रियः॥

कदम्बके नाम ४ ॥ नीप १ प्रियक  
२ कदम्ब ३ हरिप्रिय ४ ॥  
वीरवृक्षोऽरुष्करोऽग्निमुखी भल्ला-  
तकी त्रिषु ॥ ४२ ॥

भिलावेके नाम ४ ॥ वीरवृक्ष १ अरु-  
ष्कर २ अग्निमुखी ३ भल्लातकी ४॥ ४२  
गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसु-  
पार्श्वकाः ॥ पृक्षश्च—

गेठी ( पिलखन ) के नाम ५ ॥  
गर्दभाण्ड १ कन्दराल २ कपीतन ३  
सुपार्श्वक ४ पृक्ष ५ ॥

—तिन्तिडी चिञ्चाम्लिका—

इमलीके नाम ३ ॥ तिन्तिडी १  
चिञ्चा २ अम्लिका ३ ॥

—ऽथ पीतसारके ॥ ४३ ॥

सर्जकासनबन्धूकपुष्पप्रियक-  
जीवकाः ॥

विजयसारके नाम ६ ॥ पीतसारक १

॥ ४३ ॥ सर्जक २ असन ३ बन्धूक ४  
पुष्पप्रियक ५ जीवक ६ ॥

साले तु सर्जकार्ण्याश्वकर्णकाः  
सस्यसम्बरः ॥ ४४ ॥

शालके नाम ५ ॥ साल १ सर्ज २  
कार्ण्य ३ अश्वकर्णक ४ सस्यसवर ५ ॥ ४४ ॥  
नदीसर्जो वीरतरुर्निद्रद्रुः ककु-  
भोऽर्जुनः ॥

अर्जुनवृक्षके नाम ५ ॥ नदीसर्ज १  
वीरतरु २ इन्द्रद्रु ३ ककुभ ४ अर्जुन ५ ॥  
राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरि-  
काया—

खिल्लीके नाम ३ ॥ राजादन १ फ-  
लाध्यक्ष २ क्षीरिका ३ ॥

—मथ द्वयोः ॥ ४५ ॥

इंगुदी तापसतरु—

पाखीके नाम २ ॥ इंगुदी १ तापस-  
तरु २ ॥ ४५ ॥

—भूर्जे चर्मिमृदुत्वचौ ॥

भोजयत्रके वृक्षके नाम ३ ॥ भूर्ज १  
चर्मिन् २ मृदुत्वच ३ ॥

पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः  
शाल्मलिर्द्वयोः ॥ ४६ ॥

सेमलके नाम ५ ॥ पिच्छिला १ पूरणी  
२ मोचा ३ स्थिरायु ४ शाल्मलि ५ ॥ ४६ ॥

पिच्छा तु शाल्मलीवेष्टे—

समलक गोंदके नाम २॥ पिच्छा १  
शाम्बडीवेष्ट २ ॥

-रोचन कूटशाल्माळि ॥

काष्ठ सेमलके नाम २ ॥ रोचन १  
कूटशाल्माळि २ ॥

चिरविल्वो नक्तमाला करजक  
करजके ॥ ४७ ॥

करजके नाम ४॥ चिरविल्व १ नक्त  
माल २ करज ३ करजक ४ ॥ ४७ ॥

प्रकार्यं पूतिकरजं पूतिकं कलि  
मारकः ॥

फलीके करजके नाम ४॥ प्रकार्यं १  
पूतिकरज २ पूतिक ३ कलिमारक ४ ॥

करजमेदा पद्मधन्यो मकटघ  
झारवल्ली ॥ ४८ ॥

करजक मेद १ ॥ पद्मधन्य १ मकट  
घ २ झारवल्ली ३ ॥ ४८ ॥

रोही रोहितकं धीहस्तशुर्वादिम  
पुष्पम् ॥

रोहीशर नाम १॥ रोहिन् २ रोहि  
तक ३ रोहितक ४ ॥

गायत्री मालतनय खदिरो  
दन्तचावन ॥ ४९ ॥

पेक अषा १ कथक नाम ४ ॥ गा  
यत्री १ मालतनय २ खदिरो ३ दन्त  
चावन ४ ॥ ४९ ॥

अरिमेदो विदस्वदिरे-

दुग्गभयुक्त खेरके नाम २॥ अरिमेदः  
विदस्वदिरे २ ॥

-कदर खदिरे सिते ॥  
सोमवल्कोट-

सफेद खेरके नाम २ ॥ कदर १ सो  
मवल्कोट २ ॥

-प्यय व्याघ्रपुच्छगन्धर्वास्तकी  
॥ ५० ॥

एरण्ड उरुवृक्ष रुच  
कधिप्रकथ स ॥ चञ्चु पञ्चां  
गुलो मण्डवर्धमानव्यङ्गवका ५१

रेड अघात् एरण्डक नाम १ ॥ व्याघ्र-  
पुच्छ १ गन्धर्वहस्त २ ॥ ५० ॥ एरण्ड  
३ उरुवृक्ष ४ रुचक ५ धिप्रक ६ चञ्चु  
७ पञ्चांगुल ८ मंड ९ वर्धमान १०  
व्यङ्गवक ११ ॥ ५१ ॥

अल्पा शमी शमीर स्या-

छोटीशमी(जौटी)का नाम १॥ शमीर १॥

-छमी सक्तुमला शिवा ॥

शमी ( जौटी ) का नाम १ ॥  
शमी १ सक्तुमला २ शिवा ३ ॥

पिण्डीतको मरुषकं श्वसन  
करहाण्य ॥ ५२ ॥

मयनफळक नाम ६ ॥ पिण्डीतक १  
मरुषक २ श्वसन ३ करहाण्य ४ ॥ ५२ ॥  
हाण्य ५ मयन ६ ॥

शक्रपादपः पारिभद्रकः ॥ भद्र-  
शरु द्रुकिलिमं पीतदारु च दारु  
च ॥ ५३ ॥ पूतिकाष्ठं च सप्त  
स्युर्देवदारु-

देवदारुके नाम ८ ॥ शक्रपादप १  
पारिभद्रक २ भद्रदारु ३ द्रुकिलिम ४  
पीतदारु ५ दारु ६ ॥ ५३ ॥ पूति-  
काष्ठ ७ देवदारु ॥ ८ ॥

अथ द्वयोः ॥

पाटलिः पाटला मोघा काचस्थाली  
फलेरुहा ॥ ५४ ॥

कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी-

पाटलीके नाम ७ ॥ पाटलि १ पाट-  
ला २ मोघा ३ काचस्थाली ४ फलेरुहा  
५ ॥ ५४ ॥ कृष्णवृन्ता ६ कुबेराक्षी ७ ॥

-श्यामा तु महिलाह्वया ॥  
लता गोविन्दिनी गुन्द्रा प्रियगु-  
फलिनी फली ॥ ५५ ॥ विष्व-  
क्सेना गन्धफली कारम्भा प्रिय-  
कश्च सा ॥

काकुनीके नाम १२ ॥ श्यामा १  
महिलाह्वया २ लता ३ गोविन्दिनी ४  
गुन्द्रा ५ प्रियगु ६ फलिनी ७ फली ८  
॥ ५५ ॥ विष्वक्सेना ९ गन्धफली  
१० कारम्भा ११ प्रियक १२ ॥

मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकद्वंगटुण्डु-  
काः ॥ ५६ ॥ स्योनाकशुकनास-  
क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः ॥

शोणकश्चारलौ-

सरिखन ( सोनापाठाके नाम १२ ॥  
मण्डूकपर्ण १ पत्रोर्ण २ नट ३ कद्वंग ४  
टुण्डुक ५ ॥ ५६ ॥ स्योनाक ६ शुक-  
नास ७ कक्ष ८ दीर्घवृन्त ९ कुटन्नट  
१० शोणक ११ अरल १२ ॥

-तिष्यफलात्वामलकी त्रिषु ५७ ॥  
अमृता च व्यवस्था च-

आमलौके नाम ४ ॥ तिष्यफला १  
आमलकी २ ॥ ५७ ॥ अमृता ३ वयस्या ४ ॥

-त्रिलिङ्गस्तु विभीतकः ॥ ना-  
क्षस्तुषः कर्षफलो भूतावासः  
कलिद्रुमः ५८ ॥

बहेडेके नाम ६ ॥ विभीतक १ अक्ष  
२ तुष ३ कर्षफल ४ भूतावास ५  
कलिद्रुम ६ ॥ ५८ ॥

अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था  
पूतनामृता ॥ हरितकी हैमवती  
चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ५९ ॥

हरडके नाम ११ ॥ अभया १ अव्यथा  
२ पथ्या ३ कायस्था ४ पूतना ५  
अमृता ६ हरितकी ७ हैमवती ८ चेतकी  
९ श्रेयसी १० शिवा ११ ॥ ५९ ॥



पीतद्वं सरलं पूषिकाष्ठं चा-

सरलके नाम ३ ॥ पीतद्वं १ सरल

० पूषिकाष्ठ ३ ॥

-अथ द्रुमोत्पलं ॥

कर्णिकारं परिध्याघो-

करनेके नाम ३ ॥ द्रुमोत्पलं १ कर्णि

कार २ परिध्याघ ३ ॥

-छकुचो लिङ्गुचो बडुं ॥ ६० ॥

बडहरके नाम ३ ॥ छकुच १

लिङ्गुच २ बडु ३ ॥ ६० ॥

पनसं कण्टकिफलो-

कटहरके नाम २ ॥ पनस १ कण्ट

किफल २ ॥

-निबुलो द्विबलोऽम्बुजं ॥

समुद्रफलके नाम ३ ॥ निबुल १

द्विबल २ अम्बुज ३ ॥

काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलयूर्ज-

घनेपला ॥ ६१ ॥

कटूमरके नाम ४ ॥ काकोदुम्बरिका

१ फल्गु २ मयू ३ जघनेपला ४ ॥ ६१ ॥

अरिष्टं सवतोमद्रं हिशुनियासमास

फां ॥ पिशुमन्दश्च निये-

नीयके नाम ६ ॥ अरिष्ट १ सवतोमद्र

२ हिशुनियास ३ मासफ ४

पिपमन् ५ निय ६ ॥

-अपिच्छिलाऽगुरुशिशपाः ६२ ॥

सीसमके नाम ३ ॥ पिच्छिला १

अगुरु २ शिशपा ३ ॥ ६२ ॥

कपिला मस्मगर्भा सा-

कृष्णवर्ण सीसमका नाम १ ॥

मस्मगमा ॥

शिरीपस्तु कपीतनं ॥

मण्डिलो-

शिरिसके नाम ३ ॥ शिरीप १ कपी-

तन २ मण्डिल ३ ॥

-अथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपु

ष्पकं ॥ ६३ ॥

चम्पेक नाम ३ ॥ चाम्पेय १

चम्पक २ हेमपुष्पक ३ ॥ ६३ ॥

इतस्म कलिका गन्धकली

स्या-

चम्पेकी कलीका नाम १ ॥

गन्धकली १ ॥

-अथ केसरे ॥ वज्रुलो-

मीलसिणके नामके २ ॥ केसर १ वज्रु २ ॥

-अम्बुलोऽशोक-

अशोक नाम २ ॥ अम्बु १ अशोक २ ॥

-समी करकदादिर्मां ॥ ६४ ॥

नारक नाम २ ॥ करक १ दादिम २ ॥

चाम्पेय केसरो नागकगरः

काथनादय ॥

चपापुष्पके नाम ४ ॥ चापेय १  
केसर २ नागकेसर ३ काञ्चनाह्वय ४  
जया जयन्ती तर्कारी नादेयी  
वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥

जाहीके नाम ५ ॥ जया १ जयन्ती २  
तर्कारी ३ नादेयी ४ वैजयन्तिका ५ ॥ ६५ ॥  
श्रीपर्णमग्निमन्थः स्यात्कणिका  
गणिकारिका ॥ जयो-

अरणीके नाम ५ ॥ श्रीपर्ण १ अग्नि-  
मय २ कणिका ३ गणिकारिका ४ जय ५ ॥  
-ऽथ कुटजः शक्रो वत्सको  
गिरिमल्लिका ॥ ६६ ॥

कुर्याके नाम ४ ॥ कुटज १ शक्र-  
२ वत्सक ३ गिरिमल्लिका ४ ॥ ६६ ॥  
एतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं  
फले ॥

इन्द्रजव अर्थात् कुरैयाके फलके नाम  
३ ॥ कलिङ्ग १ इन्द्रयव २ भद्रयव ३ ॥  
कृष्णपाकफलाविग्रसुषेणाः क-  
रमर्दके ॥ ६७ ॥

करोदाके नाम ४ ॥ कृष्णपाकफल १  
अविग्र २ सुषेण ३ करमर्दक ४ ॥ ६७ ॥

कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापि-  
च्छो-

तमालके नाम ३ ॥ कालस्कन्ध १  
तमाल २ तापिच्छ ३ ॥

-प्यथ सिन्दुके ॥

सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणि-  
केत्यपि ॥ ६८ ॥

म्योडी (सिंभाद्र) के नाम ५ ॥ सिन्दुक १  
सिन्दुवार २ इन्द्रसुरस ३ निर्गुण्डी ४  
इन्द्राणिका ५ ॥ ६८ ॥

वेणी खरा गरी देवताडो जीमूत  
इत्यापि ॥

वृन्दाळ वृक्ष जो गुजरातमें गोडी  
प्रसिद्ध है उसके नाम ५ ॥ वेणी १  
खरा २ गरी ३ देवताड ४ जीमूत ५ ॥

श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी-

घुइया ( अरबी ) के नाम २ ॥ श्रीह-  
स्तिनी १ भूरुण्डी २ ॥

-तृणशून्यं तु मल्लिका ॥ ६९ ॥  
भूपदी शीतभीरुश्च-

बेला ( मल्लिका ) के नाम ४ ॥ तृण-  
शून्य १ मल्लिका २ ॥ ६९ ॥ भूपदी ३  
शीतभीरु ४ ॥

-सैवासफोटा वनोद्भवा ॥

वनबेलाका नाम १ ॥ आस्फोटा १ ॥  
शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी  
नीलिका च सा ॥ ७० ॥

न्यवारी ( कालेपुष्पवाली निर्गुण्डी )  
के नाम ४ ॥ शेफालिका १ सुवहा २  
निर्गुण्डी ३ नीलिका ४ ॥ ७० ॥

सितासौ श्वेतसुरसा भूतवे-

उज्ज्वली नेवादीक नाम २॥ श्वेत  
सुरसा १ भूतकेसी २ ॥

-इषय मागधी ॥

गणिका यूयिकाग्वष्टा-

जुहीके नाम ४ ॥ मागधी १

गणिका २ यूयिका ३ अवष्टा ४ ॥

-सा पीता हेमपुष्पिका ॥ ७१ ॥

पीले कृष्णकी जुहीका नाम १॥ हेमपु

ष्पिका १ ॥ ७१ ॥

अतिमुक्तं पुण्ड्रकं स्याद्वासन्ती  
माधवी लता ॥

वासन्तीके नाम ९॥ अतिमुक्त १ पु

ण्ड्रक २ वासन्ती ३ माधवी ४ लता ९॥

मुमना मालती जातिः-

भमडीके नाम ३ ॥ मुमनस् १

मालती २ जाति ३ ॥

-सप्तला नवमालिका ॥ ७२ ॥

बर्गोकी पेडीके नाम २॥ सप्तला १

नवमालिका २ ॥ ७२ ॥

माध्य कुन्द-

कुन्दके नाम २ ॥ माध्य १ कुन्द २॥

-रक्तकस्तु यन्पूको यन्धुर्माविक ॥

दुपरी कूटके नाम ३ ॥ रक्तक १

यन्पू २ यन्धुर्माविक ३ ॥

महा कुमारी तरणि-

धीम्वारके नाम ३॥ सहा १ कुमारी  
२ तरणि ३ ॥

-रम्भानस्तु महासहा ॥ ७३ ॥

कटैयाके नाम २॥ रम्भान १ महा

सहा २ ॥ ७३ ॥

सत्र क्षोणे कुरवक-

छाकटैयाका नाम १॥ कुरवक १॥

-स्वत्र पीते कुरण्टक ॥

पीली कटैयाका नाम १॥ कुरण्टक १॥

नीली सिण्डी द्वयोर्बाणा दासी  
चातगलश्च सा ॥ ७४ ॥

मीठी सिण्डीके नाम ३ ॥ बाणा १

दासी २ चातगल ३ ॥ ७४ ॥

सैरयकस्तु सिण्डी स्या-

सिण्डीमात्रक नाम २ ॥ सैरयेक १

सिण्डी २ ॥

-तस्मिन्कुरवकोऽरुणे ॥

छाक सिण्डीका नाम १॥ कुरवक १ ॥

पीता कुरण्टको सिण्डी तस्मि  
न्सहचरी द्वयोः ॥ ७५ ॥

पीली सिण्डीक नाम २ ॥ कुरण्टक १

सहचरी २ ॥ ७५ ॥

ओण्डपुष्पं जपापुष्पं-

गुदरके नाम २ ॥ ओण्डपुष्प १

जपापुष्प २ ॥

-वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ॥

तिलीके फूलका नाम १ ॥ वज्रपुष्प १ ॥

प्रतिहासशतप्रासचण्डातहय-

मारकाः ॥ ७६ ॥ करवीरे-

कदङ्गल ( कनेर ) के नाम १ ॥

प्रतिहास १ शतप्रास २ चण्डात ३

हयमारक ४ ॥ ७६ ॥ करवीर १ ॥

-करिरे तु ककरग्रन्थिलावुभौ ॥

करिरेके नाम ३ ॥ करीर १ ककर  
२ ग्रन्थिल ३ ॥

उन्मत्तः कितवो धूर्तौ धत्तूरः  
कनकाह्वयः ॥ ७७ ॥

मातुलो मदनश्चा-

धतूरेके नाम ७ ॥ उन्मत्त १ कितव  
२ धूर्त ३ धत्तूर ४ कनकाह्वय ५ ॥ ७७ ॥

मातुल ६ मदन ७ ॥

-ऽस्य फले मातुलपुत्रकः ॥

धतूरेके फलका नाम १ ॥ मातुल-  
पुत्रक १ ॥

फलपूरो बीजपूरो-

विजौरा नीबूके नाम २ ॥ फलपूर १  
बीजपूर २ ॥

-रुचको मातुलङ्गके ॥ ७८ ॥

विजौरा नीबूके भेद ॥ मातुलङ्ग १  
रुचक २ ॥ ७८ ॥

समीरणो मरुवकः प्रस्थपुष्पः  
फणिज्जकः ॥ जम्बीरोऽ-

मरुवाके नाम १ ॥ समीरण १

मरुवक २ प्रस्थपुष्प ३ फणिज्जक ४  
जम्बीर ५ ॥

-प्यथ पर्णासि कठिञ्जरकुठे-  
रकौ ॥ ७९ ॥

पर्णासि के नाम ३ ॥ पर्णासि १ कठि-  
ञ्जर २ कुठेरक ३ ॥ ७९ ॥

सितेर्जकोऽत्र-

श्वेत पर्णासिका नाम १ ॥ अर्जक १ ॥

-पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः ॥

चीतेके नाम ३ पाठी १ चित्रक २  
वह्निसंज्ञक ३ जितने अग्नि के नाम उतने  
भी चीतेके नाम हैं ॥

अर्काह्वयसुकाऽऽस्फोटगणरूपवि-  
कीरणाः ॥ ८० ॥ मन्दारश्चा-  
र्कपर्णो-

आक के नाम ७ ॥ अर्काह्व १ वसुक  
२ आस्फोट ३ गणरूप ४ विकारण ५  
॥ ८० ॥ मन्दार ६ अर्कपर्ण ७ सूर्यके  
सब नाम आक के नाम हैं ॥

-ऽत्र शुक्लेर्लकप्रतापसौ ॥

श्वेत आक के नाम २ ॥ अलर्क १  
प्रतापस २ ॥

शिवमल्ली पाशुपत एकाष्टीलो  
बुको वसुः ॥ ८१ ॥

गूमे के नाम १ ॥ शिवमल्ली १ पा-  
शुपत २ एकाष्टील ३ बुक ४ वसु  
५ ॥ ८१ ॥

बन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीव  
वन्तिकेत्यापि ॥

आकाशदेलेके नाम ४ ॥ बन्दा १  
वृक्षादनी २ वृक्षरुहा ३ जीवन्तिका ४ ॥

वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची  
तन्त्रिकाऽमृता ॥ ८२ ॥ जीव  
न्तिका सोमवल्ली विशल्या  
मधुपर्ण्यपि ॥

गिळोयके नाम ९ ॥ वत्सादनी १  
छिन्नरुहा २ गुडूची ३ तन्त्रिका ४ अ  
मृता ५ ॥ ८२ ॥ जीवन्तिका ६ सोम-  
वल्ली ७ विशल्या ८ मधुपर्णी ९ ॥

मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा ते-  
जनी सवा ॥ ८३ ॥ मधुलिङ्गा  
मधुमेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ॥

चिनारके नाम १० ॥ मूर्वा १ देवी  
२ मधुरसा ३ मोरटा ४ तेजनी ५  
सवा ६ ॥ ८३ ॥ मधुलिङ्गा ७ मधु-  
मेणी ८ गोकर्णी ९ पीलुपर्णी १० ॥

पाठाम्बुष्टा विदूकर्णी स्यापनी  
भेषती रसा ॥ ८४ ॥ एकाष्टी  
छा पापवेली प्राचीना वनाति-  
क्तिका ॥

पेठेके नाम १० ॥ पाठा १ अम्बुष्टा  
२ विदूकर्णी ३ स्यापनी ४ भेषती ५  
रसा ६ ॥ ८४ ॥ एकाष्टी ७ पाप-  
वेली ८ प्राचीना ९ वनातिक्तिका १० ॥

कटु 'कटुम्भराऽशोकोहिणी  
कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥ मत्स्यपिप्पा

कृष्णमेदी चक्राङ्गी सुकुलादनी ॥  
कुठकीके नाम ८ ॥ कटु १ क-

टम्भरा २ अशोकोहिणी ३ कटुरो-  
हिणी ४ ॥ ८५ ॥ मत्स्यपिप्पा ५  
कृष्णमेदी ६ चक्राङ्गी ७ सुकुलादनी ८ ॥

आत्मगुप्ताजहाऽन्यज्जहाकम्पूरा  
माधुपायणी ॥ ८६ ॥ मत्स्यमो-  
क्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुम्भ  
मर्कटी ॥

कैचक नाम ९ ॥ आत्मगुप्ता १  
जहा २ अन्यज्जहा ३ कम्पूरा ४ माधु-  
पायणी ५ ॥ ८६ ॥ मत्स्यमोक्ता ६  
शूकशिम्बि ७ कपिकच्छुम्भ ८ मर्कटी ९ ॥

चित्रोपचित्रा न्यमोची द्रवन्ती  
सुम्बरी वृषा ॥ ८७ ॥ मत्स्यकरो-  
णी सुतमेणी रण्डा मृषिकप-  
र्ण्यपि ॥

मूलीके नाम १० ॥ चित्रा १ उप-  
चित्रा २ न्यमोची ३ द्रवन्ती ४ सुम्बरी ५  
वृषा ६ ॥ ८७ ॥ मत्स्यकरोणी ७ सुतमेणी  
८ रण्डा ९ मृषिकपर्णी १० ॥

अपामार्गः सौस्तरिको धामार्ग  
धमयूरको ॥ ८८ ॥ मत्स्यपर्णी  
केतुपर्णी किणिही खरमञ्जरी ॥  
अपामार्गः नाम ८ ॥ अपामार्ग १

शैखरिक २ अधामार्गव ३ मयूरक ४  
॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पर्णी ५ केशपर्णी ६  
किणिही ७ खरमञ्जरी ८ ॥

हञ्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी  
ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥ अंगार-  
वल्ली बालेयशाकवर्वरवर्धकाः ॥

भारगीके नाम ९ ॥ हञ्जिका १  
ब्राह्मणी २ पद्मा ३ भार्गी ४ ब्राह्म-  
णयष्टिका ५ ॥ ८९ ॥ अंगारवल्ली  
६ बालेयशाक ७ वर्वर ८ वर्द्धक ९ ॥

मञ्जिष्ठा विकसा जिगी समंगा  
कालमोषिका ॥ ९० ॥ मण्डूकपर्णी  
मण्डीरी मण्डी योजनवल्ली अपि ॥

मजीठके नाम ९ ॥ मञ्जिष्ठा १  
विकसा २ जिगी ३ समगा ४ काल-  
मोषिका ५ ॥ ९० ॥ मण्डूकपर्णी ६  
मण्डीरी ७ मण्डी ८ योजनवल्ली ९ ॥

यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्व-  
यासः कुनाशकः ॥ ९१ ॥ रोदनी  
कच्छुरानन्ता समुद्रान्ता दुरालभा ॥

जवासेके नाम १० ॥ यास १  
यवास २ दुःस्पर्श ३ धन्वयास ४  
कुनाशक ५ ॥ ९१ ॥ रोदनी ६  
कच्छुरा ७ अनन्ता ८ समुद्रान्ता ९  
दुरालभा १० ॥

पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण-

द्विपर्णिका ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना  
सिंहपुच्छी कलशी धावनी गुहा ॥  
पिठिवनके नाम ९ ॥ पृश्निपर्णी १

पृथक्पर्णी २ चित्रपर्णी ३ अग्रिपर्णिका  
४ ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना ५ सिंहपुच्छी  
६ कलशी ७ धावनी ८ गुहा ९ ॥

निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री  
बृहती कण्टकारिका ॥ ९३ ॥  
प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा  
राष्ट्रिकेत्यापि ॥

भटकटैया ( कटेहली ) के नाम  
१० ॥ निदिग्धिका १ स्पृशी २ व्याघ्री ३  
३ बृहती ४ कण्टकारिका ५ ॥ ९३ ॥  
प्रचोदनी ६ कुली ७ क्षुद्रा ८ दुःस्पर्शा  
९ राष्ट्रिका १० ॥

नीली काला क्लीतकिका ग्रामी-  
णा मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥ रजनी  
श्रीफली तुत्या द्रोणी दोला च  
नीलिनी ॥

नीलके नाम ११ ॥ नीली १ काला  
२ क्लीतकिका ३ ग्रामीणा ४ मधु-  
पर्णिका ५ ॥ ९४ ॥ रजनी ६ श्रीफली  
७ तुत्या ८ द्रोणी ९ दोला १०  
नीलिनी ११ ॥

अवलगुजः सोमराजी सुवलिः  
सोमवल्लिका ॥ ९५ ॥ कालमोषी  
कृष्णफला वाकुची पूतिफल्यपि ॥

वाकुचीके नाम ८ ॥ अवलगुज १

सोमराजी २ सुवस्त्रि ३ सोमवस्त्रिका ४  
॥ ९९ ॥ काष्मेयी ९ कृष्णफला ६  
माकुची ७ पूसिकली ८ ॥

कृष्णोपकृत्या वैदेही मागधी  
घपला कणा ॥ ९६ ॥ उपणा  
पिप्पली शौण्डी कोला-

पीपलके नाम १० ॥ कृष्णा १  
उपकृत्या २ वैदेही ३ मागधी ४  
घपला ९ कणा ६ ॥ ९६ ॥ उपणा  
७ पिप्पली ८ शौण्डी ९ कोला १० ॥

अथ करिपिप्पली ॥  
कपिवल्ली कोलबल्ली भेयसी  
वशिरा पुमान् ॥ ९७ ॥

गन्धपीपलके नाम ९ ॥ करिपिप्पली  
१ कपिवल्ली २ कोलबल्ली ३ भेयसी ४  
वशिरा ९ ॥ ९७ ॥

अथ तु चविका-  
चाकके नाम २ ॥ चव्य १ चविका २ ॥

-काकचिन्नागुमे तु कृष्णला ॥  
धुनुची ( चिरमठी ) के नाम ३ ॥  
काकचिन्ना १ गुमा २ कृष्णला ३ ॥

पलकपा स्थिगुग्ध्या अक्षुद्रा  
स्वादुकण्टक ॥ ९८ ॥ गोक-  
ण्को गोसुरको वनशृङ्गाट इत्यपि ॥

गोमृत्क नाम ७ ॥ पलकपा १  
शुग्ध्या अक्षुद्रा ३ स्वादुकण्टक

४ ॥ ९८ ॥ गोकण्टक ९ गोसुरक  
६ वनशृङ्गाट ७ ॥

विष्वा विषा प्रतिविषाऽतिवि  
पोषविषारुणा ॥ ९९ ॥ शृङ्गी  
महौषध चा-

अतीसक नाम ८ ॥ विष्वा १ विषा २  
प्रतिविषा ३ अतिविषा ४ उपविषा ९  
अरुणा ६ ॥ ९९ ॥ शृङ्गी ७ महौषध ८ ॥

-अथ क्षीराबी दुग्धिका समे ॥  
दूधीके नाम २ ॥ क्षीराबी १ दुग्धिका २ ॥

क्षतमूली बहुसुताऽमीरिन्दी-  
वरी वरी ॥ १०० ॥ शृङ्ख्यप्रोक्ता  
ऽमीरुपत्री नारायण्य क्षतावरी ॥

अहरे-  
क्षतावरीके नाम १० ॥ शतमूली  
१ बहुसुता २ अमीर ३ इन्दीवरी ४  
वरी ९ ॥ १०० ॥ शृङ्ख्यप्रोक्ता ६  
अमीरुपत्री ७ नारायणी ८ क्षतावरी  
९ अहरे १ ॥

-अथ पीतद्रकाख्यकहरिद्रा ॥  
॥ १०१ ॥ दार्दी पचम्पचा दारु  
हरिद्रा पर्जन्यीत्यपि ॥

दारुद्राख्यीके नाम ७ ॥ पीतद्रु १  
काख्यक २ हरिद्रा ३ ॥ १०१ ॥ दार्दी ४  
पचम्पचा ९ दारुहरिद्रा ६ पर्जन्यी ७ ॥

वचोमगन्धा पद्मगन्धा गोलोमी  
क्षतपौषका ॥ १०२ ॥

वचके नाम ५॥ वचा १ उग्रगन्वा  
२ षड्ग्रन्था ३ गोलोमी ४ शत-  
पर्विका ५ ॥ १०२ ॥

शुक्ला हैमवती-

जिसका श्वेत जड हो उस वचका  
नाम १ ॥ हैमवती १ ॥

-वैद्यमातृसिंह्यौ तु वाशिका ॥  
वृषोऽटरूपः सिंहास्यो वासिको  
वाजिदन्तकः ॥ १०३ ॥

अडूसेके नाम ८॥ वैद्यमातृ १ सिंही  
२ वाशिका ३ वृष ४ अटरूप ५ सिंहास्य  
६ वासिक ७ वाजिदन्तक ८ ॥ १०३ ॥  
आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णु-  
क्रान्तापराजिता ॥

विष्णुक्रान्ताके नाम ४॥ आस्फोटा  
१ गिरिकर्णी २ विष्णुक्राता ३ अपरा-  
जिता ४ ॥

इक्षुगन्वा तु काण्डेषु कोकिलाक्षे-  
क्षुरक्षुराः ॥ १०४ ॥

तालमखानेके नाम ५॥ इक्षुगन्वा  
१ काण्डेषु २ कोकिलाक्ष ३ इक्षुर ४  
क्षुर ५ ॥ १०४ ॥

शालेयः स्याच्छीतशिवश्छत्रा  
मधुरिका मिसिः ॥

मिश्रेया-

सोंफके नाम ६॥ शालेय १ शीत-  
शिव २ छत्रा ३ मधुरिका ४ मिसी ५  
मिश्रेया ६ ॥

प्यथ सीहुण्डो वज्रः स्नुक्छी स्नुही  
गुडा ॥ १०५ ॥ समन्तदुग्धा-

सेहुंड (थोहर) के नाम ६॥ सीहुंड  
१ वज्र २ स्नुह ३ स्नुही ४ गुडा ५ ॥  
१०५ ॥ समन्तदुग्धा ६ ॥

-ऽथो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला ॥  
तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गः पुन-  
पुंसकम् ॥ १०६ ॥

वायविडगके नाम ६॥ वेल्ल १  
अमोघा २ चित्रतण्डुला ३ तण्डुल ४  
कृमिघ्न ५ विडङ्ग ६ ॥ १०६ ॥

बला वाटचालको-  
वरियरा (खरहँटी) के नाम २॥  
बला १ वाटचालक २ ॥

-घण्टारवा तु शणपुष्पिका ॥  
सनाटाके नाम २ ॥ घटारवा १  
शणपुष्पिका २ ॥

मृद्रीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्री  
मधुरसेति च ॥ १०७ ॥

दाखके नाम ५ ॥ मृद्रीका १  
गोस्तनी २ द्राक्षा ३ स्वाद्री ४ मधु-  
रसा ५ ॥ १०७ ॥

सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता  
त्रिवृत् ॥ त्रिभण्डी रोचनी-

श्वेत त्रिधारा (निसोत) के नाम ७॥  
सर्वानुभूति १ सरला २ त्रिपुटा ३ त्रिवृता  
४ त्रिवृत् ५ त्रिभण्डी ६ रोचनी ७ ॥



—श्यामापाणिन्यौ तु मुपेणिका  
॥ १०८ ॥ काला मसुरविदला  
ध्वचन्द्रा कासमेपिका ॥

काळे अिचारे ( निसोत ) के नाम ७ ॥  
श्यामा १ पाणिनी २ मुपेणिका ३  
॥ १०८ ॥ काला ४ मसुरविदला ५  
ध्वचन्द्रा ६ कासमेपिका ७ ॥

मधुक छीतकं यष्टीमधुक मधुप  
टिका ॥ १०९ ॥

जेठीमधुके नाम ४ ॥ मधुक १  
छीतक २ यष्टीमधुक ३ मधुपटिका ४  
॥ १०९ ॥

विदारी क्षीरशुद्धगन्धा  
क्रोष्टी तु या सिता ॥

शुद्धमूकम्भाण्डके नाम ४ ॥ विदारी १  
क्षीरशुद्धा २ शुद्धगन्धा ३ क्रोष्टी ॥  
अन्या क्षीरविदारी स्यान्महाभेत  
र्गगन्धिका ॥ ११० ॥

शुद्धमूकम्भाण्डके नाम ३ ॥ क्षीरवि  
दारी १ महाभेता २ गन्धिका ३ ॥  
॥ ११० ॥

टाङ्गली शारदी सोपपिप्पली  
शकुत्तादनी ॥

जठपीपलक नाम ४ ॥ टाङ्गली १  
शारदी २ सोपपिप्पली ३ शकुत्तादनी ४ ॥  
खराभा कारवी क्षीप्यो मयूरो  
सोचमस्तकः ॥ १११ ॥

मयूरशिखा वा अजुमोदकं नाम ९ ॥  
खराभा १ कारवी २ क्षीप्य ३ मयूरः  
सोचमस्तक ९ ॥ १११ ॥

गोपी श्यामा शारिवा स्या  
दनन्तोत्पलशारिवा ॥  
काठीश्याम्भ (अनन्तमूल) के नाम ५ ॥  
गोपी १ श्यामा २ शारिवा ३ अनन्ता ४  
उत्पलशारिवा ५ ॥

योग्यसृष्टिः सिद्धिलक्ष्म्यौ—  
क्षुद्धि, औपविके नाम ४ ॥ योग्य १  
क्षुद्धि २ सिद्धि ३ लक्ष्मी ४ ॥

—बृद्धेरप्याह्वया इमे ॥ ११२ ॥  
यही नाम बृद्धिनामक औपविकेमी  
होते हैं ॥ ११२ ॥

कदली वारणमुसा रम्भा मोचा  
शुभत्फला ॥ काष्ठीला—

कल्ले नाम ६ ॥ कदली १ वारण  
मुसा २ रम्भा ३ मोचा ४ शम्भुमत्फला  
५ काष्ठीला ६ ॥

—मुत्रपर्णी तु काकमुद्रा सदे-  
त्यपि ॥ ११३ ॥

वनमृगः नाम ३ ॥ मुत्रपर्णी १  
काकमुद्रा २ सदा ३ ॥ ११३ ॥

वासाकी हिगुली सिंही भण्टाकी  
दुष्पधर्षिणी ॥

वनमेघ (वानकटहरी) के नाम ५ ॥

वार्ताकी १ हिगुली २ सिंही ३ भण्टाकी ४  
दुष्प्रधर्षिणी ५ ॥

नाकुली सुरसा रास्त्रा सुगन्धा  
गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥ नकुलेष्टा  
भुजंगाक्षी छत्राकी सुवहा  
च सा ॥

रासन (तुलसी) के नाम ९ ॥  
नाकुली १ सुरसा २ रास्त्रा ३ सुगन्धा ४  
गन्धनाकुली ५ ॥ ११४ ॥ नकुलेष्टा ६  
भुजंगाक्षी ७ छत्राकी ८ सुवहा ९ ॥  
विदारिगन्धांशुमती शालपर्णी  
स्थिरा ध्रुवा ॥ ११५ ॥

शालपर्णी वा सरिवनके नाम ५ ॥  
विदारिगन्धा १ अंशुमती २ शालपर्णी  
३ स्थिरा ४ ध्रुवा ५ ॥ ११५ ॥  
तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी  
वदरेति च ॥

कपासके नाम ४ ॥ तुण्डिकेरी १  
समुद्राता २ कार्पासी ३ वदरा ४ ॥

भारद्वाजी तु सा वन्या—  
वनकी कपास अर्थात् नरमाका नाम  
१ ॥ भारद्वाजी १ ॥

—शृंगी तु ऋषभो वृषः ॥ ११६ ॥  
काकडासींगीके नाम ३ ॥ शृङ्गी १

ऋषभ २ वृष ३ ॥ ११६ ॥  
गागेरुकी नागबला झषा हस्व-  
गवेधुका ॥

ककही (गंगेरु) के नाम ४ ॥

गागेरुकी १ नागबला २ झषा ३  
हस्वगवेधुका ४ ॥

धामार्गवो घोषकः स्या—

श्वेत तुरईके नाम २ ॥ धामार्गव  
१ घोषक २ ॥

न्महाजाली स पीतकः ॥ ११७ ॥

पीलेफूलकी तुरईका नाम १ ॥  
महाजाली १ ॥ ११७ ॥

ज्योत्स्नी पटोलिका जाली—

चचेंडेके नाम ३ ॥ ज्योत्स्नी १  
पटोलिका २ जाली ३ ॥

—नादेयी भूमिजम्बुका ॥

भूमिजामुनके नाम २ ॥ नादेयी १  
भूमिजम्बुका २ ॥

स्यालंगलिक्यग्निशिखा—

कारियारी (कलहारी) के नाम २ ॥  
लंगलिकी १ अग्निशिखा २ ॥

—काकांगी काकनासिका ॥ ११८ ॥

काकजघा अर्थात् कौवाठोढी  
(मकोह) के नाम २ ॥ काकांगी १  
काकनासिका २ ॥ ११८ ॥

गोधापदी तु सुवहा—

हसपदी (लज्जावती) के नाम २ ॥  
गोधापदी १ सुवहा २ ॥

—मुसली तालमूलिका ॥

मूसलीके नाम २ ॥ मुसली १ ताल  
मूलिका २ ॥

अजशृङ्गी विपाणी स्या-

मेढ्रासीगीके नाम २ ॥ ममशृङ्गी १  
विपाणी २ ॥

-श्रोमिहादार्बिके समे ॥ ११९ ॥

गोमीके नाम २ ॥ गोमिहा १  
दार्बिका २ ॥ ११९ ॥

ताम्बूलबल्ली ताम्बूली नागव  
ल्लभ-

नागकेल अर्थात् पानक नाम ३ ॥  
ताम्बूलबल्ली १ ताम्बूली २ नागबल्ली ३ ॥

-प्यय द्विजा ॥

हरेणु रेणुका कौन्ती कपिला  
भस्मगन्धिनी ॥ १२० ॥

गगनधूरिके नाम ६ ॥ द्विजा १  
हरेणु २ रेणुका ३ कौन्ती ४ कपिला  
५ भस्मगन्धिनी ६ ॥ १२० ॥

पलावाल्लकमैलेयं सुगन्धिहरि  
वाल्लकम् ॥ वाल्लकं स्या-

एडमा नामक गन्धद्रव्यविशेषके  
नाम १ ॥ पलावाल्लक १ मैलेय २  
सुगन्धि ३ हरिवाल्लक ४ वाल्लक ५ ॥

-ज्य पालङ्गुषा मुकुन्दं कु-  
न्दकुन्दुरु ॥ १२१ ॥

पालङ्गुषाके नाम ४ ॥ पालङ्गी १  
मुकुन्द २ कुन्द ३ कुन्दुरु ४ ॥ १२१ ॥

वालं निधिरवाहंभोदीर्घ्यं केशाम्बु  
नाम ५ ॥

नेत्रवालाक नाम ४ ॥ वाल १

हीवर २ बहिष्ठ ३ उदीर्घ्य ४ ॥  
केशके और उदकके सब नाम ५ ॥

कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीव-  
शिवानि तु ॥ १२२ ॥ शैलेय-

शिलाजीतक नाम ५ ॥ काष्मदु-  
सार्य १ वृद्ध २ अश्मपुष्प ३ शिव  
शिव ४ ॥ १२२ ॥ शैलेय ५ ॥

-तालपर्णी तु देत्या गन्धकुटी  
मुरा ॥ गन्धिनी-

मुरेठी वा तालिमपत्रके नाम ५ ॥  
तालपर्णी १ देत्या २ गन्धकुटी ३  
मुरा ४ गन्धिनी ५ ॥

-गजमक्ष्या तु सुवहा सुरभी  
रता ॥ १२३ ॥ महेरुणा कुन्दु-  
रुकी सल्लकी हादिनीति च ॥

कासके नाम ८ ॥ गजमक्ष्या १  
सुवहा २ सुरभी ३ रता ४ ॥ १२३ ॥

महेरुणा ५ कुन्दुरुकी ६ सल्लकी ७  
हादिनी ८ ॥

अग्निज्वालासुभिसे तु धातकी  
धातुप्रथिका ॥ १२४ ॥

धष ( धायकृष्ण ) क नाम ४ ॥  
अग्निज्वाला १ सुभिसे २ धातकी ३  
धातुप्रथिका ४ ॥ १२४ ॥

पृथ्वीका चन्द्रवाल्लेला निष्कु-  
र्विर्बहुला-

बढी इलायची के नाम ५॥पृथ्वीका १  
चन्द्रवाला २ एला ३ निष्कुटी ४ बहुला ५॥

—ऽथ सा ॥

सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्या कोरङ्गी  
त्रिपुटा त्रुटिः ॥ १२५ ॥

गुजराती ( छोटी ) इलायचीके  
नाम ५ ॥ उपकुञ्चिका १ तुत्या २  
कोरङ्गी ३ त्रिपुटा ४ त्रुटि ५ ॥ १२५ ॥

व्याधिः कुष्ठं पारिभाव्यं व्याप्यं  
पाकलमुत्पलम् ॥

कूठके नाम ६ ॥ व्याधि १ कुष्ठ २  
पारिभाव्य ३ व्याप्य ४ पाकल ५ उत्पल ६ ॥  
शंखिनी चोरपुष्पी स्यात्केशि—

शखाहुलीके नाम ३ ॥ शंखिनी १  
चोरपुष्पी २ केशिनी ३ ॥

—न्यथ वितुन्नकः ॥ १२६ ॥

शटामलाज्ज्ञटा ताली शिवा ताम-  
लकीति च ॥

भूम्यामलकी अर्थात् अँवरीके नाम  
७ ॥ वितुन्नक १ ॥ १२६ ॥ शटर  
अमला ३ अज्ज्ञटा ४ ताली ५ शिवा  
६ तामलकी ७ ॥

प्रपौण्डरीकं पौण्डर्य—

गुलाबके नाम २ ॥ प्रपौण्डरीक १  
पौण्डर्य २ ॥

—मथ तुन्नः कुबेरकः ॥ १२७ ॥  
कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दि-  
वृक्षो—

तुनके नाम ६ ॥ तुन्न १ कुबेरक २ ॥ १२७ ॥  
कुणि ३ कच्छ ४ कान्तलक ५ नन्दि वृक्ष ६ ॥

—ऽथ राक्षसी ॥

चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पत्रगणहा-  
सकाः ॥ १२८ ॥

धनहरीके नाम ६ ॥ राक्षसी १  
चण्डा २ धनहरी ३ क्षेम ४ दुष्पत्र ५  
गणहासक ६ ॥ १२८ ॥

व्याडायुधं व्याघ्रनखं करजं  
चक्रकारकम् ॥

नखा, गन्धद्रव्यके नाम ४ ॥ व्या-  
डायुध १ व्याघ्रनख २ करज ३ चक्रकारक ४  
सुषिरा विद्रुमलता कपोताग्रिर्नटी  
नली ॥ १२९ ॥

मालकागनीके नाम ५ ॥ सुषिरा १  
विद्रुमलता २ कपोताग्रि ३ नटी ४  
नली ५ ॥ १२९ ॥

धमन्यजनकेशी च हनुर्हृदविला-  
सिनी ॥

ककूदनिके नाम ४ ॥ धमनी १ अज्ज-  
नकेशी २ हनु ३ हृदविलासिनी ४ ॥  
शक्तिः शंखः खुरः कोलदलं  
नख—

नक्षी नाम गन्धद्रव्यविशेषके नाम  
१ ५ छक्ति १ शंस २ सुर ३ कोळ-  
दछ ४ नख ५ ॥

-मषाढकी ॥ १३० ॥

काशी मृत्स्ना मुवरिका मृषाछक  
सुराक्षे ॥

भरहरके नाम १ ॥ भाढकी १ ॥

॥ १३० ॥ काशी २ मृत्स्ना ३ मुवरिका  
४ मृषाछक ५ सुराक्ष ६ ॥

कुटम्बट दाक्षपुर वानेय परिपेखम्  
॥ १३१ ॥ दुक्कगोपुरगोनदकैवर्त्तौ  
मुस्तकानि च ॥

मोयाक नाम २ ॥ कुटम्बट १ दाक्ष  
पुर २ वानेय ३ परिपेख ४ ॥ १३१ ॥  
दक्षगोपुरगोनदकैवर्त्तौ ८ मुस्तक ९  
ग्रन्थिपर्ण शुक्र वईपुष्प स्थोणे  
यकुक्कुरे ॥ १३२ ॥

कत्तरोधि नाम १ ॥ ग्रन्थिपर्ण १ शुक्र २  
वईपुष्प ३ स्थोणय ४ कुक्कुर ५ ॥ १३२ ॥  
मरुन्माला तु पिशुना स्पृष्टा देवी  
छता छपु ॥ समुद्रान्ता वधू को  
निर्वा लंकोपिफेत्सपि ॥ १३३ ॥

मत्सरकर नाम १ ॥ मरुन्माला  
१ पिशुना २ स्पृष्टा ३ देवी ४ छता ५  
छपु ६ समुद्रान्ता ७ वधू ८ कनिष्ठा  
९ लकारिका ॥ १ ॥ १३३ ॥

तपस्विनी जटा मांसी जटिला  
छोमशा मिशी ॥

जटामांसीके नाम १ ॥ तपस्विनी १  
जटा २ मांसी ३ जटिला ४ छोमशा  
५ मिशी ६ ॥

त्वक्पत्रमुत्कट मृङ्ग त्वर्ष चोष  
वराङ्गकम् ॥ १३४ ॥

तजके नाम १ ॥ त्वक्पत्र १ उत्कट २  
मृङ्ग ३ त्वर्ष ४ चोष ५ वराङ्गक ६ ॥ १३४ ॥  
कर्धूरको द्राघिडक कास्पको  
वेधमुस्तक ॥

कवूरके नाम ४ कर्धूरफ १ द्राघि  
डक २ कास्पक ३ वेधमुस्तक ४ ॥

ओषध्यो जातिमात्रे स्यु-  
स्य अमोक्षा नाम १ ॥ ओषधी १ ॥  
-रस्मातो सर्वमौषधम् ॥ १३५ ॥  
अममात्रका नाम १ ॥ औषध १ ॥ १३५ ॥

शाकारुष्य पत्रपुष्पादि-  
तर्करीमात्रका नाम १ ॥ शाक १ ॥  
-तण्डुलीयोऽल्पमारिष ॥

चौरार्द्र के नाम २ ॥ तण्डुलीय १ अ-  
मारिष २ ॥

विशल्यामिश्रिखाज्जन्ता पलिनी  
शक्रपुष्पिका ॥ १३६ ॥

कक्षियाटी इन्द्रपुष्पीक नाम १ ॥  
विशल्या १ अमिश्रिता २ अजन्ता ३  
पलिनी ४ शक्रपुष्पिका ५ ॥ १३६ ॥

स्यादृक्षगन्धा छगलान्ध्यावेगी  
वृद्धदारकः ॥ जुङ्गो-

विधाराके नाम ५ ॥ ऋक्षगन्धा  
१ छगलान्त्री २ आवेगी ३ वृद्धदारक  
४ जुङ्ग ५ ॥

-ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था  
सोमवल्लरी ॥ १३७ ॥

ब्राह्मीके नाम ४ ॥ ब्राह्मी १ मत्स्याक्षी  
२ वयस्था ३ सोमवल्लरी ४ ॥ १३७ ॥

पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी  
हिमावती ॥

मकोईके नाम ४ ॥ पटुपर्णी १  
हैमवती २ स्वर्णक्षीरी ३ हिमावती ४ ॥

हयपुच्छी तु काम्बोजी माष-  
पर्णी महासहा ॥ १३८ ॥

मूगके नाम ४ ॥ हयपुच्छी १ काम्बोजी  
२ माषपर्णी ३ महासहा ४ ॥ १३८ ॥

तुण्डिकेरी रक्तफला विम्बिका  
पल्लिपर्ण्यापि ॥

कुटुरीके नाम ४ ॥ तुण्डिकेरी १  
रक्तफला २ विम्बिका ३ पीलुपर्णी ४ ॥

बर्वरा कवरी तुंगी खरपुष्पा-  
जगन्धिका ॥ १३९ ॥

बर्वराके नाम ५ ॥ बर्वरा १ कवरी  
२ तुंगी ३ खरपुष्पा ४ अजगन्धिका  
५ ॥ १३९ ॥

एलापर्णी तु सुवहा रास्ना  
युक्तरसा च सा ॥

एलापर्णीके नाम ४ ॥ एलापर्णी १  
सुवहा २ रास्ना ३ युक्तरसा ४ ॥

चांगेरी चुक्रिका दन्तशठाम्ब-  
ष्ठाम्ललोणिका ॥ १४० ॥

अम्लोना वा चूकाके नाम ५ ॥  
चांगेरी १ चुक्रिका २ दन्तशठा ३  
अम्बष्ठ ४ अम्ललोणिका ५ ॥ १४० ॥

सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः  
शतवेध्यापि ॥

अमलवेतकं नाम ४ ॥ सहस्रवेधी १  
चुक्र २ अम्लवेतस ३ शतवेधी ४ ॥

नमस्कारी गण्डकारी समंगा  
खदिरेत्यपि ॥ १४१ ॥

किसी २ के मतसे चांगेरी आदि ९  
भी अमलवेतके नाम हैं ॥ लज्जालूके  
नाम ४ ॥ नमस्कारी १ गण्डकारी २  
समंगा ३ खदिरा ४ ॥ १४१ ॥

जीवन्ती जीवनी जीवा जीव-  
नीया मधुः स्रवा ॥

जिसे गुर्जरदेशमें दोडी कहते हैं उस  
औषधिके नाम ६ ॥ जीवन्ती १ जीवनी  
२ जीवा ३ जीवनीया ४ मधु ५  
स्रवा ६ ॥ कोईक ' मधुस्रवा ' एक-  
नाम कहते हैं ॥

कूर्चशीर्षो मधुरकः शृंगहस्वा-  
ङ्गजीवकाः ॥ १४२ ॥

जीवकके नाम ५ ॥ कूर्चशीर्ष १  
मधुरक २ शृंग ३ हस्वांग ४ जीवक  
५ ॥ १४२ ॥

किरासविको, भूनिम्बोऽनार्य  
विको—

धिरायसेके नाम ३ ॥ किरासविक  
१ भूनिम्ब २ अनार्यविक ३ ॥

—५य सतला ॥

विमला सातला भूरिफेना  
चमकपेत्यापि ॥ १४३ ॥

सीङ्गमेदके नाम ५ ॥ सतला १  
विमला २ सातला ३ भूरिफेना ४  
चमकपा ५ ॥ १४३ ॥

वायसोली स्वादुरसा वयस्या  
काकोलीके नाम ३ ॥ वायसोली  
१ स्वादुरसा २ वयस्या ३ ॥

—५य मकूलकः ॥

निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्षे  
व्युदुम्बरपर्णपि ॥ १४४ ॥

वज्रदन्ती कर्पातदन्तिमाके नाम जिसके  
बीसको जयशाल कहते हैं ५ ॥ मकूलक १  
निकुम्भ २ दन्तिका ३ प्रत्यक्षेणी ४  
उदुम्बरपर्णी ५ ॥ १४४ ॥

अजमोदा सुमगन्धा ब्रह्मवर्मा  
यमानिका ॥

अजमोद या अजमोदनके नाम  
४ ॥ अजमोदा १ सुमगन्धा २ ब्रह्म  
वर्मा ३ यमानिका ४ ॥

मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि  
पौष्करे ॥ १४५ ॥

पौष्करमुख नाम ३ ॥ पुष्कर १  
काश्मीर २ पद्मपत्र ३ ॥ १४५ ॥

अव्यधातिचरा पद्मा चारणी  
पद्मचारिणी ॥

पद्माखक नाम ५ ॥ अव्यधा १  
अतिचरा २ पद्मा ३ चारणी ४  
पद्मचारिणी ५ ॥

काम्पित्य कर्कशक्षन्द्रो रक्ता  
गोरोचनीत्यपि ॥ १४६ ॥

कबीछेके नाम ५ ॥ काम्पित्य १  
कर्कशा २ चम्प ३ रक्तांग ४ रोचनी  
५ ॥ १४६ ॥

प्रपुष्पाब्जस्त्वेवगजो ददृश्वक्ष  
मर्दका ॥ पद्मा उरणाख्यक्ष—

चक्रक वा पद्माक नाम ६ ॥ प्रपु  
ष्पा १ उरणा २ ददृश ३ चक्रमर्दक  
४ पद्मा ५ उरणाख्य ६ ॥

—पलाण्डुस्तु मुकुन्दक १४७ ॥  
प्याजके नाम २ ॥ पलाण्डु १  
मुकुन्दक २ ॥ १४७ ॥

छटाकबुद्धमौ तत्र हरिते—  
हरे प्याजके नाम २ ॥ छटार्क १  
बुद्ध २ ॥

—५य महोषधम् ॥  
लघुर्न गृह्यनारिष्टमहाकन्दर  
सोनका ॥ १४८ ॥

लघुसुनके नाम ६ ॥ महोषध १ लघु  
२ गृह्य ३ नारिष्ट ४ महाकन्दर ५  
सोनका ६ ॥ १४८ ॥

पुमर्नवा तु क्षोयघ्नी—

गदहपुरैता ( सांठी ) के नाम २॥  
पुनर्नवा १ शोथघ्नी २ ॥

—वितुन्नं सुनिषण्णकम् ॥

विस्खपडाके नाम २ ॥ वितुन्न १  
सुनिषण्णक २ ॥

स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिता  
शणपण्यपि ॥ १४९ ॥

पटशनके नाम ४॥ वातक १ शीतल  
२ अपराजिता ३ शणपणी ४॥ १४९॥

पारावताद्वाग्निः कटभी पण्या  
ज्योतिष्मती लता ॥

मालकागनीके नाम ५॥ पारावताग्नि  
१ कटभी २ पण्या ३ ज्योतिष्मती ४  
लता ५ ॥

वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती  
बलभद्रिका ॥ १५० ॥

त्रायमाणके नाम ४ ॥ वार्षिक १  
त्रायमाणा २ त्रायन्ती ३ बलभद्रिका  
४॥ १५० ॥

विष्वक्सेनप्रिया गृष्टिर्वाराही  
बदरेत्यापि ॥

वाराहीकन्दके नाम ४ ॥ विष्वक्से-  
नप्रिया १ गृष्टि २ वाराही ३ बदरा ४ ॥

मार्कवो भृङ्गराजः स्या—

भृगराज ( भगारा ) के नाम २ ॥

मार्कव १ भृगराज २ ॥

—काकमाची तु वायसी ॥ १५१ ॥

कावैया वा कौवाहाडी गोडीके नाम  
२॥ काकमाची १ वायसी २ ॥ १५१ ॥

शतपुष्पा सितच्छत्राऽतिच्छत्रा  
मधुरा मिसिः ॥ अवाक्पुष्पी  
कारवी च—

सोंफके नाम ७ ॥ शतपुष्पा १  
सितच्छत्रा २ अतिच्छत्रा ३ मधुरा ४  
मिसि ५ अवाक्पुष्पी ६ कारवी ७ ॥

—सरणा तु प्रसारिणी ॥ १५२ ॥

तस्यां कटभरा राजबला भद्र-  
बलेत्यापि ॥

कुञ्जप्रसारिणी वा चाद्वेल वा  
प्रसारि ( खीप ) के नाम ९ ॥ सरणा  
१ प्रसारिणी २ ॥ १५२ ॥ कटम्भरा ३  
राजबला ४ भद्रबला ५ ॥

जनी जतूका रजनी जतुकृच्चक्र-  
वर्तिनी ॥ १५३ ॥ संस्पर्शा—

चक्रवत्के नाम ६ ॥ जनी १ जतूका  
२ रजनी २ जतुकृत् ४ चक्रवर्तिनी  
५ ॥ १५३ ॥ संस्पर्शा ६ ॥

—ऽथ शठी गन्धमूली षड्ग्रन्थि-  
केत्यापि ॥ कर्चुरोऽपि पलाशो—

कचूरके नाम ५ ॥ शठी १ गन्ध-  
मूली २ षड्ग्रन्थिका ३ कर्चूर ४  
पलाश ५ ॥

—ऽथ कारवेलः कठिलकः ॥ १५४ ॥  
सुषवी चा—



फरलोक नाम ३ ॥ फारण्ड १

फयिदुक्त २ ॥ १९४ ॥ सुपथी ३ ॥

-ऽय कुलक पटोलस्वित्तक\*  
पटु\* ॥

परवरक नाम ४ ॥ कुठक १ पटोल  
१ निक्तक ३ पटु ४ ॥

कूष्माण्डकस्तु कक्तर-

कुम्हडा (काष्टा) के नाम २ ॥

कूष्माण्डक १ कर्कार २ ॥

-रिषारु\* ककटी स्त्रियौ ॥ १९५ ॥

ककडीक नाम ॥ ईषारु १ ककटी २

॥ १९५ ॥

इक्ष्वाकु कटुतुम्बी स्या-

रामतुर्ध्वर्थात् कौशिक नाम २ ॥

इक्ष्वाकु १ कटुतुम्बी २ ॥

-तुम्ब्यलावूरुमे समे ॥

तुम्बीक नाम २ तुम्बी १ मलान् २ ॥

चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा-

जठउ ककटी (गडुमा) क नाम ३ ॥

चित्रा १ गवाक्षी २ गोडुम्बा ३ ॥

-विशाला त्विन्द्रवारुणी ॥ २५१ ॥

इन्द्रवारुणीक नाम ॥ विशाला १

इन्द्रवारुणी २ ॥ १९६ ॥

-अशोघ्न\* सूरणाः कन्द -

सूरण अघात् अमीकन्दन नाम ३ ॥

अशोघ्न १ सूरण २ कन्द ३ ॥

गण्डीरस्तु समष्टिः ॥

गंडरीक नाम २ ॥ गंडीर १

समष्टिः २ ॥

कलम्ब्यु-

कल्युआका नाम १ ॥ कलम्बी १ ॥

-पादिका-

पोईका नाम १ ॥ उपोदिका १ ॥

-र्यो तु मूलक-

मूडीका नाम १ ॥ मूलक १ ॥

-हिलमोचिका ॥ १९७ ॥

हिलसाका नाम १ ॥ हिलमोचिका १

॥ १९७ ॥

वास्तुर्क-

यधुएका नाम १ ॥ वास्तुक १ ॥

-आकमेदा\* स्यु-

यह सब आकके मेद करे ॥

-ईर्वा तु गृध्रपार्षिका ॥

सहस्रवीयाभागव्यो रुहा

जन्ता-

दूधक नाम ३ ॥ दूधा १ दूध

पार्षिका - सहस्रवीर्या ३ मागर्षी ४

रुहा ५ अमन्ता ६ ॥

-ऽय सा सिता ॥ १९८ ॥

गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली

शकुलाक्षक\* ॥

उज्ज्वली दूधक नाम ४ ॥ १९८ ॥

गोलोमी १ शतवीर्या २ गण्डाली २

शकुलाक्षक ३ ॥

कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता  
मुस्तकमस्त्रियाम् ॥ १५९ ॥

मोथाके नाम ४ ॥ कुरुविन्द १  
मेघनामन् २ मुस्ता ३ मुस्तक ४ ॥  
॥ १५९ ॥

रयाद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा-  
नागरमोथाके नाम २ ॥ भद्रमुस्त-  
क १ गुन्द्रा २ ॥

-चूडाला चक्रलोच्चटा ॥  
मोथाविशेषके नाम ३ ॥ चूडाला  
१ चक्रला २ उच्चटा ३ ॥

वंशे त्वक्सारकर्मारत्वचिसार-  
तृणध्वजाः ॥ १६० ॥ शतपर्वा  
यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ॥

वाशके नाम १० ॥ वश १ त्व-  
क्सार २ कर्मार २ त्वचिसार ४ तृणध्वज  
५ ॥ १६० ॥ शतपर्वन् ६ यवफल ७  
वेणु ८ मस्कर ९ तेजन १० ॥

वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वन-  
न्त्यनिलोद्धताः ॥ १६१ ॥

जो छेदमें वायु जानेसे शब्द करने  
लगै उन वांशोंका नाम १ ॥ कीचक  
१ ॥ १६१ ॥

ग्रन्थिर्ना पर्वपरुषी-

गांठके नाम ३ ॥ ग्रन्थि १ पर्वन्  
२ परुष ३ ॥

-गुन्द्रस्तेजनकः शरः ॥

शरके नाम ३ ॥ गुन्द्र १ तेज-  
नक २ शर ३ ॥

नडस्तु धमनः पोटगलो-

नलके नाम ३ ॥ नड १ धमन २  
पोटगल ३ ॥

-ऽथो काशमस्त्रियाम् ॥ १६२ ॥

इक्षुगन्धा पोटगलः-

काशके नाम ३ ॥ काश १ ॥ १६२ ॥  
इक्षुगन्धा २ पोटगल ३ ॥

-पुंसि भूम्नि तु बल्वजाः ॥

वर्गईका नाम १ ॥ बल्वज १ ॥

रसाल इक्षु-

ऊख अर्थात् गन्नाक नाम २ ॥

रसाल १ इक्षु २ ॥

-स्तद्देदाः पुण्ड्रकान्तारका

दयः ॥ १६३ ॥

पोंढा ऊखके नाम २ ॥ पुण्ड्र १

कान्तारक २ आदि ॥ १६३ ॥

स्याद्दीरणं वीरतरं-

गांडरेके नाम २ ॥ वीरण १  
वीरतर २ ॥

-मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ॥

अभयं नलदं सेव्यममृणालं जला-

शयम् ॥ १६४ ॥ लामज्जकं

लघुलयमवदाहेष्टकापथे ॥

गांडरेकी जड़ अर्थात् खशके नाम  
१० ॥ उशीर १ अभय २ नलद ३ सेव्य

४ अमृणाळ ५ जलाशय ६ ॥ ११४ ॥  
 ताम्रजक ७ छद्युख्य ८ अशदाह ९  
 इष्टकापथ १० ॥

नडादयस्तृण गर्मुच्छ्रधामाक-  
 प्रमुखा अपि ॥ १६५ ॥

नडादि गर्मुत् स्वामाफलादिका  
 नाम १ ॥ तृण १ ॥ १६५ ॥

असी कुञ्ज कुया दर्भ पवित्र-  
 कुशक नाम ॥ १ ॥ कुश १ कुय ९  
 दर्भ ३ पवित्र ४ ॥

-मय कटृणम् ॥

पौरसौगविकध्यामदेवजग्य  
 कर्तौहिपम् ॥ १६६ ॥

रोहितके नाम ६ ॥ कटृण १ पौर २  
 सौगन्धिक ३ ध्याम ४ देवजग्य ५  
 रौक्षिप ६ ॥ १६६ ॥

छत्रातिच्छत्रपालनी-

पानीके तृणके नाम ३ ॥ छत्रा १  
 अतिच्छत्र २ पाळन ३ ॥

-मालातृणकमूस्तृणे ॥

तृणविशेषके नाम २ ॥ मालातृ-  
 णक १ मूस्तृण २ ॥

क्षुण्ण बासतृण-

मये तृणके नाम २ ॥ क्षुण्ण १  
 बासतृण २ ॥

-घातो मवर्त-

घासक नाम २ ॥ घास १ यवस २ ॥  
 -तृणमर्जुनम् ॥ १६७ ॥

तृणमात्रक नाम २ ॥ तृण १  
 अर्जुन २ ॥ १६७ ॥

तृणानां सहितस्तृण्या-

तृणम्मूहका नाम १ ॥ तृण्या १ ॥  
 -मदद्या तु नडसंहतिः ॥

नडोरु समूहका नाम १ ॥ मदद्या १ ॥  
 तृणराजादयस्तालो-

ताडके नाम २ ॥ तृणराज १ ताड २ ॥  
 -नालिकेरस्तु लाङ्गली १६८ ॥

नारियळक नाम २ ॥ नालिकेर १  
 लाङ्गली २ ॥ १६८ ॥

घोष्ठा शु पुगः क्रमुको गुवाका  
 खपुरो-

सुपारीके नाम ५ ॥ घोष्ठा १ पूग  
 २ क्रमुक ३ गुवाक ४ खपुर ५ ॥

-ऽस्य तु ॥ फलमुद्गे-

सुपारीक फलका नाम १ ॥  
 उद्गे १ ॥

-मेते च हिन्तालसाहितास्त्रय'  
 ॥ १६९ ॥ सर्जूरः केतकी ताली

सर्जुरी च तृणदुमारः ॥  
 सल्लिकी नाम ३ ॥ सर्जूर १ केतकी

२ ताली ३ सर्जुरी ४ तृणदुमारः तृणदुम  
 नाम ६ ॥ १६९ ॥

इति वनौपधिवर्गः ४ ॥

अथ सिंहादिवर्गः ५.

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः  
केसरी हरिः ॥

सिंहके नाम ६ ॥ सिंह १ मृगेन्द्र २  
पञ्चास्य ३ हर्यक्ष ४ केसरिन् ५ हरिः ६ ॥

शार्दूलद्वीपनौ व्याघ्रे—

वाघके नाम ३ ॥ शार्दूल १ द्वीपिन् २  
व्याघ्र ३ ॥

—तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ १ ॥

चीत्तेके नाम २ ॥ तरक्षु १ मृगादन  
२ ॥ १ ॥

वराहः सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री  
किरिः किटिः ॥ दंष्ट्री घोणी  
स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि २

सूअरके नाम १२ ॥ वराह १ सूकर  
२ घृष्टि ३ कोल ४ पोत्रिन् ५ किरि ६  
किटि ७ दंष्ट्रिन् ८ घोणिन् ९ स्तब्ध-  
रोमन् १० क्रोड ११ भूदार १२ ॥ २ ॥

कपिप्लवङ्गप्लवगशाखामृगवली-  
मुखाः ॥ मर्कटो वानरः कीशो  
वनौका—

वानरके नाम ९ ॥ कपि १ प्लवङ्ग २  
प्लवग ३ शाखामृग ४ वलीमुख ५ मर्कट  
६ वानर ७ कीश ८ वनौकस् ९ ॥

—अथ भल्लुके ॥ ३ ॥

ऋक्षाऽच्छभल्लभल्लका—

५

रीछके नाम ४ ॥ भल्लुक १ ॥ ३ ॥

ऋक्ष २ अच्छभल्ल ३ भल्लुक ४ ॥

—गण्डके खड्गखड्गिनौ ॥

गैडेके नाम ३ ॥ गण्डक १ खड्ग २  
खड्गिन् ३ ॥

लुलायो महिपो वाहद्विपत्कासर-  
सैरिभाः ॥ ४ ॥

भैसेके नाम ५ ॥ लुलाय १ महिष २  
वाहद्विपत् ३ कासर ४ सैरिभ ५ ॥ ४ ॥

स्त्रियां शिवा भूरिमायगोमायुमृग-  
धूर्तकाः ॥ शृगालवचकक्रोष्टुफे-  
रुफेरवजम्बुकाः ॥ ५ ॥

सियार—गीदडके नाम १० ॥ शिवा  
१ भूरिमाय २ गोमायु ३ मृगधूर्तक ४  
शृगाल ५ वचक ६ क्रोष्टु ७ फेरु ८  
फेरव ९ जम्बुक १० ॥ ५ ॥

ओतुर्विडालो मार्जारो वृषदंशक  
आखुमुक्—

विलावके नाम ५ ॥ ओतु १ विडाल  
२ मार्जार ३ वृषदंशक ४ आखुमुक् ५ ॥

त्रयो गौधेरगौधारगौधेया गो-  
धिकात्मजे ॥ ६ ॥

चन्दनगोह ( गुहेरा ) अर्थात् यह  
जन्तु काले सर्पसे गोहमें उत्पन्न होता  
है उसके नाम ३ ॥ गौधेर १ गौधार  
२ गौधेय ३ ॥ ६ ॥

श्रावित्तु शल्य—

साहीके नाम २॥ व्याकिद् १ शत्यर ॥

स्तोत्रोन्नि शल्लो शल्लं शल्लम् ॥

साहीके परोंके नाम १ ॥ शल्लो

१ शल्ल २ शल्ल ३ ॥

वातप्रमीवातमृग-

शीघ्रगामी मृगविशेषके नाम २ ॥

वातप्रमी १ वातमृग २ ॥

-कोकत्स्वीहामृगो वृकः ॥ ७ ॥

मन्त्रियेके नाम ३ ॥ कोक १ ईहा

मृग २ वृक ३ ॥ ७ ॥

मृगे कुतगवातायुहरिणामिनयो

नयः ॥

मृगके नाम १ ॥ मृग १ कुत २

वातायु ३ हरिण ४ अजिनयोनि ५ ॥

ऐणेयमेण्याश्चर्मय-

हरिणीके चर्म मांसादिका नाम १ ॥

ऐणेय १ ॥

-मेणस्मैण-

हरिणके चर्म मांसादिका नाम १ ॥ ऐण १ ॥

-मुभे त्रिपु ॥ ८ ॥

ऐणेय और एण ये शब्द तीनों

जिगोमें होते हैं ॥ ८ ॥

कन्दली कन्दली चीनश्चमूरुमि

पकावपि ॥ समूरुमेति हरिणा

अमी अजिनयोनयः ॥ ९ ॥

मृगोके मर ७ ॥ कन्दलि १ कन्द

लिन् २ चीन ३ चमूर ४ प्रियक ५

समूर ६ हरिण ७ ॥ ९ ॥

कृष्णसाररुच्यहुरहसम्बररौहि

पाः ॥ गोकर्णपृषतैणश्मरौहिताश्म-

मरो मृगाः ॥ १० ॥

तथा मृगोके मेद १२ ॥ कृष्णसार

१ रुच २ रुच्य ३ रुच ४ सम्बर ५

रौहिण ६ गोकर्ण ७ पृषत ८ एण ९

श्मर १० रौहित ११ चमर १२ ॥ १० ॥

गन्धर्वः शरमो राम सुमरो

गवयः शशः ॥ इत्यादयो मृगे

न्द्राद्या गवाद्याः पशुजातयाः ॥ ११ ॥

तथा मृगोके मेद ६ ॥ गन्धर्व १

शरम २ राम ३ सुमर ४ गवय ५ शश

६ इस प्रकार मृग आदि और सिंह

आदि तथा गौआदि पशुजाति कह

छाते हैं ॥ ११ ॥

चन्द्रुर्मूपकोप्यारु-

चूहेके नाम ३ ॥ चन्द्रु १ मूपक २

आरु ३ ॥

-गिरिका बालमृषिका ॥

छोटी बुढ़ियाके नाम २ ॥ गिरिका

१ बालमृषिका २ ॥

सरटः कृकलासः स्या-

गिराटके नाम २ ॥ सरट १ कृक

लास २ ॥

न्मुमली मृदगोपिका ॥ १२ ॥

छपकलीके नाम २ ॥ मुसली १  
गृहगोधिका २ ॥ १२ ॥

लूता स्त्री तन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः  
समाः ॥

मकडीके नाम ४ ॥ लूता १ तन्तुवाय  
२ ऊर्णनाभ ३ मर्कटक ४ ॥

नीलगुस्तु कृमिः—

कीटविशेषके नाम २ ॥ नीलगु १ कृमि २ ॥

—कर्णजलौकाः शतपद्युमे ॥ १३ ॥

कानखजूरेके नाम २ ॥ कर्णजलौकस्  
१ शतपदी २ ॥ १३ ॥

वृश्चिकः शूककीटः स्या—

ऊनी वस्त्रके खानेवाले कीड़ेके नाम  
२ ॥ वृश्चिक १ शूककीट २ ॥

—दलिद्रोणौ तु वृश्चिके ॥

बीछूके नाम ३ ॥ अलि १ द्रोण २ वृश्चिक ३ ॥

पारावतः कलरवः कपोतो—

कवूतरके नाम ३ ॥ पारावत १  
कलरव २ कपोत ३ ॥

—ऽथ शशादनः ॥ १४ ॥

पत्री श्येन—

बाजके नाम ३ ॥ शशादन १ ॥

॥ १४ ॥ पत्रिन् २ श्येन ३ ॥

—उलूकस्तु वायसारातिपेचकौ ॥

उलूके नाम ३ ॥ उलूक १ वायसा-  
राति २ पेचक ३ ॥

व्याघ्राटः स्याद्भरद्वाजः—

भरद्वाज पक्षीके नाम २ ॥ व्याघ्राट

१ भरद्वाज २ ॥

खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ १५ ॥

खञ्जनके नाम २ ॥ खञ्जरीट १ ॥

खञ्जन २ ॥ १५ ॥

—लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्या—

कक पक्षीके नाम २ ॥ लोहपृष्ठ १ कक २ ॥

—दथ चाषः किकीदिविः ॥

नीलकण्ठके नाम २ ॥ चाष १  
किकीदिवि २ ॥

कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा—

मस्तकचूडपक्षीके नाम ३ ॥  
कलिङ्ग १ भृङ्ग २ धूम्याट ३ ॥

—अथ स्याच्छतपत्रकः ॥ १६ ॥

दार्वाघाटो—

खुटबढई पक्षीके नाम २ ॥ शतप-  
त्रक १ ॥ १६ ॥ दार्वाघाट २ ॥

—ऽथ सारङ्गस्तोककश्चातकः  
समाः ॥

पपीहा अर्थात् चातकके नाम ३ ॥  
सारङ्ग १ तोकक २ चातक ३ ॥

कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चर-  
णायुधः ॥ १७ ॥

मुरगेके नाम ४ ॥ कृकवाकु १ ताम्र-  
चूड २ कुक्कुट ३ चरणायुध ४ ॥ १७ ॥

चटक कलविहङ्गक स्या-

किरोटे ( चिडे ) क नाम २ ॥

चटक १ कलविहङ्गक २ ॥

-चस्य श्री चटका-

विहङ्गाका नाम १ ॥ चटका १ ॥

-चयोः ॥ पुमपत्ये चाटकैर-

इनके बघेका नाम १ ॥ चाटकैर १ ॥

रुमपत्ये चटकैव सा ॥ १८ ॥

इनक बघीका नाम १ ॥ चटका १ ॥ १८ ॥

कर्करीट्टा कोट्टा स्या-

एक प्रकारक अश्रुम शब्द करनेवाले

पक्षीके नाम २ ॥ कर्करीट्टा १ कोट्टा २ ॥

।-रुक्मण्यककतौ समौ ॥

विडियाविहङ्गके नाम २ ॥ रुक्मण्य १

ककत २ ॥

वनप्रियः परमृष्टः कोकिल-

पिक इत्यपि ॥ १९ ॥

कायिकके नाम ४ ॥ वनप्रिय १

परमृष्ट २ कोकिल ३ पिक ४ ॥ १९ ॥

कोके तु कण्टारिष्टमलिपुष्टसकृ-

त्पमा ॥ ध्वाङ्मात्मघोषपरमृ-

ष्टमिभुग्वापसा अपि ॥ २० ॥

कोकेके नाम १ ॥ काक १ कण्ट

१ कण्ट ३ मलिपुष्ट ४ सकृत्पमा ५

ध्वाङ् ६ आत्मघोष ७ परमृष्ट ८

मलिभुग् ९ वापसा १० ॥ २० ॥

घ्रोगकाकस्तु काकोलो-

घोम कौवेके नाम २ ॥ घ्रोगकाक १

काकोलो २ ॥

-दात्यूहः कालकण्ठक ॥

काळे कौवेके नाम २ ॥ दात्यूह १

कालकण्ठक २ ॥

आतापिचिह्नो-

चीह्नेके नाम २ ॥ आतापि १ चिह्न २ ॥

-दाक्षाय्यगृध्रौ-

ग्रीवक नाम २ ॥ दाक्षाय्य १ गृध्र २ ॥

-कीरशुक्रौ-

तोटक नाम २ ॥ कीर १ शुक्र २ ॥

-समौ ॥ २१ ॥

आतापि और चिह्न, दाक्षाय्य और

गृध्र, तथा कीर और शुक्र शब्द समान

किं हे ॥ २१ ॥

-कुङ्कुमो-

कुङ्कुमपक्षीके नाम २ ॥ कुङ्कुम १ कुङ्कुम २ ॥

-ऽथ वक्रं कङ्क-

वक्रुके नाम २ ॥ वक्र १ कङ्क २ ॥

-पुष्कराबस्तु सारस ॥

सारसके नाम २ ॥ पुष्करा १ सारस २ ॥

कोकशकभक्त्याको रथाङ्गद्वय

नामक ॥ २२ ॥

वक्रं वक्रुके नाम २ ॥ कोक १

वक्र २ वक्रुके ३ रथाङ्ग ४ ॥ २२ ॥

कादम्बः कलहंसः स्या-

वर्तक पक्षीके नाम २ ॥ कादम्ब

१ कलहस २ ॥

दुत्क्रोशकुररौ समौ ॥

कुररी पक्षीके नाम २ ॥ उत्क्रोश १ ॥ १६५ ॥

कुरर २ ॥

हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्रांगा मा-  
नसौकसः ॥ २३ ॥

हसके नाम ४ ॥ हस १ श्वेतगरुत  
२ चक्रांग ३ मानसौकस ४ ॥ २३ ॥

राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणै-  
लोहितैः सिताः ॥

जिन हसोंकी चोंच और पैर लाल  
हों और देह उज्ज्वल हो उन हसोंका  
नाम १ ॥ राजहस १ ॥

मलिनैर्मल्लिकाक्षास्ते-

जिन हसोंके चरणादि मैले हों  
उनका १ ॥ मल्लिकाक्ष १ ॥

धार्तराष्ट्राः सितेतरैः ॥ २४ ॥

जिनके चोंच और चरण काले हों उन  
हसोंका नाम १ धार्तराष्ट्र १ ॥ २४ ॥

शरारिराटिराडिश्च-

आडी पक्षीके नाम ३ ॥ शरारि १  
आटि २ आडि ३ ॥

-बलाका विसकण्ठिका ॥

बगुलेके दूसरी जातिके नाम २ ॥

बलाका १ विसकण्ठिका २ ॥

हंसस्य योषिद्वरटा-

हसनीका नाम १ ॥ वरटा १ ॥

-सारसस्य तु लक्ष्मणा ॥ २५ ॥

सारसकी स्त्रीका नाम १ ॥ लक्ष्मणा

१ ॥ १६५ ॥

जतुकाऽजिनपत्रा स्या-

चिमगादरके नाम २ ॥ जतुका १

अजिनपत्रा २ ॥

त्परोष्णी तैलपायिका ॥

चपरा पक्षीके नाम २ ॥ परोष्णी

१ तैलपायिका २ ॥

वर्वणा मक्षिका नीला-

मक्खीके नाम ३ ॥ वर्वणा १

मक्षिका २ नीला ३ ॥

-सरघा मधुमक्षिका ॥ २६ ॥

शहदकी मक्खीके नाम २ ॥ सरघा

१ मधुमक्षिका २ ॥ २६ ॥

पताङ्गिका पुत्तिका स्या-

छोटी मधुमक्खीके नाम २ ॥

पतंगिका १ पुत्तिका २ ॥

दंशस्तु वनमक्षिका ॥

ढासके नाम २ ॥ दश १ वनमक्षिका २ ॥

दंशी तज्जातिरल्पा स्या-

छोटे ढासका नाम १ ॥ दशी १ ॥

-गन्धोली वरटा द्वयोः ॥ २७ ॥

गन्धोली मक्खीके नाम २ ॥ गन्धोली  
१ वरटा २ ॥ २७ ॥



शृगारी श्रीरुका चीरी सिल्लि  
का घ समा इमा ॥

श्रीगरके नाम ४ ॥ शृगारी १  
श्रीरुका २ चीरी ३ सिल्लिका ४ ॥

समौ पतगशलभौ-

पतगके नाम २ ॥ पतंग १ शलम २ ॥

-खद्योतो ज्योतिरिगणा २८ ॥

जुगनु कोडेके नाम २ ॥ खद्योत  
१ ज्योतिरिगण २ ॥ २८ ॥

मधुवतो मधुक्तो मधुलिप्प  
धुपालिन ॥ द्विरेफपुष्पलिहृन्  
गपट्पदभ्रमराख्य ॥ २९ ॥

मधुवरेके नाम १ ॥ मधुवत १ मधु  
क्त २ मधुलिप्प ३ मधुप ४ मधुलि ५  
द्विरेफ ६ पुष्पलिहृन् ७ मद्र ८ पट्पद  
९ भ्रमर १ ॥ मद्रि ११ ॥ २९ ॥

मयूरो बार्हिणो बर्हि नीलकण्ठो  
मुजंगमुक् ॥ शिखाबला शिखी  
केकी मेघनादानुलास्यपि ॥ ३० ॥

मोरके नाम २ ॥ मयूर १ बार्हिण २  
बार्हिन् ३ नीलकण्ठ ४ मुजंगमुक् ५  
शिखाबल ६ शिखिन् ७ केकिन् ८  
मेघनादानुलासिन् ९ ॥ ३० ॥

केका वाणी मयूरस्य-

मोरके शब्दका नाम १ ॥ केका १ ॥

-समौ चन्द्रकमचकौ ॥

मोरके परोपर चन्द्राकार धिक्के  
नाम २ ॥ चन्द्रक १ मेचक २ ॥

शिखा चूडा-

मोरकी चोटीकेनाम २ ॥ शिखा १ चूडा २ ॥

-शिखण्डस्तु पिच्छयई, नष्ट-

सके ॥ ३१ ॥

मोरके परोके नाम ३ ॥ शिखण्ड १

पिच्छ २ यई ३ ॥ ३१ ॥

खगे विहंगाविहगाविहगमविहा  
यस ॥ शकुन्तिपाक्षिशकुनिशकुन्त  
शकुनदिजा ॥ ३२ ॥ पतत्रिपत्रि-  
पतगपतत्पत्ररथाण्डजा ॥ नगौ  
कोवाजिविकिरविविष्किरपतत्रय  
॥ ३३ ॥ नीलोद्भवा गरुत्मन्त्र  
पित्तन्त्रो नमसंगमा ॥

पक्षीमात्रके नाम २७ ॥ खग १ शिग  
२ शिग ३ शिगम ४ विहायस ५  
शकुन्ति ६ पक्षिन् ७ शकुनि ८ शकुन्त  
९ शकुन १० शिज ११ ॥ ३२ ॥  
पतत्रिन् १२ पत्रिन् १३ पतग १४  
पतत् १५ पत्ररथ १६ पतत्र १७  
नगौकम् १८ वाजिन् १९ विकिर  
२० १ ॥ विष्किर २२ पतत्रि २३ ॥  
३४ ॥ नीलोद्भवा २४ गरुत्मन्त्र २५ ॥  
पित्तत् २६ नमसंगमा २७ ॥

तेषां विशेषा इरीतो मद्र-  
कारण्डव छवा ॥ ३४ ॥ तिसिरि-

कुक्कुभो लावो जीवजीवश्च  
कोरकः ॥ कोयष्टिकाष्टिष्टिभको  
वर्तको वर्तिकादयः ॥ ३५ ॥

पक्षियोंके भेद १३ ॥ हारीत १  
मद्गु २ कारण्डव ३ पुत्र ४ ॥ ३४ ॥  
तित्तिरि ५ कुक्कुभ ६ लाव ७ जीव-  
जीव ८ चकोरक ९ कोयष्टिक १०  
टिष्टिमक ११ वर्तक १२ वर्तिका १३  
इत्यादि ॥ ३५ ॥

गरुत्पक्षच्छदाः पत्रं पतत्रं च  
तनूरुहम् ॥

पक्षियोंके परोके नाम ६ ॥ गरुत् १  
पक्षर छद ३ पत्र ४ पतत्र ५ तनूरुह ६ ॥

स्त्री पक्षतिः पक्षमूलं—

पक्षियोंके बाजूके नाम २ ॥  
पक्षति १ पक्षमूल २ ॥

—चञ्चुस्त्रोटिरुभे स्त्रियौ ॥ ३६ ॥

चोंचके नाम २ ॥ चञ्चु १  
त्रोटि २ ॥ ३६ ॥

प्रडीनोड्डीनसंडीनान्येताः खग  
गतिक्रियाः ॥

पक्षियोंकी चालके भेद ३ ॥  
प्रडीन १ उड्डीन २ संडीन ३ ॥

पेशी कोशो द्विहीनेण्डं—

अण्डेके नाम ३ ॥ पेशी १ कोश २  
अण्ड ३ ॥

—कुलायो नीडमास्त्रियाम् ॥ ३७ ॥

पक्षियोंके घरके नाम २ ॥ कुलाय  
१ नीड २ ॥ ३७ ॥

पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथु-  
कः शावकः शिशुः ॥

पक्षीके वा साधारण बच्चेके  
नाम ७ ॥ पोत १ः पाक २ अर्भक ३  
डिम्भ ४ पृथुक ५ शावक ६ शिशु ७ ॥

स्त्रीपुंसौ मिथुनं द्वन्द्वं—

स्त्रीपुरुषके जोड़ेके नाम ३ ॥  
स्त्रीपुस १ मिथुन २ द्वन्द्व ३ ॥

—युगं तु युगुलं युगम् ॥ ३८ ॥  
जोड़ेके नाम ३ ॥ युग १ युगुल २  
युग ३ ॥ ३८ ॥

समूहो निवहव्यूहसंदोहविसर-  
व्रजाः ॥ स्तोमौघनिकरवात-  
वारसंघातसंचयाः ॥ ३९ ॥ समु-  
दायः समुदयः समवायश्चयो  
गणः ॥ स्त्रियां तु संहतिर्वृन्दं  
निकुरम्बं कदम्बकम् ॥ ४० ॥

समूहके नाम २२ ॥ समूह १  
निवह २ व्यूह ३ सन्दोह ४ विसर ५  
व्रज ६ स्तोम ७ ओघ ८ निकर ९  
वात १० वार ११ संघात १२  
संचय १३ ॥ ३९ ॥ समुदाय १४  
समुदय १५ समवाय १६ चय १७  
गण १८ संहति १९ वृन्द २० नि-  
कुरम्ब २१ कदम्बक २२ ॥ ४० ॥

वृन्दमेदा -

अथ समूहोंके भेद कहतहैं ॥

-समैवर्ग-

जीव अजीव एकही जातिके  
समूहका नाम १ ॥ वग १ ॥

-सघसार्यो तु जन्तुभिः ॥

कवळ प्राणियोंके समूहके नाम २ ॥  
सघ १ सार्य २ ॥

सजातीयैः कुल-

एक जातिके ही प्राणियोंके  
समूहका नाम १ ॥ कुल १ ॥

-यूय तिरस्वां पुनर्पुसकम् ॥ ४१ ॥

पक्षियोंके समूहका नाम १ ॥  
यूय १ ॥ ४१ ॥

पशूनां समाजो-

पशुओंके समूहका नाम १ ॥ समाज १ ॥

-ऽप्येषां समाजो-

पक्षी-भेदे पशुओंसे दूसरोंके  
समूहका नाम १ ॥ समाज १ ॥

-ऽय सधर्मिणाम् ॥

स्माभिकाश-

एकधर्मविशेषियोंके समूहका नाम १ ॥  
निकाश १ ॥

-पुञ्जराशी वृत्करं फुटम-  
स्त्रियाम् ॥ ४२ ॥

भसादिके ऊषे डेरके नाम ४ ॥  
पुञ्ज १ राशी २ वृत्कर ३ फुट ४ ॥ ४२ ॥

कापोतशोकमायूरतैत्तिरादीनि  
तद्वर्णे ॥

(कमूतरीके समूहका नाम) कापोता ॥  
( तोतोंके समूहका नाम ) शोक ॥  
( मयूरोंके समूहका नाम ) मायूरा ॥ ( तीत  
रोंके समूहका नाम ) तैत्तिर इत्यादि ॥

गृहासक्ताः पक्षिस्तृगाश्छेकास्ते  
गृहकाश्च ते ॥ ४३ ॥

घरके पाछे हुए मृगपक्षी आदिके  
नाम २ ॥ छेक १ गृहक २ ॥ ४३ ॥

इति सिंहादिर्नाम ॥ ५ ॥

अथ मनुष्यवर्गः ६

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा  
मानवा नराः ॥

मनुष्यमात्रके नाम ६ ॥ मनुष्य १  
मानुष २ मर्त्य ३ मनुज ४ मानव ५  
नर ६ ॥

स्यु पुमांसं पञ्चजनां पुरुषां  
पुरुषा नरः ॥ १ ॥

मनुष्यजातिपुरुषके नाम ५ ॥ पुंस्  
१ पञ्चजन २ पुंस्व ३ पूस्व ४  
वृ ५ ॥ १ ॥

स्त्री योषिद्वयला योषां नारी  
स्त्रीमतिनी वयू ॥ प्रतीपदर्शिनी  
नामावनिता मदिला तथा ॥ २ ॥

स्त्रीके नाम ११ ॥ स्त्री १ योषि २  
वयू ३ योषा ४ नारी ५ स्त्रीमतिनी ६

वधू ७ प्रतीपदर्शिनी ८ वामाएवनिता  
१० महिला ११ ॥ २ ॥

**विशेषा-**

स्त्रियोंके विशेषभेद कहते हैं ॥

**-स्त्वङ्गना भीरुः कामिनी**  
**वामलोचना ॥ प्रमदा मानिनी**  
**कान्ता ललना च नितम्बिनी**  
**॥ ३ ॥ सुन्दरी रमणी रामा-**

अच्छे अर्गोवाली स्त्रीका नाम १ ॥  
अगना १ ॥ डरभूत स्त्रीका नाम १ ॥  
भीरु १ ॥ कामयुतस्त्रीका नाम १ ॥  
कामिनी १ ॥ सुन्दरनेत्रोंवाली स्त्रीका  
नाम १ ॥ वामलोचना १ ॥ बहुतकामवती  
स्त्रीका नाम १ ॥ प्रमदा १ ॥ प्रणयको-  
पवाली स्त्रीका नाम १ ॥ मानिनी १ ॥  
मन हरनेवाली स्त्रीका नाम १ ॥ कान्ता  
१ ॥ दुलारी स्त्रीके नाम २ ॥ ललना १  
नितम्बिनी २ ॥ ३ ॥ सुन्दर अर्गोवाली  
स्त्रीका नाम १ ॥ सुन्दर अङ्गोंवाली  
स्त्रीकेनाम सुन्दरी १ ॥ जिसमें  
अतिचित्त रमित हो उस स्त्रीका नाम १ ॥  
रमणी १ ॥ बिहारके योग्य स्त्रीका  
नाम १ ॥ रामा १ ॥

**-कोपना सैव भामिनी ॥**

कोपवाली स्त्रीके नाम २ ॥ कोपना १  
भामिनी २ ॥

**वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा**  
**वरवर्णिनी ॥ ४ ॥**

बहुत ही उत्तम स्त्रीके नाम ४ ॥  
वरारोहा १ मत्तकाशिनी २ उत्तमा ३  
वरवर्णिनी ४ ॥ ४ ॥

**कृताभिषेका महिषी-**

जिस रानीका अभिषेक हुआ हो  
उसका नाम १ ॥ महिषी १ ॥

**-भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ॥**

महिषीको छोड़ राजाकी अन्यस्त्रि-  
योंका नाम १ ॥ भोगिनी १ ॥

**पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया**  
**सहधर्मिणी ॥ ५ ॥ भार्या जा-**  
**याय पुंभूम्नि दाराः-**

व्याहीहुई स्त्रीके नाम ७ ॥ पत्नी १  
पाणिगृहीती २ द्वितीया ३ सहधर्मिणी  
४ ॥ ५ ॥ भार्या ५ जाया ६ दारा पु० व० ७ ॥

**स्यात्तु कुटुम्बिनी ॥**

**पुर्न्ध्री-**

जिस स्त्रीके पतिपुत्र दोनों विद्य-  
मानहों उसके नाम २ ॥ कुटुम्बिनी १  
पुर्न्ध्री २ ॥

**-सुचरित्रा तु सती साध्वी**  
**पतिव्रता ॥ ६ ॥**

पतिव्रता स्त्रीके नाम ४ ॥ सुचरित्रा १  
सती २ साध्वी ३ पतिव्रता ४ ॥ ६ ॥

**कृतसापत्निकाध्यूढाधिविन्ना-**

जिसके बहुतसी स्त्रिया हो उनमें  
जो प्रथम व्याही गई हो उसके नाम ३ ॥

हस्तापत्निका १ अण्डा २ अधि  
क्रिया ३ ॥

-अथ स्वयंवरा ॥

पतिवरा च वर्याय-

जो अपने आप स्वयंवरादिमें पति  
की इच्छा करे उस स्त्रीके नाम १ ॥

स्वयवरा १ पतिवरा २ वर्या ३ ॥

-कुलस्त्री कुलपालिका ॥ ७ ॥

कुलवती स्त्रीके नाम २ ॥ कुल  
स्त्री १ कुलपालिका २ ॥ ७ ॥

कन्या कुमारी-

पांच वर्षकी कन्याके नाम २ ॥  
कन्या १ कुमारी २ ॥

-गौरी तु नमिकाऽनागतार्तका ॥

दशवर्षकी कन्याके नाम १ ॥ गौरी  
१ नमिका २ अनागतार्तका ३ ॥

स्यान्मध्यमा दृष्टरजा-

त्रिस्रो रजोधर्म होजाय उस  
स्त्रीका नाम १ ॥ मध्यमा १ ॥

-स्तूणी युवति समे ॥ ८ ॥

युवास्त्रीके नाम २ ॥ स्तूणी १  
युवता २ ॥ ८ ॥

समास्तुपाजनीविध्व-

बहू ( पुत्रवधू ) के नाम ३ ॥  
स्तुपा १ जनी २ वधू ३ ॥

-क्षिरप्टी तु सुवासिनी ॥

जो कि किञ्चित् सुगन्धका प्राप्त  
प्याही इष्ट निजविनाक परमें रहनी हो

उस स्त्रीके नाम २ ॥ क्षिरप्टी १ ॥  
सुवासिनी २ ॥

इच्छावती कामुका स्या-

जो धनादिकी इच्छा करती हो उस  
स्त्रीके नाम २ ॥ इच्छावती १ कामुका २ ॥

-वृषस्पन्ती तु कामुकी ॥ ९ ॥

मनुष्यकी इच्छाकरनेवाली स्त्रीक  
नाम २ ॥ वृषस्पन्ती १ कामुकी २ ॥ ९ ॥

कान्तार्थिनी तु या याति सके-  
त साऽभिसारिका ॥

जो पतिकी इच्छाकर कामार्थ हो  
सकेत स्थानको जाये उस स्त्रीका नाम

१ ॥ अभिसारिका १ ॥

पुञ्जली धर्षिणी धन्वकन्यसती  
कुलदेवरी ॥ १० ॥ स्वैरिणी पां

शुला च स्या-

ध्वमिधारिणी स्त्रीके नाम ८ ॥  
पुञ्जली १ धर्षिणी २ धन्वकन्यसती

३ कुलदेवरी ४ स्वैरिणी ५ ॥ १० ॥

पञ्चशुला ८ ॥

-चक्षिन्वी शिशुना विना ॥

विगुप्तवासी स्त्रीका नाम १ ॥  
चक्षिन्वी १ ॥

अवीरा निष्पत्तिमुता-

जिसका पतिपुत्र न हो उस स्त्रीका  
नाम १ ॥ अवीरा १ ॥

-विश्वस्ताविधवे समे ॥ ११ ॥  
विधवा स्त्रीक नाम २ ॥ विश्वस्ता १

विधवा २ ॥ ११ ॥

आलिः सखी वयस्याथ—

सखी वा साथके खेलनेवाली स्त्रीके

नाम३॥आलि १ सखी २ वयस्या ३॥

—पतिवल्नी समर्तृका ॥

जिस स्त्रीका पति जीता हो उसके

नाम २॥पतिवल्नी १ समर्तृका २ ॥

वृद्धा पलिक्री—

बूढ़ी स्त्रीके नाम२॥वृद्धा १ पलिक्री २॥

—प्राज्ञी तु प्रज्ञा—

कुछ कुछ समझदार स्त्रीके नाम२॥

प्राज्ञी १ प्रज्ञा २ ॥

—प्राज्ञा तु धीमती ॥ १२ ॥

अतिबुद्धिमती स्त्रीके नाम२॥प्राज्ञा

१ धीमती २ ॥ १२ ॥

शूद्री शूद्रस्य भार्या स्या—

चाहे अन्य जातिभी हो पर शूद्रकी स्त्री हो उस स्त्रीका नाम १॥ शूद्री १॥

—च्छूद्रा तज्जातिरेव च ॥

शूद्रजातिका नाम १ ॥ शूद्रा १॥

आभीरी तु महाशूद्री जातिपुंयो-  
गयोः समा ॥ १३ ॥

अहिरनिके नाम २ ॥ आभीरी १  
महाशूद्री २ ॥ १३ ॥

अर्याणी स्वयमर्या स्या—

बनैनीके नाम२॥अर्याणी १ अर्या २॥

क्षत्रिया क्षात्रियाण्यपि ॥

क्षत्रियानीके नाम २ ॥ क्षत्रिया १

क्षत्रियाणी २ ॥

उप अध्यायाप्युपाध्यायी—

पढितानीके नाम २ ॥ उपाध्याया

१ उपाध्यायी २ ॥

—स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥ १४ ॥

जो अपने आप मन्त्रोके अर्थ कहस

के उसका नाम१॥ आचार्या १॥ १४॥

आचार्यानी तु पुंयोगे—

चाहे मन्त्रादिकी व्याख्या न करसके

पर आचार्यकी स्त्री हो उसका नाम१॥

आचार्यानी १ ॥

—स्यादर्या—

तैसेही अर्य ( वैश्य ) की स्त्रीका

नाम १॥ अर्या १ ॥

—क्षत्रियी तथा ॥

क्षत्रियकी स्त्रीका नाम१॥क्षत्रियी १॥

उपाध्यायान्युपाध्यायी—

पढानेवालेकी स्त्रीके इसी प्रकारके

नाम २॥ उपाध्यायनी १ उपाध्यायी २॥

—पोटा स्त्री पुंसलक्षणा ॥ १५ ॥

ढाढीमूछ आदियुक्त स्त्रीका नाम१॥

पोटा १ ॥ १५ ॥

वीरपत्नी वीरभार्या—

वीरकी स्त्रीके नाम २॥ वीरपत्नी १

वीरभार्या २ ॥

—वीरमार्ता तु वीरसू ॥

वीरकी माताके नाम २ ॥ वीरमातृ

१ वीरसू २ ॥

जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च  
प्रसूतिका ॥ १६ ॥

जिस्के बाळक पैदा हुआ हो उस  
की नाम ४ ॥ जातापत्या १ प्रजाता  
२ प्रसूता ३ प्रसूतिका ४ ॥ १६ ॥

स्त्री नामिका कोटवी स्या-

नंगी स्त्रीके नाम २ ॥ नामिका १ कोटवी २

—इदूती सचारिके समे ॥

दूतके नाम २ ॥ इदूती १ सचारिका २ ॥

कात्यायन्यर्यबुद्धा या कापायवस  
नाश्रवा ॥ १७ ॥

गेह आदिते रंगेहुए वस्त्र पहननेवाली  
बुद्ध बुद्ध विवशा स्त्रीका नाम १ ॥  
कात्यायनी १ ॥ १७ ॥

सैरन्धी परवेश्मस्था स्ववशा  
क्षिपकारिका ॥

अपनी इच्छाके अनुसार पराय गृह  
में रहकर शिष्यकार्य करनेवाली स्त्रीका  
नाम १ ॥ सैरन्धी १ ॥

असिक्त्री स्यादधुदा या मेप्याज्जतः  
पुरचारिणी ॥ १८ ॥

घरके भीतर सेना आदि कार्य करने वा  
की जानकीका नाम २ ॥ असिक्त्री १ ॥ १८ ॥

नारस्त्री गणिका वेश्या रूपा  
जीवा-

वेश्याके नाम ४ ॥ नारस्त्री १  
गणिका २ वेश्या ३ रूपाजीवा ४ ॥

—ऽथ सा अनै ॥

सत्कृषा वारमुख्या स्या-

जिस्का पुरुष अधिक सम्कार करे  
मर्यात् सर्वमें श्रेष्ठ वेश्याका नाम १ ॥  
वारमुख्या १ ॥

—कुट्टनी क्षम्मली समे ॥ १९ ॥

कुट्टनीके नाम २ ॥ कुट्टनी १ ॥

क्षम्मली २ ॥ १९ ॥

विप्रश्निका स्त्रीसणिका दैवज्ञा-

साधुदिक आदि शास्त्रानुसार छद्म  
जानकर शुभाशुभ फल कहनेवाली स्त्री  
के नाम ३ ॥ विप्रश्निका १ ईश्वरिका २  
दैवज्ञा ३ ॥

—ऽथ रजस्वला ॥

स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी  
पुष्पवत्पि ॥ २० ॥ ऋतुमत्य  
प्युत्कस्यापि-

रजस्वला स्त्रीके नाम ८ ॥ रजस्वला १  
स्त्रीधर्मिणी २ अभि ३ आत्रेयी ४ मलिनी ५  
पुष्पवती ६ ॥ २ ॥ ऋतुमती ७ उदक्या ८ ॥

—स्याद्रजः पुष्पमातनम् ॥

स्त्रीके मासिक रजोधर्मके नाम ३ ॥

रजसू १ पुष्प २ आतन ३ ॥

श्रद्धालुर्दोहदवती-

गर्भके समय अनेकप्रकारकी इच्छा करनेवाली स्त्रीके नाम २ ॥ श्रद्धालु १ दोहदवती २ ॥

-निष्कला विगतातर्त्वा ॥ २१ ॥

रजोहीन स्त्रीके नाम २ ॥ निष्कला १ विगतातर्त्वा २ ॥ २१ ॥

आपन्नसत्त्वा स्याद्गुर्विण्यन्त-  
वर्त्नी च गर्भिणी ॥

गर्भवाली स्त्रीके नाम ४ ॥ आप-  
न्नसत्त्वा १ गुर्विणी २ अन्तर्वर्त्नी ३  
गर्भिणी ४ ॥

गणिकादेस्तु गाणिक्यं गा-  
भिणं यौवतं गणे ॥ २२ ॥

वेश्याओंके समूहका नाम १ ॥ गाणि-  
क्य १ ॥ गर्भिणियोंके समूहका नाम  
१ ॥ गर्भिण १ ॥ युवतियोंके समू-  
हका नाम १ ॥ यौवत १ ॥ २२ ॥

पुनर्भूदिधिषूरूढा द्वि-

जिस स्त्रीका विवाहसंस्कार द्वितीय-  
वार हो उस स्त्रीके नाम २ ॥ पुनर्भू  
१ दिधिषू २ ॥

-स्तस्या दिधिषुः पतिः ॥

उसके पतिका नाम १ ॥ दिधिषु १ ॥

स तु द्विजोऽग्नेदिधिषुः सैव

यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३ ॥

जिसका द्वितीयवार विवाह संस्कार

हो वह स्त्री और उसका पति उन  
दोनोंसे उत्पन्न बालकका नाम १ ॥

अग्नेदिधिषु १ ॥ २३ ॥

कानीनः कन्यकाजातः सुतो-

कन्यासे उत्पन्न हुए पुत्रके नाम २ ॥

कानीन १ कन्यकाजात २ ॥

-ऽथ सुभगासुतः ॥

सौभागिनेयः-

सौभाग्यवती स्त्रीके पुत्रके नाम २ ॥

सुभगासुत १ सौभागिनेय २ ॥

-स्यात्पारस्त्रैणेयस्तु परस्त्रिया २४ ॥

परस्त्रीके पुत्रका नाम १ ॥ पार-  
स्त्रैणेय १ ॥ २४ ॥

पैतृष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्त्रीयश्च

पितृष्वसुः ॥ सुतो-

पिताकी बहन अर्थात् भूवाके  
पुत्रके नाम २ ॥ पैतृष्वसेय १ पैतृष्व-  
स्त्रीय २ ॥

-मातृष्वसुश्चैवं-

मौसीके पुत्रके नाम २ ॥ मातृ-  
ष्वसेय १ मातृष्वस्त्रीय २ ॥

-वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥

सौतेले भाईके नाम २ ॥ वैमात्रेय  
१ विमातृज २ ॥ २५ ॥

अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धु-  
लश्चासतीसुतः ॥ कौलटेरः कौ-  
लटेयो-



कुलटादे पुत्रक नाम ५ ॥  
 बान्धविनेय १ बन्धुल २ असतीसुत  
 ३ कौलटेर ४ कौलटेय ५ ॥

—मिथुकी तु सती यदि ॥ २६ ॥  
 सदा कौलटिनेयोऽस्या\* कौल  
 टेयोऽपि, चात्मज\* ॥

ओ सती मिथ्याकं निमित्त धरोमे  
 फिरे ॥ २६ ॥ उसके पुत्रक नाम २ ॥  
 कौलटिनेय १ कौलटेय २ ॥

—आत्मजस्तनयः सुनुः सुतः पुत्र  
 पुत्रके नाम ५ ॥ आत्मज १ तनय  
 २ सुनु ३ सुत ४ पुत्र ५ ॥

—स्त्रियां त्वमी ॥ २७ ॥  
 आहुर्दुहितरं सर्वे—  
 जो पुत्रक नाम स्त्रीलिङ्गमें हों तो

पुत्रीक नाम हो जातेहैं ॥ २७ ॥  
 —ऽपत्य लोकं तयो\* समे ॥  
 पुत्र पुत्री साधारणका नाम २ ॥  
 अपत्य १ लोक २ ॥

स्वभावे त्वीरसोरस्यौ—  
 सगपुत्रे नाम २ ॥ ओरस १  
 टरस्य २ ॥

—सातस्तु जनकः पिता ॥ २८ ॥  
 पिताक नाम ३ ॥ सात १ जनक २  
 पिता ३ ॥ २८ ॥

जनपित्री प्रसूमाता जननी—  
 माता नाम ४ ॥ जनपित्री १  
 प्रसू २ माता ३ जननी ४

—भगिनी स्वसा ॥

बहिनक नाम २ ॥ भगिनी १  
 स्वसृ २ ॥

ननान्दा तु स्वसा पत्यु—

ननदका नाम १ ॥ ननान्द १ ॥

—नैष्ठी पौत्री सुतात्मजा २९ ॥

नातिनिक नाम ३ ॥ नैष्ठी १

पौत्री २ सुतात्मजा ३ ॥ २९ ॥

भार्योस्तु भ्रातृवर्गस्य यावरः  
 स्यु\* परस्परम् ॥

भापसमें भ्रातृवर्गकी बिर्योकर नाम  
 १ ॥ यातृ १ ॥

प्रजावती भ्रातृजाया—

मौमाईके नाम २ ॥ प्रजावती १

भ्रातृजाया २ ॥

मातुलानी तु मातुली ॥ ३० ॥

मांमईके नाम २ ॥ मातुलानी १

मातुली २ ॥ ३० ॥

पतिपत्न्योः मसूः श्वश्रूः—

पति और स्त्रीकी माताका नाम  
 १ ॥ श्वश्रू १ ॥

—श्वशुरस्तु पिता तयो\* ॥

पति और स्त्रीके पिताका नाम १ ॥

श्वशुर १ ॥

पितृभ्राता पितृव्य\* स्या—

पापा या ताऊका नाम १ ॥ पितृव्य १ ॥

—मातृभ्राता तु मातुल ॥ ३१ ॥

मामाके नाम २ ॥ मातुर्भ्रातृ १ ॥  
 मातुल २ ॥ ३१ ॥  
 श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः—  
 शालेका नाम १ ॥ श्याल १ ॥  
 —स्वामिनो देवृदेवरौ ॥  
 देवरके नाम २ ॥ देवृ १ देवर २ ॥  
 स्वस्त्रीयो भागिनेयः स्या—  
 भानजेके नाम २ ॥ स्वस्त्रीय १  
 भागिनेय २ ॥  
 —जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३२ ॥  
 जमाईके नाम २ ॥ जामातृ १  
 दुहितुः पति २ ॥ ३२ ॥  
 पितामहः पितृपिता—  
 दादाके नाम २ ॥ पितामह १ ॥  
 पितृपितृ २ ॥  
 —तत्पिता प्रपितामहः ॥  
 परदादाका नाम १ ॥ प्रपितामह १ ॥  
 मातुर्मातामहाद्येवं—  
 इसी प्रकार ( नानाका नाम ) माता-  
 मह ( परनानाका नाम ) प्रमातामह ॥  
 —सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ३३ ॥  
 सपिण्डके नाम २ ॥ सपिण्ड १  
 सनाभि २ ॥ ३३ ॥  
 समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः  
 समाः ॥  
 सगेभाईके नाम ४ ॥ समानोदर्य १  
 सोदर्य २ सगर्भ्य ३ सहज ४ ॥

सगोत्रवान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्व-  
 जनाः समाः ॥ ३४ ॥  
 एक गोत्रवाल्लेके अर्थात् समगोत्रि-  
 योके नाम ६ ॥ सगोत्र १ बान्धव २  
 ज्ञाति ३ बन्धु ४ स्व५ स्वजन ६ ॥ ३४ ॥  
 ज्ञातेयं बन्धुता तेषां क्रमाद्भा-  
 वसमूहयोः ॥  
 विरादरीके भावका नाम १ ॥ ज्ञातेय  
 १ ॥ परिवारके समूहका नाम १ ॥  
 बन्धुता १ ॥  
 धवः प्रियः पतिर्भर्ता—  
 पतिके नाम ४ ॥ धव १ प्रिय २  
 पति ३ भर्तृ ४ ॥  
 —जारस्तूपपतिः समौ ॥ ३५ ॥  
 जिसके साथ व्याही हो उससे अ-  
 न्यसे मैथुन करती हो तो उस पतिके  
 नाम २ ॥ जार १ उपपति २ ॥ ३५ ॥  
 अमृते जारजः कुण्डो—  
 अपने पतिके जीतेही अन्य पतिसे  
 जो पुत्र हो उसका नाम १ ॥ कुण्ड १ ॥  
 —मृते भर्तारि गोलकः ॥  
 जो पतिके मरनेपर अन्य पतिसे उत्प-  
 न्नहो उसका नाम १ ॥ गोलक १ ॥  
 भ्रात्रीयो भ्रातृजो—  
 भतीजेके नाम २ ॥ भ्रात्रीय १  
 भ्रातृज २ ॥  
 —भ्रातृभगिन्यौ भ्रातराबुभौ ॥ ३६ ॥

बहिनभार्यके नाम २ ॥ आतृमणिनी  
( न्यो ) १ आतृ ( तरो ) २ ॥ १६ ॥

मातापितरौ पितरौ मातर  
पितरौ प्रसूजनपितरौ ॥

जहां मातापिताको साथ ही कहना  
हो उसके नाम ४ ॥ मातापितृ ( तरो )  
१ पितृ ( तरो ) २ मातरपितृ ( तरो )  
३ प्रसूजनपितृ ( तरो ) ४ ॥

श्वश्रुश्वशुरौ श्वशुरौ-  
पेसेही सासुरससुरके नाम २ ॥  
श्वश्रुश्वशुर ( रौ ) १ श्वशुर ( रौ ) २ ॥

-पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ३७ ॥  
इसी प्रकार कन्यापुत्रका नाम १ ॥  
पुत्र ( प्रौ ) १ ॥ ३७ ॥

दपती जपती जायापती मा  
यापती च छौ ॥

छीपुदपक इच्छे नाम ४ ॥ दम्पति  
( ती ) १ जम्पति ( ती ) २ जायापति  
( ती ) ३ मायापति ( ती ) ४ ॥

गमाशयो जरायुं स्या-  
गर्मस्थानके नाम २ ॥ गर्माशय १  
जरायु २ ॥

-दुह्य ध कललोऽस्त्रियाय ॥ ३८ ॥  
गर्मस्थानके नाम २ ॥ उल्ल १  
कल्ल २ ॥ ३८ ॥

सतिमासो वैजननो-  
गम रहनम गर्भमें भा दसों मास

नाम जिसमें बालक पैदा होता है २ ॥  
सतिमास १ वैजनन २ ॥

-गर्भो भ्रूण इमौ समौ ॥  
गर्भके नाम २ ॥ गर्भ १ भ्रूण २ ॥  
तृतीयाप्रकृतिः पण्डुः क्लीबा  
पण्डो नपुंसके ॥ ३९ ॥

हीजरेके नाम १ ॥ तृतीयाप्रकृति  
१ पण्ड २ क्लीब ३ पण्ड ४ नपुंसक  
५ ॥ ३९ ॥

शिशुत्व शैशव बाल्यं-  
कम्पनके नाम ३ ॥ शिशुत्व १  
शैशव २ बाल्य ३ ॥

-तारुण्यं यौवनं समे ॥  
जवानीके नाम २ ॥ तारुण्य १  
यौवन ३ ॥

स्यात्स्याविरं तु वृद्धत्व-  
बुढ़ापेके नाम २ ॥ स्याविर १  
वृद्धत्व २ ॥

-वृद्धसंघेऽपि वार्धक्यम् ॥ ४० ॥  
बूढ़ोंके समूहका नाम १ ॥ वार्धक्य  
१ ॥ ४० ॥

पलितं जरसा शौक्ल्य केशादौ  
बलियुद्धापमें केश आश्रितमें जरा  
करके जो सफेदी आधी है उसका  
नाम १ ॥ पलित १ ॥

-विक्षता जरा ॥  
बुढ़ाईके नाम २ ॥ विक्षता १ जरा २ ॥  
स्यादुत्तानशया दिम्भा स्तन  
पा ध स्तनन्धर्या ॥ ४१ ॥

दूधपिई छोटी लडकीके नाम ४ ॥

उत्तानशया १ डिम्भा २ स्तनपा ३  
स्तनन्धयी ४ ॥ ४१ ॥

बालस्तु स्यान्माणवको-

सोलह वर्षपर्यन्त लडकेके नाम २ ॥  
बाल १ माणवक २ ॥

-वयःस्थस्तरुणो युवा ॥

जवानपुरुषके नाम ३ ॥ वयःस्थ १  
तरुण २ युवन् ३ ॥

प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो  
जीर्णो जरत्नापि ॥ ४२ ॥

बूढेके नाम ६ ॥ प्रवयस् १  
स्थविर २ वृद्ध ३ जीन ४ जीर्ण ५  
जरत् ६ ॥ ४२ ॥

वर्षीयान्दशमी ज्याया-

अतिबूढेके नाम ३ ॥ वर्षीयस् १  
दशमिन् २ ज्यायस् ३ ॥

-पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः ॥

ज्येष्ठभाईके नाम ३ ॥ पूर्वज १  
अग्रिय २ अग्रज ३ ॥

जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोव-  
रजानुजाः ॥ ४३ ॥

छोटे भाईके नाम ५ ॥ जघन्यज १  
कनिष्ठ २ यवीयस् ३ अवरज ४  
अनुज ५ ॥ ४३ ॥

अमांसो दुर्वलश्छातो-

दुबलेके नाम ३ ॥ अमांस १  
दुर्वल २ छात ३ ॥

बलवान्मांसलोऽसलः ॥

बलवान्के नाम ३ ॥ बलवत् १  
मांसल २ असल ३ ॥

तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दीवृहत्कुक्षिः  
पिचण्डिलः ॥ ४४ ॥

बडे पेटवालेके नाम ५ ॥ तुन्दिल १  
तुन्दिभ २ तुन्दिन् ३ वृहत्कुक्षि ४  
पिचण्डिल ५ ॥ ४४ ॥

अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो नत-  
नासिके ॥

चपटी नाकवालेके नाम ३ ॥ अव-  
टीट १ अवनाट २ अवभ्रट ३ ॥

केशवः केशिकः केशी-

अच्छे बालवालेके नाम ३ ॥ केशव १  
केशिक २ केशिन् ३ ॥

वालिनो बलिभः समौ ॥ ४५ ॥

जिसकी बुढापेके मारे खाल सिकुरगई  
हो उसके नाम २ ॥ बलिन १  
बलिभ २ ॥ ४५ ॥

विकलाङ्गस्त्वपोगण्डः-

जिसका अपनेहीसे कोई अंग अधिक  
वा कम हो उसके नाम २ ॥ विक-  
लाङ्ग १ अपोगण्ड २ ॥

खर्वो ह्रस्वश्च वामनः ॥

वौनेके नाम ३ ॥ खर्व १ ह्रस्व २  
वामन ३ ॥

खरणाः स्यात्खरणसो-

जिसकी तीखी नाकहो उसके  
नाम २ ॥ खरणस् १ खरणस २ ॥

निमस्तु गतनासिक\* ॥ ४६ ॥

नक्केके नाम २ ॥ विम १ गतना  
सिकर ॥ ४६ ॥

खुरणा\* स्यात्खुरणस-

जिसकी पंखुके खुरकी सहा  
नासिका हो उसके नाम २ ॥ खुरणस् १  
१ खुरणस २ ॥

प्रभु\* प्रगतजानुक\* ॥

बात आदिरोगसे जिसके घुटने बहुत  
दूर २ हागए हों उसके नाम २ ॥

प्रभु १ प्रगतजानुक २ ॥

ऊर्ध्वघुर्ध्वजानु\* स्या-

जिसके घुटने ऊंचे हों उसके नाम २  
ऊर्ध्व १ ऊर्ध्वजानु २ ॥

-त्संघु संहतजानुक\* ॥ ४७ ॥

जिसके घुटने मिला हुए हों उसके  
नाम २ ॥ त्संघु १ संहतजानुक २ ॥ ४७ ॥

स्यादिड बधिर-

बधिरके नाम २ ॥ दड १ बधिर २ ॥

-कुम्भे गडुल-

कुम्भेके नाम २ ॥ कुम्भ १ गडुल २ ॥

-कुम्भे कुम्भि ॥

जिगम हाथमे रोगादिसे कुठ नि-  
कार हो उठानाम २ ॥ कुम्भ १ कुम्भि २ ॥

पृथ्निगल्पननी-

जिसका बहुत ही छोटा शरीर हो  
उसके नाम २ ॥ पृथ्नि १ भपतनु २ ॥

-धोण\* पगी-

छूलेके नाम २ ॥ धोण १ पंगुर २ ॥

-मृण्डस्तु मृण्डिते ॥ ४८ ॥

जिसका शिर मुँहाडुवा हा उसके  
नाम २ ॥ मृण्ड १ मृण्डित २ ॥ ४८ ॥

बलिर\* केकरे-

भड़े ( जिसके नेत्रकी पुतली फिरती  
हो ) उसके नाम २ ॥ बलिर १ केकर २ ॥

-खोडे खड-

खडके नाम २ ॥ खोडे १ खड २ ॥

खिपु जरारवा\* ॥

जडुल\* कालका पिप्पु-

जिसके भगमे छुनाकारका चिह्न  
हो उसके नाम २ ॥ जडुल १ कालक २  
पिप्पु ३ ॥

स्तिलकास्तिलकालव\* ॥ ४९ ॥

देहके तिलके नाम २ ॥ तिलक १

तिलकालव २ ॥ ४९ ॥

अनामय स्यादारोग्य-

बिना रोगके नाम २ ॥ अनामय १

आरोग्य २ ॥

-चिकित्सा द्यप्रतिनिषा ॥

इलाज करने नाम २ ॥ चिकित्सा १

प्रतिनिषा २ ॥

भेषजौषधभैषज्यान्यगदो जायुरि  
त्यपि ॥ ५० ॥

औषधके नाम ५॥ भेषज १ औषध  
२ भैषज्य ३ अगद ४ जायु ५ ॥ ५० ॥

स्त्री रुग्णजा चोपतापरोगव्याधि  
गदामयाः ॥

रोगके नाम ७ ॥ रुग् १ रुजा २  
उपताप ३ रोग ४ व्याधि ५ गद ६  
आमय ७ ॥

क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च-

क्षयी रोगके नाम ३ ॥ क्षय १ शोष  
२ ॥ यक्ष्मन् ३ ॥

-प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ ५१ ॥

पीनसरोगके नाम २ ॥ प्रतिश्याय  
१ पीनस २ ॥ ५१ ॥

स्त्रा क्षुत्क्षुतं क्षवः पुंसि-

छीकके नाम ३ ॥ क्षुत् १ क्षुत २ क्षव ३ ॥

-कासस्तु क्षवथुः पुमान् ॥

खासीके नाम २ ॥ कास १ क्षवथु २ ॥

शोफस्तु श्वयथुः शोथः-

सूजनके नाम ३ ॥ शोक १ श्वयथु  
२ शोथ ३ ॥

-पादस्फोटो विपादिका ॥ ५२ ॥

विवायी रोगके नाम २ ॥ पाद-  
स्फोट १ विपादिका २ ॥ ५२ ॥

किलाससिध्मे-

सेह्नुवा ( सीप ) के नाम २ ॥

किलास १ सिध्म २ ॥

कच्छां तु पामपामे विचर्चिका ॥

खाजुरोगके नाम ४ ॥ कच्छ १  
पामन् २ पामा ३ विचर्चिका ४ ॥

कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया-

खुजलीके नाम ३ ॥ कण्डू १ खर्जू २  
कण्डूया ३ ॥

-विस्फोटः पिटकोऽस्त्रियाम् ॥ ५३ ॥

फोडेके नाम २ ॥ विस्फोट १ पिटक  
२ ॥ ५३ ॥

व्रणोऽस्त्रियामीर्ममरुः क्लीवे-

धावके नाम ३ ॥ व्रण १ ईर्म २ अरुस् ३

-नाडीव्रणः पुमान् ॥

नासूरका नाम १ ॥ नाडीव्रण १ ॥

कोठो मण्डलकं-

जो गोल उज्ज्वल चन्दे पढजातेहैं उस  
कोढके नाम २ ॥ कोठ १ मण्डलक २ ॥

कुष्ठश्चित्रे-

छाजनके नाम २ ॥ कुष्ठ १ चित्र २ ॥

-दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥

ववासीरके नाम २ ॥ दुर्नामक १  
अर्शस् २ ॥ ५४ ॥

आनाहस्तु विवन्धः स्या-

कजई जिसमें मलमूत्र रुकजाय उस  
रोगके नाम २ ॥ आनाह १ विवन्ध २ ॥

—द्वहणी रुक्प्रवाहिका ॥

संपहणी रोगके नाम २ ॥ महणी  
१ प्रवाहिका २ ॥

प्रच्छोर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु  
वमयुः समाः ॥ ५५ ॥

उच्छर्त्ता अयोत् पमनके नाम ३ ॥  
प्रच्छोर्दिका १ वमि २ वमयु ३ ॥ ५५ ॥

ध्याधिभेदा विद्रधिः स्त्री ज्वरमेह  
भगन्दरा ॥

व्यरयिया ( एकप्रकारका फोडा ) का  
नाम १ ॥ विद्रधि १ ॥ ज्वरका नाम १ ॥  
भर १ ॥

प्रमेहका नाम १ ॥ मेह १ ॥

भगन्दर अर्थात् गुदसमीपक फोडाका  
नाम १ ॥ भगन्दर १ ॥

अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात्—

कर्करोग अर्थात् पथरीरोगके नाम  
२ ॥ अश्मरी १ मूत्रकृच्छ्र २ ॥

—पूर्वे शुक्रावधेस्त्रिषु ॥ ५६ ॥

पहले लेकर शुक्रशब्दके पहले २ के  
शब्द तीनों छिगोमे होते हैं ॥ ५६ ॥

रोगद्वार्यगर्दकारा भिषग्वैद्यौ  
चिकित्सके ॥

वैद्यक नाम ५ ॥ रोगद्वारिन् १ भगव  
कार २ भिष ३ वैद्य ४ चिकित्सक ५ ॥

बाचों निरामय कल्प उद्याघो  
निर्गतो गदात् ५७ ॥

रोगरहितके नाम ४ ॥ वार्त्ता १ निरा  
मय २ कल्प ३ उद्याघ ४ ॥ ५७ ॥

ग्लानगलास्तु—

रोगवशस्त क्षीण हो जानवाले  
नाम २ ॥ ग्लान १ गलास्तु २ ॥

—रामयावी विफ्रतो ध्याधितो  
स्पदुः ॥

आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्त—  
रोगीके नाम ७ ॥ आभ्याम्भिन्

विहृत २ ध्याधित ३ अपदु ४ ॥  
आतुर ५ अभ्यमित ६ अभ्यान्त ७ ॥

समी पामनकच्छुरो ॥ ५८ ॥  
सुजलीवालेक नाम २ ॥ पामन १

कच्छुर २ ॥ ५८ ॥

ददृणो ददुरोगी स्या—  
ददुरोगाके नाम १ ॥ ददृण १

ददुरोगिन् २ ॥

—दर्शोरोगधुतोऽर्शसः ॥  
बवासीरोगीका नाम १ ॥ अर्शस १ ॥

वातकी वातरोगी स्यात्—  
वातरोगीके नाम २ ॥ वातकिन्

१ वातसेभिन् २ ॥

—सात्तिसारोऽतिसारकी ॥ ५९ ॥  
जिसको बहुत दस्त हो उसका नाम

२ ॥ सात्तिसार १ अतिसारकिन् २  
॥ ५९ ॥

स्युः क्षिन्नासे शुद्धपिष्टपिष्टा  
क्षिमेऽक्षि चाप्यमी ॥

चुन्धेके नाम ४ ॥ छिन्नाक्ष १

चुल्ल २ चिल्ल ३ पिल्ल ४ ॥

उन्मत्त उन्मादवति-

उन्मत्त अर्थात् वावलेके नाम २ ॥

उन्मत्त १ उन्मादवत् २ ॥

-श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफौ ॥ ६० ॥

कफरोगवालेके नाम ३ ॥ श्लेष्मल

१ श्लेष्मण २ कफिन् ३ ॥ ६० ॥

न्युब्जो भुग्रे रुजा-

कुवडेका नाम १ ॥ न्युब्ज १ ॥

-वृद्धनाभौ तुन्दिलतुन्दिभौ ॥

जिसकी वातरोगसे नाभि बढजाय

उसके नाम ३ ॥ वृद्धनाभि १ तुन्दिल

२ तुन्दिभ ३ ॥

किलासी सिध्मलो-

किलास ( सीप ) रोगीके नाम २ ॥

किलासिन् १ सिध्मल २ ॥

-ऽन्धोऽहक-

अन्धेके नाम २ ॥ अन्ध १

अहश् २ ॥

मूर्छाले मूर्तमूर्छितौ ॥ ६१ ॥

बेहोशीके नाम ३ ॥ मूर्च्छाल १

मूर्त २ मूर्छित ३ ॥ ६१ ॥

शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवी-

र्येन्द्रियाणि च ॥

धातुके नाम ६ ॥ शुक्र १ तेजसू २

रेतसू ३ बीज ४ वीर्य ५ इन्द्रिय ६ ॥

मायुः पित्तं-

पित्तके नाम २ ॥ मायु १ पित्त २ ॥

-कफः श्लेष्मा-

कफके नाम २ ॥ कफ १ श्लेष्मन् २ ॥

स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा ॥ ६२ ॥

खालके नाम २ ॥ त्वच् १ असृ-

ग्धरा २ ॥ ६२ ॥

पिशितं तरसं मांसं पल्लं

क्रव्यमामिषम् ॥

मासके नाम ६ ॥ पिशित १ तरस

२ मास ३ पल्ल ४ क्रव्य ५ आमिष ६ ॥

उत्तप्तं शुष्कमांसं स्यात्तद्वत्तूर

त्रिलिङ्गकम् ॥ ६३ ॥

सूखेमासके नाम ३ ॥ उत्तप्त १

शुष्कमास २ वत्तूर ३ ॥ ६३ ॥

रुधिरोऽसृग्लोहितास्त्ररक्तक्षत-

जशोणितम् ॥

रुधिरके नाम ७ ॥ रुधिर १ असृज्

२ लोहित ३ अस्त ४ रक्त ५ क्षतज

६ शोणित ७ ॥

बुक्काग्रमांसं-

कलेजेके नाम २ ॥ बुक्का १

अग्रमास २ ॥

-हृदयं ह-

हृदयके नाम २ ॥ हृदय १ हृद् २ ॥

न्मेदस्तु वषा वसा ॥ ६४ ॥



चरवीके नाम ३ ॥ मेदस् १ वषा  
२ वसा ३ ॥ ६४ ॥

पश्चाद्दीर्घाशिरा मन्या-

गलेके पीछेकी मसका नाम १ ॥ मन्या १ ॥

नाडी तु धमनि शिरा ॥

नाडीके नाम ३ ॥ नाडी १ धमनि  
२ शिरा ३ ॥

तिलक झोम-

शरीरके तिलके नाम २ ॥ तिलक  
१ झोम २ ॥

-मस्तिष्क गोद-

गुर्देके नाम २ ॥ मस्तिष्क १ गोद २ ॥

-फिटं मलोऽखियाम् ॥ ६५ ॥

मैउके नाम २ ॥ फिट १ मल २ ॥ ६५ ॥

अन्त्रं पुरीत-

आंतोके नाम २ ॥ अन्त्र १ पुरीत २ ॥

-दुलमस्तु घृहा पु-

पत्रेया ( तिडी ) रोगके नाम २ ॥  
गुम् १ घृही २ ॥

-स्पथ वस्तसा ॥ छाद्यु श्रिया-

ममरु नाम २ ॥ वस्तसा १ छाद्यु २ ॥

-वाल्गण्डयष्टी तु समे

३ ॥ ६६ ॥

पत्रेया वा न्दनी ओर यष्टिया हा  
जमरु नाम २ ॥ वाल्गण्ड १ यष्टि  
२ ॥ ६६ ॥

गृणिता स्पन्दिनी लला-

छारके नाम ३ ॥ गृणिता १  
स्पन्दिनी २ लला ३ ॥

-दृषिका भेद्ययोर्मलम् ॥

कीवर ( गीठ ) का नाम १ ॥ दृषिका १ ॥

मूत्र प्रसाव-

मूत्रके नाम २ ॥ मूत्र १ प्रसाव २ ॥

-उच्चारवस्करो शमलं शकृत्

॥ ६७ ॥ पुरीष गूयवर्चस्कमली

विष्ठाविशौ श्रियौ ॥

मिष्ठाके नाम ९ ॥ उच्चार १

अवस्कर २ शमल ३ शकृत् ४ ॥

॥ ६७ ॥ पुरीष ५ गूय ६ वचस्क ७

विष्ठा ८ श्रिय ९ ॥

स्यात्कर्पर कपालोऽस्त्री-

कपालके नाम २ ॥ कर्पर १ कपाल २ ॥

कीकस्त फुल्परमस्यि च ॥ ६८ ॥

हृदीके नाम ३ ॥ कीकस्त १ फुल्पर

२ अस्यि ३ ॥ ६८ ॥

स्याच्छरीरास्थि कफाल-

छांकरका नाम १ ॥ कफाल १ ॥

-पृष्ठास्थि तु कजोरुका ॥

पीठकी हृदीका नाम १ ॥ पृष्ठास्थि १ ॥

शिरास्थिनि करोटि स्त्री-

गोर्दीका नाम १ ॥ करोटि १ ॥

-पादबोस्थनि तु पशुंका ॥ ६९ ॥

पंशडीका नाम १ ॥ पादबोस्थ १ ॥ ६९ ॥

अद्र प्रतीराऽवबोऽपचना-

अङ्गके नाम ४॥ अग १ प्रतीक २

अवयव ३ अपघन ४ ॥

—ऽथ कलेवरम् ॥

गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म  
विग्रहः ॥ ७० ॥ कायो देहः क्ली-  
वपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः ॥

देहके नाम १२ ॥ कलेवर १ गात्र  
२ वपुस् ३ सहनन ४ शरीर ५ वर्ष्मन्  
६ विग्रह ७ ॥ ७० ॥ काय ८ देह ९  
मूर्ति १० तनु ११ तनू १२ ॥

पादाग्रं प्रपदं—

पावके आगेके नाम २॥ पादाग्र १  
प्रपद २ ॥

—पादः पदंघ्रिश्वरणोज्ज्व-  
याम् ॥ ७१ ॥

पावके नाम ४ ॥ पाद १ पद् २  
अघ्रि ३ चरण ४ ॥ ७१ ॥

तद्वन्थी घुटिके गुल्फौ—

टाकनोंके नाम २ ॥ घुटिका १  
गुल्फ २ ॥

—पुमान्पार्ष्णिस्तयोरधः ॥

एडीका नाम १ ॥ पार्ष्णि १ ॥

जङ्घा तु प्रसृता—

जघा ( पीडी ) के नाम २॥ जघा  
प्रसृता २ ॥

—जानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् ७२

जानुके नाम ३ ॥ जानु १ ऊरु,  
पर्वन् २ अधीवत् ३ ॥ ७२ ॥

सक्थि क्लीबे पुमानूरु—

निरोहके नाम २॥ सक्थि १ ऊरु २॥

—स्तत्सन्धिः पुंसि वङ्क्षणः ॥

टिहुनीका नाम १ ॥ वक्षण १ ॥

गुदं त्वपानं पायुर्ना—

गुदाके नाम ३ ॥ गुद १ ॥ अपान २

पायु ३ ॥

वस्तिर्नाभिरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥

जहा मूत्र रहता है अर्थात् पेडूका नाम  
१ ॥ वस्ति १ ॥ ७३ ॥

कटो ना श्रोणिफलकं—

कमरके दोनों बगलके नाम ३ ॥  
कट १ श्रोणि २ फलक ३ ॥

—कटिः श्रोणिः ककुब्जती ॥

कमरके नाम ३ ॥ कटि १ श्रेणि २  
ककुब्जती ३ ॥

पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः—

स्त्रीके चूतरका नाम १ ॥ नितम्ब १ ॥

—क्लीबे तु जघनं पुरः ॥ ७४ ॥

स्त्रीके जाघका नाम १ ॥ जघन १ ॥  
॥ ७४ ॥

कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्व्यहीने  
कुकुन्दरे ॥

नितम्बमें जो दो गड्ढे होते हैं उनका  
नाम १ ॥ कुकुन्दर १ ॥

स्त्रियां स्फिचौ कटिप्रोथा—

कूलेके नाम २ ॥ स्फिच् १ कटि-  
प्रोथ २ ॥

|                               |                              |
|-------------------------------|------------------------------|
| —नुपस्यो वक्ष्यमाणयोः ॥७२॥    | दृश्यक नाम ३॥ उरस् १ वक्ष १  |
| निगयोनिता नाम १॥ उपस्य १॥७३॥  | वक्षस् ३ ॥                   |
| मग योनिद्वयो -                | पृष्ठ तु चरमं तनोः ॥         |
| योनिर्के नाम २॥ मग १ योनि २॥  | पीठका नाम १ ॥ पृष्ठ १ ॥      |
| —गिभ्रो मेढ्रे मेहनशेफसी ॥    | स्कन्धो भुजशिरोऽस्तोऽस्त्री- |
| लिंगर नाम ३॥ शिश्न १ मद् २    | कथेके नाम ३ ॥ स्कन्ध १ भुज-  |
| महन ३ शकम् ४ ॥                | शिरस् २ अंत ३ ॥              |
| मुष्कोऽण्डकोऽगो वृषण -        | —मघी तस्यैव जघुणी ॥७८॥       |
| अण्डकाशके नाम ३ ॥ मुष्क १     | हस्तटीका नाम १ ॥ जघु १॥७९॥   |
| अण्डकोश २ वृषण ३ ॥            | यादुभूले उभे वक्षो-          |
| पृष्ठवन्ताघरे त्रिकम् ॥ ७६ ॥  | वगर्तका नाम १ ॥ कर् १ ॥      |
| पीठक बानक नीच तदा तनि         | पाश्वमन्त्री तपोरथ ॥         |
| शय निउ १ उम जाडका नाम १ ॥     | वगटर् नीचका नाम १॥ नाथ १॥    |
| त्रिक १ ॥ ७६ ॥                | मध्यम चावलम् च मध्योऽस्त्री  |
| पिचण्डवृक्षी जठरोदरं तुन्द-   | पत्रक नीचका और कमरक उर       |
| पत्रक नाम १ ॥ पिचण्ड १ तुडि   | रके मागके नाम ३ ॥ मध्यम १    |
| २ जठर ३ उदर ४ तुन्द ५ ॥       | अवगम २ मध्य ३ ॥              |
| —स्तनी तुर्ची ॥               | —दो पक्षे द्वयोः ॥ ७७ ॥      |
| पक्षके नाम २॥ स्तन १ तुर्च २॥ | भुजपाद प्रवष्टा दो स्या-     |
| तुर्चर् तु तुर्गाम स्या-      | बाणके नाम ४ ॥ ७८ ॥ मत्र १    |
| अपक्ष अपक्षाम १ नाम २ ॥       | बाहू प्रवष्ट २ दोस् ४ ॥      |
| वृषण १ वृषाम ॥                | —स्वनाणिस्तु कूर्पर ॥        |
| —न ना म १ मुमान्तम् ७७॥       | कानीके नाम ॥ कर्को १         |
| ना २ नाम ३ ॥ नाड १ मत्रा      | पुत्र १ ॥                    |
| १ ॥ ७८ ॥                      | अव्यापति प्रगणः स्या-        |
| उग मर्ग य बाध-                | क नीच उरका नाम १॥ उदर १॥     |
|                               | —नकाप्रमस्य बाध्यय ॥८०॥      |

कोनीके नीचेका नाम १॥ प्रकोष्ठ १॥ ८०

मणिवन्धादाकनिष्ठं करस्य  
करभो बहिः ॥

मणिवन्धसे कनिष्ठा अगुलीपर्य-  
तका नाम १ ॥ करभ १ ॥

पञ्चशाखः शयः पाणि-

हाथके नाम ३ ॥ पञ्चशाख १  
शय २ पाणि ३ ॥

-स्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी॥ ८१॥

हाथके अगूठके पासकी अगुलीके  
नाम २॥ तर्जनी १ प्रदेशिनी २॥ ८१॥

अंगुल्यः करशाखाः स्युः-

अगुलियोंके नाम २ ॥ अगुली १  
करशाखा २ ॥

-पुस्यंगुष्ठः-

अगूठका नाम १ ॥ अगुष्ठ १ ॥

-प्रदेशिनी ॥

अगूठके पासवाली अगुलीका  
नाम १ ॥ प्रदेशिनी १ ॥

मध्यमाऽनामिका चापि कनिष्ठा  
चेति ता. क्रमात् ॥ ८२ ॥

बीचवाली अगुलीका नाम १ ॥  
मध्यमा २ ॥

बीचवाली और कन अगुलीके बीच-  
वालीका नाम १ ॥ अनामिका १ ॥

कन अगुलीका नाम १ ॥ कनिष्ठा  
१ ॥ ८२ ॥

पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री  
नखरोऽस्त्रियाम् ॥

नाखुनोंके नाम ४ ॥ पुनर्भव १  
कररुह २ नख ३ नखर ४ ॥

प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्यादि-  
युते तते ॥ ८३ ॥

अगुष्ठ तर्जनीतककी लम्बाईका  
नाम १ ॥ प्रादेश १ ॥

अगुष्ठ बीचवालीके फैलानेकी लम्बा-  
ईका नाम १ ॥ ताल १ ॥

अगुष्ठ अनामिकाके फैलानेकी  
लम्बाईका नाम १ ॥ गोकर्ण १॥ ८३॥

अंगुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्ति-  
द्वादशांगुलः ॥

नापनेमें बिलस्तके नाम २ ॥  
वितस्ति १ द्वादशांगुल २ ॥

पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृ-  
तांगुलौ ॥ ८४ ॥

थप्पडके नाम ३ ॥ चपेट १  
प्रतल २ प्रहस्त ३ ॥ ८४ ॥

द्वौ संहतौ संहतलप्रतलौ वाम-  
दक्षिणौ ॥

दुहल्यडेके नाम २ ॥ सहतल १ प्रतल २ ॥

पाणिर्निकुब्जः प्रसृति-

चुल्लेका नाम १ ॥ प्रसृति १ ॥

-स्तौ युतावञ्जलिः पुमान् ८५

भजल्लिका नाम १ ॥ अजलि १ ॥ ८५ ॥

प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो-

हायका नाम १ ॥ हस्त १ ॥

-मुष्ट्या तु बद्ध्या ॥

सरतिः स्या-

मुष्टी बांधे हायका नाम १ ॥

( सरति ) रति १ ॥

-सरतिस्तु निष्कनिष्ठेन मु-

ष्टिना ॥ ८६ ॥

कनि अगुळियाको छोडके मुष्टीबांधे

हायका नाम १ ॥ अरति १ ॥ ८६ ॥

व्यामो वाहो सकाग्योस्त्वयो

स्तिष्यगन्तरम् ॥

हाय फैलानका नाम १ ॥ व्याम १ ॥

ऊर्ध्वविस्तृतो पाणिर्नृमाने

पौरुष त्रिषु ॥ ८७ ॥

ऊपरका हाथ लटाके नापनेका

नाम १ ॥ पौरुष १ ॥ ८७ ॥

कण्ठो गलो-

गळेके नाम २ ॥ कण्ठ १ गळ २ ॥

-ऽय प्रीवार्या शिरोधि-

कंधरेत्यपि ॥

गर्दनके नाम १ ॥ प्रीमा १

शिरोधि २ कंधरा १ ॥

कम्पुप्रीवा त्रिरेखा सा-

तीन रेखासे युक्त गर्दनका नाम

१ ॥ कम्पुप्रीवा ॥ १ ॥

-ऽबदुर्घाटा कृकाटिका ॥ ८८ ॥

घाटीके नाम १ ॥ अबदु १ घाटा

२ कृकाटिका १ ॥ ८८ ॥

वकाम्ये बदन तुण्डमाननं

लपन मुखम् ॥

मुँहके नाम ७ ॥ वक्र १ आस्य

२ बदन ३ तुण्ड ४ आनन ५ लपन

६ मुख ७ ॥

छुषि घ्राणं गन्धवाहा घोणा

नासा च नासिका ॥ ८९ ॥

नासक नाम ९ ॥ घ्राण १ गन्धवाहा २

घोणा ३ नासा ४ नासिका ५ ॥ ८९ ॥

ओष्ठाधरी तु रदनच्छदौ

दशनवाससी ॥

होठके नाम ४ ॥ ओष्ठ १ अधर २

रदनच्छद ३ दशनवाससी ४ ॥

अघस्त्राधिशुक-

टोडीका नाम १ ॥ शिषुक १ ॥

-गण्डी कपोला-

गाछके नाम २ ॥ गण्ड १ कपोल २ ॥

-तत्परा इनु ॥ ९० ॥

कनपटीका नाम १ ॥ ९० ॥ ९० ॥

रदना दृशना वृन्ता गदा-

दातके नाम ४ ॥ रदन १ दशन

२ दन्त ३ रद ४ ॥

-स्तालु तु काकुदम् ॥

ताडएक नाम २ ॥ तालु १ काकुद २ ॥

रसज्ञा रसना जिह्वा—

जीमके नाम ३ ॥ रसज्ञा १ रसना

२ जिह्वा ३ ॥

प्रान्तावोष्ठस्य सृक्किणी ॥ ९१ ॥

होठोके किनारोका नाम १ ॥

सृक्किणी १ ॥ ९१ ॥

ललाटमलिकं गोधि—

लिलारके नाम ३ ॥ ललाट १

अलिक २ गोधि ३ ॥

रूध्वे दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ ॥

भौहका नाम १ ॥ भ्रू १ ॥

कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं—

भौहके बीचका नाम १ ॥ कूर्च १ ॥

- तारकाक्षः कनीनिका ॥ ९२ ॥

आखके तिलका नाम १ ॥ तारका १ ॥ ९२

लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं

चक्षुरक्षिणी ॥ दृग्दृष्टी चा—

आखके नाम ८ ॥ लोचन १

२ नेत्र ३ ईक्षण ४ चक्षुस् ५ अक्षि

६ दृश ७ दृष्टि ८ ॥

-ऽसु नेत्राम्बु रोदनं चास्र-

मश्रु च ॥ ९३ ॥

आसूके नाम ५ ॥ अस्रु १ नेत्राम्बु २

रोदन ३ अश्रु ४ अश्रु ५ ॥ ९३ ॥

अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ—

आखके किनारोंका नाम १ ॥

अपाग १ ॥

—कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ॥

अपागसे देखनेका नाम १ ॥ कटाक्ष १ ॥

कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः

स्त्री श्रवणं श्रवः ॥ ९४ ॥

कानके नाम ६ ॥ कर्ण १ शब्दग्रह २

श्रोत्र ३ श्रुति ४ श्रवण ५ श्रवम् ६ ॥ ९४ ॥

उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्द्धा ना

मस्तकोऽस्त्रियाम् ॥

शिरके नाम ५ ॥ उत्तमाग १ शिरस्

२ शीर्ष ३ मूर्द्धन् ४ मस्तक ५ ॥

चिकुरः कुन्तलो वालः कचः

केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥

वालके नाम ६ ॥ चिकुर १ कुन्तल

२ वाल ३ कच ४ केश ५ शिरोरुह ६ ॥ ९५ ॥

तद्वन्दे कैशिकं कैश्य—

वाल्लोंके समूहके नाम २ ॥ कैशिक

१ कैश्य २ ॥

—मलकाश्चूर्णकुन्तलाः ॥

टेढे वाल्लोंके नाम २ ॥ अलक १

चूर्णकुन्तल २ ॥

ते ललाटे भ्रमरकाः—

ललाटपर लटकते हुए वाल्लोंका

नाम १ ॥ भ्रमरक १ ॥

—काकपक्षः शिखण्डकः ॥ ९६ ॥

जुल्फोंके नाम २ ॥ काकपक्ष १

शिखण्डक ३ ॥ ९६ ॥

कवरी केशवेद्यो-

मांगके नाम २ ॥ कवरी १ केश  
पश २ ॥

-ऽथ घम्मिहः सयता कचा ॥

बैधेह्य वाळोका नाम १ ॥ घम्मिह १ ॥

शिखा घूडा केशपाशी-

घोटीके नाम ३ ॥ शिखा १ घूडा  
२ केशपाशी ३ ॥

-प्रतिनस्तु सटा जटा ॥ ९७ ॥

जटाके नाम २ ॥ सटा १ जटा २ ॥ ९७ ॥

वेणि प्रवेणी-

तेजदि न छगानके ह्यु छटे बाळ हो  
जानक नाम २ ॥ वेणि १ प्रवेणी २ ॥

-क्षीर्य्यशिरस्यो विशदे कचे ॥

साफ बाळोके नाम २ ॥ क्षीर्य्य  
१ शिरस्य २ ॥

पाश पशम्य हस्तम्य कला

पाया कचात्परे ॥ ९८ ॥

कशत्तमूर नाम ३ ॥ केशपाश १ कश  
पश २ कुन्तलहस्त ३ ॥ ह्यादि ॥ ९८ ॥

तनूरुहं रोम लोम-

रुक्के नाम ३ ॥ तनूरुह १ रोमन्  
२ लोमन् ३ ॥

-तदृष्टो ह्यमशु पुमुख ॥

ढाढी मूळका नाम १ ॥ ह्यमशु १ ॥

आनस्तपवर्षी मेपथ्य प्रति  
कम प्रमाधनम् ॥ ९९ ॥

अलंकारणी शोमाक नाम १ ॥

आनस्त १ कप २ नेपथ्य ३ प्रतिक  
र्मन् ४ प्रसाधन ५ ॥ ९९ ॥

दशैवे त्रि-

यह भागे कहे दश शब्द तीनों  
छिओंमें होते हैं ॥

-अलंकर्ताऽलंकारिण्युश्च-

अलंकार करनेवाला नाम २ ॥  
अलंकर्त १ अलंकारिण्यु २ ॥

-माण्डित ॥

प्रसाधितोऽलंकारितश्च मूर्धितश्च  
परिष्कृत ॥ १०० ॥

अलंकारयुक्त नाम १ ॥ मण्डित  
१ प्रसाधित २ अलंकृत ३ मूर्धित ४  
परिष्कृत ५ ॥ १०० ॥

विघ्नाद्भाजिष्युरोचिष्यु-

अलंकारादिसे अतिशोमित दुपक  
नाम ३ ॥ विघ्नान् १ भाजिष्यु २  
रोचिष्यु ३ ॥

-भूषण स्यादलंक्रिया ॥

संगारन वा सिंगारनके नाम २ ॥  
भूषण १ अलंक्रिया २ ॥

अलङ्कारस्वामरण परिष्कारो

विभूषणम् ॥ १०१ ॥ मण्डन घा-

गहन आदिके नाम १ ॥ अलङ्कार  
१ आमरण २ परिष्कार ३ विभूषण  
४ ॥ १०१ ॥ मण्डन ५ ॥

-ऽथ मुकुटं किरीटं पुत्रपुंसकम् ॥

मुकुटके नाम २ ॥ मुकुट १ किरीट २ ॥  
दोनोंभी पुं० न० ॥

चूडामणिः शिरोरत्नं-

चोटीकी मणिके नाम २ ॥ चूडामणि  
१ शिरोरत्न २ ॥

-तरलो हारमध्यगः ॥ १०२ ॥

जो हारके बीचमें सबसे बड़ा मणि  
होता है उसका नाम १ ॥ तरल १ ॥ १०२

वालपाश्या पारितथ्या-

चोटीके गहनेके नाम २ ॥ वालपाश्या  
१ पारितथ्या २ ॥

-पत्रपाश्या ललाटिका ॥

बेंदी वा टीकेके नाम २ ॥ पत्रपाश्या  
ललाटिका २ ॥

कर्णिका तालपत्रं स्या-

वाली वा तरकीके नाम २ ॥ कर्णिका  
१ तालपत्र २ ॥

-त्कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥ १०३ ॥

सुवर्णादिरचित वालीके नाम २ ॥  
कुण्डल १ कर्णवेष्टन २ ॥ १०३ ॥

ग्रैवेयकं कण्ठभूषा-

कण्ठी वा कण्ठके नाम २ ॥ ग्रैवेयक  
१ कण्ठभूषा २ ॥

-लम्बनं स्याल्ललन्तिका ॥

जो सँझीतक लम्बी कण्ठी हो उस  
कण्ठीके नाम २ ॥ लम्बन १ ललन्तिका २ ॥

स्वर्णैः प्रालम्बिका-

ऐसी ही यदि सोनेकी कण्ठी हो तो  
उस कण्ठीका नाम १ ॥ प्रालम्बिका १ ॥

-ऽथोरःसूत्रिका मौक्तिकैः

कृता ॥ १०४ ॥

और वैसी ही मोतीसे गुथी हो तो  
उसका नाम १ ॥ उरस्सूत्रिका १ ॥ १०४ ॥

हारो मुक्तावली-

मोतीके हारके नाम २ ॥ हार १  
मुक्तावली २ ॥

-देवच्छन्दोसौ शतयाष्टिका ॥

जो सौ लडका हार हो उसका  
नाम १ ॥ देवच्छन्द १ ॥

होरभेदा यष्टिभेदाद्गुच्छा-  
र्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥ अर्धहारो

माणवक एकावल्येकयाष्टिका ॥

सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविं-  
शतिमौक्तिकैः ॥ १०६ ॥

बत्तीस लडका हार हो उसका नाम १ ॥

गुच्छ १ ॥ जो चौबीस लडका हार हो  
उसका नाम १ ॥ गुच्छार्ध १ ॥ चार लडका

हार हो उसका नाम १ ॥ गोस्तन १ ॥ १०५  
बारह लडका हार हो उसका नाम १ ॥

अर्द्धहार १ ॥ बीस लडका हार हो उसका  
नाम १ ॥ माणवक १ ॥ एक लडका हार

हो उसका नाम १ ॥ एकावली १ ॥ बही



एक छट अगर सत्ताईस मोतियोंकी  
हो तो उसका नाम १ ॥ नक्षत्रमाला  
१ ॥ १०६ ॥

आवापक पारिहायः कटक  
बलयोज्ज्वियाम् ॥

पट्टीके नाम ४ ॥ आवापक १ पारि  
हार्य २ कटक ३ बलय ४ ॥

केयूरमग्नद तुल्ये-

बाज्रवन्दभाति मुवाके गहनोंके  
नाम २ ॥ केयूर १ बाज्रद २ ॥

-अमुलीयकमूर्मिका ॥ १०७ ॥

छत्तेअगूठीके नाम २ ॥ अमुलीयक १  
अर्मिका २ ॥ १०७ ॥

साक्षरांगुलिमुद्रा सा-

मोहरसहित अंगूठीका नाम १ ॥  
अंगुलिमुद्रा १ ॥

-ककण करभूषणम् ॥

ककणक नाम २ ॥ ककण १ कर  
भूषण २ ॥

स्त्रीकटथां मेखला काञ्ची  
सप्तकी रक्षना तथा ॥ १०८ ॥

छीबे सारसन चा-

स्त्रीके कमरकी जजीर अर्थात्  
मखलाके नाम २ ॥ मेखला १ काञ्ची २  
सप्तकी रक्षना ४ ॥ १०८ ॥ सारसन १

-ऽथ पुष्कर्या शृङ्खलं त्रिषु ॥  
पुष्कर्ये जजीरका नाम १ ॥ शृङ्खल १ ॥

पादाङ्गदं तुलाकोटिमञ्जरी  
नूपुरोज्ज्वियाम् ॥ १०९ ॥

पैयण आदि छीके पांके गहनेके  
नाम ४ ॥ पादाङ्गद १ तुलाकोटि २ ॥

मञ्जीर ३ नूपुर ४ ॥ १०९ ॥

हंसक पादकटक-

कडेके नाम २ ॥ हंसक १ पादकटक २ ॥

-किंकिणी क्षुद्रघण्टिका ॥

क्षुद्रघण्टेके नाम २ ॥ किंकिणी १  
क्षुद्रघण्टिका २ ॥

स्वयम्भुक्किमिरोमाणि वस्त्र-  
योनि-

मापा ॥ शृङ्खली छल फल और  
कीबोंके रोम वस्त्रके उत्पन्न होनेके  
स्थान हैं ॥

-दंष्ट्र त्रिषु ॥ ११० ॥

मापा ॥ यह दंष्ट्र शब्द तीनों  
लिङ्गोंमें होता है ॥ ११ ॥

वाल्कं क्षीमादि-

क्षुद्रमादिकी छल्ले केद्वारे बन्नेके  
नाम २ ॥ वाल्क १ क्षीमा २ क्ष्यादि ॥

-फालं तु कापासं यादर च  
तत् ॥

कापासके नाम २ ॥ फाल १ कापास २ यादर ३ ॥

कौशेय कृमिकोशोत्थं-

रेशमीबन्नेका नाम १ ॥ कौशेय १ ॥

-राङ्गचं मृगरुमजम् ॥१११॥

ऊनीवस्त्रोका नाम १॥राङ्गव १॥१११॥

अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं  
च नवाम्बरम् ॥

कोरेवस्त्रके नाम ४॥ अनाहत १ नि-  
ष्प्रवाणिन् २ तन्त्रक ३ नवाम्बर ४ ॥

तत्स्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्र-  
योर्युगम् ॥ ११२ ॥

धुलेहुये दो वस्त्रोंके जोडेका नाम  
१ ॥ उद्गमनीय १ ॥ ११२ ॥

पत्रोर्ण धौतकौशेयं-

धुलेहुए रेशमी वस्त्रका नाम १ ॥  
पत्रोर्ण १ ॥

-बहुमूल्यं महाधनम् ॥

बडेमोलके वस्त्रादिका नाम १ ॥  
महाधन १ ॥

क्षौमं दुकूलं स्या-

हुपट्टेके नाम २ ॥ क्षौम १ दुकूल २ ॥

-द्वे तु निवीतं प्रावृतं त्रिपु ११३

कपडेके छोरके नाम २ ॥ निवीत  
१ प्रावृत २ ॥ ११३ ॥

स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः  
स्युर्वस्तयोर्द्वयोः ॥

छीराका नाम १ ॥ दशा १ ॥

दैर्घ्यमायाम आरोहः-

कपडेआदिकी लम्बाईके नाम ३ ॥  
दैर्घ्य १ आयाम २ आरोह ३ ॥

-परिणाहो विशालता ॥ ११४ ॥

कपडेआदिकी चौड़ाईके नाम २ ॥  
परिणाह १ विशालता २ ॥ ११४ ॥

पटच्चरं जीर्णवस्त्रं-

पुराने कपडेके नाम २ ॥ पटच्चर १  
जीर्णवस्त्र २ ॥

-समौ नक्तककर्पटो ॥

फटेचीथरेके नाम २ ॥ नक्तक १ कर्पट २ ॥

वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वस-  
नमंशुकम् ॥ ११५ ॥

कपडेमात्रके नाम ६ ॥ वस्त्र १ आ-  
च्छादन २ वासस् ३ चैल ४ वसन ५  
अशुक ६ ॥ ११५ ॥

सुचेलकः पटोऽस्त्री-

अच्छे वस्त्रके नाम २ ॥ सुचेलक १ पट २ ॥

-स्याद्वराशिः स्थूलशाटकः ॥

मोटे वस्त्रके नाम २ ॥ वराशि १  
स्थूलशाटक २ ॥

निचोलः प्रच्छदपटः-

पालकी आदिके ढकनेके वस्त्रके  
नाम २ ॥ निचोल १ प्रच्छदपट २ ॥

-समौ रल्लककम्बलौ ॥ ११६ ॥

कम्बलके नाम २ ॥ रल्लक १ कम्बल  
२ ॥ ११६ ॥

अन्तरीयोपसंव्यानपरिधाना-  
न्यधोशुके ॥

धोतीके नाम ४॥ अन्तरीय १ उप  
संस्थान २ परिधान ३ अर्धोष्णक ४ ॥  
द्वौ प्रावारोचरासङ्गौ समौ  
बृहत्तिका तथा ॥ ११७ ॥  
सम्मानमुत्तरीय च—

अंगौठा (स्मालआदि) के नाम ९॥  
प्रावार १ उत्तपसङ्ग २ बृहत्तिका ३  
॥ ११७ ॥ सम्मान ४ उत्तरीय ५ ॥  
—घोळ\* कूर्पासकोऽस्त्रियाम् ॥  
घोळीके नाम २॥ घोळ १ कूर्पासक २॥  
नीक्षार\* स्यात्प्रावरणे हिमा  
निलनिवारणे ॥ ११८ ॥

रजार्द्रिका नाम १॥ नीक्षार १॥ ११८॥  
अर्धोरुकं वरस्त्रीणा स्याच्च  
ण्डातकमस्त्रियाम् ॥  
अर्द्धगेका नाम १ ॥ चण्डातक १॥  
स्याच्चिष्वाप्रपदीर्नं तत्प्रामोत्स्या  
प्रपदं हि यत् ॥ ११९ ॥  
छेच्छेच्छेका नाम १ ॥ आप्रपदीम  
१ ॥ ११९ ॥

अस्त्री विधानमुल्लोचो—  
चक्षोर्णके नाम २ ॥ क्षितान १  
उल्लोच २ ॥

—दृष्याय वस्त्रवेश्मनि ॥  
तम्बू वा डेरका नाम १॥ दूय १॥  
प्रतिसीरा जषनिका स्यात्तिर  
स्करिणी च सा ॥ १२ ॥

कनातके नाम ३॥ प्रतिसीरा १ जष  
निका २ तिरस्करिणी ३ ॥ १२० ॥  
परिक्रमाङ्गसंस्कार—  
आनादि ङगसंस्कारके नाम २ ॥  
परिकर्मन् १ अङ्गसंस्कार २ ॥  
—स्यान्मार्ष्टिर्माजना मृजा ॥  
पौक्रेके नाम ३ ॥ मार्ष्टि १ मा  
जना २ मृजा ३ ॥

उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे—  
उद्वर्तनके नाम २ ॥ उद्वर्तन १  
उत्सादन २ ॥

—आह्लाव आह्लव ॥ १२१ ॥  
खान—  
खानेके नाम ३ ॥ आह्लाव १ आह्लव  
२ ॥ १२१ ॥ खान ३ ॥

—चर्चा तु चार्चिक्य स्यात्सको—  
चन्दनादिस देहके छपक नाम ३॥  
चर्चा १ चार्चिक्य २ स्यात्सक ३ ॥  
—ऽय प्रबोधनम् ॥

अनुबोध—  
गन्धोमठनिके नाम २ ॥ प्रबोधन  
१ अनुबोध २ ॥

—पत्रलेखा पत्रांगुलिर्निमे समे १२२ ॥  
जियोके गाळ तानादिपर कस्तूरी च  
न्दनसे की हुई चित्रकारीके नाम २ ॥  
पत्रलेखा १ पत्रांगुलि २ ॥ १२२ ॥

तमालपत्रतिलकचित्रकाणि  
विशेषकम् ॥ द्वितीयं च तुरीयं  
च न, स्त्रिया-

मस्तकमें चन्दन कस्तूरी, आदिसे  
टीका लगानेके नाम ४ ॥ तमालपत्र  
१ तिलक २ चित्रक ३ विशेषक ४ ॥

-मथ कुंकुमम् ॥ १२३ ॥

काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं वा-  
ह्लीकपीतने ॥ रक्तसंकोचपिशुनं  
धीरं लोहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥

केशरके नाम ११ ॥ कुकुम १ ॥  
१२३ ॥ काश्मीरजन्मन् २ अग्निशिख  
३ वर ४ वाह्लीक ५ पीतन ६ रक्त-  
सकोच ७ पिशुन ८ धीर ९ लोहित  
१० चन्दन ११ ॥ १२४ ॥

लाक्षा राक्षा जतु क्लीबे यावो-  
ऽलक्तो द्रुमामयः ॥

महावरके नाम ६ ॥ लाक्षा १ राक्षा २  
जतु ३ याव ४ अलक्त ५ द्रुमामय ६ ॥

लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञ-

लौगके नाम ३ ॥ लवग १ देव-

कुसुम २ श्रीसंज्ञ ३ ॥

-मथ जायकम् ॥ १२५ ॥

कालीयकं च कालानुसार्य चा-

पीले चन्दनके नाम ३ ॥ जायक १ ॥

॥ १२५ कालीयक २ कालानुसार्य ३ ॥

-ऽथ समार्थकम् ॥ वंशकागुरु-

राजार्हलोहं कृमिजजोङ्गकम् १२६ ॥

अगरके नाम ६ ॥ वंशक १

अगुरु २ राजार्ह ३ लोह ४ कृमिज ५

जोङ्गक ६ ॥ १२६ ॥

कालागुर्वगुरुः-

काले अगरके नाम २ ॥ काला-

गुरु १ अगुरु २ ॥

-स्यात्तन्मंगल्या मल्लिगन्धि

यत् ॥

अगरका भेद १ ॥ मंगल्या १ ॥

यक्षधूपः सर्जरसो राल सर्वर-

सावापि ॥ १२७ बहुरूपोऽ-

रालके नाम ५ ॥ यक्षधूप १

सर्जरस २ राल ३ सर्वरस ४ ॥ १२७ ॥

बहूरूप ५ ॥

-प्यथ वृकधूपकृत्रिमधूपकौ ॥

कृत्रिम धूपके नाम २ ॥ वृकधूप १

कृत्रिमधूप २ ॥

तुरुष्कः पिण्डकः सिंहो याव-

नो-

लोवानके नाम ४ ॥ तुरुष्क १

पिण्डक २ सिंह ३ यावन ४ ॥

-प्यथ पायसः ॥ १२८ ॥

श्रीवासो वृकधूपोऽपि श्रीवेष्टसरल-

द्रवो ॥

देवदारु घूपके नाम ५ ॥ पायस १  
॥ १२८ ॥ धीवास २ वृक्षघूप ३  
धीमष्ट ४ सरलष्ट ५ ॥

मृगनाभिः मृगमदं कस्तूरी घा-  
कस्तूरीफ नाम ३ ॥ मृगनाभि १  
मृगमद २ कस्तूरी ३ ॥

-ऽथ कोलकम् ॥ १२९ ॥  
कश्कोलक कोशफल-  
ककाळने नाम ३ ॥ कोलक १ ॥

॥ १२९ ॥ ककाळक २ काशफल ३ ॥  
-मय कपूरमस्त्रियाम् ॥ घन  
सारश्चन्द्रसक्तं सिताश्रो हिमवा  
सुका ॥ १३० ॥

कपूरके नाम ५ ॥ कर्पूर १ ॥  
घनसार २ चन्द्रसक्त ३ सिताश्र ४  
हिमवासुका ५ ॥ १३० ॥

गन्धसारो मलयजो मद्रथीश्च  
न्दनोऽस्त्रियाम् ॥  
मडवागिरि चन्दनके नाम ४ ॥ गन्ध  
सार १ मडवा २ मद्रथी ३ चन्दन ४ ॥

तेलपणिङ्गोनीप हरिचन्दन  
मस्त्रियाम् ॥ १३१ ॥

सप्त चन्दनका नाम १ ॥ तेलपणिङ्ग  
१ ॥ तिसपे कमण्डप ममान गन्ध हा  
उय चन्दनरा नाम १ ॥ गोनीप १ ॥

कनिजामे वाउमरा नाम १ ॥  
गिरिचन्दन १ ॥ १३१ ॥

तिलपर्णी तु पत्रांग रञ्जन रक्त  
चन्दनम् ॥ कुचन्दन चा-  
छाछचन्दनके नाम ५ ॥ तिल-  
पर्णी १ पत्रांग २ रञ्जन ३ रक्तचन्दन  
४ कुचन्दन ५ ॥

-ऽथ जातीकोशजातीफले  
समे ॥ १३२ ॥

जायपल्लव नाम २ ॥ जातीकोश  
१ जातीफल २ ॥ १३२ ॥

कर्पूरागरुकस्तूरीकंकोलैर्यसक-  
र्दम् ॥

कजूर अगर कस्तूरी कीर ककोल  
इन को बराबर मिटानेसे जो छपन  
बनताहै उसका नाम १ ॥ यक्षफर्दम् १ ॥

गात्रानुलेपनी वर्तिवर्णक स्या  
दिलेपनम् ॥ १३३ ॥

विसीई छपन बस्तुके नाम २ ॥  
गात्रानुलेपनी १ वर्ति २ ॥

विसी(रगई) ई छपन बस्तुक नाम  
२ ॥ वर्णक १ कल्पन २ ॥ १३३ ॥

शृणानि वासयोगा स्यु-  
कपडछान करके जो गन्धगन्धु घोडी  
जाय उसके नाम १ ॥ शृणो वासयोग १ ॥  
-मावित वासित त्रिपु ॥  
पुण इत्यादिम वसाइ इर बस्तुक  
नाम २ ॥ मावित १ वासित २ ॥

संस्कारो गन्धमाल्याद्यैर्यः

स्यात्तदधिवासनम् ॥ १३४ ॥

सुगंध पुष्पादिसे संस्कार करनेके नाम १ ॥ अधिवासन १ ॥ १३४ ॥

माल्यं मालास्रजौ मूर्ध्नि-

सिरपै धारण करने योग्य मालाके नाम ३ ॥ माल्य १ माला २ स्रज ३ ॥

-केशमध्ये तु गर्भकः ॥

बालोंके बीचमें धारण की हुई मालाका नाम १ ॥ गर्भक १ ॥

प्रभ्रष्टक शिखालम्बि-

जो चोटीमें गुन्दी हुई माला हो उसका नाम १ ॥ प्रभ्रष्टक १ ॥

-पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १३५ ॥

जो शिखामें लिलारतक लपेटी माला हो उसका नाम १ ॥ ललामक १ ॥ १३५ ॥

प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात्कण्ठा-

कठमें पहरी हुई मालाका नाम १ ॥ प्रालम्ब १ ॥

-वैकक्षिकं तु तत्- ॥ यत्तिर्यक्क्षित्तमुरासि-

जो यज्ञोपवीतके तुल्य पहनी जाय उस मालाका नाम १ ॥ वैकक्षिक १ ॥

-शिखास्वापीडशेखरौ ॥ १३६ ॥

जो शिखामें पहरी जाय उसमालाके नाम २ ॥ आपीड १ शेखर २ ॥ १३६ ॥

रचना स्यात्परिस्पन्द-

माला आदिके बनानेके नाम २ ॥

रचना १ परिस्पन्द २ ॥

-आभोगः परिपूर्णता ॥

सर्वसामग्रीके पूरे होनेके नाम २ ॥

आभोग १ परिपूर्णता २ ॥

उपधानं तूपवर्हः-

तकियेके नाम २ ॥ उपधान १ उपवर्ह २ ॥

-शय्यायां शयनीयवत् ॥ १३७ ॥

शयनं-

बिछौनेके नाम ३ ॥ शय्या १ शयनीय २ ॥ १३७ ॥ शयन ३ ॥

-मञ्चपर्यंकपल्यंकाः खट्वा

समाः ॥

पलग वा खाटके नाम ४ ॥ मञ्च १ पर्यङ्क २ पल्यङ्क ३ खट्वा ४ ॥

गेन्दुकः न्दुको-

गेंदके नाम २ ॥ गेन्दुक १ कन्दुक २ ॥

-दीपः प्रदीपः-

दियाके नाम २ ॥ दीप १ प्रदीप २ ॥

-पीठमासनम् ॥ १३८ ॥

पीठाके नाम २ ॥ पीठ १ आसन २ ॥ १३८ ॥

समुद्रकः संपुटकः-

डिब्बाके नाम २ ॥ समुद्रक १ संपुटक २ ॥

—प्रतिमाहः पटद्वयम् ॥ \*  
पीकदानके नाम २ ॥ प्रतिमाह १  
पटद्वयम् २ ॥

प्रसाधनी कक्षतिका—  
कक्षीक नाम २ ॥ प्रसाधनी १  
कक्षतिका २ ॥

—पिष्टाव पटवासक\* ॥ १३९ ॥  
कुकाके नाम २ ॥ पिष्टाव पटवास  
क २ ॥ १३९ ॥

दर्पणे मुकुराद्वर्ण—  
दर्पण ( सीस ) के नाम ३ ॥ दर्पण  
१ मुकुर २ आदर्श ३ ॥

—अ्यजनं तालवृन्तकम् ॥  
पंखेके नाम २ ॥ अ्यजन १ तालवृन्तक २ ॥  
इति मनुष्यवर्गः ॥ ८ ॥

अथ ब्रह्मवर्गः ७

संततिर्गोत्रजननकुलान्धमिज  
नान्वयौ ॥ ब्रह्मोऽन्वयाय सन्तानो  
वंशके नाम ९ ॥ सन्तति १ गोत्र २  
जनन ३ कुल ४ अमिजन ५ अन्धम  
६ वंश ७ अन्वयाय ८ सन्तान ९ ॥  
—वणाः स्फुर्भाषणादयः ॥ १ ॥

ब्राह्मण आदिका नाम १ ॥ कर्ण १ ॥ १ ॥  
विप्रक्षत्रियविदूषाध्वार्तुव  
र्ण्यमिति स्मृतम् ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इन चारोंका  
इच्छा नाम १ ॥ चार्त्तवर्ण्य १ ॥

राजबीजी राजवश्यो—  
राजाके वंशबालोंके नाम १ ॥  
राजबीजिन् १ राजवंश्य २ ॥

—बीज्यस्तु कुलसंभवः ॥ २ ॥  
कुलीनक नाम १ ॥ बीज्य १ कुल-  
संभव २ ॥ २ ॥

महाकुलकुलीनार्यसम्पस  
जनसाधवः ॥  
सज्जनके नाम १ ॥ महाकुल १ कुलीन २  
आर्य्य ३ सम्प ४ सज्जन ५ साधु ६ ॥

ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो मि  
धुश्चतुष्टये ॥ ३ ॥ आश्रमोऽब्धी—  
ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थ यति इन

चारोंका इच्छा नाम १ ॥ ३ ॥ आश्रम १ ॥  
—दिजात्यमजन्मभूदेववाद  
वाः ॥ विप्रश्च ब्राह्मणो—

ब्राह्मणके नाम १ ॥ दिजाति १  
अमजन्मन् २ भूदेव ३ वाद ४ विप्र ५  
ब्राह्मण ६ ॥

—ऽसौ पट्कर्मा पागादि  
भिवृत् ॥ ४ ॥

इ-या अभयल दान धावन अग्रा-  
पन प्रतिग्रह इन पट् कर्मोंकरके युक्त  
विप्रका नाम १ ॥ पट्कर्मा १ ॥ ४ ॥

विद्वान्विपश्चिदोषज्ञः सन्सुधीः  
कोविदो बुधः ॥ धीरो मनीषी  
ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान्पण्डितः  
कविः ॥ ६ ॥ धीमान्सूरिः कृती  
कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः ॥ दूरदर्शी  
दीर्घदर्शी-

पण्डितके नाम २२ ॥ विद्वस् १  
विपश्चित् २ दोषज्ञ ३ सत् ४ सुधी ५  
कोविद ६ बुध ७ धीर ८ मनीषिन् ९ ज्ञ  
१० प्राज्ञ ११ संख्यावत् १२ पण्डित १३  
कवि १४ ॥ ५ ॥ धीमत् १५ सूरि १६  
कृतिन् १७ कृष्टि १८ लब्धवर्ण १९ विच-  
क्षण २० दूरदर्शिन् २१ दीर्घदर्शिन् २२ ॥

-श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ ॥ ६ ॥

वेदपाठीके नाम २ ॥ श्रोत्रिय १  
छान्दस २ ॥ ६ ॥

उपाध्यायोऽध्यापको-

जो पढाता हो उस पंडितके नाम  
२ ॥ उपाध्याय १ अध्यापक २ ॥

-ऽय स्यान्निषेकादिकृद्गुरुः ॥

गर्माधानादि कर्म करानेवालेका  
नाम १ ॥ गुरु १ ॥

मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य-

मन्त्रकी व्याख्या करनेवालेका नाम  
१ ॥ आचार्य १ ॥

-आदेष्टा त्वध्वरे-

यज्ञमें सब ऋत्विजोंके सिखानेवाले-  
का नाम १ ॥ आदेष्टृ १ ॥

व्रती ॥ ७ ॥

यष्टा च यजमानश्च-

यजमानके नाम ३ ॥ व्रतिन् १  
॥ ७ ॥ यष्टृ २ यजमान ३ ॥

-स सोमवति दीक्षितः ॥

सोमयज्ञके यजमानका नाम १ ॥  
दीक्षित १ ॥

इज्याशीलो यायजूको-

वारम्बार यज्ञ करनेवालेके नाम २ ॥  
इज्याशील १ यायजूक २ ॥

-यज्वा तु विधिनेष्टवान् ॥ ८ ॥

जो विधिसे यज्ञ करे उसका नाम १ ॥  
यज्वन् १ ॥ ८ ॥

स गीष्पतीष्ट्या स्थपतिः-

बृहस्पति यज्ञ करनेवालेका नाम १ ॥  
स्थपति १ ॥

सोमपीथी तु सोमपाः ॥

सोमबल्लीका रस पीनेवालेके नाम  
२ ॥ सोमपीथिन् १ सोमपा २ ॥

सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः

सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥

जो यज्ञमें अपना सब धन ठे डाले  
उसका नाम १ ॥ सर्ववेदस् १ ॥ ९ ॥

अनृचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती-



सांगोपांग षट् पठनेवाछेका नाम  
१ ॥ अनूधान १ ॥

—गुरोस्तु याः ॥ लघ्वानुक्तं  
समावृत्तं—

यही अनूधान गुरुकी गृहस्थायमा  
दिमें प्राप्त होनेकी आज्ञा पावेतो उसका  
नाम १ ॥ समावृत्त १ ॥

—सुत्वा स्वमिषवे कृते ॥ १० ॥  
अमिषव स्नानकरियाका नाम १ ॥  
सुत्तन् १ ॥ १० ॥

छात्रान्तेवासिनौ शिष्ये—  
विद्यार्थिकि नाम १ ॥ छात्र १  
अन्तेवासिन् २ शिष्य १ ॥

—शैशाः प्रायमकल्पिकाः ॥  
छोटे (नये) विद्यार्थिकि नाम २ ॥  
शैश १ प्रायमकल्पिक २ ॥

एकब्रह्मप्रतापारा मिषं सत्र-  
क्षचारिणं ॥ ११ ॥  
सहपाठी अर्थात् एक साथ एकही

बल पढनेवाछेका नाम १ ॥ सत्रक्षचा-  
रिन् १ ॥ ११ ॥  
सतीर्थ्यास्त्वेकगुरव-

जितने एक गुरुसे पढते हों उनका  
नाम १ ॥ सर्ताथ्य १ ॥  
—भित्तवार्नमिमभिधित् ॥

जो भूमिको बटोरे हे उसका नाम  
१ ॥ भूमिधित् १ ॥

पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमि-  
तिहाव्ययम् ॥ १२ ॥

परम्परा उपदेशके नाम २ ॥ ऐतिह्य  
१ इतिह २ ॥ १२ ॥

उपज्ञा ज्ञानमार्ग स्या—  
प्रथमज्ञानका नाम १ ॥ उपज्ञा १ ॥  
—ज्ज्ञात्स्वारम्य उपक्रमं ॥

समस्तके ग्रन्थके प्रारम्भकरनेका नाम १ ॥  
उपक्रम १ ॥

यज्ञं सवोऽध्वरो यागः सप्तत-  
न्तुर्मखं ऋतुं ॥ १३ ॥

यज्ञके नाम ७ ॥ यज्ञ १ सव १  
अध्वर १ याग ४ सप्ततन्तु ५ मख ६  
ऋतु ७ ॥ १३ ॥

पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या  
सर्पण बलिं ॥ एते पञ्च महायज्ञा  
ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ १४ ॥

महायज्ञके नाम ५ ॥ पाठ १ होम  
२ अतिथिपूजा ३ सर्पण ४ बलि ५ ॥ १४ ॥  
समज्या परिपतोष्ठी सभास

मितिसंसदः ॥ आस्थानी ह्रीब  
मास्थान क्रीनपुंसकयोः सदः १५ ॥

सभाके नाम ९ ॥ समज्या १ पारै  
षद् २ गोष्ठी ३ समा ४ समिति ५  
संसद ६ आस्थानी ७ आस्थान ८  
सदस् ९ ॥ १५ ॥

प्राग्वंशः प्राग्घविर्गेहा-  
 सदस्योके गृहका नाम १॥प्राग्वंश १  
 -त्सदस्या विधिदर्शिनः ॥  
 समामे विचार करनेवालोका नाम  
 १ ॥ सदस्य १ ॥  
 सभासदः सभास्ताराः सभ्याः  
 सामाजिकाश्च ते ॥ १६ ॥  
 समामे बैठनेवालोंके नाम ४ ॥  
 सभासद १ सभास्तार २ सभ्य ३  
 सामाजिक ४ ॥ १६ ॥  
 अध्वर्यूद्गातृहोतारो यजुः साम-  
 र्विदः क्रमात् ॥  
 यजुर्वेद जाननेवालेका नाम १ ॥  
 अध्वर्यु १ ॥ सामवेदीका नाम १॥उद्गातृ  
 १॥ ऋग्वेदीका नाम १ ॥ होतृ १ ॥  
 आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो  
 याजकाश्च ते ॥ १७ ॥  
 जिनको धन आदि देकर यज्ञमें वरण  
 कियाजाय तिस आग्नीध्र आदि सोलहके  
 नाम २ ॥ ऋत्विज १ याजक २॥१७॥  
 वेदिः परिष्कृता भूमिः-  
 वेदीके नाम १ ॥ वेदि १ ॥  
 -समे स्थण्डिलचत्वरे ॥  
 यज्ञार्थ चवूतराके नाम २ ॥  
 स्थण्डिल १ चत्वरे २ ॥  
 चषालो यूपकटकः-  
 खम्भाने ऊपर जो ककणाकार

काष्ठका रहता है उसके नाम २॥चषाल  
 १ यूपकटक २ ॥  
 -कूम्वा सुगहना वृत्तिः ॥ १८ ॥  
 यज्ञोको अन्यजाति न देखनेके  
 निमित्त जो टट्टी आदि लगाई जाती  
 है उसका नाम १ ॥ कुम्वा १॥१८॥  
 यूपार्थं तर्म-  
 यज्ञस्तम्भके आगेके नाम २॥यूपार्थ  
 १ तर्मन् २ ॥  
 -निर्मन्थ्यदारुणि त्वराणिर्द्वयोः ॥  
 जिस लकड़ीको मथके अग्नि निका-  
 लते है उसका नाम १ ॥ अरणि १ ॥  
 दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ  
 त्रयोऽग्नयः ॥ १९ ॥  
 , यज्ञकी अग्निके नाम ३॥ दक्षिणाग्नि  
 १ गार्हपत्य २ आहवनीय ३ ॥ १९॥  
 अग्नित्रयमिदं त्रेता-  
 इन तीनों अग्नियोंका नाम १॥त्रेता १ ॥  
 -प्रणीतः संस्कृतोऽनलः ॥  
 संस्कारित अग्निका नाम १॥प्रणीत १  
 समूह्यः परिचाय्योपचाय्यत्पत्रो  
 प्रयोगिणः ॥ २० ॥  
 यज्ञाग्निके नाम ३॥समूह्य १ परि-  
 चाय्य २ उपचाय्य ३ ॥ २० ॥  
 यो गार्हपत्यादानीय दक्षि-  
 णाग्निः प्रणीयते ॥

तस्मिन्नानाय्यो-

गार्हपत्यामिसे छेकर जो दक्षिणा  
मि प्रवेश कराया जाये उसका नाम ॥  
अनाय्य १ ॥

-उथाप्रायी स्वाहा च इतमु  
किप्रया ॥ २१ ॥

स्वाहा अर्पात् अमिक्ती खीके नाम ॥  
अप्रायी १ स्वाहा २ इतमुकिप्रया १ ॥ २१ ॥

अन्तस्तामिधेनी धारया च मा  
स्यादमितमिन्धने ॥

अमिवाक्केके अथ जो अन्ता पढी  
जाय उसके नाम २ ॥ सामिधेनी १  
धाम्या २ ॥

गायत्रीप्रमुखं छन्दो-

गायत्री उगिह् अतुष्टम् इत्यादिका  
नाम १ ॥ छन्दस् १ ॥

-इवपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥

अग्निमें छेडने योग्य साकस्यका नाम  
१ ॥ चरु १ ॥ २२ ॥

आमिक्षा सा शृतोष्णे या  
क्षीरे स्पादधियोगतः ॥

गरमपक दूधमें दही डालनेसे जो  
बनता है उसका नाम १ ॥ आमिक्षा १ ॥

धवित्र व्यजनं तद्यदधित  
मृगधर्मणा ॥ २३ ॥

मृगधर्मि बनी हुये वीजनाका नाम  
१ ॥ धवित्र १ ॥ २३ ॥

पृषदाज्य सदध्याज्ये-

दही घी मिल्डूएका नाम १ ॥ पृषदाज्य १ ॥

-परमाश्रं तु पायसम् ॥

खीरके नाम २ ॥ परमाश्र १ पायस २ ॥  
इव्यकव्ये देवपिथ्ये अश्व-

देवताके अर्घ्यकी खीरका नाम १ ॥  
हव्य १ ॥ पितरोंकी खीरका नाम १ ॥

कव्य १ ॥

पात्र सुवादिकम् ॥ २४ ॥

सुवा आदिका नाम १ ॥ पात्र १ ॥ २४ ॥  
ध्रुवापभृज्जुहर्नातु सुवो भेदा

सुचः स्त्रियं ॥

सुवाके भेद ४ ॥ ध्रुवा १ उपभेद २  
शुद्ध ३ सुव ४ ॥

उपाकृतं पशुरतौ योऽमिमन्त्र्य  
कृतौ इतः ॥ २५ ॥

यज्ञके पशुका नाम १ ॥ उपाकृत  
१ ॥ २५ ॥

परम्पराक अमन प्रोक्षण च  
वधार्थकम् ॥

यज्ञके अर्घ्य पशुमारनेका नाम १ ॥  
परम्पराक १ अमन २ प्रोक्षण ३ ॥

वाय्वलिङ्गाः प्रमीतोपसंपन्नप्रो  
क्षिता इते ॥ २६ ॥

यज्ञमें मारेहुये पशुके नाम १ ॥ प्रमीत  
१ उपसम्पन्न २ प्रोक्षित ३ ॥ २६ ॥

साभाय्य इति-

साकल्यके नाम २ ॥ सान्नाय्य १ ॥  
हविष् २ ॥

—रप्रौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ॥  
अग्निमें जो हुना जावे उसका नाम  
१ ॥ वषट्कृत १ ॥

दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञः—

यज्ञान्तस्नानका नाम १ ॥ अवभृथ १ ॥  
—तत्कर्मार्हं तु यज्ञियम् ॥  
॥ २७ ॥ त्रि—

यज्ञयोग्यवस्तुका नाम १ ॥ यज्ञिय  
१ ॥ २७ ॥

—ष्वथ क्रतुकर्मैष्टं—

यज्ञमें कर्मका नाम १ ॥ इष्ट १ ॥  
—पूर्तं खातादि कर्म यत् ॥  
बावडी तालाव आदि खुदानेका  
नाम १ ॥ पूर्त १ ॥

अमृतं विघसो यज्ञशेषभोजन-  
शेषयोः ॥ २८ ॥

यज्ञसे बची हुई जाउरि आदिका  
नाम १ ॥ अमृत १ ॥ और भोजनसे बची  
हुई वस्तुका नाम १ ॥ विघस १ ॥ २८ ॥

त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जन-  
विसर्जने ॥ विश्राणनं वितरणं  
स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥  
प्रादेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहतिः ॥

दानके नाम १ ४ ॥ त्याग १ विहा-

पित ५ दान ३ उत्सर्जन ४ विसर्जन ५  
विश्राणन ६ वितरण ७ स्पर्शन ८ प्रति-  
पादन ९ ॥ २९ ॥ प्रादेशन १० निर्व-  
पण ११ अपवर्जन १२ ॥ अहति १३ ॥  
मृतार्थं तदहे दानं त्रिषु स्या  
दौर्ध्वदेहिकम् ॥ ३० ॥

मृतकके अर्थ जो दश दिनके बीचमें  
पिडादि दिये जाते हैं उनका नाम १ ॥  
और्ध्वदेहिक १ ॥ ३० ॥

पितृदानं निवापः स्या—

पितरोंके देनेके निमित्त जो दान  
दिया जावे उसके नाम २ ॥ पितृदान १  
निवाप २ ॥

—च्छ्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ॥

पितरोंके देनेके निमित्तके कर्मका  
नाम ॥ १ ॥ श्राद्ध १ ॥

अन्वाहार्यमासिके—

अमावास्याके श्राद्धके नाम २ ॥ अ-  
न्वाहार्य १ मासिक २ ॥

—ऽशोऽष्टमोऽद्भः कुतपोऽस्त्रि

याम् ॥ ३१ ॥

दिनके आठवें हिस्सेका नाम १ ॥

कुतप १ ॥ ३१ ॥

पर्येषणा परीष्टिश्राद्धवेषणा च  
गवेषणा ॥

श्राद्धमे ब्राह्मणकी भक्ति और सेवा

करनेके नाम २ ॥ पर्येषणा १ परीष्टि  
२ ॥ धर्म आदिके खोजनेके नाम २ ॥  
अभ्यषणा १ गवेषणा २ ॥ मापा-  
अथवा ४ नाम धम आदिके खोजने  
केही जानने ॥

सनिस्त्वध्येषणा-

किन्तीक नाम २ ॥ सनि १ अभ्येषणा २ ॥

-याचजाडभिस्त्यर्थाचनाऽ

र्थना ॥ ३२ ॥

मांगनके नाम ४ ॥ याचना १ अर्थि  
द्यस्ति १ याचना २ अर्थना ४ ॥ ३२ ॥

-यन्तु त्रि-

मापा-यह छ शब्द तीनों लिंगोंमें  
ह्रात है ॥

-ध्वष्यमर्वाथ पाथ पादाय  
वारिणि ॥

पूजाथ पानी छोड़नेका नाम १ ॥  
अर्घ्य १ ॥ पाथ छोड़नेको छोड़न योग्य  
पानीका नाम १ पाथ १ ॥

क्रमादातिथ्यातिथेय अतिथ्यर्थेऽ  
त्र साधुनि ॥ ३३ ॥

अतिथिक अर्थ जो कर्म टसका नाम  
१ ॥ आति प १ ॥ अतिथिक निमित्त जो  
मिद हो यह १ ॥ आतिथय १ ॥ ३३ ॥  
स्युगवेषणिक आगन्तुरतिथिना गृ  
हागते ॥

महिमानर नाम ४ ॥ आगणिक १  
आगन्तु २ अतिथि ३ गृहागत ४ ॥ ३४ ॥ पथ्याय ५ ॥

पूजा नमस्याऽपचितिः सपर्यार्था  
र्हणा समा ॥ ३४ ॥

पूजाके नाम १ ॥ पूजा १ नमस्या २  
अपचिति ३ सपर्या ४ अर्घा ५ अर्हणा  
६ ॥ ३४ ॥

परिषस्या तु शुश्रूषा परिषर्पा  
प्युपासना ॥

उपासनाके नाम ४ ॥ परिषस्या १  
शुश्रूषा २ परिषर्पा ३ उपासना ४ ॥

ग्रज्याऽटाटथा पर्यटनं-  
निदेशमें अगणकरनके नाम ३ ॥ ग्रज्या  
१ अटाटथा २ पर्यटन ३ ॥

-चर्पा त्वीयापथे स्थितिः ॥ ३५ ॥  
योगमार्गमें स्थितिका नाम १ ॥  
चर्पा १ ॥ ३५ ॥

उपस्पर्शस्त्वाचमन-  
आचमनके नाम २ ॥ उपस्पर्श १ ॥  
आचमन २ ॥

-मथ मौनममापणम् ॥  
गुणरहनेके नाम २ ॥ मौन १ अमा  
पण २ ॥

आनुपूर्वा म्रियां वाऽऽवृत्तारि  
पाटी अनुक्रमः ॥ ३६ ॥ पर्यायश्चा  
अनुक्रमक नाम ५ ॥ आनुपूर्वा १  
आवृत्त २ परिपाटी ३ अनुक्रमक

४ ॥ ३६ ॥ पथ्याय ५ ॥

—उतिपातस्तु स्यात्पर्यय उपा-  
त्ययः ॥

अतिक्रमके नाम ३ ॥ अतिपात २  
पर्यय २ ॥ उपात्यय ३ ॥

नियमो व्रतमस्त्री—

व्रतके नाम २ ॥ नियम १ व्रत २ ॥

—तच्चोपवासादि पुण्यकम् ॥ ३७ ॥

चान्द्रायणादि व्रतका नाम १ ॥ पुण्य  
१ ॥ ३७ ॥

औपवस्त तूपवासो—

उपवासके नाम २ ॥ औपवस्त १  
उपवास २ ॥

—विवेकः पृथगात्मता ॥

प्रकृतिपुरुषके भेद जाननेके विचारके  
नाम २ ॥ विवेक १ पृथगात्मता २ ॥

स्याद्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनद्धि—

सदाचारपालन और वेदाभ्यास कर  
नेसे जो तेज होता है उसका नाम १ ॥  
ब्रह्मवर्चस १ ॥

—रथाञ्जलिः ॥ ३८ ॥ पाठे—

ब्रह्माञ्जलिः—

वेदपठनेके समयकी अञ्जलिका नाम  
१ ॥ ब्रह्माञ्जलि १ ॥ ३८ ॥

—पाठे विप्रुषो ब्रह्मविन्दवः ॥

वेदपठनेके समय जो मुखसे जल चूता  
है उनका नाम १ ॥ ब्रह्मविन्दु १ ॥

ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं—

ध्यान और योगके आसनका नाम

१ ॥ ब्रह्मासन १ ॥

—कल्पे विधिक्रमौ ॥ ३९ ॥

नियोगशास्त्रके नाम ३ ॥ कल्प १

विधि २ क्रम ३ ॥ ३९ ॥

मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पो—

प्रथम विधिका नाम १ ॥ मुख्य १ ॥

—ऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः ॥

द्वितीयविधिका नाम १ ॥ अनुकल्प १ ॥

संस्कारपूर्व ग्रहणं स्यादुपाकर-  
णं श्रुतेः ॥ ४० ॥

संस्कारपूर्वके वेदके सुननेका नाम १ ॥

उपाकरण १ ॥ ४० ॥

समे तु पादग्रहणमभिवादन  
मित्युभे ॥

नामगोत्रादि पूर्वक प्रणाम करनेके  
नाम २ ॥ पादग्रहण १ अभिवादन २ ॥

भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पारा  
शर्यपि मस्करी ॥ ४१ ॥

सन्यासीके नाम ५ ॥ भिक्षु १ परि-  
व्राज्ज २ कर्मन्दिन् ३ पाराशरिन् ४  
मस्कारिन् ५ ॥ ४१ ॥

तपस्वी तापसः पारिकांक्षी-  
तपस्वीके नाम ३ ॥ तपस्विन् १ तापस  
२ पारिकाक्षिन् ३ ॥

—वाचयमो मुनिः ॥

मुनिके नाम २ ॥ वाचयम १ मुनि २ ॥

तपःश्रेष्ठसदो दान्तो-

तपस्याक कृष्णक सन्नेवालका नाम

१ ॥ दान्त १ ॥

—वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ॥ ४२ ॥

ब्रह्मचारीके नाम २ ॥ वर्णिन् १

ब्रह्मचारिन् २ ॥ ४२ ॥

फट्पयः सत्यवचसः-

फट्पिनेनाम २ ॥ फट्पि १ सत्यवचस २ ॥

—आवकस्त्वाष्टुषो व्रतो ॥

जो वदव्रतधारण किये हुये गुरुकी

आज्ञासे स्नान करै उसका नाम १ ॥

आवक १ ॥

ये निर्जितेन्द्रियमामा यतिनो  
यस्यश्च ते ॥ ४३ ॥

निर्जितेन्द्रियके नाम २ ॥ यतिन् १ ॥

यति २ ॥ ४३ ॥

यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थ

ण्डिलशाय्यसौ ॥ स्थण्डिलश्चा-

जो व्रतवश हो धृष्टीपर चबूतरा

बना उसपर सोने उसके नाम २ ॥ स्थण्डि

लशायिन् १ स्थण्डिल २ ॥

—ऽथ विरजस्तमनः स्युर्दया

तिगा ॥ ४४ ॥

रजोगुण तमोगुण रहित व्यासदि

मुनिके नाम २ ॥ विरजस्तमन् १ दया

तिगा १ ॥ ४४ ॥

पवित्र प्रयत पूत-

पवित्रके नाम १ ॥ पवित्र १ प्रयत

२ पूत ३ ॥

—पारवण्डा संचलिङ्गिन् ॥

वौद्वसुपणकादि दुष्ट शास्त्रवर्तियोंके

नाम २ ॥ पारवण्डा १ संचलिङ्गिन् १ ॥

पालाशो दण्ड आपादो व्रते-

ब्रह्मचर्यमें पलाशके दण्डका नाम

१ ॥ आपाद १ ॥

—राम्मस्तु वेणवः ॥ ४५ ॥

यदि वह दण्ड बस्तका हो तो उसका

नाम १ राम्म १ ॥ ४५ ॥

अक्षी कमण्डलुः कुण्डी-

व्रतियोंके छोटके नाम २ ॥ कमण्डलु

१ कुण्डी २ ॥

—व्रतिनामासनं धृष्टी ॥

जोर तनके आसनका नाम १ ॥

धृष्टी १ ॥

अजिनं चर्म कृषिः स्त्री-

मृगाणिके चर्मके नाम १ ॥ अजिन

१ चर्मन् २ कृषि ३ ॥

—मैक्ष भिक्षाकदम्बकम् ॥ ४६ ॥

भिक्षाके दण्डका नाम १ ॥ मैक्ष १ ॥ ४६ ॥

स्वाध्यायः स्याज्जपः—

वेदके अभ्यासके नाम २॥ स्वाध्याय  
१ जप २ ॥

—सुत्याऽभिषवः सवनं च सा॥

यज्ञौषधिके कूटनेके नाम ३॥ सुत्या  
१ अभिषव २ सवन ३ ॥

सर्वेनसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्व-  
धमर्षणम् ॥ ४७ ॥

सब पापके नाशकरनेवाले भत्रका  
नाम १ ॥ अधमर्षण १ ॥ ४७ ॥

दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ प-  
क्षान्तयोः पृथक् ॥

अमावसके दिनके यज्ञका नाम १॥  
दर्श १ पौर्णमासीके दिनके यज्ञका नाम  
१ ॥ पौर्णमास १ ॥

शरिरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कम  
तद्यमः ॥ ४८ ॥

अहिंसा सत्य चोरी न करना ब्रह्मच-  
र्य अपरिग्रह ( दान न लेना ) इन  
नित्यकर्मका नाम १ ॥ यम १ ॥ ४८ ॥

नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमा-  
गन्तुसाधनम् ॥

शौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वर-  
प्रणिधान इन आगन्तु कर्म साधनका  
नाम १ ॥ नियम १ ॥

उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धृते दक्षि-  
णे करे ॥ ४९ ॥

वाये काधेके जनेऊके नाम २॥ उप-

वीत १ ब्रह्मसूत्र २ ॥ ४९ ॥

प्राचीनावीतमन्यस्मि—

दहने काधेपर रहनेवाले जनेऊका  
नाम १ ॥ प्राचीनावीत १ ॥

निवीतं कण्ठलम्बितम् ॥

मालाकार यज्ञोपवीत पहिरनेका  
नाम २ ॥ निवीत १ ॥

अंगुल्यग्रे तीर्थं दैवं—

भाषा ॥ अगुलियोंका अंग्रभाग दे-  
वताओका तीर्थ कहाता है ॥

—स्वल्पांगुल्योर्मूले कायम् ॥ ५० ॥

भाषा—कन अगुलियोंके मूलका नाम  
१ ॥ प्रजापति तीर्थ है ॥ ५० ॥

मध्येऽङ्गुष्ठांगुल्योः पित्र्यं—

भाषा—अगुष्ठ और तर्जनी अगुलीके  
मध्यमें पितृतीर्थ कहाता है ॥

—मूले त्वंगुष्ठस्य ब्राह्मम् ॥

भाषा ॥ अगुष्ठके मूलमें ब्राह्मतीर्थ  
कहाता है ॥

स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायु-  
ज्यमित्यपि ॥ ५१ ॥

ब्रह्ममें मिलजानेके नाम ३ ॥ ब्रह्म-  
भूय १ ब्रह्मत्व २ ब्रह्मसायुज्य ३ ॥ ५१ ॥

देवभूयादिकं तद्वत्—

देवमें मिलजानेके नाम ३ ॥ देवभूय  
१ देवल २ देवसायुज्य ३ ॥



—कृच्छ्र सान्त्तपनादिकम् ॥

गोमूत्र गोबर मूत्र दही घी कुक्षो  
दक इमका मक्षण फलन और एक रात्रिके  
उपवासका नाम १ ॥ कृच्छ्र १ ॥

संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायो  
संन्यासपूर्वक मोक्षनत्यागका नाम  
१ ॥ प्राय १ ॥

—अथ वीरहा ॥५२॥ नष्टाग्नि—  
जिस तपस्वीका अग्नि शुभगई हो  
उस तपस्वीक नाम ॥ वीरहन् १  
॥५२॥ नष्टाग्नि २ ॥

कुहना छोमान्मिथ्येर्वापयक-  
रूपना ॥

दम्भसे ध्यानादि करनेका नाम १ ॥  
कुहना १ ॥

प्रात्य सस्कारहीन स्या—  
जिस ब्राह्मणका गौण फालमेंमी  
ब्रह्मर्षीन न हुआ हो उसका नाम  
१ ॥ प्रात्य १ ॥

—दस्वाध्यायो निराकृति ॥५३॥  
दसध्यामरहितका नाम १ ॥ निरा  
कृति १ ॥ ५३ ॥

धमध्वजी छिन्नवृत्ति—  
बहुविधा ब्राह्मणके नाम २ ॥  
धमध्वजा १ छिन्नवृत्ति २ ॥  
—रवकीर्णो दशतयत्त ॥

जिसका ब्रह्मध्वय नष्ट होगया हो  
उसके नाम २ ॥ ब्रह्मध्वयिन् १ दशतयत्त २ ॥

सुते यस्मिन्नस्तमेति सुते य  
स्मिन्नुदेति च ॥ ५४ ॥ अशुमान  
मिनिमुक्ताम्युदितौ च यथाक्रमम् ॥  
साय संध्यामें सोनेवालेका नाम १ ॥  
अमिनिर्मुक्त १ ॥ प्रातःकाळकी संध्यामें  
सोनेवालेका नाम १ ॥ अम्युदित १ ॥ ५४ ॥

परिवेसाज्जुजोऽधूदे ज्येष्ठे दार  
परिग्रहात् ॥ ५५ ॥

जिसका बड़ा माई न ब्याहा गया  
हो प्रथम छोटा ब्याहा जाय ता उस  
छोटेका नाम १ ॥ परिवत्त १ ॥ ५५ ॥

परिवित्तिस्तु तज्ज्यायान—  
उसके बड़माईका नाम १ ॥ परि  
वित्ति १ ॥

—विवाहोपयमौ ममौ ॥ तथा  
परिणयोऽहोपयामा पाणिपी  
दनम् ॥ ५६ ॥

विवाहके नाम ६ ॥ विवाह १ उप-  
यम परिणय ३ उद्वाह ४ उपयाम २  
पाणिपीदन ६ ॥ ५६ ॥

व्यवायो ग्राम्यघमा मेथुन  
निधुवन रतम् ॥

मेथुन नाम ५ ॥ व्यवाय १ ग्राम्य  
घम मेथुन ६ निधुवन ४ रत ५ ॥

त्रिवर्गो धर्मकामार्थै-

वेदविहितयज्ञादि विधि, स्त्रीसेवन,  
न्यायसे धनोपार्जन, इनका नाम १ ॥  
त्रिवर्ग १ ॥

-श्चतुर्वर्गः समोक्षकैः ॥ ५७ ॥

और मोक्ष करके युक्त धर्म अर्थ काम  
हो तो उसका नाम १ ॥ चतुर्वर्ग १ ॥ ५७ ॥

सवलैस्तैश्चतुर्भद्रं-

और वे धर्मादिसबल हो तो उनका  
नाम १ ॥ चतुर्भद्र १ ॥

-जन्याः स्निग्धा वरस्य ये ॥ ५८ ॥

बराती अर्थात् वरके पक्षवालोंका  
नाम १ ॥ १ ॥ जन्य १ ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

अथ क्षत्रियवर्गः ८.

मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः  
क्षत्रियो विराट् ॥

क्षत्रियके नाम ५ ॥ मूर्धाभिषिक्त १  
राजन्य २ बाहुज ३ क्षत्रिय ४ विराट् ५ ॥

राजा राट् पार्थिवक्षमाभृत्पभू-  
पमहीक्षितः ॥ १ ॥

राजाके नाम ७ ॥ राजन् १ राज्  
-२ पार्थिव ३ क्षमाभृत् ४ पभू ५  
महीक्षित् ७ ॥ १ ॥

राजा तु प्रणताशेषसामन्तः  
स्यादधीश्वरः ॥

जो बहुत राजाओंका मालिक हो

उसका नाम १ ॥ अधीश्वर १ ॥

चक्रवर्ती सार्वभौमो-

समुद्रपर्यन्त पृथ्वीका जिसका राज्य  
हो उसके नाम २ ॥ चक्रवर्तिन् १  
सार्वभौम २ ॥

-नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

चारहजार ४००० कोशके भूमंडलके  
राजाका नाम १ ॥ मण्डलेश्वर १ ॥ २ ॥

येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्ये-  
श्वरश्च यः ॥ शास्ति यश्चाज्ञया  
राज्ञः स सम्रा-

वही मण्डलेश्वर राजसूययज्ञ किये हो  
और सब राजाओंका शिक्षक हो तो  
उसका नाम १ ॥ सम्राज् १ ॥

-इय राजकम् ॥ ३ ॥ राज-  
न्यकं च नृपतिक्षत्रियाणां गणे  
क्रमात् ॥

राजाओंके गणका नाम १ ॥  
राजक १ ॥ ३ ॥ और क्षत्रियोंके गणका  
नाम १ ॥ राजन्यक १ ॥

मन्त्री धीसचिवोऽमात्यो-

मन्त्रीके नाम ३ ॥ मन्त्रिन् १ धीस-  
चिव २ अमात्य ३ ॥

-ऽन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥

मन्त्रीसे छोटे अन्य मुसाहिवोंका  
नाम १ ॥ कर्मसचिव १ ॥ ४ ॥

महामात्रा प्रधानानि-

मुख्यमन्त्रीक नाम २ ॥ महामात्र १  
प्रधान २ ॥

-पुरोधास्तु पुरोहितं ॥

पुरोहितके नाम २ ॥ पुरोधस् १  
पुरोहित २ ॥

वृष्टरि व्यवहारार्णा प्राड्विषाकास्त  
दर्शकौ ॥ ५ ॥

पत्र अर्थात् म्यायोधीशक नाम २ ॥  
प्राड्विषाक १ अक्षदर्शक २ ॥ ५ ॥

प्रतीहारो ङारपालद्वास्त्यद्वा  
स्थितदर्शका ॥

द्वारपालक नाम ५ ॥ प्रतीहार १  
द्वारपालक २ द्वारस्थ ३ द्वारस्थितदर्शक ५ ॥

रक्षिबर्गस्त्वनिकस्त्वो-

रक्षबाकेके नाम २ ॥ रक्षिबर्ग १  
अनीकस्त्व २ ॥

-ऽध्याध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥ ६ ॥

अधिकारीक नाम ॥ अध्यक्ष १  
अधिकृत २ ॥ ६ ॥

स्यायुक्तोऽधिकृता ग्रामे-

एक ग्रामक ठेकदारका नाम १ ॥  
स्यायुक्त १ ॥

गोपो ग्रामेषु मृगेषु ॥

बहुत ग्रामके ठेकदारका नाम १ ॥  
गोप १ ॥

भौरिकं कनकाध्यक्षो-

सोनेके अधिकारीके नाम २ ॥  
भौरिक १ कनकाध्यक्ष २ ॥

-रूप्याध्यक्षस्तु नैष्किक् ॥ ७ ॥

खजानधीक नाम २ ॥ रूप्याध्यक्ष  
१ नैष्किक् २ ॥ ७ ॥

अन्तःपुरे स्वधिकृतं स्यादन्त  
बैक्षिको जनं ॥

जो जनानेसी बस्तुओंका अधिकारी  
हो उसका नाम १ ॥ अन्तर्बैक्षिक १ ॥

सौविदह्याः कञ्जुकिन् स्यात्पत्या  
सौविदाश्च ते ॥ ८ ॥

राजा वा राजस्त्रियोंके निकट जो  
वैत लिय हुए खर्च करते हैं उनके नाम  
१ ॥ सौविदह्य १ कञ्जुकिन् २ स्यात्पत्या  
३ सौविद ४ ॥ ८ ॥

पण्डो बपवरस्तुत्सो-

खोजोंके नाम २ ॥ पण्ड १ बपवर २ ॥

-सेवकार्य्यनुजीविनं ॥

सेवक वा नौकरके नाम ३ ॥ सेवक  
१ अधिन् २ अनुजीविन् ३ ॥

विपयानन्तरो राजा शत्रु-

राजाके दशरं पासक राजाका नाम  
१ ॥ शत्रु १ ॥

-मममम पण्ड ॥ ९ ॥

उत्तम अन्य राजाका नाम १ ॥  
मिम १ ॥ ९ ॥

उदासीनः परतरः—

इन शत्रु मित्रोंसे पर अन्य राजा-  
ओंका नाम १ ॥ उदासीन १ ॥

—पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ॥

अपने राज्यके पीछे राजा हो उसका  
नाम १ ॥ पार्ष्णिग्राह १ ॥

रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्वेषणदु-  
र्हदः ॥ १० ॥ द्विद्विपक्षाहितामित्रद-  
स्युशात्रवशत्रवः ॥ अभिघातिपरा-  
रातिप्रत्यर्थिपरिपंथिनः ॥ ११ ॥

दुश्मनके नाम १९ ॥ रिपु १ वैरि-  
न् २ सपत्न ३ अरि ४ द्विपत् ५ द्वेषण  
६ दुर्हद ७ ॥ १० ॥ द्विप् ८ विपक्ष ९  
अहित १० अमित्र ११ दस्यु १२  
शात्रव १३ शत्रु १४ अभिघातिन् १५  
पर १६ अराति १७ प्रत्यर्थिन् १८  
परिपंथिन् १९ ॥ ११ ॥

वयस्यः स्निग्धः सवया—

हमजोलीके नाम ३ ॥ वयस्य १  
स्निग्ध २ सवयसू ३ ॥

—अथ मित्रं सखा सुहृत् ॥

मित्रके नाम ३ ॥ मित्र १ सखि २ सुहृद् ३  
सख्यं साप्तपदीनं स्या—  
मित्रताके नाम २ ॥ सख्य १ सा-  
प्तपदीन २ ॥

--अनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥

मला मनाने (मुलाहिजे) के नाम २ ॥

अनुरोध १ अनुवर्तन २ ॥ १२ ॥

यथार्हवर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः

स्पशः ॥ चारश्च गूढपुरुष—

जासूस वा हलिकारेके नाम ७ ॥  
यथार्हवर्ण १ प्रणिधि २ अपसर्प ३ चर  
४ स्पश ५ चार ६ गूढपुरुष ७ ॥

—श्राप्तप्रत्ययितौ समौ ॥ १३ ॥

विश्वासीके नाम २ ॥ आप्त १  
प्रत्ययित २ ॥ १३ ॥

सांवत्सरो ज्योतिषिको दैव-  
ज्ञगणकावपि ॥ स्युर्मौहूर्तिकमौ-  
हूर्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि ॥ १४ ॥

ज्योतिषी पण्डितके नाम ८ ॥ साव-  
त्सर १ ज्योतिषिक २ दैवज्ञ ३ गणक  
४ मौहूर्तिक ५ मौहूर्त्त ६ ज्ञानिन् ७  
कार्तान्तिक ८ ॥ १४ ॥

तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः—

शास्त्रीके नाम २ ॥ तान्त्रिक १  
ज्ञातसिद्धान्त २ ॥

—सत्री गृहपतिः समौ—

मोदीके नाम २ ॥ सत्रिन् १ गृहपति २ ॥  
लिपिकरोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चु-  
श्च लेखके ॥ १५ ॥

लेखकके नाम ४ ॥ लिपिकर १ अक्षर-  
चण २ अक्षरचुञ्चु ३ लेखक ४ ॥ १५ ॥

लिखितासरविन्यासे लिपिलि  
विरुमे स्त्रियौ ॥

लिख ३९ लखके नाम ४ ॥ लिखित १  
अक्षरविन्यास २ लिपि ३ लिखि ४ ॥

स्यात्सदेशद्वयो-  
द्वयके नाम २ ॥ संदेशद्वय १ द्वय २ ॥

—द्वय सद्भावकर्मणी ॥ २६ ॥  
द्वयपनका नाम १ ॥ द्वय १ ॥ २६ ॥

अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वम्यं पान्यं  
पथिक इत्यपि ॥

रस्तेगीरक नाम ६ ॥ अध्वनीन १  
अध्वग २ अध्वम्य ३ पान्य ४ पथिक ५ ॥

स्वाम्यमात्यमुहत्कोशराष्ट्रदुर्ग  
बलानि च ॥ १७ ॥ राज्याङ्गानि  
महत्तमः पौराणां श्रेणयोऽपि च ॥

स्वामी (राजा) अमात्य (मन्त्री) सुहृद्  
(मित्र) कोश (खजाना) राष्ट्र (देशकी  
भूमि) दुर्ग (दुर्गमस्थान) बल (शक्ति)  
॥ १७ ॥ पुराणी और शिल्पी इन  
सबका नाम २ ॥ राज्याङ्ग १ प्रकृति २ ॥  
संधिर्ना विग्रहो याममासर्तनं देव  
माथयः ॥ १८ ॥ पदगुणाः—

सुवर्णादि देव शत्रु मित्रनेत्र नाम  
१ ॥ सन्धि १ ॥ शत्रु साय विग्रहनेत्र  
नाम १ ॥ विग्रह १ ॥ शत्रुपर चर्चा कर  
नेका नाम १ ॥ याम १ ॥ अपन स्थानपर

तैयार हो रहनेका नाम १ ॥ आसन १ ॥

शत्रुके अधिकारियोंमें झूट करानेका नाम  
१ ॥ देव १ ॥ दूसरेका आसना छेनेका  
नाम १ ॥ आसन १ ॥ १८ ॥ यका  
गुण कहलात हैं

—सक्तयस्त्रिंशं प्रभाषोत्साह  
मन्त्रयाः ॥

राजाकी शक्तियोंके नाम १ ॥ प्रभाष  
१ उत्साह २ मन्त्रज ३ ॥

क्षयं स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो  
नीतिवेदिनाम् ॥ १९ ॥

नीतिशास्त्रोक्त क्षय स्थान वृद्धि  
नाम १ ॥ त्रिवर्ग १ ॥ १९ ॥

स प्रताप प्रभावश्च यत्तेज  
कोशदण्डसम् ॥

खजाना और दंडका प्रभावक नाम  
२ ॥ प्रताप १ प्रभाव २ ॥

सामदाने भेददण्डावित्युपायव  
स्तुष्टयम् ॥ २० ॥

राजाके चारों उपायोंका नाम ४ ॥  
साम १ दान २ भेद ३ दण्ड ४ ॥ २० ॥

साहसं तु वृद्धो दण्ड—  
दण्ड देनेके नाम १ ॥ साहस १ दम

२ दण्ड ३ ॥  
—साम सान्त्व—

सत्रक करनेके नाम २ ॥ सामन् १  
सामन् २ ॥

-मथो समौ ॥ भेदोपजाप-

फरक डालनेके नाम २ ॥ भेद १

उपजाप २ ॥

-उपधा धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् २१

धर्म अर्थ काम और भयसे मन्त्री  
इत्यादिकोंकी परीक्षा करनेका नाम १

॥ उपधा १ ॥ २१ ॥

पञ्च त्रि-

भाषा-अषडक्षीण आदि निःशलाक  
पर्यन्त पाच शब्द तीनों लिङ्गोंमें होतेहैं॥

-ष्वषडक्षीणोयस्तृतीयाद्यगो-  
चरः ॥

दो जनोकीही सलाहका नाम १ ॥  
षडक्षीण १ ॥

विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाका  
स्तथा रहः ॥ २२ ॥ रहश्चोपांशु  
वालिङ्गे-

एकान्तके नाम ७ ॥ विविक्त १  
विजन २ छन्न ३ निःशलाक ४ रहस् ५  
॥ २२ ॥ रह ६ उपांशु ७ ॥

-रहस्यं तद्भवे त्रिषु ॥

एकान्तकी बात वा कामका नाम १  
॥ रहस्य १ ॥

समौ विस्रम्भविश्वासौ-

विश्वासके नाम २ ॥ विस्रम्भ १  
विश्वास २ ॥

-भ्रेषो भ्रंशो यथोचितात् ॥ २३

अन्यायका नाम १ ॥ भ्रेष १ ॥ २३ ॥

अभ्रेषन्यायकल्पास्तु देशरूपं

समञ्जसम् ॥

न्यायके नाम ५ ॥ अभ्रेष १ न्याय  
२ कल्प ३ देशरूप ४ समञ्जस ५ ॥

युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमाना-  
भिनीतवत् ॥ २४ ॥ न्याय्यं च

त्रिषु षट्-

न्यायसे जो वस्तु ली जावे उसके नाम  
६ ॥ युक्त १ औपयिक २ लभ्य ३ भज-  
मान ४ ॥ अभिनीत ५ ॥ २४ ॥ न्याय्य  
६ ॥ ये छः शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

-संप्रधारणा तु समर्थनम् ॥

यही उचित है ऐसे निश्चय करनेके  
नाम २ ॥ सम्प्रधारणा १ समर्थन २ ॥

अववादस्तु निर्देशो निदेशः  
शासनं च सः ॥ २५ ॥ शिष्टि-  
आज्ञा च-

आज्ञाके नाम ६ ॥ अववाद १ निर्देश  
२ निदेश ३ शासन ४ ॥ २५ ॥  
शिष्टि ५ आज्ञा ६ ॥

-संस्था तु मर्यादा धारणा  
स्थितिः ॥

मर्यादाके नाम ४ ॥ संस्था १  
मर्यादा, २ धारणा ३ स्थिति ४ ॥

आगोऽपराधो मन्तुश्च-

अपराधके नाम २ ॥ आगस् १ अ  
पराध २ मन्तु ३ ॥

-समे वृद्धानबन्धने ॥ २६ ॥

बन्धनके नाम २ ॥ वृद्धान ॥ बन्धन  
२ ॥ २६ ॥

द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो-

दूत दण्डका नाम १ द्विपाद्य १ ॥

-भागधेयं करो वलिं ॥

करके नाम ३ ॥ भागधेय १ कर २  
वलि ३ ॥

घटादिदेय शुल्कोऽङ्गी-

घाटीगीरस्त्रमे देन योग्य महसूलका  
नाम १ ॥ शुल्क १ ॥

-प्राप्तुं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥

मित्रादिको भेंट वा नजर देनेक नाम  
२ ॥ प्राप्तु १ प्रदेशन २ ॥ २७ ॥

उपायनमुपमाह्यमुपहारस्त्वयो

पदा ॥  
राजाको भेंट वा नजर देनेके नाम ३ ॥

उपायन १ उपमाह्य २ उपहार ३ उपदा ३ ॥

यावकादि तु मर्त्ये मुदायो

हरणं च तत् ॥ २८ ॥  
दहन वा मर्त्यपुरुषोंके देनेकी वस्तु  
क नाम १ मुदाय १ हरण २ ॥ २८ ॥

तत्पातस्तु तद्वात्वं स्या-

वर्तमानसमयके नाम २ ॥ तत्पात

१ तदात्वं २

-दुस्तरं काल आयति ॥

आनेवाले समयका नाम १ आयति १ ॥

सांख्यिकं फल सद्य-

तुरन्तके फलका नाम १ ॥ सांख्यिक १ ॥

-उर्दकं फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥

आगेके होनेवालेका नाम १ ॥ उर्दक

१ ॥ २९ ॥

अष्टष्ट, वक्रितोयादि-

भाग खगन और अतिदृष्टि होने वा

दि उत्पातका नाम १ ॥ अष्टष्ट १ ॥

-दृष्टं स्वपरचक्रवम् ॥

अपने या पराये राज्यसे चौतरिके

मयका नाम १ ॥ दृष्ट १ ॥

महीमुजामहिमयं स्वपक्षमयं

मयम् ॥ ३० ॥

अपने सहायकसे मयका नाम १ ॥

अहिमय १ ॥ ३० ॥

प्रक्रिया स्वधिकारः स्या-

कानून चलानेके नाम २ ॥ प्रक्रिया

१ अधिकार २ ॥

-धामर तु प्रकीर्णकम् ॥

धैर्यक नाम २ ॥ धामर १ प्रकीर्णक २ ॥

नृपासनं यत्तद्गदासन-

मणि आदिसे बनी हुई राजगद्दीक मान  
२ ॥ नृपासन १ मद्रासन २ ॥

—सिंहासनं तु तत् ॥ ३१ ॥

हैमं—

कदाचित् वही राजाके बैठनेका  
स्थान सोनेसे बनाहो तो उसका नाम  
१ ॥ सिंहासन १ ॥ ३१ ॥

—छत्रं त्वातपत्रं—

छतुरीके नाम २ ॥ छत्र १ आतपत्र २ ॥

—राज्ञस्तु नृपलक्ष्म तत् ॥

राजाके छत्रका नाम १ ॥ नृपलक्ष्मन् १ ॥

भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो—

मरेघडेके नाम २ ॥ भद्रकुम्भ १ पूर्ण-  
कुम्भ २ ॥

भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२ ॥

झारी या गडुवेके नाम २ ॥ भृङ्गार १  
कनकालुका २ ॥ ३२ ॥

निवेशः शिविरं षण्ढे—

डोराके नाम २ ॥ निवेश १ शिविर २ ॥

सज्जनं तूपरक्षणम् ॥

पहरेके नाम २ ॥ सज्जन १ उपरक्षण २ ॥

हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्या-  
च्चतुष्टयम् ॥ ३३ ॥

हाथी घोडा रथ सिपाही इन सबका  
नाम १ ॥ सेनाङ्ग १ ॥ ३३ ॥

दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विदोऽ-  
नेकपो द्विपः ॥ मतङ्गजो गजो  
नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३४ ॥  
इभः स्तम्बेरमः पद्मी—

हाथीके नाम १ ॥ दन्तिन् १ दन्ता-  
वल २ हस्तिन् ३ द्विद ४ अनेकप ५  
द्विप ६ मतगज ७ गज ८ नाग ९ कुञ्जर १०  
वारण ११ करिन् १२ ॥ ३४ ॥ इभ १३  
स्तम्बेरम १४ ॥ पद्मिन् १५ ॥

—यूथनाथस्तु यूथपः ॥

हाथियोंके सिरदार हाथीके नाम २ ॥

यूथनाथ १ यूथप २ ॥

मदोत्कटो मदकलः—

मदान्व हाथीके नाम २ ॥ मदोत्कट  
१ मदकल २ ॥

—कलभः करिशावकः ॥ ३५ ॥

हाथीके बच्चोंके नाम २ ॥ कलभ १  
करिशावक २ ॥ ३५ ॥

प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः—

जिसके मद बहता हो उसके नाम  
३ ॥ प्रभिन्न १ गर्जित २ मत्त ३ ॥

—समाबुद्धान्तनिर्मदौ ॥

बे मदवालेके नाम २ ॥ उद्धान्त १  
निर्मद २ ॥

हास्तिकं गजता वृन्दे—

हाथियोंके समूहके नाम २ ॥ हास्ति-  
क १ गजता २ ॥

—करिणी धेनुका वशा ॥ ३६ ॥

हथिनीके नाम ३ ॥ करिणी १  
धेनुका २ वशा ३ ॥ ३६ ॥



आगोऽपराधो मन्तुश्च-  
 अपराधकं नाम ३ ॥ आगस् १ अ  
 पराध २ मन्तु ३ ॥  
 -समे तृहानबन्धने ॥ २६ ॥  
 बन्धनकं नाम २ ॥ तृहान ॥ बन्धन  
 २ ॥ २६ ॥  
 द्विषाघो द्विगुणो दण्डो-  
 दूने दण्डका नाम १ द्विषाघ १ ॥  
 -भागधेयं करो वलिं ॥  
 करके नाम ३ ॥ भागधेय १ कर २  
 वलि ३ ॥  
 घट्टादिदेय शुल्कोऽञ्जरी-  
 घाटीबगेरुहम देन योग्य महसूलका  
 नाम १ ॥ शुल्क १ ॥  
 -ग्रामतु प्रदेक्षनम् ॥ २७ ॥  
 मित्रादिको भट्ट वा नजर देनेके नाम  
 २ ॥ ग्रामत १ प्रदेक्षन २ ॥ २७ ॥  
 उपायनमुपमाप्रमुपहारस्तयो  
 पवा ॥  
 राजाको भेट वा नजर देनेके नाम ३ ॥  
 उपायन १ उपमाप्र २ उपहार ३ उपदा ३ ॥  
 यासकादि ॥ यदेयं सुदायो  
 हरणं च तसु ॥ २८ ॥  
 दहज वा भाईबन्धुओंके देनेकी वस्तु  
 के नाम २ सुदाय १ हरण २ ॥ २८ ॥  
 तत्कारुस्तु तदास्थ स्या-

वर्तमानसमयके नाम २ ॥ तत्कारु  
 १ तदास्थ २  
 -दुत्तरं काल आयति ॥  
 आननाल समयका नाम १ आयति ॥  
 सांघटिकं फल सद्य-  
 तुरन्तके फलका नाम १ ॥ सांघटिक १ ॥  
 -उदर्कं फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥  
 आगके होमेशांके नाम १ ॥ उदर्क  
 १ ॥ २९ ॥  
 अष्ट, बद्धितोयादि-  
 आग लगाने और अतिदृष्टिने आ  
 दि उत्पातका नाम १ ॥ अष्ट १ ॥  
 -दृष्ट स्वपरचक्रजम् ॥  
 अपन या पराय राज्यसे चौकदिके  
 मयका नाम १ ॥ दृष्ट १ ॥  
 महीमुखामहिमयं स्वपसप्रम  
 मयम् ॥ ३० ॥  
 अपने सहायकसे मयका नाम १ ॥  
 अहिमय १ ॥ ३० ॥  
 प्रक्रिया त्वधिकारं स्या-  
 कानून चलानेके नाम २ ॥ प्रक्रिया  
 १ अधिकार २ ॥  
 -धामर तु प्रकीर्णकम् ॥  
 चक्रके नाम २ ॥ धामर १ प्रकीर्णक २ ॥  
 नृपासनं यत्तद्द्रासन-  
 मणि आदिके बनी हुई राजगद्दीके नाम  
 २ ॥ नृपासन १ द्रासन २ ॥

—स्थं शृङ्खले ॥ अन्दुको  
निगडोऽस्त्री स्या—

हाथीकी जजीरके नाम ३ ॥ शृङ्खल  
१ अन्दुक २ निगड ३ ॥

—दंकुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ४१

अकुशके नाम २ ॥ अकुश १  
सृणि २ ॥ ४१ ॥

दूष्या कक्ष्या वरत्रा च—

हाथीकी कमर बाधनेकी रस्तीके  
नाम ३ ॥ दूष्या १ कक्ष्या २ वरत्रा ३ ॥

—कल्पना सज्जना समे ॥

मालिकके चढनेके वास्ते हाथीको  
तैयारकरनेके नाम २ ॥ कल्पना १  
सज्जना २ ॥

प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः  
कुथो द्वयोः ॥ ४२ ॥

गद्दी वा झूलके नाम ५ ॥ प्रवेणी  
१ आस्तरण २ वर्ण ३ परिस्तोम ४  
कुथ ५ ॥ ४२ ॥

वीतं त्वर्सारं हस्त्यश्वं—

हाथी घोडेका नाम १ ॥ वीत १ ॥

—वारी तु गजबन्धनी ॥

जिस भूमिमें हाथी बाधेजायँ उस-  
का नाम १ ॥ वारी १ ॥

घोटेके वीतितुरगतुरङ्गाश्वतुर  
ङ्गमाः ॥ ४३ ॥ वाजिवाहार्वा

गन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः ॥

घोडेके नाम १३ ॥ वोटक १  
वीति २ तुरग ३ तुरङ्ग ४ अश्व ५  
तुरङ्गम ६ ॥ ४३ ॥ वाजिन् ७ वाह  
८ अर्बन् ९ गन्धर्व १० हय ११  
सैन्धव १२ सप्ति १३ ॥

आजानेयाः कुलीनाः स्यु—

कुलीन घोडेका नाम १ ॥ आजानेय १ ॥

—र्विनीताः साधुवाहिनः ॥ ४४ ॥

सांखेडुये घोडेका नाम १ ॥  
विनीत १ ॥ ४४ ॥

वनायुजाः पारसीकाः काम्बो-  
जा बाह्लिका हयाः ॥

वनायु देशमें पैदाहुए घोडेका  
नाम १ ॥ वनायुज १ ॥

पारसदेशोत्पन्न घोडेका नाम १ ॥  
पारसीक १ ॥

काबुली घोडेका नाम १ ॥ बाह्लिक १ ॥

ययुरश्वोऽश्वमेधीयो—

अश्वमेधके श्यामकर्णवाले घोडेका  
नाम १ ॥ ययु १ ॥

—जवनस्तु जवाधिकः ॥ ४५ ॥

जल्दी चलनेवाले घोडेका नाम  
१ ॥ जवन १ ॥ ४५ ॥

पृष्ठचः स्थौरी—

लदनेवाले घोडेके नाम २ ॥ पृष्ठ १  
स्थौरी

गण्डः कर्णे-

हाथीके गालके नाम २ ॥ गण्ड १

कट १ ॥

-मदो दानं-

हाथीके मूत्रके नाम २ ॥ मद १

दान २ ॥

-वमयु कर्शकः ॥

हाथीकी सूँवसे पानी निकलनेके

नाम २ ॥ वमयु १ कर्शक २ ॥

कुम्भौ तु पिण्डौ शिरस-

हाथीके मस्तकके मोलके नाम १ ॥

कुम्भ १ ॥

-स्तयोमध्ये विदुः पुमान् ॥ ३७ ॥

दोनों कुम्भोंके मध्यमें जो खाली रहता

है उसका नाम १ ॥ विदु १ ॥ ३७ ॥

अवमहो छलाट स्या-

हाथीके छिछारका नाम १ ॥ अवमह १

-द्विषिका त्वक्षिकूटकम् ॥

उसके नेत्रोंकी गोलाईके नाम २ ॥

द्विषिका १ त्वक्षिकूटक २ ॥

अपांगदेशो निर्माण-

उसके निहारनेका नाम १ ॥ निर्माण १ ॥

-कणमूर्लं तु घृष्टिका ॥ ३८ ॥

हाथीके जहाँ से कान जमते हैं उस

जगहका नाम १ ॥ घृष्टिका १ ॥ ३८ ॥

अथ कुम्भस्य बाहिर्य-

हाथीके छिछारके नीचेका नाम १ ॥

बाहिर्य १ ॥

प्रतिमानमघोऽस्य यत् ॥

बाहिर्यके नीचेका नाम १ ॥ प्रति

मान १ ॥

आसन स्कन्धदेशः स्या-

हाथीके कन्धेका नाम १ ॥ आसन १ ॥

-त्वक्मर्कं बिन्दुजालकम् ॥ ३९ ॥

हाथीके बिन्दुओंका नाम १ ॥ त्वक्

१ ॥ ३९ ॥

पार्श्वभाग पक्षभागो-

हाथीकी बगलके नाम २ ॥ पार्श्वभाग

१ पक्षभाग २ ॥

-दन्तभागस्तु मोऽग्रतः ॥

हाथीके आगेके भागका नाम १ ॥

दन्तभाग १ ॥

द्वी पूर्वपश्चाज्जघान्तिदेशौ गात्रा

द्वे क्रमात् ॥ ४० ॥

हाथीके आगेके पंघादि भागका

नाम १ ॥ गात्र १ ॥ हाथीके पीछेके

भागका नाम १ ॥ अग्र १ ॥ ४० ॥

तोत्रं वैष्णुक-

वायुककी डहीके नाम २ ॥ तोत्र

१ वैष्णुक २ ॥

-माखानं बन्धस्तम्भे-

हाथीके झूँके नाम १ ॥ माखान १ ॥

|                      |   |
|----------------------|---|
| न सम-                | रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बा-<br>लादिभिरावृते ॥ ५४ ॥ |
| ॥ पुष्परथ            | कम्बलके परदेवाले रथका नाम १<br>॥ काम्बल १ ॥ ५४ ॥      |
| न च समं              | त्रिषु द्वैपादयो-                                     |
| ३॥ कर्णरथ            | भाषा—द्वैप आदि शब्द तीनों लिंगो<br>मे होते हैं ॥      |
| पी स्या-             | -रथ्या रथकव्या रथव्रजे ॥                              |
| प्र१ शकट २ ॥         | रथके समूहके नाम २ ॥ रथ्या १<br>रथकव्या २ ॥            |
| कम् ॥ ५२ ॥           | धूःस्त्री क्लीबे यानमुखं-                             |
| गन्त्री १ (गान्त्री) | -धूरीके नाम २॥ वुर१ यानमुख२॥                          |
| ययानं स्या-          | स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥                            |
| २ ॥ शिविका १         | तागेके नाम २॥ रथाग१ अपस्कर<br>२ ॥ ५५ ॥                |
| दिका स्त्रियाम् ॥    | चक्रं रथाङ्गं-  |
| के नाम २ ॥ दोली      | पहियेके नाम २ ॥ चक्र१ रथाङ्ग२॥                        |
| याघ्रौ द्वीपिचर्मा-  | -तस्यान्ते नेमिः स्त्रीस्यात्प्रधिः<br>पुमान् ॥       |
| ॥                    | रथकी नेमिके नाम २॥ नेमि१ प्रधि२॥                      |
| मडेका परदा हो उसके   | पिण्डिका नाभि-  |
| याघ्र २ ॥ ५३ ॥       | पुष्टीके नाम २॥ पिण्डिका१ नाभि२॥                      |
| संवीतः स्यन्दनः      | -रक्षाग्रकीलके तु द्वयोरणिः<br>॥ ५६ ॥                 |
| ॥                    | कुलावेका नाम १ ॥ अणि १ ॥ ५६ ॥                         |
| परदेके रथका नाम १ ॥  | रथगुप्तिर्वरूथो ना-                                   |
| ॥                    |   |

—सितं कर्को—

उबले घोडेका नाम १ ॥ कर्क १ ॥

—रथ्यो वोढा रथस्य यं ॥

रथके घोडेका नाम १ ॥ रथ १ ॥

बालं किशोरो—

घोडेके बच्चेका नाम १ ॥ किशोर १ ॥

—वास्यश्वा वडवा—

घोडीके नाम १ ॥ यामी १

अश्वा २ वडवा ३ ॥

—वाडव गणं ॥ ४६ ॥

घोडीके समूहका नाम १ वाडव १ ॥ ४६ ॥

त्रिष्वाश्वीन यदश्वेन दिनेनैकेन  
गम्यते ॥

घोडेके एक दिन चलने योग्य

मार्गका नाम १ ॥ आश्वीन १ ॥

कस्य तु मध्यमश्वानां—

घोडेके मध्यमागका नाम १ ॥ कस्य १ ॥

—हेपा हेपा च निःस्वनं ॥ ४७ ॥

घोडेके शब्दका नाम २ ॥ हेपा १

हेपा २ ॥ ४७ ॥

निगालस्तु गलोद्देशे—

घोडेके गलेका नाम १ ॥ निगाल १ ॥

—वृन्दे त्वन्धीयमाश्वसत् ॥

घोडोंके समूहका नाम २ ॥

अश्वीय १ भाष्य २ ॥

आस्कन्दित घोरितकं रोचितं

वल्गितं प्लुतम् ॥ ४८ ॥ गतपोऽ

शूः पञ्च धारा—

घोडेके पाँच प्रकारकी चालोंके

नाम ५ ॥ आस्कन्दित १ घोरितक २

रोचित ३ वल्गित ४ प्लुत ५ ॥ ४८ ॥

—घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् ॥

घोडेकी नाकका नाम १ ॥ प्रोथ १ ॥

कविका तु खलीनोऽस्त्री—

घोडेकी छागमके नाम २ ॥ कविका

१ खलीन २ ॥

—शफं ह्रीषे स्तुरः पुमान् ॥ ४९ ॥

घोडेके स्तुरके नाम ३ ॥ शफ १

स्तुर २ ( स्तुर ) ३ ॥ ४९ ॥

पुच्छाऽस्त्री लूमलांगूले—

पूँछके नाम ३ ॥ पुच्छ १ छप २ लांगूल ३ ॥

—वालहस्त्वच्च बालाधि ॥

वालहस्त्वच्च पूँछके नाम २ ॥ बाल

हस्त १ बालधि २ ॥

त्रिपूपावृत्तछटिती परावृत्ते

मुमुवि ॥ ५० ॥

पृथ्वीमे लोटमः नाम २ ॥ उपा

वृत्त १ छटित २ ॥ ५० ॥

यान चञ्चिणि युद्धार्थं शतान् ७

स्पन्दनो रथः ॥

मुद्धरे रथके नाम ३ ॥ शतान १

स्पन्दन २ रथ ३ ॥

वसौ पुष्परथश्चक्रयानं न सम-  
राय यत् ॥ ५१ -

सामान्य रथका नाम १ ॥ पुष्परथ  
१ ॥ ५१ ॥

कर्णरथः प्रवहणं डयनं च समं  
त्रयम् ॥

छिर्योकी गाडीके नाम ३ ॥ कर्णरथ  
१ प्रवहण २ डयन ३ ॥

ह्रीवेऽनः शकटोऽस्त्री स्या-  
लकडेके नाम २ अनस् १ शकट २ ॥  
-गन्त्री कम्बलिवाह्यकेम् ॥ ५२ ॥

गाडीके नाम २ ॥ गन्त्री १ (गान्त्री)  
२ ॥ ५२ ॥

शिविका याप्ययानं स्या-  
पालकीके नाम २ ॥ शिविका १  
याप्ययान २ ॥

-दोला प्रेखादिका स्त्रियाम् ॥  
दोली वा हिढोलेके नाम २ ॥ दोली  
१ प्रेखा २ ॥

उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्वीपिचर्मा-  
वृते रथे ॥ ५३ ॥

जिसमे बघेरके चमडेका परदा हो उसके  
नाम २ ॥ द्वैप १ वैयाघ्र २ ॥ ५३ ॥

पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः  
पाण्डुकम्बली ॥

पीले रगवाले परदेके रथका नाम १ ॥  
पाण्डुकम्बली १ ॥

रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बा-  
लादिभिरावृते ॥ ५४ ॥

कम्बलके परदेवाले रथका नाम १  
॥ काम्बल १ ॥ ५४ ॥

त्रिषु द्वैपादयो-  
भाषा-द्वैप आदि शब्द तीनों लिंगों  
मे होते है ॥

-रथ्या रथकव्या रथव्रजे ॥  
रथके समूहके नाम २ ॥ रथ्या १  
रथकव्या २ ॥

धूःस्त्री ह्रीवे यानमुखं-  
धूरीके नाम २ ॥ धुर १ यानमुख २ ॥  
स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥  
तागेके नाम २ ॥ रथांग १ अपस्कर  
२ ॥ ५५ ॥

चक्रं रथाङ्गं-  
पहियेके नाम २ ॥ चक्र १ रथाङ्ग २ ॥  
-तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः  
उमान् ॥

रथकी नेमिके नाम २ ॥ नेमि १ प्रधि २ ॥  
पिण्डिका नाभि-

पुष्टीके नाम २ ॥ पिण्डिका १ नाभि २ ॥  
-रक्षाग्रकीलके तु द्वयोरणिः  
॥ ५६ ॥

कुलावेका नाम १ ॥ अणि १ ॥ ५६ ॥  
रथगुप्तिर्वरूथो ना-

छोहे जड़ेहुये रयके आबरणके नाम २॥

रयगुप्ति १ वरुण २ ॥

कूषरस्तु युगंधरः ॥

काठके छुरके बांधनेके स्थानके नाम

१ ॥ कूषर १ युगंधर २ ॥

अनुकर्षो दार्वधःस्त-

सुगनके नाम १ ॥ अनुकर्ष १ ॥

-प्रासङ्गो ना युगाद्युग ॥५७॥

छुरक नाम २ ॥ प्रासङ्ग १ युग २ ॥५७॥

सर्व स्पाटाहर्न यान युग्यं पत्र  
च घोरणम् ॥

सहारीके नाम १ ॥ बाहन १ यान

२ युग्य ३ पत्र ४ घोरण ५

परम्परावाहन यच्चद्वेनीतकम्  
स्त्रियाम् ॥ ५८ ॥

वहार आदि पाहनोका नाम १ ॥

द्वेनीतक १ ॥ ५८ ॥

आघोरणा हस्तिपका हस्त्या  
रोहा निपादिन ॥

हाथीधानूफ नाम ४ ॥ आघोरण १  
हस्तिपक २ हस्त्यारोह ३ निपादिन ४ ॥

नियता प्राजिता मन्वा सूत सप्ता  
च सारथि ॥ ५९ ॥ मध्येष्टद

क्षिणस्थ्या च मक्षारयकुम्भिन ॥

रथारिष हाकनवालेके नाम ८ ॥ पारथर २ ॥

निपन्त १ प्राजित ४ यन्त ३ सूत ४

क्षत ५ सारथि ६ ॥ ५९ ॥ मध्येष्ट ७

दक्षिणस्थ ८ ॥

रथिन\* स्पन्दनारोहा-

रयके ऊपर चढ़के छडनेवालोंके नाम

२ ॥ रथिन १ स्पन्दनारोह २

-अम्भारोहास्तु सादिन ॥६०॥

पुष्टशरक नाम २ ॥ अम्भारोह १

सादिन् २ ॥ ६० ॥

भय योधाश्च योद्धार -

छडनवालेके नाम १ ॥ मट १

योध २ योद्ध ३ ॥

-सेनारक्षास्तु सेनिका ॥

पहरा देनेवालेके नाम २ ॥ सेनारक्ष १

सेनिक २ ॥

सेनायां समवेता ये सेन्यास्ते

सेनिकाश्च ते ॥ ६१ ॥

सम्पूर्ण सेनाके नाम २ ॥ सेन्य १

सेनिक २ ॥ ६१ ॥

वलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते

सहस्रिण\* ॥

हजार सिपाहियोंके माछि-स्के नाम २ ॥

साहस्र १ सहस्रिन् २ ॥

परिधिस्थ\* परिचरः-

जो फौज रक्षानके अर्थ चारोंतरफ

घूमनाहे उसका नाम २ ॥ परिधिस्थ १

—सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२ ॥

सेनाके मालिकके नाम २ ॥

सेनानी १ वाहिनीपति २ ॥ ६२ ॥

कञ्चुको वारबाणोऽस्त्री—

योद्धाओंको युद्धके समय पहरनेके  
घस्त्रके नाम २ ॥ कञ्चुक १ वारबाण २ ॥

यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः ॥

बध्नांति तत्सारसनमधिकाङ्गो—

इसे पहन कर जो योद्धा पट्टी  
बाधते हैं उसके नाम २ ॥ सारसन  
१ अधिकाङ्ग २ ॥

—ऽथ शीर्षकम् ॥ ६३ ॥ शीर्ष-  
ण्यं च शिरस्त्रे—

टोपके नाम ३ ॥ शीर्षक १  
॥ ६३ ॥ शीर्षण्य २ शिरस्त्र ३ ॥

—ऽथ तनुत्र वर्म दंशनम् ॥ उर-  
श्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽ-  
स्त्रियाम् ॥ ६४ ॥

कवचके नाम ७ ॥ तनुत्र १ वर्मन्  
२ दशन ३ उरश्छद ४ कङ्कटक ५  
जगर ६ कवच ७ ॥ ६४ ॥

आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चा-  
पिनद्धवत् ॥

पहिरेहुए कवचके नाम ४ ॥ आमुक्त  
१ प्रतिमुक्त २ पिनद्ध ३ अपिनद्ध ४ ॥

संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो  
व्यूढकङ्कटः ॥ ६५ ॥

मत्रादि कवच धारण किये हुएके

नाम ५ ॥ सनद्ध १ वर्मित २ सज्ज ३

दशित ४ व्यूढककट ५ ॥ ६५ ॥

त्रिष्वामुक्तादयो—

भाषा ॥ आमुक्त आदि शब्द-  
तीनों लिंगोंमें होतेहैं ॥

—वर्मभृतां कावचिकं गणे ॥

कवच धारण करनेवालोंके समू-  
हका नाम १ ॥ कावचिक १ ॥

पदातिपत्तिपदगपादातिकपदा-

जयः ॥ ६६ ॥ पद्मश्च पदिकश्चा—

पैदलके नाम ७ ॥ पदाति १  
पत्ति २ पदग ३ पादातिक ४ पदाजि  
५ ॥ ६६ ॥ पद्म ३ पदिक ७ ॥

—ऽथ पादातं पत्तिसंहतिः ॥

पैदलसमूहके नाम २ ॥ पादात १  
पत्तिसंहति २ ॥

शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायाधुधिया  
युधिकाः समाः ॥ ६७ ॥

जो हथियार बांधकर जीविका करते  
हैं उनके नाम ४ ॥ शस्त्राजीव १ काण्ड-  
पृष्ठ २ आयुधिय ३ आयुधिक ४ ॥ ६७ ॥

कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः  
कृतपुंखवत् ॥

तीरन्दाजके नाम ३ ॥ कृतहस्त १  
सुप्रयोगविशिख २ कृतपुख ३ ॥



|  |                                     |
|--|-------------------------------------|
| लोहे जड़ इत्ये रथक आवरणके नाम २ ॥      | निष्पत् १ प्राजित् ४ यन्त् १ सूत् ४ |
| रथगुप्ति १ वरुथ २ ॥                    | क्षत् ९ सारथि १ ॥ १९ ॥ सम्य ७       |
| कूचरस्तु युगंधर ॥                      | दक्षिणस्थ ८ ॥                       |
| काठके शृण्के बाधनके स्थानके नाम        | रथिन* स्पन्दनारोहा-                 |
| १ ॥ कूचर १ युगंधर २ ॥                  | रथक ऊपर चढ़के छड़नेवालोंके नाम      |
| अनुकर्षो दार्वघःस्थो-                  | १ ॥ रथिन १ स्पन्दनारोह २            |
| सुगनके नाम १ ॥ अनुकर्ष १ ॥             | -अभ्यारोहास्तु सादिन* ॥ ६० ॥        |
| -प्रासङ्गो ना युगाद्युग* ॥ ५७ ॥        | युगसवारक नाम २ ॥ अभ्यारोह १         |
| शृण्के नाम २ ॥ प्रासङ्ग १ युग २ ॥ ५७ ॥ | सादिन् २ ॥ ६० ॥                     |
| सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्मं पत्र     | भट्ट योधाश्च योद्धार -              |
| च घोरणम् ॥                             | छड़नेवालोंके नाम १ ॥ भट्ट १         |
| सवारीके नाम १ ॥ वाहन १ यान             | योध २ योद्ध १ ॥                     |
| २ युग्म ३ पत्र ४ घोरण ५                | -सेनागृहास्तु सैनिका* ॥             |
| परम्परावाहनं यच्छैनीतकम्               | पहरा देनेवालोंके नाम २ ॥ सेनागृह १  |
| स्त्रियाम् ॥ ५८ ॥                      | सैनिक २ ॥                           |
| कहार आदि वाहनोंका नाम १ ॥              | सेनार्या समवेता ये सैन्यास्ते       |
| केनितिक १ ॥ ५८ ॥                       | सैनिकाश्च ये ॥ ५९ ॥                 |
| आघोरणा हस्तिपक्षा हस्त्या              | सम्पूर्ण सेनाके नाम २ ॥ सैन्य १     |
| रोहा निपादिनः ॥                        | सैनिक २ ॥ ६१ ॥                      |
| हाथीबान्के नाम ४ ॥ आघोरण १             | बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते        |
| हस्तिपक्ष २ हस्त्यारोह ३ निपादिन् ४ ॥  | सहस्रिणः ॥                          |
| नियंता प्राजिता यन्त्रा सूत* क्षत्ता   | हजार सिपाहियोंके माछिके नाम १ ॥     |
| च सारथि* ॥ ५९ ॥ सम्येष्टद              | साहस्र १ सहस्रिन् २ ॥               |
| क्षिणस्थो च सङ्गारथकुटुम्बिन* ॥        | परिधिस्थ* परिधरः-                   |
| रथान्धि होंकरनालोंके नाम ८ ॥           | जो फौज रक्षामेके कार्य चारोंतरफ     |
|  | घूमताहे उसरुनाम १ ॥ परिधिस्थ १      |
|  | परिधर २ ॥                           |

वेगसे चलनेवालेके नाम ६ ॥ तरस्विन्  
१ त्वरित २ वेगिन् ३ प्रजविन् ४ जवन ५  
जव ६ ॥ ७३ ॥

जय्यो यः शक्यते जेतुं-

जिसे जीतसके उसका नाम १ ॥

जय्य १ ॥

-जैयो जेतव्यमात्रके ॥

जीतने लायकका नाम १ ॥ जेय १

जैत्रस्तु जेता-

जो जीतसके उसके नाम २ ॥ जैत्र १

जेतु २ ॥

-यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति  
॥ ७४ ॥ सोऽभ्यमित्र्योऽभ्यमि-  
त्रीयोऽप्यभ्यमित्रिण इत्यपि ॥

सामर्थ्यसे शत्रुओंके समुख जानेवाले  
के नाम ३ ॥ ७४ ॥ अभ्यमित्र्य १ अभ्य-  
मित्रिय २ अभ्यमित्रिण ३ ॥

ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जा-  
तिशयान्वितः ॥ ७५ ॥

पहलवानके नाम ३ ॥ ऊर्जस्वल १  
ऊर्जस्विन् २ ऊर्जातिशय ३ ॥ ७५ ॥

स्यादुरस्वानुरसिलो-

बढ़ी छातीवालेके नाम २ ॥ उरस्वत् १  
उरसिल २ ॥

-रथिनो रथिको रथी ॥

रथके स्वामीके नाम ३ ॥ रथिन १

थिक ३ रथिन् ३ ॥

कामङ्गाम्यनुकामीनो-

जो अपने मनसे चलता हो उसका

नाम १ ॥ अनुकामीन १ ॥

-ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७६ ॥

वारम्बार चलनेवालेका नाम १ ॥

अत्यन्तीन १ ॥ ७६ ॥

शूरो वीरश्च विक्रान्तो-

शूरके नाम ३ ॥ शूर १ वीर २

विक्रान्त ३ ॥

-जेता जिष्णुश्च जित्वरः ॥

जीतने वालेके नाम ३ ॥ जेतु १ जिष्णु

जित्वर ३ ॥

सांयुगीनो रणे साधु-

युद्धकुशलका नाम १ ॥ सांयुगीन १ ॥

--शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥ ७७ ॥

भाषा-शस्त्राजीव आदि शब्द तीनों  
लिंगों में होते हैं ॥ ७७ ॥

ध्वजिनी बाहिनी सेना पृतनाऽ  
नीकिनी चमूः ॥ वरूथिनी बलं  
सैन्यं चक्रं चानीकमस्त्रियाम् ॥ ७८ ॥

सेनाके नाम १ १ ॥ ध्वजिनी १ बाहि-  
नी २ सेना ३ पृतना ४ अनीकिनी ५  
चमू ६ वरूथिनी ७ बल ८ सैन्य ९ चक्र  
१० अनीक ११ ॥ ७८ ॥

व्यूहस्तु बलविन्यासो-

अपराद्धपृषत्कोऽसौ लक्ष्मण  
श्च्युतसायकः ॥ ६८ ॥

जिसका तीर निशानेस चूक जाय  
उसका नाम ॥ अपराद्धपृषत्कः ॥ ६८ ॥

धन्वी धनुष्मान्घानुष्को निप  
अध्वसी धनुर्धरः ॥

धनु वा बाण बांधनेवालेके नाम  
६ ॥ धन्विन् १ धनुष्मत् २ घानुष्क  
निपेगिन् ४ अध्विन् ५ धनुर्धर ६ ॥

स्मात्काण्डवांसु काण्डीर-  
कबल बाण बांधनेवालेके नाम २ ॥

काण्डवत् १ काण्डीर २ ॥  
-शास्त्रीकः शक्तिहेतिकाः ॥ ६९ ॥

शक्ति आदिके शस्त्रधारीके नाम २ ॥  
शास्त्रीक १ शक्तिहेतिक २ ॥ ६९ ॥

याष्टीकपारम्भधिकौ यष्टिपार्श्व  
धेहेतिकौ ॥

कठिया रखनेवालाका नाम १ ॥  
याष्टीक १ ॥ फरसा बांधनेवालेका

नाम १ ॥ पारम्भधिक १ ॥  
नैर्ऋसिफोऽसिहेतिः स्या-

तरवार बांधेहुएके नाम २ ॥ नैर्ऋ  
शिक १ अस्तिहेति २ ॥

-रसमौ प्रामिक्तकौन्तिको ७० ॥  
बटुमके बांधनेवालेका नाम १ ॥

प्रासिक १ ॥ माळेवालेका नाम १ ॥  
कौन्तिक १ ॥ ७० ॥

चर्मौ फलकपाणिः स्या-

ढाल बांधनेवालेके नाम २ ॥ चर्मि  
१ फलकपाणि २ ॥

-त्पताकिं वैजयन्तिकः ॥  
निशान बांधनेवालेके नाम २ ॥

पताकिन् १ वैजयन्तिक २ ॥  
अनुपुवः सहायभाऽनुचरोऽ-

भिचरः समाः ॥ ७१ ॥  
सहायकक नाम ४ ॥ अनुपुव १

सहाय २ अनुचर ३ अभिचर ४ ॥ ७१ ॥  
पुरोगामेतरप्रष्ठामत्तः सरपुर-

सराः ॥ पुरोगमः पुरोगामी-

अग्रगामीके नाम ७ ॥ पुरोग १  
अपेसर २ प्रष्ठ ३ अग्रतस्तर २

पुरतस्तर ५ पुरोगम ६ पुरोगामिन् ७ ॥  
-मन्दगामी तु मन्यरः ॥ ७२ ॥

धीरे चबनेवालेके नाम २ ॥  
मन्दगामिन् १ मन्यर २ ॥ ७२ ॥

जंघाळोऽतिजवस्तुल्यौ-  
जादे चबनेवालेके नाम २ ॥

जंघाळ १ अतिजव २ ॥  
जघाकारिकजांघिकौ ॥

जो जघाके बहसे जता हे उसके  
नाम २ ॥ जघाकारिक १ जांघिक २ ॥

तरस्वी त्वरितो बेगी प्रजयी  
जघनो जघः ॥ ७३ ॥

वेगसे चलनेवालेके नाम ६ ॥ तरस्विन्  
१ त्वरित २ वेगिन् ३ प्रजविन् ४ जवन ५  
जव ६ ॥ ७३ ॥

जय्यो यः शक्यते जेतुं-  
जिसे जीतसके उसका नाम १ ॥  
जय्य १ ॥

-जैयो जेतव्यमात्रके ॥

जीतने लायकका नाम १ ॥ जैय १

जैत्रस्तु जेता-

जो जीतसके उसके नाम २ ॥ जैत्र १  
जेतु २ ॥

-यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति  
॥ ७४ ॥ सोऽभ्यमित्र्योऽभ्यमि-  
त्रीयोऽभ्यमित्रिणी इत्यपि ॥

सामर्थ्यसे शत्रुओंके समुख जानेवाले  
के नाम ३ ॥ ७४ ॥ अभ्यमित्र्य १ अभ्य-  
मित्रिणी २ अभ्यमित्रिणी ३ ॥

ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जा-  
तिशयान्वितः ॥ ७५ ॥

पहलवानके नाम ३ ॥ ऊर्जस्वल १  
ऊर्जस्विन् २ ऊर्जातिशय ३ ॥ ७५ ॥

स्यादुरस्वानुरसिलो-

बढ़ी छातीवालेके नाम २ ॥ उरस्वत् १  
उरसिल २ ॥

-रथिनो रथिको रथी ॥

रथके स्वामीके नाम ३ ॥ रथिन १  
थिक ३ रथिन् ३ ॥

कामङ्गाम्यनुकामीनो-

जो अपने मनसे चलता हो उसका

नाम १ ॥ अनुकामीन १ ॥

-ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७६ ॥

वारम्बार चलनेवालेका नाम १ ॥

अत्यन्तीन १ ॥ ७६ ॥

शूरो वीरश्च विक्रान्तो-

शूरके नाम ३ ॥ शूर १ वीर २  
विक्रान्त ३ ॥

-जेता जिष्णुश्च जित्वरः ॥

जीतने वालेके नाम ३ ॥ जेतु १ जिष्णु  
जित्वर ३ ॥

सांयुगीनो रणे साधु-

युद्धकुशलका नाम १ ॥ सांयुगीन १ ॥

--शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥ ७७ ॥

भाषा-शस्त्राजीव आदि शब्द तीनों  
लिगों में होते हैं ॥ ७७ ॥

ध्वजिनी बाहिनी सेना पृतनाऽ  
नीकिनी चमूः ॥ वरूथिनी बलं  
सैन्यं चक्रं चानीकमस्त्रियाम् ॥ ७८ ॥

सेनाके नाम १ १ ॥ ध्वजिनी १ बाहि-  
नी २ सेना ३ पृतना ४ अनीकिनी ५  
चमू ६ वरूथिनी ७ बल ८ सैन्य ९ चक्र  
१० अनीक ११ ॥ ७८ ॥

व्यूहस्तु बलविन्यासो-

अपरादपृपत्कोऽसौ लक्ष्माद्य  
श्च्युतसामक\* ॥ ६८ ॥

निसका त्ति निशानेस चूक जाय  
उसका नाम ॥ अपरादपृपत्क ॥ ६८ ॥

घन्वी घनुष्मान्घानुष्को निप  
ङ्घस्त्री घनुर्धर\* ॥

घनु वा घाण बांधनेवालेके नाम  
६ ॥ घन्किन् १ घनुष्मत २ घानुष्क  
निर्घमिन् ३ अस्मिन् ४ घनुर्धर ६ ॥

स्यात्काण्डवास्तु काण्डीर\*—  
कण्ड बाण बांधनेवालेके नाम २ ॥  
काण्डक्त् १ काण्डीर २ ॥

—शक्तीकःशक्तिहेतिका ॥ ६९ ॥  
शक्ति आदिके शस्त्रधारीके नाम २ ॥  
शक्तीक १ शक्तिहेतिका २ ॥ ६९ ॥

याष्टीकपारम्बाधिकौ यष्टिपार्श्व  
घहेतिकौ ॥

अठिया रखनेवालेका नाम १ ॥  
याष्टीक १ ॥ फरसा बांधनेवालेका  
नाम १ ॥ पारम्बाधिक १ ॥

नैस्त्रिशिकोऽसिहेति\* स्या—  
तरवार बांधेहुएके नाम २ ॥ नैस्त्रि-  
शिक १ असिहेति २ ॥

—स्समी प्रासिककौन्तिकी ७० ॥

अष्टमके बांधनेवालेका नाम १ ॥  
प्रासिक १ ॥ माछेवालेका नाम १ ॥  
कौन्तिक १ ॥ ७० ॥

चर्मो फलकपाणि\* स्या—

ढाढ बांधनेवालेके नाम २ ॥ चर्मिन्  
१ फलकपाणि २ ॥

—त्पेतकी वैजयन्तिक\* ॥

निशान बांधनेवालेके नाम २ ॥  
पताकिन् १ वैजयन्तिक १ ॥

अनुप्रव\* सहायधाऽनुचरोऽ-  
भिचर\* समाः ॥ ७१ ॥

सहायकेके नाम ३ ॥ अनुप्रव १  
सहाय २ अनुचर ३ अभिचर ३ ॥ ७१ ॥

पुरोगामेसरप्रष्टाम्र\*सरपुर\*—  
सरा\* ॥ पुरोगमः पुरोगामी—  
अप्रगामीके नाम ७ ॥ पुरोग १

अमेसर २ प्रष्ट ३ अम्रतन्त्र २  
पुरस्सर १ पुरोगम ६ पुरोगामिन् ७ ॥

—मन्दगामी तु मन्दर\* ॥ ७२ ॥  
धीरे चढ़नेवालेके नाम १ ॥

मन्दगामिन् १ मन्दर १ ॥ ७२ ॥  
जघालोऽतिजक्स्तुस्यौ—

जादे चढ़नेवालेके नाम २ ॥  
जघाळ १ अतिजक् २ ॥

जघाकारिकजाधिकौ ॥

जो जघाके बलसे जीता है उसके  
नाम २ ॥ जघाकारिक १ जाधिक २ ॥

सरस्वी त्वरितो बेगी प्रगवी  
जघनो जव\* ॥ ७३ ॥

वेगसे चलनेवालेके नाम ६ ॥ तरस्विन्  
१ त्वरित २ वेगिन् ३ प्रजविन् ४ जवन ५  
जव ६ ॥ ७३ ॥

जय्यो यः शक्यते जेतुं-

जिसे जीतसके उसका नाम १ ॥

जय्य १ ॥

-जैयो जेतव्यमात्रके ॥

जीतने लायकका नाम १ ॥ जेय १

जैत्रस्तु जेता-

जो जीतसके उसके नाम २ ॥ जैत्र १

जेतु २ ॥

-यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति  
॥ ७४ ॥ सोऽभ्यमित्रोऽभ्यमि-  
त्रीयोप्यभ्यमित्रिण इत्यपि ॥

सामर्थ्यसे शत्रुओंके समुख जानेवाले  
के नाम ३ ॥ ७४ ॥ अभ्यमित्र्य १ अभ्य-  
मित्रिय २ अभ्यमित्रिण ३ ॥

ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जा-  
तिशयान्वितः ॥ ७५ ॥

पहलवानके नाम ३ ॥ ऊर्जस्वल १  
ऊर्जस्विन् २ ऊर्जातिशय ३ ॥ ७५ ॥

स्यादुरस्वानुरसिलो-

बड़ी छातीवालेके नाम २ ॥ उरस्वत् १  
उरसिल २ ॥

-रथिनो रथिको रथी ॥

रथके स्वामीके नाम ३ ॥ रथिन १  
थिक ३ रथिन् ३ ॥

कामङ्गाम्यनुकामीनो-

जो अपने मनसे चलता हो उसका

नाम १ ॥ अनुकामीन १ ॥

-ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७६ ॥

वारम्बार चलनेवालेका नाम १ ॥

अत्यन्तीन १ ॥ ७६ ॥

शूरो वीरश्च विक्रान्तो-

शूरके नाम ३ ॥ शूर १ वीर २  
विक्रान्त ३ ॥

-जेता जिष्णुश्च जित्वरः ॥

जीतने वालेके नाम ३ ॥ जेतु १ जिष्णु  
जित्वर ३ ॥

सांयुगीनो रणे साधु-

युद्धकुशलका नाम १ ॥ सांयुगीन १ ॥

--शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥ ७७ ॥

भापा-शस्त्राजीव आदि शब्द तीनों  
लिगों में होते हैं ॥ ७७ ॥

ध्वजिनी बाहिनी सेना पृतनाऽ

नीकिनी चमूः ॥ वरूथिनी बलं  
सैन्यं चक्रं चानीकमस्त्रियाम् ॥ ७८ ॥

सेनाके नाम १ १ ॥ ध्वजिनी १ बाहि-  
नी २ सेना ३ पृतना ४ अनीकिनी ५  
चमू ६ वरूथिनी ७ बल ८ सैन्य ९ चक्र  
१० अनीक ११ ॥ ७८ ॥

व्यूहस्तु बलविन्यासो-

सेनाकी रचनाके नाम २॥ ब्यूह १

बलविन्यास २ ॥

—भेदा दण्डादयो युधि ॥

सेनाकी रचनाके अनेकभेद १॥ दण्ड  
इत्यादि १॥ ये चक्र, समूर, कमल आदिक  
ब्यूह हैं.

प्रत्यासारो ब्यूहपार्थिवः—

ब्यूहक पीछेके नाम २॥ प्रत्यासार १  
ब्यूहपार्थिव २ ॥

सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

फौजके पीछेके नाम २ ॥ सैन्यपृष्ठ १  
प्रतिग्रह २ ॥ ७९ ॥

एकैकैकरया व्यष्ट्या पक्षि पञ्च  
पदाविका ॥

जिसमें हाथी १ रथ १ घोड़े १ पैदल  
९ हों उस सेनाका नाम १॥ पक्षि १॥

पक्ष्यक्षेत्रियुणैः सर्वैः क्रमादा

ख्या मयोत्तरम् ॥ ८० ॥ सेना

मुख गुल्मगणौ बाहिनी पृतना  
चमूः ॥ अनीकिनी—

क्रमसे सिगुने पक्षि (पैदलों)के नाम  
७ ॥ ८० ॥ (तीन पक्षि (पैदलों)का

नाम) ॥ सेनामुख १ (तीन सेनामुखका

नाम) गुल्म १॥ (तीन गुल्मका नाम)

गण १॥ (तीन गणका नाम)

बाहिनी १॥ (तीन बाहिनीका नाम)

पृतना १॥ (तीन पृतनाका नाम) चमू

१॥ (तीन चमूका नाम) अनीकिनी १॥

—दक्षानीकिन्यसौहि-

दक्ष अनीकिनीका नाम १॥ अष्टौ

दिग्णी १ ॥

अक्षौहिणी आदि सेनाका प्रमाण ।

| सेना    | पक्ष्य<br>(पक्षि) | सेना<br>मुख | गुल्म | गण  | बाहि<br>नी | पृतना | चमू  | अनीकिनी | अक्षौहिणी |
|---------|-------------------|-------------|-------|-----|------------|-------|------|---------|-----------|
| हाथी रथ | १                 | ३           | ९     | २७  | ८१         | २४३   | ७२९  | २१८७    | २१८७      |
| घोड़े   | ३                 | ९           | २७    | ८१  | २४३        | ७२९   | २१८७ | ६५६१    | ६५६१      |
| पैदल    | ५                 | १५          | ४५    | १३५ | ४०५        | १२१५  | ३६४५ | १०९३५   | १०९३५     |

—अप्यसपदि ॥ ८१ ॥ संपक्षि

श्रीश्च लक्ष्मीश्च—

संपक्षिक नाम ४॥ सपदि १॥ ८१ ॥

सपक्षि २ श्री ३ लक्ष्मी ४ ॥

—विपक्ष्या निपदापदी ॥

विपक्षिक नाम ३॥ विपक्षि १ निपदि

२ आपदि ३ ॥

आयुध ॥ महरणं अस्त्रमस्त्र-

हथियारके नाम ४ ॥ आयुध १ प्रह-  
रण २ शस्त्र ३ अस्त्र ४ ॥

—मथास्त्रियौ ॥ ८२ ॥ धनुश्चा-  
पौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् ॥  
इष्वासोऽ—

धनुषके नाम ७ ॥ ८२ ॥ धनुस्  
१ चाप २ धन्वन् ३ शरासन ४  
कोदण्ड ५ कार्मुक ६ इष्वास ७ ॥

—अथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरा-  
सनम् ॥ ८३ ॥

राजा कर्णके धनुषके नाम १ ॥  
कालपृष्ठ २ ॥ ८३ ॥

कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ  
पुनपुंसकौ ॥

अर्जुनके धनुषका नाम २ ॥ गा-  
ण्डीव १ गाण्डिव २ ॥

कोटिरस्याटनी—

धनुषके दोनों कोनोके नाम २ ॥  
कोटि १ अटनी २ ॥

—गोधातले ज्याघातवारणे ८४ ॥

चमडेके दस्तानोंके नाम २ ॥  
गोधा १ तल २ ॥ ८४ ॥

लस्तकस्तु धनुर्मध्यं—

धनुषके मध्यभागका नाम १ ॥  
लस्तक १ ॥

—मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः ॥

धनुषकी प्रत्यञ्चाके नाम ४ ॥ मौ-  
र्वी १ ज्या २ शिञ्जिनी ३ गुण ४ ॥

स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्या-  
दि स्थानपञ्चकम् ॥ ८५ ॥

धनुषधारियोंके आसनविशेषके नाम  
२ ॥ प्रत्यालीढ, १ आलीढ २ ॥ इत्यादि  
पाँच स्थान ॥ ८५ ॥

लक्षं लक्ष्य व्यं

निशानेके नाम ३ ॥ लक्ष १ लक्ष्य  
२ शरव्य ३ ॥

—शराभ्यास उपासनम् ॥

बाणछोड़नेके अभ्यासके नाम २ ॥  
शराभ्यास १ उपासन २ ॥

पृषत्कबाणविशिखा अजिह्व-  
गखगाशुगाः ॥ ८६ ॥ कलम्बमा-  
र्गणशराः पत्री रोप इषुर्द्वयोः ॥

बाणके नाम १ २ ॥ पृषत्क १ बाण  
२ विशिख ३ अजिह्व ४ खग ५ आशु-  
ग ६ ॥ ८६ ॥ कलम्ब ७ मार्गण ७  
शर ९ पत्रिन् १० रोप ११ इषु १२ ॥

प्रक्ष्वेडनास्तु नागचाः—

लोहेके तीरके नाम २ ॥ प्रक्ष्वेडन  
१ नाराच २ ॥

—पक्षो वाज—

बाणके पक्षके नाम २ ॥ पक्ष १ वाज २ ॥

—स्त्रिषूतरे ॥ ८७ ॥



सेनाकी रचनाके नाम २॥ व्यूह १  
बलन्यास २ ॥

—भेदा दण्डादयो युधि ॥

सेनाको रचनाके अनेकभेद ॥ दण्ड  
इत्यादि ॥ ये चक्र, मयूर, कमल आदिक  
व्यूह हैं.

प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः—

व्यूहक पीछेके नाम २॥ प्रत्यासार १  
व्यूहपार्ष्णि २ ॥

सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रह ॥ ७९ ॥

सैन्यके पीछेके नाम २ ॥ सैन्यपृष्ठ १  
प्रतिग्रह २ ॥ ७९ ॥

एकैकैकरया व्यङ्ग्या पत्तिः पञ्च  
पदाविका ॥

जिसमें हापी १ रथ १ घोड़े ३ कैरु  
१ हों उन सेनाका नाम १॥ पत्ति १॥

पत्त्यङ्गिखिगुणैः सर्वैः क्रमादा  
ख्या यथोत्तरम् ॥ ८० ॥ सेना  
मुखं गुल्मगणौ बाहिनी पृथना  
चम् ॥ अनीकिनी—

क्रमसे तिगुने पत्ति (पैदों) के नाम  
७ ॥ ८० ॥ (तीन पत्ति (पैदों) का  
नाम) ॥ सेनामुख १ (तीन सेनामुख का  
नाम) गुल्म १॥ (तीन गुल्म का नाम)  
गण १॥ (तीन गण का नाम)  
बाहिनी १॥ (तीन बाहिनी का नाम)  
पृथना १॥ (तीन पृथना का नाम) चम्  
१॥ (तीन चम् का नाम) अनीकिनी १॥

—दशानीकिन्यसौहि—

दश अनीकिनी का नाम १॥ असौ  
हिणी १ ॥

असौहिणी आदि सेनाका प्रमाण ।

| सेना    | पैदों<br>(पत्ति) | सेना<br>मुख | गुल | गण  | बाहि<br>नी | पृथना | चम्  | अनीकिनी | असौहिणी |
|---------|------------------|-------------|-----|-----|------------|-------|------|---------|---------|
| हापी रथ | १                | ३           | ९   | २७  | ८१         | २४३   | ७२९  | २१८७    | २१८७    |
| घोड़े   | ३                | ९           | २७  | ८१  | २४३        | ७२९   | २१८७ | ६५६१    | ६५६१    |
| कैरु    | ९                | २७          | ८१  | २४३ | ७२९        | २१८७  | ६५६१ | १९३५    | १९३५    |

—अथ संपदि ॥ ८१ ॥ सपत्तिः

श्रीश्च लक्ष्मीश्च—

सम्पत्तिः नाम ४॥ सपद १॥ ८१ ॥

सपत्ति २ श्री २ लक्ष्मी ४ ॥

—विपत्त्यां विपदापदौ ॥

विपत्तिके नाम ३ ॥ विपत्ति १ विपद्  
२ आपद् ३ ॥

आयुध तु महर्षेण शस्त्रमस्त्र—

हथियारके नाम ४ ॥ आयुध १ प्रह-  
रण २ शस्त्र ३ अस्त्र ४ ॥

—मथास्त्रियौ ॥ ८२ ॥ धनुश्चा-  
पौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् ॥  
इष्वासोऽ—

धनुषके नाम ७ ॥ ८२ ॥ धनुस्  
१ चाप २ धन्वन् ३ शरासन ४  
कोदण्ड ५ कार्मुक ६ इष्वास ७ ॥

—प्यथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरा-  
सनम् ॥ ८३ ॥

राजा कर्णके धनुषके नाम १ ॥  
कालपृष्ठ २ ॥ ८३ ॥

कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ  
पुनपुंसकौ ॥

अर्जुनके धनुषका नाम २ ॥ गा-  
ण्डीव १ गाण्डिव २ ॥

कोटिरस्याटनी—

धनुषके दोनों कोनोके नाम २ ॥  
कोटि १ अटनी २ ॥

—गोधातले ज्याघातवारणे ८४ ॥

चमडेके दस्तानोंके नाम २ ॥  
गोधा १ तल २ ॥ ८४ ॥

लस्तकस्तु धनुर्मध्यं—

धनुषके मध्यभागका नाम १ ॥  
लस्तक १ ॥

—मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः ॥

धनुषकी प्रत्यञ्चाके नाम ४ ॥ मौ-  
र्वी १ ज्या २ शिञ्जिनी ३ गुण ४ ॥

स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्या-  
दि स्थानपञ्चकम् ॥ ८५ ॥

धनुषधारियोंके आसनविशेषके नाम  
२ ॥ प्रत्यालीढ, १ आलीढ २ ॥ इत्यादि  
पाँच स्थान ॥ ८५ ॥

लक्षं लक्ष्य व्यं

निशानेके नाम ३ ॥ लक्ष १ लक्ष्य  
२ शरव्य ३ ॥

—शराभ्यास उपासनम् ॥

बाणछोडनेके अभ्यासके नाम २ ॥  
शराभ्यास १ उपासन २ ॥

पृषत्कबाणविशिखा अजिह्व-  
गखगाशुगाः ॥ ८६ ॥ कलम्बमा-  
र्गणशराः पत्री रोप इषुर्द्वयोः ॥

बाणके नाम १२ ॥ पृषत्क १ बाण  
२ विशिख ३ अजिह्व ४ खग ५ आशु-  
ग ६ ॥ ८६ ॥ कलम्ब ७ मार्गण ७  
शर ९ पत्रिन् १० रोप ११ इषु १२ ॥

प्रक्ष्वेडनास्तु नागचाः—

लोहेके तीरके नाम २ ॥ प्रक्ष्वेडन  
१ नाराच २ ॥

—पक्षो वाज—

बाणके पक्षके नाम २ ॥ पक्ष १ वाज २ ॥

—स्त्रिषूत्तरं ॥ ८७ ॥

अर्थ-छित्तनरयस सध शब्द  
तीनों छिंगमें होत है ॥ ८७ ॥

निरस्त प्रहिते वाणे-

छोटेबूँपे वाणका नाम ॥ निरस्त १ ॥

-विपाक्तं दिग्धलितकौ ॥

विषयुक्त वाणके नाम ३ ॥ विपाक्त

१ दिग्ध २ छिप्तक ३ ॥

तूणोपासस्तूणीरनियंगा इषुधिर्द

यो ॥ ८८ ॥ तूण्या-

तरकसर नाम ६ ॥ तूण १ उपासग

२ तूणीर ३ निम्मा ४ इषुधि ५ ॥

॥ ८८ ॥ तूणी ६ ॥

-खलो तु निखिगचन्द्रहासासि

गिष्टय ॥ कीक्षेयको मण्डलामः

करवाल कृपाणवत् ॥ ८९ ॥

तडवारके नाम ७ ॥ खड्ग १ निखि

ग २ चन्द्रहास ३ अक्षि ४ सिद्धि ५

कीक्षेयक ६ मण्डलाम ७ करवाल ८

कृपाण ९ ॥ ८९ ॥

तारु तडगादिमुष्टे स्या-

तारुआदिपत्रे मूठका नाम १ ॥ तारु १ ॥

-मखन्वा तन्निष यनम् ॥

तारु २ यन ३ नाम ४ ॥ मखन्वा १ ॥

पल्लोर्जरी पल यम-

पल्ल १ नाम २ ॥ पल्ल १ पल्ल

२ यम ३ ॥

-संमाहा गुह्यम्य ॥ ९० ॥

तारुकी मूठका नाम १ ॥ संमाहा १ ॥ ९० ॥

मुषणो मुद्ररघनी-

मुद्ररघना नाम ३ ॥ मुषण १ मुद्रर १ रघन १ ॥

-स्यादीली करवालिका ॥

गुलीके नाम २ ॥ दीली १ करवालिका २ ॥

मिन्दिपालः सुगस्तुल्यौ-

गोफनक नाम २ ॥ मिन्दिपाल १ सुग २ ॥

-परिघ परिघातिन ॥ ९१ ॥

परिघके नाम १ ॥ परिघ १ परि

घातिन २ ॥ ९१ ॥

द्वयो कुठार स्वधिति परशुम्भ

परशुम्भः ॥

कुठारके नाम ४ ॥ कुठार १

स्वधिति २ परशु ३ परशुम्भ ४ ॥

स्याच्छत्री चासिपुत्री च छुरि

का चासिधेनुका ॥ ९२ ॥

छुरीके नाम ४ ॥ छात्री १ अक्षि

पुत्री २ छुरिका ३ अक्षिपुत्री ४ ॥ ९२ ॥

वा पुसि गल्य धंफुना-

पुसि के नाम २ ॥ धन्व १ धनु २ ॥

गर्वला क्षोमरोऽम्बियाम-

गदासके नाम २ ॥ गर्वला १ क्षोमर २ ॥

मासस्तु शुन्त -

मा १ नाम २ ॥ मास १ शुन्त २ ॥

-वाणस्तु गिर्य पाल्यध्रि

वाण्य ॥ ९३ ॥

खड्गादिकी नोकके नाम ४॥कोण १  
पालि २ अश्रि ३ कोटि ४ ॥ ९३ ॥

सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्न-  
हनार्थकः ॥

सेनाकी तैयारीके नाम ३ ॥ सर्वा-  
भिसार १ सर्वौघ २ सर्वसनहन ३ ॥

लोहाभिसारोऽस्त्रभृतां गङ्गां  
नीराजनाविधिः ॥ ९४ ॥

महानवमीके पहिले लडाईके निमित्त  
राजाओंके शस्त्र पूजनेका नाम १ ॥  
लोहाभिसार १ ॥ ९४ ॥

यत्सेनयाभिगमनमरौ तदभि-  
षेणनम् ॥

शत्रुके ऊपर सेना चढनेका नाम  
१ ॥ अभिषेणन १ ॥

यात्रा ब्रज्याऽभिनिर्माणं प्रस्था-  
नं गमनं गमः ॥ ९५ ॥

चलनेके नाम ६ ॥ यात्रा १  
ब्रज्या २ अभिनिर्माण ३ प्रस्थान ४  
गमन ५ गम ६ ॥ ९५ ॥

स्थादासारः प्रसरणं-

सेनाके फैलनेके नाम २ ॥ आसार  
१ प्रसरण २ ॥

-प्रचक्रं चलितार्थकम् ॥

चलीहुई सेनाके नाम २ ॥ प्रचक्र  
१ चलित २ ॥

अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यान-  
मभिक्रमः ॥ ९६ ॥

निडर होकर शत्रुपर चढाईका  
नाम १ ॥ अभिक्रम १ ॥ ९६ ॥

वैतालिका बोधकरा-

प्रातःकालके राजाके जगानेवा-  
लोंके नाम २ ॥ वैतालिक १ बोधकर २ ॥

-श्रक्तिका घाण्टिकाऽर्थकाः ॥

घडियालीके नाम २ ॥ चाक्रिक १  
घाण्टिक २ ॥

स्युर्मागधास्तु मगधा-

राजाका वश वर्णन करनेवालाक  
नाम २ ॥ मागध १ ॥ मगध २ ॥

-वन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥

भाटके नाम २ ॥ वन्दिन् १  
स्तुतिपाठक २ ॥ ९७ ॥

संशप्तकास्तु समयात्सङ्ग्रामा-  
दनिवर्तिनः ॥

शपथ खाकर युद्धमें पीठ न देने-  
वालेका नाम १ ॥ संशप्तक १ ॥

रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांसुर्ना  
न द्वयो रजः ॥ ९८ ॥

धूलिके नाम ४ ॥ रेणु १ धूलि २  
पासु ३ रजस् ४ ॥ ९८ ॥

चूर्णे क्षोदः-

चूनके नाम २ ॥ चूर्ण १ क्षोद २ ॥

अथ-उत्तकयत्त सब शब्द  
तीनों किंगम होत है ॥ ८७ ॥  
निरस्त\* ग्रहिते बाणे-  
छोटेद्वय बाणका नाम ॥ निरस्त १ ॥  
-विपाक्ते दिग्धलिप्तको ॥  
विप्युक्त बाणके नाम ॥ विपाक  
१ दिग्ध २ उत्तक ३ ॥  
तूणापासह्वतूणीरनिपगा इपुधिर्द  
यो ॥ ८८ ॥ तूण्यो-  
सारकसर नाम ६ ॥ तूण १ उपानग  
० तर्गार ० निगम ४ इपुधि ५ ॥  
॥ ८८ ॥ तर्गा १ ॥  
-रग्यो तु निम्बिचन्द्रहासासि  
गृष्ट्य ॥ कीक्षेयको मण्डलाम  
करवाल\* कृपाणवत् ॥ ८९ ॥  
सारक नाम ९ ॥ उड्ड १ निधि  
३ २ चन्द्रहास २ गार्ता ४ तिष्ठ ५  
कीक्षेय ६ मण्डलाम ७ करवाल ८  
उड्डाग ० ॥ ८९ ॥  
सार रग्यादिमुर्धा स्या-  
सारभाषिणोमृत्का नाम १ ॥ सर १ ॥  
-मारग्य सक्षियन्धनम् ॥  
सार १ २ सारग्य नाम १ ॥ मक्षग १ ॥  
पल्लवाङ्गी पल्ल नाम-  
पल्ल नाम २ ॥ पल्ल १ पल्ल  
३ १ ४ ॥  
-गमादा गुह्यग्य य ॥ ९० ॥

टाण्णी मूल्या नाम १ ॥ संमाह १ ॥ ९० ॥  
दुधणो मुद्गरधनौ-  
मुद्गरकनाम १ ॥ दुधण १ मुद्गर १ २ धन १ ॥  
-स्मादीली करवालिका ॥  
गुप्तीके नाम २ ॥ दीली १ करवालिका २ ॥  
भिन्दिपाल\* सगस्तुल्यो-  
गोपनक नाम २ ॥ भिन्दिपाल १ सग १ ॥  
-परिघ परिघातिन\* ॥ ९१ ॥  
परिघक नाम १ ॥ परिघ १ पार-  
घातिन ० ॥ ९१ ॥  
द्वयो\* कुटार स्वधिति परशुभ  
परश्वध ॥  
कुटारीके नाम ४ ॥ कुटार १  
स्वधिति २ परशु ३ परश्वध ४ ॥  
स्माच्छरी ग्रासिपुत्री च गुरि  
का घासिधनुका ॥ ९२ ॥  
गुरीके नाम ४ ॥ शरी १ अस्ति  
पुत्री २ गुरिना ३ अस्तिधनुका ४ ॥ ९२ ॥  
वा पुसि अत्यं शत्रुना-  
शरीक नाम २ ॥ शत्रु १ शत्रु १ ॥  
गर्वला क्षामरोडमियाम-  
गर्वलाके नाम ० ॥ क्षामरोड १ क्षामरोड १ ॥  
मासस्तु गुन्त -  
मा के नाम २ ॥ मास १ गुन्त २ ॥  
-कागस्तु मिष पाल्पार्थ  
मास्य ॥ ९३ ॥

खड्गादिकी नोकके नाम ४॥कोण १  
पालि २ अश्रि ३ कोटि ४ ॥ ९३ ॥

सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्न-  
हनार्थकः ॥

सेनाकी तैयारीके नाम ३ ॥ सर्वा-  
भिसार १ सर्वौघ २ सर्वसनहन ३ ॥

लोहाभिसारोऽस्त्रभृतां राज्ञां  
नीराजनाविधिः ॥ ९४ ॥

महानवमीके पहिले लडाईके निमित्त  
राजाओके शस्त्र पूजनेका नाम १ ॥  
लोहाभिसार १ ॥ ९४ ॥

यत्सेनयाभिगमनमरौ तदभि-  
षेणनम् ॥

शत्रुके ऊपर सेना चढनेका नाम  
१ ॥ अभिषेणन १ ॥

यात्रा व्रज्याऽभिनिर्माणं प्रस्था-  
नं गमनं गमः ॥ ९५ ॥

चलनेके नाम ६ ॥ यात्रा १  
व्रज्या २ अभिनिर्माण ३ प्रस्थान ४  
गमन ५ गम ६ ॥ ९५ ॥

स्यादासारः प्रसरणं-

सेनाके फैलनेके नाम २ ॥ आसार  
१ प्रसरण २ ॥

-प्रचक्रं चलितार्थकम् ॥

चलीहुई सेनाके नाम २ ॥ प्रचक्र  
१ चलित २ ॥

अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यान-  
मभिक्रमः ॥ ९६ ॥

निडर होकर शत्रुपर चढाईका  
नाम १ ॥ अभिक्रम १ ॥ ९६ ॥

वैतालिका बोधकरा-

प्रातःकालके राजाके जगानेवा-  
लोंके नाम २ ॥ वैतालिक १ बोधकर २ ॥

-श्रक्तिका घाण्टिकाऽर्थकाः ॥

घडियालीके नाम २ ॥ चाक्रिक १  
घाण्टिक २ ॥

स्युर्मगधास्तु मगधा-

राजाका वश वर्णन करनेवालोंक  
नाम २ ॥ मागध १ ॥ मगध २ ॥

-वन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥

भाटके नाम २ ॥ वन्दिन् १  
स्तुतिपाठक २ ॥ ९७ ॥

संशप्तकास्तु सप्तयात्सङ्ख्यामा-  
दनिवर्तिनः ॥

शपथ खाकर युद्धमें पीठ न देने-  
वालेका नाम १ ॥ सशप्तक १ ॥

रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांसुर्ना  
न द्वयो रजः ॥ ९८ ॥

धूलिके नाम ४ ॥ रेणु १ धूलि २  
पासु ३ रजस् ४ ॥ ९८ ॥

चूर्णे क्षोदः-

चूनेके नाम २ ॥ चूर्ण १ क्षोद २ ॥

—समुत्पिञ्जपिञ्जली भृक्षमाकुले॥

भृक्षानेके नाम २ ॥ समुत्पिञ्ज

१ पिञ्ज २ ॥

पताका वैजयन्ती स्यात्केतन

ध्वजमास्त्रियाम् ॥ ९९ ॥

ध्वजके नाम ३ ॥ पताका १ वैज

यन्ती २ केतन ३ ध्वज ३ ॥ ९९ ॥

सा वीराशंसन युद्धभूमिर्याऽ

त्रिभयप्रदा ॥

म १ युद्ध २ स्थानका नाम १ ॥

वीराशंसन १ ॥

अह पूर्वमह पूर्वमित्यहपूर्विका

स्त्रियाम् ॥ १०० ॥

जिसमें वीर कहें कि, हम पहले

छड़ेगे हम पहले छड़ेगे उस छडाईका

नाम १ ॥ अहपूर्विका १ ॥ १०० ॥

आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्स

भावनारामनि ॥

जिसमें कहें कि हम पुरुष हैं हमही

छड़ेगे उसका नाम १ ॥ आहोपुरुषिका १ ॥

अहमहमिका तु सा स्यात्परस्पर

यो भवत्परिहारः ॥ १०१ ॥

आपसक इस कहनका कि, हम

दोनों हैं हम एक दूसरे परका नाम

१ ॥ अहमहमिका १ ॥ १०१ ॥

प्रविण सरसहोबलगायाणि

स्याम शुष्म च ॥ शक्ति परा

क्रमः प्राणो-

पराक्रमके नाम १० ॥ प्रविण १

सरस २ सहस्र ३ बल ४ शौर्य ५

स्यामन् ६ शुष्मन् ७ शक्ति ८ परा

क्रम ९ प्राण १० ॥

—विक्रमस्त्वतिशक्तिता १०२ ॥

अतिपराक्रमक नाम २ ॥ विक्रम

१ अतिशक्तिता २ ॥ १०२ ॥

वीरपानं तु यत्पानं घृते

भाविनि वा रणे ॥

छानने के निमित्त पकड़ या पीछे नसा

खान पीनेका नाम १ ॥ वीरपान १ ॥

युद्धमायोधनं जन्य प्रघनं प्रवि

दारणम् ॥ १०३ ॥ मृधमात्स

न्दन सङ्ख्य समीकं साम्परा

यिकम् ॥ अस्त्रियां समरानीक

रणा कलहविमर्दी ॥ १०४ ॥

समहाराभिसपातकलिसंस्फोटसंयु

गा ॥ अभ्यामर्दसमाघातसं

ग्रामाभ्यागमाहवा ॥ १०५ ॥

समुदाय स्त्रियः सपत्सामित्या

मिसमिश्रम् ॥

युद्ध नाम १ ॥ युद्ध १ आयोधन २

जन्य ३ प्रघन ४ प्रविदारण ५ ॥ १०३ ॥

मृध आसन्दन ७ सपत् ८ समीक ९

सापरायिक १० समर ११ अनीक १२  
रण १३ कलह १४ विग्रह १२॥१०४॥  
सप्रहार १६ अभिसम्पात १७ कलि १८  
सस्फोट १९ संयुग २० अभ्यामर्द २१ समा  
घात २२ सग्राम २३ अभ्यागम २४ आहव  
२५॥१०५॥समुदाय २६ सयत् २७ स-  
मिति २८ आजि २९ समित् ३० युध् ३१॥

नियुद्धं बाहुयुद्धे स्या-

भुजाके युद्धके नाम २॥ नियुद्ध १  
बाहुयुद्ध २॥

तुमुलं रणसंकुले ॥ १०६ ॥

घोरसग्रामका नाम १॥ तुमुल १॥  
॥ १०६ ॥

क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्या-

वीरोंके गर्जनेके नाम २॥ क्ष्वेडा १  
सिंहनाद २॥

त्कारिणां घटना घटा ॥

हाथियोंके समूहके नाम २॥ घटना  
१ घटा २॥

क्रन्दनं योवसंरावो-

युद्धके शब्दका नाम १॥ क्रन्दन १॥

-वृंहितं करिगर्जितम् ॥ १०७ ॥

हाथीके शब्दका नाम १॥ वृंहित १॥  
॥ १०७ ॥

विस्फारो धनुषः स्वानः-

धनुषके शब्दका नाम १॥ विस्फार १॥

-पटहाडम्बरौ समौ ॥

नगाडके शब्दके नाम २॥ पटह १

आडवर २ ॥

प्रसभं तु बलात्कारो हठो-

हठके नाम ३॥ प्रसभ १ बलात्कार  
२ हठ ३ ॥

-ऽथ स्खलितं छलम् ॥ १०८ ॥

धोखा देनेके नाम २ ॥ स्खलित १  
छल २ ॥ १०८ ॥

अजन्यं क्लीवमुत्पात उपसर्गः  
समं त्रयम् ॥

उत्पातके नाम ३ ॥ अजन्य १  
उत्पात २ उपसर्ग ३ ॥

मूर्च्छा तु कश्मलं मोहो-

मूर्च्छाके नाम ३॥ मूर्च्छा १ कश्मल २  
मोह ३ ॥

-प्यवमर्दस्तु पीडनम् ॥ १०९ ॥

देशादिको उपद्रव देनेके नाम २॥  
अवमर्द १ पीडन २ ॥ १०९ ॥

अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं-

धोखेसे दवालेनेके नाम २॥ अभ्यव  
स्कन्दन १ अभ्यासादन २ ॥

-विजयो जयः ॥

जीतके नाम २॥ विजय १ जय २॥

वैरशुद्धिः प्रतिकारो वैरनिर्वा-

तनं च सा ॥ ११० ॥



—समुत्पिञ्जपिञ्जली भृशमाकुले॥

अकुलान्ते नाम २ ॥ समुत्पिञ्ज

१ पिञ्ज २ ॥

पताका वैजयन्ती स्यात्केतन

ध्वजमस्त्रियाम् ॥ ९९ ॥

संज्ञके नाम ४ ॥ पताका १ वैज-

यन्ती २ केतन ३ ध्वज ४ ॥ ९९ ॥

सा वीराशंसनं युद्धमृमियाँ

विमयप्रदा ॥

मर युद्ध स्यान्नाका नाम १ ॥

वीराशंसन १ ॥

अह पूर्वमह पूर्वमित्यहपूर्विका

स्त्रियाम् ॥ १०० ॥

जिसमें बीर कहें कि हम पहल

छाँगे हम पहल छाँगे उस अहपूर्विका

नाम १ ॥ अहपूर्विका १ ॥ १० ॥

आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्स

भावनात्मनि ॥

जिसमें कहें कि हम पुरुष हैं हमही

छाँगे उसका नाम १ ॥ आहोपुरुषिका १ ॥

अहमहमिका तु सा स्यात्परस्पर

यो भवत्परिकारः ॥ १०१ ॥

आपसके इस कहनेको कि, हम

शत्रु हैं हम अह सत्ते हैं उसका नाम

१ ॥ अहमहमिका १ ॥ १ १ ॥

द्रविणं तरःसहोबलशौर्याणि

स्याम शुष्म च ॥ शक्ति परा

क्रमः प्राणो-

पराक्रमके नाम १० ॥ द्रविण १

तरस् २ सहस् ३ बल ४ शौर्य ५

स्याम् ६ शुष्म ७ शक्ति ८ परा-

क्रम ९ प्राण १ ॥

—विक्रमस्त्वतिशक्तिः १०२ ॥

अतिपराक्रमके नाम २ ॥ विक्रम

१ अतिशक्ति २ ॥ १०२ ॥

वीरपान तु यत्पानं वृषे

भाविनि वा रणे ॥

छडनेके निमित्त पहले या पीछे नसा

खाने पीनेका नाम १ ॥ वीरपान १ ॥

युद्धमायोधनं अन्य प्रचन प्रवि-

दारणम् ॥ १०३ ॥ मृगमास्क-

न्दन सङ्ख्य समीक साम्परा

यिकम् ॥ अस्त्रिमां समरानीक

रणा कलहविग्रही ॥ १०४ ॥

समहाराभिसपातकलिसंस्फोत्स्यु

गा ॥ अभ्यामर्दसमाघातसं

ग्रामाभ्यागमाहवा ॥ १०५ ॥

समुदायः स्त्रियः सयत्सामित्या

जितमिष्टुषः ॥

युद्धक नाम १ ॥ युद्ध १ आयोधन २

अन्य ३ प्रचन ४ प्रविदारण ५ ॥ १ ॥ ३ ॥

मृग ६ आस्कन्दन ७ सङ्ख्य ८ समीक ९

-चिता चित्या चितिः त्रि-  
याम् ॥ ११७ ॥

चिताके नाम ३ ॥ चिता १ चित्या  
२ चिति ३ ॥ ११७ ॥

कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमप-  
मूर्धकलेवरम् ॥

शिररहित चेष्टा करनेवाले शरीरका  
नाम १ ॥ कबन्ध १ ॥

श्मशानं स्यात्पितृवनं-

श्मशानके नाम २ ॥ श्मशान १  
पितृवन २ ॥

-कुणपः शवमस्त्रियाम् ॥ ११८ ॥

मुर्देके नाम २ ॥ कुणप १ शव २ ॥  
॥ ११८ ॥

प्रग्रहोपग्रहो बन्ध्यां-

कैदीके नाम ३ ॥ प्रग्रह १ उपग्रह  
बन्दी ३ ॥

-कारा स्याद्बन्धनालये ॥

जेहलखानेका नाम १ ॥ कारा १ ॥

पुंसि असवः प्राणाश्चैवं-

प्राण २ ॥ असु १ प्राण २ ॥

-धारणम् ॥ ११९ ॥

४ २ ॥ जीव १ असु-

२ ॥

कालो-

१ ॥ आयुम् १ ॥

-ना जीवातुर्जीवनौपधम् ॥

मृतसजीवनी वृत्तीके नाम २ ॥

जीवातु १ जीवनौपध २ ॥

इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

अथ वैश्यवर्गः ९.

ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या  
भूमिस्पृशो विशः ॥

वैश्यके नाम ६ ॥ ऊरव्य १ ऊरुज २  
अर्य ३ वैश्य ४ भूमिस्पृक् ५ विश ६ ॥  
आजीवो जीविका, वार्ता वृत्तिर्व-  
र्तनजीवने ॥ १ ॥

जीविकाके नाम ६ ॥ आजीव १

जीविका २ वार्ता ३ वृत्ति ४ वर्त्तन  
५ जीवन ६ ॥ १ ॥

स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वा-

णिज्यं चेति वृत्तयः ॥

जीविकाके भेद ३ ॥ ( खेती कर-  
नेका नाम ) कृषि १ ॥ ( पशुपालनका  
नाम ) पाशुपाल्य २ ॥ ( व्यापारका  
नाम ) वाणिज्य ३ ॥ ये तीनों वैश्य-  
वृत्ति हैं ॥

सेवा श्ववृत्ति-

परसेवाके नाम २ ॥ सेवा १  
श्ववृत्ति २ ॥

-गृत्तं कृषि-

के दूरकरनेके नाम ३॥ केरुद्धि १  
प्रतीकार २ केरनिर्वासन ३॥ ११०॥

प्रदावोद्रावसन्दावसन्दावा वि  
द्रवो द्रव ॥ अपक्रमोऽपयान च-

पलायन ( भागने ) के नाम ८ ॥

प्रदाव १ उद्राव २ सदाव ३ सदाव ४

विद्रव ५ द्रव ६ अपक्रम ७ अपयान ८ ॥

-रणेमङ्ग पराजय ॥ १११ ॥

हारके नाम २ ॥ रणेमङ्ग १ परा

जय २ ॥ १११ ॥

पराजितपरामूर्तौ-

हारेद्वयके नाम २ ॥ पराजित १ परा-

मूर्त २ ॥

-त्रिषु नष्टतिरोहितौ ॥

क्षिपेद्वयके नाम २ ॥ नष्ट १ तिरो

हित २ ॥

प्रमापण निवर्हण निकारण वि

धारणम् ॥ ११२ ॥ प्रवासन प

रासन निपुदन निर्विसनम् ॥ नि

र्वीसनं सहापन निर्मन्यनमपासनम्

॥ ११३ ॥ निस्तर्हणं निहननं

क्षणन परिजननम् ॥ निवापण

विदासन मारण प्रतिघातनम्

॥ ११४ ॥ उद्रासनममयनञ्च

नोजासनानि च ॥ अलम्भाविज

विशरघातोन्माथवघा अपि ११५

मारनेके नाम ३० ॥ प्रमापण १

निवर्हण २ निकारण ३ विशारण ४ ॥

॥ ११५ ॥ प्रवासन ५ पवासन ६ निपु-

दन ७ निर्विसन ८ निर्वासन ९ सहा-

पन १० निर्मन्यन ११ अपासन १२ ॥

॥ ११६ ॥ निस्तर्हण १३ निहनन १४

क्षणन १५ परिवर्जन १६ निवापण

१७ विशसन १८ मारण १९ प्रति-

घातन २० ॥ ११७ ॥ उद्रासन २१

ममयन २२ क्रयन २३ उद्रासन २४

आलम्भ २५ पिञ्ज २६ विशर २७ ॥

घात २८ उन्माथ २९ वघ ३० ॥

॥ ११९ ॥

स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्त

मलयोऽप्रयम ॥ अन्तो नाशो

द्वयोर्द्व्युर्मरण निधनोऽस्त्रिषाम्

॥ ११६ ॥

मृत्युके नाम १० ॥ पञ्चता १ काल-

धर्म २ दिष्टान्त ३ प्रलय ४ अत्यय ५

अन्त ६ नाश ७ मृत्यु ८ मरण ९

निधन १० ॥ ११६ ॥

परामुप्राप्तपञ्चस्वपरेतमेतसस्थिताः ॥

मृतप्रमीती श्रियेते-

मृत्युको प्राप्तद्वयेके नाम ७ ॥ परामु

१ प्राप्तपञ्चस्व २ परत ३ मृत ४ संरिपत

५ मृत ६ प्रमीत ७ ॥

—चिता चित्या चितिः त्रि-  
याम् ॥ ११७ ॥

चिताके नाम ३ ॥ चिता १ चित्या  
२ चिति ३ ॥ ११७ ॥

कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमप-  
मूर्धकलेवरम् ॥

शिररहित चेष्टा करनेवाले शरीरका  
नाम १ ॥ कबन्ध १ ॥

श्मशानं स्यात्पितृवनं—

श्मशानके नाम २ ॥ श्मशान १  
पितृवन २ ॥

—कुणपः शवमस्त्रियाम् ॥ ११८ ॥

मुर्देके नाम २ ॥ कुणप १ शव २ ॥  
॥ ११८ ॥

प्रग्रहोपग्रहो वन्ध्यां—

कैदीके नाम ३ ॥ प्रग्रह १ उपग्रह  
वन्दी ३ ॥

—कारा स्याद्बन्धनालये ॥

जेहलखानेका नाम १ ॥ कारा १ ॥

पुंसि भूस्त्र्यसवः प्राणाश्चैवं—

प्राणके नाम २ ॥ असु १ प्राण २ ॥

—जीवोऽसुधारणम् ॥ ११९ ॥

जीवके नाम २ ॥ जीव १ असु-  
धारण २ ॥ ११९ ॥

आयुर्जीवितकालो—

आयुका नाम १ ॥ आयुम् १ ॥

—ना जीवातुर्जीवनौषधम् ॥

मृतसजीवनी बूटीके नाम २ ॥

जीवातु १ जीवनौषध २ ॥

इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

अथ वैश्यवर्गः ९.

ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या  
भूमिस्पृशो विशः ॥

वैश्यके नाम ६ ॥ ऊरव्य १ ऊरुज २  
अर्य ३ वैश्य ४ भूमिस्पृक् ५ विश ६ ॥

आजीवो जीविका, वार्ता वृत्तिर्व-  
र्तनजीवने ॥ १ ॥

जीविकाके नाम ६ ॥ आजीव १  
जीविका २ वार्ता ३ वृत्ति ४ वर्त्तन  
५ जीवन ६ ॥ १ ॥

स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वा-  
णिज्यं चेति वृत्तयः ॥

जीविकाके भेद ३ ॥ ( खेती कर-  
नेका नाम ) कृषि १ ॥ ( पशुपालनका  
नाम ) पाशुपाल्य २ ॥ ( व्यापारका  
नाम ) वाणिज्य ३ ॥ ये तीनों वैश्य-  
वृत्ति हैं ॥

सेवा श्ववृत्ति—

परसेवाके नाम २ ॥ सेवा १  
श्ववृत्ति २ ॥

—गृत्तं कृषि—

क्षेत्रीकेनाम २ ॥ अमृत १ कृषि २ ॥

—रुच्छशिल त्वृत्तम् ॥ २ ॥

उच्छृष्टिके नाम ३ ॥ उच्छ १  
शिल २ अत ३ ॥ २ ॥

द्वे याचितायाचितयोर्थासख्य  
मृतामृते ॥

मांगनसं प्राप्तियुई वस्तुका नाम १ ॥  
मृत १ ॥ किना मांगे प्राप्तियुई वस्तुका  
नाम १ ॥ अमृत १ ॥

सत्यानृतं वणिग्भावः स्या-  
न्यापारकं नाम २ ॥ सत्यानन १  
वणिग्भाव २ ॥

—दृणं पर्युदम्बनम् ॥ ३ ॥ उद्धारो-  
कर्जके नाम ३ ॥ कृण १ पर्युदम्बन  
२ ॥ ३ ॥ उद्धार ३ ॥

—अर्थप्रयोगस्तु कुसीद वृद्धि  
जीविका ॥

व्याजके नाम ३ ॥ अर्थप्रयोग १  
कुसीद २ वृद्धिजीविका ३ ॥

याच्यार्तं याचितक-  
मांगनेकी वस्तुका नाम १ ॥ याचितक १ ॥

—निमयाहापमित्यकम् ॥ ४ ॥  
बायदेपर लीङ्ग वस्तुका नाम १ ॥

भापमित्यक १ ॥ ४ ॥  
उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृमा  
इकौ क्रमात् ॥

क्षण दनवालेका नाम १ ॥ उत्तमर्ण  
१ ॥ क्षणकेलनवालेकानाम १ ॥ अधमर्ण १ ॥

कुसीदिको वार्धुपिको वृद्धभाजी  
वम्ब वार्धुपि ॥ ५ ॥

व्याजसे जीनवालेक नाम २ ॥ कुसी  
दिक १ वार्धुपिक २ वृद्धभाजी ३  
वार्धुपि ४ ॥ ५ ॥

क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च  
कृषीवल ॥

किसानके नाम ४ ॥ क्षेत्रा जीव १  
कर्षक २ कृषिक ३ कृषीवल ४ ॥

क्षेत्रं व्रीह्यखालेयं व्रीहिसाल्युद्  
बोचितम् ॥ ६ ॥

व्रीहि होनेके योग्य खतका नाम  
१ ॥ व्रीहय १ ॥

धानके खतका नाम १ ॥ खालेय १ ॥ ६ ॥  
यख्यं यवकर्म पट्टिक्यं यवादिमबर्न  
हि यत् ॥

जौके खतका नाम १ ॥ यव्य १ ॥ खोटे  
जौके खतका नाम १ ॥ यवकर्म १ ॥

साठीके खतका नाम १ ॥ पट्टिक्य १ ॥  
तिस्य सैलीनवन्मापोमाणुमगा  
दिरूपता ॥ ७ ॥

तिछके खतके नाम २ ॥ तिस्य १  
तेलीम २ ॥ उरद होम्बाखके नाम २ ॥

माप्य १ मापीण २ ॥ अखसी होनेवालेके

नाम २ ॥ उम्य १ औमीन २ ॥ अणुके  
होनेवालेके नाम २ ॥ अणव्य १ आण-  
वीन २ ॥ भग ( ताग ) होनेवालेके  
नाम २ ॥ भग्य २ भगीन २ ॥ ७ ॥

मौद्गीनकौद्रवीणादिशेषधान्यो-  
द्भवक्षमम् ॥

मृगहोनेवालेका नाम १ ॥ मौद्गीन  
१ ॥ कोदो होनेवाले खेतका नाम १ ॥  
कौद्रवीण १ ॥ चणेहोनेवाले खेतका  
नाम १ ॥ चाणकीन १ ॥ गेंहू होने-  
वालेका नाम १ ॥ गौधूमीन १ इत्यादि ॥

बीजाकृत तूतकृष्टं—

बीज बोनेका नाम १ ॥ बीजाकृत १ ॥

—सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥

जोतेहुये खेतके नाम ३ ॥ सीत्य  
१ कृष्ट २ हल्य ३ ॥ ८ ॥

त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं  
त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ॥

तीनवार जुतेहुये खेतके नाम ४ ॥

त्रिगुणाकृत १ तृतीयाकृत २ त्रिहल्य  
३ त्रिसीत्य ४ ॥

द्विगुणाकृते तु सर्व पूर्व शम्बा-  
कृतमपीह ॥ ९ ॥

दोवार जुतेहुयेके नाम ४ ॥ द्विगुणाकृत १

द्वितीयाकृत २ द्विहल्य २ द्विसीत्य ४ ॥ ९ ॥

द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणि-  
काढकिकादयः ॥

जिसमें द्रोण ( १०२४ ) तोला घान-  
आदि बोया जाय उस खेतका नाम १ ॥

द्रौणिक १ ॥ आढक ( २५६ ) तोला  
भर वालेका नाम १ ॥ आढकिक १ ॥ आदि

खारीवापस्तु खारीक—

जिसमें खारी ( ४ द्रोण अर्थात्  
४०९६ ) तोला भर अन्न बोया जाय  
उसका नाम ॥ १ ॥ खारीक १ ॥

—उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥

उत्तमर्णादि शब्द तीनों लिगोंमें  
होते हे ॥ १० ॥

पुंनपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्र-  
खेतके नाम ३ ॥ वप्र १ केदार २ क्षेत्र ३ ॥

—मस्य तु ॥ कैदारकं स्यात्कै-  
दार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे ॥ ११ ॥

खेतके समूहके नाम ४ ॥ कैदारक १  
कैदार्य २ क्षेत्र ३ कैदारिक ४ ॥ ११ ॥

लोष्टानि लेष्टवः पुंसि—

ढेलेके नाम २ ॥ लोष्ट १ लेष्ट २ ॥

—कोटिशो लोष्टभेदनः ॥ —

भूगरीके नाम २ ॥ कोटिश १  
लोष्टभेदन २ ॥

प्राजनं तोदनं स्तोत्रं—

पैने ( लाठी, चाबुक आदि ) के नाम  
३ ॥ प्राजन १ तोदन २ तोत्र ३ ॥

—खनिप्रमवदारणे ॥ १२ ॥

कुदाळके नाम २ ॥ खनिप्र १

भवदारण २ ॥ १२ ॥

दात्र लवित्र—

सुरपा कावडा आदिक नाम २ ॥

दात्र १ लवित्र २ ॥

—मावन्धो योत्र योक्र—

मायक नाम ३ ॥ आवन्ध १ योत्र  
२ योक्र ३ ॥

—मयो फलम् ॥ निरीक्ष कुटक  
फाला कृपको—

फाल अर्थात् हलके नीचे लगावरे  
लोहेके नाम १ ॥ फल १ निरीक्ष १  
कुटक १ फाल ४ कृपक १ ॥

—लाङ्गल हलम् ॥ १३ ॥

गोदारण च सीरो—

हलके नाम ४ ॥ लाङ्गल १ हल  
२ ॥ १३ ॥ गोदारण ३ सीर ४ ॥

—उय शम्मा स्त्री युगकीलका ॥

उय ( सिम्ह ) के नाम २ ॥  
शम्मा १ युगकीलका २ ॥

—ईपा लाङ्गलपण्डा स्या—

हलस हाल ) के नाम २ ॥ ईपा  
१ लाङ्गलपण्ड २ ॥

—स्तीता लाङ्गलपदति ॥ १४ ॥

हलकी रखा ( मूढ ) के नाम २ ॥  
स्तीता १ लाङ्गलपदति २ ॥ १४ ॥

पुंसि मेघिः खले दाठ न्यस्तं

यत्पशुवन्धने ॥

आघान्यमर्दनकरनक स्थान अर्थात्

पेरमें गाढेहुय पशु बाधनक सूत्रे ( मंड )

क नाम २ ॥ मेघि १ खल्लाव १ ॥

आशुघोहि पाटलः स्या—

सही ( घान ) के नाम १ ॥

आशु १ ग्रीहि २ पाटल ३ ॥

—च्छितशूकपयो समौ ॥ १५ ॥

जोके नाम २ ॥ शितशूक १ यव २ ॥ १५ ॥

तोकमस्तु तत्र हरिते—

हरे जोका नाम १ ॥ तोक १ ॥

—कलापस्तु सतीनक ॥

हरेणुरखण्डिकौ चास्मिन्—

मठरके नाम ४ ॥ कलाप १

सतीनक २ हरेणु ३ खण्डिक ४ ॥

—कोरूपस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥

कोद्रोके नाम २ ॥ कोरूप १

कोद्रव २ ॥ १६ ॥

मग्नस्यको मसूरो—

मसूरके नाम २ ॥ मग्नस्य १

मसूर २ ॥

—उय मकुष्ठकमयुष्टकौ ॥ वन ]

मुष्टे—

मोठके नाम ३ ॥ मकुष्ठक १

मयुष्टक २ वनमुष्ट ३ ॥

सर्षपे तु द्वौ तन्तुभकदम्बकौ १७

सरसोंके नाम ३॥ सर्षप १ तन्तुभर २

कदम्बक ३ ॥ १७ ॥

सिद्धार्थस्त्वेष धवलो-

सफेदसरसोका नाम १॥ सिद्धार्थ १॥

-गोधूमः सुमनः समौ ॥

गेहूँके नाम २॥ गोधूम १ सुमन २॥

स्याद्यावकस्तु कुलमाप-

कुलथीके नाम २॥ यावक १ कुलमाप २॥

-श्रृणको हरिमन्यकः ॥ १८ ॥

अरहरे (चने) के नाम २॥ चणक १

हरिमन्यक २ ॥ १८ ॥

द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपि-

ञ्च निष्फले ॥

'फलहीन' 'वाइतिल' 'रान तिल'

के नाम २॥ तिलपेज १ तिलपिज २॥

क्षवः क्षुताभिजननो राजिका

कृष्णिकाऽऽसुरी ॥ १९ ॥

राईके नाम ९ ॥ क्षव १ क्षुताभिज-

नन २ राजिका ३ कृष्णिका ४ आसुरी

९ ॥ १९ ॥

स्त्रियौ कङ्कगुप्रियङ्गू द्वे-

कगनीके नाम २॥ कगु १ प्रियगु २॥

-अतसी स्यादुमा क्षुमा ॥

अलसीके नाम ३ ॥ अतसी १ उमा

२ क्षुमा ३ ॥

मातुलानी तु भङ्गायाम्-

भगके नाम २ ॥ मातुलानी १

भगा २ ॥

व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २० ॥

चीनाधान्यका नाम १॥ अणु १॥ २०

किशारुः सस्यशूकं स्या-

जौ इत्यादिके तीखे अप्रभाग

( सीकुर ) के नाम २ ॥ किशारु १

सस्यशूक २ ॥

-त्काणिशं सस्यमञ्जरी ॥

धान्यकी बालके नाम २॥ कणिश १

सस्यमञ्जरी २ ॥

धान्यं व्रीहिः स्तम्बकारिः-

धान्यमात्रके नाम ३ ॥ धान्य १

व्रीहि २ स्तम्बकारि ३ ॥

-स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः ॥ २१ ॥

यव आदिकी जड़के नाम २॥ स्तम्ब

१ गुच्छ २ ॥ २१ ॥

नाडी नालं च काण्डोऽस्य--

नलुआके नाम २॥ नाडी १ नाल २॥

--पलालोऽस्त्री स निष्फलः ॥

प्यालका नाम १॥ पलाल १ ॥

कडङ्गरो बुसं क्लीवे-

मोटे बुसके नाम २ ॥ कडङ्गर १

बुस १ ॥

--धान्यत्वाच्च तुषः पुमान् ॥ २२ ॥

भूसीका नाम १॥ तुष १ ॥ २२ ॥



|   |   |
|---|---|
| <p>-खनिप्रमवदारणे ॥ १२ ॥<br/>         कुदाउके नाम २ ॥ खनित्र १<br/>         अवदारण २ ॥ १२ ॥</p>   | <p>पुंसि मेघिः खले दाह न्यस्तं<br/>         यत्पशुबन्धने ॥<br/>         मोघान्यमर्द्धमफरनके स्थान अर्थात्</p>                         |
| <p>दात्र लवित्र-<br/>         द्युरपा फाकडा आदिक नाम २ ॥<br/>         दात्र १ लवित्र २ ॥</p>  | <p>पैरमें गाहइय पशु बांधनेके सूटे (मिठ)<br/>         के नाम २ ॥ मेघि १ खलदार २ ॥<br/>         आशुर्घोहि पाटल स्या-</p>                |
| <p>-माघन्यो योत्र योक्क-<br/>         माघके नाम ३ ॥ आबन्ध १ योत्र<br/>         २ योक्क ३ ॥</p>  | <p>सही ( धान ) के नाम ३ ॥<br/>         आशु १ ग्रीहि २ पाटल ३ ॥<br/>         -च्छितशूकयवौ समौ ॥ १५ ॥</p>                               |
| <p>-मयो फलम् ॥ निरीश कुटर्क<br/>         फालः कृपको-<br/>         फाल अर्थात् हलके नीचे लगेहुये<br/>         लोहके नाम ५ ॥ फल १ निरीश १<br/>         कुटर्क ३ फल ४ कृपक ५ ॥</p> | <p>जौके नाम २ ॥ शितशूक १ यव २ ॥ १५ ॥<br/>         तोकमस्तु तत्र हरिते-<br/>         हरे जौका नाम १ ॥ तोकम १ ॥</p>                     |
| <p>-लाङ्गुल इलम् ॥ १६ ॥<br/>         गोदारण च सीरो-<br/>         हलके नाम ४ ॥ लाङ्गुल १ हल<br/>         २ ॥ १६ ॥ गोदारण ३ सीर ४ ॥</p>   | <p>-कलायस्तु सतीनक-<br/>         इरेणुखण्डिकौ घास्मिन्-<br/>         मटरके नाम ३ ॥ कलाय १<br/>         सतीनक २ हरेणु ३ खण्डिक ४ ॥</p> |
| <p>-अथ शम्पा खी युगकीलका ॥<br/>         क्षिन् ( सिक्क ) के नाम २ ॥<br/>         शम्पा १ युगकीलक २ ॥</p>  | <p>-कोरदूपस्तु कोद्रव ॥ १७ ॥<br/>         कोद्रोके नाम २ ॥ कोरदूप १<br/>         कोद्रव २ ॥ १७ ॥</p>                                  |
| <p>-इपा लाङ्गुलदण्ड स्या-<br/>         हलस ( हाल ) के नाम २ ॥ इपा<br/>         १ लाङ्गुलदण्ड २ ॥</p>  | <p>मङ्गल्यको मसूरो-<br/>         मसूरके नाम २ ॥ मङ्गल्यक १<br/>         मसूर २ ॥</p>  |
| <p>-स्तीषा लाङ्गुलपद्धति ॥ १८ ॥<br/>         रट्टी रेणु ( रूट ) के नाम २ ॥<br/>         नीता १ लाङ्गुलपद्धति २ ॥ १८ ॥</p>   | <p>-अथ मकुषकमयुषको ॥ नन<br/>         मुष्टे-<br/>         मोठक नाम ३ ॥ मकुषक १<br/>         मयुषक २ वनमुष्ट ३ ॥</p>                   |

कटकिलिञ्जकौ ॥ २६ ॥

चटाईके नाम २ ॥ कट १ किलि-  
जक २ ॥ २६ ॥

समानौ-

यह समान लिग है ॥

-रसवत्यां तु पाकस्थानमहा-  
नसे ॥

रसोईके स्थानके नाम ३ ॥ रसवती  
१ पाकस्थान २ महानस ३ ॥

पौरोगवस्तदध्यक्षः-

रसोईके अधिकारीके नाम २ ॥ पौरो-  
गव १ तदध्यक्ष ( महानसाध्यक्ष ) २ ॥

-सूपकारास्तु बलुवाः ॥ २७ ॥

आरालिका आन्धसिकाः सूदा  
औदनिका गुणाः ॥

रसोइयेके नाम ७ ॥ सूपकार १  
बलुव २ ॥ २७ ॥ आरालिक ३ आन्ध  
सिक ४ सूद ५ औदनिक ६ गुण ७ ॥

आपूपिकः कान्दविको भक्ष्य-  
कार इमे त्रिषु ॥ २८ ॥

पुआ आदि बनानेवालेके नाम ३ ॥

आपूपिक १ कान्दविक २ भक्ष्यकार ३ ॥

ये शब्द तीनों लिंगोंमें होतेहैं ॥ २८ ॥

अश्मन्तमुद्गानमधिश्रयणीचु-  
ल्लिरन्तिका ॥

चूल्हेके नाम ५ ॥ अश्मन्त १ उद्गान  
२ अधिश्रयणी ३ चुल्लि ४ अन्तिका ५ ॥

अंगारधानिकाऽङ्गारशकट्यपि

हसन्त्यपि ॥ २९ ॥ हसन्त्य-

बरोसी ( सिगडीके ) नाम ४ ॥

अंगारधानिका १ अंगारशकटी २ हसन्ती  
३ ॥ २९ ॥ हसनी ४ ॥

-प्यथ न स्त्री स्यादंगारो-

अंगारेका नाम १ ॥ अंगार १ ॥

-ऽलातमुल्मुकम् ॥

जलतेहुए काष्ठके नाम २ ॥ अलात  
१ उल्मुक २ ॥

क्रीविऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो-

भाटके नाम २ ॥ अम्बरीष १ भ्राष्ट्र २ ॥

-ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रि-  
याम् ॥ ३० ॥

कटाईके नाम १ ॥ कन्दु १  
स्वेदनी २ ॥ ३० ॥

अलिञ्जरः स्यान्मणिकः-

माठ ( बड़ा घट्टके ) नाम २ ॥

अलिञ्जर १ मणिक २ ॥

-कर्कर्यालुर्गलन्तिका ॥

कठौतीके नाम ३ ॥ कर्करी १

आलु २ गलन्तिका ३ ॥

पिठरः स्थाल्युखाकुण्डं-

वटलोईके नाम ४ ॥ पिठर १

स्थाली २ उखा ३ कुण्ड ४ ॥

-कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥

शूकोञ्जी छद्मतीक्ष्णाम्-  
यव आदिके चिकने और तीक्ष्ण  
अम्रमागके नाम २ ॥ शूकः छद्म  
तीक्ष्णाम् २ ॥

-शमी क्षिम्बा-

मटर आदिकी फलीके नाम २ ॥  
शमी १ क्षिम्बा २ ॥

-त्रिवृत्तरे ॥

आग कह हुए सब शब्द तर्जनों  
जिह्वोंमें होंगे ॥

-शुद्धमावसित धान्य-

तृण दूर करके पैरमें इकट्ठा करने योग्य  
धान्यके नाम २ ॥ शुद्धः आवसित २ ॥

-पुत्र तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥

साफ करके इच्छे किए हुए धान्यके  
नाम २ ॥ पुत्र १ बहुलीकृत २ ॥ २३ ॥

मापादयः क्षमीधान्ये ॥

फलीके भीतर होनेवाले धान्य माप  
आदि हैं ॥

-शूकधान्ये यवादयः ॥

यव आदि शूक धान्य अर्थात्  
गालसे पैदा होनेवाले हैं ॥

शालय कलमाद्याश्च पक्षिका-  
द्याश्च-

यव आदि और शाही आदि पक्षि  
धान्य कहलाते हैं ॥

-धुंस्पमी ॥ २४ ॥

माप आदि शब्द धुंस्पमीमें होत  
हैं ॥ २४ ॥

तृणधान्यानि नीवारा-

पशाई आदि मुनियोंके धान्यका  
नाम १ ॥ नीवार १ ॥

-स्त्री गवेष्टुगवेष्टुका ॥

जिसका कोष्ठगदहामें कसाव कसा  
कहतहैं उस मुनिधर्मके नाम २ ॥

गवेषु १ ॥ गवेष्टुका २ ॥

अधोम भुतलोञ्जी स्या-  
मूलकके नाम २ ॥ अधोम १

मूलक २ ॥

-शुद्धखलुशुद्धखलम् ॥ २५ ॥

ओखलीके नाम २ ॥ शुद्धखल १  
शुद्धखल २ ॥

प्रस्फोटनं शूर्पमञ्जी-

छानके नाम २ ॥ प्रस्फोटनं १ शूर्पमञ्जी २ ॥

-चालर्ना तिवजः प्रमान् ॥

चालनीके नाम २ ॥ चालनी १  
तिवजः २ ॥

स्यूतप्रसेवो-

बल सग आदिसे घने हुए थैलेके  
नाम २ ॥ स्यूत १ प्रसेव २ ॥

-कण्डोळपिटी-

कोकरीक नाम २ ॥ कण्डोळ १ पिटी २ ॥

कारवी २ पृथ्वी ३ पृथु ४ काला ५  
उपकुक्षिका ६ ॥

आर्द्रक शृङ्गवेरं स्या-

अदरखके नाम २॥ आर्द्रक १ शृङ्गवेर २॥

-दथ च्छत्रा वितुन्नकम् ॥ ३७॥

कुस्तुम्बुरु च धान्याक-

धनियेके नाम ४॥ छत्रा १ वितुन्नक २

॥ ३७॥ कुस्तुम्बुरु ३ धान्याक ४ ॥

-मथ शुण्ठी महौषधम् ॥

स्त्रीनिपुंसकयोर्विश्वं नागरं विश्वभे-  
षजम् ॥ ३८ ॥

सोंठके नाम ५॥ शुण्ठी १ महौषध

२ विश्व ३ नागर ४ विश्वभेषज ५॥ ३८॥

आरनालकसौवीरकुलमाषाभि-

पुतानि च ॥ अवन्तिसोमधान्या-

म्लञ्जलानि च काञ्चिके ॥ ३९॥

काजीके नाम ७ आरनालक १

सौवीर २ कुलमाषामिपुत ३ अवन्तिसोम ४

धान्याम्ल ५ कुञ्जल ६ काञ्चिक ७॥ ३९॥

सहस्रवेधि जतुकं बाह्लीकं हिगु

रामठम् ॥

हींगके नाम ५॥ सहस्रवेधि १ जतुक

२ बाह्लीक ३ हिगु ४ रामठ ५ ॥

तत्पत्री कारवी पृथ्वी वाष्पिका

कवरी पृथुः ॥ ४० ॥

हींगके वृक्षके पत्तेके नाम ५ ॥

कारवी १ पृथ्वी २ वाष्पिका ३ कवरी

४ पृथु ५ ॥ ४० ॥

निशाख्या काञ्चनी पीता

हरिद्रा वरवर्णिनी ॥

हलदीके नाम ५॥ निशा १ काचनी

२ पीता ३ हरिद्रा ४ वरवर्णिनी ५ ॥

सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं

वशिरं च तत् ॥ ४१ ॥

समुद्रझागके नाम २ अक्षीव १

वशिर २ ॥ ४१ ॥

सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणि-

मन्थञ्च सिन्धुजे ॥

सैन्धेके नाम ४ ॥ सैन्धव १ शीतशिव

२ माणिमन्थ ३ सिन्धुज ४ ॥

रौमकं वसुकं-

सामरके नाम २॥ रौमक १ वसुक २॥

-पाक्यं विडं च कृतके द्वयम् ४२

खारीके नाम २॥ पाक्य १ विड २ ॥ ४२

सौवर्चलेऽक्षरुचके-

सचलखारके नाम ३॥ सौवर्चल १

अक्ष २ रुचक ३ ॥

-तिलकं तत्र मेचके ॥

काले सचलखारके नाम २॥ तिलक १

मेचक २॥

मत्स्यण्डी फाणितं खण्डवि-

कारे-

घट कुटनिपा-

वोडेके नाम ४ ॥ कलश १ ॥

॥ ३१ ॥ घट २ कुट १ निप ४ ॥

-बस्त्री शरावो वर्धमानक ॥

सरयेके नाम २ ॥ शराव १ वर्ध

मानक २ ॥

श्रुजीपं पिष्टपचन-

तवके नाम २ ॥ श्रुजीप १ पिष्ट

पचन २ ॥

-कंसोऽस्त्री पानभाजनम् ॥ ३२ ॥

कनोरीके नाम २ ॥ कंस १ पान

भाजन २ ॥ ३२ ॥

कुतुः कुत्ते ज्ञेहपात्र-

कुम्भेका नाम १ ॥ कुतु १ ॥

-सैवाल्पा कुतुप पुमान् ॥

कुम्भीका नाम १ ॥ कुतुप १ ॥

सर्वमावपन भाण्ड पात्रामत्र

च भाजनम् ॥ ३३ ॥

घरतनरु नाम १ ॥ आपवन १

भाण्ड २ पात्र ३ भजन ४ भाजन ५ ॥ ३३ ॥

दार्बि कम्भिः खजाका च-

कर्छीके नाम १ ॥ दार्बि १ कम्भि २

खजाका ३ ॥

स्यात्तर्द्विहस्तकः ॥

शोईके नाम २ ॥ तर्द्वि १ दाहस्तक २ ॥

अस्त्री शाक हरितक शिपु-

शाकके नाम १ ॥ शाक १ हरि

तक २ शिपु ३ ॥

-रस्य तु नाडिका ॥ ३४ ॥

कलम्बश्च कलम्बश्च-

शाककी डडीके नाम १ ॥ नाडिका

१ ॥ ३४ ॥ कलम्ब २ कलम्ब ३ ॥

-वेसवार उपस्कर ॥

मसाछके नाम २ ॥ वेसवार १

उपस्कर २ ॥

तिन्तिडीक च चुक च वृक्ष-

म्ल-

चूख (अमचूरआदि) के नाम ३ ॥

तिन्तिडीक १ चुक २ वृक्षाम्ल ३ ॥

-मय वेङ्गजम् ॥ ३५ ॥

मरीच कोलक कृष्णमूषण

वर्मपचनम् ॥

मिर्चेके नाम १ ॥ वेङ्गज १ ॥ ३५ ॥

मरीच २ कोलक ३ कृष्ण ४ ऊषण ५

वर्मपचन ६ ॥

जीरको अरणोऽमाजी कणा-

जीरेके नाम ३ ॥ जीरक १ अरण

२ अमाजी ३ कणा ४ ॥

-कृष्णे तु जीरके ॥ ३६ ॥

मुपनी कारवी पृथ्वी पृथुः

फालोपकृषिका ॥

कालजीरके नाम १ ॥ ३६ ॥ मुपनी १

कारवी २ पृथ्वी ३ पृथु ४ काला ५  
उपकुञ्चिका ६ ॥

आर्द्रक शृङ्गवेरं स्या-

अदरखे नाम २॥ आर्द्रक १ शृङ्गवेर २॥

-दथ च्छत्रा वितुन्नकम् ॥ ३७॥

कुस्तुम्बुरु च धान्याक-

धनियेके नाम ४॥ छत्रा १ वितुन्नक २

॥ ३७॥ कुस्तुम्बुरु ३ धान्याक ४ ॥

-मथ शुण्ठी महौषधम् ॥

स्त्रीनपुंसकयोर्विश्वं नागरं विश्वभे-  
षजम् ॥ ३८ ॥

सोंठके नाम ५॥ शुण्ठी १ महौषध

२ विश्व ३ नागर ४ विश्वभेषज ५॥ ३८॥

आरनालकसौवीरकुलमापाभि-

पुतानि च ॥ अवन्तिसोमधान्या-

म्लञ्जलानि च काञ्जिके ॥ ३९॥

काजीके नाम ७ आरनालक १

सौवीर २ कुलमापाभिपुत ३ अवन्तिसोम ४

धान्याम्ल ५ कुञ्जल ६ काजिक ७॥ ३९॥

सहस्रवेधि जतुकं बाह्लीकं हिगु

रामठम् ॥

होंगके नाम ५॥ सहस्रवेधिन् १ जतुक

२ बाह्लीक ३ हिगु ४ रामठ ५ ॥

तत्पत्री कारवी पृथ्वी वाष्पिका  
कवरी पृथुः ॥ ४० ॥

होंगके वृक्षके पत्तेके नाम ५ ॥

कारवी १ पृथ्वी २ वाष्पिका ३ कवरी

४ पृथु ५ ॥ ४० ॥

निशाख्या काञ्चनी पीता

हरिद्रा वरवर्णिनी ॥

हलदीके नाम ५॥ निशा १ काचनी

२ पीता ३ हरिद्रा ४ वरवर्णिनी ५ ॥

सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं

वशिरं च तत् ॥ ४१ ॥

समुद्रभागके नाम २ अक्षीव १

वशिर २ ॥ ४१ ॥

सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणि-

मन्थञ्च सिन्धुजे ॥

सैन्धेके नाम ४ ॥ सैन्धव १ शीतशिव

२ माणिमन्थ ३ सिन्धुज ४ ॥

रौमकं वसुकं-

सामरके नाम २॥ रौमक १ वसुक २॥

-पाक्यं विडं च कृतके द्वयम् ४२

खारीके नाम २॥ पाक्य १ विड २ ॥ ४२

सौवर्चलेऽक्षरुचके-

सचलखारके नाम ३॥ सौवर्चल १

अक्ष २ रुचक ३ ॥

-तिलकं तत्र मेचके ॥

काले सचलखारके नाम २॥ तिलक १

मेचक २॥

मत्स्यण्डी फाणितं खण्डवि-

कारे-

रत्नके नाम १ ॥ मात्स्यडी १  
फाणित २ ॥

-शर्करा सिता ॥ ४३ ॥

मिश्राके नाम २ ॥ शर्करा १  
सिता २ ॥ ४३ ॥

कूर्चिका शङ्खविकृति स्या-  
माषके नाम ३ ॥ कूर्चिका १ क्षीर  
विकृति २ ॥

-द्रसाळा तु मार्जिता ॥

श्रीशम्भके नाम २ रसाळा १  
मार्जिता २ ॥

स्यात्तेमनं तु निष्ठान-

कर्द्धाके नाम २ ॥ तेमनं १ निष्ठान २ ॥

-त्रिलिङ्गावासितावधे ॥ ४४ ॥

माया-वास्तिपथ्यन्ता शब्द तीनों  
लिङ्गोंमें होतेहैं ॥ ४४ ॥

शूलाकृतं मटिर्त्र च शूल्य-

छोहशङ्काकासे पकायेहुए मांसकनाम  
३ ॥ शूलाकृत १ मटिर्त्र २ शूल्य ३ ॥

-मुल्मं तु पेटम् ॥

पेटछोईमें पकाये हुए अन्नादिके नाम  
२ ॥ उरय १ पेट २ ॥

प्रणीतमुपसेपस-

पपीहुई रस्यके नाम २ ॥ प्रणीत १  
उपसम्पन्न २ ॥

-प्रपस्त स्यात्तुमस्तुतम् ॥ ४५ ॥

घृततेलादिसे बर्नीहुई रसके नाम २  
प्रपस्त १ सुसंस्कृत २ ॥ ४५ ॥

स्यात्पिच्छल तु विमिल-  
पर्णिले मोजनके नाम १ ॥ पिच्छल १  
विमिल २ ॥

-सम्पृष्ट शोषित समे ॥  
बीन हुए अमर्क के नाम २ ॥ सम्पृष्ट १  
शोषित २ ॥

चिकण मसृण लिग्ध-  
चिकनके नाम १ ॥ चिकण १  
मसृण २ लिग्ध ३ ॥

-तुल्ये भाविदवासिते ॥ ४६ ॥  
छोकीहुई वस्तुके नाम २ ॥ भावित १  
वास्तित २ ॥ ४६ ॥

आपकं पौलिरम्यूपो-  
घृत आदिमें भूनीहुई वस्तुके नाम १ ॥  
आपक १ पौलि २ अम्यूप ३ ॥

-छाजाः पुंमृन्नि चासता ॥  
शीलोंका नाम १ ॥ छाज १ ॥  
पृथुका स्याद्विपिटको-

परमलके नाम २ ॥ पृथुक १ विमि-  
टक २ ॥

-घाना भृष्टवे स्त्रिया ॥ ४७ ॥  
मुनेहुए जोके नाम २ ॥ घाना १  
भृष्टव २ ॥ ४७ ॥

पूपोऽपूपं पिष्टकं स्या-

पुण्ड्रके नाम १ ॥ पूप १ अपूप २ पिष्टक ३ ॥

|                                      |                                      |
|--------------------------------------|--------------------------------------|
| त्करम्भो दधिसक्तवः ॥                 | तत्तु शुष्कं करीषोऽर्घ्या-           |
| दधियुक्त सत्तुओंके नाम २ ॥           | सूखे हुए गोबरका नाम १॥ करीष १॥       |
| करम्भ १ दधिसक्त २ ॥                  | -दुग्धं क्षीरं पयः समम् ॥            |
| भिस्सा स्त्री भक्तमन्धोऽन्नमो        | दूधके नाम ३॥ दुग्ध १ क्षीर २ पयस् ३॥ |
| दनोऽस्त्री सदीदिविः ॥ ४८ ॥           | पयस्यमाज्यदध्यादि-                   |
| भातके नाम ६ ॥ भिस्सा १ भक्त          | घृत दही आदिका नाम १॥ पयस्य १॥        |
| २ अन्धस् ३ अन्न ४ ओदन ५              | -द्रप्सं दधि घनेतरत् ॥ ५१ ॥          |
| दीदिवि ६ ॥ ४८ ॥                      | पतले दहीका नाम १॥ द्रप्स १॥ ५१॥      |
| भिस्सटा दग्धिका-                     | घृतमाज्यं हविः सर्पि-                |
| जलके अन्नके नाम २ ॥ भिस्सटा          | घीके नाम ४ ॥ घृत १ आज्य २            |
| दधिका २ ॥                            | हविष् ३ सर्पिष् ४ ॥                  |
| -सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम् ॥       | -नवनीतं नवोद्धृतम् ॥                 |
| माडका नाम १ ॥ मण्ड १ ॥               | मक्खनके नाम २॥ नवनीत १               |
| मासराचामनिस्त्रया मण्डे भ-           | नवोद्धृत ॥                           |
| क्तसमुद्भवे ॥ ४९ ॥                   | तत्तु हैयङ्गवीनं यद्ध्योगोदोहो-      |
| केवल भातके माडके नाम ३॥ मासर         | द्रवं घृतम् ॥ ५२ ॥                   |
| १ आचाम २ निस्त्राव ३ ॥ ४९ ॥          | नौनीधीका नाम १॥ हैयङ्गवीन १॥ ५२॥     |
| यवागूरुष्णिका श्राणा विलेपी          | दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि             |
| तरला च सा ॥                          | गोरसः ॥                              |
| पतले भातके नाम ५ ॥ यवागू १           | मडेके नाम ४ ॥ दण्डाहत १              |
| उष्णिका २ श्राणा ३ विलेपी ४ तरला ५॥  | कालशेय २ अरिष्ट ३ गोरस ४ ॥           |
| गव्यं त्रिषु गवां सर्व-              | तक्रं ह्युदश्विन्मथितं पादाम्ब्व-    |
| गायसे उत्पन्न वस्तुका भाम १॥ गव्य १॥ | धाम्ब्व निर्जलम् ॥ ५३ ॥              |
| -गोविद् गोययमस्त्रियाम् ५० ॥         | मडेके भेद ३ ॥ तक्र १ उदश्वित         |
| गौके गोबरके नाम २ ॥ गोविश्           | २ मथित ३ ॥ ५३ ॥                      |
| १ गोमय २ ॥ ५०                        | मण्डं दधिभवं मस्तु-                  |



रत्नके नाम २ ॥ मास्यही १  
पाणित २ ॥

—शकरा सिता ॥ ४३ ॥

मिथ्रीके नाम २ ॥ शर्करा १  
सिता २ ॥ ४३ ॥

कूर्चिका क्षारविकृति\* स्या—  
मायके नाम १ ॥ कूर्चिका १ क्षीर  
विकृति २ ॥

—द्रसाळा तु मार्जिता ॥

धीस्वप्नके नाम २ रसाळा १  
मार्जिता २ ॥

स्यात्तेमनं तु निष्ठान—

कट्टीके नाम २ ॥ तमन १ निष्ठान २ ॥

—त्रिलिङ्गनवासितावधे\* ॥ ४४ ॥

माया—वास्तिपम्पस्त शब्द तीनों  
छिगोमें होतहैं ॥ ४४ ॥

शूलाकृत भटिन्नं च शूल्य—

छोइशळाकासे पकायहुए मांसकनाम  
१ ॥ शूलाकृत १ भटिन २ शूल्य ३ ॥

—मुख्यं तु पेठरम् ॥

मटछोईमें पकाय हुए अन्नादिक नाम  
१ ॥ टण्य १ पेठर २ ॥

प्रणीतमुपमेष—

पसीहुइ रम्पके नाम २ ॥ प्रणीत १  
उपसम्पन्न २ ॥

—मयस्त स्यात्सुससृष्टम् ॥ ४५ ॥

घृततैलादिसे बनीहुई रसोईके नाम २  
प्रयस्त १ सुसम्पन्न २ ॥ ४५ ॥

स्यात्पिच्छलं तु विजिह्वं—  
पर्नाले भोजनके नाम २ ॥ पिच्छल १  
विजिह्व २ ॥

—सम्पृष्ट शोषितं च ॥  
बीनेहुए अन्नके नाम २ ॥ सम्पृष्ट १  
शोषित २ ॥

चिकणं मसृणं लिग्धं—  
चिकुनके नाम १ ॥ चिकण १  
मसृण २ स्निग्ध ३ ॥

—मुख्ये भावितवासिते ॥ ४६ ॥  
छोईकीहुई वस्तुके नाम २ ॥ भावित १  
वासित २ ॥ ४६ ॥

आपकं पौलिन्धूपो—  
घृत आदिमें भूनीहुई वस्तुके नाम १ ॥  
आपक १ पौलि २ अम्यूप ३ ॥

—छात्राः पुंमूत्रि चाक्षता ॥  
खीछोईका नाम १ ॥ छात्र १ ॥

पृथुकाः स्याद्विपिटको—  
परमठके नाम १ ॥ पृथुक १ विपि-  
टक २ ॥

—धाना भृष्टपथे स्त्रियाः ॥ ४७ ॥  
भुनेहुए जोक नाम १ ॥ धाना १ ॥  
भृष्टपथ २ ॥ ४७ ॥

पृषोऽपृष\* पिष्टकं स्या—  
पुष्केलाम १ ॥ पृष १ अदूर २ पिष्टक ३ ॥

गया हो उस स्थानका नाम १ ॥ आ-  
शितगवीन १ ॥

उक्षा भद्रो वलीवर्द ऋषभो  
वृषभो वृषः ॥५९॥ अनड्वान्सौ  
रभेयो गौ-

वैलके नाम ९॥ उक्षन् १ भद्र २  
वलीवर्द ३ ऋषभ ४ वृषभ ५ वृष ६ ॥५९॥  
अनडुह ७ सौरभेय ८ गो ९ ॥

रुक्षणां संहतिरौक्षकम् ॥

वैलोके समूहका नाम १ ॥ औक्षक १ ॥

गव्या गोत्रा गवाम्-

गार्योके समूहके नाम २ ॥ गव्या १  
गोत्रा २ ॥

-वत्सधेन्वोर्वात्सकधैनुके ॥६०॥

वछडोंके समूहका नाम १ ॥ वात्सक  
१ धेनुओंके समूहका नाम १ ॥ धे-  
नुक १ ॥ ६० ॥

वृषो महान्महोक्षः स्या-

बड़े वृषके नाम १ ॥ महोक्ष ॥

-वृद्धाक्षस्तु जरद्भवः ॥

बूढ़े वैलका नाम २ ॥ वृद्धोक्ष १

जरद्भव २ ॥

उत्पन्न उक्षा जातोक्षः-

जवान वैलका नाम १ ॥ जातोक्ष १

-सद्याजातस्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥

छोटे बछरेका नाम १ ॥ तर्णक १ ॥ ६१ ॥

शकृत्कारिस्तु वत्सः स्या-

बछडेमात्रके नाम २ ॥ शकृत्कारि १

वत्स २ ॥

-हम्यवत्सतरौ समौ ॥

थोडे जवान बछडेके नाम २ ॥

हम्य १ वत्सतर २ ॥

आर्षभ्यः पण्डतायोग्यः-

बधिया करने लायकका नाम १ ॥

आर्षभ्य १ ॥

-पण्डो गोपतिरिदृचरः ॥ ६२ ॥

साढके नाम ३ ॥ पण्ड १ गोपति २  
इदृचर ३ ॥ ६२ ॥

स्कन्धदेशे त्वस्य वहः-

वैलके कन्धेका नाम १ ॥ वह १ ॥

साम्ना तु गलकम्बलः ॥

गैर्योंके गलेमें जो मांस लटकता है  
उस मांसके नाम २ ॥ साम्ना १

गलकम्बल २ ॥

स्यान्नस्तितस्तु नस्योतः-

नाथवाले वैलके नाम २ ॥ नस्तित १  
नस्योत २ ॥

-प्रष्ठवाड युगपार्श्वगः ॥ ६३ ॥

जिससे गाढीमें जांतनेके अर्थ वैल  
सघाये जायें उस काष्ठके नाम ॥ २ ॥

प्रष्ठवाड १ युगपार्श्वग २ ॥ ६३ ॥

युगादीनां तु वोढारो युग्य-

प्रासङ्ग्यशाकटाः ॥

|   |  |
|---|--|
| दहीके पानीका नाम १ ॥ मस्तु १ ॥            | —फेला मुक्तसमुज्जितम् ॥ ५६ ॥           |
| —पीयूषोऽभिनव पयः ॥                        | मोजन करके त्यागी इ३ वस्तुका            |
| सासका नाम १ ॥ पीयूष १ ॥                   | नाम १ ॥ फेला १ ॥ ५६ ॥                  |
| अशनाया बुभुक्षा क्षु                      | काम प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्ट        |
| भूखक नाम ३ ॥ अशनाया १                     | ययेप्सितम् ॥                           |
| बुभुक्षा २ क्षुध ३ ॥                      | इच्छाके नाम १ ॥ काम १ प्रकाम २         |
| —दमोसस्तु कवळः पुमाव् ॥ ५४ ॥              | पर्याप्त ३ निकाम ४ इष्ट ५ ययेप्सित ६ ॥ |
| मासके नाम २ ॥ मास १                       | गोपे गोपालगोसंख्यगोपुगा                |
| कवळ २ ॥ ५४ ॥                              | भीरवस्तुषा ॥ ५७ ॥                      |
| सपीति स्त्री तुल्यपान—                    | अहीरक नाम ६ ॥ गोप १ गोपाव              |
| सायपीनेके नाम २ ॥ सपीति १                 | २ गोसंख्य ३ गोदुह ४ आभीर ५             |
| तुल्यपान २ ॥                              | बहुव ६ ॥ ५७ ॥                          |
| —सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ॥                 | गोमहिष्यादिक पादबन्धन—                 |
| एकसायभोजन करनेके नाम २ ॥                  | घरमें बांधने छावक गाय भैंस             |
| सग्धि १ सहभोजन २ ॥                        | आम्बिका नाम १ ॥ पादबन्धन १ ॥           |
| उदन्या तु पिपासा कृत् वर्षो—              | —ह्री गवीश्वरे ॥ गोमान्गोमा—           |
| प्यासक नाम ४ ॥ उदम्या १                   | गाय ७ आम्बिकके नाम १ ॥ गवीश्वर         |
| पिपासा २ कृत् ३ वर्ष ४ ॥                  | १ गोमत् २ गोमिन् ३ ॥                   |
| —जग्धिस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥                  | —गोकुलं तु गाघन स्याद्गवां             |
| भोजन लेह आहारो निघसो न्याद                | प्रजे ॥ ५८ ॥                           |
| इत्यपि ॥                                  | गावोंके समूहक नाम २ ॥ गोकुल            |
| भोजनके नाम ३ ॥ जग्धि १ भोजन               | १ गोघन २ ॥ ५८ ॥                        |
| २ ॥ ५५ ॥ जमन ३ एह ४ आहार                  | त्रिप्याशितं गवीर्न चत्वारो य          |
| ५ निघम ६ न्यात् ७ ॥                       | त्राशिताः पुरा ॥ ५                     |
| गौदित्य तपण वृत्ति —                      | जहां गवां आम्बिको पड़ित निजपा          |
| गुमिने नाम ३ ॥ गौदित्य १ तपण २ वृत्ति ३ ॥ |  |

गया हो उस स्थानका नाम १ ॥ आ-  
शितगवीन १ ॥

उक्षा भद्रो वलीवर्द ऋषभो  
वृषभो वृषः ॥५९॥ अनड्वान्सौ  
रभेयो गौ-

वैलके नाम ९॥ उक्षन् १ भद्र २  
वलीवर्द ३ ऋषभ ४ वृषभ ५ वृष ६ ॥५९॥  
अनडुह ७ सौरभेय ८ गो ९ ॥

रुध्णां संहतिरौक्षकम् ॥  
वैलोके समूहका नाम १ ॥ औक्षक १ ॥

गव्या गोत्रा गवाम्-  
गायोंके समूहके नाम २ ॥ गव्या १  
गोत्रा २ ॥

-वत्सधेन्वोर्वात्सकधैनुके ॥६०॥  
वछडोंके समूहका नाम १ ॥ वात्सक  
१ धेनुओंके समूहका नाम १ ॥ धे-  
नुक १ ॥ ६० ॥

वृषो महान्महोक्षः स्या-  
वडे वैरुके नाम १ ॥ महोक्ष ॥

-वृद्धाक्षस्तु जरद्वः ॥  
वृढे वैलका नाम १ ॥ २ ॥ वृद्धोक्ष १  
जरद्व २ ॥

उत्पन्न उक्षा जातोक्षः-  
जवान वैलका नाम १ ॥ जातोक्ष १

-सद्याजातस्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥  
छोटे वछरेका नाम १ ॥ तर्णक १ ॥ ६१ ॥

शकृत्कारिस्तु वत्सः स्या-

वछडेमात्रके नाम २ ॥ शकृत्कारि १  
वत्स २ ॥

-दम्यवत्सतरौ समौ ॥  
थोडे जवान वछडेके नाम २ ॥

दम्य १ वत्सतर २ ॥  
आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः-

वधिया करने लायकका नाम १ ॥  
आर्षभ्य १ ॥

-षण्डो गोपतिरिट्चरः ॥ ६२ ॥  
साढके नाम ३ ॥ षण्ड १ गोपति २

इट्चर ३ ॥ ६२ ॥  
स्कन्धदेशे त्वस्य वहः-

वैलके कन्धेका नाम १ ॥ वह १ ॥  
सास्त्रा तु गलकम्बलः ॥

गैयोंके गलेमें जो मास लटकता है  
उस मासके नाम २ ॥ सास्त्रा १  
गलकम्बल २ ॥

स्यान्नस्तितस्तु नस्योतः-  
नाथवाले वैलके नाम २ ॥ नस्तित १

नस्योत २ ॥  
-प्रष्ठवाड युगपार्श्वगः ॥ ६३ ॥

जिससे गाडीमें जातनेके अर्थ वैल  
सघाये जायें उस काष्ठके नाम ॥ २ ॥

प्रष्ठवाड १ युगपार्श्वग २ ॥ ६३ ॥  
युगादीनां तु वोढारो युग्य-

प्रासङ्ग्यशाकदाः ॥

|   |   |
|---|---|
| शुणके उठानेवालेका नाम १ ॥   | १ ॥ ११ ॥ अर्जुनी ७ अम्प्या ८  |
| सुग्य १ ॥ जोड़क उठानेवालेका नाम १ ॥   | रोहिणी ९ ॥  |
| प्रासङ्ग्य १ ॥ छन्दके उठानेवाले बैलका नाम १ ॥ छाकट १ ॥                        | —कुचमा गोषु नैचिकी ॥<br>अच्छीगायका नाम १ ॥ नैचिकी १ ॥                                   |
| स्वनति सेन सद्योदाऽस्येर्व<br>हालिकस्तैरिकौ ॥ ६४ ॥                            | वर्णोदिभेदात्सज्ञा स्युः श्व<br>छीघषलादयः ॥ ६७ ॥  |
| हम्मै चळनेवालेके नाम २ ॥ हालिक<br>१ सैरिक २ ॥ ६४ ॥                            | वित्तज्वरीका नाम १ ॥ श्वच्छी १ ॥  |
| पूर्वहे धुयधौरेयधुरीणा<br>सधुरधरा ॥   | सफेदका नाम १ ॥ धक्का १ ॥ ६७ ॥   |
| बोझा दोनेवाले बैलक नाम ९ ॥  | दिहायनी दिवर्पा गौ—<br>दो वर्षकी गायक नाम २ ॥ दिहा<br>यनी १ दिवर्पा २ ॥                 |
| धूर्वह १ धुर्म्य २ धौरेय ३ धुरीण ४<br>धुरन्वर ५ ॥                             | —रेकाब्दा स्वेकहायनी ॥<br>एकवर्षकीक नाम २ ॥ एकब्दा १<br>एकहायनी २ ॥                     |
| उमावेकधुरीणैकधुरावेकधु<br>रावहे ॥ ६५ ॥  | चतुरब्दा चतुर्हाय—<br>चार वर्षके नाम २ ॥ चतुरब्दा १<br>चतुर्हायणी २ ॥                   |
| एक बासके दोनेवालेके नाम ३ ॥ एक-<br>धुरीण १ एकधुर २ एकधुरावह ३ ॥ ६५ ॥          | —ष्वेर्व ध्यब्दा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥<br>तीन वर्षका नाम २ ॥ ध्यब्दा १<br>त्रिहायणी २ ॥ ६८ ॥ |
| स तु सर्वधुरीण स्याद्यो वै<br>सर्वधुरावह ॥                                    | वशा वन्द्या—<br>बासके नाम २ ॥ वशा १ वन्द्या २   |
| जो सन बोझा छे चले उसके नाम<br>२ ॥ सर्वधुरीण १ सर्वधुरावह २ ॥                  | —ऽवतोका तु स्रवद्भमा—<br>जिसका अफम्मात् गर्भ गिराया                                     |
| माहेयी सौरभेयी गौरुसा<br>माता च शृगिणी ॥ ६६ ॥                                 | गायक नाम ० ॥ माहयी १ सौर हा उस गायक नाम ॥ भरता १  |
| अगुन्यध्या रोहिणी स्यात्—<br>गायक नाम ० ॥ माहयी १ सौर हा उस गायक नाम ॥ भरता १ | मयी २ गो ३ म्या ४ माम् ५ शृगिणी मन्त्रमा २ ॥  |

-थे सन्धिनी ॥

आक्रान्ता वृषभेणा-

बैलके साथ लगाईहुई गायका नाम

१॥ संधिनी १ ॥

-थे वेहद्रभोपघातिनी ॥६९॥

बैलके सयोगसे गर्भको गिरा देने-  
वाली गायके नाम २ ॥ वेहत् १ गर्भो-  
पघातिनी २ ॥ ६९ ॥

काल्योपसर्या प्रजने-

जिसको गर्भ धारण करनेका समय  
हो उसका नाम १ ॥ उपसर्या १ ॥

-प्रष्टौही बालगर्भिणी ॥

पहलौनका नाम १ ॥ प्रष्टौही १॥

स्यादचण्डी तु सुकरा-

सूधी गौके नाम २ ॥ अचण्डी १

सुकरा २ ॥

-बहुसूतिः परेष्टुकाः ॥ ७० ॥

बहुत दफे व्याई हुईके नाम २ ॥

बहुसूति १ परेष्टुका २ ॥ ७० ॥

चिरप्रसूता वष्कयिणी-

वकेन ( बहुतदिनोंमें व्यानेवाली )  
गायके नाम २ ॥ चिरप्रसूता १ वष्क-  
यिणी २ ॥

-धेनुः स्यान्नवसूतिका ॥

नई व्याई हुईके नाम २ ॥ धेनु १  
नवसूतिका ॥

सुव्रता सुखसन्दोह्या-

जो सरलतासे दुहोंजाय उस गायके

नाम २ ॥ सुव्रता १ सुखसदोह्या २॥

-पीनोघ्री पीवरस्तनी ॥७१॥

वडे अयनवालीके नाम २॥ पीनोघ्री

१ पीवरस्तनी २ ॥ ७१ ॥

द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा-

द्रोण १ २॥ सेरदुग्ध देनेवालीके नाम

२॥ द्रोणक्षीरा १ द्रोणदुग्धा २ ॥

-धेनुष्या बन्धके स्थिता ॥

गिरवी रखी हुईका नाम १ ॥

धेनुष्या १ ॥

समांसमीना सा यैव प्रतिवर्ष

प्रसूयते ॥ ७२ ॥

प्रतिवर्ष व्यानेवाली गौका नाम १॥

समांसमीना १ ॥ ७२॥

ऊधस्तु क्लीबमापान-

अयन (औहडी) के नाम २॥ ऊधस्तु

१ आपीन २ ॥

--समौ शिवककीलकौ ॥

खूटके नाम २॥ शिवक १ कीलक २॥

न पुंसि दाम सन्दानं-

दुहनेके समय पायबाधनेकी रस्तीके

नाम २ ॥ दामन् १ सदान २ ॥

पशुरज्जुस्तु दामनी ॥७३॥

पशु बाधनेकी रस्तीके नाम २॥ पशु-

रज्जु १ दामनी २ ७३ ॥

वैशाखमन्यमन्यामन्यानो  
मन्यदण्डके ॥

मयनेका ददा अर्थात् रूके नाम १ ॥

वैशाख १ मन्य २ मन्याम ३ मयिन्  
४ मन्यदण्डक ५ ॥

कुठरो दण्डविष्कम्भो-

जिसमें रू बांधी जाय उसका छेके

नाम २ ॥ कुठर १ ॥ दण्डविष्कम्भ २ ॥

मयनी गर्गरी समे ॥ ७४ ॥

मयनेके पात्रके नाम २ मन्यनी १

गर्गरी २ ॥ ७४ ॥

उष्ट्रे क्रमेल्कमयमहाङ्गाः-

ऊँके नाम ४ ॥ उष्ट्र १ क्रमेल्क २

मय ३ महाङ्ग ४ ॥

-कर्म\* शिशु\* ॥

ऊँके बच्चेके नाम २ ॥ कर्म १

शिशु २ ॥

करमा स्युः श्रृङ्खला वार्षे

पादबन्धने ॥ ७५ ॥

बाह्यम वेरयध हूए बबका नाम १ ॥

शृङ्खल १ ॥ ७५ ॥

अजा छागी-

सहगर्भ नाम २ ॥ अजा १ छागी २ ॥

गुभ्रच्छागपस्तच्छगलका अजे

इति नाम ॥ गुभ्र १ छाग २

अजा ३ ॥

मेढ्रोर्ध्वोरणोर्णायुमेववृष्णय ए  
डके ॥ ७६ ॥

मेढ्रेक नाम ७ ॥ मद् १ उरम २

उरण ३ ऊर्णायु ४ मय ५ वृष्णि ६

एडक ७ ॥ ७६ ॥

उण्डोरध्राजवृन्दे स्यादोष्कौर  
भ्रकाजकम् ॥

ऊँके समूहका नाम १ ॥ औष्क १ ॥

मेढ्रोके समूहका नाम १ ॥ भ्रकाजक

१ ॥ भ्रके (वक्रोके) समूहका नाम १ ॥

भानक १ ॥

चक्रोवन्तस्तु बाळेया रासमा  
गदमा खराः ॥ ७७ ॥

गधेक नाम ५ ॥ चक्रोवन्त १ बाळेय

२ रासम ३ गदम ४ खर ५ ॥ ७७ ॥

वेदेहक साधवाहो नैगमो वाणि

जो वाणिक ॥ पण्याजीवो ह्याप

णिक कपविक्रयिकश्च स ॥ ७८ ॥

व्यापारीक नाम ८ ॥ वेदेहक १ साध

वाह २ नैगम निगम ३ वाणिज ४

पणिज ५ ॥ पण्याजीव ६ व्यापारिक ७

कपविक्रयिक ८ ॥ ७८ ॥

विषेता स्याद्विक्रयिकः-

वागेरा ३क नाम २ ॥ विक्रय १

विक्रय २ ॥

—क्रायिकक्रयिको समौ ॥

मोल लेनेवालेके नाम २ ॥ क्रायिक  
१ क्रयिक २ ॥

वाणिज्यं तु वणिज्या स्या-  
व्यापारके नाम २ ॥ वाणिज्य १  
वणिज्या २ ॥

—मूल्यं वस्त्रोऽप्यवक्रयः ॥ ७९ ॥

मोलके नाम ३ ॥ मूल्य १ वस्त्र २  
अवक्रय ३ ॥ ७९ ॥

नीवी परिपणो मूलधनं—

मूलधनके नाम ३ ॥ नीवी १ परि-  
पण २ मूलधन ३ ॥

—लभोऽधिकं फलम् ॥

नफेके नाम ३ ॥ लभ १ अधिक २ फल ३

परिदानं परीवर्तो नैमेयनिम-  
यावपि ॥ ८० ॥

अदले बदलेके नाम ४ ॥ परिदान १  
परीवर्त २ नैमेय ३ निमय ४ ॥ ८० ॥

पुमानुपनिधिर्न्यासः—

धरोहरके नाम २ ॥ उपनिधि १ न्यास २ ॥

—प्रतिदानं तदर्पणम् ॥

धरोहर लौटा देनेके नाम २ ॥ प्रति-  
दान १ तदर्पण २ ॥

क्रये प्रसारितं क्रय्यं—

वेचनेके अर्थ दुकानमें रखी हुई  
वस्तुका नाम १ ॥ क्रय्य १ ॥

क्रयं क्रेतव्यमात्रके ॥ ८१ ॥

दुकानपर रखने योग्य वस्तुका नाम  
१ ॥ क्रय १ ॥ ८१ ॥

विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं—

वेचनेयोग्य वस्तुके नाम ३ ॥ विक्रेय  
१ पणितव्य २ पण्य ३ ॥

—क्रय्यादयस्त्रिषु ॥

भाषा—क्रय्य आदि शब्द तीनो  
लिंगोंमें होते हैं ॥

क्रीवे सत्यापनं सत्यङ्कारः स-  
त्याकृतिः स्त्रियाम् ॥ ८२ ॥

साई अर्थात् वयानेके नाम ३ ॥ सत्या-  
पन १ सत्यङ्कार २ सत्याकृति ३ ॥ ८२ ॥

विपणो विक्रयः—

वेचनेके नाम २ ॥ विपण १ विक्रय २ ॥

—संख्याः संख्येये ह्यष्टादश त्रिषु ॥

एकसे अष्टादश पर्यंत संख्या गिनने  
योग्य वस्तुमें रहती है और वह संख्याशब्द  
संख्येय शब्दवत् तीनो लिंगोंमें होते हैं ॥

विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः  
संख्येयसंख्ययोः ॥ ८३ ॥

विंशति ( बीस ) आदि सपूर्ण संख्या  
( गिनती ) और संख्येय अर्थात् गिनने-  
योग्य वस्तुमें रहती है और विंशति आदि  
शब्द सदा एकवचन होते हैं ॥ ८३ ॥

संख्यार्थं द्विवहुत्वे स्त—



क. वल िनस्ती अर्धवाले विंशति आदि  
शब्द द्विचन और बहुवचनमें होता है ॥

—स्तासु चानवते स्त्रिय ॥

विंशति आदि नवतिपर्यंत शब्द  
स्त्रीलिङ्ग होता है ॥

पक्ते शतसहस्रादि क्रमाद्  
शमुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥

दश संख्याका क्रमसे उत्तरोत्तर दश  
गुण शत सहस्र आदि संख्याएँ होती  
हैं ॥ ८४ ॥

यौतवं तुवय पाठ्यमिति  
मानार्थकं त्रयम् ॥

तोष्ठके नाम ३ ॥ यौतव १ तुवय  
२ पाठ्य ३ ॥

मानं तुलांशुलिप्रत्ययै-

( तोष्ठ तीन प्रकारकी है ) तुलामान  
१ अंशुलिमान २ प्रत्यमान ३ ॥

-शुभ्रा पञ्चायमायक ॥ ८५ ॥

पाँच रसीका शाओक माया  
मासा होता है ॥ ८५ ॥

ते पोडशासः कर्पोऽस्त्री-

सोडहमासका एक अक्ष होता है  
उसको ही कर्प कहते हैं ॥

-पलं कर्पचतुष्टयम् ॥

चार कर्मका एक पल होता है ॥

सुवणभिस्ती देवोऽप्ते-

कपमर सुवर्णके नाम २ ॥ सुवर्ण १  
भिस्ति २ ॥

-कुरुभिस्त्वस्तु सत्पले ॥ ८६ ॥

पलमर सुवर्णका नाम १ ॥ कुरु-  
भिस्ति १ ॥ ८६ ॥

तुला स्त्रियां पञ्चशत-

सौ पञ्चका नाम १ ॥ तुला १ ॥

-भार स्पर्द्धिस्तुला ॥

बीस तुलाका नाम १ ॥ भार १ ॥

आचितो दश भाराः स्युः-

दशभारका नाम १ ॥ आक्षिप्त १ ॥

-क्षान्ते भार आचित ॥ ८७ ॥

शकटमर भारका नाम १ ॥ आक्षिप्त  
१ ॥ ८७ ॥

कापापणं कार्षिकं स्या-

चादीक क्षयके नाम २ ॥ कार्ष-  
पण १ कार्षिक २ ॥

-त्कार्षिके ताम्रिके पणः ॥

तामेका कर्षापण अर्थात् पैठेका  
नाम पण १ ॥

अस्त्रियामादकद्रोणौ खारी

वाहो निकुञ्चकः ॥ ८८ ॥

कुडब प्रस्य इत्याद्या परि-

माणार्थका प्रत्यक् ॥

( चार सैरका नाम ) भाटक १

( भाट आठकका नाम ) द्रोण १ ॥

( तीन द्रोणका नाम ) खारी १॥ ( आठ द्रोणका नाम ) बाह १ ॥ ( मुट्ठीभरका नाम ) निकुचक १॥ ८८ ॥ ( पावभरका नाम ) कुडव १॥ ( सेरभरका नाम ) प्रस्थ १ ॥ इत्यादि अलग २ तोलके नाम हैं ॥

पादस्तुरीयो भागः स्या-

चौथे भागका नाम १ ॥ पाद १॥

-दंशभागौ तु षण्टके ॥ ८९ ॥

बाट अर्थात् भागके नाम ३॥ अश १ भाग २ षटक ३ ॥ ८९ ॥

द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु ॥ हिरण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थैर्विभवा अपि ॥ ९० ॥

धनके नाम १३ ॥ द्रव्य १ वित्त २ स्वापतेय ३ रिक्थ ४ ऋक्थ ५ धन ६ वसु ७ हिरण्य ८ द्रविण ९ द्युम्न १० अर्थ ११ १२ विभवा १३ ॥ ९० ॥

स्यात्कोषश्च हिरण्यं च हेमरूप्ये कृताकृते ॥

गढे वा नहीं गढे हुए सोने वा चांदीके नाम २ ॥ हिरण्य १ कोष २॥

ताभ्यां यदन्यत्तत्कुप्यं-

सोने चांदीसे अन्य ताम्रादि धातुका नाम १ ॥ कुप्य १ ॥

-रूप्य तद्वयमाहतम् ॥ ९१ ॥

तावा और चांदीके मिलाये हुएका नाम १ ॥ रूप्य १ ॥ ९१ ॥

गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः ॥

मरकतमणिके नाम ४ ॥ गारुत्मत १ मरकत २ अश्मगर्भ ३ हरिन्मणि ४ ॥

शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागो-

पद्मरागमणिके नाम ३ ॥ शोणरत्न १ लोहितक २ पद्मराग ३ ॥

-ऽथ मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥

मुक्ता-

मोतीके नाम २ ॥ मौक्तिक १ ॥ ९२ ॥

मुक्ता २ ॥

-ऽअथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुनपुंसकम् ॥

मूंगेके नाम २ ॥ विद्रुम १ प्रवाल २ ॥

रत्नं मणिर्द्वयोश्मजातौ मुक्तादिकेपि च ॥ ९३ ॥

पद्मराग आदि पाषाण जाति और मुक्ताफल आदिके नाम २ ॥ रत्न १ मणि २ ॥ ९३ ॥

स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेमहाटकम् ॥ तपनीयं शातकुम्भं गांगेयं भर्म कर्षुरम् ॥ ९४ ॥ चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने ॥ रुक्मं कार्तरवरं जा-

मूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् ॥ ९५ ॥

सुर्कर्णक नाम १९ ॥ स्पर्ण १ सुवर्ण २

कनक ३ हिरण्य ४ इमन् ५ हाटक ६ तप

नीय ७ शातकुम्भ ८ गागेय ९ मर्मन् १०

फर्तुर ११ ॥ ९४ ॥ चामीकर १२

जातरूप १३ महारजत १४ काचन १५

रुक्म १६ कार्धस्वर १७ जौननद १८

अष्टापद १९ ॥ ९९ ॥

अलकारसुवर्ण यच्छृङ्गीकनक-

मित्यद् ॥

सुर्कर्णे गहनेका नाम १ ॥ ण्गीकनक १ ॥

दुर्वर्ण रजत रूप्य खर्जूर श्वेतमि

त्यपि ॥ ९६ ॥

चादीक नाम ९ ॥ दुर्कर्ण १ रजत २

रूप्य ३ खर्जूर ४ रूप्य ५ ॥ ९७ ॥

रीति स्त्रियामारकूणे न स्त्रि

या-

पीतलके नाम २ ॥ रीमि १ आरकू २ ॥

-मरु ताम्रकम् ॥ शुल्ब म्ले

च्छमुखव्यष्टवरिष्टोदुम्बराणि

य ॥ ९७ ॥

तावक नाम ३ ॥ ताम्रक १ तुल्य २

उष्टमुम् १ उष्ट ३ वारिष्ट ५ उदुम्बर ६

॥ ९७ ॥

लोहोष्ठी शस्त्रकं सीष्ण

पिण्डं काण्यमायसी ॥

अश्मगागे-

लोहके नाम ७ ॥ लोह १ शस्त्रक २

सीष्ण ३ पिण्ड ४ काण्यमायसी ५

अश्मसार ७ ॥

-ऽय मण्डूर सिंहाणमपि

तन्मले ॥ ९८ ॥

लोहके मल अर्थात् मण्डूरके नाम २ ॥

मण्डूर १ सिंहाण २ ॥ ९८ ॥

सर्व च तेजर्स लोह-

चादी सोना लोहादि सर्ववातुमोंका

नाम १ ॥ लोह १ ॥

-विकारस्त्वयसं कुशी ॥

लोहके फालका नाम १ ॥ कुशी १ ॥

सारः काचो-

काचक नाम २ ॥ सार १ काच २ ॥

-ऽय चपलो रतं सूत्रम्

पारदे ॥ ९९ ॥

पारक नाम ४ ॥ चपल १ रत २

सूत ३ पारद ४ ॥ ९९ ॥

गवलं माहिष शृग-

भसेक सीगका नाम १ ॥ गवल १ ॥

-मम्रक गिरिजामल ॥

अनरसके नाम ३ ॥ मम्रक १ गिरिज २

अमउ ३ ॥

स्रोतोध्नं तु सीधीर कापा

साधनयामुने ॥ १०० ॥

सुर्माके नाम ३ ॥ स्रोतोध्न १ सीधीर

रकापोताध्न ३ यामुन ४ ॥ १० ॥

तुत्याञ्जनं शिखिग्रीव वितुन्न-  
कमयूरके ॥

तूतिया (नीलायोथा) के नाम ४ ॥

तुत्याञ्जन १ शिखिग्रीव २ वितुन्नक ३  
मयूरक ४ ॥

कर्परी दाविका काथोद्भवं तुत्थं-  
तूतियाके भेद ३ ॥ कर्परी १ दाविका  
२ तुत्थ ३ ॥

-रसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥

रसगर्भ ताक्ष्यशैलं-

रसोत्तके नाम ३ ॥ रसाञ्जन १ ॥ १०१ ॥

रसगर्भ २ ताक्ष्यशैल ३ ॥

-गन्धाश्मनि तु गान्धिक ॥

सौगान्धिकश्च-

गन्धकके नाम ३ ॥ गन्धाश्मन् १

गान्धिक २ सौगान्धिक ३ ॥

-चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुल-  
त्थिका ॥ १०२ ॥

काले सुर्मेके नाम ३ ॥ चक्षुष्या १  
कुलाली २ कुलत्थिका ३ ॥ १०२ ॥

रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पौष्पकं

कुसुमाञ्जनम् ॥

पीतलको तपाके विसनेसे जो अञ्जन  
वने उसके नाम ४ ॥ रीतिपुष्प १ पुष्प  
केतु २ पौष्पक ३ कुसुमाञ्जन ४ ॥

पिञ्जरं पातिनं तालमालं च-

-हरितालके ॥ १०३ ॥

हरितालके नाम ५ ॥ पिञ्जर १

पीतन २ ताल ३ आल ४ हरिता-  
लक ५ ॥ १०३ ॥

गैरेयमर्थ्य गिरिजमश्मजं च  
शिलाजतु ॥

शिलाजीतके नाम ५ ॥ गैरेय १ अर्थ्य  
२ गिरिज ३ अश्मज ४ शिलाजतु ५ ॥

बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोप-  
रसाः समाः १०४ ॥

गन्धरसके नाम ५ ॥ बोल १ गन्धरस  
२ प्राण ३ पिण्ड ४ गोपरस ५ ॥ १०४ ॥

डिण्डीरोऽब्धिकफः फेनः-

समुद्रझागके नाम ३ ॥ डिण्डीर १  
अब्धिकफ २ फेन ३ ॥

-सिन्दूरं नागसंभवम् ॥

सिन्दूरके नाम २ ॥ सिन्दूर १ नाग  
संभव २ ॥

नागसीसकयोगेष्टवप्राणि-

सीसेके नाम ४ ॥ नाग १ सीसक २  
योगेष्ट ३ वप्राणि ४ ॥

-त्रपु पिच्चटम् ॥ १०५ ॥

रङ्गवङ्गे-

रागके नाम ४ ॥ त्रपु १ पिच्चट २  
॥ १०५ ॥ रंग ३ वङ्ग ४ ॥

-अथ पिचुस्तूलो-

रुईके नाम २ ॥ पिबु १ तूळ २ ॥

—ऽथ कमलोत्तरम् ॥ स्यात्कुसु  
म्भ बद्धिशिख महारजनमि  
त्यापि ॥ १०६ ॥

कुसुम्भके नाम ४ कमलोत्तर १ कुसुम्भ  
२ बद्धिशिख ३ महारजन ४ ॥ १०६ ॥

मेपकम्बल ऊर्णायाः—

ऊनी कम्बलके नाम २ ॥ मेपकम्बल

१ ऊर्णाया ० ॥

—शशोर्णं अशलोमाने ॥

शरगोस्तकी ऊनके नाम २ ॥ शशोर्ण १

शशलोमान २ ॥

मधु सौद्र माक्षिकादि—

शहदक नाम २ ॥ मधु १ सौद्र २

माक्षिक ३ ॥

मधूच्छिष्ट तु सिक्थकम् ॥ १०७ ॥

मोमके नाम २ ॥ मधूच्छिष्ट १ सिक्थक

२ ॥ १ ० ॥

मनशिला मनोगुप्ता मनोहा

नागजिह्विका ॥ नैपाली कुनटी

गोला—

मैनखिलक नाम ७ ॥ मनशिला १

मनोगुप्ता २ मनोहा ३ नागजिह्विका

४ नैपाली ५ कुनटी ६ गोला ७ ॥

—यवक्षारो यवाम्रजः ॥ १०८ ॥

पाक्यो—

यथाक्षारक नाम ३ ॥ यवक्षार १

यवाम्रज २ ॥ १०८ ॥ पाक्य ३ ॥

—ऽथ सर्जिकाक्षारः कापोतः

सुखवचक ॥ सौवर्चल स्या-

द्वचक—

सर्जिके नाम ५ ॥ सर्जिकाक्षार १ कापोत

२ सुखवचक ३ सौवर्चल ४ द्वचक ५ ॥

—त्वक्क्षीरी वशरोचना ॥ १०९ ॥

यशलोचनक नाम २ ॥ त्वक्क्षीरी

१ वशरोचना २ ॥ १०९ ॥

शिम्रज श्वेतमरिच—

‘सफेदमिर्चके नाम २ ॥ शिम्रज १

श्वेतमरिच २ ॥

—मोरटं मूलमैसवम् ॥

ईलकी जडका नाम १ ॥ मोरट १ ॥

मन्थिक पिप्पलीमूलं चटका

शिर इत्यपि ॥ ११० ॥

पीपलामूलके नाम ३ ॥ मन्थिक १

पिप्पलीमूल २ चटकाशिरस ३ ॥ ११० ॥

गोलोमी मूलकेशो ना—

जटामांसीके नाम १ ॥ गोलोमी १

मूलकेश २ ॥

—पत्राङ्ग रक्तचन्दनम् ॥

पतंगके नाम २ ॥ पत्राङ्ग १

रक्तचन्दन २ ॥

शिकटु व्यूपर्ण व्योषं—

सोठ पीपल मिर्च इन तीनोंके समूहके  
नाम ३॥ त्रिकटु १ त्र्यूपण २ व्योष ३॥

-त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥१११॥

आवला हरड - वहेडा इन तीनोंके  
समूहके नाम २ ॥ त्रिफला १ फलत्रिक  
२ ॥ १११ ॥

इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

अथ शूद्रवर्गः १०.

शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च  
जघन्यजाः ॥

शूद्रके नाम ४ ॥ शूद्र १ अवरवर्ण २  
वृषल ३ जघन्यज ४ ॥

आचण्डालात्तु सङ्कीर्णा अम्बष्ठ  
करणादयः ॥ १ ॥

(ब्राह्मणीमें शूद्रसे उत्पन्न हो उसका  
नाम) चण्डाल १॥ चण्डालसे ले अम्बष्ठ  
करण आदिकोंका नाम १॥सर्कीर्ण १॥१॥

शूद्राविशोस्तु करणो-

शूद्रामें वैश्यसे उत्पन्नहुएका नाम १॥  
करण १ ॥

-अम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनोः ॥

वनेनीमें ब्राह्मणसे उत्पन्न हो तो  
उसका नाम १ ॥ अम्बष्ठ १ ॥

शूद्राक्षत्रिययोरुयो-

शूद्रामें क्षत्रियसे उत्पन्नहुएका नाम  
१ ॥ उग्र १ ॥

-मागधः क्षत्रियाविशोः ॥२॥

क्षत्रियाणीमें वैश्यसे उत्पन्नहुएका

नाम १ ॥ मागध १ ॥ २ ॥

माहिष्योर्याक्षत्रिययोः-

वनेनीमें क्षत्रियसे उत्पन्नहुएका

नाम १ ॥ माहिष्य १ ॥

-क्षत्ताऽर्याशूद्रयोः सुतः ॥

वनेनीमें शूद्रसे उत्पन्नहुएका नाम

१ ॥ क्षत्तृ १ ॥

ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूत-

ब्राह्मणीमें क्षत्रियसे उत्पन्न हुएका

नाम १ ॥ सूत १ ॥

-स्तस्यां वैदेहको विशः ॥ ३॥

ब्राह्मणीमें वैश्यसे उत्पन्नहुएका नाम

१ ॥ वैदेहक १ ॥ ३ ॥

रथकारस्तु महिष्यात्करण्यां

यस्य संभवः ॥

करणीमें माहिष्यसे उत्पन्न हुएका

नाम १ ॥ रथकार १ ॥

स्याच्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्म-

ण्यां वृषलेन यः ॥ ४ ॥

ब्राह्मणीमें शूद्रसे उत्पन्न हुएका

नाम १ ॥ चण्डाल १ ॥ ४ ॥

कारुः शिल्पी-

कारीगरोंके नाम २ ॥ कारु १

शिल्पिन् २ ॥

—सहस्रैस्तेदयोः श्रेणिं सजा  
तिभिः ॥

कारीगरोंके समूहका नाम १ ॥ श्रेणि १ ॥

कुलकं स्यात्कुलश्रेणी—

कारीगरोंके अफसर अर्थात् मिस्त्र-  
रोंके नाम २ ॥ कुलक १ कुलश्रेणी २ ॥

—मालाकारस्तु मालिकं ॥ ५ ॥

मालीके नाम २ ॥ मालाकार १  
मालिक २ ॥ ५ ॥

कुम्भकार कुलालं स्या—

कुम्भारके नाम २ ॥ कुम्भकार १  
कुलाल २ ॥

—त्पलगण्डस्तु लेपकं ॥

फलगरके नाम २ ॥ पलगण्ड १  
लेपक २ ॥

तन्तुवायं कुविन्दः स्या—

शुलाहके नाम २ ॥ तन्तुवाय १  
कुविन्द २ ॥

—तुन्नवायस्तु सौधिकं ॥ ६ ॥

दरजीके नाम २ ॥ तुन्नवाय १  
कुविन्द २ ॥ ६ ॥

रक्षाजीवविप्रकार —

चित्रकारके नाम २ ॥ रक्षाजीव १  
चित्रकार २ ॥

—शस्त्रमार्जोऽसिधावकं ॥

शिक्षिजीगरके नाम २ ॥ शस्त्रमार्ज  
१ असिधावक २ ॥

पादुकचर्मकार स्या—

चमारके नाम २ ॥ पादुक १ चर्मकार २ ॥

—दधोकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥

लोहारके नाम २ ॥ ॥ म्योकार १  
लोहकारक २ ॥ ७ ॥

नाडिधमं स्वर्णकार कलादो

रुक्मकारकं ॥

सुनारके नाम ४ ॥ नाडिधम १  
स्वर्णकार २ कलाद ३ रुक्मकारक ४ ॥

स्याच्छास्त्रिकं काम्यविकं —

मन्त्रिकारके नाम २ ॥ शास्त्रिक १  
काम्यविक २ ॥

—शौल्विकस्ताम्रकुट्टकं ॥ ८ ॥

छेरेके नाम २ ॥ शौल्विक १  
ताम्रकुट्टक २ ॥ ८ ॥

तथा तु वर्षकिस्त्वष्टा रथका

रस्तु काष्ठतट ॥

कट्टाके नाम ९ ॥ तक्षन् १ वर्षकि  
२ तट्ट ३ रथकार ४ काष्ठतट ५ ॥

ग्रामाधीनो ग्रामतक्ष—

गोंबके कट्टाके नाम २ ॥ ग्रामा  
धीन १ ग्रामतक्ष २ ॥

—कौटवकोऽनधीनकः ॥ ९ ॥

एतत्तक्षकट्टाका नाम १ ॥ कौटव  
१ ॥ ९ ॥

धुरी मुण्डी दिवाकीर्तिनापि

तान्तावसायिनः ॥

नाईके नाम ५ ॥ क्षुरिन् १ मुडिन् २  
दिवाकीर्ति ३ नापित ४ अन्तावसायिन् ५ ॥

निर्णेजकः स्याद्रजकः—

धोवीके नाम २ ॥ निर्णेजक १  
रजक २ ॥

—शौण्डिको मण्डहारकः ॥ १० ॥

कलालके नाम २ ॥ शौण्डिक १  
मण्डहारक २ ॥ १० ॥

जावालः स्यादजाजीवो—

गढारियेके नाम २ ॥ जावाल १  
अजाजीव २ ॥

देवाजीवस्तु देवलः ॥

पण्डाके नाम २ ॥ देवाजीव १ ॥  
देवल २ ॥

स्यान्माया शाम्बरी—

इन्द्रजालके नाम २ ॥ माया १  
शाम्बरी २ ॥

मायाकारस्तु प्रतिहारकः ॥ ११ ॥

इन्द्रजाली अर्थात् बार्जागरके नाम २  
मायाकार १ प्रतिहारक २ ॥ ११ ॥

शैलालिनस्तु शैलूषा जाया  
जीवाः कृशाश्विनः ॥ भरता इत्यपि  
नटा—

नटके नाम ६ ॥ शैलालिन् १ शै-  
लूप २ जायाजीव ३ कृशाश्विन् ४  
भरत ५ नट ६ ॥

श्रारणास्तु कुशीलवाः ॥ १२ ॥

कथकके नाम २ ॥ चारण १ कुशी-  
लव २ ॥ १२ ॥

मार्दङ्गिका मौरजिकाः—

मृदगके वजानेवालेके नाम २ ॥  
मार्दङ्गिक १ मौरजिक २ ॥

—पाणिवादास्तु पाणिवाः ॥

ताली वजानेवालेके नाम २ ॥ पा-  
णिवाद १ पाणिघ २ ॥

वेणुध्माः स्युर्वैणविका—

वांसुरी वजानेवालेके नाम ॥ २ ॥  
वेणुध्मा १ वैणविक २ ॥

वे —वीणावादास्तु वैणिकाः १३ ॥  
वीणा वजानेवालेके नाम २ ॥ वीणा-

वाद १ वैणिक २ ॥ १३ ॥

जीवान्तकः शाकुनिको—

चिडीमारके नाम २ ॥ जीवान्तक  
१ शाकुनिक २ ॥

—द्वौ वागुरिकजालिकौ ॥

व्याधके नाम २ ॥ वागुरिक १  
जालिक २ ॥

वैतंसिकः कौटिकश्च मांसि-  
कश्च समं त्रयम् ॥ १४ ॥

कसाईके नाम ३ ॥ वैतंसिक १  
कौटिक २ मांसिक ३ ॥ १४ ॥

भृतको भृतिभुक्कर्मकरो वैत-  
निकोऽपि सः ॥



मन्त्रके नाम ४ ॥ मृतक १ मृतिमु  
ज २ कर्मकर ३ भैतनिक ४ ॥

वार्तावहो वैवाधिको—

दूतके नाम २ ॥ वार्तावह १ वै-  
धिक २ ॥

—भारवाहस्तु भारिकः ॥ १५ ॥

घोषा उद्यनेवालेके नाम २ ॥

मारवाह १ भारिक २ ॥ १५ ॥

विषर्ण पामरो नीच प्राकृ  
पृथग्जनः ॥ निहीनोऽ-

पसदो जाल्मा कुल्लकश्चेतर  
श्च सः ॥ १६ ॥

नीचके नाम १० ॥ विषर्ण १ पामर २  
नीच ३ प्राकृत ४ पृथग्जन ५ नि  
हीन ६ अपसद ७ जाल्म ८ कुल्लक ९  
श्चेतर १० ॥ १६ ॥

भृत्ये दासेरदासेयदासगो  
प्यकचेटकाः ॥ निपोज्य  
किंकरमैष्यमुजिष्यपरिचारकाः १७

दास वा टहल्लुके नाम १ ॥ भृत्य १  
दासेर २ दासेय ३ दास ४ गोप्यक ५  
चेटक ६ निपोज्य ७ किंकर ८ मैष्य ९  
मुजिष्य १ परिचारक ११ ॥ १७ ॥

पराधितपरिस्कन्दपरमातपरै  
यिता ॥

जो दूसरेसे पालाजाय उसके अयात्  
रुत्वाके नाम ४ ॥ पराधित १ परिस्कन्द  
२ परजात ३ परेधित ४ ॥

—मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः  
शीतकोष्ठसोऽनुष्णः ॥ १८ ॥

आलसीके नाम ६ ॥ मंद १ तुन्दप  
रिमृज २ आलस्य ३ शीतक ४ अस्त ५  
अनुष्ण ६ ॥ १८ ॥

दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सु  
त्थान उष्णश्च ॥

चतुरके नाम ६ ॥ दक्ष १ चतुर २  
पेशल ३ पटु ४ सुत्थान ५ उष्ण ६ ॥

चण्डालपुत्रमात्रद्वादिवाकीर्ति  
जनंगमा ॥ १९ ॥ निषाद

श्वपसावन्तेवासिचाण्डालपुत्रस्तः ॥

चाण्डालके नाम १० ॥ चण्डाल १  
पुत्र २ मात्रद्वा ३ दिवाकीर्ति ४ जनंगम  
५ ॥ १९ ॥ निषाद ६ श्वपस ७ अन्त  
वासिन् ८ चाण्डाल ९ पुत्रस्त १० ॥

भेदाः किरातशयरपुलिन्दा म्ले  
च्छजातयः ॥ २० ॥

म्लेच्छजातिके भेद जगदी गोमंस  
जामेराठ हेबुदभाधिके नाम ३ ॥ किरात  
१ शयर २ पुलिन्द ३ ॥ २० ॥

व्याधा मृगवधामीवो मृग  
युष्टयकाऽपि ॥ ॥

मृग पकडनेवालेके नाम ४ ॥ व्याध १  
मृगवधाजीव २ मृगयु ३ लुब्धक ४ ॥

कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरो  
मृगदंशकः ॥ २१ ॥ शुनको  
भषकः श्वा स्या-

कुत्तेके नाम ७ ॥ कौलेयक १  
सारमेय २ कुक्कुर ३ मृगदंशक ४ ॥ २१ ॥  
शुनक ५ भषक ६ श्वन् ७ ॥

दलर्कस्तु स योगितः ॥

प्रयोगसे उन्मत्त हुए कुत्तेका नाम  
१ ॥ अलर्क १ ॥

श्वा विश्वकटुर्मृगयाकुशलः-  
शिकारी कुत्तेका नाम १ ॥ विश्व-  
कटु १ ॥

-सरमा शुनी ॥ २२ ॥

कुतियाके नाम २ ॥ सरमा १ शुनी २ ॥ २२ ॥

विट्चरः सूकरो ग्रास्यो-

गावके सूकरका नाम १ ॥ विट्चर १ ॥

-वर्करस्तरुणः पशुः ॥

तरुणपशुका नाम १ ॥ वर्कर १ ॥

आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो

मृगया स्त्रियाम् ॥ २३ ॥

शिकारके नाम ४ ॥ आच्छोदन १

मृगव्य २ आखेट ३ मृगया ४ ॥ २३ ॥

दक्षिणारुर्लब्धयोगादक्षिणेर्मा

कुरङ्गकः ॥

व्याधने जिस मृगके दहिने अंगमे  
मारा हो उसका नाम १ ॥ दक्षिणेर्मन् १ ॥

चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्क-  
रमोपकाः ॥ २४ ॥ प्रतिरोधि-  
परास्कन्दिपाटञ्चरमलिम्लुचाः ॥

चोरके नाम १० ॥ चोर १ ऐका-  
गारिक २ स्तेन ३ दस्यु ४ तस्कर ५  
मोपक ६ ॥ २४ ॥ प्रतिरोधिन् ७ परा-  
स्कन्दिन् ८ पाटञ्चर ९ मलिम्लुच १० ॥

चौरिका स्तेन्यचौर्ये च स्तेयं-  
चोरीके नाम ४ ॥ चौरिका १  
स्तेन्य २ चौर्य ३ स्तेय ४ ॥

लोप्त्रं तु तद्धने ॥ २५ ॥

चौरीके मालका नाम १ ॥ लोप्त्र १ ॥ २५ ॥

वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृग-  
पक्षिणाम् ॥

पक्षी वा मृगोंके पकडनेकी सामग्री  
अर्थात् जालादिका नाम १ ॥ वीतंस १ ॥

उन्माथः कूटयन्त्रं स्या-

कावकपीजरे आदिके नाम २ ॥

उन्माथ १ कूटयन्त्र २ ॥

-द्वागुरा मृगबन्धनी ॥ २६ ॥

जालके नाम २ ॥ वागुरा १

मृगबन्धनी २ ॥ २६ ॥

शुर्व्वं वराटकं स्त्री तु रज्जु-  
स्त्रिषु वशी गुणः ॥

रस्तीके नाम ५ ॥ शुल्ब १ वरा  
टक २ रम्भ ३ घटी ४ गुण ५ ॥  
उट्टाटन घटीयन्त्र सलिलो  
दाहन प्रहेः ॥ २७ ॥  
बरहटके नाम २ ॥ उट्टाटन १  
घटीयन्त्र २ ॥ २७ ॥

पुसि वेमा वायदण्ड-  
शुलाहेके कपडा घुननेके औजारके  
नाम २ ॥ वेमन् १ वायदण्ड २ ॥

-सूत्राणि नरि वन्तवः-  
सूत्रके नाम २ ॥ सूत्र १ वन्तु २ ॥  
-वाणिर्ग्युति' खियौ तुल्ये  
कपडे आदिके घुननेके नाम २ ॥  
वाणि १ व्युति २ ॥

-पुस्त लेप्पादिकर्मणि ॥ २८ ॥  
मिट्टी आदिसे छीपने पोतनेका  
नाम १ ॥ पुस्त १ ॥ २८ ॥

पाञ्चालिका पुत्रिका स्याद्  
खदन्तादिभिः कृता ॥  
गुडियाँ अर्थात् बख्खी धनाई  
हुई पुताछीफ नाम २ ॥ पाञ्चालिका  
१ पुत्रिका २ ॥

जतुप्रपुत्रिकारे तु जातुपं  
प्रापुपं त्रिपु ॥  
छाएक मिश्रणनाम १ ॥ जातुपं  
पंगरु मिश्रणनाम १ ॥ प्रापुप १ ॥

पिटक पेटक' पेटा मञ्जूषा-  
पिटारेके नाम ४ ॥ पिटक १  
पेटक २ पेटा ३ मञ्जूषा ४ ॥

5-य विशङ्गिका ॥ २९ ॥  
-भारयाष्टि-

बह्मी ( खैनी ) के नाम २ ॥ मिह  
गिका १ ॥ २९ ॥ भारयाष्टि २ ॥

स्तवालम्बि शिख्य काचो-  
बह्मीके छीकेके नाम २ ॥ शिख्य  
१ काच २ ॥

-अथ पादुका ॥ पादुरुपानत्स्त्री-  
जुताके नाम १ ॥ पादुका १ पादुर  
उपानत् २ ॥

-सैवानुपदीना पदायता ॥ ३० ॥  
मोजेके नाम १ ॥ अनुपदीना २ ॥ ३० ॥

नधी बधी वरत्रा स्या  
चमबकी रस्तीके नाम ३ ॥ नधी १  
बधी २ वरत्रा ३ ॥

-दम्भादेस्ताडनी कशा ॥  
कोडका नाम १ ॥ कशा १ ॥  
घाण्डालिका तु कण्डोलबी-  
णा घण्डालघटकी ॥ ३१ ॥

किंगरीबाजोंके नाम २ ॥ घाण्डा  
डिका १ कण्डोलबीणा २ घण्डाल  
घटकी ३ ॥ ३१ ॥

नाराची स्यादेषणिका—

काटा अर्थात् सोना आदि तोलनेकी तराजूके नाम २॥ नाराची १ एषणिका २॥

—शाणस्तु निकषः कषः ॥

कसौटीके नाम ३ ॥ शाण १  
१ निकष २ कष ३ ॥

ब्रश्चना पत्रपरशु—

रेतीके नाम २॥ ब्रश्चन १ पत्रपरशु २॥

—रीषिका तूलिका समे ॥ ३२ ॥

सलाईके नाम २ ॥ ईषिका १  
तूलिका २ ॥ ३२ ॥

तैजसा वर्तनी मृषा—

सुवर्ण इत्यादि धातु गलानेकी धरियाके नाम ३॥ तैजसा १ वर्तनी २ मृषा ३॥

—भस्त्रा चर्मप्रसेविका ॥

फूकनीके नाम २ ॥ भस्त्रा १ चर्म-  
प्रसेविका २ ॥

आस्फोटनी वेधनिका—

बमके नाम २ ॥ आस्फोटनी १  
वेधनिका २ ॥

—कृपाणी कर्तरी समे ॥ ३३ ॥

एक प्रकारकी कैचीके नाम २ ॥  
कृपाणी १ कर्तरी २ ॥ ३३ ॥

वृक्षादनी वृक्षभेदी—

बसूले आदिके नाम २ ॥ वृक्षादनी  
१ वृक्षभेदी २ ॥

—टंकः पाषाणदारणः ॥

टाकी अर्थात् पत्थरफोडनेके हथि-

यारके नाम २॥ टङ्क १ पाषाणदारण २॥

क्रकचोऽस्त्री करपत्र—

आरेके नाम २॥ क्रकच १ करपत्र २॥

—मारा चर्मप्रभेदिका ॥ ३४ ॥

आरीके नाम २॥ आरा १ चर्मप्र-  
भेदिका २ ॥ ३४ ॥

सूर्मी स्थूणाऽयःप्रतिमा—

लोहेकी मूर्तिके नाम ३॥ सूर्मी १

स्थूणा २ अयःप्रतिमा ३ ॥

—शिल्पं कर्म कलादिकम् ॥

कारीगरीका नाम १ ॥ शिल्प १ ॥

प्रतिमानं प्रतिविम्बं प्रति-

माप्रतियातना प्रतिच्छाया

॥ ३५ ॥ प्रतिकृतिरर्चा पुंलि

प्रतिनिधि—

प्रतिमा अर्थात् तसवीरके नाम ८॥

प्रतिमान १ प्रतिविम्ब २ प्रतिमा ३

प्रतियातना ४ प्रतिच्छाया ५ ॥ ३५ ॥

प्रतिकृति ६ अर्चा ७ प्रतिनिधि ८ ॥

—रूपमोपमानं स्यात् ॥

मिसाल और जिसकी मिसाल दी

जाय उसके नाम २॥ उपमा १ उपमान २॥

वाच्यलिङ्गः समस्तुल्यः स-

दृक्षः सदृशः सदृक् ॥ ३६ ॥

साधारणः समानश्च—

बराबरके नाम ७ ॥ सम १ तुल्य २

सदृश ६ सदृश ४ सदृश ५ ॥ ३६ ॥  
साधारण १ समान ७ ॥

—स्युरुत्तरपदे स्वमी ॥ निभस  
काशनीकाशप्रतीकाशोपमाद  
य\* ॥ ३७ ॥

समानक नाम ५ ॥ निभ १ स्काश २  
नीकाश ३ प्रतीकाश ४ उपमा ५ ॥ ३७ ॥

कर्मण्या तु विद्या मृत्या मृतयो  
भर्म वेतनम् ॥ भरण्य भरण मूल्य  
निर्वेशः पण इत्यपि ॥ ३८ ॥

मजूरीक नाम ११ ॥ कर्मण्या १  
विना २ मृत्या ३ मृति ४ भर्मन् ५ वेतन  
६ भरण्य ७ भरण ८ मूल्य ९ निर्वेश  
१० पण ११ ॥ ३८ ॥

सुरा हलिमिया हाळा परिसु  
ट्टरुणात्मजा ॥ गन्धोत्तमाप्रसन्ने  
राकादम्बर्य\* परिसुता ॥ ३९ ॥  
मदिरा कश्यमघे चा—

मदिरा अघात् शरीरक नाम १३ ॥  
सुरा १ हलिमिया २ हाळा ३ परिसुत ४  
प्रसन्नात्मजा ५ गन्धोत्तमा ६ प्रसन्ना ७  
इराट कादम्बरी ८ परिसुता १ ॥ ३९ ॥  
मदिरा ११ कश्य १२ मघ १३ ॥

—प्यवदगस्तु भक्षणम् ॥

मद्यपानकी रुचि उत्पन्न करनेके  
उपयुक्त भूजा वना इत्यादिक खाने नाम  
१ ॥ भक्षणम् १ ॥

शुण्डापान मदस्थानं—

मदिरा पीनेके स्थानके नाम २ ॥

शुण्डापान १ मदस्थान २ ॥

—मधुबारा मधुकमा\* ॥ ४० ॥

मदिरा पीनेके सम्पक नाम २ ॥ मधु

वार १ मधुकम २ ॥ ४० ॥

मध्वासवो माधवको मधु  
माध्वीकमद्रयो\* ॥

मध्वासवे उत्पन्न मदिराके नाम ४०

मध्वासव १ माधवक २ मधु ३ माध्वीक ४ ॥

मैरयमासव\* सीधु—

गुडसीराक्षी मदिराके नाम ३१ मैरय

१ आसव २ सीधु ३ ॥

—मैदको जगल\* समौ ॥ ४१ ॥

मदिराकी कोकसके नाम २ ॥ मैदको

जगल २ ॥ ४१ ॥

सधान स्यादमिषव—

मदिराकत्तने नाम २ ॥ सधान १

अमिषव २ ॥

—किष्वं पुंसि तु नमह\* ॥

तुलुकादि द्रव्यसु बनारद्रव्य मयके

नाम २ ॥ किष्व १ नमह २ ॥

कारोत्तरः सुरामण्ड—

मदिरा मण्डके नाम २ ॥ कारोत्तर

१ सुरामण्ड २ ॥

—आपान पानगोष्ठिका ॥ ४२ ॥

दाहपीनकी समारु नाम २ ॥ आपान

१ पानगोष्ठिका २ ॥ ४२ ॥

चषकोऽस्त्री पानपात्रं—

दारु पीनेके वर्त्तन (प्याले)के नाम

२ ॥ चपक १ पानपात्र २ ॥

—सरकोऽस्थनुतर्षणम् ॥

मदिरा पीनेके नाम २ ॥ सरक १

अनुतर्षण २ ॥

धूर्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्तो  
द्यूतकृत्समाः ॥ ४३ ॥

जुबारीके नाम ५ ॥ धूर्त १ अक्ष-  
देविन् २ कितव ३ अक्षधूर्त ४ द्यूतकृत् ५  
॥ ४३ ॥

स्युर्लभकाः प्रतिभुवः—

जामिनके नाम २ ॥ लभक १ प्रतिभू २ ॥

—सभिका द्यूतकारकाः ॥

जुआ खिलानेवा ठेके नाम २ ॥ सभिक  
१ द्यूतकारक २ ॥

द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण  
इत्यपि ॥ ४४ ॥

जूएके नाम ४ ॥ द्यूत १ अक्षवती  
२ कैतव ३ पण ४ ॥ ४४ ॥

पणोऽक्षेषु ग्लहो—

बार्जा लगानेके नाम २ ॥ पण १ ग्लह २ ॥

—ऽशास्तु देवनाः पाशकाश्च ते ।

पासेके नाम ३ ॥ अक्ष १ देवन २  
पाशक ३ ॥

परिणायस्तु शारीणां समन्ता-  
न्नयनेऽस्त्रियाम् ॥ ४५ ॥

सारक डधर उधर फेरनेका नाम १ ॥

परिणाय १ ॥ ४५ ॥

अष्टापदं शारिफलं—

विसायती ( चौपड ) के नाम २ ॥

अष्टापद १ शारिफल २ ॥

—प्राणिद्यूतं समाह्वयः ॥

मुरगा आदि जीवोंकी लड़ाईरूप द्यूतके  
नाम २ ॥ प्राणिद्यूत १ समाह्वय २ ॥

उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मि-  
न्येव यौगिकाः ॥ ४६ ॥ तादृ-  
म्यादन्यतो वृत्तावूह्या लिङ्गा-  
न्तरेऽपि ते ॥

भाषा—इस वर्गमें जो यौगिक मालाका-  
रमार्दङ्गिक वैणविक आदि शब्द कान्या-  
दिकोंके अधिक प्रयोगके अनुसार केवल  
पुल्लिङ्गहीमे कहें हैं वह शब्द व्याकरणके  
नियमानुसार स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्गमेंभी  
होते हैं जैसे मालाकारकी स्त्री मालाकारी  
और मालाकारका कुल मालाकार इसी  
प्रकार सर्वत्र जानना ॥ ४६ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानु-  
शासने ॥ भूम्यादिकाण्डो द्वितीयः  
सांग एव समर्थितः ॥ ४७ ॥

इति श्रीमदमरसिंहविरचितामरकोशे

ज्वालाप्रसादकृतभाषाटीकाया

द्वितीयः काण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

इति द्वितीयः काण्डः ॥ २ ॥

॥ श्री ॥

## अथ तृतीयकाण्डः ३

अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः १

विशेष्यनिघ्नैः सर्कीर्णैः नाना  
धैरव्ययैरापि ॥ लिंगादिसंघ  
दैर्बर्गा सामान्ये वर्गसंख्या ॥ १ ॥

भाषा—इस सामान्य तृतीयकाण्डमें  
स्वर्गादि वर्गोंके आश्रित शब्द विशेष्य-  
निघ्नवर्ग सर्कीर्णवर्ग मानार्थवर्ग अव्ययवर्ग  
और स्त्रीलिंगादिसंघवर्गोंके द्वारा कहेंगे १

स्त्रीदाराधैर्यविशेष्यं यादृशै  
प्रस्तुत पदैः ॥ गुणद्रव्यक्रियाश  
ब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः ॥ २ ॥

भाषा—स्त्री दार आदि विशेष्यभूत  
पोंमें जो छिन्न और सन्ध्या हो बहो छिन्न  
और सन्ध्या गण और द्रव्य तथा क्रिया  
पाचकशब्दोंमें दो भेद कर स्त्री आदि  
शब्दोंके गुण द्रव्य क्रिया पाचक शब्द  
विशेष्य हा सक्र दे जैसे 'मुरतिनी स्त्री,  
मुरतिनो गरा मुरति पत्रम् ।  
दण्डिनी स्त्री दण्डिनो दारा दण्डि  
पत्रमाश्रिता स्त्री पाचका दारा  
पाचक कउत्रम् ॥ ॥

मुकृती पुण्यवान् धन्यो—

माग्यवान् पुण्यते नाम १ ॥

मुकृतिन् १ पुण्यक्त् २ धन्य १ ॥

—महेच्छस्तु महाशय ॥

उदारचित्तपुरुषक नाम १ ॥ महच्छ

१ महाशय २ ॥

इदयालुः सुहृदयो—

सुहृदचित्तपुरुषक नाम २ ॥ इदयालु

१ सुहृदय २ ॥

—महात्साहो महोद्यम ॥ ३ ॥

बहुत उद्यम करनेवाले पुरुषक नाम

॥ २ महोत्साह १ महायम २ ॥ ३ ॥

प्रवीणो निपुणाभिज्ञविज्ञानि

प्यातशिक्षिताः ॥ वैज्ञानिक

कृतमुखः पृथ्वी कुशल

इत्यपि ॥ ४ ॥

चतुरपुरुषक नाम १० ॥ प्रवीण १

निपुण २ अभिज्ञ ३ विज्ञ ४ निष्णात ५

शिक्षित ६ वैज्ञानिक ७ कृतमुख ८

कृतिन् ९ कुशल १० ॥ ४ ॥

पूज्यः प्रतीक्ष्यः—

माग्यपुरुषक नाम ११ ॥ प्रतीक्ष्य १॥

सांशयिकः संशयापन्नमानसः॥

संशय करानेवाली वस्तुके नाम २ ॥

सांशयिक १ संशयापन्नमानस २ ॥

दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दक्षि-  
ण्य इत्यपि ॥ ५ ॥

दक्षिणाके योग्यपुरुषके नाम ३ ॥ द-  
क्षिणीय १ दक्षिणार्ह २ दक्षिण्य ३ ॥ ५ ॥

स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा  
बहुप्रदे ॥

अतिदानी पुरुषके नाम ४ ॥ वदान्य  
१ स्थूललक्ष्य २ दानशौण्ड ३ बहुप्रद ४ ॥

जैवातृकः स्यादायुष्मा-

दीर्घायु पुरुषके नाम २ ॥ जैवातृक  
१ आयुष्मत् २ ॥

-नन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥ ६ ॥

शास्त्रीके नाम २ ॥ अन्तर्वाणि १  
शास्त्रविद् २ ॥ ६ ॥

परीक्षकः कारणिको-

परीक्षकके नाम २ ॥ परीक्षक १ कारणिक २

-वरदस्तु समर्थकः ॥

वरदान देनेवालेके नाम २ ॥ वरद १  
समर्थक २ ॥

हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना  
दृष्टमानसः ॥ ७ ॥

प्रसन्नके नाम ४ ॥ हर्षमाण १ विकुर्वा-  
ण २ प्रमनस् ३ दृष्टमानस ४ ॥ ७ ॥

दुर्मना विमवा अन्तर्मनाः-

उदास पुरुषके नाम ३ ॥ दुर्मनस् १

विमनस् २ अन्तर्मनस् ३ ॥

-स्यादुत्क उन्मनाः ॥

उत्कण्ठायुक्त पुरुषके नाम २ ॥

उत्क १ उन्मनस् २ ॥

दक्षिणे सरलोदारौ-

सीधे पुरुषके नाम ३ ॥ दक्षिण १  
सरल २ उदार ३ ॥

-सुकलो दातृभोक्तारि ॥ ८ ॥

दानी और भोगीपुरुषका नाम १  
सुकल १ ॥ ८ ॥

तत्परे प्रसितासक्ता-

कार्यविशेषमें चित्त लगानेवाले पुरुष-  
के नाम ३ ॥ तत्पर १ प्रसित २ आसक्त ३ ॥

-विष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः ॥

अभीष्टवस्तुके प्राप्त करनेमें तत्पर  
पुरुषके नाम २ ॥ इष्टार्थोद्युक्त १ उत्सुक २ ॥

प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञा-  
तविश्रुताः ॥ ९ ॥

प्रसिद्ध पुरुषके नाम ६ ॥ प्रतीत १  
प्रथित २ ख्यात ३ वित्त ४ विज्ञात ५  
विश्रुत ६ ॥ ९ ॥

गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणाहि-  
तलक्षणौ ॥

गुणोंसे प्रसिद्ध पुरुषके नाम २ ॥ कृत-  
लक्षण १ आहितलक्षण २ ॥



इभ्य आदयो घनी-

घनी पुरुषके नाम ३ ॥ इभ्य १  
आदय २ घन्ति ३ ॥

-स्वामी त्वीश्वर पतिरीशिता  
॥ १० ॥ अधिमूनायको नेवा प्रमु  
परिवृढोऽधिपः ॥

स्वामीके नाम १० ॥ स्वामिन् १  
इश्वर २ पति ३ ईशित ४ ॥ १ ॥  
अधिमू ५ नायक ६ नेव ७ प्रमु ८ परि  
वृढ ९ अधिप १ ॥

अधिकर्हि समृद्ध स्या-

सम्पत्तिमान् पुरुषके नाम २ ॥  
अधिकर्हि १ समृद्ध २ ॥

-कुटुम्बव्यापृतस्तु य ॥ ११ ॥

स्यादभ्यागारिकत्वस्मिन्नुपा  
धिष्व पुमानयम् ॥

कुटुम्बके पालनकरनेमें तत्परपुरुषके  
नाम ३ ॥ कुटुम्बव्यापृत १ ॥ ११ ॥  
अभ्यागारिक २ उपाधि ३ ॥

वराङ्गरूपोपेतो यः सिंहसं  
हननो हि स ॥ १२ ॥

भग्न भोर रूपसे अतिथेष्ठ पुरुषका  
नाम १ ॥ सिंहसहनन १ ॥ १२ ॥

निर्वायः कायकर्ता यः स  
म्पत्तः सत्त्वसम्पदा ॥

जो कुं-खमेंमी प्रसन्नताके साथ काय

किया करताहै उस पुरुषका नाम १ ॥  
निर्वाय १ ॥

अवाचि मूको-

गुणे पुरुषके नाम २ ॥ मवाच् १ मूक २ ॥

-ऽय मनोजवसः पितृस  
न्निभः ॥ १३ ॥

जो पुरुष पिताके समान माना जाय  
उस पुरुषके नाम २ ॥ मनोजवसः १ पितृ  
सन्निभ २ ॥ १३ ॥

सत्कृत्पालकृतां कन्यां यो  
ददाति स कूकुद् ॥

जो बरको आदरपूर्वक कन्यामूला  
सहित कन्यादान द उस पुरुषका नाम  
१ ॥ कूकुद् १ ॥

लक्ष्मीर्वाह्यश्मणः श्रील  
श्रीमा-

शोमावान्के नाम ४ ॥ लक्ष्मीवत् १  
लक्ष्मण २ श्रील ३ श्रीमत् ४ ॥

स्निग्धस्तु वत्सल ॥ १४ ॥

स्नेही पुरुषके नाम २ ॥ स्निग्ध १  
वत्सल २ ॥ १४ ॥

स्याद्व्याधुः कारुणिक कृ  
पाक्षः सूरतः समा ॥

दयावात्पुरुषके नाम ४ ॥ दवाधु १  
कारुणिक २ व्याधु ३ सूरत ४ ॥

स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्व-  
च्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥

स्वतन्त्र पुरुषके नाम ५ ॥ स्वतन्त्र १  
अपावृत २ स्वैरिन् ३ स्वच्छन्द ४  
निरवग्रह ५ ॥ १५ ॥

परतन्त्रः पराधीनः परवान्ना-  
थवानापि ॥

पराधीनपुरुषके नाम ४ ॥ परातन्त्र १  
पराधीन २ परवत् ३ नाथवत् ४ ॥

अधीनो निम्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो  
गृह्यकोऽप्यसौ ॥ १६ ॥

अधीनके नाम ५ ॥ अधीन १ निम्न २  
आयत्त ३ अस्वच्छन्द ४ गृह्यक ५ ॥ १६ ॥

खलपूः स्याद्बहुकरो-

बुहारने झारनेवाले मनुष्यके नाम २ ॥  
खलपू १ बहुकर २ ॥

-दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ॥

दीर्घसूत्र ( थोड़ी देरके कामको  
बहुत देरमें करनेवालों ) के नाम २ ॥  
दीर्घसूत्र १ चिरक्रिय २ ॥

-जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्या-

विना विचारे कार्यकरनेवाले पुरुषके  
नाम २ ॥ जाल्म १ असमीक्ष्यकारिन् २

-कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ॥ १७ ॥

आलसी वा मूढ़ पुरुषका नाम १ ॥  
कुण्ठ १ ॥ १७ ॥

कर्मक्षमोऽलं कर्मीणः-

कार्यकरनेमें समर्थपुरुषके नाम २ ॥

कर्मक्षम १ अलं कर्मीण २ ॥

-क्रियावान्कर्मसूद्यतः ॥

कार्यकरनेमें तत्पर पुरुषका नाम १ ॥

क्रियावत् १ ॥

स कर्मः कर्मशीलो यः-

जो नित्यकाममें लगारहै उस पुरुषके  
नाम २ ॥ कर्म १ कर्मशील २ ॥

-कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥ १८ ॥

प्रयत्नपूर्वक जो कार्यको समाप्त  
करै उस पुरुषके नाम २ ॥ कर्मशूर १  
कर्मठ २ ॥ १८ ॥

भरण्यभुक्कर्मकरः-

मजदूरके नाम २ ॥ भरण्यभुज् १  
कर्मकर २ ॥

-कर्मकारस्तु तत्क्रियः ॥

विना मजदूरीके भी जो कार्य करदेय  
उस पुरुषका नाम १ ॥ कर्मकार १ ॥

अपस्नातो मृतस्नात-

किसीके मरनेके अनन्तर स्नान किये  
हुये पुरुषके नाम २ ॥ अपस्नात १  
मृतस्नात २ ॥

-आमिषाशी तु शौष्कुलः १९ ॥

मांस खानेवाले पुरुषके नाम २ ॥  
आमिषाशिन् १ शौष्कुल २ ॥ १९ ॥

धुमुक्षितः स्यात्धुधितो जि  
घत्सुरशनायितः ॥

भूखे पुरुषके नाम ४ ॥ धुमुक्षितः १  
धुधित २ जिघत्सु ३ अशनायितः ४ ॥

पराश्रः परापिण्डादो-

जो पराय ही अश्रसे जीता हो उस  
पुरुषके नाम २ ॥ पराश्रः १ परापिण्डादः २ ॥

-भस्मको घस्मरोऽधरः ॥ २० ॥

खानेवालेके नाम १ ॥ भस्मकः १ घस्मरः  
२ अधरः ३ ॥ २० ॥

आघूर्नः स्यादौदरिको वि  
जिगीषाविवर्जिते ॥

अलम्बही भूखे पुरुषके नाम २ ॥  
आघूर्नः १ औदरिकः २ ॥

उभौ त्वात्मभरिः कुक्षिभरिः  
स्वोदरपूरके ॥ २१ ॥

पेटको ही भरनेवाले पुरुषके नाम २ ॥  
आत्मभरिः १ कुक्षिभरिः २ ॥ २१ ॥

सर्वाङ्गीनस्तु सर्वाङ्गमोजी-

जो सब अङ्गोंका अङ्ग मोजन करलेता  
हो उस पुरुषके नाम २ ॥ सर्वाङ्गीनः १  
सर्वाङ्गमोजिन् २ ॥

-गृध्रस्तु गर्धनः ॥

हृन्धोऽमिलापुकस्तृष्णक-

छोमी पुरुषके नाम १ ॥ गृध्रः १  
गर्धनः २ हृन्धः ३ अमिलापुकः ४ तृष्णकः ५ ॥

-समी लोहपलोद्भू ॥ २२ ॥

असिलोमीके नाम २ ॥ लोहपः १  
लोद्भू २ ॥ २२ ॥

सोन्मादस्तून्मदिष्णुः स्या-

उम्भत्तपुरुषके नाम २ ॥ उम्मादः १  
उमदिष्णुः २ ॥

-द्विनीतः समुद्धतः ॥  
अभ्यायी पुरुषके नाम २ ॥ द्विनीतः १  
समुद्धतः २ ॥

मत्ते शीष्णोत्कटशीवा-

मत्तवालेके नाम ४ ॥ मत्तः १ शीष्णः  
२ उत्कटः ३ क्षीवः ४ ॥

-कामुके कमिताञ्जुकः ॥ २३ ॥  
कम्पः कामयिताञ्जुके कामनः  
कामनोऽमिकः ॥

कामीके नाम १ ॥ कामुकः १ कमितः २  
अञ्जुकः ३ ॥ २३ ॥ कम्पः ४ कामयितः  
५ अमिकः ६ कामनः ७ कामनः ८ अमिकः ९

विधेयो विनयप्राप्ती बचने

स्थित आश्रयः ॥ २४ ॥

बचनप्रवृत्ति करनेवाले पुरुषके नाम ४  
विधेयः १ विनयप्राप्तिन् २ वचनस्थितः ३  
आश्रयः ४ ॥ २४ ॥

वश्यः प्रणयो-

वशीभूतके नाम २ ॥ वश्यः १ प्रणयः २ ॥  
-निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः ॥

नम्रपुरुषके नाम ३ ॥ निभृत १

विनीत २ प्रश्रित ३ ॥

धृष्टे धृष्णग्वियातश्च-

धीठ पुरुषके नाम ३ ॥ धृष्ट १

धृष्णञ् २ वियात ३ ॥

-प्रगल्भः प्रतिभान्विते ॥२५॥

अतिधीठ निर्भय पुरुषके नाम २ ॥

प्रगल्भ १ प्रतिभान्वित २ ॥ २५ ॥

स्यादधृष्टे तु शालीनो-

लज्जवान् पुरुषके नाम २ ॥ अधृष्ट

१ शालीन २ ॥

-विलक्षो विस्मयान्विते ॥

अचम्भेमें पडेहुए पुरुषके नाम २ ॥

विलक्ष १ विस्मयान्वित २ ॥

अधीरे कातर-

व्याकुलहुए पुरुषके नाम २ ॥ अधीर

१ कातर २ ॥

-स्वस्ते भीरुभीरुकभीलकाः ॥२६॥

हरपोकके नाम ४ ॥ त्रस्त १ भीरु

भीरुक ३ भीलुक ४ ॥ २६ ॥

आशंसुराशंसितरि-

इष्ट अर्थप्राप्तिकी इच्छावाले पुरुषके

नाम २ ॥ आशसु १ आशसितृ २ ॥

-गृह्यालुर्ग्रहीतरि ॥

लेनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम २ ॥

गृह्यालु १ ग्रहीतृ २ ॥

श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते-

श्रद्धायुक्त स्वभाववाले पुरुषका नाम

१ ॥ श्रद्धालु १ ॥

-पतयालुस्तु पातुके ॥ २७ ॥

गिरनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम २ ॥

पतयालु १ पातुक २ ॥ २७ ॥

लज्जाशीलेऽपत्रपिण्णु-

लज्जाशील पुरुषके नाम २ ॥ लज्जा-

शील १ अपत्रपिण्णु २ ॥

-वन्दारुरभिवादके ॥

वन्दना करनेके स्वभाववाले पुरुषके

नाम २ ॥ वन्दारु १ अभिवादक २ ॥

शरारुर्घातुको हिंसः-

हिंसा करनेके स्वभाववाले पुरुषके

नाम ३ ॥ शरारु १ घातुक २ हिंस ३ ॥

-स्याद्वर्द्धिष्णुस्तु वर्धनः ॥२८॥

बढनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम २ ॥

वर्द्धिष्णु १ वर्धन २ ॥ २८ ॥

उत्पतिष्णुस्तुत्पतिता-

कूदनेके स्वभाववालेके नाम २ ॥ उत्प-

तिष्णु १ उत्पतितृ २ ॥

-ऽलंकरिष्णुस्तु मण्डनः ॥

भूषण आदि पहरनेके स्वभाववालेके

नाम २ ॥ अलंकरिष्णु १ मण्डन २ ॥

भूष्णुर्भविष्णुर्भविता-

होनेके स्वभाववालेके नाम ३ ॥

भूष्णु १ भविष्णु २ भवितृ ३ ॥

|                                      |                                 |
|--------------------------------------|---------------------------------|
| -वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ॥ २९ ॥        | क्रोधके स्वभाववाछेके नाम १ ॥    |
| वर्षाव करनेके स्वभाववाछेके नाम       | क्रोधन १ अमर्षण २ कोपिन् १ ॥    |
| २ ॥ वर्तिष्णु १ वर्तन २ ॥ २९ ॥       | -चण्डस्त्वत्पन्तकोपन ॥          |
| निराकरिष्णुः सिष्णुः स्या-           | अत्यन्त क्रोधक स्वभाववाछेके नाम |
| तिरस्कार करनेके स्वभाववाछेके         | २ ॥ चण्ड १ अत्यन्तकोपन २ ॥      |
| नाम २ ॥ निराकरिष्णु १ सिष्णु २ ॥     | जागरुको जागरिता-                |
| -त्सान्द्रस्त्रिग्यस्तु मेदुर ॥      | जागनेके स्वभाववाछेके नाम २ ॥    |
| सज्जन और चिक्नेका नाम १ ॥            | जागरुका १ जागरितृ २ ॥           |
| मेदुर ॥ १ ॥                          | -घूर्णित प्रचलायित ॥ ३२ ॥       |
| शाठा तु विदुरो विन्दु-               | घूरनेवाछेके नाम २ ॥ घूर्णित १   |
| जाननेके स्वभाववाछेके नाम ३ ॥         | प्रचलायित २ ॥ ३२ ॥              |
| शातृ १ विदुर २ विन्दु ३ ॥            | स्वप्नकषयाहर्निद्राह-           |
| -विकासी तु विकस्वर ॥ ३० ॥            | निद्राहके नाम ३ ॥ स्वप्न १      |
| खिलनेके स्वभाववाछेके नाम २ ॥         | शयाह २ निद्राह ३ ॥              |
| विनासिन् १ विकस्वर २ ॥ ३० ॥          | -निद्राणशयिनी समी ॥             |
| विस्तृत्वरो विस्तृमर प्रसारी च       | शयन करनेवाछेके नाम १ ॥ निद्राण  |
| वितारिणि ॥                           | १ शयित २ ॥                      |
| फटनेके स्वभाववाछेके नाम ४ ॥          | पराङ्मुख पराचीन-                |
| स्मित्मर १ विसृमर २ प्रसारिन् ३      | भिमुखके नाम २ ॥ पराङ्मुख १      |
| विमारिन् ४ ॥                         | पराचीन २ ॥                      |
| सहिष्णु सहन क्षन्ता तितिक्षुः        | -स्यादवाहप्यधोमुख ॥ ३३ ॥        |
| क्षमिता क्षमा ॥ ३१ ॥                 | नधिकार मुखा करनेवाछेके नाम २ ॥  |
| सहन शक्तिवाछेके नाम १ ॥ सहिष्णु १    | अवाह १ अधोमुख २ ॥ ३३ ॥          |
| सहन २ क्षन्ता ३ तितिक्षु ४ क्षमिता ५ | देवान्धाति देवयज्ञ-             |
| क्षमिन् ६ ॥ ३१ ॥                     | देवगार्हपत्य पूजा करनेवा उका    |
| प्रोषणाऽम्पण कार्षी-                 | नाम १ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥               |

—विष्वद्यङ् विष्वगञ्चति ॥

सब ओर जानेवालेका नाम १ ॥

विष्वद्यच् १ ॥

यः सहाञ्चति सध्यङ् सः—

साथ रहनेवालेका नाम १ ॥ सध्यच् १ ॥

—स तिर्यङ् य स्तिरोऽञ्चति ॥ ३४ ॥

ढेढे चलनेवालेका नाम १ ॥ तिर्यच्

१ ॥ ३४ ॥

वदो वदावदो वक्ता—

वक्ताके नाम ३ ॥ वद १ वदावद २ वक्तृ ३ ॥

—वागीशो वाक्पतिः समौ ॥

चातुर्ययुक्त बोलनेवालेके नाम २ ॥

वागीश १ वाक्पति २ ॥

वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वाव-  
दूकोऽतिवक्तारि ॥ ३५ ॥

शास्त्रानुसार अत्यन्त बोलनेवालेके

नाम ४ ॥ वाचोयुक्तिपटु १ वाग्मिन् २

वावदूक २ अतिवक्तृ ४ ॥ ३५ ॥

स्याज्जल्पाकस्तु वाचालो

वाचाटो बहुगर्ह्यवाक् ॥

अतिनिन्दित भाषण करनेवालेके

नाम ४ ॥ जल्पाक ६ वाचाल २ वाचाट ३

बहुगर्ह्यवाच् ॥ ४ ॥

दुर्मुखे मुखरावद्धमुखौ—

अप्रियबोलनेवालेके नाम ३ ॥

दुर्मुख १ मुखर २ अवद्धमुख ३ ॥

—शक्नुः प्रियंवदे ॥ ३६ ॥

प्रिय बोलनेवालेके नाम २ ॥ शक्नु १

प्रियवट २ ॥ ३६ ॥

लोहलः स्यादस्फुटवा—

जो स्फुट न बोलता हो उस पुरुषके

नाम २ ॥ लोहल १ अस्फुटवाच् २ ॥

—गर्ह्यवादी तु कद्वदः ॥

निन्दितवाक्य बोलनेवाले पुरुषके

नाम २ ॥ गर्ह्यवादिन् १ कद्वद २ ॥

समौ कुवादकुचरौ—

बुराईकहनेवालेके नाम २ कुवाद १

कुचर २ ॥

स्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः ॥ ३७ ॥

रुखे स्वरवालेके नाम २ असौम्य-

स्वर १ अस्वर २ ॥ ३७ ॥

रवणः शब्दनो—

चिह्नानेवालेके नाम २ ॥ रवण १

शब्दन २ ॥

—नान्दीवादी नान्दीकरः समौ ॥

नान्दीवादी अर्थात् नाटकके आर-

म्भे स्तुतिविशेष करनेवालेके नाम २ ॥

नान्दीवादिन् १ नान्दीकर २ ॥

जडोऽज्ञ—

महामूर्खके नाम २ ॥ जड १ अज्ञ २ ॥

—एडमूकस्तु वक्तुं श्रोतुम-

शिक्षिते ॥ ३८ ॥

जो गूंगा बहिरा दोनों हो उसका  
नाम १ ॥ एषमूक १ ॥ ३८ ॥

तूष्णीशीलस्तु तूष्णीको-  
मौनरहनेवाला पुरुषके नाम २ ॥ तू-  
ष्णीशील १ तूष्णीक २ ॥

-नम्रोऽवासा दिगम्बरे ॥  
नमपुरुषके नाम ३ ॥ नम्र १ अवास्त २  
दिगम्बर ३ ॥

निष्कासितोऽवकृष्ट स्या-  
निकासेहुएके नाम २ ॥ निष्कासित  
१ अवकृष्ट २ ॥

-दपञ्चस्तस्तु चिह्नित\* ॥ ३९ ॥  
चिह्नार दियेहुये पुरुषके नाम २ ॥  
अवभस्त १ चिह्नित २ ॥ ३९ ॥

आचगर्वोऽभिभूत\* स्या-  
तिरस्कारको प्राप्तहुय पुरुषके नाम २  
आचगर्व १ अभिभूत २ ॥

-दापितः साधित\* समौ ॥  
घनादि दिवाकर वशमें कियेहुए पुरु-  
षके नाम २ ॥ दापित १ साधित २ ॥

प्रत्यादिष्टो निरस्त स्यात्प्र-  
त्याख्यातो निराकृतः ॥ ४० ॥  
निरादरका प्राप्तहुए पुरुषके नाम ४ ॥  
प्रत्यादिष्ट १ निरस्त २ प्रत्याख्यात ३  
निराकृत ४ ॥ ४० ॥

निवृत्त\* स्याद्विप्रकृतो-  
बुरेरूपभाळेके नाम २ ॥ निवृत्त १  
विप्रकृत २ ॥

बुरेरूपभाळेके नाम २ ॥ निवृत्त १  
विप्रकृत २ ॥

-विप्रलम्भस्तु वञ्चित\* ॥  
छोडिये पुरुषके नाम २ ॥ विप्रलम्भ १  
वञ्चित २ ॥

मनोहृत\* प्रतिहृत\* प्रतिवद्धो  
हृतश्च स\* ॥ ४१ ॥  
मनोहृतपुरुषके नाम ४ ॥ मनोहृत १  
प्रतिहृत २ प्रतिवद्ध ३ हृत ४ ॥ ४१ ॥

अधिसित\* प्रतिक्षितो-  
जिसके ऊपर आक्षेप किया गया  
हो उस पुरुषके नाम २ ॥ अधिक्षित १  
प्रतिक्षित २ ॥

-वद्धे कीलितसंयतौ ॥  
बाधेहुएके नाम ३ ॥ वद्ध १ कीलित २  
संयत ३ ॥

आपन्न आपत्प्राप्त\* स्या-  
भापतिको प्राप्तहुए पुरुषके नाम २  
आपन्न १ आपत्प्राप्त २ ॥

स्कांदिशीको मयदुत\* ॥ ४२ ॥  
मयस मागेहुयेके नाम २ ॥ कांदि-  
शीक १ मयदुत २ ॥ ४२ ॥

आक्षारित क्षारितोऽभिज्ञस्ते-  
मेयुनके निमित्त कृपा दोष उगाय हुए  
पुरुषके नाम ३ ॥ आक्षारित १ क्षारित  
२ अभिज्ञास्त ३ ॥

मेयुनके निमित्त कृपा दोष उगाय हुए  
पुरुषके नाम ३ ॥ आक्षारित १ क्षारित  
२ अभिज्ञास्त ३ ॥

—संकसुकोऽस्थिरे ॥

चचलस्वभाववाले पुरुषके नाम २॥

सकसुक १ अस्थिर २ ॥

व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ—

दैवी और मानुषी पीडासे युक्त पुरुषके

नाम २ ॥ व्यसनार्त १ उपरक्त २ ॥

—विहस्तव्याकुलौ समौ ॥४३॥

शोकादिसे व्याकुलपुरुषके नाम २॥

विहस्त १ व्याकुल २ ॥ ४३ ॥

—विक्लवो विह्वलः—

विकलपुरुषके नाम २ ॥ विक्लव १

विह्वल २ ॥

—स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः ॥

मरणके समीप आनेसे जिसकी

बुद्धि विपरीत होजाय उस पुरुषके नाम

२ ॥ विवश १ अरिष्टदुष्टधी २ ॥

कश्यः कशार्ह—

बेतमारने योग्यके नाम २ ॥ कश्य

१ कशार्ह २ ॥

—सन्नद्धे त्वाततायी वधोद्यते ॥४४॥

मारनेयोग्यका नाम १ ॥ आत-

तायिन् १ ॥ ४४ ॥

द्वेष्ये त्वक्षिगतो—

द्वेष करने लायकके नाम २ ॥

द्वेष्य १ अक्षिगत २ ॥

—वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ ॥

शिरकाटने योग्यके नाम २॥ वध्य १

शीर्षच्छेद्य २ ॥

विष्यो विषेण यो वध्यो—

विपकरके मारने योग्यका नाम १॥

विष्य १ ॥

—मुसल्यो मुसलेन यः ॥४५॥

मुसलसे मारने योग्यका नाम १ ॥

मुसल्य १ ॥ ४५ ॥

शिश्विदानोऽकृष्णकर्मा—

पापकर्म न करनेवाले पुरुषके नाम

२ ॥ शिश्विदान १ अकृष्णकर्मन् २ ॥

—चपलश्चिकुरः समौ ॥

विना दोष विचारे मारनेवालेके नाम

२ ॥ चपल १ चिकुर २ ॥

दोषैकदृक्पुरोभागी—

केवल दोषकी ही दृष्टि करनेवालेके

नाम २॥ दोषैकदृक् १ पुरोभागिन् २ ॥

—निकृतस्त्वनृजुः शठः ॥४६॥

कुटिलहृदयके नाम ३ ॥ निकृत १

अनृजु २ शठ ३ ॥ ४६ ॥

कर्णेजपः सूचकः स्या—

चुगलखोरके नाम २ ॥ कर्णेजप १

सूचक २ ॥

—त्पिशुनो दुर्जनः खलः ॥

आपसमें भेट करानेवालेके नाम ३॥

पिशुन १ दुर्जन २ खल ३ ॥



जो गूंगा बहिरा दोनों हो उसका  
 नाम १ ॥ एषमूक १ ॥ ३८ ॥  
 तूष्णीशीलस्तु तूष्णीको-  
 मोनरहनबाळ पुरुषके नाम २ ॥ तू-  
 ण्णीशील १ तूष्णीक २ ॥ /  
 -नम्रोऽवासा दिगम्बरे ॥  
 नम्रपुरुषके नाम ३ ॥ नम्र १ अवास्तस्  
 २ दिगम्बर ३ ॥  
 निष्कासितोऽवकृष्ट स्या-  
 निकाछेदणके नाम २ ॥ निष्कासित  
 १ अवकृष्ट २ ॥  
 -दपध्वस्तस्तु चिकृत\* ॥ ३९ ॥  
 विचार दियहुय पुरुषके नाम २ ॥  
 अपध्वस्त १ चिकृत २ ॥ ३९ ॥  
 आत्तगर्बोऽभिभूत\* स्या-  
 तिरस्कारको प्राप्तहुय पुरुषके नाम २  
 आत्तगर्ब १ अभिभूत २ ॥  
 -हापितः साधित समौ ॥  
 घनादि दिबाकर बधमे कियेहुए पुरु-  
 षके नाम २ ॥ दासित १ साधित २ ॥  
 प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्र-  
 त्याख्यातो निगकृत ॥ ४० ॥  
 निरादरका प्राप्तहुए पुरुषके नाम ३ ॥  
 प्रत्यादिष्ट १ निरस्त २ प्रत्याख्यात ३  
 निरादर ४ ॥ ४ ॥  
 निकृत\* स्याद्विमकृतो-

धुरेस्पवाळेके नाम २ ॥ निरस्त १  
 विप्रकृत २ ॥  
 -विप्रलब्धस्तु वञ्चित\* ॥  
 छोडुय पुरुषके नाम २ ॥ विप्रलब्ध १  
 वञ्चित २ ॥  
 मनोहृत\* प्रतिहृत\* प्रतिवद्धो  
 हृतश्च स\* ॥ ४१ ॥  
 मनोहृतपुरुषके नाम ३ ॥ मनोहृत १  
 प्रतिहृत २ प्रतिवद्ध ३ हृत ४ ॥ ४१ ॥  
 अधिभित्त\* प्रतिभित्तो-  
 जिसके ऊपर आक्षेप किया गया  
 हो उस पुरुषके नाम २ ॥ अधिभित्त १  
 प्रतिभित्त २ ॥  
 -बद्धे कीलितसंयतो ॥  
 बांधहुएके नाम ३ ॥ बद्ध १ कीलित २  
 संयत ३ ॥  
 आपन्न आपत्प्राप्त\* स्या-  
 आपत्तिको प्राप्तहुए पुरुषके नाम २  
 आपन्न १ आपत्प्राप्त २ ॥  
 त्कांविशीको मयद्भुत\* ॥ ४२ ॥  
 मयसे मागेहुयेके नाम २ ॥ कादि-  
 शीक १ मयद्भुत २ ॥ ४२ ॥  
 आक्षारितः क्षारितोऽभिषस्ते-  
 मेधुनके निमित्त कृया दोष उगाये हुए  
 पुरुषके नाम ३ ॥ आक्षारित १ क्षारित  
 २ अभिषस्त ३ ॥

—संकसुकोऽस्थिरे ॥

चचलस्वभाववाले पुरुषके नाम २॥

संकसुक १ अस्थिर २ ॥

व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ—

दैवी और मानुषी पीडासे युक्त पुरुषके

नाम २ ॥ व्यसनार्त १ उपरक्त २ ॥

—विहस्तव्याकुलौ समौ॥४३॥

शोकादिसे व्याकुलपुरुषके नाम २॥

विहस्त १ व्याकुल २ ॥ ४३ ॥

—विक्लवो विह्वलः—

विकलपुरुषके नाम २ ॥ विक्लव १

विह्वल २ ॥

—स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः ॥

मरणके समीप आनेसे जिसकी

बुद्धि विपरीत होजाय उस पुरुषके नाम

२ ॥ विवश १ अरिष्टदुष्टधी २ ॥

कश्यः कशार्ह—

बेतमारने योग्यके नाम २ ॥ कश्य

१ कशार्ह २ ॥

—सन्नद्धे त्वाततायी वधोद्यते॥४४॥

मारनेयोग्यका नाम १ ॥ आत-

तायिन् १ ॥ ४४ ॥

द्वेष्ये त्वक्षिगतौ—

द्वेष करने लायकके नाम २ ॥

द्वेष्य १ अक्षिगत २ ॥

—वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ ॥

शिरकाटने योग्यके नाम २॥ वध्य १

शीर्षच्छेद्य २ ॥

विष्यो विषेण यो वध्यो—

विपकरके मारने योग्यका नाम १॥

विष्य १ ॥

—मुसल्यो मुसलेन यः ॥४५॥

मुसलसे मारने योग्यका नाम १ ॥

मुसल्य १ ॥ ४५ ॥

शिश्विदानोऽकृष्णकर्मा—

पापकर्म न करनेवाले पुरुषके नाम

२ ॥ शिश्विदान १ अकृष्णकर्मन् २ ॥

—चपलश्चिकुरः समौ ॥

विना दोष विचारे मारनेवालेके नाम

२ ॥ चपल १ चिकुर २ ॥

दोषैकदृक्पुरोभागी—

केवल दोषकी ही दृष्टि करनेवालेके

नाम २॥ दोषैकदृक् १ पुरोभागिन् २ ॥

—निकृतस्वनृजुः शठः ॥४६॥

कुटिलहृदयके नाम ३ ॥ निकृत १

अनृजु २ शठ ३ ॥ ४६ ॥

कर्णेजपः सूचकः स्या—

चुगलखोरके नाम २ ॥ कर्णेजप १

सूचक २ ॥

—त्पिशुनो दुर्जनः खलः ॥

आपसमें भेद करानेवालेके नाम ३॥

पिशुन १ दुर्जन २ खल ३ ॥

नृशंसो घातुकः शूरः पापो-  
घातक अथवा कठोरपुरुषके नाम ४

नृशंस १ घातुक २ शूर ३ पाप ४ ॥

-पूर्वस्तु वञ्चकः ॥ ४७ ॥

उगके नाम २॥ पूर्व १ वञ्चक २ ॥ ४७ ॥

अज्ञे मूढपयाजासमूर्खवैधियया  
लिङ्गाः ॥

मूर्खके नाम १ ॥ अज्ञ १ मूढ २

पयाजात ३ मूर्ख ४ वैधियया लिङ्गाः ५ ॥

कदर्ये कृपणस्तु कृपिचानमित  
पचाः ॥ ४८ ॥

कृपणके नाम १ ॥ कदर्ये १ कृपण २

स्तुत्र ३ कृपिचान ४ मितप्यञ्च ५ ॥ ४८ ॥

निम्बस्तु दुर्विघो दीनो वरि  
वो दुर्गतोऽपि साः ॥

दरिद्रपुरुषके नाम १ ॥ निम्ब १ दुर्विघ

२ दीन ३ दरिद्र ४ दुर्गत ५ ॥

वनीयको याचनको मागणी  
याचकार्यिनी ॥ ४९ ॥

मागनेवालेके नाम १ ॥ वनीयक १

याचनक २ मागण ३ याचक ४ कार्यिनी

५ ॥ ४९ ॥

अहकारवानहयुः-

अहकारयुक्त पुरुषके नाम २ ॥ अहं-

कारय १ अहयु २ ॥

-शुभयुस्तु शुभान्वितः ॥

शुभयुक्त पुरुषके नाम २ ॥ शुभयु १  
शुभान्वित २ ॥

दिव्योपपादुका देवा-

देवताओंका नाम १ ॥ दिव्योपपा-

दुका १ ॥

-नृगवाद्या जरायुजाः ॥ ५० ॥

मनुष्य, गौ आदि 'जरायुज' कष्ट

तेहें ॥ ५० ॥

स्वेदजाः कुम्भिर्वशाद्याः-

श्रीङ्ग और बांस आदि 'स्वेदज'

कहाते हैं ॥

-पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः ॥

पक्षी, सर्प आदि 'अण्डज' कहाते

हैं ॥

( इति प्राणिवर्गः )

उद्भिद्वस्तरुगुल्माद्या-

वृक्ष, बेल, घास आदि 'उद्भिद'

कहाते हैं ॥

-उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ ५१ ॥

उद्भिदके नाम १ ॥ उद्भिद १

उद्भिज २ उद्भिद ३ ॥ ५१ ॥

शुन्दरं रुचिरं चारु मुपम सा

धु क्षीमनम् ॥ कान्तं मनीरम

रुच्य मनोज्ञ मञ्जु मञ्जुलम् ॥

॥ ५२ ॥

शुन्दरके नाम १ ॥ शुन्दर १ रुचिर २

चारु ३ सुपम ४ साधु ५ शोभन ६  
कान्त ७ मनोरम ८ रुच्य ९ मनोज्ञ १०  
मञ्जु ११ मंजुल १२ ॥ ५२ ॥

तदासेचनकं तृप्तेर्नास्त्यन्तो  
यस्य दर्शनात् ॥

जिसके देखनेसे तृप्तिके अन्तको प्राप्त न  
हो उसका नाम १ ॥ आसेचनक १ ॥

अभीष्टेऽभीप्सितं ह्यं दयितं  
बलुभं प्रियम् ॥ ५३ ॥

प्रियके नाम ६ ॥ अभीष्ट १ अभी-  
प्सित २ ह्यं ३ दयित ४ बलुभ ५  
प्रिय ६ ॥ ५३ ॥

निकृष्टप्रतिकृष्टावरेफयाप्याव-  
माधमाः ॥ कुपूयकुत्सिताव-  
द्यखेटगर्हाणकाः समाः ॥ ५४ ॥

अधमके नाम १३ ॥ निकृष्ट १ प्रति-  
कृष्ट २ अवेन् ३ रेफ ४ याप्य ५ अवम  
६ अधम ७ कुपूय ८ कुत्सित ९ अवद्य  
१० खेट ११ गर्ह १२ अणक १३  
॥ ५४ ॥

मलीमसं तु मलिनं कच्चरं मल-  
दूषितम् ॥

मलिनके नाम ४ ॥ मलीमस १ मलि-  
न २ कच्चर ३ मलदूषित ४

पूतं पवित्रं मेध्यं च-

पवित्रके नाम ३ ॥ पूत १ पवित्र २ मेध्य ३ ॥

—वीध्रं तु विमलार्थकम् ॥ ५५ ॥

स्वभावसे निर्मलके नाम २ ॥ वीध्र १  
विमलार्थक २ ॥ ५५ ॥

निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशो-  
ध्यमनवस्करम् ॥

शुद्ध कियेहुएके नाम ५ ॥ निर्णिक्त १  
शोधित २ मृष्ट ३ निःशोध्य ४ अन-  
वस्कर ५ ॥

असारं फल्गु-

असारवस्तुके नाम २ ॥ असार १ फल्गु २ ॥

—शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्त-  
के ॥ ५६ ॥

शून्यके नाम ४ ॥ शून्य १ वशिक २  
तुच्छ ३ रिक्त ४ ॥ ५६ ॥

क्लीबे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्त-  
मोत्तमाः ॥ मुख्यवर्यवरेण्याश्च  
प्रवर्होऽनवराध्यवत् ॥ ५७ ॥

पराध्याग्रप्राग्रहरप्राग्र्याग्र्या-  
ग्रीयमग्रियम् ॥

प्रधानके नाम १७ ॥ प्रधान १ प्रमुख २  
प्रवेक ३ अनुत्तम ४ उत्तम ५ मुख्य ६  
वर्य ७ वरेण्य ८ प्रवर्ह ९ अनवरार्ध्य १०  
॥ ५७ ॥ परार्थ ११ अग्र १२ प्राग्रहर १३  
प्राग्र्य १४ अग्र्य १५ अग्रीय १६ अग्रिय १७  
श्रेयान् श्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्त  
मश्चातिशोभने ॥ ५८ ॥

अतिसुन्दरके नाम ९ ॥ श्रेयस १  
श्रेष्ठ २ पुष्कल ३ सत्तम ४ अतिशोभन  
५ ॥ १८ ॥

स्थिरुत्तरपदे व्याघ्रपुंगवभक्तु  
अरा\* ॥ सिंहशाबूलनागाद्या  
प्राप्ते अष्टाथगोचरा\* ॥ ५९ ॥  
व्याघ्र, पुंगव, शयम, कुन्जर,  
सिंह, शार्दूल, नागादि शब्दोंके उत्तर  
मानेसे श्रेष्ठ अर्थके वाचक होते हैं जैसे  
पुल्यव्याघ्र, द्विजपुङ्गव इत्यादि ॥ ५९ ॥  
अप्राप्यं द्वयहीने द्वे अप्र  
धानोपसर्जने ॥

अप्रधानके नाम ३ ॥ अप्राप्य १ अप्र-  
धान २ उपसर्जन ३ ॥

विशङ्कटं पृथु वृहद्विशाल पृथुल  
महत् ॥ ६० ॥ बहोरुविपुलं-  
चौर्ध्वके नाम ९ ॥ विशङ्कट १ पृथु  
२ वृहत् ३ विशाल ४ पृथुल ५ महत् ६  
॥ ६० ॥ बहू ७ ट ८ विपुल ९ ॥

-पीनपीप्ती तु स्थूलपीवरे ॥  
मोटेके नाम ४ ॥ पीम १ पीवन् २  
स्थूल ३ पीवर ४ ॥

स्तोकाल्पसुल्लका\* सूक्ष्मं कृष्ण  
दर्भं कृशं तनु ॥ ६१ ॥ त्रिमां  
मात्राश्रुति\* पुमि लबल्लशक  
पाणय ॥

घोटेके नाम १४ ॥ स्तोका १ अल्प २  
सुल्लक ३ सूक्ष्म ४ कृष्ण ५ दर्भ ६ कृश  
७ तनु ८ ॥ ६१ ॥ मात्राश्रुति १०  
लब्ध ११ लेश १२ कण १३ अणु १४ ॥  
अत्यल्पेऽल्पिष्ठमस्पीय\* कनी  
योगीय इत्यपि ॥ ६२ ॥

अतिअल्पके नाम ४ ॥ अल्पिष्ठ १  
अस्पीयस् २ कनीयस् ३ अणीयस् ४ ॥ ६२ ॥  
प्रभूत प्रचुर प्राज्यमदर्भं बहुल  
बहु ॥ पुरुहूः पुरु भूमिर्धं स्फारं  
भूयश्च मूरि च ॥ ६३ ॥

बहुतके नाम १२ ॥ प्रभूत १ प्रचुर २  
प्राज्य ३ अदर्भ ४ बहुल ५ बहु ६ पुरुहू ७  
पुरु ८ भूमिर्ध ९ स्फार १ भूयम् ११  
मूरि १२ ॥ ६३ ॥

परःशताद्यास्ते येपा परा सं  
ख्या शतादिकास्त ॥

जिनकी संख्या शतस अर्थात् सहा  
दिसे अधिक हो वह पर शत भाति  
कहाते हैं ॥

गणनीये तु गणेर्य-  
गिननयोग्य वस्तुके नाम २ ॥ गण  
नीय १ गणय २ ॥

-संख्यासे गाणित-  
गिनकरने नाम २ ॥ संयान १  
गाणित २ ॥

मथ समं सर्वम् ॥ ६४ ॥

विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तानि-  
खिलाखिलानि निःशेषम् ॥

समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं स्याद-  
नूनके ॥ ६५ ॥

सम्पूर्णके नाम १४ ॥ सम १ सर्व २  
॥ ६४ ॥ विश्व ३ अशेष ४ कृत्स्न ५  
समस्त ६ निखिल ७ अखिल ८ निःशेष  
९ समग्र १० सकल ११ पूर्ण १२  
अखण्ड १३ अनूनक १४ ॥ ६५ ॥

घनं निरन्तरं सान्द्रं-

घनेके नाम ३ ॥ घन १ निरन्तर २ साद्र ३ ॥

-पेलवं विरलं तनु ॥

छितरे ( छीदे ) के नाम ३ ॥ पेलव  
१ विरल २ तनु ३ ॥

समीपे निकटासन्नसन्निकृष्टस-  
नीडवत् ॥ ६६ ॥ सदेशाभ्या-  
शसविधसमर्यादसवेशवत् ॥

उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्राअ  
प्यभितोऽव्ययम् ॥ ६७ ॥

समीपके नाम १५ ॥ समीप १  
निकट २ आसन्न ३ सन्निकृष्ट ४ सनीड  
५ ॥ ६६ ॥ सदेश ६ अभ्याश ७ सविध  
८ समर्याद ९ सवेश १० उपकण्ठ ११  
अन्तिक १२ अभ्यर्ण १३ अभ्यग्रा १४  
अभितः १५ ॥ ६७ ॥

संसक्ते त्वव्यवहितमपदान्तर-  
मित्यपि ॥

मिलेहुएके नाम ३ ॥ संसक्त १ अव्य  
वहित २ अपदान्तर ३ ॥

नेदिष्ठमन्तिकतमं-

अतिसमीपके नाम २ ॥ नेदिष्ठ १  
अन्तिकतम २ ॥

-स्यादूरं विप्रकृष्टकम् ॥ ६८ ॥

दूरके नाम २ ॥ दूर १ विप्रकृष्ट २ ॥ ६८  
दवीयश्च दविष्ठं च सुदूरे-  
अत्यन्तदूरिके नाम ३ ॥ दवीयसू १

दविष्ठ २ सुदूर ३ ॥

-दीर्घमायतम् ॥

लम्बेके नाम २ ॥ दीर्घ १ आयत २ ॥

वर्तुलं निस्तलं वृत्तं-

गोलके नाम ३ ॥ वर्तुल १ निस्तल २  
वृत्त ३ ॥

-बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ६९ ॥

ऊँचेनीचेके नाम २ ॥ बन्धुर १ उन्न  
तानत २ ॥ ६९ ॥

उच्चप्रांश्चूततोदग्रोच्छितास्तुङ्गे-

ऊँचेके नाम ६ ॥ उच्च १ प्राशु २  
उन्नत ३ उदग्र ४ उच्छ्रित ५ तुङ्ग ६ ॥

-ऽथ वामने ॥

न्यङ्नीचखर्वहस्वाः स्यु-

वौने पुरुषके नाम ५ ॥ वामन १  
न्यक् २ नीच ३ खर्व ४ हस्व ५ ॥

—स्वामेष्वनतानसम् ॥ ७० ॥

नमेष्टके नाम ३॥ अशाम १ अव-  
न्त २ आनत ३ ॥ ७० ॥

अराळ वृजिनं जिह्ममूर्मिमत्कु-  
ञ्चित नतम् । आविद्धं कुटिलं  
मुम वेष्टितं वक्रमित्यपि ७१

टेटक नाम ११ अराळ १ वृजिन २  
जिह्म ३ ऊर्मिमत् ४ कुञ्चित ५ नत ६  
आविद्ध ७ कुटिल ८ मुम ९ वक्रित  
१ वक्र ११ ॥ ७१ ॥

ऋजावजिह्मप्रगुणौ—

सीधेके नाम ३॥ ऋजु १ अजिह्म  
२ प्रगुण ३ ॥

—व्यस्ते त्वमगुणाकुलौ ॥

व्याकुलके नाम ३॥ व्यस्त १ अम-  
गुण २ अकुल ३॥

शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदावनस  
नातनाः ॥ ७२ ॥

नित्यके नाम ८॥ शाश्वत १ ध्रुव २  
नित्य ३ सदावन ४ सनावन ५ ॥ ७२ ॥

स्यास्तु स्थिरतरं स्थेया

अगिम्भिरके नाम ३॥ स्यास्तु १  
स्थिरतर २ स्थेय ३ ॥

—नेकरूपतया तु यं ॥

कान्तव्यापी स कृत्यस्य  
निधत रत्नेषांका नाम १॥ कृत्यस्य १  
जट ३ मूर्तिमत् ८ मूढ ९ ॥

—स्यावरो जङ्गमेतर ॥ ७३ ॥

वृक्षादिके नाम ९ स्यावर १ जग-  
मेतर २ ॥ ७३ ॥

घरिष्णु जङ्गमचरं व्रतमिहं-  
चराचरम् ॥

चलनेवाळेके नाम ६ ॥ घरिष्णु १  
जङ्गम २ चर ३ व्रत ४ इग ५ वरा  
चर ६ ॥

चलन कम्पनं कम्प चल लोट  
चलाचलम् ॥ ७४ ॥ चञ्चल  
तरलं चैव पारिप्लवपारिप्लवे ॥

कापनेके नामे १० ॥ चलन कम्प  
२ कम्प ३ चल ४ लोट ५ चला  
चल ६ ॥ ७४ ॥ चञ्चल ७ तरल ८  
पारिप्लव ९ पारिप्लव १० ॥

अतिरिक्तं समाधिकौ—

अधिकरे नाम २॥ अतिरिक्त १ सम्-  
पिक २ ॥

—दन्तसंधिस्तु संहत ॥ ७५ ॥

मिठापके नाम २॥ दन्तसंधि १ संहत  
२ ॥ ७५ ॥

ककर्ज कठिनं मूर्ध कटोर निष्ठुरं  
दृढम् ॥ जठर मूर्तिमन्मूर्ति—

कठिनर नाम १॥ कर्कश १ कठिन २  
मूर् ३ कटोर ४ निष्ठुर ५ दृढ ६  
जठर ७ मूर्तिमत् ८ मूर्ध ९ ॥

-प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥ ७६ ॥

वढेहुएके नाम ३॥ प्रवृद्ध १ प्रौढ, २  
एधित ३ ॥ ७६ ॥

पुराणे प्रतनप्रत्नपुरातनचि-  
रंतनाः ॥

पुरानेके नाम ९ ॥ पुराण १ प्रतन  
२ प्रत्न ३ पुरातन, ४ चिरन्तन ५ ॥

प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो  
नूतनो नवः ॥ ७७ ॥ नूतनश्च-

नयेके नाम ७ ॥ प्रत्यग्र १ अभिनव  
२ नव्य ३ ॥ नवीन ४ नूतन ५ नव ६  
॥ ७७ ॥ नूतन ७ ॥

-सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु ॥

सुकुमारके नाम ४॥ सुकुमार १ कोमल  
२ मृदुल ३ मृदु ४ ॥

अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदं क्ली-  
बमव्ययम् ॥ ७८ ॥

पीछेके नाम २॥ अन्वच् १ अन्वक्ष २  
अनुग ३ अनुपद ४ ॥ ७८ ॥

प्रत्यक्षं स्यादैन्द्रियक-

प्रत्यक्षके नाम २॥ प्रत्यक्ष १ ऐन्द्रियक २॥

-मप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ॥

जो न दीखे उसके नाम २॥ अप्रत्यक्ष  
१ अतीन्द्रिय २ ॥

एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रै-

कायनावपि ॥ ७९ ॥ अप्ये-

कसर्गएकाग्र्योऽप्येकायनग-

तोऽपि सः ॥

एकाग्रके नाम ७ ॥ एकतान १  
अनन्यवृत्ति २ एकाग्र ३ एकायन ४ ॥ ७९ ॥  
एकसर्ग ५ एकाग्र्य ६ एकायनगत ७॥

पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथ-  
माद्या-

पहिलेके नाम ९ ॥ आदि १ पूर्व २  
पौरस्त्य ३ प्रथम ४ आद्य ५ ॥

-अथास्त्रियाम् ॥ ८० ॥

अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चा-  
त्यपश्चिमाः ॥

पिछलेके नाम ६ ॥ ८० ॥ अन्त १  
जघन्य २ चरम ३ अन्त्य ४ पाश्चात्य ५  
पश्चिम ६ ॥

मोघं निरर्थकं-

व्यर्थके नाम २॥ मोघ १ निरर्थक २ ॥

-स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्व-  
णम् ॥ ८१ ॥

स्पष्टके नाम ४ ॥ स्पष्ट १ स्फुट २  
प्रव्यक्त ३ उल्वण ४ ॥ ८१ ॥

साधारणं तु सामान्य-

सामान्यके नाम २ ॥ साधारण १  
सामान्य २ ॥

-मेकाकी त्वेक एककः ॥

अकेलेके नाम ३॥ एकाकिन १ एक  
२ एकक ३ ॥



मिन्नायका अन्यतर एकस्वोऽ-  
न्यतरावपि ॥ ८२ ॥

अन्यके नाम १॥ मिन्ना १ अन्यतर २  
एक ३ एव ४ अन्य ५ इतर ६ ॥ ८२ ॥

उच्चावच नैकमेद-  
जनरूपकारके नाम २॥ उच्चावच १  
नैकमेद २ ॥

-सुखण्डमविलम्बितम् ॥  
ह्रीप्रके नाम २ ॥ उच्चण्ड १ अवि-  
लम्बित २ ॥

अरुणवस्तु ममस्पृ-  
मर्ममेदकके नाम २ ॥ अरुणवस्तु १  
ममस्पृश २ ॥

गवार्ध तु निरगलम् ॥ ८३ ॥  
जिस्के काई बाधा न हो ससने नाम  
२॥ गवार्ध १ निरगल २ ॥ ८३ ॥

प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसंव्यम  
पण्डु च ॥

विपरीतके नाम ४ ॥ प्रसव्य १ प्रति-  
कूल २ अपसव्य ३ अपण्डु ४ ॥

वाम शरीर सव्यं स्या-  
बाय भगका नाम १ ॥ वाम १ ॥

-दपसव्यं तु दक्षिणम् ॥ ८४ ॥  
दक्षिण भगका नाम १ ॥ अपसव्य  
१ ॥ ८४ ॥

सकट ना तु सबाध -

सकट (भीड़ भागआदि)के नाम २  
सकट १ सबाध २ ॥

-कलिलं गहनं समे ॥  
जो बढही दुःखसे प्राप्त होनेके घोम  
हा उसके नाम २ ॥ कलिल १ गहन २ ॥

सकीर्णं संकुलाकीर्णं-

नाना जातिके छेगोंके एकत्र केटनेके  
नाम ३ ॥ सकीर्ण १ संकुल २ आकीर्ण ३ ॥

-मुण्डितं परिवापितम् ॥ ८५ ॥  
मुण्डे हुएके नाम २ ॥ मुण्डित १ परि-  
वापित २ ॥ ८५ ॥

प्रन्थितं सन्धितं हर्षं-

गण्डे हुएके नाम ३ ॥ प्रन्थित १  
सन्धित २ हर्ष ३ ॥

-विस्तृत विस्तृत वस्तु ॥  
कैलहुयेके नाम ३ ॥ विस्तृत १  
विस्तृत २ वस्तु ३ ॥

अन्तर्गतं विस्मृतं स्या-

भूले हुएके नाम २ ॥ अन्तर्गत १  
विस्मृत २ ॥

-स्मात्प्रमणिरासे समे ॥ ८६ ॥  
रक्षे हुएके नाम २ ॥ स्मात् १ प्रमणि-  
रित २ ॥ ८६ ॥

बोहिसमें बिता धूत चालिताफ  
मिता धूत ॥

घोडा कानत हुएके नाम ६ ॥ गड्डित १

प्रेषित २ आधूत ३ चलित ४ आक-  
पित ५ धुत ६ ॥

नुत्तनुन्नास्तनिष्ठयूताविद्धक्षि-  
त्तेरिताः समाः ॥ ८७ ॥

प्रेस्तिके नाम ७ ॥ नुत्त १ नुन्न २  
अस्त ३ निष्ठयूत ४ आविद्ध ५ क्षित ६  
ईरित ७ ॥ ८७ ॥

परिक्षिप्तं तु निवृत्तं-

घेरेहुएके नाम २ ॥ परिक्षिप्त १  
निवृत्त २ ॥

-मूपितं मुषितार्थकम् ॥

चुरायेहुयेके नाम २ ॥ मूपित १  
मुषित २ ॥

प्रवृद्धप्रसृते-

फैलनेके नाम २ ॥ प्रवृद्ध १ प्रसृत २ ॥

-न्यस्तानिसृष्टे-

फेंकेहुएके नाम २ ॥ न्यस्त १  
निसृष्ट २ ॥

-गुणिताहते ॥ ८८ ॥

गुणेहुएके नाम २ ॥ गुणित १ आहत  
२ ॥ ८८ ॥

निदिग्धोपचिते-

बढेहुएके नाम २ ॥ निदिग्ध १  
उपचित २ ॥

-गूढगुप्ते-

छिपेहुएके नाम २ ॥ गूढ १ गुप्त २ ॥

-गुण्ठितरूपिते ॥

धूलिसे सनेहुएके नाम २ ॥ गुण्ठित  
१ रूपित २ ॥

द्रुतावदीर्णे-

द्रवीभूतके नाम २ ॥ द्रुत १ अव-  
दीर्ण २ ॥

-उदूर्णोद्यते-

मारनेको उठायेहुए शस्त्रादिके नाम  
२ ॥ उदूर्ण १ उद्यत २ ॥

-काचितशिक्षियते ॥ ८९ ॥

छीकेपै धरी हुई वस्तुके नाम २ ॥  
काचित १ ॥ शिक्षित २ ॥ ८९ ॥

घ्राणघ्राते-

सूधेहुएके नाम २ ॥ घ्राण १ घ्रात २

-दिग्धलिप्ते-

लीपेहुएके नाम २ ॥ दिग्ध १ लिप्त २ ॥

-समुदक्तोद्धृते-

कपादिसे निकालेहुए जलादिके नाम  
२ ॥ समुदक्त १ उद्धृत २ ॥

-समे ॥

उपरोक्तशब्द समानलिंग होते हैं ॥

वेष्टितं स्याद्वलयितं संवीतं रु-  
द्धमावृतम् ॥ ९० ॥

नदी आदिसे घेरेहुएके नाम ९ ॥  
वेष्टित १ वलयित २ संवीत ३ रुद्ध ४  
आवृत ५ ॥ ९० ॥

रुग्णं मुग्धे-

दृष्टेद्वयेके नाम २ ॥ रुग्ण १ मुग्ध २ ॥

-अथ निश्चितदण्डतशासनानि ते  
जिते ॥

तेज किये द्द्वयेके नाम ४ ॥ निश्चित १  
दण्डत २ शासन ३ तेजित ४ ॥

स्याद्विनाशोन्मुखं पक्क-

पकडए मरनेवा काटनेके योग्य वस्तु  
क नाम २ ॥ विनाशो मुख १ पक्क २ ॥

-हीणहीनौ तु छजिते ॥ ९१ ॥

छज्यायुक्तक नाम ३ ॥ हीण १ हीन २  
छजित ३ ॥ ९१ ॥

वृत्ते तु वृत्तव्यावृत्तौ-

वरण कियेद्वयेके नाम ३ ॥ वृत्त १ वृत्त २  
व्यावृत्त ३ ॥

-संयोजित उपाहित ॥

मिठाये हुण्के नाम २ ॥ संयोजित  
१ उपाहित २ ॥

प्राप्य गम्य समासाद्य-

प्राप्तकरनर योग्यक नाम ३ ॥ प्राप्य  
१ गम्य २ समासाद्य ३ ॥

-स्पन्नरीणस्तुत सुतम् ॥ ९२ ॥

यहते हुण्के नाम ४ ॥ स्पन्न १ रीण  
२ स्तुत ३ सुत ४ ॥ ९२ ॥

गमृदं स्यात्सकलितो-

गोडहण अकलित नाम ॥ गमृद  
१ सकलित २ ॥

-अग्रीतं रुपातगर्हणं ॥

निन्दितके नाम २ ॥ अग्रीत १  
रुपातगर्हण २ ॥

विविधं स्याद्बहुविधो नाना

रूपः पृथग्विधः ॥ ९३ ॥  
विविधप्रकारके नाम ४ ॥ विविध १ बहु  
विध २ नानारूप ३ पृथग्विध ४ ॥ ९३ ॥

अवरीणो धिक्कृतश्चा-

धिकार हुण्के नाम २ ॥ अवरीण १  
धिक्कृत २ ॥

-अवध्वस्तोऽवचूर्णितः ॥

चूर्ण किय गयेके नाम २ ॥ अवध्वस्त  
१ अवचूर्णित २ ॥

अनायासकृत् फाण्ट-

अनयासक किये कियका नाम १ ॥  
फाण्ट १ ॥

-स्वनित ध्वनित समे ॥ ९४ ॥

त्रिसनेशब्द किया हो उल्लेख नाम २ ॥  
स्वनित १ ध्वनित २ ॥ ९४ ॥

यदे सदानितं मृतमुदितं सदि

धं सितम् ॥  
नयेद्वयेके नाम ६ ॥ यद १ सदानित  
२ मृत ३ मुदित ४ सदिध ५ सित ६ ॥

निष्पद्ये धियत

अङ्गी तरह पकायहुए कान आदिये  
नाम २ ॥ निष्पद्य १ धियत २ ॥

पाके क्षीराज्यहविषां शृतम्  
॥ ९५ ॥

पकेहुये घृत दुग्धादिका नाम १ ॥  
शृत १ ॥ ९५ ॥

निर्वाणोमुनिवद्व्यादौ—

मुनि अग्नि आदिके मुक्तहोनेकानाम  
१ ॥ निर्वाण १ ॥

—निर्वातस्तु गतेऽनिले ॥

जब वायु न चलता होउस समयका  
नाम १ ॥ निर्वात १ ॥

पक्वं परिणते—

पकेहुयेके नाम २ ॥ पक्व १ परि-  
गत २ ॥

—गूनं हन्ने—

हगेहुयेके नाम २ ॥ गून १ हन्न २ ॥

—मीढं तु मूत्रिते ॥ ९६ ॥

मूतेहुयेकेनाम २ ॥ मीढ १ मूत्रित ॥ ९६

पुष्टे तु पुषितं—

पोषणकियेके नाम २ ॥ पुष्ट १  
पुषित २ ॥

—सोढे क्षान्त—

सहेहुयेके नाम २ ॥ सोढ १ क्षान्त २

मुद्धान्तमुद्गते ॥

डाके हुये अन्नादिकेनाम २ ॥ उद्धान्त  
१ उद्गत २ ॥

दान्तस्तु दमिते—

दमनकिये वृषम आदिके नाम २ ॥

दान्त १ दमित ॥ २ ॥

शान्तः शमिते—

शमनको प्राप्त हुयेके नाम २ ॥ शान्त  
१ शमित २ १

—प्रार्थितेऽर्दितः ॥ ९७ ॥

मागेहुयेके नाम २ ॥ प्रार्थित १  
अर्दित २ ॥ ९७ ॥

ज्ञप्तस्तु ज्ञापिते—

जानेहुयेके नाम २ ॥ ज्ञप्त १ ज्ञापित २ ॥

—छन्नश्छादिते—

छायेके नाम २ ॥ छन्न १ छादित २ ॥

पूजितेऽश्रितः ॥

पूजाकिये गयेके नाम २ ॥ पूजित १  
अश्रित २ ॥

पूर्णस्तु पूरिते—

पूरेके नाम २ ॥ पूर्ण १ पूरित २ ॥

—क्लिष्टः क्लिशिते—

क्लेशितकेनाम २ ॥ क्लिष्ट १ क्लिशित २ ॥

—वसिते सितः ॥ ९८ ॥

समाप्तके नाम २ अवसित १ सित  
२ ॥ ९८ ॥

मुष्टप्लुष्टोषिता दग्धे—

जलेहुयेके नाम ४ ॥ मुष्ट १ प्लुष्ट २  
उषित ३ दग्ध ४

तष्टवष्टौ तनूकृते ॥

सूक्ष्मकिये गयेके नाम ३ ॥ तट १  
 रण २ तनुकृत ३ ॥  
 वेधितच्छिद्रितौ विद्धे—  
 छेदेद्वयेके नाम ३ ॥ वधित १ छिद्रित  
 २ विद्ध ३ ॥  
 —विभ्रविस्तौ विचारिते ॥ ९९ ॥  
 विचारेद्वयेके नाम ३ ॥ विभ्र १ विच  
 २ विचारित ३ ॥ ९९ ॥  
 निष्पमे विगतारोको—  
 तेनरहितके नाम ३ ॥ निष्पम १  
 विगत २ अरोक ३ ॥  
 —विलीने विद्रुतद्रुतौ ॥  
 पिषळ जानक नाम ३ ॥ विलीन १  
 विद्रुत २ द्रुत ३ ॥  
 सिद्धे निवृत्तनिष्पन्नौ—  
 सिद्धके नाम ३ ॥ सिद्ध १ निवृत्त २  
 निष्पन्न ३ ॥  
 —दारिते भिन्नभेदितौ ॥ १०० ॥  
 धीरेद्वयेके नाम ३ ॥ दारिद १ भिन्न  
 २ भेदित ३ ॥ १०० ॥  
 ऊर्ध्व स्पृष्टमूर्त चेति त्रितय  
 तन्तुसतते ॥  
 तनुन मित्सारण नाम ३ ॥ ऊर्ध्व १  
 स्पृष्ट २ उत ३ ॥  
 स्पादादिते नमस्त्यत नम  
 गितमपचायितार्धितापऽ  
 धितम् ॥ १०१ ॥

श्रुजितके नाम ३ ॥ अर्धित १ नम  
 मित २ नमस्त्यत ३ अपचायित ४ अर्धित  
 ५ अपधित ६ ॥ १०१ ॥  
 वरिवसिते वरिवस्थितमुपासि  
 तं घोषधरित च ॥  
 सेवाकियेगयेके नाम ४ ॥ वरिवस्थित १  
 वरिवस्थित २ उपासित ३ उपधरित ४ ॥  
 सत्तापितसत्तप्तौ धूपितधूपयि  
 तौ च दूनश्च ॥ १०२ ॥  
 तपायद्वयेके नाम ९ ॥ सत्तापित १  
 सत्तप्त २ धूपित ३ धूपयित ४ दून ५ १०२  
 दृष्टे मत्तस्त्वत्त प्रहृष्ट प्रमुदित  
 प्रीत ॥  
 हर्षितके नाम ३ ॥ हृष्ट १ मत्त २  
 तृप्त ३ प्रहृष्ट ४ प्रमुदित ५ प्रीत ६ ॥  
 छिन्नं छातं खूनं कृत्त दात दिव  
 छित वृक्कणम् ॥ १०३ ॥  
 काठद्वयेके नाम ८ ॥ छिन्न १ छात २  
 खून ३ कृत्त ४ दात ५ दित ६ छित  
 ७ वृक्कण ८ ॥ १०३ ॥  
 सस्त ध्वस्तं भ्रष्ट स्वस्त पक्ष  
 च्युतं गलितम् ॥  
 घुषद्वयेके नाम ७ ॥ सस्त १ ध्वस्त २  
 भ्रष्ट ३ स्वस्त ४ पक्ष ५ च्युत ६ गलित ७ ॥  
 एव्य प्राप्त विस भावितमा—  
 सादित च मृत च ॥ १०४ ॥

पायेहुएके नाम ६ ॥ लब्ध १ प्राप्त  
२ विन्न ३ भावित ४ आसादित ५ भूत  
६ ॥ १०४ ॥

अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मा-  
र्गितं मृगितम् ॥

ढूढेहुएके नाम ५ ॥ अन्वेषित १ गवे-  
षित २ अन्विष्ट ३ मार्गित ४ मृगित ५ ॥

आर्द्र सार्द्र क्षिन्नं तिमितं स्ति-  
मितं समुन्नमुत्तं च ॥ १०५ ॥

भीजेहुएके नाम ७ ॥ आर्द्र १ सार्द्र  
२ क्षिन्न ३ तिमित ४ स्तिमित ५ समुन्न  
६ उत्त ७ ॥ १०५ ॥

त्रातं त्राणं रक्षितमवित गोपा-  
यितं च गुप्तं च ॥

रक्षाकिये गयेके नाम ६ ॥ त्राण १  
त्रात २ रक्षित ३ अवित ४ गोपायित ५  
गुप्त ॥ ६ ॥

अवगणितमवमतावज्ञातेऽवमा-  
नितं परिभूते ॥ १०६ ॥

अपमानकिये गयेके नाम ५ ॥ अवग-  
णित १ अवमत २ अवज्ञात ३ अव-  
मानित ४ परिभूत ५ ॥ १०६ ॥

त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं  
धूतमुत्सृष्टे ॥

त्यागेहुयेके नाम ६ ॥ त्यक्त १ हीन २  
विधुत ३ समुज्झित ४ धूत ५ उत्सृष्ट ६ ॥

उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमा-  
ख्यातमभिहितं लपितम् १०७

कहेहुयेके नाम ७ ॥ उक्त १ भाषित  
२ उदित ३ जल्पित ४ आख्यात ५  
अभिहित ६ लपित ७ ॥ १०७ ॥

बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्र-  
तिपन्नमवसितावगते ॥

जानेगयेके नाम ७ ॥ बुद्ध १ बुधित  
२ मनित ३ विदित ४ प्रतिपन्न ५ अव-  
सित ६ अवगत ७ ॥

ऊरीकृतमुररीकृतमंगीकृतमा-  
श्रुतं प्रतिज्ञातम् ॥ १०८ ॥

संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितो  
पश्रुतोपगतम् ॥

अगीकारकिये गयेके नाम ११ ॥ ऊरी-  
कृत १ उररीकृत २ अगीकृत ३  
आश्रुत ४ प्रतिज्ञात ५ ॥ १०८ ॥  
संगीर्ण ६ विदित ७ संश्रुत ८ समाहित  
९ उपश्रुत १० उपगत ११ ॥

ईलितशस्तपणायितपनायित-  
प्रणुतपणितपनितानि ॥ १०९  
अवगीर्णवर्णिताभिष्टुतेडिता-  
नि स्तुतार्थानि ॥

स्तुति किये गयेके नाम १२ ॥ ईलित  
१ शस्त २ पणायित ३ पनायित ४  
प्रणुत ५ पणित ६ पनित ७ ॥ १०९ ॥  
अवगीर्ण ८ वर्णित ९ अभिष्टुत १०  
ईडित ११ स्तुत १२ ॥

भक्षितचर्वितलीढप्रत्यवसित-  
गिलितखादितप्सातम् ११० ॥  
अभ्यवहताभजग्धप्रस्तग्लस्ता  
शित मुक्ते ॥

खायगयेके नाम १४॥ भक्षित १  
चर्वित २ लीढ ३ प्रत्यवसित ४ गिलित  
५ खादित ६ प्सात ७ ॥ ११० ॥  
अभ्यवहता ८ अभ ९ जग्ध १० प्रस्त  
११ ग्लस्त १२ अशित १३ मुक्त १४

क्षेपिष्ठसोविष्ठमेष्ठवरिष्ठस्यवि  
ष्ठवंदिष्ठा ॥ १११ ॥ सिमधुष्ठा  
मीप्सितपृथुपीवरयुलप्रकर्षा-  
या ॥

भाषा—( अतिशय करने त्वरितका  
नाम ) क्षेपिष्ठ १ ॥ ( अतिशय क्षुद्रका  
नाम ) सोविष्ठ १ ॥ ( अतिशय अभी  
रिष्ठका नाम ) मेष्ठ १ ॥ अतिशय  
पृथुका नाम ) वरिष्ठ १ ॥ ( अतिशय  
स्यूका नाम ) स्यविष्ठ १ ॥ अतिशय  
युलका नाम ) वदिष्ठ १ ॥ १११ ॥

साधिष्ठद्राधिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठहसि  
ष्ठवृन्दिष्ठाः ॥ ११२ ॥  
बाढव्यायतमगुरुवामन  
वृन्दारिकातिशये ॥

भाषा—( अतिशय बाढका नाम )  
साधिष्ठ १ ॥ ( अतिशय दीर्घका नाम )

द्राधिष्ठ १ ॥ अतिशय स्फिरका नाम )  
स्फेष्ठ १ ॥ ( अतिशय गुल्फका नाम )  
गरिष्ठ १ ॥ ( अतिशय हृत्स्वका नाम ) हसिष्ठ  
१ ॥ ( अतिशय वृन्दारका नाम )  
वृन्दिष्ठ ॥ ११२ ॥

इति विशेष्यनिष्कर्षः ॥ १ ॥

अथ संकीर्णवर्ग २

प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णै  
लिङ्गमुभयेत् ॥

भाषा—प्रकृतिप्रत्यय आदिके अर्थके  
द्वारा संकीर्णवर्गमें लिङ्ग जानने ॥

कर्म क्रिया—

क्रियाके नाम २ ॥ कर्म १ क्रिमा २ ॥

—उत्सातत्ये गम्ये स्युरपर-  
स्परा ॥ १ ॥

अपरस्परोंके निरन्तर चलनेका नाम  
१ ॥ अपरस्पर १ ॥ १ ॥

साकस्यासगवचने पारायणप-  
रायणे ॥

साकस्यके वचनका नाम १ ॥ पारा  
यण १ ॥ आसंगके वचनका नाम १ ॥  
परायण १ ॥

यदृच्छा स्वैरिता—

एतन्त्रताके नाम २ ॥ यदृच्छा १  
स्वैरिता ॥ २ ॥

—देमुशून्या स्वास्या विल-  
क्षणम् ॥ २ ॥

विना कारणकी स्थितिका नाम ॥  
विलक्षण १ ॥ २ ॥

शमथस्तु शमः शान्ति-  
शांतिके नाम ३ ॥ शमथ १ शम २  
शान्ति ३ ॥

-दान्तिस्तु दमथो दमः ॥  
इन्द्रियोंके रोकनेके नाम ३ ॥ दाति  
१ दमथ २ दम ३ ॥

अवदानं कर्मवृत्तं-  
अच्छेकर्मके नाम २ ॥ अवदान १  
कर्मवृत्त २ ॥

-काम्यदानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥  
कामनाकरके दान देनेके नाम २ ॥  
काम्यदान १ प्रवारण २ ॥ ३ ॥

वशक्रिया संवननं-  
वशीकरणके नाम २ ॥ वशक्रिया १  
सवनन २ ॥

-मूलकर्म तु कार्मणम् ॥  
औषधीकी जड़ आदिसे उच्चाटनके  
नाम २ ॥ मूलकर्म १ कार्मण २ ॥

विधूननं विधुवनं-  
कांपनेके नाम २ ॥ विधूनन १  
विधुवन २ ॥

-तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥  
तृप्तिके नाम ३ ॥ तर्पण १ प्रीणन २  
अवन ३ ॥ ४ ॥

पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्त-  
धारणमित्यापि ॥

कोई किसीको मारता हो उसके रोक  
लेनेके अर्थ हाथ पकड़ लेनेके नाम ३ ॥  
पर्याप्ति १ परित्राण २ हस्तधारण ३ ॥

सेवनं सीवनं स्यूति-  
सीनेके नाम ३ ॥ सेवन १ सीवन २  
स्यूति ३ ॥

-विंदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥  
फूटनेके नाम ३ ॥ विंदर १ स्फुटन २  
भिदा ३ ॥ ५ ॥

आक्रोशनमभीषङ्गः-  
गरियानेके नाम २ ॥ आक्रोशन १  
अभीषङ्ग २ ॥

-सवेदो वेदना न ना ॥  
अनुभवज्ञानके नाम २ ॥ सवेद १  
वेदना २ ॥

संमूर्च्छनमभिव्याप्ति-  
सब ओरसे व्याप्तिके नाम २ ॥ संमूर्-  
च्छन १ अभिव्याप्ति २ ॥

-र्याच्चा भिक्षार्थनार्दना ॥ ६ ॥  
भीखके नाम ४ ॥ याच्चा १ भिक्षा २  
अर्थना ३ अर्दना ४ ॥ ६ ॥

वर्धनं छेदने-  
काटनेके नाम २ ॥ वर्धन १ छेदन २ ॥  
-इथ द्वे श्रानन्दनसम्भोजने ॥



भक्षितचर्वितलीढप्रत्यवसित-  
गिलितखादितप्सातम् ११० ॥  
अभ्यवहृताभजग्धप्रस्तगलस्ता  
शिव मुक्ते ॥

खायेगयेके नाम १४॥ भक्षित १  
चर्वित २ लीढ ३ प्रत्यवसित ४ गिलित  
५ खादित ६ त्पात ७ ॥ ११० ॥  
अभ्यवहृत ८ अभ ९ जग्ध १० प्रस्त  
११ गलस्त १२ अशित १३ मुक्त १४

क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थवि  
ष्ठर्बहिष्ठा ॥ १११ ॥ सिमधुद्रा  
भोप्सितपृथुपीवरबहुलप्रकर्पा-  
था ॥

भाषा—(अतिशय करक त्वरितका  
नाम ) क्षेपिष्ठ १ ॥ (अतिशय क्षुद्रका  
नाम ) क्षोदिष्ठ २ ॥ (अतिशय अमी  
प्सितका नाम ) प्रेष्ठ ३ ॥ अतिशय  
पृथुका नाम ) वरिष्ठ ४ ॥ (अतिशय  
स्थूलका नाम ) स्थविष्ठ ५ ॥ अतिशय  
बहुलका नाम ) बहिष्ठ ६ ॥ १११ ॥

साधिष्ठद्राधिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठहसि  
ष्ठवृन्दिष्ठा ॥ ११२ ॥  
माडध्यापतवदुगुरुवामन  
वृन्दारिकातिशये ॥

भाषा—(अतिशय माटका नाम )  
साधिष्ठ १ ॥ (अतिशय दीर्घका नाम)

द्राधिष्ठ १ ॥ अतिशय स्फिरका नाम )  
स्फेष्ठ १ ॥ (अतिशयका गुल्फका नाम )  
गरिष्ठ १ ॥ (अतिशय हृत्स्वका नाम ) हृस्विष्ठ  
१ ॥ (अतिशय वृन्दारकका नाम )  
वृन्दिष्ठ ॥ ११२ ॥

इति विशेष्यनिबर्गः ॥ १ ॥

अथ संकीर्णवर्गः २  
प्रकृतिप्रत्ययादीं संकीर्णै  
लिङ्गमुब्रजेत् ॥

भाषा—प्रकृतिप्रत्यय आदिरे अर्थके  
द्वारा संकीर्णवर्गमें लिङ्ग जानने ॥

कर्म क्रिया—

क्रियाके नाम २ ॥ कर्मन् १ क्रिया २ ॥

—तत्सातत्ये गम्ये स्युरपर-  
स्परा ॥ १ ॥

अपरस्परके निरन्तर चञ्चलका नाम  
१ ॥ अपरस्पर १ ॥ १ ॥

साकस्पातगवचने पारायणप-  
रायणे ॥

साकस्वके वचनका नाम १ ॥ पारा  
यण १ ॥ आसुगके वचनका नाम १ ॥  
परायण १ ॥

यहच्छा स्वैरिता—

एतत्प्रताके नाम २ ॥ यच्छा १

स्वैरिता ॥ २ ॥

—हेतुशून्या त्वास्या विष्ठ-

क्षणम् ॥ २ ॥

विना कारणकी स्थितिका नाम १॥

विलक्षण १ ॥ २ ॥

शमथस्तु शमः शान्ति-

शांतिके नाम ३ ॥ शमथ १ शम २

शान्ति ३ ॥

-दान्तिस्तु दमथो दमः ॥

इन्द्रियोंके रोकनेके नाम ३ ॥ दाति

१ दमथ २ दम ३ ॥

अवदानं कर्मवृत्तं-

अच्छेकर्मके नाम २ ॥ अवदान १

कर्मवृत्त २ ॥

-काम्यदानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥

कामनाकरके दान देनेके नाम २ ॥

काम्यदान १ प्रवारण २ ॥ ३ ॥

वशक्रिया संवननं-

वशीकरणके नाम २ ॥ वशक्रिया १

सवनन २ ॥

-मूलकर्म तु कर्मणम् ॥

औपधीकी जड़ आदिसे उच्चाटनके

नाम २ ॥ मूलकर्म १ कर्मण २ ॥

विधूननं विधुवनं-

कापनेके नाम २ ॥ विधूनन १

विधुवन २ ॥

-तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥

तृप्तिके नाम ३ ॥ तर्पण १ प्रीणन २

अवन ३ ॥ ४ ॥

पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्त-  
धारणमित्यापि ॥

कोई किसीको मारता हो उसके रोक

लेनेके अर्थ हाथ पकड़ लेनेके नाम ३ ॥

पर्याप्ति १ परित्राण २ हस्तधारण ३ ॥

सेवनं सीवनं स्यूति-

सीनेके नाम ३ ॥ सेवन १ सीवन २

स्यूति ३ ॥

-विंदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥

फूटनेके नाम ३ ॥ विंदर १ स्फुटन २

भिदा ३ ॥ ५ ॥

आक्रोशनमभीषद्गः-

भारियानेके नाम २ ॥ आक्रोशन १

अभीषद्ग २ ॥

-संवेदो वेदना न ना ॥

अनुभवज्ञानके नाम २ ॥ संवेद १

वेदना २ ॥

संमूर्च्छनमभिव्याप्ति-

सब ओरसे व्याप्तिके नाम २ ॥ संमूर्-

च्छन १ अभिव्याप्ति २ ॥

-र्याच्चा भिक्षार्थनार्दना ॥ ६ ॥

भीखके नाम ४ ॥ र्याच्चा १ भिक्षा २

अर्थना ३ अर्दना ४ ॥ ६ ॥

वर्धनं छेदने-

काटनेके नाम २ ॥ वर्धन १ छेदन २ ॥

-इय द्वे श्रानन्दनसम्भोजने ॥

आप्रच्छन्न-

पुत्राल प्रश्न पूछनेसे छापस हुए आनन्दक नाम १ ॥ आनन्दन १ समाञ्जन २ आप्रच्छन्न १ ॥

-प्रयास्राय' सप्रदाय'-

गुरुके उत्तम परम्परा उपदेश कर नेक नाम २ ॥ आस्राय १ सम्प्रदाय २ ॥

-क्षये क्षिया ॥ ७ ॥

क्षय होन्के नाम २ ॥ क्षय १ क्षिया २ ॥ ७ ॥

अद्दे माहो-

छेनेके नाम २ ॥ अद्दे १ माह २ ॥

-वश' फान्तौ-

इच्छाके नाम २ ॥ वश १ काति २ ॥

-रक्षणस्त्राणे -

रक्षाक नाम २ ॥ रक्षण १ त्राण २ ॥

-रण' कणे ॥

शब्दफलनेके नाम १ ॥ रण १ कण २ ॥

व्यघो वेघे-

छेदनेके नाम २ ॥ व्यघ १ वेघ २ ॥

-पघा पाके-

अज्ञादि पकानेक नाम २ ॥ पघा १ पाप २ ॥

-इवो इती-

पुत्रानक नाम २ ॥ इव १ इति २ ॥

बगे पूर्तो ५८ ॥

वरदानके नाम २ ॥ वर १ इति २ ॥ ८

ओष' धोपे-

जलानके नाम २ ॥ ओष १ धोप २ ॥

-नयो नाये-

मीस्तिक नाम २ ॥ नय १ नाय २ ॥

-ज्यानिर्जीर्णो-

जीर्णताके नाम २ ॥ ज्यानि १

जीर्णि २ ॥

अमो भ्रमौ ॥

अमके नाम २ ॥ अम १ भ्रमि २ ॥

स्फातिर्वृद्धौ-

वृद्धीके नाम १ ॥ स्फाति १ वृद्धि २ ॥

-प्रया रूपातौ-

प्रसिद्धताके नाम २ ॥ प्रया १

रूपाति २ ॥

सृष्टि' पृक्तौ-

छेनेके नाम २ ॥ सृष्टि १ श्रुति २ ॥

स्नवः स्वे ॥ ९ ॥

शरणाके नाम २ ॥ स्न १ सन २ ॥ ९

एधा समृद्धौ-

वृद्धिके नाम २ ॥ एधा १ समृद्धि २ ॥

-स्फुरणे स्फुरणा-

फडकनेके नाम २ ॥ स्फुरण १ स्फुरण २ ॥

-प्रमिती प्रमा ॥

प्रमापज्ञानक नाम २ ॥ प्रमिति १

प्रमा २ ॥

प्रसूतिः प्रसवे-

जन्महोनेके नाम २ ॥ प्रसूति १

प्रसव २ ॥

-च्योते प्राधारः-

घृतादिके चुअनेके नाम २ ॥ च्योत १

प्राधार २ ॥

-क्लमथः कलमे ॥ १० ॥

ग्लानिके नाम २ ॥ क्लमथ १ क्लम

२ ॥ १० ॥

उत्कर्षोऽतिशये-

प्रकर्षके नाम २ ॥ उत्कर्ष १ अति-

शय २ ॥

-संधिः श्लेषे-

मिलापके नाम २ ॥ संधि १ श्लेष २

-विषय आश्रये ॥

आश्रयके नाम २ ॥ विषय १

आश्रय २ ॥

क्षिपायां क्षेपणं-

फेंकने ( प्रेरणे ) के नाम २ ॥ क्षिपा

१ क्षेपण २ ॥

-गीर्णिगिरौ

लीलने ( निगलने ) के नाम २ ॥

गीर्णि १ गिरि २ ॥

-गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥

उद्यमके नाम २ ॥ गुरण १ उद्यम २

॥ ११ ॥

उन्नाय उन्नये-

ऊपरको लेजानेके नाम २ ॥ उन्नाय

१ उन्नय २ ॥

-श्रायः श्रयणे-

सेवाके नाम २ ॥ श्राय १ श्रयण २ ॥

जयने जयः ॥

जीतके नाम २ ॥ जयन १ जय २ ॥

निगादो निगदे-

कहनेके नाम २ ॥ निगाद १ निगद २ ॥

-मादो मद-

हर्षके नाम २ ॥ माद १ मद २ ॥

-उद्देग उद्भमे ॥ १२ ॥

घबरानेके नाम २ ॥ उद्देग १ उद्भम

२ ॥ १२ ॥

विमर्दनं परिमले-

कुकुमआदि मर्दनके नाम २ ॥ विमर्दन

१ परिमल २ ॥

-अभ्युपपत्तिरनुग्रहः ॥

हितकरने अनहितहटानेकी प्रवृत्तिके

नाम २ ॥ अभ्युपपत्ति १ अनुग्रह २ ॥

निग्रहस्ताद्विरुद्धः स्या-

अनुग्रहसे विपरीतका नाम १ ॥

निग्रह १ ॥

-दभियोगस्त्वभिग्रहः ॥ १३ ॥

लडाईमें ललकारके नाम २ ॥ अभि

योग १ अभिग्रह ॥ १३ ॥

मुष्टियन्धस्तु संग्राहो—  
मूठीसैद्धपकबनेकेनाम २ ॥ मुष्टियन्ध  
१ संग्राह २ ॥

—दिम्बे दमरनिष्ठयौ ॥  
मनुष्योकि छन्दनेके नाम १ ॥ दिम्बे  
दमर २ स्थित ३ ॥

बन्धन प्रसितिभारः—  
बाधनेके नाम १ ॥ बन्धन १ प्रसिति  
२ भार ३ ॥

—स्पर्शे स्पष्टोपसप्तार ॥ १४ ॥  
स्पर्शप्रको प्राप्तद्वये पुरुषकेनाम १ ॥  
स्पर्श १ स्पष्ट २ उपसप्त ३ ॥ १४ ॥

निकारो विप्रकारः स्या—  
अपकारके नाम २ ॥ निकार १ विप्र  
कार २ ॥

—दाकारस्त्विङ्ग इङ्गितम् ॥  
अभिप्रायक अनुसार घेष्टाकेनाम ३ ॥  
आकार १ इङ्ग २ इङ्गित ३ ॥

परिणामो विकारो द्वे समे वि  
कृताधिक्रिये ॥ १५ ॥  
प्रकृष्टी बदलजानेके नाम ४ ॥ परि  
णाम १ विकार २ विकृति ३ विक्रिय ४

॥ १५ ॥  
अपहारस्त्वपचय—  
अपहरणके नाम २ ॥ अपहार १  
अपचय २ ॥

समाहार\* समुच्चयः ॥  
बटोरनेकेनाम २ ॥ समाहार १ समुच्चय २ ॥  
प्रत्याहार उपादान—  
इदियोकि स्वीचनेके नाम २ ॥ प्रत्या  
हार १ उपादान २ ॥  
—विहारस्तु परिक्रम ॥ १६ ॥  
खेचनमें पैदल चलनेके नाम २ ॥  
विहार १ परिक्रम २ ॥ १६ ॥  
अभिहारोऽभिग्रहण—  
चोरीकरनेके नाम २ ॥ अभिहार १  
अभिग्रहण २ ॥  
निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ॥  
पुक्तिपूर्वक सखादि निष्कासनेकेनाम  
० ॥ निर्हार १ अभ्यवकर्षण २ ॥  
अनुहारोऽनुकार\* स्या—  
बिदम्बना अर्थात् नकलकरनेकेनाम  
२ ॥ अनुहार १ अनुकार २ ॥  
वर्षस्यावगमे व्ययः ॥ १७ ॥  
वर्षकरनेके नाम १ ॥ वर्ष १ ॥ १७ ॥  
प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्या—  
जलभादिकी निरन्तरगतिके नाम २ ॥  
प्रवाह १ प्रवृत्ति २ ॥  
—स्प्रवहो गमनं वाहि ॥  
बाहर जानेका नाम १ ॥ प्रवह १ ॥  
वियामो वियमो यामो यम  
सयामसयमौ ॥ १८ ॥

सयमके नाम ६ ॥ वियाम १ वियम २  
याम ३ यम ४ सयाम ५ सयम ६ ॥ १८ ॥

हिसाकर्माभिचारः स्या-

मारडालनेके नाम २ ॥ हिसाकर्म १  
अभिचार २ ॥

-जागर्या जागरा द्वयोः ॥

जागनेके नाम २ ॥ जागर्या १ जागरा २ ॥

विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः-

विघ्नके नाम ३ ॥ विघ्न १ अन्तराय २  
प्रत्यूह ३ ॥

-स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रये ॥ १९ ॥

समीपके आश्रयके नाम २ ॥ उपघ्न १  
अन्तिकाश्रय २ ॥ १९ ॥

निर्वेश उपभोगः स्या-

उपभोगके नाम २ ॥ निर्वेश १ उप-  
भोग २ ॥

-त्परिसर्पः परिक्रिया ॥

परिवारके घेरनेके नाम २ ॥ परिसर्प  
१ परिक्रिया २ ॥

विधुरं तु प्रविश्लेषो-

अत्यन्तवियोगके नाम २ ॥ विधुर १  
प्रविश्लेष २ ॥

-ऽभिप्रायश्छन्द आशयः ॥ २० ॥

अभिप्राय अर्थात् मनकी बातके नाम  
३ ॥ अभिप्राय १ छन्द २ आशय ३ ॥ २० ॥

संक्षेपणं समसनं-

सक्षेपके नाम २ ॥ संक्षेपण  
समसन २ ॥

-पर्यवस्था विरोधनम् ॥

विरोधके नाम २ ॥ पर्यवस्था १  
विरोधन २ ॥

परिसर्या परीसारः-

सत्र ओर गमनकरनेके नाम २ ॥ परि-  
सर्या १ परीसार २ ॥

स्यादास्या त्वासना स्थितिः

॥ २१ ॥

आसनस्थितिके नाम ३ ॥ आस्या

१ आसना २ स्थिति ३ ॥ २१ ॥

विस्तारो विग्रहो व्यासः-

विस्तारके नाम ३ ॥ विस्तार १ विग्रह  
२ व्यास ३ ॥

स च शब्दस्य विस्तरः ॥

शब्दके विस्तारका नाम १ ॥ विस्तर १

संवाहनं मर्दनं-

पौवआदिके दावनेके नाम २ ॥ संवा-  
हन १ मर्दन २ ॥

-स्याद्विनाशः स्याददर्शनम् ॥ २२ ॥

न देख पडनेके नाम २ ॥ विनाश १  
अदर्शन २ ॥ २२ ॥

संस्तवः स्यात्परिचयः-

जानपहिचानके नाम २ ॥ संस्तव १  
परिचय २ ॥

-प्रसरस्तु विसर्पणम् ॥

फैलनेके नाम २ ॥ प्रसर १ विस-  
र्पण २ ॥

भीवाकस्तु प्रयाम\* स्या-

घन घान्यादिके बटोरनेके नाम २ ॥  
नीमाक १ प्रयाम २ ॥

-त्सनिधिः सनिकर्षणम् ॥ २३ ॥

पडोस (निकट)के नाम २ ॥ त्सनिधि १  
सनिकर्षण २ ॥ २३ ॥

लघोऽभिलावो लवने-

काटनेके नाम ३ ॥ लव १ अभि-  
लाव २ लवने ३ ॥

-निष्पावः पवने पव\* ॥

बन्नादि पडोरने (बरसान) आदिके  
नाम ३ ॥ निष्पाव १ पवन २ पव ३ ॥

प्रस्ताव स्यादवसर-

प्रसंगके नाम २ ॥ प्रस्ताव १ अवसर २ ॥  
-खसर\* सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥

जुठाहे छोग भिस तरह सूत्रको छप  
टतहे टस क्रियाके नाम २ ॥ खसर १  
सूत्रवेष्टन २ ॥ २४ ॥

प्रजनः स्यादुपसरः-

गर्भिणी होनेके नाम २ ॥ प्रजन १  
उपसर २ ॥

-प्रग्रयप्रणयो समौ ॥

प्रमके नाम २ ॥ प्रग्रय १ प्रणय २ ॥

धीशक्तिर्निष्क्रमा-

धी ( बुद्धि ) शक्तिके नाम २ ॥  
धीशक्ति १ निष्क्राम २ ॥

-ऽस्त्री तु सक्रमो दुर्गसं-

चरः ॥ २५ ॥

कठिन रस्तेके नाम २ ॥ संक्रम १  
दुर्गसंचार २ ॥ २५ ॥

प्रत्युत्क्रम\* प्रयोगार्थ-

बुद्धके अर्थ तैयारी करनेके नाम २ ॥  
प्रत्युत्क्रम १ प्रयोगार्थ २ ॥

-प्रक्रम\* स्यादुपक्रम ॥

स्यादभ्यादानमुद्धात आरम्भ\*  
आरम्भमात्रके नाम १ ॥ प्रक्रम १

उपक्रम २ अभ्यादान ३ उद्धात ४  
आरम्भ ५ ॥

-संभ्रमस्त्वेरा ॥ २६ ॥

केगके नाम २ ॥ संभ्रम १ लप  
२ ॥ २६ ॥

प्रतिबन्ध\* प्रतिदृष्ट्यो-

कार्य एक ज्ञानके नाम २ ॥ प्रतिबन्ध  
१ प्रतिदृष्ट्य २ ॥

-ऽवनायस्तु निपातनम् ॥

भिरनेके नाम २ ॥ अवनाय १ निपातन २ ॥

उपलम्भस्त्वनुभव\*

साक्षात् करनेके नाम २ ॥ उपलम्भ १  
अनुभव २ ॥

-समालम्भो विलेपनम् ॥ २७ ॥

चन्दनादिके लेपनके नाम २ ॥ समा-

लम्भ १ विलेपन २ ॥ २७ ॥

विप्रलम्भो विप्रयोगो-

वियोगके नाम २ ॥ विप्रलम्भ १

विप्रयोग ॥ २

-विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ॥

दानके नाम २ ॥ विलम्भ १ अतिसर्जन ॥

विश्वावस्तु प्रतिख्याति-

अतिप्रसिद्धिके नाम २ ॥ विश्वाव १

प्रतिख्याति ॥ २

-रवेक्षा प्रतिजागरः ॥ २८ ॥

वस्तुओंके देखनेके नाम २ ॥ अवेक्षा

१ प्रतिजागर २ ॥ २८ ॥

निपाठनिपठौ पाठे-

पढ़नेके नाम ३ ॥ निपाठ १ निपठ २

पाठ ३ ॥

-तेमस्तेमौ समुन्दने ॥

गीलाहोनेके नाम ३ ॥ तेम १ स्तेम

२ समुन्दन ३ ॥

आदीनवास्रवौ क्लेशे-

क्लेशके नाम ३ ॥ आदीनव १ आस्रव

२ क्लेश ३ ॥

-मेलके सङ्गसंगमौ ॥ २९ ॥

मेलके नाम १ ॥ मेलक १ संग २

गम ३ ॥ २९ ॥

संवीक्षणं विचयनं मार्गणं

मृगणा मृगः ॥

अच्छे प्रकार दूढ़नेके नाम ५ ॥ संवी-

क्षण १ विचयन २ मार्गण ३ मृगणा ४

मृग ५ ॥

परिरम्भः परिष्वंगः संश्लेषः-

पगूहनम् ॥ ३० ॥

प्रेमपूर्वक लिपटजानेके नाम ४ ॥

परिरम्भ १ परिष्वंग २ संश्लेश ३ उप-

गूहन ४ ॥ ३० ॥

निर्वर्णनं तु निध्यानं दर्श-

नालोकनेक्षणम् ॥

देखनेके नाम ५ ॥ निर्वर्णन १ निध्यान

२ दर्शन ३-आलोकन ४ ईक्षण ५ ॥

प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्या-

देशो निराकृतिः ॥ ३१ ॥

निराकरणके नाम ४ ॥ प्रत्याख्यान १

निरसन २ प्रत्यादेश ३ निराकृति ४ ॥ ३१

उपशायो विशायश्च पर्या-

यशयनार्थकौ ॥

अनुक्रमसे पहलेपर जागने सोनेवा-

लेके नाम २ ॥ उपशाय १ विशाय २

अर्तनं च ऋतीया च हृणीया च

घृणार्थकाः ॥ ३२ ॥

करुणा वा घिनानेके नाम ४ ॥ अर्तन

१ ऋतीया २ हृणीया ३ घृणा ४ ॥ ३२



स्याद्यत्पासो विपर्यासो

व्यत्ययश्च विपर्यये ॥

विपरीतके नाम ४ ॥ व्यत्यास १

विपर्यास २ व्यत्यय ३ विपर्यय ४ ॥

पर्ययोऽतिक्रमस्तस्मिन्नाति-

पात उपात्ययः ॥ ३३ ॥

क्रियित् विपरीतके नाम ४ ॥ पर्यय १

अतिक्रम २ अतिपात ३ उपात्यय ४ ॥ ३३ ॥

प्रेषण यत्समाहूय तत्र स्या-

त्प्रतिशासनम् ॥

टह्छ आदिको मुलाक्षर भजनेका

नाम १ ॥ प्रतिशासन १ ॥

त सस्ताव' क्तुपु या स्तुति-

भूमिर्दिजन्मनाम् ॥ ३४ ॥

यक्त्वे प्राक्तणोक्तो स्तवन भूमिका

नाम १ ॥ सस्ताव १ ॥ ३४ ॥

निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे

कार्त्तं स उद्वन' ॥

वह्न्न वटिहा ( त्रिसकटपरकाष्ठ

धरा जाता है ) का नाम १ ॥ उद्वन १ ॥

स्तम्भस्तु स्तम्भघनः स्तम्भो

येन निहन्यते ॥ ३५ ॥

गुरपाभाङ्गि नाम २ ॥ स्तम्भ १

स्तम्भघन २ ॥ ३५ ॥

आग्निधा विध्यते यन ॥

वरमका नाम १ ॥ आग्नि १ ॥

-तत्र विष्यक्तमे निघ' ॥

बराबर जमहुये वृक्षादिकोका नाम

१ ॥ निघ १ ॥

उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्ये

क्षेपणार्यकौ ॥ ३६ ॥

अनाज आदि निकाळनेके नाम २ ॥

उत्कार १ निकार २ ॥ ३६ ॥

निगारोद्गारविक्षाबोद्धाहास्तु

गरणादिषु ॥

( खानेका नाम ) निगार १ ॥

( उछटी करनेका नाम ) उद्गार १ ॥

( छीकनेका नाम ) विक्षाय १ ॥

( डकारनेका नाम ) उद्माह १ ॥

आरत्यवरतिविरत्य उपरामे-

उपरामके नाम ४ ॥ आरति १ अर

ति २ निरति ३ उपराम ४ ॥

ऽथास्त्रियां तु निष्टेव' ॥ ३७ ॥

निष्ठपतिर्निष्ठिवर्नं निष्ठीवनमित्य

भिधानि ॥

धूकनेके नाम ४ ॥ निष्ठ १ ॥ ३७ ॥

निष्ठपति २ निष्ठवन ३ निष्ठीम ४ ॥

जघने श्रुति-

ष्णके नाम २ ॥ जघन १ त्रि २ ॥

-साक्षिस्त्ववसाने रया-

अव्यक्ते नाम १ ॥ साक्षि १ अवसान २ ॥

-दृष्य ऊपर श्रुति ॥ ३८ ॥

ज्वरके नाम २ ॥ ज्वर १ ज्वर्ति २ ॥

॥ ३८ ॥

उदजस्तु पशुप्रेरण-

पशुओंके हाकनेका नाम १ ॥ उदज १ ॥

-मकरणिरित्यादयः शापे ॥

शापका नाम १ ॥ अकरणि १ ॥ इत्यादि

गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौ-

पगवकादिकम् ॥ ३९ ॥

जिसके समीप गायेँ हों उसके समूहका

नाम १ ॥ औपगवक १ ॥ ३९ ॥

आपूपिकं शाष्कुलिकमेव-

वाद्यमचेतसाम् ॥

( पूओंके समूहका नाम ) आपू-

पिक १ ॥ ( पूरियोंके समूहका नाम )

शाष्कुलिक १ आदि ॥

माणवानां तु माणव्यं-

लङ्ककोंके समूहका नाम १ ॥ माणव्य १ ॥

-सहायानां सहायता ॥ ४० ॥

मित्रोंके समूहका नाम १ ॥ सहा-

यता १ ॥ ४० ॥

हल्या हलानां-

हलोंके समूहका नाम १ ॥ हल्या १ ॥

-ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विज-

न्मनाम् ॥

ब्राह्मणोंके समूहके नाम २ ॥ ब्राह्मण्य

१ वाडव्य २ ॥

द्वे पशुकानां पृष्ठानां पार्श्वे

पृष्ठचमनुक्रमात् ॥ ४१ ॥

पासलियोंके समूहका नाम १ ॥ पार्श्व

१ ॥ पीठके समूहकानाम १ ॥ पृष्ठ १ ॥ ४१

खलानां खलिनी खल्याऽ-

खलोंके समूहके नाम २ ॥ खलिनी १

खल्या २ ॥

-प्यथ मानुष्यकं नृणाम् ॥

मनुष्योंके समूहका नाम १ ॥ मानु-

ष्यक १ ॥

-ग्रामता जनता धूम्या पाश्या

गल्या पृथक्पृथक् ॥ ४२ ॥

( ग्रामोंके समूहका नाम ) ग्रामता १ ॥

( जनोंके समूहका नाम ) जनता १ ॥

( धूमके समूहका नाम ) धूम्या १ ॥ ( फा-

सियोंके समूहका नाम ) पाश्या १ ॥ ( व-

डे काशोंके समूहका नाम ) गल्या १ ॥ ४२

अपि साहस्रकारीषवार्मणा-

थर्वणादिकम् ॥

भाषा-( सहस्रके समूहका नाम )

साहस्र १ ॥ ( करसीके समूहका नाम )

कारीष १ ॥ ( कवचोंके समूहका नाम )

वार्मण १ ॥ ( चमडोंके समूहका नाम )

चार्मण १ ॥ ( अथर्वणोंके समूहका नाम )

आथर्वण १

॥ इति र्क्षकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

अथ नानार्थवर्गाः ३

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गे  
ध्वेवात्र कीर्तिताः ॥ मूरिप्रयोगा  
ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥

भाषा—कोई ककारान्तादि नानार्थके  
शब्द पूर्वोक्तवर्गोंमें कह चुके हैं, परन्तु  
उमका पूर्वोक्तवर्गोंमें जो प्रयोग किया है  
सो जिस अर्थमें जो शब्द अधिक आता  
है उस एकही अर्थमें कहा है, अब उनही  
पूर्वोक्त वर्गोंमें छोड़कर शब्दोंके यहां अनेक  
अर्थ वर्णन करते हैं ॥ १ ॥

आकाशे त्रिदिशे नाको-

नाक-आकाश तथा स्वर्ग ॥

-लोकस्तु भुवने जने ॥

लोक-स्वर्गादि लोक तथा जन्म ॥

पथे यशसि च इलोका-

इलोक-अनुष्ठुमादि पथ तथा कीर्ति

-शरे खड्गे च सायक ॥ २ ॥

सायक-तीर तथा लवणार ॥ २ ॥

जम्बुकौ क्रोष्टुषरुणौ-

जम्बुक-शृगाळ तथा बक्य ॥

-पथुकी धिपिटाभकी ॥

पथुक-चिउडा तथा बाछक ॥

आलोकी वृशनघोषी-

आत्रोक-दधर तथा प्रकाश ॥

भरी पत्राभानकी ॥ ३ ॥

आमक-मेरी तथा नगाडा ॥ १ ॥

उत्सङ्गचिह्नपोरुङ्ग-

अक-गोदी तथा चिह्न ॥

-कर्लकाश्रकापवादयोः ॥

कलक-चिह्न तथा छाञ्छन ॥

सप्तको नागवर्धक्यो-

तप्तक-सर्प तथा बडई ॥

-श्रकाः स्फटिकसूर्ययोः ॥ ४ ॥

अर्क-स्फटिक मणि तथा सूर्य ॥ ४ ॥

मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि क-

क शिरोम्बुनोः ॥

क-(पुंलिङ्ग) बायु, ब्रह्मा, सूर्य ॥

क-(नपुंसक) शिर तथा जल ॥

स्यात्पुलाकस्तुच्छघान्ये सक्षिपे

भक्तसिक्थके ॥ ५ ॥

पुलाक-धानकी मूसी, स्क्षेप तथा

मातका संज्ञा ॥ ५ ॥

उल्लुके करिण पुच्छमूलो

पान्ते च पेचक ॥

पचक-उल्लुपक्षी तथा हाथीके

पुरीपशारका आच्छादक मांस ॥

कमण्डली च करक-

करक-मनोटी(ओछा)जो कभी, कभी

पानी के सग बरसती है तथा अमारफ्त ॥

-सुगते च विनायकाः ॥ ६ ॥

विनायक-मुद्ग, गजश, तथा गरुड ॥ ६ ॥

किष्कुर्हस्ते वितस्तौ च-

किष्कु-हाथ तथा वितस्ति ॥

-शूककीटे च वृश्चिकः ॥

वृश्चिक-विच्छ्र तथा आठवीं राशि ॥

प्रतिकूले प्रतीकास्त्रिण्वेकदेशे

तु पुंस्ययम् ॥ ७ ॥

प्रतीक-प्रतिकूल ॥ ७

स्याद्भूतिकं तु भूनिम्बे कचृणे

भूस्तृणेषु च ॥

भूतिक-चिरायता-औषधी और

गध तृणविशेष ॥

ज्योत्स्निकायां च घोषे च

कोशात-

कोशातकी-एक प्रकारका फल, पर-

वर, तरकारी तथा चिचिडा वृक्ष ॥

-क्यथ कद्रफले ॥ ८ ॥

सिते च खदिरे सोमवलकः

स्या-

सोमवलक-सपेद खैर तथा कायफल

औषधी ॥ ८ ॥

-दय सिंहके ॥

तिलकल्के च पिण्याको-

पिण्याक-सिंहक तथा तिलकीखरी ॥

-बाह्लीकं रामठेऽपि च ॥ ९ ॥

बाह्लीक-रामठहींग तथा बाह्लीक-

देशमे होनेवाला अश्व ॥ ९ ॥

महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालया-

हिषु कौशिकः ॥

कौशिक-इन्द्र, गुग्गुलु, उल्लपक्षी,

तथा सापका पकडनेवाला ॥

रुक्तापशङ्कास्वातंकः-

आतक-रोग, ताप तथा शका ॥

-स्वल्पेऽपि क्षुलकस्त्रिषु ॥ १० ॥

क्षुलक-छोटा तथा बीच, कनिष्ठ

और दरिद्र ॥ १० ॥

जैवातृकः शशकैऽपि-

जैवातृक-चन्द्रमा तथा दीर्घायुपुरुष

-खुरेऽप्यश्वस्य वर्तकः ॥

वर्तक-घोडेके खुर तथा पक्षी ॥

व्याघ्रेऽपि पुण्डरीको ना-

पुण्डरीक-व्याघ्र दिग्गज तथा श्वेत

कमल ॥

-यवान्यामपि दीपकः ॥ ११ ॥

दीपक-दीया तथा मोरकी चोटी ॥ ११ ॥

शालावृकाः कपिक्रोष्टुश्चानः-

शालावृक-कुत्ता, वन्दर तथा सियार

स्वर्णेऽपि गैरिकम् ॥

गैरिक-गेरुधातु तथा सोना ॥

पीडार्थेऽपि व्यलीकं स्या-

व्यलीक-पीडा तथा झूठ ॥

-दलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ १२ ॥

अलीक-अप्रिय तथा झूठा ॥ १२ ॥

शीलान्वयावभूके-

अनूक्त-स्वभाव तथा वंश ॥

-द्वे शूलके शकलवस्फले ॥

शकल-दुकटा तथा छुकटा ॥

साधे शते सुषर्णानां हेम्यु

रोमूपणे पले ॥ १३ ॥ दीना-

रेडि च निष्कोखी-

निष्क-सोना एक प्रकारका गठेका

भूषण तथा असर्पि ॥ १३ ॥

-कस्कोऽखी क्षमलैनसो ॥

धूम्ये-

कल्क-मखिन तथा पाप और

पाखण्ड ॥

-प्यय पिनाकोऽखीशूलश्च

करधन्वनो ॥ १४ ॥

पिनाक-शूल तथा महादेवका

धनुष ॥ १४ ॥

धेनुका तु करेष्वां च-

धेनुका-हयिनी तथा नर्मय्याईईगी

-मेघजाले च काष्ठिका ॥

काष्ठिका-मेघका समूह तथा देवी ॥

कारिका यातनाष्टयो-

कारिका-नरकपीडा तथा करना ॥

कर्णिका कर्णभूषणे ॥ १५ ॥

करिहस्तेऽङ्गुली पद्मपीज

कोश्या-

कर्णिका कानका भूषण, ॥ १५ ॥

हाथीकी सूँडकाभमभाग तथा कमरके

बीज रहनेका कमरका भाग ॥

-त्रिपूचरे ॥

भागो जो शब्द कहे आयेंगे वे तीनों

छिगोंमें होत हैं ॥

धृन्दारकौ रूपमुख्या-

धृन्दाकर-देवता, सुन्दर तथा मुख्य ॥

-वेके मुख्यान्यकनेला ॥ १६ ॥

एक-मुख्य, अन्य तथाकेवला ॥ १६ ॥

स्यादाम्भिका कौकुटिके

यश्चावुरोरितेक्षणः ॥

कौकुटिक-मायाकरनेवाला तथा

धोरेसे ॥ देखनेवाला ॥

छायाटिका प्रभोर्भास्पर्शी

कार्याक्षमश्च यः ॥ १७ ॥

छायाटिक-जो कार्य करनेमें असमर्थ

हो औरस्वामीका मुखदेखे ॥ १७ ॥

इति कान्ताः ॥

मयूरवस्तिवट्करज्वाला-

मयूर-कान्ति पिरण तथा ज्वाला ॥

स्वलिषाणी शिर्षमुखी ॥

शिर्षीमुख-अमर तथा बाण ॥

शंखो निधौ सखाटास्थि

कम्भी न स्त्री-

शंख-एकनिधि, छछाटकी ॥

और शंख ॥

—न्द्रियेऽपि खम् ॥ १८ ॥

ख—शून्य तथा इन्द्रिय ॥ १८ ॥

घृणिज्वाले अपि शिखे—

शिखा—किरण, ज्वाला तथा चोटी ॥

॥ इति खान्ता ॥

शैलवृक्षौ नगावगौ ॥

नग—अग पर्वत और वृक्ष ॥

आशुगौ वायुविशिखौ—

आशुग—वायु तथा वाण ॥

—शरार्कविहगाः खगाः ॥ १९ ॥

खग—वाण, सूर्यादि ग्रह तथा पक्षी १९ ॥

—पतङ्गौ पक्षिसूर्यौ च—

पतंग—सूर्य तथा पक्षी ॥

—पूगः क्रमुकवृन्दयोः ॥

पूग—सुपारी तथा समूह ॥

पशवोऽपि मृगा—

मृग—हरिण, दूढ़ना, पशु ॥

—वेगः प्रवाहजवयोरापि ॥ २० ॥

वेग—प्रवाह तथा जोरसे चलना ॥ २० ॥

परागः कौसुमे रेणौ स्नानी-

यादौ रजस्यपि ॥

पराग—पुष्पधूलि स्नानकरनेके योग्य

मसाला तथा धूलि ॥

गजेपि नागमातङ्ग—

नाग—मातङ्ग—हाथी तथा चण्डाल

वा डोम ॥

—वपाङ्गस्तिलकेऽपि च ॥ २१ ॥

अपाग—नेत्रोंके कोने, अगहीन तथा

तिलक ॥ २१ ॥

सर्गः स्वभावनिर्मोक्षानिश्चया-

ध्यायसृष्टिषु ॥

—सर्ग—स्वभाव, त्याग, निश्चय तथा

प्रथका अध्याय, सृष्टि ॥

योगः संनहनोपायध्यानसंग-

तियुक्तिषु ॥ २२ ॥

योग—कवच सामदानादि, ध्यान

तथा मेल और युक्ति ॥ २२ ॥

भोगः सुखे ख्यादिभृतावहेश्व

फणकाययोः ॥

भोग—सुखदेनेवाला तथा सुख, वैश्या

आदिको पालन करना वा मोल लेना

सर्पका फन और शरीर ॥

चातले हरिणे पुंसि सारङ्गः

शवले त्रिषु ॥ २३ ॥

सारंग—चितकवरा रङ्गवाला, चित-

कवरा रङ्ग, मृगपशु, पक्षी, पपीहा पक्षी

तथा मृगी ॥ २३ ॥

कपौ च प्लवगः—

प्लवग—ब्रन्दर, मेढक तथा सारथि ॥

—शापे त्वभिषङ्गः परामवे ॥

अभिषङ्ग—शाप तथा अनादर ॥

यानाद्यङ्गे युगः पुंसि युगं

युगमे कृतादिषु ॥ २४ ॥

युग ( पुंलिङ्ग )—जुषा, युग—नष्ट  
सक जोडा ( दो ), सत्ययुगादि तथा  
चार हाथ ॥ २४ ॥

स्वर्गेषुपशुवाग्वज्रदिहनेत्रघ्राणि  
भूजले ॥ लक्ष्यष्टधा स्त्रियां पुंसि  
गौ—

गौ—( पुंलिङ्ग—स्त्रीलिङ्ग ) स्वर्ग,  
माण, पशु, ( गाय—वैद्य, ) वाणी, वज्र,  
दिशा, नेत्र, किरण, भूमि, तथा जङ्ग  
—लिङ्गं चिह्नशेषतो ॥ २५ ॥  
लिङ्ग—चिह्न तथा शिभ इन्द्रिया ॥ २५ ॥

शृङ्गं प्राधान्यसान्त्वोद्य—  
शृङ्ग—प्रमुता अर्थात् प्रधानता  
तथा कंगूरा ॥

—बराङ्ग मूधगुह्ययो ॥  
कराङ्ग—माया तथा श्रीका मून्दा रा  
भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्य  
यत्नार्ककीर्तिषु ॥ २६ ॥  
भग—स्वामी, इच्छा, ऐश्वर्य, वीर्य,  
उपाय, धर्म, बढाई ॥ २६ ॥

॥ इति गान्ताः ॥

परिधः परिधातेऽस्त्रेऽ—  
परिध—चारों ओरसे मारना तथा  
अस्त्र ॥

—प्योघो घृन्देऽम्भसां रमे ॥  
ओघ—समूह तथा जलका भग ॥

—मूल्ये पूजाविधावर्चो—

अर्च—मूल्य तथा पूजार्थे जल दना ॥

—ऽहो दुःखम्यसनेष्वधम् ॥ २७ ॥

अध—पाप, दुःख, शिकार, दुना  
खेडना आदि ॥ २७ ॥

त्रिध्विष्टेऽल्पे लघु—

लघु—इष्ट और थोडा ॥

॥ इति चान्ता ॥

—काचाः शिष्यमृद्देवदमजः ॥

काच—छीका, काचका मेद तथा

नेत्ररोग ॥

विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्च—

प्रपञ्च—विपरीत तथा सम्यक्ता

विस्तार और जगत् तथा दाना ॥

—पावके शुचिः ॥ २८ ॥

मास्यमात्ये चात्युपधे पुंसि मेघ्ये

सिसे त्रिषु ॥

शुचि—( पु० ) अग्नि ॥ २८ ॥

आपादमास, राजाका मन्त्री, निष्कपट

( त्रि० ) पक्षि तथा श्वेत वस्तु ॥

अभिस्वङ्गे स्पृहायां च गभस्ती

च रुचिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥

रुचि—आर्किकन करना, इच्छा तथा

किरण ॥ २९ ॥

॥ इति चान्ता ॥

केकिताक्ष्यावदिमुनी—

अहिभुक्-मोर और गरुड ॥

-दन्तविप्राण्डजा द्विजाः ॥

द्विज-दात, पक्षी तथा ब्राह्मण ॥

अजा विष्णुहरच्छागा-

अज-विष्णु, शिव तथा वक्रा ॥

-गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ३० ॥

व्रज-गोशाला, मार्ग और समूह ३०

धर्मराजौ जिनयमौ-

धर्मराज-जिन (बुद्ध) और धर्मराज

-कुञ्जो दन्तेऽपि न स्त्रियाम् ॥

कुञ्ज-हाथीका दात और सघन वन

वलजे क्षेत्रपूद्गारे वलजा

वलगुदर्शना ॥ ३१ ॥

वलज-( न० ) खत, नगरका दर

वाजा ( स्त्री ) सुन्दर स्त्री ॥ ३१ ॥

समे क्षमांशे रणेऽप्याजिः ॥

आजि-पृथ्वीकासमानभागऔरसग्राम

-प्रजा स्यात्संततौ जने ॥

प्रजा-सतान और जनसमूह ॥

अब्जौ शंखशशांकौ च-

अब्ज-शख और चन्द्रमा ॥

-स्वके नित्ये निजं त्रिषु ॥ ३२ ॥

निज-(त्रि०)अपनातथा नित्य॥३२॥

॥ इति जान्ताः ॥

पुंस्यात्मनि प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो

वाच्यलिङ्गकः ॥

क्षेत्रज्ञ-आत्मा और चतुर ॥

संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यै-

श्वार्थसूचना ॥ ३३ ॥

संज्ञा-चेतनशक्ति, नाम और हस्त

आदिसे-अभिप्रायकाप्रगटकरना॥३३॥

॥ इति जान्ताः ॥

काकेभगण्डौ करटौ-

करट-काक और हस्तीका गण्डस्थल

गजगण्डकटी कटौ ॥

कटि-हस्तीका गण्डस्थल और कमर ॥

शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि

महेश्वरे ॥ ३४ ॥

शिपिविष्ट-गङ्गा, खुदरी हुई खाल

और शिवजी ॥ ३४ ॥

देवशिल्पिन्यपि त्वष्टा-

त्वष्टा-विश्वकर्मा, सूर्य और बढई ॥

-दिष्टं दैवेऽपि न द्वयोः ॥

दिष्ट-प्रारब्ध और समय ॥

रसे कटुः कटुकार्ये त्रिषु मत्स-

रतीक्ष्णयोः ॥ ३५ ॥

कटु-( पु० ) रसविशेष, ( न० )

अकार्य, (त्रि०)अहकारऔर तीक्ष्ण ३५

रिष्ट क्षेमाशुभाभावे-

रिष्ट-क्षेम, अशुभ और अभाव ॥

-ष्वारिष्टं तु शुभाशुभे ॥

अरिष्ट-शुभ और अशुभ ॥



युग ( पुंलिङ्ग )—मुखा, युग—नपुं  
सक जोटा ( दो ), सत्ययुगादि तथा  
धार हाथ ॥ २४ ॥

स्वर्गेषु पशुवाग्वयदिह्नेत्रघ्राणि  
मूमले ॥ लक्ष्यष्टधा स्त्रियां पुंसि  
गौ—

गौ—( पुंलिङ्ग—स्त्रीलिङ्ग ) स्वर्ग,  
वाण, पशु, ( गाय—वैद्य, ) वाणी, वज्र,  
दिशा, नेत्र, किरण, भूमि, तथा अङ्ग  
—लिङ्गं चिह्नक्षेपसोः ॥ २५ ॥  
लिङ्ग—चिह्न तथा शिख इन्द्रिया ॥ २५ ॥

शृङ्गं प्राधान्यसान्वोभ—  
शृङ्ग—प्रमुता अर्थात् प्रधानता  
तथा कैयूर ॥

—वराङ्गं मूचयुद्धयोः ॥  
वराङ्ग—माया तथा श्रीका मूत्रशरा  
भग श्रीकाममाहात्म्यवीर्यं  
यत्नार्ककीर्तिषु ॥ २६ ॥  
भग—छद्मनी, इष्टा, ऐश्वर्य, वीर्य,  
उपाय, सूर्य, बहाई ॥ २६ ॥

॥ इति गान्ताः ॥  
परिधः परिधातेऽस्त्रे—  
परिध—चारों ओरसे मारना तथा  
अङ्ग ॥

—प्योघो घृन्देऽम्मसां रये ॥  
भोय—सनुह तथा जलभा यग ॥

—मूल्ये पूजाविधावर्षो—  
वर्ष—मूल्य तथा पूजामें जल दना ॥  
—इहो दुःखव्यसनेष्वधम् ॥ २७ ॥

अध—पाप, दुःख, शिकार, कुभा  
केलमा आदि ॥ २७ ॥

प्रिष्विष्टेऽस्त्ये लघु—  
लघु—इष्ट और पोषा ॥

॥ इति चान्ताः ॥  
—काचाः क्षिप्यन्तेऽतद्व्यग्रा ॥  
काच—छीका, काचका मेद तथा  
नेत्ररोग ॥

विपर्याप्ते विस्तरे च प्रपञ्च—  
प्रपञ्च—विपरीत तथा शब्दका  
विस्तार और जगत् तथा ज्ञाना ॥

—पावके शुचि ॥ २८ ॥  
मास्यमात्ये चात्युपघे पुंसि मेघ्ये  
सिते श्रियु ॥

शुचि—( पु० ) अग्नि ॥ २८ ॥  
आपावमास, राजाका मन्त्री, निष्कमठ  
( मि० ) पवित्र तथा श्वेत वस्तु ॥

अभिस्वङ्गे स्पृहायां च गभस्ती  
च रुचिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥

रुचि—आर्जिगन करना, इष्टा तथा  
किरण ॥ २९ ॥

॥ इति चान्ताः ॥  
केकिताह्यावदिमुनी—

गुड-गुड तथा मिट्टी आदिकागोला

सर्पमांसात्पशू व्याडौ-

व्याड-सर्प तथा मांसखानेवाला पशु  
व्याघ्र आदि ॥

-गोभूवाचस्तिवडाइला ॥४२॥

इडा-गैया तथा पृथ्वी, वाणी और  
नाडी ॥ ४२ ॥

क्ष्वेडा वंशशलाकाऽपि-

क्ष्वेडा-विष सिंहनाद, तथा वांसको  
खपची ॥

-नाडी नालेऽपि षट्क्षणे ॥

नाडी-नाडी अर्थात् वात पित्तकफ  
इत्यादिके विकारको जनानेवाली नस  
तथा छः क्षण ॥

काण्डोऽस्त्री दण्डबाणार्धव-  
र्गावसरवारिषु ॥ ४३ ॥

काण्ड-दंडा वा लाठी, बाण, खराब  
घोडा, परिच्छेद जैसे कि प्रथम कांड,  
सर तथा जल ॥ ४३ ॥

स्याद्गाण्डमश्वभरणेऽर्धत्रे मूल  
गर्धने ॥

ड-पात्र वा बरतन, घोड़ोंका गह  
नियेंका मूल धन वा पूँजी ॥

इति ढान्ताः ॥

प्रतिज्ञयोर्वाहं-

अवयर्थ तथा प्रतिज्ञा ॥

-प्रगाढं भृषकृच्छ्रयोः ॥४४॥

प्रगाढ-मजबूत तथा दुःख ॥४४॥

शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ-

दृढ-समर्थ तथा मोटा ॥

-व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ ॥

व्यूढ-विन्यस्त तथा सहत और  
पृथुल ॥

इति ढान्ताः ॥

श्रूणोऽर्धके स्त्रैणगर्भे-

श्रूण-बालक तथा स्त्रीका गर्भ ॥

-वाणो बालिसुते शरे ॥४५॥

वाण-बाणासुर तथा तीर ॥४५॥

कणोतिसूक्ष्मे धान्यांशे-

कण-अत्यन्तसूक्ष्म तथा धान्यकण ॥

-संघाते प्रमथे गणः ॥

गण-समूह तथा शिवके अनुचर ॥

पणोद्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये  
धनेपि च ॥ ४६ ॥

पण-जुआ आदिमें लगायाहुआधन

पैसा तथा मजूरी वा तलब ॥ ४६ ॥

मौर्व्या द्रव्याश्रिते सत्त्वशार्थे,  
संध्यादिके गुणः ॥

गुण-प्रत्यञ्चारूपआदि चौबीससत्त्व  
आदि शुक्ल आदि, सन्धि आदि ॥

निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषो-  
त्सवयोः क्षणः ॥ ४७ ॥

मायानिश्चल्यन्त्रेषु कैतवानृष  
राशिषु ॥ ३६ ॥ अयोधने शैल  
शृङ्ग सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् ॥

कूट—माया, निश्चल, यन्त्र, (युगल-  
सानेका जाल) रूप, शृङ्ग, राशि ॥ ३६ ॥  
छोहेका घन, फलका कैतूरा तथा इलका  
अप्रमाण ॥

सूक्ष्मैलायां श्रुतिः स्त्री स्या  
त्कालेऽल्पे सञ्चयेऽपि सा ॥ ३७ ॥

श्रुति—छोटी इलायची, काल, [ अक्ष-  
रका रहबाना ] अल्प तथा सञ्चय ॥ ३७

आर्त्युत्कर्षाश्रयः कोटयो-  
कोटि—घनुक्की टोंक, प्रकर्ष, कोना  
तथा करोडसंख्या ॥

—मूले कर्मकचे जटा ॥  
जटा—शृङ्गकी जड़ तथा केशोंकी जटा ॥

व्युष्टिः फले समृद्धौ च—

व्युष्टि—फल तथा सम्पदा ॥

—दृष्टिर्ज्ञानिऽक्षिण दर्शने ॥ ३८ ॥

दृष्टि—ज्ञान नेत्र तथा दखना ॥ ३८ ॥

श्रुतिरगिच्छयो—

श्रुति—मन्त्र तथा इच्छा ॥

—सृष्टि निमित्ते बहुनि त्रिषु ।

सृष्टि—बहुत तथा निश्चय, कियागया ।

कटे सु कृच्छ्रगहने—

कट—दुःख तथा गहन ॥

—दक्षामन्दागदेषु च ॥ ३९ ॥

पटु—

पटु—दक्ष तीक्ष्ण तथा रोगहीन ॥ ३९ ॥

दीर्घात्पलिङ्गी च—

पटु और कट शब्द वाच्यलिङ्गा है ॥

इति टान्ताः ॥

—नीलकण्ठः शिवेऽपि च ॥

मीलकण्ठ—मयूर तथा शिव ॥

पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जटरं कुसुलोऽ-

न्तर्गृहं तथा ॥ ४ ॥

काष्ठ—पेटका मध्य भाग, वाच्यका

स्थान, गृहके भीतरका भाग ॥ ४० ॥

निष्ठा—निष्पत्तिनाशान्ताः—

निष्ठा—निष्पादन, नाश तथा अन्त्य

—काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि ॥

काष्ठ—उत्कर्ष, स्थिति, दिशा तथा

काष्ठलेशेप ॥

त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि—

ज्येष्ठ—अत्युत्तम, अतिशुद्ध, बड़ा मास

तथा वेशासके उत्तरका मास ॥

—कनिष्ठोऽतिशुवाल्पयोः ॥ ४१ ॥

कनिष्ठ—अतिछोटा तथा छोटा मास ॥ ४१ ॥

इति टान्ताः ॥

वृणोऽस्त्री लघुदेऽपि स्या—

दण्ड—दंडा तथा सत्रा आदि ॥

—दृढो गोलेषुपाकयो ॥

गुड—गुड तथा मिट्टी आदिकागोला  
सर्पमांसात्पशू व्याडो—

व्याड—सर्प तथा मासखानेवाला पशु  
व्याघ्र आदि ॥

—गोभूवाचस्तिवडाइलाः॥४२॥

इडा—गैया तथा पृथ्वी, वाणी और  
नाडी ॥ ४२ ॥

क्षेडा वंशशलाकाऽपि—

क्षेडा—विष सिंहनाद, तथा वासकी  
खपची ॥

—नाडी नालेऽपि षट्क्षणे ॥

नाडी—नाडी अर्थात् वात पित्तकफ  
इत्यादिके विकारको जनानेवाली नस  
तथा छः क्षण ॥

काण्डोऽस्त्री दण्डवाणावर्व-  
गावसरवारिपु ॥ ४३ ॥

काण्ड—दडा वा लाठी, बाण, खराव  
घोडा, परिच्छेद जैसे कि प्रथम काण्ड,  
अवसर तथा जल ॥ ४३ ॥

स्याद्गाण्डमश्वामरणेऽमत्रे मूल  
वाणिग्धने ॥

माण्ड—पात्र वा बरतन, घोड़ोंका गह  
ना, बनियेका मूल धन वा पूँजी ॥

इति ढान्ताः॥

भृशप्रतिज्ञयोर्वाढं—

वाढ—अत्यर्थ तथा प्रतिज्ञा ॥

—प्रगाढं भृषकृच्छ्रयोः ॥४४॥

प्रगाढ—मजबूत तथा दुःख ॥४४॥

शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ—

दृढ—समर्थ तथा मोटा ॥

—व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ ॥

व्यूढ—विन्यस्त तथा सहत और  
पृथुल ॥

इति ढान्ताः ॥

भ्रूणोऽर्भके स्त्रैण गर्भे—

भ्रूण—बालक तथा स्त्रीका गर्भ ॥

—वाणो बालिसुते शरे ॥४५॥

वाण—वाणासुर तथा तीर ॥४५॥

कणोत्तिसूक्ष्मे धान्यांशे—

कण—अत्यन्तसूक्ष्म तथा धान्यकण ॥

—संघाते प्रमथे गणः ॥

गण—समूह तथा शिवके अनुचर ॥

पणोऽदूतादिषु तृष्टे भृतौ मूल्ये

धनेपि च ॥ ४६ ॥

पण—जुआ आदिमें लगायाहुआ धन

पैसा तथा मज्दूरी वा तलब ॥ ४६ ॥

मौर्व्यां द्रव्याश्रिते सत्त्वशायि,

संध्यादिके गुणः ॥

गुण—प्रत्यक्षारूपआदि चौबीससत्त्व

आदि शुक्ल आदि, सन्धि आदि ॥

निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषो-

त्सवयोः क्षणः ॥ ४७ ॥

क्षण-तीसकलासमय, उत्सव तथा  
वेकाम बैठना तथा विधाम करना ॥ ४७ ॥

वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ सुवौ  
वर्णं तु वाक्रे ॥

वर्ण-शुक्ल पीतादिरंगतयावर्ण(पु०

म०) अक्षर ब्राह्मणादे, सुवि ॥

अरुणो भास्करेऽपि स्याद्  
र्णमेते पि च त्रिषु ॥ ४८ ॥

अरुण-सूर्य, सूर्यका सारथि, र्ण  
मेद ॥ ४८ ॥

स्याणुः शर्वोऽप्यथ-

स्याणु-दृढादृष्ट तथा अत्यन्त स्थिर  
और म्हादेय, सम्मा, वृद्ध पर्वत ॥

-द्रोणः काके-

द्रोण-काक तथा द्रोणाचार्य ॥

-ऽप्यामौ रवेरणाः ॥

रण-समाम तथा दाम्द ॥

ग्रामणीनापिते पुंसि श्वेते  
ग्रामाधिपे त्रिषु ॥ ४९ ॥

ग्रामणी-नार्ह, मुख्यग्रामाधिप ॥ ४९ ॥

ऊर्णां मेपादिलोन्नि स्यादा  
वर्षे चान्तरा भुवो ॥

उर्णा-मेढरु बाळ तथा दोनोंभोंके  
बीचकी मारी ॥

हरिणीं स्यान्मृगी हेमम  
तिमा हरिता च या ॥ ५० ॥

हरिणी-मृगी, सोनेकी मूर्ति तथा  
हरे रंगकी मूर्ति ॥ ५० ॥

त्रिषु पाण्डौ च हरिण-

हरिण-मृग तथा पाण्डुर वण ॥

-स्थूणास्तम्भेऽपि वेष्मनः ॥

स्थूणा-स्तम्भा तथा छोहकी मूर्ति ॥

तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे-

दृष्णा-इच्छा (वाञ्छा) तथा व्यस

-शुश्रुप्साकरुणे घृणे ॥ ५१ ॥

घृणा-शुश्रुप्सा वा निन्दा तथा  
करुणा ॥ ५१ ॥

वणिक्पथे च विपाणि -

विपाणि-बाजारकी गली तथा  
बुकान ॥

-सुराप्रत्यक् च वारुणी ॥

वारुणी-मदिरा तथा पश्चिमकी दिशा

करेणुरिम्यां स्त्री नेमे-

करेणु-हाथी तथा हथिनी ॥

-द्रविणं तु बलं घनम् ॥ ५२ ॥

द्रविण-बल तथा घन ॥ ५२ ॥

शरणं गृहरक्षिप्रोः-

शरण-गृह तथा रक्षा करम्बाज ॥

-श्रीपर्णं कमलेऽपि च ॥

श्रीपर्ण कमल तथा अग्निमन्य ॥

विपाभिमरलोहेषु तीक्ष्णं

कलीवे स्वरं त्रिषु ॥ ५३ ॥

तीक्ष्ण—अत्यन्त गरम वस्तु, अत्यन्त तीखा, विष शुद्ध तथा लोहा ॥ ५३ ॥

प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रयत्ता-  
प्रमातृषु ॥

प्रमाण—हेतु, मर्यादा, शास्त्रपरि-  
च्छेद तथा ज्ञाता ॥

करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रि-  
येष्वपि ॥ ५४ ॥

करण—खेत, करण कारक, शरीर  
इन्द्रिय तथा वैश्व शूद्रा स्त्रीसे उत्पन्न  
॥ ५४ ॥

प्राण्युत्पादे संसरणमसंवाधच-  
मृगतौ ॥ घण्टापथे—

ससरण—राजमार्ग, प्राणीका जन्म  
तथा बेरोक सेनाकी यात्रा ॥

—ऽथ वान्तात्रे समुद्रिरणमु-  
च्यते ॥ ५५ ॥

समुद्रिरण—वमन कियाहुआ अन्न तथा  
उखाडना तथा जलादिका निकालना ५५

अतस्त्रिषु—

यहासे आगे कहे हुए णकारान्त  
शब्द तीनों लिंगोंमें होंगे ॥

—विषाणं स्यात्पशुशृङ्गेभद-  
न्तयोः ॥

विषाण—पशुओंके सींग तथा हाथी-  
का दात ॥

प्रवणं क्रमनिम्नोर्व्यां प्रहे ना  
तु चतुष्पथे ॥ ५६ ॥

प्रवण—नम्र, तत्पर, ढाल वा क्रमसे  
नीचा स्थान तथा चौराहा ॥ ५६ ॥

संकीर्णो निचिताशुद्धा—

संकीर्ण—अशुद्ध तथा वर्णसङ्कर ॥

—वीरिणं शून्यमूपरम् ॥

ईरिण—शून्य और ऊपर ॥

॥ इति णान्ता. ॥

देवसूर्यौ विवस्वन्तौ—

विवस्वत्—देव तथा सूर्य ॥

—सरस्वन्तौ नदार्णवौ ॥ ५७ ॥

सरस्वत्—नद तथा समुद्र ॥ ५७ ॥

पक्षिताक्षर्यौ गरुत्मन्तौ—

गरुत्मत्—गरुड तथा पक्षी ॥

—शकुन्तौ भासपक्षिणौ ॥

शकुन्त—गृध्र और पक्षिमात्र ॥

अग्न्युत्पातौ धूमकेतू—

धूमकेतु—अग्नि ओर धूममयी तारा ॥

—जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ ५८ ॥

जीमूत—मेघ और पर्वत ॥ ५८ ॥

हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे—

हस्त—हाथ तेरहवां नक्षत्र ॥

—मरुतौ पवनामरौ ॥

मरुत्—वायु तथा देवता ॥

यन्ता हस्तिपके सूते—

यस्तु-हार्यावान् तथा सूत ॥

-भर्ता घातरि पोष्टरि ॥ ५९ ॥

मर्तु-प्रसा और पाउन करनेवाला

॥ ५९ ॥

यानपात्रे शिशौ पोतः-

पोत-नौका तथा छटका ॥

-प्रेत\* प्राप्यन्तरे मृते ॥

प्रेत-परेत तथा मृतक ॥

ग्रहमेवे ध्वजे केतुः-

केतु-जवा तथा एकग्रहका नामा ॥

-पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥

सुत-पुत्रा तथा पुत्र ॥ ६० ॥

स्यपतिः कारुमेवेऽपि-

स्यपति-कजुकरी तथा कारुमेद,

काष्ठ चीरनेवाला ॥

-भूमृद्भूमिधरे नृपे ॥

भूमृत्-वर्कत और राजा ॥

मूर्धामिपित्तो मूषेपि-

मूर्धामिपित्त-राजा और मन्त्री ॥

-श्वत्तु स्त्रीकुसुमेऽपि च ॥ ६१ ॥

श्वत्तु-स्त्रीका मासिक धर्म और वस-

न्तादि श्वत्तु ॥ ६१ ॥

विष्णावप्यजिताव्यक्तौ-

विन-अप्यक्त, विष्णु और महादेवा ॥

-सूतस्त्वष्टरि सारथी ॥

सूत-सारथी तथा पाराधातु, लघुता ॥

ध्यक्त प्राज्ञेऽपि-

ध्यक्त-पंडित तथा सुष्ठु ॥

-दृष्टान्तावुभौ शास्त्रनिद-

र्शने ॥ ६२ ॥

दृष्टान्त-तर्कादि शास्त्र तथा उदाह-

रण ॥ ६२ ॥

क्षत्ता स्यात्सारथी दास्ये क्षत्रि-

यायां च शूद्रजे ॥

क्षत्रु-सारथि, शूद्र और क्षत्रिणां

उत्पन्न तथा क्षारपात्र ॥

घृत्तान्त स्यात्प्रकरणे प्रका-

रे कात्स्न्यवार्तयोः ॥ ६३ ॥

घृत्तान्त-प्रकरण प्रकार, सम्पूर्णत

तथा वार्ता ॥ ६३ ॥

ध्वानर्त\* समरे वृत्त्यस्यान्ती

घृदिशेषयोः ॥

ध्वानर्त-ध्वानर्त देश, संग्राम तथा

वृत्त्यका स्थान ॥

कृतान्तो यमसिद्धान्तदेवा

कुम्भलकर्मसु ॥ ६४ ॥

कृतान्त-यमराज, सिद्धान्त, माय,

तथा पाप ॥ ६४ ॥

श्लेष्मादि रसरक्तादि मह-

भूतानि तद्वृणाः ॥ इन्द्रि-

याण्यश्मभिकृतिः सम्बन्धो

निश्च घातयः ॥ ६५ ॥

धातु—वात, पित्त, कफ, पेटमें अन्न-  
जायकर जो रस बनता है वह और रक्त  
इत्यादि, पचमहाभूत(पृथ्वी जल इत्या-  
दि) पांचोमहाभूतोंके गुण, ( रूप रस  
गन्ध इत्यादि ) इन्द्रिय, पत्यरका विकार,  
( शिलाजीत इत्यादि ) वर्णात्मक शब्दों-  
के कारण, ( भू, इत्यादि ) ॥६५॥  
कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृप-  
स्यासर्वगोचरे ॥

शुद्धान्त—राजधानी तथा राजाओंका  
जनाना ॥

कासुसामर्थ्ययोः शक्ति—

शक्ति—बरछी तथा सामर्थ्य ॥

—मूर्तिः काठिन्यकाययोः ॥ ६६ ॥

मूर्ति—कठिनता तथा शरीर ॥ ६६ ॥

विस्तारवल्ल्योर्व्रतति—

व्रतति—विस्तार तथा बह्नी ॥

—वसती रात्रिवेश्मनोः ॥

वसति—रात्रि तथा घर ॥

क्षयार्चयोरपचितिः—

अपचिति—क्षय तथा पूजा ॥

—सातिर्दानावसानयोः ॥ ६७ ॥

साति—दान तथा अन्त ॥ ६७ ॥

अर्तिः पीडाधनुष्कोटयो—

अर्ति—पीडा तथा धनुषकी कोटि ॥

—जातिः सामान्यजन्मनोः ॥

जाति—सामान्यजाति तथा जन्म ॥

प्रचारस्यन्दयो रीति—

रीति—लोकाचार तथा पीतल और

लोहेका मल ॥

—रीतिर्दम्बप्रवासयोः ॥ ६८ ॥

ईति—(ईति सात प्रकारकी होती है

अतिवृष्टि, सूखापडना, खेतोमें मूसोंका

लगना, टीडियोंका उपद्रव, सुगोंसे

हानि, और राजाओंसे वैर, इन ७ को

ईति कहतेहैं,) तथा परदेशमें वासा ॥ ६८ ॥

उदयेऽधिगमे प्राप्ति—

प्राप्ति—लाम तथा उत्पत्ति ॥

—व्रेता त्वग्नित्रये युगे ॥

व्रेता—एकयुग तथा अग्नित्रय ॥

वीणाभेदेऽपि महती—

महती—नारदकी वीणा तथा महस्व  
करके युक्त भार्यादि ॥

—भूतिर्भस्मानि संपदि ॥ ६९ ॥

भूति—अणिमा महिमादि आठ ऐश्वर्य,  
भस्म तथा सम्पत्ति ॥ ६९ ॥

नदीनगर्योर्नागानां भोगवत्य—

भोगवती—सर्पोंकी नदी तथा नगरी ॥

—थ संगरे ॥

सङ्गे सभायां समितिः—

समिति—सग तथा सभा तथा सग्राम ॥

—अथवासावपि क्षिती ॥ ७० ॥



यन्तृ-हाथीवान् तथा सूत ॥

-भर्ता घातरि पोष्टरि ॥ ५९ ॥

मर्तृ-प्रसा और पाठन करनेवाला

॥ ५९ ॥

यानपात्रे शिशौ पोतः-

पोत-नौका तथा छडका ॥

-प्रेतः प्राण्यन्तरे मृते ॥

प्रेत-परेत तथा मृतक ॥

ग्रहमेदे ध्वजे केतुः-

केतु-ध्वजा तथा एकग्रहका नामा ॥

-पार्थिवे सनये सुतः ॥ ६० ॥

सुत-राजा तथा पुत्र ॥ ६ ॥

स्यपतिः कारुमेदेऽपि-

स्यपति-कंधुकी तथा कारुमेद,

काष्ठ चिरनेवाला ॥

-भूमृमूमिधरे नृपे ॥

भूमृत-पर्वत और राजा ॥

भूर्धामिपिको भूपेपि-

भूर्धामिपिक-राजा और मन्त्री ॥

-ऋतुः स्त्रीकुसुमेऽपि च ॥ ६१ ॥

ऋतु-स्त्रीका मासिक धर्म और वस-

न्तादि ऋतु ॥ ६१ ॥

विष्णावप्यमिताव्यक्तौ-

विष्ण-अव्यक्त, विष्णु और महादेव ॥

-सूतस्त्वष्टरि सारथी ॥

सूत-सारथी तथा पाराधातु, लष्टा ॥

व्यक्त प्राज्ञेऽपि-

व्यक्त-वंदित तथा स्फुट ॥

-दृष्टान्ताद्युभौ शास्त्रनिद-

र्शने ॥ ६२ ॥

दृष्टान्त-तर्कादि शास्त्र तथा उदाह-

रण ॥ ६२ ॥

क्षत्रा स्यात्सारथौ द्राव्ये क्षत्रि-

यायां च शूद्रजे ॥

क्षत्रु-सारथि, शूद्र और क्षत्रिपाशे

उत्पन्न तथा द्वारपाल ॥

वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रका-

रे कात्स्न्यवार्तयो ॥ ६३ ॥

वृत्तान्त-प्रकरण प्रकार, सम्पूर्णता

तथा वार्ता ॥ ६३ ॥

आनर्तः समरे वृत्तस्यान्ती

वृद्धिष्वेवयोः ॥

आनर्त-आनर्त देश, संग्राम तथा

सुलका स्थान ॥

कृतान्तो यमविद्वान्तवैवा

कुशलकर्मसु ॥ ६४ ॥

कृतान्त-यमराज, सिद्धान्त, मन्त्र,

तथा पाप ॥ ६४ ॥

स्थेष्मादि रसरक्तादि महा-

भूतानि तद्वृणा ॥ इन्द्रि-

याण्यश्मविकृतिः शुद्धयो

निश्च घातवः ॥ ६५ ॥

धातु—वात, पित्त, कफ, पेटमें अन्न-  
जायकर जो रस बनता है वह और रक्त  
इत्यादि, पचमहाभूत(पृथ्वी जल इत्या-  
दि) पाचोमहाभूतोंके गुण, ( रूप रस  
गन्ध इत्यादि ) इन्द्रिय, पत्यरका विकार,  
( शिलाजीत इत्यादि ) वर्णात्मक शब्दों-  
के कारण, ( भू, इत्यादि ) ॥६५॥

कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृप-  
स्यासर्वगोचरे ॥

शुद्धान्त—राजधानी तथा राजाओंका  
जनाना ॥

कासुसामर्थ्ययोः शक्ति—

शक्ति—ब्रह्मी तथा सामर्थ्य ॥

-मूर्तिः काठिन्यकाययोः ॥ ६६॥

मूर्ति—कठिनता तथा शरीर ॥ ६६ ॥

विस्तारबल्योर्व्रतति—

व्रतति—विस्तार तथा बल्यी ॥

—वसती रात्रिवेश्मनोः ॥

वसति—रात्रि तथा वर ॥

क्षयार्चयोरपचितिः—

अपचिति—क्षय तथा पूजा ॥

—सातिर्दानावसानयोः ॥ ६७ ॥

साति—दान तथा अन्त ॥ ६७ ॥

अर्तिः पीडाधनुष्कोटयो—

अर्ति—पीडा तथा धनुषकी कोटि ॥

—जातिः सामान्यजन्मनोः ॥

जाति—सामान्यजाति तथा जन्म ॥

प्रचारस्यन्दयो रीति—

रीति—लोकाचार तथा पीतल और

लोहेका मल ॥

—रीतिर्दिम्बप्रवासयोः ॥ ६८ ॥

ईति—(ईति सात प्रकारकी होती है

अतिवृष्टि, सुखापडना, खेतोंमें मूसोंका

लगना, टीडियोंका उपद्रव, सुगोसे

हानि, और राजाओंसे वैर, इन ७ को

ईति कहतेहैं,) तथा परदेशमें वासा ॥ ६८ ॥

उदयेऽधिगमे प्राप्ति—

प्राप्ति—लभ तथा उत्पत्ति ॥

—स्वेता त्वग्नित्रये युगे ॥

त्रेता—एकयुग तथा अग्नित्रय ॥

वीणाभेदेऽपि महती—

महती—नारदकी वीणा तथा महत्त्व

करके युक्त भार्यादि ॥

—भूतिर्भस्मानि संपादि ॥ ६९ ॥

भूति—अणिमा महिमादि आठ ऐश्वर्य,

मस्म तथा सम्पत्ति ॥ ६९ ॥

नदीनगर्योर्नागानां भोगवत्य—

भोगवती—सर्पोंकी नदी तथा नगरी ॥

—थ संगरे ॥

सङ्गे सभायां समितिः—

समिति—सग तथा सभा तथा सग्राम ॥

—अयवासावपि क्षिती ॥ ७० ॥

क्षिति—निवास, क्षय तथा पृथ्वी ॥ ७० ॥

खेरधिष्ठ शस्त्रं च वक्रिज्वाला  
च हेतय ॥

हस्ति—सूर्यकी प्रभा तथा शस्त्र और  
आगकी व्याप्ति ॥

जगती जगति छन्दोविशे  
पेऽपि सितावपि ॥ ७१ ॥

जगती—शोक, एकप्रकारका छन्द  
तथा पृथ्वी ॥ ७१ ॥

पक्षिः छन्दोऽपि दशम—  
पक्षि—पौंती तथा दश अक्षरक पा

दका छन्द ॥  
—स्यात्प्रभावेऽपि घायसि ॥

आयसि—मानेवाला समय प्रमाय  
तथा उम्माई ॥

पक्षिर्गन्तौ च—  
पक्षि—पैदल तथा चञ्चना ॥

—मूले तु पक्षति पक्षभे  
दयो ॥ ७२ ॥

पक्षति—प्रतिपदा रूतिभि तथा पक्षकी  
जड ॥ ७२ ॥

प्रकृष्टिर्गोनिलिङ्गे च—  
प्रकृष्टि—स्वभाव तथा योनिर्लिङ्ग ॥

—कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः ॥  
वृत्ति—जीविका, सूत्रोका अर्थ तथा

कशिकी ॥

सिक्ता स्युर्बोद्धकापि—

सिक्ता—गाढ़ और सिल्ली ॥

—वेदे अवसि च सृति ॥ ७३ ॥

धृति—बद, कान तथा सुमना ॥ ७३ ॥

बनिता अनितात्यर्थानुरा  
गायां च योषिति ॥

बनिता—स्त्री तथा अत्यन्त प्यारी स्त्री ॥  
गुप्तिः सित्तिपुदासेऽपि—

गुप्ति—रक्षा, भूमिका गहवा तथा  
अच्छाना ॥

धृतिर्धारणधैर्ययोः ॥ ७४ ॥  
धृति—धारण और धैर्य ॥ ७४ ॥

वृहती शुद्धवार्ताकी छन्दो  
भेदो महत्त्वपि ॥

वृहती—शुद्धवार्ताकी, छन्दविशेष स्त्री ॥  
वासिवा स्त्रीकरिष्योश्च—

वासिवा—स्त्री तथा हयिमी ॥  
—वार्ता धृत्वा जनयती ॥ ७५ ॥

वार्ता—जीविका समाचार ॥ ७५ ॥  
वार्त फल्गुन्यरोगे च त्रि—

वार्त—जीरोग, समाचार, जनयति  
जीवनापाय तथा कुशल ॥

प्यप्सु च धृत्वा मृते ॥  
धृत्—धी, जड ॥

अधृत्—जड, मोक्ष तथा बिना  
मांगी मीठ ॥

कलधौतं रूप्यहेम्नो-

कलधौत-चादी तथा सोना ॥

-निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः॥७६॥

निमित्त-हेतु तथा चिह्न ॥ ७६ ॥

श्रुतं शास्त्रावधृतयो-

श्रुत-शास्त्र तथा सुनागया ॥

-युगपर्याप्तयोः कृतम् ॥

कृत-सत्ययुगपर्याप्ति, तथा कियाहुआ ॥

अत्याहित महाभीतिः कर्म

जीवानपेक्षि च ॥ ७७ ॥

अत्याहित-महामय तथा साहस ॥७७॥

युक्ते क्षमादावृतेभूतं प्राण्यतीति

समे त्रिषु ॥

भूत-प्रेत, पृथिवी आदि पाच, देवयो-  
नि तथा न्याययुक्त कार्य और सत्य तथा  
प्राणी ॥

वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीति दृढ-

निस्तले ॥ ७८ ॥

वृत्त-पद्य, श्लोक, चरित्र, अतीत,  
भूतकाल, दृढ तथा गोल ॥ ७८ ॥

महद्राज्यं चा-

महत्-राज्य तथा बृहत्

-वगीतं जन्ये स्याद्गर्हितं

त्रिषु ॥

अवगीत-लोकापवाद तथा जिसकी  
निंदा की गई ॥

श्वेतं रूप्येऽपि-

श्वेत-सफेद रंग तथा चादी और

रूपया ॥

-रजतं हेम्नि रूप्ये सिते

त्रिषु ॥ ७९ ॥

रजत-सोना चादी तथा उज्ज्वल ७९ ॥

त्रिष्वतो

यहासे लेकर तकारान्त सम्पूर्ण शब्द

तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

जगदिङ्गेऽपि-

जगत्-लोक तथा प्राणी ॥

-रक्तं नील्यादिरागि च ॥

रक्त-नीलादि रंग तथा रुधिर ॥

अवदातः सिते पीते शुद्धे-

अवदात-शुद्ध, श्वेत पदार्थ तथा  
पीला पदार्थ ॥

-बद्धार्जुनौ सितौ ॥ ८० ॥

सित बंधाहुआ तथा श्वेत ॥ ८० ॥

युक्तेऽपिसंस्कृते मर्षिण्याभि-

नीतो-

अभिनीत-युक्त, अत्यन्त, प्रशस्त.

तथा भूषित और शान्त ॥

-ऽथ संस्कृतम् ॥

कृत्रिमे लक्षणोपेतोऽप्य-

संस्कृत-संस्कारयुक्त, लक्षणयुक्त तथा

कृत्रिम ॥

-नन्तोऽन्यथावपि ॥ ८१ ॥

अनन्त-अन्यथि, (विसर्गकी मर्यादा न हो ) विष्णु तथा शेष नाग ॥ ८१ ॥

रूपोत्पद्ये प्रतीतो-

प्रतीत-प्रसन्न तथा हार्णित ॥

-अभिजातस्तु कुलजे ध्रुवे ॥

अभिजात-कुलीन और पण्डित ॥

विविक्तौ पृथावेजनौ-

विविक्त-पवित्र और विजल, वा एकान्त ॥

-मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥ ८२ ॥

मूर्च्छित-मोहित तथा बड़ा ॥ ८२ ॥

द्वौ चाम्लपरुषौ शुक्तौ-

शुक्त-बुद्ध तथा कठोर ॥

शितौ घषलमेचकौ ॥

शित-नरक ( शुक्ल ) मेचक तथा कृष्णवर्ण ॥

सत्ये साधौ विद्यमानेप्रश-

स्तेऽभ्यर्हिते च सत् ॥ ८३ ॥

सत्-सत्य, साधु, विद्यमान, प्रशस्त तथा अभ्यर्हित ॥ ८३ ॥

पुरस्कृतं पूजितेऽरात्यभि

युक्तं प्रपन्नं कृते ॥

पुरस्कृत-पूजित, शत्रुसंघीहित और भाग किये हुये ॥

निवातावाश्रयावाप्तौ क्षया

भेदं च दमयत् ॥ ८४ ॥

निवात-निवास, वायुरहित स्थान

तथा शस्त्रोंसे अभेद्य कवच ॥ ८४ ॥

जातोऽन्यथाऽप्युद्भास्युरुच्छ्रिता-

उच्छ्रित-उत्पन्न, ऊँचा, उच्छ्रित,

अर्द्धकायुक तथा आयुक्त बड़ा ॥

-उत्पितास्त्वमी ॥ बुद्धिमत्प्रो

द्यतोत्पन्ना-

उत्पित-बुद्धिको प्राप्त होनेवाला,

तथा उदयको प्राप्त होनेवाला और उत्पन्न होनेवाला ॥

-आहतौ सादरार्चितौ ॥ ८५ ॥

आहत-आदर नित्याहुआ तथा पूजित ॥ ८५ ॥

इति तान्ता ।

अर्थोभिधेयैरेवस्तुप्रयोजन

निवृत्तिषु ॥

अर्थ-शब्दका अर्थ, धन, पदार्थ, निवृत्ति ॥

निषानागमयोस्तीर्थं नृपि

अष्टे जले गुरौ ॥ ८६ ॥

तीर्थ-निषान अर्थात् कूपके पासका

हौद वा जलाशय, शास्त्र, ऋषिसेवित जल तथा गुरु ॥ ८६ ॥

समयस्त्रिषु शक्तित्ये संभ

क्षार्ये हितेऽपि च ॥

समर्थ-समर्थ वा बलवान् तथा

सम्बन्धयुक्त गणान तथा दिन ॥

दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ-

दशमीस्थ-रसरहित और अतिवृद्ध॥

-वीथी पदव्यपि ॥ ८७ ॥

वीथी-मार्ग तथा पक्ति ॥ ८७ ॥

आस्थानीयतनयोरास्था-

आस्था-सभा तथा उपाय ॥

-प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ॥

प्रस्थ-पर्वतकी चोटी तथा तोल-  
नेका सेर ॥

॥ इति ध्यान्ताः ॥

अभिप्रायवशौ छन्दा-

छन्द-अभिप्राय तथा अधीन ॥

-वब्दौ जीमूतवत्सरौ ॥ ८८ ॥

अब्द-मेघ तथा वर्ष ॥ ८८ ॥

अपवादौ तु निन्दाज्ञे-

अपवाद-निन्दा तथा आज्ञा ॥

-दायादौ सुतवान्धवौ ॥

दायाद-पुत्र तथा ज्ञाति वा विरादरी॥

पादा रश्म्यंग्रितुर्याशा-

पाद-किरण, चरण तथा चौथाई ॥

-श्चन्द्रागन्धर्वास्तमोनुदः॥८९॥

तमोनुद-चन्द्र, सूर्य तथा अग्नि ॥८९॥

निर्वादो जनवादेऽपि-

निर्वाद-लोकापवाद और निश्चित  
वाद ॥

-शादो जम्बालशष्पयोः ॥

शाद-वास और कीचड़ ॥

आरावे रुदिते त्रातय्याक्रन्दो

दारुणे रणे ॥ ९० ॥

आक्रन्द-आर्तशब्द, रोदन, रक्षक,  
भयकर तथा युद्ध ॥ ९० ॥

स्यात्प्रसादोऽनुरागेऽपि-

प्रसाद-अनुग्रह, ( प्रसन्नता ) और  
काव्यके गुण ॥

-सूदः स्याद्व्यञ्जनेऽपि च ॥

सूद-व्यञ्जन और रसोईवरदारका  
नाम ॥

गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दो-

गोविन्द-कृष्ण तथा विष्णु और  
गोष्ठका स्वामी ॥

-हर्षेऽप्यामोदवन्मदः ॥ ९१ ॥

आमोद-हर्ष तथा निर्हारि गन्ध ॥ ९१ ॥

प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे

ककुदोऽस्त्रियाम् ॥

ककुद-प्रधान, राजचिह्न तथा  
बैलका कन्धा ॥

स्त्री संविज्ञानसंभाषाक्रियाका-

राजिनामसु ॥ ९२ ॥

सविद्-ज्ञान, सम्भाषण, कर्म, नियम,  
युद्ध और नाम ॥ ९२ ॥

धर्मे रहस्युपनिष-

उपनिषद्-धर्म, एकान्त और वेदान्त

—स्स्याद्वतौ वत्सरे शरत् ॥

शरत्—कारकाधिकता समय और वर्ष ॥

पद ध्ववसितश्राणस्थानल  
क्षमाद्घ्रिवस्तुषु ॥ ९३ ॥

पद—व्यवसाय, रक्षास्थान, निद्रा,  
चरण तथा वस्तु ॥ ९३ ॥

गोष्पदं सेविते माने—

गोष्पद—सेवित दंश तथा भूमिपर  
गायके सुरसे हुआ गङ्गा ॥

—प्रतिष्ठा कृत्यमास्पदम् ॥

आस्पद—प्रतिष्ठा स्थानतथाकाय ॥

—त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू—

स्वादू—इष्ट और मधुर ॥

—मृदू चावीक्ष्णकोमली ॥ ९४ ॥

मृदू—अतीक्ष्ण तथा कामल ॥ ९४ ॥

मूढाल्पापदुनिर्भाग्या मदा

स्यु—

मद—मूढ, आलसी अप्रवीण,  
अस्य तथा निर्माग्य ॥

—र्द्री तु शारदी ॥

प्रत्यमाप्रतिमौ—

शारद—इत्येक भित्तिन ( वृक्ष )

अक्षपीपर औपवी ॥

—विट्सुमगर्भौ विष्णार

दी ॥ ९५ ॥

विशारद—विद्वान् तथा चतुर और  
ढीठ पुरुष ॥ ९५ ॥

इति वान्ता ॥

व्यामो वटश्च न्यमोघा—

न्यमोघ—वटवृक्ष तथा अङ्गभार ॥

—वृत्सेधः काय उभाति ॥

उत्सेध—वेद तथा उँचार्ध ॥

पर्याहारश्च मार्गश्च विवधी

वीवधी च सौ ॥ ९६ ॥

विषय वीवध—पर्याहार (प्यानादि)

तथा मार्ग ॥ ९६ ॥

परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामु

पसूर्यके ॥

परिधि—वृत्तकी परिधि वा गोलाई,  
सूर्य वा चन्द्रके चारों ओरका मण्डल,  
पलाश इत्यादि यज्ञके वृक्षोकी शाखा ॥

बन्धकं व्यसन चेत् पीडा

विष्ठानमाधय ॥ ९७ ॥

आधि—बन्धक, आपत्ति, मनकी

पीडा तथा बैठना ॥ ९७ ॥

स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च

समाधय ॥

समाधि—विषयके व्यापारका रोकना  
अङ्गीकार गुण रहमा, नियम तथा ध्याना।

दोषोत्पादेऽमुवधः स्मात्प्रकृ

त्पादिविनश्वरे ॥ ९८ ॥

मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृ-  
तस्यानुवर्तने ॥

अनुबन्ध—दोपका उत्पन्न करना, प्रकृति  
प्रत्यय आगम आदेश इत्यादिमें जिसका  
नाश हो गया हो वह ॥९८॥ पिता इत्यादि  
वडोंका अनुसरण करनेवाला बालक, प्रा-  
रम्भ किया वस्तुका परंपरासे चलना ॥

विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि—

विधु—विष्णु, चन्द्रमा, कपूर, तथा  
राक्षस ॥

—परिच्छेदे विलेखविधिः ॥९९॥

अवधि—सीमा वा हद, गड्ढा और  
काल ॥ ९९ ॥

विधिर्विधाने देवेऽपि—

विधि—करना, माग्य धर्मशास्त्र तथा  
आज्ञादेना ॥

—प्रणिधिः प्रार्थने चरे ॥

प्रणिधि—प्रार्थन तथा चलनेवाला ॥

बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि—

बुध—पण्डित तथा एक ग्रह ॥ वृद्ध-  
पण्डित तथा वृद्धपुरुष ॥

—स्कन्धः समुदयेऽपि च ॥१००॥

स्कन्ध—समुदय, समूह, काण्ड, राजा  
तथा कन्धा ॥ १०० ॥

देशे नदविशेषेऽथौ सिन्धुर्ना  
सारिति त्रियाम् ॥

सिन्धु—समुद्र, एक नद, सिन्धुदेश  
तथा नदी ॥

विधा विधौ प्रकारे च—

विधा—विधान प्रकार तथा बढाई ॥

—साधू रम्येऽपि च त्रिषु ॥१०१॥

साधु—साधु, कुलीन, सुन्दर, रोजगारी  
तथा सज्जन ॥ १०१ ॥

वधूर्जाया स्तुषा स्त्री च—

वधू—स्त्री, ( विवाहिता स्त्री ) पुत्रकी  
वहू, सवरग ओपधी ॥

—सुधा लेपोऽमृतं स्नुही ॥

सुधा—अमृत, चूना, विजुली, भोजन,  
अबरा, सेह्नुड ॥

सन्धा प्रतिज्ञा मर्यादा—

सधा—प्रतिज्ञा, अंगीकार, मर्यादा ॥

—श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृहा ॥१०२॥

श्रद्धा—आदर, आकाक्षा तथा विश्वास  
॥ १०२ ॥

मधु मद्ये पुष्परसे क्षौद्रे—

मधु—मद्य, पुष्परस, शहद, चैत्र तथा  
महुआ ॥

—अन्धं तमस्यपि ॥

अन्ध—अन्धा तथा अधियारा ॥

अतस्त्रिषु—

यहांसे लेकर धातुवर्ग पर्यंत शब्द  
तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥



—त्स्यादौ वत्सरे शरत् ॥

शरद्—कारकाक्षिफका समय और वर्ष ॥

पद व्यवसितत्राणस्थानल  
ह्मादधिवस्तुषु ॥ ९३ ॥

पद—व्यवसाय, रक्षास्थान, विह,  
वरण तथा यस्तु ॥ ९३ ॥

गोष्पद् सेविते माने—

गोष्पद्—सेवित देश तथा भूमिपर  
गायके सुरसे हुआ गच्छा ॥

—प्रतिष्ठा कृत्पमास्पदम् ॥

आस्पद—प्रतिष्ठा, स्थान तथा कार्य ॥

—त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू—

स्वादु—इष्ट और मधुर ॥

—मृदू चातीक्ष्णकोमली ॥ ९४ ॥

मृदू—मृतीक्ष्ण तथा कामल ॥ ९४ ॥

मृदाल्पापदुनिर्माग्या मदाः

स्यु—

मद—मूख आछसी अप्रवीण,  
अस्य तथा निर्माग्य ॥

—द्वौ तु शारदौ ॥

प्रत्यमाप्रतिभौ—

शारद—इरपोक क्षितिजम ( वृक्ष )  
अच्छपीपर औपवी ॥

—विद्वत्सुप्रगल्भौ विशार  
दौ ॥ ९५ ॥

विशारद—विद्वान् तथा चतुर और  
ढीठ पुरय ॥ ९५ ॥

इति दान्ता ॥

व्यामो वटश्च न्यग्रोधा—

न्यग्रोध—वटवृक्ष तथा अङ्गभार ॥

—वृत्सेव\* काय उन्नातिः ॥

उत्सेव—देह तथा उन्नाति ॥

पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ  
विवधौ च तौ ॥ ९६ ॥

विवध विवध—पर्याहार (प्यानादि)

तथा मार्ग ॥ ९६ ॥

परिविर्याह्वितरोः शाखायानु  
पसूर्यके ॥

परिवि—वृत्तकी परिवि वा गोठार्ध,  
सूर्य ॥ अश्वके चारों ओरका मण्डल,  
पलाश इत्यादि पक्षके वृक्षोंकी शाखा ॥

अश्वक अश्वन चेत पीडा  
विधानमाधयः ॥ ९७ ॥

आधि—अश्वक, आपत्ति, ममकी  
पीडा तथा बैठना ॥ ९७ ॥

स्यु\* समर्पननीवाकनियमाश्च  
समाधय ॥

समाधि—विचके व्यापारका रोकना  
अङ्गीकार चुप रहना, नियम तथा ध्याना ॥

दोषोत्पादेऽमुषन्धाः स्यात्प्रकृ-  
त्यादिविन्धरे म ९८ ॥

मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृ-  
तस्यानुवर्तने ॥

अनुवन्ध—दोषका उत्पन्न करना, प्रकृति  
प्रत्यय आगम आदेश इत्यादिमें जिसका  
नाश हो गया हो वह ॥ ९८ ॥ पिता इत्यादि  
बड़ोका अनुसरण करनेवाला बाळक, प्रा-  
रम्भ किया वस्तुका परपरासे चलना ॥

विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि—

विधु—विष्णु, चन्द्रमा, कपूर, तथा  
राक्षस ॥

—परिच्छेदे विलेऽवधिः ॥ ९९ ॥

अवधि—सीमा वा हृद, गड्ढा और  
काल ॥ ९९ ॥

विधिर्विधाने देवेऽपि—

विधि—करना, भाग्य धर्मशास्त्र तथा  
आज्ञादेना ॥

—प्रणिधिः प्रार्थने चरे ॥

प्रणिधि—प्रार्थन तथा चलनेवाला ॥

बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि—

बुध—पण्डित तथा एक ग्रह ॥ वृद्ध-  
पण्डित तथा वृद्धपुरुष ॥

—स्कन्धः समुदयेऽपि च ॥ १०० ॥

स्कन्ध—समुदय, समूह. काण्ड, राजा  
तथा कन्धा ॥ १०० ॥

देशे नदविशेषेऽप्यौ सिन्धुर्ना  
सरिति स्त्रियाम् ॥

सिन्धु—समुद्र, एक नद, सिन्धुदेश  
तथा नदी ॥

विधा विधौ प्रकारे च—

विधा—विधान प्रकार तथा बढाई ॥

—साधू रम्येऽपि च त्रिषु ॥ १०१ ॥

साधु—साधु, कुलीन, सुन्दर, रोजगारी  
तथा सज्जन ॥ १०१ ॥

वधूर्जाया स्नुषा स्त्री च—

वधू—स्त्री, ( विवाहिता स्त्री ) पुत्रकी  
वहू, सवरग ओषधी ॥

—सुधा लेपोऽमृतं स्नुही ॥

सुधा—अमृत, चूना, विजुली, भोजन,  
अवरा, सेहुड ॥

सन्धा प्रतिज्ञा मर्यादा—

सधा—प्रतिज्ञा, अंगीकार, मर्यादा ॥

—श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृहा ॥ १०२ ॥

श्रद्धा—आदर, आकाक्षा तथा विश्वास  
॥ १०२ ॥

मधु मद्ये पुष्परसे क्षौद्रे—

मधु—मद्य, पुष्परस, शहद, चैत्र तथा  
महुआ ॥

—प्यन्धं तमस्यपि ॥

अन्ध—अन्धा तथा अधियारा ॥

अतस्त्रिषु—

यहासे लेकर वातवर्ग पर्यंत शब्द  
तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

—समुद्रद्वी पण्डितमन्यगर्वि  
सौ ॥ १०३ ॥

समुद्रद्व—अपनेको पण्डित माननेवाला  
वा गर्वयुक्त ॥ १ १ ॥

अक्षय-धुग्धिक्षेपे निर्देश—  
अक्षय-धु—अविक्षेप, निन्दा योग्य  
श्रावण ॥

—ऽयं विळम्बित ॥ आविदूरो-  
प्यवष्टब्धः—

अवष्टब्ध—आश्रित, पासनाला तथा  
बैवा हुआ ॥

—प्रसिद्धौ स्थातमूपितौ ॥ १०४ ॥

प्रसिद्ध—प्रसिद्ध वा भ्रान्त तथा  
मूपित ॥ १ ४ ॥

॥ इति धास्ताः ॥

सूर्यबह्नी चित्रमानु—

चित्रमानु—सूर्य और अग्नि ॥

—भानू रश्मिदिवाकरौ

भानु—किरण और सूर्य ॥

भूतात्मानौ घातुदेहौ—

भूतात्मान्—भूता तथा देह ॥

—मूर्खत्वाच्चो पृथग्जनौ ॥ १०५ ॥

पृथग्जन—मूर्ख और नीच ॥ १०५ ॥

प्रावाणी घोलपापाणौ—

प्रावन्—पर्यन्त तथा फर ॥

—पत्रिणी शरपाक्षिणी ॥

पत्रिन्—पक्षी, घाज पक्षी तथा भाग ॥

सरुशैलौ शिखरिणौ—

शिखरिन्—शृङ्ग तथा शैल ॥

शिखरिणौ वह्निवर्हिणी ॥ १०६ ॥

शिखरिन्—अग्नि तथा मोर ॥ १०६ ॥

—प्रतिपत्नाष्टुभौ लिप्सोपग्रहा—

प्रतिपत्न—कामको इच्छा तथा स-

स्कार ॥

—वयं सादिनौ ॥ द्वौ सारथि-

हयारोहौ—

सादिन्—सारथि और घोड़ेका सवार ॥

—वाजिनोऽश्वेषु पक्षिण ॥ १०७ ॥

वाजिन्—घोडा और पक्षी ॥ १ ७ ॥

कुलेऽप्यभिजनो जन्ममूल्या

म—

अभिजन—कुल तथा जन्ममूलि ॥

—व्यथ हायना ॥ वर्षादिर्वा

हिमेदाश्च—

हायन—वर्ष, ओंघ तथा एक तर-

हका पान ॥

चन्द्राग्न्यर्का विरोचना ॥ १०८ ॥

विरोचन—चन्द्रमा अग्नि, सूर्य ॥ १ ८ ॥

क्षेत्रोऽपि पृथिनी—

पृथिनी—क्षेत्र कुटिल तथा पाप ॥

—विश्वकर्माकिं सुरगिस्त्विनो ॥

विश्वकर्मा—सूर्य तथा विश्वकर्मा ॥

आत्मा यतो धृतिर्बुद्धिः  
स्वभावो ब्रह्मवर्ष्म च ॥ १०९ ॥

आत्मन्—आत्मा, देह स्वभाव, बुद्धि.  
ब्रह्म, उपाय तथा धीरता वा वैर्य ॥ १०९ ॥

शक्तो घातुकमत्तेभो बर्तुका-  
ब्दो घनाघनः ॥

घनाघन—बरसनेवाला मेघ, इन्द्र तथा  
खूनी मतवाला हाथी ॥

अभिमानोऽर्थादिदर्पे ज्ञाने  
प्रणयहिंसयोः ॥ ११० ॥

अभिमान—धनादिका घमट, ज्ञान,  
प्रणय नम्रता तथा हिंसा ॥ ११० ॥

घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते  
निरन्तरे ॥

घन—कठोरवस्तु, मेघ, मूर्तिका गुण  
मुद्गर कोसीका वनाहुआ घटा इत्यादि  
बाजा मध्यमृत्य गीतवाद्य ॥

इनः सूर्ये प्रभौ—

इन—सूर्य, प्रभु ॥

—राजा मृगांके क्षत्रिये नृपे १११

राजन्—चन्द्रमा, क्षत्रिय तथा नृप ॥  
॥ १११ ॥

वाणिन्यौ नर्तकीदूत्यौ—

वाणिनी—नाचनेवाली स्त्री तथा दूती  
वा कुटनी ॥

—खवन्त्यामपि वाहिनी ॥

वाहिनी—सेना, नदी, वाहिनीपति,  
समुद्र तथा सेनापति ॥

हादिन्यौ वज्रतडितौ—

हादिना—वज्र और विजली ॥

—वन्दायामपि कामिनी ॥ ११२ ॥

कामिनी—बहुन कामगली या कामको  
इच्छा करनेवाली स्त्री, वन्दा—एकदृक्षका  
रोग तथा स्त्री ॥ ११२ ॥

त्वग्देहयोरपि तनुः—

तनु—छाल, शरीर, थोडा और दुर्बल

सूनाऽधोजिह्विकापि च ॥

सूना—जिह्वके तलेका स्थान और  
मारनेक स्थान ॥

क्रतुविस्तारयोरस्त्री वितानं

त्रिषु तुच्छके ॥ ११३ ॥ मन्दे—

वितान—क्रतु, विस्तार, तुच्छ ॥ ११३ ॥  
तथा मन्द ॥

—ऽथ केतनं कृत्ये केतावृपानि-  
मन्त्रणे ॥

केतन—ध्वजा, घर, कार्य तथा उपनि  
मन्त्रण ॥

वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा

विप्रः प्रजापतिः ॥ ११४ ॥

ब्रह्मन्—वेद, चैतन्य, तप ब्रह्मा तैत्या  
ब्राह्मण और प्रजापति ॥ ११४ ॥

उत्साहने च हिंसायां सूचने  
चापि गन्धनम् ॥

—समुन्नद्धी पण्डितमन्यगर्वि  
तो ॥ १०३ ॥

समुन्नद्ध—अपनेको पंडित माननेवाला  
वा गर्वयुक्त ॥ १०३ ॥

प्रक्षवधुर्गघिग्नेपे निर्देश—  
प्रक्षवधु—अविक्षय, निन्दा योग्य  
भाषण ॥

—ऽयं बिलम्बितः ॥ अविदूरोऽ-  
प्यवष्टब्धः—

अवष्टब्ध—आश्रित, पासवाला तथा  
मेवा हुआ ॥

—प्रसिद्धौ स्थातमूपितौ ॥ १०४ ॥

प्रसिद्ध—प्रसिद्ध वा म्थात तथा  
भूषित ॥ १०४ ॥

॥ इति धान्ता ॥

सूपवह्नी चित्रमानू-  
चित्रमानु—सूर्य और अग्नि ॥

—भानू रश्मिदिवाकरी  
मानु—निरण और सूर्य ॥

भूतात्मानो घातदेहो—  
भूतात्मन्—मन्मा तथा देह ॥

—मूरजनीचो घृणजनी ॥ १०५ ॥

घृणजन—मूर्ख और नीच ॥ १०५ ॥  
मावाणो क्षेत्तपापाणो—  
माक्न्—रज तथा पाप ॥  
—पत्रिणी नरपात्रिणी ॥

पत्रिन्—पक्षी, बाज पक्षी तथा बाण  
सरुशीलौ क्षिखरिणौ—

क्षिखरिन्—वृक्ष तथा शूड ॥

शिखिनी बाह्विर्वर्हिणी ॥ १०६ ॥

शिखिन्—अग्नि तथा मोर ॥ १०६ ॥  
प्रतियत्नाबुभौ लिप्सोपमहा-  
प्रतियत्न—कामकी इच्छा तथा क-

स्कार ॥

—वथ सादिनौ ॥ दो सारयि  
ह्यारोहौ—

सादिन्—सारथि और घोड़ेका सवार ॥  
—वाजिनोऽश्वेषु पक्षिणः ॥ १०७ ॥

वाजिन्—घोडा और पक्षी ॥ १०७ ॥  
कुलेऽप्यभिजनो जन्मभूम्या  
म—

अभिजन—कुल तथा जन्मभूमि ॥  
—व्यथ हायना ॥ वर्षाचिर्घो-  
हिभेदाश्च—

हायन—वर्ष, ओंघ तथा एक तर  
हका धान ॥

घन्द्राग्न्यर्को विरोचना ॥ १०८ ॥

विरोचन—चन्द्रमा, अग्नि, सूर्य ॥ १०८ ॥  
ह्येतेऽपि घृणिना—  
घृणिम—स्तेन कुटिल तथा पार ॥

—विश्वकर्मासुरशिल्पिनो ॥  
विश्वकर्मा—सृष्ट तथा निर्माता ॥

पक्ष्मन्-नेत्रोके पलक, केसर,  
सूतका टुकड़ा, अतिअल्प ॥

तिथिभेदे क्षणे पर्व-

पर्वन्-अष्टमी दर्श आदि तिथि,  
उत्सव ॥

-वर्त्मनेत्रच्छदेऽध्वनि ॥ १२१ ॥

वर्त्मन्-मार्ग वा रास्ता तथा  
आँखके पलक ॥ १२१ ॥

-अकार्यगुह्ये कौपीन-

कौपीन-अकार्य और गुह्य तथा  
कौपीन ॥

-मैथुनं संगतौ रते ॥

मैथुन-स्त्री पुरुषका संयोग तथा  
रति ॥

प्रधानं परमात्मा धीः-

प्रधान-प्रधान वा मुख्य तथा राजा-  
का मुख्य सहाय, परमात्मा, बुद्धि ॥

-प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः ॥ १२२ ॥

प्रज्ञान-बुद्धि और चिह्न ॥ १२२ ॥

प्रसूनं पुष्पफलयो-

प्रसून-फूल तथा फल ॥

-निधनं कुलनाशयोः ॥

निधन-कुल और नाश ॥

क्रन्दने रोदनाह्वाने-

क्रन्दन-रोना, पुकारना तथा योद्धा-

ओंका धमकीसे ललकारना ॥

वर्ष्मं देहप्रमाणयोः ॥ १२३ ॥

वर्ष्मन्-शरीर वा देह तथा प्रमाण  
वा नाप ॥ १२३ ॥

गृहदेहत्विट्प्रभावा धामा-

धामन्-घर, देह, प्रभा वा प्रकाश  
तथा प्रभाव ॥

-न्यथ चतुष्पथे ॥ संनिवेशे

च संस्थानं-

संस्थान-किसी वस्तुके अवयवोका  
विभाग तथा चौरहा और मरना वा नाश।

लक्ष्म चिह्नप्रधानयोः ॥ १२४ ॥

लक्ष्मन्-चिह्न तथा प्रधान वा  
मुख्य ॥ १२४ ॥

आच्छादने संपिधानमपवारण-  
मित्युभे ॥

आच्छादन-ढाकना, छिपना, बख्त  
इत्यादिसे बचान, बख्त तथा गुप्त होना ॥

आराधनं साधने स्यादवाप्तौ  
तोषणेऽपि च ॥ १२५ ॥

आराधन-सन्तुष्ट करना, सिद्ध  
करना तथा लाभ ॥ १२५ ॥

अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाध्या-  
सनेष्वपि ॥

अधिष्ठान-पहियों, नगर, आक्रमण  
वा झमलमें कर लेना ॥

रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि-

गन्धन-सूचनकरना वा चुगड़ीखाना  
हिंसा तथा उस्ताह देना वा मरोसादेना ॥

आतञ्जनं प्रसीवापञ्जवनाप्याय  
नार्थकम् ॥ ११५ ॥

आतञ्जन-बग, तपकरना तथा दूधमें  
मड़ा बाधना ॥ ११५ ॥

व्यञ्जनं लाञ्छन स्मश्रुनिष्ठाना  
वयवेष्वपि ॥

व्यञ्जन-बिह, दाढीमूछनिष्ठान तथा  
अंग ॥

स्यात्कौलीनं लोकत्वादे युद्धे  
पञ्चहिपाक्षिणाम् ॥ ११६ ॥

कौलीन-छोकापवाद वा लोकनिंदा  
तथा पक्ष सर्प पक्षीका युद्ध ॥ ११६ ॥

स्यादुद्यानं निम्सरणे वनभेदे  
प्रयोजने ॥

उद्यान-अगीचा, निकलना तथा  
प्रयोजन ॥

अवकाशो स्थितौ स्थानं-  
स्थान-अवकाश और स्थिति ॥

—क्रीडादावपि देवनम् ॥ ११७ ॥

देवन-क्रीडा व्यवहार तथा जीतमेक  
इच्छा ॥ ११७ ॥

उत्थानं पौरुषे तन्त्रे सनिधि-  
द्योत्रमेऽपि च ॥

उत्थान-उठना व सदा रोना,

उद्योग, कुटुम्बकार्य, सिद्धान्त तथा  
उत्तम औपध ॥

व्युत्थानं प्रसिरोधे च विगेषा  
चरणेऽपि च ॥ ११८ ॥

व्युत्थान-तिरस्कार वा अनावर  
विरोध करना तथा स्वतन्त्रतासे काम  
करना ॥ ११८ ॥

मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्ये  
ऽप्यदापने ॥ निर्वर्तनौपकरणानु  
व्रज्यासु च साधनम् ॥ ११९ ॥

साधन-पारा इत्यादि रसायनका  
वनाना, चखना, पृथ्वी जल इत्यादि  
द्रव्य वन दौलत दिखाना, वन इत्यादि  
का पैदा करना, उपाय, पीछे पीछे  
चलना पुरुषका मूत्रेन्द्रिय, तथा मृतक  
वा अग्निसंस्कार ॥ ११९ ॥

निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्या  
सार्पणेऽपि च ॥

निर्यातन-वैरशोधन, दान तथा  
घरोहट दाना ॥

व्यसनं विपदि भ्रंशे दोषे  
कामजकोपजे ॥ १२० ॥

व्यसन-विपत्ति, अश नाश वा पतन,  
कामज दोष तथा कोपदोषा ॥ १२ ॥

पक्ष्मासिलोन्नि किमल्के व  
स्वाशशोऽप्यणीमसि ॥

पद्मन्-नेत्रोके पलक, केसर,  
सूतका टुकड़ा, अतिअल्प ॥

तिथिभेदे क्षणे पर्व-

पर्वन्-अष्टमी दर्श आदि तिथि,  
उत्सव ॥

-वर्त्मनेत्रच्छदेऽध्वनि ॥ १२१ ॥

वर्त्मन्-मार्ग वा रास्ता तथा  
आँखके पलक ॥ १२१ ॥

-अकार्यगुह्ये कौपीन-

कौपीन-अकार्य और गुह्य तथा  
कौपीन ॥

-मैथुनं संगतौ रते ॥

मैथुन-स्त्री पुरुषका संयोग तथा  
रति ॥

प्रधानं परमात्मा धीः-

प्रधान-प्रधान वा मुख्य तथा राजा-  
का मुख्य सहाय, परमात्मा, बुद्धि ॥

-प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः ॥ १२२ ॥

प्रज्ञान-बुद्धि और चिह्न ॥ १२२ ॥

प्रसूनं पुष्पफलयो-

प्रसून-फूल तथा फल ॥

-निधनं कुलनाशयोः ॥

निधन-कुल और नाश ॥

क्रन्दने रोदनाद्वाने-

क्रन्दन-रोना, पुकारना तथा योद्धा-

ओंका धमकीसे डलकारना ॥

वर्ष्मं देहप्रमाणयोः ॥ १२३ ॥

वर्ष्मन्-शरीर वा देह तथा प्रमाण

वा नाप ॥ १२३ ॥

गृहदेहत्विद्रुमभावा धामा-

धामन्-घर, देह, प्रभा वा प्रकाश

तथा प्रभाव ॥

-न्यथ चतुष्पथे ॥ संनिवेशे

च संस्थानं-

संस्थान-किसी वस्तुके अवयवोंका  
विभाग तथा चौरहा और मरना वा नाश।

लक्ष्म चिह्नप्रधानयोः ॥ १२४ ॥

लक्ष्मन्-चिह्न तथा प्रधान वा  
मुख्य ॥ १२४ ॥

आच्छादने संपिधानमपवारण-  
मित्युभे ॥

आच्छादन-ढाकना, छिपना, बख-  
इत्यादिसे बंछन, बख तथा गुप्त होना ॥

आराधनं साधने स्यादवाप्तौ  
तोषणेऽपि च ॥ १२५ ॥

आराधन-सन्तुष्ट करना, सिद्ध  
करना तथा लाभ ॥ १२५ ॥

अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाध्या-  
सनेष्वपि ॥

अधिष्ठान-पहियों, नगर, आक्रमण  
वा भ्रमलमें कर लेना ॥

रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि-



रत्न—नवाहिर तथा स्वजातिमें श्रेष्ठ  
वा उत्तम ॥

—बने सलिलकानने ॥ १२६ ॥

वन—पानी और वन ॥ १२६ ॥

सलिन विरले स्तोके—

तस्मिन्—विरल तथा थोड़ा ॥

—वाच्यलिङ्ग तयोत्तरे ॥

यहांसे नातबर्गकी समाप्ति पर्यन्त  
संपूर्ण शब्द वाच्यलिङ्ग होते हैं ॥

समाना—सत्समैके स्युः—

समान—संबन्धित, सम और एक ॥

—पिशुनौ खलसूचकौ ॥ १२७ ॥

पिशुन—सूचक वा चुगलखोर तथा

खल ॥ १२७ ॥

हीनन्यूनावूनगर्ह्यौ—

हीन न्यून, थोड़ा त्याग किया  
गया तथा निन्दा करनेके योग्य और  
किसी वस्तुसे रहित ॥

—वेगिशूरी सरस्विनी ॥

सरस्वि—कंगवाला तथा शूर ॥

अभिपन्नोऽपरादोऽभिप्रस्त

व्यापद्रसावपि ॥ १२८ ॥

अभिपन्न—अपराधी, जीता गया  
तथा रिपविका प्राप्त मया ॥ १२८ ॥  
॥ इति नाम्ना ॥

कलापो भूपणे यहं सूर्यारे  
सदृशवपि ॥

कलाप—समूह, मोरकी पूछ छी  
कमरकी पन्नीस छडकी फौजनी तथा  
गहना और सरकस ॥

परिच्छदे परीषापः पर्युप्ती  
सलिलस्मितौ ॥ १२९ ॥

परीषाप—संबू कनात इत्यादि सामग्री  
तथा बीजका बोना और धागा ॥ १२९ ॥

गोधुग्गोष्ठपती गौपौ—

गोप—अहीर, गन्धर्वस, अनेकका-  
मोंको करनेवाला वा कामदार ॥

—हरविष्णु वृषाकर्मि ॥

वृषाकर्मि—महादेव तथा विष्णु ॥

वाष्पमूष्माशु—

वाष्प—माफ अर्थात् गरम वस्तुपर  
पानी डालनेसे धूमकिस स्पर्श ऊपर  
उठती है वस्तु, भासू, गरमी ॥

—कशिपु त्वन्नमाच्छादन  
द्वयम् ॥ १३० ॥

कशिपु—भोजन, अन्न वत्त तथा  
तकिया ॥ १३ ॥

सत्पुं क्षय्याद्वारेषु—

तत्पुं—छाट, अटारी तथा दारा ॥

—स्तम्भेऽपि बिटपोऽस्त्रियाम् ॥

बिम्प—शास्त्रा पत्ता इत्यादिका  
समूह, घास सृण इत्यादिका गुच्छा,  
बुझ वा पेड़ ॥

प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुध  
मनोज्ञयोः ॥ १३१ ॥ भेद्यलिङ्गा  
अमी-

प्राप्तरूप-स्वरूप, अभिरूप, पठित  
तथा सुन्दर ॥ १३१ ॥

-कूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी ॥  
कच्छपी-कछुही और सारस्वती  
वीणा ॥

इति पाताः ॥

खर्गे पुंसि रेफः स्यात्कुत्सिते  
वाच्यलिङ्गकः ॥ १३२ ॥

रेफ-अधम वा नीच तथा रेफ वा  
हल रकार एक वर्ण ॥ १३२ ॥

इति पाताः ॥

अन्तराभावसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो  
दिव्यगायने ॥

गधर्व-विश्वावसु इत्यादि स्वर्गके  
गधैये, घोडा, एक प्रकारका गधयुक्त  
मृग, मनुष्यादि प्राणी ॥

कम्बुर्ना वलये शंखे-

कम्बु-शख, ककण वा कगन ॥

-द्विजिह्वौ सर्पसूचकौ ॥ १३३ ॥

द्विजिह्व-सर्प तथा जुगलखोरा ॥ १३३ ॥

पूर्वोऽन्यलिङ्गः प्रागाह पुंवदुत्वे-  
ऽपि पूर्वजान् ॥

पूर्व-पहिला-ली, पूर्वपुरुष, अर्थात्

गुरुखा, ब्रह्मा, पूर्वदिशा तथा पहिले ॥  
इति वान्ताः ॥

कुम्भौ घटेभमूर्धाशौ-

कुम्भ-गूगलका वृक्ष, घटा, हाथीका  
मस्तक, अश, कुम्भराशि ॥

-डिम्भौ तु शिशुवालिशौ ॥ १३४ ॥

डिम्भ-वालक तथा मूर्ख ॥ १३४ ॥

स्तम्भो स्थूणाजडीभावौ-

स्तम्भ-खम्, ठगसुरी ॥

शम्भू ब्रह्मत्रिलोचनौ ॥

शम्भू-ब्रह्मा और शिव ॥

कुक्षिभ्रणार्भका गर्भा-

गर्भ-स्त्रीके पेटका गर्भ पेट, बालक,  
नाट्यकी तीसरी सधि ॥

-विस्त्रम्भः प्रणयेऽपि च ॥ १३५ ॥

विस्त्रम्भ-शृंगारकी प्रार्थना और  
विश्वास ॥ १३५ ॥

स्याद्देर्या दुन्दुभिः पुंसि स्या-  
दक्षे दुन्दुभिः स्त्रियाम् ॥

दुन्दुभि-नगाडा तथा लडकोंका  
एक प्रकारका खिलौना ॥

स्यान्महारजने क्लीवं कुसुम्भं  
करके पुमान् ॥ १३६ ॥

कुसुम्भ-कमण्डल, कुसुमका फूल  
॥ १३६ ॥

क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना-

मामि-टूट्टी, क्षत्रिय, सुम्भराजा,  
रथके चक्रका मध्यभाग और फस्तूरी ॥

-सुरभिर्गवि च स्त्रियाम् ॥

सुरभि-सुन्दर वा मनोहर, सुगन्धयुक्त,  
प्रसिद्ध, चम्पा ( पुष्पवृक्ष, ) यमन्तकतु,  
जायफल, कामधेनु, सर्पवृक्ष, सुवर्ण  
वा सोना तथा कमल ( पुष्पवृक्ष ) ॥

समा ससदि सम्ये च-

समा-समा तथा घर ॥

-त्रिष्वध्वक्षेपि बहुम' ॥ १३७ ॥

बहुम-प्यारा-री, स्त्रीका पति, अग्न्यक्ष  
वा माछिक तथा कुलीन खोडा ॥ १३७ ॥

इति माता ॥

किरणप्रमही रश्मी-

रश्मि-किरण वा प्रकाश तथा छगाम ॥

कपिमेकौ ध्रुवश्चमौ ॥

प्रकाश-रानर तथा मङ्गल ॥

इच्छामनोमवौ कामौ-

काम-इच्छा और काम ॥

-शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ १३८ ॥  
पराक्रम-शूरता तथा उद्योग ॥ १३८ ॥

धर्मा पुण्ययमन्यायस्वभा

वाचारसोमपाः ॥

धर्म-पुण्य यमराज, न्याय, स्वभाव,  
वाचार तथा सोमवृक्ष करके सोमव  
स्त्रीका रस पीनेवाला ॥

उपायपूर्व धारम्भ उपा  
चाप्युपक्रम ॥ १३९ ॥

उपक्रम-उपायपूर्वक प्रारम्भ, प्रारम्भ  
तथा रिसम्भ ॥ १३९ ॥

वणिकषयाः पुर वेदो निगमो-  
निगम-व्यापार, शहर तथा वेद ॥

-नागमे वणिक् ॥ नैगमौ  
दी-

नैगम-वेदसम्बन्धि वस्तु, नगरका रहन  
वाला तथा बनिया और उपनिषद् ॥

-यत्ने रामो नीलचारुसिते  
त्रिषु ॥ १४० ॥

राम-सुन्दर वा मनोहर, नीली वस्तु,  
श्वेत वस्तु, तथा परछुराम रामचन्द्र,  
कसराम ॥ १४० ॥

शब्दाविपूर्वो ध्रुवदेवापि माम'-  
माम-पु । गाँव, ( इस शब्दक

पूर्वमे जब' शब्द' इत्यादि शब्द रहतहे  
तब यह समझनाची होताहे जैसा शब्द  
ग्राम स्वरग्राम, यह शब्द कहीं स्वरवा  
भीमी हे ) ।

-क्रान्तौ च विक्रम' ॥

विक्रम-विक्रमण तथा पराक्रम ॥  
स्तोम' स्तोमोऽध्वरे ध्रुवदे-

स्तोम-समूह तथा स्तोत्र ॥  
-जिह्वस्तु कुटिलेखसे ॥ १४१ ॥

जिह्व-कुटिल तथा आलसी और

वक्र ॥ १४१ ॥

गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च-

गुल्म-पिलही रोग, बिना छालीका

वृक्ष तथा एक प्रकारकी सेना ॥

जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ॥

जामि-ब्रह्मिन, तथाकुलस्त्री ॥

क्षितिक्षान्त्योः क्षमा युक्ते क्षमं

शक्ते हिते त्रिषु ॥ १४२ ॥

क्षमा-पृथ्वी तथा क्षमा वा सहना

॥ १४२ ॥

त्रिषु श्यामौ हरितकृष्णौ

श्यामा स्याच्छारिवा निशाः ॥

श्याम-श्यामा-हरा, कृष्ण, गतावरी

और रात्रि ॥

ललामं पुच्छपुंडाश्वभूषापा-

धान्यकेतुषु ॥ १४३ ॥

ललाम-पूछ, घोडा, घोडेके माथेका

एकचिह्न, घोडेका गहना, प्रधान वा

मुख्य, मनोहर, प्रभाव, पुरुष तथा भूषण

और अश्वलिङ्गी ॥ १४३ ॥

सूक्ष्ममध्यात्मम-

सूक्ष्म-छूछ तथा अन्त्यात्म ॥

-प्यादौ प्रधाने प्रथम-

प्रथम-पहिला-ली, तथा प्रधान वा

मुख्य ॥

-स्त्रिषु ॥

यहासे लेकर मान्तपर्यन्त सम्पूर्णशब्द

तीनों लिंगोंमे होते हैं ॥

वामौ वल्गुप्रतीपौ द्वा-

वाम-शोभित, उलटा तथा टेढा ॥

-वधमौ न्यूनकुत्सितौ ॥ १४४ ॥

अधम-न्यून, तथा निन्दित १४४ ॥

जीर्णं च परिभुक्तं च यात-

याममिदं द्वयम् ॥

यातयाम-पुराना-नी, (बासी अन्न

इत्यादि) और भोजन करके त्याग किया

गया-ई ॥

॥ इति मान्ताः ॥

तुरंगगरुडौ ताक्ष्यौ-

ताक्ष्य-घोडा तथा गरुड ॥

-निलयापचयौ क्षयौ ॥ १४५ ॥

क्षय-नाश, प्रलय, क्षयरोग तथा

वर्ग ॥ १४५ ॥

श्वशुर्यौ देवरश्यालौ-

श्वशुर्य-देवर तथा साला ॥

भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विषौ ॥

भ्रातृव्य-मतीजा तथा शत्रु ॥

पर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ-

पर्जन्य-शब्दित मेघ तथा इन्द्र ॥

-स्यादर्यः स्वामिवैश्ययोः १४६

अर्य-स्वामि तथा वैश्य ॥ १४६ ॥

तिष्य\* पुष्ये कलियुगे-

तिष्य-पुष्य मङ्गल, और कलियुग ॥

-पर्यायोऽवसरे क्रमे ॥

पर्याय-अक्षर तथा क्रम ॥

प्रत्ययोऽर्धानक्षपथज्ञानविषया

सहेतुषु ॥ १४७ ॥ रन्ध्रे शब्दे-

प्रत्यय-अधीन, क्षय, ज्ञान, विज्ञास

तथा कारण ॥ १४७ ॥ छिद्र और शब्द ॥

ऽऽद्यानुज्ञयो दीर्घद्वेषानु

तापयो ॥

अनुज्ञा-बड़ा धैर तथा पश्चात्ताप ॥

स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्पे गमा

नां मध्यमे गते ॥ १४८ ॥

स्थूलोच्चय-पर्वतक बड़ा ढोंका अर्ध

पूर्णता, हाथियोंकी मध्यम गति अर्थात्

न जस्दी न घीरे ॥ १४८ ॥

समयाः श्रपयाचारकाल

सिद्धान्तसंविदः ॥

समय-काल वा समय, शपथ वा

किरिया, आचार वा अपने मतके सख्त

व्यवहार, सिद्धान्त अर्थात् निर्णय किया

हुआ पदार्थ तथा बातचीत करना ॥

व्यसनान्मशुम दैवं विपदित्य

नपात्रय\* ॥ १४९ ॥

अनय-दुर्मयसन शुभा इत्यादि हुए

माय तथा विपत्ति और अनीति ॥ १४९ ॥

अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रदोषे

दण्डे-

अत्यय-मरना, उत्खनन, क्लेश दोष

तथा दण्ड और नाश ॥

-ऽप्यथापदि ॥

युदायत्योः संपराय-

सम्पराय-भाषति, युद्ध तथा उत्तर

काल वा अगाडीका समय ॥

-युज्यस्तु स्वशुरेऽपि च ॥ १५० ॥

युज्य-युद्ध वा आदर करनेके योग्य

और स्मुर ॥ १५० ॥

पश्चादवस्थायि बलं समवा

यम् सैन्यौ ॥

सचय-अच्छा स्थाय करनेवाला

सेनाके पीछेकी सेना तथा समुद्र ॥

सघाते सनिवेशे च सस्त्यायः-

सस्त्याय-समुद्र, बैठक तथा बिस्तार

प्रणयास्त्वमी ॥ १५१ ॥

विसम्मयाऽप्रेमाणाः-

प्रणय-प्रेम वा प्रीति मंगना तथा

विश्वास ॥ १५१ ॥

-विरोधेऽपि समुच्छ्रय\* ॥

समुच्छ्रय- उच्चाई तथा शिरोध ॥

विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र

शब्दादिकेष्वपि ॥ १५२ ॥

विषय-जानी हुई वस्तु, रूप,

रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द, ( ये प्रत्येक विषय कहलाते हैं ) देश, स्थान और आश्रय ॥ १५२ ॥

**निर्यासेऽपि कषायोऽस्त्री-**

कषाय—कपेला रङ्गयाला—ली, कसेला रङ्ग, काढा, विलेपन तथा नया अगराग अर्थात् टटका चन्दनादिक ॥

**—सभायां च प्रतिश्रयः ॥**

प्रतिश्रय—समा, आश्रय वा अवलम्बन तथा अङ्गीकार ॥

**प्रायो भूम्न्यन्वगमने-**

प्राय—सन्ध्यासपूर्वक भोजनका त्याग, मृत्यु वा मरण और तुल्य ॥

**—मन्युर्दैन्ये क्रतौ कुधि ॥ १५३ ॥**

मन्यु—क्रोध, दीनता वा गरीबी तथा चिन्ता वा शोक ॥ १५३ ॥

**रहस्योपस्थयोगुह्यं-**

गुह्य—छिपानेके योग्य तथा स्त्री वा पुरुषका मूत्रेन्द्रिय ॥

**—सत्यं शपथतथ्ययोः ॥**

सत्य—सच्चा—स्त्री, सत्यमामा, सत्यता, कसम तथा सत्युग ॥

**वीर्यं बले प्रभावे च-**

वीर्य—बल और प्रभाव ॥

**—द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये ॥ १५४ ॥**

द्रव्य—धन, भव्य अर्थात् सुन्दर और स्थिर ॥ १५४ ॥

**धिष्ण्यं स्थाने गृहे भेप्रौ-**

धिष्ण्य—स्थान, गृह, नक्षत्र तथा अग्नि ॥

**—भाग्यं कर्म शुभांशुभम् ॥**

भाग्य—भाग्य वा पूर्वजन्मके किये हुए अच्छे वा बुरे कर्म ॥

**कशेरुहेऽग्नौर्गङ्गियं-**

गागेय—गंगासम्बन्धी वस्तु, मीष्म कौरवके पितामह, सुवर्ण वा सोना, कसेरफल वा कन्द ॥

**—विशल्या दन्तिकाऽपि**

**च ॥ १५५ ॥**

विशल्या—गुडूची औषधी, इन्द्रपुष्पी औषधी, अग्निकी शिखा वा आगकी लपट तथा दन्तिका औषधी ॥ १५५ ॥

**वृषाकपायी श्रीगौर्यो-**

वृषाकपायी—लक्ष्मी तथा पार्वती ॥

**—रभिरुथ्या नामशोभयोः ॥**

अभिरुथ्या—नाम तथा शोभा ॥

**आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा**

**पूजनं संप्रधारणम् ॥ १५६ ॥**

**उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा**

**च नव क्रियाः ॥**

क्रिया—क्रिया वा कर्म, आरम्भ, प्रायश्चित्त, शिक्षा, पूजन, विचार, उपाय कर्म चेष्टा तथा दवाईकरना ॥ १५६ ॥

तिष्य\* पुष्ये कलियुगे-

तिष्य-पुष्य नक्षत्र, और कलियुग ॥

-पर्यायोऽवसरे क्रमे ॥

पर्याय-अवसर तथा क्रम ॥

मत्पयोऽधीनशपथज्ञानविश्वा

सहेतुषु ॥ १४७ ॥ रन्ध्रे द्वाब्दे-

प्रत्यय-अधीन, शपथ, ज्ञान, विश्वास

तथा कारण ॥ १४७ ॥ छिद्र और शब्द ॥

ऽऽयानुशयो वीधिंदेपातु-

त्तापयो ॥

अनुशय-बड़ा धैर तथा पक्षात्ताप ॥

स्थूलोच्चमस्त्वसाकल्ये गमा

नां मध्यमे गते ॥ १४८ ॥

स्थूलोच्चय-पर्यन्तका बड़ा ठोका असे  
पूर्णता, हाथियोंकी मध्यम गति अर्थात्  
न जल्दी न धीरे ॥ १४८ ॥

समया\* शपथाचारकाळ

सिद्धान्तसंनिदः ॥

समय-काळ वा समय, शपथ वा  
निरिथा, आचार वा अपने मतके सहस्र  
ग्यारहार, सिद्धान्त अर्थात् निर्णय किया  
हुआ पदार्थ तथा बातचीत करना ॥

व्यसनायशुभं दर्वं विपदित्य

नयास्त्य ॥ १४९ ॥

अनय-दुर्बलतन हुआ इत्यादि दुः  
भाग्य तथा निरति और अनीति ॥ १४९ ॥

अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रदोषे

दण्डे-

अत्यय-भरना, उत्सृजन, कृच्छ्रदोष

तथा दण्ड और नाश ॥

-ऽप्यद्यापदि ॥

युद्धायत्यो\* संपराय-

सम्पराय-आपत्ति, युद्ध तथा उत्तर

काळ वा अगाडीका समय ॥

-पृथ्व्यस्तु क्षमशुरेऽपि च ॥ १५० ॥

पृथ्व-पृथा वा आदरपरतक योग्य

और समुर ॥ १५० ॥

पक्षाद्वस्थापि बल समवा

यश्च सनयी ॥

सनय-अच्छम ग्याय करनेवाला

सेनाके पीछेकी सेना तथा समूह ॥

संघाते संनिवेशे च सस्त्याय-

सस्त्याय-समूह, बैठक तथा विस्तार

प्रणयास्त्वमी ॥ १५१ ॥

विक्षम्भयाच्चापेमाणा-

प्रणय-प्रेम वा प्रीति, मांगना तथा

विश्वास ॥ १५१ ॥

-विरोधेऽपि समुच्छ्रय\* ॥

समुच्छ्रय-उंचाई तथा विरोध ॥

विषया यस्य वा ज्ञातस्तत्र

ज्ञानादिकञ्चापि ॥ १५२ ॥

विषय-जामी हुई बात, रूप,

—संस्तरौ प्रस्तराऽध्वरौ ॥ १६१ ॥

सस्तर—कुशका विछौना; विछौना  
तथा यज्ञ ॥ १६१ ॥

गुरु गीष्पतिपित्राद्यौ—

गुरु—भारी, बृहस्पति, बडेलोग (पि-  
ता इत्यादि) ॥

—द्वापरौ युगसंशयौ ॥

द्वापर—सशय (सन्देह), 'द्वापर'  
युग ॥

प्रकारौ भेदसादृश्ये—

प्रकार—भेद (तरह) तथा तुल्यता ॥

—आकाराविद्धिताकृती ॥ १६२ ॥

आकार—चेष्टा तथा सूत्र ॥ १६२ ॥

किंशारू सस्यशूकेषु—

किंशारू—यव इत्यादिका ढूँडा  
(शूके तुल्य अग्रभाग) तथा वाण  
और कक पक्षी ॥

—मरू धन्यधराधरौ ॥

मरू—निर्जलदेश और पर्वत ॥

अद्रयो दुमशैलार्काः—

अद्रि—वृक्ष, पर्वत तथा सूर्य ॥

—स्त्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ ॥ १६३ ॥

पयोधर—स्तन और मेघ ॥ १६३ ॥

ध्वान्तारिदानवा वृत्रा—

वृत्र—वृत्रासुर, (एकदैत्य) अन्धकार  
तथा शत्रु ॥

—बलिहस्तांशवः कराः ॥

कर—हाथ, हाथीकी सूड, किरण  
तथा महसूल वा कर ॥

प्रदरा भङ्गनारीरुग्वाणा—

प्रदर—छिर्योका एकरोग (जिसके  
होनेसे मूत्रद्वारसे लोहू बह जाता है) भग  
(भग्नता) तथा वाण ॥

—अस्त्राः कचा अपि ॥ १६४ ॥

अस्त्र—केश कोमा, आसू, तथा  
लोहू ॥ १६४ ॥

अजातशत्रुगो गौः काले-

ऽप्यश्मश्रुर्ना च तवरौ ॥

तवर—समयपर जिसके सींग न  
जममें हों ऐसा बैल, समय पर जिसके  
मूछें न जमी हों ऐसा पुरुष ॥

स्वर्णेऽपि राः—

रै—धन तथा सुवर्ण (सोना) ॥

—परिकरः पर्यंकपरिवारयोः

॥ १६५ ॥

परिकर—मलंग और कुटुम्ब ॥ १६५ ॥

मुक्ताशुद्धौ च तारः स्या—

तार—ऊँचा शब्द, नक्षत्र, आखकी  
पुतली, मोती, सफाई, गोळ मोती, गोळ  
और निर्मळ मोतीसे बना हार, जलसे  
पार उतरना, एक वानरका नाम तथा  
चादी धातु ॥



छाया सूर्यप्रिया कान्ति-  
प्रतिबिम्बमनात्प ॥ १५७ ॥

छाया—छाया, सूर्यकी छाँव या शरीर-  
शरकी माता तथा शोभा और प्रति-  
बिम्ब ॥ १५७ ॥

कक्ष्या प्रकोष्ठे इम्यादि का  
कक्ष्या मध्यमेवमन्धने ॥

कक्ष्या—राजाकी बैठड़ी, स्त्रियोंक  
कमर का गहना, हाथीके मध्य शरीर  
रक्त बचन ॥

कृत्वा क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेदो  
धनादिभि ॥ १५८ ॥

कृत्वा—धन, स्त्री, भूमि इत्यादि फेड़  
नके योग्य शत्रुका पुत्र्य इत्यादि, तामसी  
दस्ता जिसको छोग शत्रुपर चलाते हैं  
तथा क्रिया का कर्म ॥ १५८ ॥

जन्यं स्याज्जनावदेऽपि—

जन्य—जो पैदा होता है निन्दित  
मचन घरक अर्थात् दामादक पक्षबाछे  
मित्र इत्यादि, बाजार तथा मुद्र ॥

—जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च ॥

जघन्य—सबस पिछला—छी, अधम  
वा मीच—तथा मूत्रेन्द्रिय ॥

गङ्गादीनौ च वत्तर्ध्या—

गङ्गा—बावनेरु योग्य, निम्दा कर  
नके योग्य हीन अर्थात् किसी वस्तुमें  
रहित तथा अधीन वा परतन्त्र ॥

—कल्पयौ सज्जनिरामयौ ॥ १५९ ॥

कल्प—कल्प धारण करनेवाला योद्धा

तथा नीरोग ॥ १५९ ॥

आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थ्यो—

अर्थ्य—अर्थसे च्युत वा दूर न मयार्थ,

मुक्तिमान्—मती, और शिक्षाजीत ॥

—पुण्यं तु चार्थपि ॥

पुण्य—पुण्यवान् मनोहर तथा धर्मी

—रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि—

रूप्य—रमणीय वा सुन्दर, रुपया

वा चांदी छापी हुई चांदी वा सोना

अर्थात् चांदी वा सोनेका रुपया ॥

—वदान्या वल्गुवागपि ॥ १६० ॥

वदान्य—दाता वा देनेवाला—छी,

मीठा बावनेवाला—छी ॥ १६० ॥

न्यायेऽपि मध्य—

मध्य—बिचला—छी वा बीचवाला—

छी, अधम वा नीच, न्याय्युक्त वा

यापर सदृश कमर तथा बीच ॥

—सौम्यं तु सुन्दरे सोमदेवते ॥

सौम्य—सुधा—छी सुन्दर, घट्टक

निकट करनरे योग्य वस्तु, सुभ

( एकपद ) ॥

॥ इति यावत् ॥

निबहावसरी भारी—

घाट—मोम, मंगल, मुष इत्यादि ७

साठ बार, अचमर, समुद्र ॥

—संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ॥ १६१ ॥

सस्तर—कुशका विछौना, विछौना  
तथा यज्ञ ॥ १६१ ॥

गुरु गीष्पतिपित्राद्यौ—

गुरु—भारी, वृहस्पति, वजेलोग (पिता इत्यादि) ॥

—द्वापरौ युगसंशयौ ॥

द्वापर—संशय (सन्देह), 'द्वापर' युग ॥

प्रकारौ भेदसादृश्ये—

प्रकार—भेद (तरह) तथा तुल्यता ॥

—आकाराविद्धिताकृती ॥ १६२ ॥

आकार—चेष्टा तथा सूरत ॥ १६२ ॥

किंशारू सस्यशूकेषु—

किंशारू—यव इत्यादिका टूँट्टा  
(सुईके तुल्य अग्रभाग) तथा वाण  
और कक पक्षी ॥

—मरू धन्यधराधरौ ॥

मरू—निर्जलदेश और पर्वत ॥

अद्रयो द्रुमशैलार्काः—

अद्रि—वृक्ष, पर्वत तथा सूर्य ॥

—स्त्रीस्तनान्दौ पयोधरौ ॥ १६३ ॥

पयोधर—स्तन और मेघ ॥ १६३ ॥

ध्वान्तारिदानवा वृत्रा—

वृत्र—वृत्रासुर, (एक दैत्य) अन्धकार  
तथा शत्रु ॥

—वलिहस्तांशवः कराः ॥

कर—हाथ, हाथीकी सूड, किरण  
तथा महसूल वा कर ॥

प्रदरा भङ्गनारीरुग्वाणा—

प्रदर—स्त्रियोंका एकरोग (जिसके  
होनेसे मूत्रद्वारासे लोहू बह जाता है) भग  
(भग्नता) तथा वाण ॥

—अस्त्राः कचा अपि ॥ १६४ ॥

अस्त्र—केश कोना, आसू, तथा  
लोहू ॥ १६४ ॥

अजातशृंगो गौः काले-

ऽप्यश्मश्रुर्ना च तवरौ ॥

तूवर—समयपर जिसके सींग न  
जममें हों ऐसा बैल, समय पर जिसके  
मूछें न जमी हों ऐसा पुरुष ॥

स्वर्णेऽपि राः—

रै—धन तथा सुवर्ण (सोना) ॥

—परिकरः पर्यकपरिवारयोः

॥ १६५ ॥

परिकर—पलंग और कुटुम्बा ॥ १६५ ॥

मुक्ताशुद्धौ च तारः स्या—

तार—ऊँचा शब्द, नक्षत्र, आखकी  
पुतली, मोती, सफाई, गोल मोती, गोल  
और निर्मल मोतीसे बना हार, जलसे  
पार उतरना, एक वानरका नाम तथा  
चादी धातु ॥

—छारो वायो स तु त्रिषु ॥  
कधुरे—

शाग—किराकबत—रो, चौपड इत्यादिके  
खट्खनी गुहा, तथा वायु ॥

—ऽय प्रतिज्ञाजिसबिदाप  
त्सु सगरः ॥ १६६ ॥

सगर—सप्राप्तता शुद्ध प्रतिज्ञा, सहाह  
तथा आपत्ति वा विपत्ति ॥ १६६ ॥

बंदमदे गुप्तबादे मन्त्रो—

मन्त्र—मन्त्र वा सहाह एक केवका  
मेद, तथा गुप्त बोळना ॥

—मित्रो रत्नावापि ॥

मित्र—सूर्य, मित्र (दोस्त) तथा अपन  
समीपके राजासे व्यवहित राजा ॥

मत्सेषु यूपखण्डेषुपि स्वरु—

स्वरु—इन्द्रका वक्र तथा यज्ञमें  
खम्मके छीळनेके समय उसमेंसे गिरा  
पड़िना टुकड़ा ॥

—गुह्योऽप्यवस्कर ॥ १६७ ॥

अवस्कर—विद्या तथा छी वा पुरु-  
ष्का मूत्रन्द्रिय ( उपस्थ ) ॥ १६७ ॥

आढम्बरस्तूपरवे गजेन्द्राणां  
च गजंते ॥

आढम्बर—तैयारी बाजेका शब्द,  
तथा गड हाथियोंका शब्द ॥

अभिहारोऽभिधोगे च चौर्ध्वे  
सनहनेऽपि च ॥ १६८ ॥

अभिहार—चोराना, कबच इत्यादिका  
धारण तथा माछिवा इत्यादि दुरु-  
नाशका उपाय ॥ १६८ ॥

स्याज्जन्मे परीवारं स्वज्जकोषे  
पारेच्छेत् ॥

परीवार—कुटुम्ब, सरबार इत्यादिका  
म्यान तथा छाव कर ॥

विष्टरो विटपी दर्भमुष्टिं  
पीठाद्यमासनम् ॥ १६९ ॥

विष्टर—बैठनेका आसन, वृक्ष, दर्भ  
मुष्टि ( एक प्रकारका परिमाण ) वा  
नाप ॥ १६९ ॥

द्वारि द्वास्थे प्रतीहारं प्रती  
हार्यप्यनन्तरे ॥

प्रतीहार—प्रतीहारि—द्वार तथा द्वारपाल  
बिष्टुले नकुले विष्णो बभ्रुनां  
पिंगले त्रिषु ॥ १७० ॥

बभ्रु—पीछेरगवाही कस्तू, पीछारंग बग  
मौला, विष्णु तथा एक पादवा ॥ १७० ॥

सारो बले स्थिरांश्चे च न्या  
य्ये ह्यीये वरे त्रिषु ॥

सार—शष्ठ वा प्रधान वक्र, कस्तूका  
स्थिरभाग बाहीर, मन्त्रा वा चरबी, पानी  
भन तथा उचित वा म्यायके अनुसारा ॥

दुरोदरो दृष्टकारे पणो दृते  
दुरोदरम् ॥ १७१ ॥

दुरोदर—जुआरी, दाव (जो द्रव्य जुए-  
में लगाया जाता है ) जुआ ॥ १७१ ॥

महारण्ये दुर्गपथे कान्तारं  
पुनपुंसकम् ॥

कान्तार—दुर्गम वा टेढ़ा मार्ग, वड़ा  
वन एक प्रकारका ऊख ॥

मत्सरोऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयो-  
स्त्रिषु ॥ १७२ ॥

मत्सर—ईर्ष्या वा डाह करनेवाला—ली,  
कृपण वा सूम, तथा ईर्ष्या वा डाह १७२ ॥

देवाहृते वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीवं  
मनाक्प्रिये ॥

वर—श्रेष्ठ वा प्रधान वा मुख्य,  
देवताने जो प्रसन्न होकर दिया, दूल्हा  
वा वर, केशर ॥

वंशांकुरे करीरोऽस्त्री तरुभेदे  
घटे च ना ॥ १७३ ॥

करीर—बासका छकड़ा, करील वा  
टेंटी वृक्ष, एक प्रकारका काटेदार वृक्ष वा  
कीकर तथा घटना वा मेल—॥ १७३ ॥

ना चमूजघने हस्ते सूत्रे प्रति  
सरो स्त्रियाम् ॥

प्रतिसर—सेनाका पिल्ला हिस्सा, तथा  
मन्त्रतन्त्रका डोरा ॥

यमानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिहां-  
शुवाजिषु ॥ १७४ ॥

शुकाहिकापिभेकेषु हरिर्ना  
कपिले त्रिषु ॥

हरि—यम, वायु, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य,  
विष्णु, सिंह, किरण, घोड़ा ॥ १७४ ॥  
तोता, साप, वन्दर, मेढक और हरा रङ्ग  
तथा कपिल रङ्ग और कुछ पीली वस्तु ॥

शर्करा कर्परांशेऽपि—

शर्करा—ठिकड़ी, ककड़ी, खाड़, रेत  
तथा बहुत किड़ियोंकी जमीन ॥

—यात्रा स्याद्यापने गतौ ॥ १७५ ॥

यात्रा गमन वा चलना तथा  
चलाना ॥ १७५ ॥

इरा भूवाक्सुराऽप्सु स्या—

इरा—मद्य, भूमि वाणी तथा जल ॥

—तन्द्री निद्राप्रमीलयोः ॥

तन्द्री—निद्रा तथा आलस्य ॥

धात्री स्यादुपमाताऽपि क्षिति-  
रप्यामलक्यापि ॥ १७६ ॥

धात्री—माता, आमला, पृथ्वी तथा  
उपमाता अर्थात् दूध पिलानेवाली  
धाय ॥ १७६ ॥

क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा  
कण्टकारिका ॥ त्रिषु क्रूरेऽधमे

ऽऽल्पेऽपि क्षुद्र—

क्षुद्र—क्रूर, अधम, अल्प वा थोड़ा—  
डी, स्म, मधुमाछी, मटकटैया, हीन  
अगवाली स्त्री, नटी, वेश्या ॥

-मात्रा परिच्छदे ॥ १७७ ॥

अल्पे च परिमाणे सा मात्रा

कात्स्न्यैर्जवाग्णे ॥

मात्रा-परिच्छद वा सामग्री १७७ ॥

परिमाण, सूक्ष्म वा पतला, सम्पूर्णता,

तथा अवधारण वा निश्चय ॥

आलेख्याश्चमयोश्चित्र-

चित्र-विप्रविचित्र रंगवाला-छी, आ

श्चर्ययुक्त, कश्च एक मिश्रितरंग, एक नक्षत्र,

मूसाकर्णी भौषधी, एक तरहकी कफबी,

अद्भुतरस, तसबीर तथा आश्चर्य ॥

-कलत्र श्रोणिभामयो ॥ १७८ ॥

कलत्र-कमर तथा छी ॥ १७८ ॥

योग्यभाजनयो पार्श्व-

पात्र-आयक तथा वर्तन ॥

-पत्र वाहनपद्मयो ॥

पत्र-सवारी और पत्र ॥

निदेशमन्ययो शास्त्र-

शास्त्र-आज्ञा और ग्रन्थ ॥

-शस्त्रमायुधलोहयो ॥ १७९ ॥

शस्त्र-इधियार और छाता ॥ १७९ ॥

स्यामगंशुकमार्तप्र-

नत्र जग और कपूर तथा नत्र ॥

भद्र पत्नीगरीम्यो ॥

भद्र छी तथा गवार गन्ध ॥

पोत्र-सूकरके मुखका अग्रभाग

तथा हस्तका अग्रभाग ॥

-गोत्र तु नास्ति च ॥ १८० ॥

गोत्र-नाम, पृथ्वी, पर्वत तथा

गुरु ॥ १८० ॥

सत्रमाच्छादने यत्ते सदादाने

वनेऽपि च ॥

सत्र-दण्डन, बह, सदादान, (सदा

वत् ) वन, वन तथा धूर्तता ॥

अजिर विषये काये-

अजिर-विषय, शरीर, वायु, तथा

औगन् ॥

-ऽप्यम्बरं ध्योन्नि वाससि ॥ १८१ ॥

अम्बर-आकाश तथा वज्रा ॥ १८१ ॥

चक्र राष्ट्र-

चक्र-राज्य, चक्रया पड़ी, समूह,

रथका पहिया, कुम्हारका चाक तथा

जडका घमर ॥

-ऽप्यक्षरं तु मोक्षंऽपि-

अक्षर-मोक्ष, हरेक, क्रम तथा

भोकार ॥

शीरमप्यु च ॥

शीर-दुग्ध तथा जल ॥

म्यर्णऽपि भूरिचन्द्रौ द्वौ-

हरी-तथा चन्द्र गुप्त और गुंगा

-दारमात्रंऽपि गोपुरम् ॥ १८२ ॥

गोपुर-नगरका द्वार तथा द्वारमात्र  
॥ १८२ ॥

गुहादम्भौ गह्वरे द्वे-

गह्वर-गुफा और पाखण्ड ॥

-रहोऽन्तिकमुपह्वरे ॥

उपह्वर-एकान्त तथा समीप ॥

पुरोऽधिकमुपर्यग्रा-

अग्र-पुर अधिक तथा ऊपर ॥

-ण्यगारे नगरे पुरम् ॥ १८३ ॥

मन्दिरं चा-

पुर-मन्दिर-स्थान और नगर ॥ १८३ ॥

-ऽथ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्या-

दुपद्रवे ॥

राष्ट्र-देश तथा उपद्रव ॥

दरोऽस्त्रियां भये श्वभ्रे-

दर-भय, गड्ढा तथा थोड़ा वा सूक्ष्म

-वज्रोऽस्त्री हीरके पवौ ॥ १८४ ॥

वज्र-इन्द्रका वज्र, सेहृद्वृक्ष तथा

हीरा ॥ १८४ ॥

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये

परिच्छदे ॥

तत्र-कुटुम्बका कार्य्य, सिद्धान्त,

उत्तम औपध, प्रधान वा मुख्य, जुलाहा,

एकप्रकारका शास्त्र, सामग्री, एकप्रकारकी

वेदकी शाखा, ऐसा हेतु जो पदार्थोंको

सिद्ध करता हो ॥

औशारश्चामरे दण्डेऽप्यौशीरं  
शयनासने ॥ १८५ ॥

औशीर-चँवरका दण्ड, शयन और  
आसन। किसीके मतमें यह शब्द पृथक् २  
शयन और आसनका वाचक है ॥ १८५ ॥

पुष्करं करिहस्ताग्रे वाद्यभाण्डमुखे  
जले ॥ व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौ-  
पधिविशेषयोः ॥ १८६ ॥

पुष्कर-तलाव, कमल, आकाश,  
जल, पुष्करमूल, हाथीके सूंडका अग्रभाग,  
बाजेका मुख ॥ १८६ ॥

अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्त-  
र्धिभेदतादर्थ्ये ॥ छिद्रात्मीयविना  
बाहिरवसरमध्येऽन्तरात्मानि च ॥  
१८७ ॥

अन्तर-पहरनेके वस्त्रादि, आत्मसम्ब-  
न्धी वा अपनी वस्तु, बाह्य वस्तु, अदृश्य  
वस्तु, अवकाश, अवधि, अदृश्य होना,  
भेद, तादर्थ्य, छिद्र, विना अवसर, मध्य,  
अन्तरात्मा ॥ १८७ ॥

मुस्तेऽपि पिठरं-

पिठर-मोथा घास तथा मथनदण्ड  
वा मथनिया ॥

-राजकशेरुण्यपि नागरम् ॥

नागर-चतुर, नगरवासी, सोंठ  
तथा नागरमोथा ॥

शावर त्वन्धतमसे घातुके भेष  
लिङ्गकम् ॥ १८८ ॥

शार्कर-भारनेवाला-छी, घन वा  
बड़ा अङ्कुर ॥ १८८ ॥

गौरोऽरुणे सिंसे पीत्ते-  
गौर-श्वेत वा पीत वा छाछरगवा

की वस्तु, श्वतरग, पीला रंग, छाछरग,  
तथा रजोधर्मसे पहिली कम्पस्थावालीछी ॥

-वगकार्यप्यरुणकर ॥  
अरुणकर-ब्राह्मकरनेवाला-छी, मेलावा ॥

जडर कठिनेऽपि स्या-  
जडर-कठोरवस्तु, दृढ वा बुढ़ा

तथा पेय ॥  
दधस्तादपि चावर ॥ १८९ ॥

अवर-नीचे, नीचेका ओष्ठ, हीन  
तथा नीच ॥ १८९ ॥

अनाकुलेऽपि चकाप्य-  
एकप्र-एकप्र वा तत्पर तथा स्मृत्य

चित ॥  
व्यग्रो व्यासक्त आकुले ॥

व्यग्र-व्याकुल वा घनहाया-ई,  
दुःखिता ॥

उपयुदीष्यश्रेष्ठेष्वुत्तरस्या-  
उत्तर-उत्तरदशमे उत्पन्न मया-ई,

धेष्ट वा मुप्य उत्तरदिशा गिराट्का  
पुन ऊपर गिराट्की पुनरी तथा उत्तर  
वा उत्तर ॥

दनुत्तर ॥ १९० ॥

पपां विपर्यये श्रेष्ठे-

अनुत्तर-श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ ॥ १९० ॥  
दूगनात्मोत्तमा पराः ॥

पर-पराया-ई ( वस्तु ) अन्य दूसरा-  
री, दूर, उत्तम वा श्रेष्ठ, शत्रु केवल

तथा अनन्तर ॥  
स्वाकुमिषौ तु मधुरौ-

मधुर-स्वादु और मिष्ट ॥  
-कुरौ कठिननिर्दयौ ॥ १९१ ॥

कुर-कठिन और दयाहीन ॥ १९१ ॥  
उदारो दातुमहसो-

उदार-दाता, बड़ा, सरल वा सूत्रा ॥  
-रितरस्त्वन्पनीचयोः ॥

इतर-अन्य तथा नीच ॥  
मन्दस्वच्छम्वयो स्वेर-

स्वेर-मन्द वा -ढीछा-छी तथा  
स्वच्छन्द अपने मनका काम करनेवाला ॥

-शुभ्रमुदीतशुक्रयोः ॥ १९२ ॥  
शुभ्र-शुभ्रवर्णकी यस्तु, उदीत वा

प्रकाशमान तथा उत्तरंग ॥ १९२ ॥  
इति शब्ताः ॥

शृङ्गा किरीटं केशाश्च संयत्ता  
मौलपत्रयाः ॥

गोत्रि-मालक, चीनी, मुकुट,  
मथान्न वा ॥

द्रुमप्रभेदमातंगकाण्डपुष्पाणि

पीलवः ॥ १९३ ॥

पीलु—वृक्षभेद, हस्ती, वाण तथा पुष्प ॥ १९३ ॥

कृतान्तानेहसोः काल—

काल—यमराज, मृत्यु तथा समय ॥

—श्रुतयेऽपि युगे कलिः ॥

कलि—चौथायुग, पुष्पकी कली, युद्ध तथा कलह ॥

स्यात्कुरंगेऽपि कमलः—

कमल—हिरन, जल, तौवा, कमल तथा आकाश ॥

—प्रावारोऽपि च कम्बलः ॥ १९४ ॥

कम्बल—सर्पराज, गौके गलेका सासना तथा कम्बलयस्त्र ॥ १९४ ॥

करोपहारयोः पुंसि बलिः प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम् ॥

बलि—महसूल तथा बुढापेमें पुरुषके शरीरपै पडनेवाली सुकडन ॥

स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं नाकाकसीरिणोः ॥ १९५ ॥

बल—मोटाई, सामर्थ्य, सेना, काक पक्षी तथा बलदेव ॥ १९५ ॥

वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ॥

वातूल—आधी, बावला, तथा वायुको न सहनेवाला ॥

भेद्यलिंगः शठे व्यालः पुंसि

श्वापदसर्पयोः ॥ १९६ ॥

व्याल—सर्प, दगावाज तथा हिंसक पशु ॥ १९६ ॥

मलोऽस्त्री पापविट्किट्टा—

मल—मेल, पाप तथा षष्ठा ॥

—न्यस्त्री शूलं रुगायुधम् ॥

शूल—शूलरोग ( जो पेटमें होताहै ) तथा शूल एक शस्त्र ॥

शंकावपि द्वयोः कीलः—

कील—अग्निकी.ज्वाला वा लपट तथा लोहे आदिकी कील ॥

—पालिः स्त्र्यरूपंकपंक्तिषु ॥ १९७ ॥

पालि—खड्ग इत्यादिका टोंका 'कोना' धारा, चिह्न तथा पक्ति ॥ १९७ ॥

कला शिल्पे कालभेदे—

कला—तीस काष्ठा, एकसमय, कारीगरी, मूलधन, वृद्धि, टुकड़ा तथा चन्द्रका सोलहवाँ भाग ॥

—ऽप्याली सख्यावली आपि ॥

आलि—सखी तथा पक्ति ॥

अब्ध्यम्बुविकृतौ वेला कालमर्यादयोरपि ॥ १९८ ॥

वेला—समुद्रका तीर, काल वा समय तथा मर्यादा वा हद्द ॥ १९८ ॥

बहुलाः कृत्तिका गावी बहुलोऽग्नौऽशितौ त्रिषु ॥



शावर त्वन्धतमसे घातुके भेद्य-  
लिङ्गकम् ॥ १८८ ॥

शार्श्व-मारनेवाला-छी, घन वा  
बडा अहङ्कार ॥ १८८ ॥

गौरोऽङ्गणे सिधे रीति-  
गौर-स्वत वा पीत वा लालरंगवा

छी वस्तु, स्वेतरंग, पीला रंग, लालरंग,  
तथा रजोवर्णसे पहिली अवस्थावालीछी ॥

-मगकार्यप्यरुष्कर ॥  
अरु-र-धाक्करनेवाला-छी, मेलावा ॥

जठरः कठिनेऽपि स्या-  
जठर-कठोरवस्तु, वृद्ध वा बुद्धा

तथा पेठ ॥  
दधस्तादपि घाघर ॥ १८९ ॥

अशर-नीचे, नीचिका ओष्ठ, हीन  
तथा नीच ॥ १८९ ॥

अनाकुलेऽपि चिकामो-  
एकाम-एकाम वा उत्तर तथा स्वस्य

चित ॥  
व्यमो व्यासक्त आकुले ॥

व्यम-व्याकुल वा घबडाया-ई,  
दुविष्टा ॥

उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्वप्युत्तरस्या-  
उत्तर-उत्तर दशमे उत्पन्न मया-ई

श्रेष्ठ वा मुख्य, उत्तरदिशा, निराटका  
पुत्र ऊपर निराटकी पुत्री, तथा उत्तर  
वा जगत् ॥

व्युत्तर ॥ १९० ॥

एषां विपर्यये श्रेष्ठे-

अनुत्तर-श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ ॥ १९० ॥  
दृगनात्मोत्तमापरा ॥

पर-पराया-ई ( वस्तु ) अन्य दूसरा-  
री, दूर, उत्तम वा श्रेष्ठ, सगु केवल

तथा अनन्तर ॥  
स्वादुप्रियौ तु मधुरौ-

मधुर-स्वादु और प्रिय ॥  
-कुरौ कठिनिदमौ ॥ १९१ ॥

कुर-कठिन और दयाहीन ॥ १९१ ॥  
उदारो दातृमहतो-

उदार-दाता, बडा, सरल वा सूया ॥  
-रितरस्त्वन्यनीचमोः ॥

इतर-अन्य तथा नीच ॥  
मन्वस्वच्छन्वयो स्वैर-

स्वैर-मन्द वा - छीला-छी तथा  
स्वच्छद अपने मतका काम करनेवाला ॥

-शुभ्रमुदीतशुक्लयोः ॥ १९२ ॥  
शुभ्र-शुक्लवर्णकी वस्तु, उदीत वा

प्रकाशमान तथा श्वेतरंग ॥ १९२ ॥  
इति राप्ताः ॥

धूढा किरीटं केडाभ संयता  
मौलपल्लव ॥

मौलि-मस्तक, चीटी, मुकुट,  
वधेहुए बाळ ॥

द्रुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि

पीलवः ॥ १९३ ॥

पीलु-वृक्षभेद, हस्ती, बाण तथा पुष्प ॥ १९३ ॥

कृतान्तानेहसोः काल-

काल-यमराज, मृत्यु तथा समय ॥

-श्वतुथेऽपि युगे कलिः ॥

कलि-चौथायुग, पुष्पकी कली, युद्ध तथा कलह ॥

स्यात्कुरङ्गेऽपि कमलः-

कमल-हिरन, जल, तौवा, कमल तथा आकाश ॥

-प्राद्वारेऽपि च कम्बलः ॥ १९४ ॥

कबल-सर्पराज, गौके गलेका सासना तथा कम्बलवस्त्र ॥ १९४ ॥

करोपहारयोः पुंसि बलिः

प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम् ॥

बलि-महसूल तथा बुढापेमें पुरुषके शरीरपे पडनेवाली सुकडन ॥

स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं नाकाकसीरिणोः ॥ १९५ ॥

बल-मोटाई, सामर्थ्य, सेना, काक पक्षी तथा बलदेव ॥ १९५ ॥

वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ॥

वातूल-आधी, वाक्ला, तथा वायुको न सहनेवाला ॥

भेर्धालिङ्गः शठे व्यालः पुंसि

श्वापदसर्पयोः ॥ १९६ ॥

व्याल-सर्प, दगावाज तथा हिंसक पशु ॥ १९६ ॥

मलोऽस्त्री पापविशकिट्टा-

मल-मल, पाप तथा षष्ठा ॥

-न्यस्त्री शूलं रुगायुधम् ॥

शूल-शूलरोग ( जो पेटमें होताहै ) तथा शूल एक शस्त्र ॥

शंकावपि द्वयोः कीलः-

कील-अग्निकी.ज्वाला वा लपट तथा लोहे आदिकी कील ॥

-पालिः ह्ययंकपंक्तिषु ॥ १९७ ॥

पालि-खड्ग इत्यादिका टोंका 'कोना' धारा, चिह्न तथा पक्ति ॥ १९७ ॥

कला शिल्पे कालभेदे-

कला-तीस काष्ठा, एकसमय, कारी-गरी, मूलधन, वृद्धि, टुकड़ा तथा चन्द्रका सोलहवाँ भाग ॥

-ऽप्याली सरल्यावली अपि ॥

आलि-सखी तथा पक्ति ॥

अब्ध्यम्बुविकृतौ वेला काल-मर्यादयोरपि ॥ १९८ ॥

वेला-समुद्रका तीर, काल वा समय तथा मर्यादा वा हद्द ॥ १९८ ॥

बहुलाः कृत्तिका गावी बहुलो-ऽग्नौऽशितौ त्रिषु ॥

बहुल—बहुत, काठेरगवाडा—छी, अग्नि  
वा आग, कृष्णपक्ष, काठारग, नेवारोपुष्प,  
गेया, छी, बड़ीइलायची, और आकाश ।

लीला विलासक्रिययो—

छीडा—खिलास वा क्रीडा, क्रिया तथा  
खेलना ॥

—रुपला झर्करापि च ॥ १९९ ॥

उपका—पत्थर, रत्न तथा सितकी  
॥ १९९ ॥

शोणितेऽम्भसि कीलाळ—

कीलाळ—जल तथा क्षीर ॥

—मूलमाद्ये शिफामयोः ॥

मूल—जड़, पहिडा, वृक्षकी जटा तथा  
आमा और आधिकारण ॥

जालं समूह आनामगवाक्ष  
भारकेष्वपि ॥ २०० ॥

जाल—मत्स्यादि पकड़नेका जाल,  
समूह धरोखा तथा न झळी हुई कच्ची  
॥ २०० ॥

शीलं स्वभावे सद्भावे—

शील—शुद्धकर्मा वा पवित्र काम तथा  
स्वभाव ॥

८ —सस्ये हेतुकृते फलम् ॥

फल—वृक्ष इत्यादिका फल, जायफल  
हाड हडके मीचेका काष्ठ जिसका अन्न  
भाग छोड़ेसे बना रहता है हेतुसिद्ध किया

गया भाणका अन्नभाग, त्रिफला, परि  
णाम तथा लाभ वा नफा ॥

छदिर्नेत्ररुजो क्लीवं समूहे प  
ल न ना ॥ २०१ ॥

पल—समूह, खपडा तथा एक  
मन्त्ररोग ॥ २०१ ॥

अध—स्वरूपयोरस्त्री तल—

तल—किसी वस्तुके नीचेका भाग  
तथा स्वल्प ॥

स्यान्नामिपे पलम् ॥

पल—एकदण्ड ( २३ मित्र काठ )  
का आठवां हिस्सा, १४ मासा, मांस,  
तथा उचाईका नाप ॥

और्बानलेऽपि पाताळ—

पाताळ—पाताळ तथा बडवानल ॥  
—चैलं वस्त्रेऽधने त्रिषु ॥ २०२ ॥

चैल—नीच वा अधम तथा बल  
॥ २०२ ॥

कुक्कुल शकुनि कीर्णे श्वत्रे  
ना तु तुपानले ॥

कुक्कुल—करसीकी भाग, कील वा  
मृत्तियोंसे भरा हुआ गड्ढा ॥

निर्णीते केवलमिति त्रिलिङ्ग  
त्वेककृत्स्नयोः ॥ २०३ ॥

केवल—निर्णय किया गया, एक  
संख्या तथा सार्ध ॥ २०३ ॥

पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते  
त्रिषु ॥

कुशल—चतुर, सामर्थ्ययुक्त, कल्याण-  
भाला—ली, सामर्थ्य, क्षेम, पुण्य तथा  
कल्याण ॥

प्रवालमंकुरेऽप्यस्त्री-

प्रवाल—मूगा, नया पत्ता, अङ्कुर तथा  
घीणाका दण्ड ॥

—त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च ॥ २०४ ॥  
स्थूल—मोटा—ठी, निर्वुद्धि वा बुद्धि-  
रहित तथा समूह ॥ २०४ ॥

करालो दन्तुरे तुङ्गे-

कराल—भयकर, ऊँचे दाँतवाला—ली  
तथा ऊँची—चा ॥

—चारौ दक्षे च पेशलः ॥

पेशल—चतुर तथा मनोहर ॥

मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः स्या-

बाल—लडका, केश, बाल, मूर्ख तथा

नेत्रवाला औषधी ॥

—लोलश्चलसत्पुण्योः ॥ २०५ ॥

लोल—चञ्चल तथा लालची ॥ २०५ ॥

॥ इति लान्ताः ॥

दवदावौ वनारण्यवह्नी-

दव—दाव—वन तथा वनकी आग ॥

—जन्महरौ भवौ ॥

भव—ससार, जन्म, शकर ॥

मन्त्री सहायसचिवौ-

मन्त्रिन्—राजाका मन्त्री वा राजाको

सलाह देनेवाला तथा सहायक ॥

—पतिशाखिनरा धवाः ॥ २०६ ॥

धव—छीका पति एक वृक्ष तथा

पुरुष ॥ २०६ ॥

अवयः शैलमेषार्का-

अवि—मेंढा, पर्वत, सूर्य तथा रज-

स्वला स्त्री ॥

—आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः ॥

हव—पुकारना, आज्ञा वा हुक्म तथा

यज्ञ वा याग ॥

भावः सत्तास्वभावाभिप्रायचे-

ष्टात्मजन्मसु ॥ २०७ ॥

भाव—अभिप्राय वा तात्पर्य, विद्वान्  
वा पंडित, सत्ता वा रहनेवालेका धर्म,  
स्वभाव, आत्मा, जन्म वा उत्पत्ति, चेष्टा  
तथा मनका विकार ॥ २०७ ॥

स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो

गर्भमोचने ॥

प्रवस—जनना, उत्पत्ति, फल तथा  
पुष्प वा फूल ॥

आविश्वासेऽपह्नवेऽपि निकृतावापि

निह्वः ॥ २०८ ॥

निह्व—अविश्वास, झूठ बोलना  
तथा धूर्तपन ॥ २०८ ॥

उत्तेकामर्पयोरिच्छाप्रसवे मह  
उत्सवः ॥

उत्सव—उत्सव वा मङ्गलकार्य, औ  
द्यत्य वा गर्व वा बर्हाई कोप, इच्छाका  
बेग तथा आनन्दका समय ॥

अनुभावः प्रभावे च सत्ता च  
मतिनिश्चये ॥ २०९ ॥

अनुभाव—प्रभाव सत्पुरुषोंकी बुद्धिका  
निश्चय ॥ २ ९ ॥

स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्यान्  
चाद्योपलब्धये ॥

प्रभव—उत्पत्तिका स्यान्, कारण,  
परक्रम तथा ज्ञानका प्रथमस्थान ॥

शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे पार  
शवो मतः ॥ २१० ॥

पारशव—शूद्रकी स्त्रीमें प्रादुर्गत  
हुआ पुत्र तथा शस्त्र ॥ २१० ॥

ध्रुवो भवेदे क्लीबं तु निश्चिते  
क्षान्वते त्रिपु ॥

ध्रुव—स्थिर, मङ्गलप्रविशेष निश्चय  
तथा शाश्वत ॥

स्वो ह्यज्ञातावात्मनि स्वं त्रिपुष्पात्मीये  
स्वोऽस्त्रियां धने ॥ २११ ॥

स्व—जातिके पुरुष आत्मा अपमा  
तथा धन ॥ २११ ॥

स्त्रीकीपक्षवन्धेऽपि नीवी परिपणे  
पि च ॥

नीवी—स्त्रीके बन्धका वन्धन जो  
नामिके समीप बाँधा जाता है तथा  
मूलधन ॥

शिवा गौरीफेरवयो—  
शिवा—पार्वती, सियार, शमीका

वृक्ष हैं तथा आँखा ॥  
—ईर्न्द कलहयुग्मयो ॥ २१२ ॥

इन्द—कलह तथा स्त्री पुरुष  
जोश ॥ २१२ ॥

द्रव्यासुख्यवसायेषु सत्त्वमस्ती  
तु जन्तुषु ॥

सत्त्व—द्रव्य, प्राण, अत्यन्त उद्योग  
जन्तु, सत्त्वगुण तथा वृद्ध ॥

स्त्रीय नपुंसके पण्डे वाच्यलिङ्ग  
मविक्रमे ॥ २१३ ॥

स्त्रीय—नपुंसकलिङ्ग, नपुंसक पुरुष  
तथा पराक्रमहीन ॥ २१३ ॥

इति वास्त  
—द्वौ विश्वौ वैश्यमनुजौ—

मिद—वैश्य, मनुष्य तथा प्रवेश ॥  
द्वौ चराभिमरौ स्पष्टौ ॥

स्पष्ट—वृत्त तथा संग्राम ॥  
द्वौ राक्षी पञ्चमेपाद्यौ—

राक्षि—समूह तथा मयवृथादि राशि ॥  
—द्वौ वशी कुलमस्करो ॥ २१४ ॥

वश—जुट्टा तथा बाँस ॥ २१४ ॥

रहःप्रकाशौ वीकाशौ-

वीकाश-एकान्त तथा प्रकाश ॥

-निर्वेशो भृतिभोगयोः ॥

निर्वेश-नौकरी, भोग तथा मूर्च्छा ॥

कृतान्ते पुंसि कीनाशः-

-क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु ॥ २१५ ॥

कीनाश-यमराज तथा किसान २१५

पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः

स्या-

अपदेश-बहाना, निशाना वा

लक्ष्य तथा निमित्त वा हेतु ॥

-कुशमप्सु च ॥

कुश-कुश एकतरहकी घास तथा जल ॥

दशाऽवस्थानेकविधा-

दशा-अवस्था ( लडकई जवानी  
इत्यादि ) ॥

-प्याशा तृष्णापि चायता २१६

आशा-बडी तृष्णा तथा दिशा ॥

॥ २१६ ॥

वशा स्त्री करिणी च स्या-

वशा-स्त्री, बाइ, गाय तथा  
हथिनी और बेटी ॥

-दृष्टज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु ॥

स्यात्कर्कशः साहसिकः कठो-

रामसृणावपि ॥ २१७ ॥

कर्कश-कठोर, दुःस्पर्श, साहसी

तथा जगद्बाल स्त्री और कवीला  
औषधि ॥ २१७ ॥

प्रकाशोऽतिप्रसिद्धेपि-

प्रकाश-अतिप्रसिद्ध, धूप, उजाला ॥

-शिशवज्ञे च बालिशः ॥

बालिश-बालक तथा मूर्ख ॥

॥ इति शान्ताः ॥

सुरमत्स्यावनिमिषौ-

अनिमिष-देवता तथा मत्स्य वा

मछली ॥

-पुरुषावात्ममानवौ ॥ २१८ ॥

पुरुष-पुरुष वा नर, आत्मा, नागके-

शर वृक्ष तथा मनुष्य ॥ २१८ ॥

काकमत्स्यात्खगौ ध्वांक्षौ-

ध्वाङ्क्ष-कौवा तथा मत्स्य पकड-

नेवाला पक्षी ( बगुला ) इत्यादि ॥

-कक्षौ तु तृणवीरुधौ ॥

कक्ष-काख वा बगल तथा तृण  
या घासकी गजी और लता ॥

अभीषुः प्रग्रहे रश्मौ-

अभीषु-किरण, डोरी तथा पगहा,  
लगाम इत्यादि ॥

-प्रेषः प्रेषणमर्दने ॥ २१९ ॥

प्रेष-भेजना, मर्दनकरना तथा  
आज्ञा देना ॥ २१९ ॥

पक्षः सहाये-

पक्ष—पक्षियोंका पंख, या भाषा  
महीना, सहाय, बैर, बल, मित्र, घर,  
शरीरकी अगलअगलकी पैसुली तथा  
बड़ा हाथी और निकट ॥

—ऽप्युष्णीषः क्षिरोवेष्टकिरी  
टयो ॥

उष्णीष—पगड़ी तथा किरीट वा मुकुट ।

शुक्ले मृपिके श्रेष्ठे सुकृते  
वृषभे वृषः ॥ २२० ॥

वृष—मूसा, जन्तु श्रेष्ठ वा मुख्य,  
अड्डसा एक साह, वृषमनामक औषध,  
बैल, अण्डकोप, वर्म, मेपआदि १२ राशि  
योमेंसे दूसरा राशि तिगिया (एक विष)  
तथा एक सुगन्ध चूर्ण ॥ २२० ॥

कोपोऽस्त्री कुङ्कुमले खड्गपि  
धानेऽर्थोऽधिव्ययो ॥

कोप ( श )—गुच्छकी कडी, लक्ष-  
नारका घर व स्नान, खजाना तथा  
शपथ ( सोगन वा कसम ) ॥

वृतेऽश्वे क्षारिफलकेऽप्या  
कर्पो—

आकष—मूला गुणियोंके रखनेके  
जिये बछादिसे बना घर तथा पासा ॥

—ऽयाक्षमिन्द्रिये ॥ २२१ ॥

ना वृत्ताङ्गे कर्षचक्रे व्यवहारे  
कलितुमे ॥

अक्ष—इन्द्रिय ॥ २२१ ॥ पात्त्र,  
सोल्ह मासा, बहुरा, सोचरनोन ॥

कर्षुवार्ता करीपाग्निः कर्षू  
कुल्याभिघायिनि ॥ २२२ ॥

कर्षू—पासा, एकप्रकारकी तोड़,  
पहिया, बहेबाफल, व्यवहार, कसतीकी  
भाग, जीमिका तथा नदी ॥ २२२ ॥

पुंभावे सत्क्रियायां च पौरुषं-  
पौरुष—पौरसागर गहिर—री, पौरु  
वा पुरुषका धर्म ॥

—विषमप्यु च ॥

विष—विष वा जहर तथा पानी ॥

उपादानेऽप्यामिष स्त्र्यो-  
आमिष—मांस तथा दूध ॥

द्वपराधेऽपि किल्बिषम् २२३ ॥

किल्बिष—पाप अपराध तथा प्रीति  
॥ २२३ ॥

स्यादृष्टौ लोकघातर्षभे वत्सरे  
वर्षमस्त्रियाम् ॥

वर्ष—बरस वा देवतोंका एक दिन,  
दृष्टि वा वर्षा, जम्बूद्वीप तथा स्नान ॥

मेक्षा नृत्पक्षण प्रज्ञा-  
मेक्षा—भुक्ति तथा देखना ॥

—मिक्षा सेवार्थना मृत्तिः २२४  
मिक्षा—मीख, सेवा, प्रार्थना वा  
मन्त्री ॥ २२४ ॥

त्विद शोभापि—

त्विष्-शोमा तथा वाणी ॥

-त्रिषु परे-

न्यक्ष-अध्यक्ष और रूक्ष यह तीनों

शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

-न्यक्षं कात्स्न्यनिकृष्टयोः ॥

न्यक्ष-निकृष्ट वा नीच तथा सं-  
पूर्णता ॥

प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षो-

अध्यक्ष-प्रत्यक्ष तथा अधिकारी ॥

-रूक्षस्त्वप्रेम्ण्यचिकृणे ॥ २२५ ॥

रूक्ष-प्रेम रहित रूखा ॥ २२५ ॥

॥ इति पाताः ॥

रविश्वेतच्छदौ हंसौ-

हंस-सूर्य और हंसपक्षी ॥

-सूर्यवद्वी विभावसू ॥

विभावसु-सूर्य तथा अग्नि ॥

वत्सौ तर्णकवर्षौ द्वौ-

वत्स-वछना, वच्चा वा लडका  
छाती तथा वर्ष वा वरिस ॥

-सारंगाश्च दिवौकसः ॥ २२६ ॥

दिवौकस्-देवता तथा पक्षी ॥ २२६ ॥

शृंगारादौ विषे वीर्ये गुणे

रागे द्रवे रसः ॥

रस-खट्टा मीठा इत्यादि रस पारा

धातु, गन्धरस, शृङ्गार, वीर, करुणा

इत्यादि साहित्यके रस, वीर्य वा धातु,

प्रीति वा प्रेम, जहर, स्वाद, पतलीवस्तु

( जैसा पानी शरवत आदि )

पुंस्युत्तंसावतंसौ द्वौ कर्णपूरे

च शेखरे ॥ २२७ ॥

अवतंस-कर्णफूल वा कानका भूषण

तथा शिरपेज ॥ २२७ ॥

देवभेदेऽनले रश्मौ वसू रत्ने

धने वसु ॥

वसु-किरण वा प्रकाश, अग्नि वा

आग, कुवेर, गुम्माभाजी, पानी, धन,

तथा मणि ॥

विष्णौ च वेधाः-

वेधस्-ब्रह्मा, विष्णु तथा पडित ॥

-स्त्री त्वाशीर्हिताशंसाहिदं-

ष्ट्रयोः ॥ २२८ ॥

आशिस्-दूसरेके हितका चाहना

और सर्पकी दष्टा ॥ २२८ ॥

लालसे प्रार्थनौत्सुक्ये-

लालसा-प्रार्थना तथा उत्कठा वा-

वढी चाह ॥

-हिंसा चौर्यादिकर्म च ॥

हिंसा-चोरीआदि बुरा कर्म तथा

वध करना ॥

प्रसूरश्वापि-

प्रसू-माता तथा घोड़ी ॥

-भूद्यावौ रोदस्यौ रोदसी

च ते ॥ २२९ ॥



पक्ष-पक्षियोंका पंख, वा भाषा  
महीना, सहाय, बेर, बख, मित्र, घर,  
शरीरकी अगळमगळकी पैसुली तथा  
बडा हाथी और निकट ॥

-ऽप्युष्णीषः शिरोवेष्टकिरी  
टयोः ॥

उष्णीष-पगडी तथा किरीट वा मुकुट ।

शुकले मृपिके ओष्ठे सुकृते  
वृपमे वृप\* ॥ २२० ॥

वृप-मूसा, जन्तु घेष्ट वा मुख्य,  
अड्डा एक झाड, वृपमनामक औषध,  
बैड, अण्डकोप, धर्म, मेघआदि १२ राशि  
योमेंसे दूसरा राशि तिगिया (एक विप)  
तथा एक सुगन्ध चूर्ण ॥ २२० ॥

कोपोऽस्त्री कुक्षमले खड्गवि  
धानेऽर्थोचदिव्ययो\* ॥

कोप ( छ )-पुष्पकी कछी, तख-  
बारका घर व म्यान, खजाना तथा  
शपथ ( सोगन वा कसम ) ॥

शूतेऽश्वे शाग्विलकेऽप्या  
कपो-  
आकप-जुआ गुहियोंके रखमेके  
डिपे पछाडिसे बना घर तथा पासा ॥

-ऽयाक्षमिन्द्रिये ॥ २२१ ॥

ना शूताद्वे कर्पयके ध्यवहारे  
फलधूम ॥

अक्ष-इन्द्रिय ॥ २२१ ॥ पासा,  
सोख्ख मासा, वहडा, सोचरानेन ॥

कर्पू-पासा, एकप्रकारकी तोर,  
कुल्याभिघायिनि ॥ २२२ ॥

कर्पू-पासा, एकप्रकारकी तोर,  
पहिया, बहेडाफळ, ब्यबहार, करसीकी  
भाग, जीबिका तथा नदी ॥ २२२ ॥

पुंमत्वे सत्क्रियायां च पौरुष-  
पौरुष-पोरसामर गहिरा-री, पौरुष  
वा पुरुषका धर्म ॥

-विपमप्यु च ॥  
विप-विप वा जहर तथा पानी ॥

उपादानेऽप्यामिप स्या-  
आमिप-मांस तथा दूध ॥

दपरावेऽपि किस्विपम् २२३ ॥  
किस्विप-पाप अपराध तथा प्रीति  
॥ २२३ ॥

स्यादृष्टौ लोकवात्सले वत्सरे  
वपमस्त्रियाम् ॥

वर्ष-बरस वा देक्तोकर एक दिन,  
दृष्टि वा धर्या, जम्बूदीप तथा स्नान ॥

मेशा नृत्यक्षणं प्रज्ञा-  
मज्ञा-युधि तथा दखना ॥

-मिश्रा सेवाधना भूतिः २२४  
मिश्रा-मीख, सेवा, प्रार्थना वा  
मगरी ॥ २२४ ॥

त्विद् शोमापि-

वात करनेवाला, क्रूर वा कठोर तथा  
वीभत्स रस ॥

—ऽप्यतिशये त्वमी ॥ २३४ ॥

वृद्धप्रशस्ययोज्यायान्—

ज्यायस्—बहुत बुढ़ा—डूढ़ी तथा  
अत्यन्त प्रशसा करनेके योग्य ॥ २३४ ॥

—कर्नायांस्तु युवाल्पयोः ॥

कनीयस्—अत्यन्त, जवान अत्यन्त  
छोटा तथा छोटाभाई ॥

वरीयांस्तूरुवरयोः—

वरीयस्—अत्यन्त बड़ा तथा अत्यन्त  
श्रेष्ठ ॥

—साधीयान्साधुबाढयोः ॥ २३५ ॥

साधीयस्—अत्यन्त साधु वा भला—  
ली तथा अत्यन्त बहुत ॥ २३५ ॥

॥ इति सान्ताः ॥

दलेऽपि वर्ह—

वर्ह—मोरके पख वा पूछ, पत्ता तथा  
करोंदा वृक्ष ॥

—निर्वन्धोपरागाकार्कादयो ग्रहाः ॥

ग्रह—सूर्य इत्यादिग्रह, ग्रहण करना,  
यज्ञके पात्र, ग्रहण जो सूर्य चन्द्रको लग  
ताड़े तथा आग्रह वा हठ ॥

द्वार्यापीडे काथरसे निर्व्यूहो

नागदन्तके ॥ २३६ ॥

निर्व्यूह—खूँटी, शिरोवेष्टन ( पगडी

सिरपेच इत्यादि ) तथा द्वार और काढा ॥  
॥ २३६ ॥

तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्राहः  
प्रग्रहोऽपि च ॥

प्रग्राह—प्रग्रह—कैदी जो चोर इत्यादि  
अपराधीका दण्ड है, पगहा वा पशुबाधने  
की डोरी, तराजू तथा घोड़ा इत्यादिकी  
लगाम ॥

पत्नीपरिजनादानमूलशापाः

परिग्रहाः ॥ २३७ ॥

परिग्रह—पत्नी वा स्त्री, परिवार,  
अगीकार तथा वृक्षादिकी जड़ और  
शाप ॥ २३७ ॥

दारेषु च गृहाः—

गृह—पत्नी तथा घर ॥

—श्रोण्यामप्यारोहो वरस्त्रियाः ॥

आरोह—चढ़ना, श्रेष्ठ स्त्रीका कटि-  
भाग वा श्रेष्ठ स्त्रीकी कमर तथा वृक्ष-  
इत्यादिकी उँचाई ॥

व्यूहो वृन्दे—

व्यूह—समूह तथा एक प्रकारकी सेनाकी  
रचना ॥

—ऽप्यहिर्वृत्रो -

अहि—सर्प तथा वृत्रनामा दैत्य ॥

—प्यग्रन्धिकार्स्तमोऽपहाः ॥ २३८ ॥

रोटसी-द्विचक्षात्, भूमि । तथा  
भाक्काश ॥ २२९ ॥

ज्वालाभासी न पुस्त्यर्चि-

अर्धिस-ज्वाला तथा प्रकाश ॥

-ज्योतिर्मद्योत्तदृष्टिषु ॥

ज्योतिस्-ज्योतिर्विद्या, ताप, प्रकाश  
तथा दृष्टि ॥

पापापराधयोराग-

भागस्-पाप तथा अपराध ॥

-स्वगवास्यादिनोर्वयः ॥ २३० ॥

वयस्-पक्षी और वास्य आदि  
अवस्था ॥ २३० ॥

तेजपुरीपयोर्वर्चो-

वर्चस्-तज या प्रकाश वा चमक  
तया निष्ठा ॥

-महस्तुत्सवतेनसो ॥

महस्-उत्सव तथा तेज ॥

रजो गुणे च स्त्रीपुण्ये-

रजस्-पूछी न घर, रजोगुण तथा  
स्त्रीका हर महीनेका दधिर ॥

-राही ध्वान्ते गुणे तमः ॥ २३१ ॥

तमस्-अन्यकार, राटुमह, तमोगुण,  
अज्ञान तथा श्रेय ॥ २३१ ॥

छन्द पद्येऽभिलाषे च-

छन्दस्-पद्य और अभिजाया तथा वेदा ॥

-तपः कृच्छ्रादिकमथ-

तपस्-कृच्छ्रादिमत तथा छोट-  
तर अर्थात् काई छोक ॥

सहो बलं सहा मार्गो-

सहम्-अगहनमहीना तथा बल ॥  
सामर्थ्य ॥

-नमः खं आवणो नमः ॥ २३२ ॥  
नमस्-आकणमहीना तथा आकाश २२

ओकः सन्नामयश्चैका-

ओकस्-आधय वा अक्षयन तथा घर ।

-पयः क्षीर पयोऽम्बु च-

पयस्-पानी तथा दूध ॥

ओजो दीप्तौ बले-

ओजस्-बल तथा प्रकाश ॥

-स्रोत इन्द्रिये निम्नगारये २३३ ॥  
स्रोतस्-स्रोत वा आपसे जलका बहना

इन्द्रिय तथा नदीका का ॥ २३३ ॥

तेज प्रभावे दीप्तौ च क्मे

शुक्ले-

तेजस्-प्रभाष, प्रकाश, दीर्घ तथा काम ॥  
-व्यसस्त्रिषु ॥

यहासे आग सान्त परकी समातिप

यत सब शब्द तीनों छिगोमें होत हैं ॥  
विद्वान्विदध-

विद्वान्-पंडित वा ज्ञानकार तथा पत्रा ॥

-वी भस्त्रो हिंसा-

बीमारस-भिमका देखकर फिर उत्पन्न हो

घात करनेवाला, क्रूर वा कठोर तथा सिरपेच इत्यादि ) तथा द्वार और काढा ॥  
वीभत्स रस ॥ ॥ २३६ ॥

-ऽप्यतिशये त्वमी ॥ २३४ ॥

वृद्धप्रशस्ययोज्यायान्-

ज्यायस्-बहुत बुढ़ा-डूढ़ी तथा  
अत्यन्त प्रशंसा करनेके योग्य ॥ २३४ ॥

-कर्नीयांस्तु युवाल्पयोः ॥

कर्नीयस्-अत्यन्त, जवान अत्यन्त  
छोटा तथा छोटाभाई ॥

वरीयांस्तूरवरयोः-

वरीयस्-अत्यन्त बड़ा तथा अत्यन्त  
श्रेष्ठ ॥

-साधीयान्साधुवाढयोः ॥ २३५ ॥

साधीयस्-अत्यन्त साधु वा भला-  
ली तथा अत्यन्त बहुत ॥ २३५ ॥

॥ इति सान्ताः ॥

दलेऽपि बर्ह-

बर्ह-मोरके पख वा पूछ, पत्ता तथा  
करोँदा वृक्ष ॥

-निर्वन्धोपरागाकादयो ग्रहाः ॥

ग्रह-सूर्य इत्यादि ग्रह, ग्रहण करना,  
यज्ञके पात्र, ग्रहण जो सूर्य चन्द्रको लग  
ताहै तथा आग्रह वा हठ ॥

द्वार्यापीडे क्षाथरसे निर्व्यूहो

नागदन्तके ॥ २३६ ॥

निर्व्यूह-खूँटी, शिरोवेष्टन ( पगडी

तुलासूत्रेश्वादिरश्मौ प्रग्राहः  
प्रग्रहोऽपि च ॥

प्रग्राह-प्रग्रह-कौदी जो चोर इत्यादि  
अपराधीका दण्ड है, पगहा वा पशुबाधने  
की डोरी, तराजू तथा घोडा इत्यादिकी  
लगाम ॥

पत्नीपरिजनादानमूलशापाः

परिग्रहाः ॥ २३७ ॥

परिग्रह-पत्नी वा स्त्री, परिवार,  
अगीकार तथा वृक्षादिकी जड़ और  
शाप ॥ २३७ ॥

दारेषु च गृहाः-

गृह-पत्नी तथा घर ॥

-श्रोण्यामप्यारोहो वरस्त्रियाः ॥

आरोह-चढ़ना, श्रेष्ठ स्त्रीका कटि-  
भाग वा श्रेष्ठ स्त्रीकी कमर तथा वृक्ष-  
इत्यादिकी उँचाई ॥

व्यूहो वृन्दे-

व्यूह-समूह तथा एक प्रकारकी सेनाकी  
रचना ॥

-ऽप्यहर्वृत्रो-

अहि-सर्प तथा वृत्रनामा दैत्य ॥

-प्यग्निद्वर्कास्तमोऽपहाः ॥ २३८ ॥

तमोपह—चन्द्र, सूर्य तथा अग्नि ॥ २९८ ॥

परिच्छदे नृपाहर्षे परिवहो—

परिवर्ह—राजाका छत्र चमर इत्यादि  
विह्व तथा सामग्री ॥

॥ इति हान्ताः ॥

—अव्ययः परे ॥

अव—इसके उपरान्त अव्ययोंका बणन  
करते हैं जो कि तिनोखिंग, सातोंविमक्ति  
और एकवचन द्विवचन बहुवचनमें स  
मान धने रहते हैं और उनमें कुछ विकार  
नहीं होता ॥

आह्वीपदर्थेभिव्याप्तौ सीमार्थे  
धातुयोगजे ॥ २९९ ॥

आह्—ईपत्, भविष्याति, सीमार्थ  
और धातुके योगार्थमें होता है ॥ २९९ ॥

आ—प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्ये—

आ—स्मरण, वाक्यपूरणमें ॥

—ऽप्यास्तु स्यात्कोपपीडयोः ॥

आ—कोपमें पीडामें ॥

पापकुत्सेपदर्थे कु—

कु—पाप निन्दा तथा धोड़े अर्थमें ॥

चिह्न निर्मत्सर्जननिन्दयोः २४०

चिह्न—छानि देना वा चिह्नारम्भ तथा  
निन्दा ॥ २४ ॥

धान्वाचयसमाहारेतरेतर—  
समुच्चये ॥

ध्व—अन्याचय समाहार, इतरेतर  
और समुच्चयमें ॥

स्वस्त्याशी क्षेमपुण्यादी—

स्वस्ति—आशीर्वाद, कल्याण, पुण्य  
और मंगलमें ॥

—प्रकर्षे लघनेप्यति ॥ २४१ ॥

अति—अतिशय, बढ़ाई, प्रकर्ष और  
लघन अर्थमें ॥ २४१ ॥

स्वित्प्रश्ने च वितर्के च—

स्वित्—प्रश्न वा पूछना तथा तर्क-  
करनेमें ॥

—तु स्याद्देदेऽवधारणे ॥

तु—किन्तु, फेर, पादपूरणमें तथा अव-  
धारणमें ॥

सकृत्सहैकत्वारे चा—

सकृत्—साथ वा संग तथा एकत्वमें ॥

—प्याराद्दूरसमीपयोः ॥ २४२ ॥

आगत—दूर तथा समीपमें ॥ २४२ ॥

प्रतीक्ष्यो चरमे पश्चात्—

पश्चात्—पीछे पिछ्छा तथा पश्चि-

मशाम ॥

—दुताप्पर्यविकल्पयोः ॥

उत्—समुच्चय और विकल्पमें ॥

पुनः सहाय्ययोः सन्ध-

शयम्—सदा वा सर्वदा तथा

मिस्तार वा हरदम और फिर ॥

साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः ॥ २४३ ॥

साक्षात्—प्रत्यक्ष और तुल्यमे २४३ ॥

खेदानुकम्पासंतोषविस्मया-

मन्त्रणे वत ॥

वत—खेद, दया, सतोष, आश्चर्य जैसी  
इच्छा होय वैसा करो ऐसी आज्ञा देना ॥

हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यार-  
म्भविषादयोः ॥ २४४ ॥

हन्त—हर्ष, दया, वाक्यारम्भ तथा  
विषाद ॥ २४४ ॥

प्रात प्रतिनिधौ वीप्साल-  
क्षणादौ प्रयोगतः ॥

प्रति—मुख्यके समान, व्याप्त करनेकी  
इच्छा, चिह्न तथा विपरीत ॥

इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिस-  
माप्तिषु ॥ २४५ ॥

इति—हेतु, प्रकरण प्रकाशआदि  
तथा समाप्ति ॥ २४५ ॥

प्राच्यां पुरस्तात्प्रथमे पुरार्थे  
ऽग्रत इत्यपि ॥

पुरस्तात्—पूर्वदिशा, प्रथम, पूर्वकाल  
तथा आगे ॥

यावत्तावच्च साकल्येऽवधौ मा-  
नेऽवधारणे ॥ २४६ ॥

यावत्—तावत्—संपूर्ण, हृद, तोल  
तथा निश्चय ॥ २४६ ॥

मंगलानन्तरारम्भप्रश्नकात्स्न्ये-  
ष्वथो अथ ॥

अथो—अथ—मंगल, अनन्तर, आरम्भ,  
प्रश्न तथा संपूर्णता ॥

वृथा निरर्थकाविध्यो-

वृथा—निरर्थक, विधिहीन ॥

नानानेकोभयार्थयोः ॥ २४७ ॥

नाना—अनेक, तथा उभयार्थक २४७

नु पृच्छायां विकल्पे च-

नु—प्रश्न, तथा विकल्प ॥

पश्चात्सादृश्ययोरनु ॥

अनु—पीछे तथा सदृशता ॥

प्रश्नावधारणानुज्ञानुनयाम-  
न्त्रणे ननु ॥ २४८ ॥

ननु—प्रश्न, निश्चय, आज्ञा, शान्त  
करना तथा संबोधन ॥ २४८ ॥

गर्हात्समुच्चयप्रश्नशंकासंभावना-  
स्वापि ॥

अपि—निन्दा, समुच्चय, प्रश्न, शंका,  
तथा संभावना ॥

उपमायां विकल्पे वा-

वा—उपमा तथा विकल्प ॥

सामि त्वर्धे जुगुप्सिते ॥ २४९ ॥

सामि—आधा तथा निन्दित ॥ २४९ ॥

अमा सह समीपे च-

अमा—साथ तथा समीप ॥

तमोपह-चन्द्र, सूर्य तथा अग्नि ॥ २३८ ॥

परिच्छदे नृपाहर्ष्य परिषर्हो-

परिषर्ह-राजाका छत्र चमर इत्यादि  
विह्व तथा सामग्री ॥

॥ इति द्वाव्या ॥

-अव्यया परे ॥

अव-इसक उपरांत अव्ययोंका वर्णन  
करते हैं जो कि सीनोंकिंग, सातोबिमक्ति  
और एकवचन द्विवचन बहुवचनमें स-  
मान बने रहते हैं और उनमें कुछ विकार  
नहीं होता ॥

आकीपदर्थेभिम्यासौ सीमार्ये  
घातुयोगजे ॥ २३९ ॥

आह-ईकत्, अभिम्यासि, सीमार्य  
और घातुके योगार्थमें होता है ॥ २३९ ॥

आ-मयुष्यः स्मृतौ वाक्ये-

आ-स्मरण वाक्यप्रकरणमें ॥

-अप्यास्तु स्यात्कोपपीडयोः ॥

आ-कोपन पीडामें ॥

पापकुत्सेपदर्थे कु-

कु-पाप निन्दा तथा थोड़ा अर्थमें ॥

धिक् निर्भर्त्सननिन्दयोः २४०

धिक्-स्त्रानि देना वा धिक्कारना तथा  
निन्दा ॥ २४ ॥

धान्वाचपसमाहारेतरेतर-

समुच्चये ॥

ध-धान्वाचप समाहार, इतरेतर  
और समुच्चयमें ॥

स्वस्त्याशीः क्षेमपुण्यादौ-

स्वस्ति-आशीर्वाद, कल्याण, पुण्य  
और मंगलमें ॥

-प्रकर्षे लघनेप्यति ॥ २४१ ॥

अति-अतिशय, बढ़ाई, प्रकर्ष और  
लघन अर्थमें ॥ २४१ ॥

स्विरप्रभ्रे च वितर्के च-

स्वित्-प्रथ वा रूँछना तथा तर्क-  
करनेमें ॥

-सु स्याद्देवेऽवधारणे ॥

सु-किं सु, फेर, पादप्रकरणमें तथा अव-  
धारणमें ॥

सकृत्सहैकवारं चा-

सकृत्-साथ वा एक तथा एकवारमें ॥

-प्याराधूरसमीपयोः ॥ २४२ ॥

आगत-दूर तथा समीपमें ॥ २४२ ॥

प्रतीक्षां चरमे पश्चा-

पश्चात्-पीछे पिछड़ा तथा पश्चि-  
मदिशामें ॥

-दुताप्यथविकल्पयोः ॥

उत्-समुच्चय और विकल्पमें ॥

पुनः सहाय्ययोः क्षन्ध-

क्षन्ध-सदा वा सर्वदा तथा

निरन्तर वा हरदम और फिरमें ॥

—त्साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः ॥ २४३ ॥

साक्षात्—प्रत्यक्ष और तुल्यमे २४३ ॥

खेदानुकम्पासंतोषविस्मया-  
मन्त्रणे वत ॥

वत—खेद, दया, सतोष, आश्चर्य जैसी  
इच्छा होय वैसा करो ऐसी आज्ञा देन ॥

हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यार-  
म्भविषादयोः ॥ २४४ ॥

हन्त—हर्ष, दया, वाक्यारम्भ तथा  
विषाद ॥ २४४ ॥

प्रात प्रतिनिधौ वीप्साल-  
क्षणादौ प्रयोगतः ॥

प्रति—मुख्यके समान, व्याप्त करनेकी  
इच्छा, चिह्न तथा विपरीत ॥

इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिस-  
माप्तिषु ॥ २४५ ॥

इति—हेतु, प्रकरण प्रकाशआदि  
तथा समाप्ति ॥ २४५ ॥

प्राच्यां पुरस्तात्प्रथमे पुरार्थे  
अत इत्यपि ॥

पुरस्तात्—पूर्वदिशा, प्रथम, पूर्वकाल  
तथा आगे ॥

यावत्तावच्च साकल्येऽवधौ मा-  
नेऽवधारणे ॥ २४६ ॥

यावत्—तावत्—संपूर्ण, हृद, तोल  
तथा निश्चय ॥ २४६ ॥

संगलानन्तरारम्भप्रश्नकात्स्न्ये-  
ष्वथो अथ ॥

अथो—अथ—मगल, अनन्तर, आरम्भ,  
प्रश्न तथा संपूर्णता ॥

वृथा निरर्थकाविध्यो-

वृथा—निरर्थक, विधिहीन ॥

—नानानेकोभयार्थयोः ॥ २४७ ॥

नाना—अनेक, तथा उभयार्थक २४७

नु पृच्छायां विकल्पे च-

नु—प्रश्न, तथा विकल्प ॥

पश्चात्सादृश्ययोरनु ॥

अनु—पीछे तथा सदृशता ॥

प्रश्नावधारणानुज्ञानुनयाम-

न्त्रणे ननु ॥ २४८ ॥

ननु—प्रश्न, निश्चय, आज्ञा, शान्त  
करना तथा संबोधन ॥ २४८ ॥

गर्हात्समुच्चयप्रश्नशंकासंभावना-  
स्वपि ॥

अपि—निन्दा, समुच्चय, प्रश्न, शंका,  
तथा संभावना ॥

उपमायां विकल्पे वा-

वा—उपमा तथा विकल्प ॥

—सामि त्वर्धे जुगुप्सिते ॥ २४९ ॥

सामि—आधा तथा निन्दित ॥ २४९ ॥

अमा सह समीपे च-

अमा—साथ तथा समीप ॥



—कं वारिणि च मूर्धनि ॥

कम्—सल तथा मस्तक ॥

इवेत्यमर्थयोरेवं—

एवम्—इकार्यक तथा प्रकारार्थक ॥

—नून तर्कैर्योनिष्यये ॥ २५० ॥

नूनम्—तर्कना तथा अर्थनिष्यय ॥

॥ २५० ॥

तृष्णीमयं सुखे जोष—

जोषम्—धुप होना तथा सुख ॥

—किं पृच्छाया जुगुप्सने ॥

किम्—प्रश्न तथा निन्दा करना ॥

नाम प्राकाश्यसमाख्यक्रोधोप

गमकुत्सने ॥ २५१ ॥

नाम—प्रसिद्धि, संभावना, क्रोध,  
सुन्दर वष धारण करना, तथा सज्जना  
रना ॥ २५१ ॥

अल भूषणपर्याप्तिशक्तिवारण-  
वाचकम् ॥

अलम्—मलंकार, परिपूर्णता, सामर्थ्य  
तथा मना करना ॥

हुं वितर्क परिग्रहने—

हुम्—तर्कना करना तथा ग्रहण करना ॥

—समयान्तिकमध्ययो ॥ २५२ ॥

समया—समीप तथा मध्या ॥ २५२ ॥

पुनरप्यमी मेवे—

पुनर्—प्रथमके अनन्तर तथा मद ।

—निर्निश्चयनिषेधयो ॥

निर्—निश्चय तथा निषेध ॥

स्यात्प्रबन्धे चिरातीति निष्-

टागामिके पुरा ॥ २५३ ॥

पुरा—प्रबन्ध अर्थात् निरन्तर, प्राचीन,

समीप तथा होनवाला ॥ २५३ ॥

ऊर्यूरी चोररी च विस्तारे  
अङ्गीकृती त्रयम् ॥

ऊररी—ऊरी—उररी—विस्तार तथा  
अङ्गीकार करना ॥

स्वर्गे परे च लोके स्व—

स्वर्—स्वर्ग तथा परलोक ॥

—वार्तासमाख्ययोः क्लृप्ता ॥ २५४ ॥

क्लिप्ता—वार्ता, तथा समाख्या ॥ २५४ ॥

निषेधवाक्यालंकारविज्ञा—

सानुनये रक्छ ॥

रक्छ—निषेध, वाक्यालंकार, जिज्ञासा  
तथा अनुनय ॥

समीपोभयतः शीघ्रसाकल्या-  
भिमुखेऽभित ॥ २५० ॥

अभित—समीप, दोनों ओर, शीघ्र  
चारोओर, तथा संमुख ॥ २५० ॥

नामप्राकाश्ययोः प्रादु—

प्रादुर्—नाम तथा प्रकट ॥

—मिथोऽप्योर्म्य रहस्यपि ॥

मिथस्—परस्पर तथा एकत्र ॥

तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थे-

तिरस्-अन्तर्धान तथा टेढा ॥

-हा विषादशुगर्तिषु ॥२५६॥

हा-विषाद, शोक तथा पीडा॥२५६॥

अहहेत्यद्भुते खेदे-

अहह-अद्भुत तथा खेद ॥

-हि हेतावधारणे ॥

हि-हेतु तथा निश्चय ॥

इत्यनेकार्थवर्गविवरणम् ॥ ३ ॥

अथाव्ययवर्गः ४.

चिराय चिररात्राय चिरस्या-  
द्याश्चिरार्थकाः ॥

बहुत कालवाचक अव्ययशब्द ६॥

चिराय १ चिररात्राय, २ चिरस्य, ३  
आदि शब्दसे चिरम्, ४ चिरेण, ५  
चिरान्, चिरे ६ ॥

मुहुः पुनः पुनः शश्वदभीक्ष्ण-  
मसकृत्समाः ॥ १ ॥

बारम्बार अर्थवाचक अव्ययशब्द ५॥

मुहुः १ पुनःपुनः २ शश्वत् ३  
अभीक्ष्णम् ४ असकृत् ५ ॥ १ ॥

स्नाग्झटित्यञ्जसाहाय द्राङ्  
मंशु सपदि द्रुते ॥

शीघ्रतावाचक अव्ययशब्द ८ ॥

स्नाक् १ झटिति २ अजसा ३ अहाय ४

द्राक् ५ मंशु ६ सपदि ७ द्रुतम् ८ ॥

वलवत्सुष्टु किमुत स्वत्यतीव  
च निर्भरे ॥ २ ॥

अतिशयवाचक अव्ययशब्द ६ ॥  
वलवत् १ सुष्टु २ किमुत ३ सु ४ अति  
५ अतीव ६ ॥ २ ॥

पृथग्विनान्तरेणर्ते हिरुङ् नाना  
च वर्जने ॥

वर्जन वाचक वर्जनेवाले अव्यय  
शब्द ६ ॥ पृथक् १ विना २ अन्तरेण  
३ ऋते ४ हिरुक् ५ नाना ६ ॥

यत्तद्यतस्ततो हेता-

कारणवाचक अव्ययशब्द ४॥यत् १

तत् २ यतः ३ ततः ४ ॥

-वसाकल्पे तु चिञ्चन ॥ ३ ॥

अपूर्णतावाचक अव्यय शब्द २ ॥

चित् १ चन २ ॥ ३ ॥

कदाचिज्जातु-

किसी कालवाचक अव्यय शब्द

२ ॥ कदाचित् १ जातु २ ॥

-सार्धं तु साकं सत्रा समं-सह ॥

साथवाचक अव्यय शब्द ५॥साकम्

१ सार्धम् २ सत्रा ३ समम् ४ सह ५ ॥

अनुकूल्यार्थकं प्राध्वं-

अनुकूलतावाचक अव्यय शब्द १॥

प्राध्वम् ॥ १ ॥

-व्यर्थके तु वृथा मुधा ॥४॥

अर्थवाचक अव्यय शब्द २ ॥

वृषा १ मुषा २ ॥ ४ ॥

आहो उताहो किमुत विकल्पे  
किं किमुत च ॥

विकल्पार्थवाचक अव्यय शब्द ६ ॥

आहो १ उताहो २ किमुत ३ किम् ४  
किमु ५ उत ६ ॥

तु हि च स्म ह वै पादपूरणे-

श्लोकश्री पादपूर्णता क्तानेवाळे  
अव्यय शब्द १ ॥ तु १ हि २ च ३  
स्म ४ ह ५ वै ६ ॥

-पूजने स्वती ॥ ५ ॥

पूजावाचक अव्यय शब्द २ ॥ सु १  
अति २ ॥ ५ ॥

दिवाङ्गी-

दिनके अर्थवाचक अव्यय शब्द १ ॥  
दिवा १ ॥

-त्यय-दोषा च नक्त च रजना  
विति ॥

रात्रिके अर्थवाचक अव्यय शब्द २ ॥  
दोषा १ नक्तम् २ ॥

तिर्मगर्षे साधि तिरोऽ-

ट्ट अध्याचक अव्यय शब्द २ ॥  
साधि १ तिरस् २ ॥

-प्यय सम्बोधनार्थका ॥ ६ ॥

स्यु प्याद् पाडङ्ग ह हे मां-

सम्बोधनार्थवाचक अव्यय शब्द १ ॥

प्याद् १ पाड् २ ङ्ग ३ ह ४ हे ५ मां ६ ॥

-समया निकषा हिरुक् ॥

समीपवाचक अव्यय शब्द ३ ॥

समया १ निकषा २ हिरुक् ३ ॥

अतर्किते तु सहसा-

अकस्मात् क अर्थवाचक अव्यय  
शब्द १ ॥ सहसा १ ॥

-स्यात्पुरं पुरतोऽप्रतः ॥ ७ ॥

आगेक अर्थवाचक अव्यय शब्द ३ ॥

पुर १ पुरत २ अप्रत ३ ॥ ७ ॥

स्वाहा देवहविर्दानि औषद्

वौषद् वषद् स्वधा ॥

देवताओंके हव्य देनेके उपयोगी वा-  
चक अव्यय शब्द ५ ॥ स्वाहा १ औषद्  
२ वौषद् ३ वषद् ४ स्वधा ५ पि-  
रोंके उपयोगी प्रसिद्ध है ॥

किञ्चिदीपन्मनागल्पे-

अल्पके वाचक अव्यय शब्द ३ ॥

किञ्चित् १ ईप्त् २ मनाक् ॥ ३ ॥

-प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ ८ ॥

जन्मान्तराचक अव्यय शब्द २ ॥

प्रेष १ अमुत्र २ ॥ ८ ॥

य वा यया तथर्वेव साम्ये-

समता वाचक अव्यय शब्द १ ॥ य १

वा २ यया ३ तया ४ इव ५ एवम् ६ ॥

-इहो ही च विस्मये ॥

विस्मयवाचक अव्ययशब्द २॥ अहो १

ही २ ॥

मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां-

मौनार्थवाचक अव्ययशब्द २॥ तूष्णी-

म् १ तूष्णीकाम् २ ॥

-सद्यः सपदि तत्क्षणे ॥ ९ ॥

तत्कालवाचक अव्ययशब्द २ ॥

सद्यस् १ सपदि २ ॥ ९ ॥

दिष्ट्या समुपजोषं चेत्या-

नन्दे-

आनन्दवाचक अव्ययशब्द २ ॥ दि

ष्ट्या १ समुपजोषम् २ ॥

-ऽधान्तरेऽन्तरा ॥

अन्तरेण च मध्ये स्युः-

मध्यवाचक अव्ययशब्द ३ ॥ अन्तरे

१ अन्तरा २ अन्तरेण ३ ॥

प्रमह्य तु हठार्थकम् ॥ १० ॥

हठार्थवाचक अव्ययशब्द १॥ प्रमह्य १

॥ १० ॥

युक्ते द्वे सांप्रतं स्थाने-

युक्तार्थवाचक अव्ययशब्द २॥ सा-

ंप्रतम् १ स्थाने २ ॥

-ऽभीक्ष्णं शश्वदनारते ॥

निरतरवाचक अव्ययशब्द २॥ अभी

क्ष्णम् १ शश्वत् २ ॥

अभावे नह्य नो नापि-

अभाववाचक अव्ययशब्द ४॥ नहि १

अ २ नो ३ न ४ ॥

-मास्म मालं च वारणे ॥ ११ ॥

निषेधवाचक अव्ययशब्द ३ ॥

मास्म १ मा २ अलम् ३ ॥ ११ ॥

पक्षान्तरे चेद्यदि च-

पक्षान्तरवाचक अव्ययशब्द २ ॥

चेत् १ यदि २ ॥

-तत्त्वे त्वद्धाजसा द्वयम् ॥

तत्त्वार्थवाचक अव्ययशब्द २ ॥

अद्धा १ अजसा २ ॥

प्राकाश्ये प्रादुराविः स्या-

प्रकटवाचक अव्ययशब्द २ ॥

प्रादुस् १ आविस् २ ॥

-दोमेवं परमं मते ॥ १२ ॥

अङ्गीकारवाचक अव्ययशब्द ३ ॥

ओम् १ एवम् २ परमम् ३ ॥ १२ ॥

समन्ततस्तु परितः सर्वतो

विष्वगित्यपि ॥

सर्वओरवाचक अव्ययशब्द ४ ॥

समन्ततः १ परितः २ सर्वतः ३

विष्वक् ४ ॥

अकामानुमतौ काम-

विनाइच्छाके सलाहदेनेमें १ ॥

कामम् १ ॥

अर्थवाचक अम्यय शब्द २ ॥

वृषा १ मुषा २ ॥ ४ ॥

आहो उताहो किमुत विकल्पे  
किं किमुत च ॥

विकल्पार्थवाचक अम्यय शब्द १ ॥

आहो १ उताहो २ किमुत ३ किम् ४  
किमु ५ उत ६ ॥

तु हि च स्म ह वै पादपूरणे-

श्लोककृती पादपूर्णता बतानेवाले  
अम्यय शब्द ६ ॥ तु १ हि २ च ३  
स्म ४ ह ५ वै ६ ॥

-पूजने स्वती ॥ ५ ॥

पूजावाचक अम्यय शब्द २ ॥ तु १  
अति २ ॥ ५ ॥

दिवाङ्गी-

जिनके अर्थवाचक अम्यय शब्द १ ॥  
दिवा १ ॥

-त्यय-दोषा च नक्त च रजना  
विधि ॥

रात्रिके अर्थवाचक अम्यय शब्द २ ॥  
दोषा १ नक्तम् २ ॥

तिर्यगर्थे साचि तिरोऽ-

ट्ट अथवाचक अम्यय शब्द २ ॥  
साचि १ तिरम् २ ॥

-प्यय समाधुनायका ॥ ६ ॥

म्यु प्याद् पाट्ट ह हे भा-

सम्बोधमार्थवाचक अम्यय शब्द १ ॥

प्याद् १ पाट्ट २ अंग ३ ह ४ हे ५ मो ६ ॥

-समया निकषा हिरक् ॥

समीपवाचक अम्यय शब्द ३ ॥  
समया १ निकषा २ हिरक् ३ ॥

अतर्किते तु सहसा-  
अकस्मात् के अर्थवाचक अम्यय

शब्द १ ॥ सहसा १ ॥

-स्यात्पुर पुरतोऽप्रतः ॥ ७ ॥

आगेके अर्थवाचक अम्यय शब्द १ ॥  
पुर १ पुरतः २ अप्रत ३ ॥ ७ ॥

स्वाहा देवद्विदनि श्रीपद्

वौपद् वपद् स्वधा ॥  
देवताओंके हव्य देनेके उपयोगी वा-

चक अम्यय शब्द ५ ॥ स्वाहा १ वौपद्  
२ वौपद् ३ वपद् ४ स्वधा ५ पित-

रोंके उपयोगी प्रसिद्ध हैं ॥  
किंचिदीपन्मनागल्पे-

अल्पके वाचक अम्यय शब्द ३ ॥  
किंचित् १ ईपत् २ मनाक् ३ ॥ ३ ॥

-मेत्यामुग्र भवान्तरे ॥ ८ ॥

जन्मान्तरवाचक अम्यय शब्द २ ॥  
मेय १ अमुग्र २ ॥ ८ ॥

य वा यया तयैर्व साम्ये-

समता वाचक अम्यय शब्द ६ ॥ ११ ॥  
वा १ यया ३ तया ४ इ ५ ए ६ ॥

अस्ति सत्त्वे-

भावार्थक अव्यय १ ॥ अस्ति १ ॥

-रूपोक्तावु-

कोपवचनवाचक १ ॥ उ १ ॥

-ऊं प्रश्ने-

प्रश्नवाचक १ ॥ ऊम् ॥ १ ॥

-ऽनुनये त्वायि ॥

शान्तकरनेमें १ ॥ अयि १ ॥

हुं तर्के स्या-

तर्कवाचक १ ॥ हुम् १ ॥

-दुषा रात्रेरवसाने-

प्रातः कालवाचक १ ॥ उपस् १ ॥

-नमो नतौ ॥ १८ ॥

नमस्कारवाचक अव्ययशब्द १ ॥

नमस् १ ॥ १८ ॥

पुनरर्थेऽङ्ग-

पुनर्वाचक १ ॥ अङ्ग १ ॥

-निन्दायां दुष्टु-

निन्दावाचक १ ॥ दुष्टु १ ॥

-सुष्टु प्रशंसने ॥

प्रशंसावाचक १ ॥ सुष्टु १ ॥

सायं साये-

सायंकालवाचक १ ॥ सायम् १ ॥

-प्रगे प्रातः-

प्रातःकालवाचक २ ॥ प्रगे १ ॥

प्रातर् १ ॥

-प्रभातेनिकषाऽन्तिके ॥ १९ ॥

समीपवाचक १ ॥ निकषा १ ॥ १९ ॥

परुत्परार्यैवमोऽब्दे 'पूर्वे पूर्व-  
तरेयाते ॥

गतवर्षवाचक १ ॥ परुत् १ ॥ गत-  
वर्षसे पहले वर्षका वाचक अव्यय १ ॥  
परारि १ ॥ वर्तमानवर्षवाचक अव्यय १ ॥  
ऐषमस् १ ॥

अद्यात्रा-

इस दिनका वाचक अव्यय १ ॥  
अद्य १ ॥

ह्यय पूर्वोऽद्वीत्यादौ पूर्वो-  
त्तरापरात् ॥ २० ॥ तथाधरान्या  
न्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः ॥

'प्रथम दिन' इत्यादि अर्थमें पूर्वआदि  
शब्दसे 'एद्युस्' प्रत्यय होकर पूर्व दिनका  
वाचक 'पूर्वेद्युः' उत्तर दिनका वाचक  
'उत्तरेद्युः' परदिनका वाचक 'परेद्युः'  
इत्यादि शब्द बनते हैं. जैसे 'अधरेद्युः'  
अन्येद्युः, अन्यतरेद्युः, इतरेद्युः ॥ २० ॥

उभयद्युश्चोभयेद्युः-

दोनों दिनके वाचक अव्यय २ ॥  
उभयद्युः १ उभयेद्युः २ ॥

-परे त्वाह्नि परेद्यवि ॥ २१ ॥

परदिनका वाचक १ ॥ परेद्यवि १ ॥ २१ ॥  
ह्यो गते-

-मसूयोपगमेऽस्तु च ॥ १३ ॥

ईर्ष्याद्वेषेण अङ्गीकारवाचक १ ॥

अस्तु १ ॥ १३ ॥

ननु च स्मादिरोधोक्तौ-

विरुद्धवृत्तिवाचक १ ॥ ननु १ ॥

-कश्चित्काममपेक्षने ॥

इच्छित प्रस्तवाचक १ ॥ कश्चित् १ ॥

निःपमं दुःपमं गर्ह्ये-

निन्दितवाचक २ ॥ निःपमम् १

दुःपमम् २ ॥

-यथास्वं तु यथायथम् ॥ १४ ॥

यथायोग्यवाचक २ ॥ यथास्वम् १

यथायथम् २ ॥ १४ ॥

मृषा मिथ्या च वितथे-

मिथ्यावाचक २ ॥ मृषा १ मिथ्या २ ॥

-यथार्थं तु यथातथम् ॥

सत्यवाचक १ ॥ यथार्थम् १

यथातथम् २ ॥

-स्युरेव तु पुनर्वै वेत्यवधारण

वाचका ॥ १५ ॥

निश्चयवाचक ५ ॥ एवम् १ तु २

पुनर् २ वै ४ वा ५ ॥ १५ ॥

प्रागतीतार्थक-

भूतकालवाचक १ ॥ प्राक् १ ॥

-मूनमवश्यं निश्चये द्वयम् ॥

अवश्यवाचक २ ॥ मूनम् १ अव

श्यम् २ ॥

सषट्दर्शे-

दर्शवाचक १ ॥ सषट् १ ॥

-प्रयरे त्वर्था-

प्रथमवाचक १ ॥ त्वर्था १ ॥

-गामव-

निश्चित अङ्गीकारवाचक २ ॥ गाम्

१ एवम् २ ॥

-स्वयमात्मना ॥ १६ ॥

आत्मवाचक १ ॥ स्वयम् १ ॥ १६ ॥

अरूपे नीचै-

अल्पवाचक अव्ययशब्द १ ॥ नीचैस् १ ॥

-र्महस्पृष्टैः-

ऊचावाचक १ ॥ उच्चैस् १ ॥

-प्रायो मू-

बाह्यस्य ( अकस्मत् ) वाचक १ ॥

प्राय १ ॥

-म्यदुते स्मैः ॥

मन्दवाचक अव्ययशब्द १ ॥ स्मैस् १ ॥

सना नित्ये-

नित्यवाचक १ ॥ सना १ ॥

-बहिर्बाह्ये-

बाह्यवाचक १ ॥ बहिस् १ ॥

-स्मार्तते-

भूतकालवाचक १ ॥ स्म १ ॥

-ऽस्तमदर्शने ॥ १७ ॥

अदर्शमवाचक १ ॥ अस्तम् १ ॥ १७ ॥

अस्ति सत्त्वे-

भावार्थक अव्यय १ ॥ अस्ति १ ॥

-रूपोक्तावु-

कोषवचनवाचक १ ॥ उ १ ॥

-ऊं प्रश्ने-

प्रश्नवाचक १ ॥ ऊम् ॥ १ ॥

-ऽनुनये त्वायि ॥

शान्तकरनेमें १ ॥ अयि १ ॥

हुं तर्के स्या-

तर्कवाचक १ ॥ हुम् १ ॥

-दुषा रात्रेरवसाने-

प्रातः कालवाचक १ ॥ उपस् १ ॥

-नमो नतौ ॥ १८ ॥

नमस्कारवाचक अव्ययशब्द १ ॥

नमस् १ ॥ १८ ॥

पुनरर्थेऽङ्ग-

पुनर्वाचक १ ॥ अङ्ग १ ॥

-निन्दायां दुष्णु-

निन्दावाचक १ ॥ दुष्णु १ ॥

-सुष्ठु प्रशंसने ॥

प्रशंसावाचक १ ॥ सुष्ठु १ ॥

सायं साये-

सायंकालवाचक १ ॥ सायम् १ ॥

-प्रगे प्रातः-

प्रातःकालवाचक २ ॥ प्रगे १ ॥

प्रातर् १ ॥

-प्रभातेनिकषाऽन्तिके ॥ १९ ॥

समीपवाचक १ ॥ निकषा १ ॥ १९ ॥

परुत्परार्यैषमोऽब्दे पूर्वे पूर्व-

तरेयाति ॥

गतवर्षवाचक १ ॥ परत् १ ॥ गत-

वर्षसे पहले वर्षका वाचक अव्यय १ ॥

परारि १ ॥ वर्तमानवर्षवाचक अव्यय १ ॥

ऐपमस् १ ॥

अद्यात्रा-

इस दिनका वाचक अव्यय १ ॥

अद्य १ ॥

हयय पूर्वेऽह्नीत्यादौ पूर्वो-

त्तरापरात् ॥ २० ॥ तथाधरान्या

न्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः ॥

‘प्रथम दिन’ इत्यादि अर्थमें पूर्वआदि

शब्दसे ‘एद्युस्’ प्रत्यय होकर पूर्व दिनका

वाचक ‘पूर्वेद्युः’ उत्तर दिनका वाचक

‘उत्तरेद्युः’ परदिनका वाचक ‘परेद्युः’

इत्यादि शब्द बनते हैं, जैसे ‘अधरेद्युः’

अन्येद्युः, अन्यतरेद्युः, इतरेद्युः’ ॥ २० ॥

उभयद्युश्चोभयेद्युः-

दोनो दिनके वाचक अव्यय २ ॥

उभयद्युः १ उभयेद्युः २ ॥

-परे त्वहि परेद्यवि ॥ २१ ॥

परदिनका वाचक १ ॥ परेद्यवि १ ॥ २१ ॥

ह्यो गते-



व्यतीतदिनका वाचक अव्यय  
शब्द १ ॥ यस्मि १ ॥

—आगतोद्दि श्च—

कलदिनका १ ॥ अस्मि १ ॥

—परश्वस्तु परेऽहनि ॥

आनेवाले परसौदिनका वाचक १ ॥

परस्मि १ ॥

सदा सदांनी—

तित्त्वाल्ले वाचक अव्यय २ ॥

सदा १ तदानीम् २ ॥

—युगपदेकदा—

एकसमयके वाचक अव्यय २ ॥ युग

पत् १ एकदा २ ॥

—सर्वदा सदा ॥ २२ ॥

सदाकाञ्चवाचक अव्यय २ ॥ सर्वदा १

सदा २ ॥ २२ ॥

एतर्हि समतीदानीमधुना

सांप्रतं तथा ॥

‘इसी समय’ इस अर्थके वाचक

अव्यय शब्द १ एतर्हि १ सम्प्रति २

इदानीम् ३ अधुना ४ सांप्रतम् ५ ॥

विम्बेसकाले पूर्वादौ प्रागु

दकप्रत्यगादयः ॥ २३ ॥

पूर्वदिशा पूर्वदिश और पूर्वकालमें “प्राक्”

शब्द है । उत्तर दिशा उत्तरदिश और

उत्तरकाठवाचक अव्ययशब्द “उदक्”

पश्चिमदिशा पश्चिम देश और पश्चिम

का वाचक अव्यय शब्द ‘प्रत्यक्’

इत्यादि ॥ २३ ॥

इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

छिन्नादिसम्बन्धवर्गः ५

सार्धगशास्त्रैः सप्तादिकृच्छ्रैः

वसमासमैः ॥ अनुक्तैः संग्रहे हि

गसंकीर्णवदिहोन्नयेत् ॥ १ ॥

पाणिनि के कहे हुए छिन्नानुशासन-

सहित (अर्थात् उनके अनुसार) सप्त आदि

प्रत्ययोंसे उत्पन्न विकीर्ण आदि

शब्दोंसे कृच्छ्रसे उत्पन्न श्रयाक आदि का

तद्वित प्रत्यय अण् आदिसे उत्पन्न, ‘सप्ता

सवैः’ ‘अदन्तोत्तर पदो द्विगु’ इस आदिसे

और बाहुल्यसे पहिछे अनुक्त शब्दोंसे

संग्रह किये जाते हैं, यहाँ वर्गसंग्रह

छिन्नका नाम किस प्रकार करें इस पर

कहते हैं, ‘संकीर्णत्वत्’ यह जैसे, ‘संकी

र्णत्व’ में प्रकृति आदिसे जाने जाते हैं, इसी

प्रकार यहाँ भी जानने, तिनमें प्रत्ययार्थसे

जैसे ‘अर्थार्थः पुंसि च’ यहाँ प्रत्ययार्थसे

जैसे ‘छियां तित्त्वा’ ‘प्रकृतिप्रत्ययार्थसे’

इस आधारावरसे क्रियाक्रियणोंको मणु-

सकत्व और एकत्व बनाने होता है, जैसे,

शोभम पचति इत्यादि ॥ १ ॥

लिङ्गशेषविधिव्यापी विशेषै-  
यधवाधितः ॥

सनादि--कृत्-तद्धित-समाससे उत्पन्न विषय पूर्वोक्तशब्दके लिंगसे अन्य-लिंगहोना लिङ्गशेष है, उसका विधिउत्सर्ग होनेसे काण्डत्रयका व्यापक है, जो पूर्वोक्त और यहाके कहे विशेषविधियोंसे वाधित न होवे, तभी व्यापक होता है क्योंकि अपवादविषय छोड़कर उत्सर्ग सर्वत्र प्रवृत्त होता है इस कहनेसे लिंगवि-शेषविधिको जो उत्सर्गभूतका स्वर्ग आदि वर्ग अपवाद है, तिनमें पहिलेके कहे हुए विशेषोंको फिर कहनेके दोष और विस्तारके डरसे फिर यहा विधान नहीं है, स्वर्गपर्याय यहा पुल्लिङ्ग कहेंगे उसका "द्योदिवौ द्वे स्त्रिया क्लीबे त्रिविष्टपम्" यह पूर्वोक्त अपवाद है और नीप्रभृतिकोके तो 'कृतः कर्तरि' इत्यादिसे कहेंगे, यद्यपि पहिले लिंग कहा है, तथापि अप्राप्तके प्रापणार्थकतासे लिङ्गानुशासन यहाभी प्रधान ही है ॥

स्त्रियामीदृद्विरामैकाच् सयो-  
निप्राणिनाम च ॥ २ ॥

'स्त्रियाम्' यहां अधिकार 'मसी' [श्लो० १०के] शब्दपर्यन्त जानना चाहिये 'ईदूतौ' ईकार और ऊकार 'विराम' अर्थात् अवसानस्थ हैं जिनके वे ईदृद्विराम

हैं वे और एकाच् ये दोनों ईदृद्विरामैकाच् हैं, ईदन्त ऊदन्त वा जो एकस्वर शब्द-स्वरूप हैं वे स्त्रीलिंग हैं यह अर्थ है, जैसे, धीः, श्रीः, भूः, भूः, नयतीति नीः, इन आदिमें 'कृतः कर्तरि' इसके बाध होनेसे वाच्यलिंगत्व है, योनिः भगवै इसके सहित प्राणियोंके नाम 'स्त्रियाम्' स्त्रीलिंग है जैसे माता-दुहिता-धेनु-आदि दार शब्द आदिमें तौ 'दाराः पुभूमौति' यह बाधक पहिले कह चुके हैं, कलत्रं और गृह शब्दको 'कलत्र श्रोणि-भार्ययोः' यहाका क्लीब पाठ बाधक है, इसी प्रकार अन्यत्र भी विचार करलेना चाहिये ॥ २ ॥

नाम विद्युन्निशावल्लीवीणा-  
दिग्भूनदीहियाम् ॥

विद्युत् आदि ही शब्द पर्यन्त ८ आठ शब्दोंके जो नाम अर्थात् सज्ञा हैं, वे स्त्रीलिंग हैं, जैसे, -विद्युत्, -तडित्, निशा, -रात्रिः, रजनिः, वल्ली, -व्रततिः, वीरुध्, वीणा, -विपञ्ची इत्यादि ॥

अदन्तैर्द्विगुरेकार्थो-

अकारान्त आदि शब्दोंसे जो एकार्थ द्विगुसमास है, वह स्त्रीलिंग है, जैसे 'पचाना मूलाना समाहारः पचमूली' इसी प्रकार त्रिलोकी षडध्यायी इत्यादि ॥

न स पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥

य पुन पात्र, युग आदि उत्तरपद  
अदन्तशब्दोंके साथ एकार्थ द्विगु समा  
सको स्त्रीलिङ्गत्व नहीं है जैसे पद्मपात्र,  
चतुर्गुण, त्रिभुवनम् ॥ ३ ॥

तल वृन्दे येनिकटघत्रा वैर  
मैथुनिकादिषु ॥ स्त्रीमा  
वाढाबनिकिष्णुलूणचण्डुच-  
क्य युजिजहनिशा ॥ ४ ॥  
उणादिषु निरूरीभ्रम्याष  
वृन्त चल स्थिरम् ॥

मात्र आदि अर्थमें लिखित छल प्रत्यय  
स्त्रीलिङ्गमें होता है तथा मात्र अर्थमें जैसे  
सुहृता, कर्म अर्थमें ब्राह्मणता, समूह अर्थमें  
ग्रामता, स्वार्थम देवता, वृन्द समूह अर्थमें  
य-इति-कटपच्-य-ये ४ चार प्रत्यय  
स्त्रीलिङ्गमें होते हैं जैसे 'पाशादिभ्यो य'  
पाशानां समूह पाश्या, बात्या 'खला  
दिभ्यः इति' खलिनी पत्निनी, 'रथा  
दिभ्यः कटपच्' रथकण्या, इसी रीतिस  
गोमा, वैर मैथुन आदि अर्थमें जो कुम्  
प्रत्यय है सो स्त्रीलिङ्ग है तिनमें वैर त्रितो  
धार्यमें जैसे अश्वमहिषिका अश्व और  
महिषीना यह फेर है इस भाँति पानाङ्क-  
निका मैथुनिक अर्थमें जैसे अत्रिमरका  
त्रिका अत्रिमरकाजिकी यह मैथुनिक

विवाहकपसम्बन्ध, इसी प्रकार 'कुस्तथ  
कुशिकाय तयोर्मैथुनिका कुस्तकुश  
निका' कुन् ग्रहण पुन्-पुण् वा-वुच्-अप्  
इक आदिका उपलक्षण है, जैसे कारिका  
गार्गिकया छत्रघते, कहीं सु भी पाठ है,  
आदिपदसे वीप्सा आदिमें मुन्का ग्रहण है

'स्त्रियां भाषादि' स्त्रीमावादिस्तस्मिन्'  
स्त्रियाम् इसका अधिकार कर, मात्र आदि  
अर्थमें जो लिखित प्रत्यय अनि-त्तिन्-  
( ति ) आदि हैं वे स्त्रीलिङ्ग अर्थमें हात  
हैं, अनि जैसे 'आक्रोशे नश्यति'  
इस सूत्रमें 'अनि' प्रत्यय होनेसे  
'अनृत्ति' 'अजीवति', 'त्तिन्' १  
स्मृति, छलिते, गति, 'शुद्ध' से,  
अनिका, प्रच्छादिका, प्रयाहिका, आसि  
का, 'णच्' से व्यावक्रोशी, स्वार्यिका,  
प्राका, 'शुष्' से शायिका इभुमशिका  
'क्यप्' से ब्रह्महत्या, ब्रह्मा इत्या, 'स्त्री  
मावादी क्यो कदा' मृपोष, ब्रह्मभूयं, 'यहां  
दोष आवेगा, 'युच्' से कारणा आसना,  
मदमा, 'इत्' से 'वापि' वासि' कांकारि  
नकार्पा, 'इत्' यह इण्डिका उपलक्ष  
णार्थक है जिस, आदि; छपि, 'अ'  
से पचा, प्रपा, मित्रा 'नि' से म्रानि,  
म्रानि, हानि, का' प्रायस स क्रिया,  
इच्छा ॥ ४ ॥ उणादिकोंमें 'नि'-  
ऊ-ई'-य ३ तीन प्रत्यय री

लिंगमें हैं, तिनमें 'नि' प्रत्ययान्तमे, श्रेणि.  
 श्रोणिः, द्रोणिः, 'उणादिष्वनिः' इस पाठ  
 में, अनिः, जैसे अवनिः, धरणिः, धमनिः,  
 सग्निः, 'ऊदन्त' जैसे, चमूः, कर्पूः, ईदन्त  
 जैसे, 'तन्त्रीः' तरीः, लक्ष्मीः, द्यन्तम्  
 आवन्तम्, ( डी आप् वा आङ् ) ऊदन्त  
 और जो 'चल' जगम हैं, वा जो 'स्थिर'  
 स्थावर है वे स्त्रीलिंग हैं, जगम जैसे,  
 नारी शिवा, ब्रह्मवधूः । स्थावर जैसे,  
 कदली, नाला, कर्कन्धूः ॥

तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा  
 पालुवाणादिक् ॥ ५ ॥

“तत् क्रीडाया” यहांके तत् शब्दसे  
 यहां मौष्ट्यादिकका निर्देश है, तिससे यह  
 अर्थ है, वह मुष्ट्यादिक प्रहरण अर्थात्  
 मारना जो क्रीडा वा खेलमे होय तो उस  
 अर्थमें विहित 'ण' प्रत्यय स्त्रीलिंगमें है  
 'दिक्' इस शब्दसे उक्तोदाहरणकी अभि-  
 लाषा है, जिससे दाण्डा, मौसला, ये उदा-  
 हरणके योग्य हैं, मुष्टिसे प्रहार करना  
 जिस क्रीडामें है उसे “मौष्टा वा माष्ट्या”  
 और पल्लव हाथ वा पत्तेसे मारना जिस  
 क्रीडामें है उसे “पालुवा” कहते हैं ॥

घञो जः सा क्रियाऽस्यां  
 चेदाण्डपाता हि फाल्गुनी ॥

श्येनपाता च मृगया तैलं-

पाता स्वधेति दिक् ॥ ६ ॥

वह घञन्तवाच्य दण्डपात आदिके  
 आदिक्रिया इस फाल्गुनी आदिके अर्थ-  
 मे घञन्तसे विहित जो ज प्रत्यय है सो  
 स्त्रीलिंगहीमें है, उदाहरण 'दण्डपातो अस्या  
 फाल्गुन्या दाण्डपाता फाल्गुनी' इसी प्र-  
 कार 'श्येनपातोऽस्या, श्येनपाता मृगया'  
 'तैलपातोऽस्या स्वधा क्रियाया तैलपाता'  
 इति शब्दसे 'मुसलपातोऽस्या मौसलपा-  
 ता भूमिः' ये इत्यादि सिद्ध होते हैं दिक्-  
 शब्दसे किसी देशमें फाल्गुन महीनेको  
 पूर्णिमाको दण्डसे वा लाठीसे क्रीडा हो-  
 ती है इस लिये 'दाण्डपाता' आदि उदा-  
 हरण भी होते हैं ॥ ६ ॥

स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्या-  
 दिर्विवक्षापचये यदि ॥

यदि 'अपचये' अर्थात् अल्पत्वके  
 कहनेकी इच्छा होय तो मृणाली, आदि  
 शब्द स्त्रीलिंग हैं जैसे 'अल्प मृणालमृ-  
 णाली' आदि शब्दसे जैसे, 'ह्रस्वो वशी  
 वशी' गौरादि मानकर ङीष् प्रत्यय होता  
 है, इसी भाति कुम्भी-प्रणाली-छत्री-  
 पटी-मठी-आदि ये भी हैं, 'ह्रस्वायें  
 कन् प्रत्ययः स्त्रिया' जैसे पेटिका, 'का-  
 चित्' यह क्यों कहा यहां दोष पड़ता है  
 जैसे, 'अल्पो वृक्षो वृक्षक.' इत्यादि  
 स्त्रीलिंग नहीं हैं ॥

लङ्का शेफालिका टीका धा-  
 तकी पञ्जिकाऽऽदिकी ॥ ७ ॥

अथ दबायुद्धम् इत्यादिस कह छिग  
 बाळोंमेंसे किसी दान्दके मुखसे छिगज्ञान  
 के हेतु, मित कान्तादि क्रमसे कहते हैं  
 १ छंका राक्षसपुरे, २ शफालिका फुछका  
 मेद वा वृक्षमेद—'निगुडा—निसा यह  
 प्रसिद्ध ) है ३ टीका—कठिन पदकी  
 व्याख्या—४ धातकी—वृक्षमेद—(आबरा  
 यह प्रसिद्ध है ) ५ पजिरा (नि-शेय  
 पदकी व्याख्या ) ६ आठकी—तुरई  
 प्रसिद्ध है ॥ ७ ॥

सिग्रका सारिका द्विका  
 प्राचिकोष्का पिपीठिका ॥

तिन्दुकी कणिका भाङ्गि

सुरङ्गासूचिमाटय ॥ ८ ॥

१ सिग्रका वृक्षमेद २ सारिका  
 पत्नीमेद—वा मपना ३ द्विका स्वरमेद वा  
 हिवकी, ४ प्राचिका पाचिका मी बनकी  
 मन्त्री वा पक्षिमेद इतिस्वामी ५ छंका  
 छंका समूह, ६ पिपीठिका कीटका  
 मेद—(चीटी—वा चीटा मी ) 'शनेर्या  
 र्हाति पिपीठिक' यह म्यामीक मनेसे  
 पुष्पिमी है ७ तिन्दुका वृक्षमेद  
 वा तन्दुआ यह प्रसिद्ध है ८ 'कणिका'  
 परमाणु ९ मणि १० कुरङ्गाका मेद  
 वा टण, ११ 'सुरगा विड वा सुरग'  
 यह प्रसिद्ध है १२ मूषि सु—वा  
 बान्नी १३ भाङ्गि पठरा सिगा ॥ ८ ॥

पिच्छावितण्डाकाकिण्य

चूर्णि शाणीवृणीदरत् ॥

साति कन्था सथाञ्जसन्दी

नामी राजसभापि च ॥ ९ ॥

१ 'पिच्छा' रोमर यह प्रसिद्ध है २  
 'विण्डा' बादमेद, ३ 'काकिण्य' वा  
 काकिणी'पणका चौया माग वा कौडी,  
 ४ 'चूर्णि' वा चूर्णी, चूर्णिका, शामी  
 शण' पठविशेष है 'वृणा' कर्णजकौका  
 वा फछी दरत् म्छञ्जाति ॥ १ साति  
 दान और अवसानका कहत है २ 'कन्था'  
 प्रावरणाश्वर—वा वृसर विछीना ३ 'आ  
 सन्दी' आसनका मेद—वा श्वका आसन  
 वा कुर्सी, ४ 'नामी वा नामि' शरी  
 रिका अगमिष्ठप—वा टोंडी, ५ राजसभा,  
 राजा समाराजोंकी सभा वा पचरप  
 यह प्रसिद्ध है ॥ ९ ॥

सहरो चर्चरी पारी होरा

छटा च सिद्धमला ॥ साक्षा

लिप्ता च गण्डूपा गृधसी

चमसी मसी ॥ १ ॥

१ 'सह' यात्रार्थ मेद—वा सावर  
 यह प्रसिद्ध है २ 'चर्चरी' कर्णम  
 वा हाथरा छटा—वा हथरीका, फर्दक  
 वाज पडत है चर्चरी छोटा पत्रा,  
 ३ 'पारी' वा पारी हाथके पावरी रस्मी,

४ 'होरा' लग्नका आधा वा लग्न, ५ 'लट्टा' ग्रामचटकः, चिडा वा चिडी (वा गवैरया) ६ 'सिन्धला' मत्स्यविकार, ७ 'लाक्षा जतु'—वा लाख—लाह प्रसिद्ध है. ८ 'लिखा यूकांड'—अर्थात् लीख प्रसिद्ध वा परिमाणभेद, ९ 'गड्ढा' जल आदिसे मुखपूर्ण कुट्टा प्रसिद्ध है, १० 'गृध्रसी' वातरोग भेद, यह ऊरुकी संधिमें होता है ११ 'चमसी' यज्ञपात्रभेद १२ 'मसी' और भी पु—'मसि' 'कज्जल' ॥१०॥

इति स्त्रीलिङ्गसप्रहः ॥

पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः ॥ स्वगयागाद्रीमेधाब्धिद्रुकालासिशरायः ॥-११॥

अब पुल्लिङ्ग सप्रह करते हैं, 'पुंस्त्वे' इसका [श्लोक ०२१ के] 'पतद्ग्रह' शब्द-पर्यन्त अधिकार है, भेदाः 'तुषितसाध्य-आदि' 'अनुचरा' सुनन्द आदि-इनके सहित सुर-असुर-देव-और दैत्यके यह पर्यायके पुल्लिङ्ग हैं, सुरपर्याय जैसे—अमरा निर्जरा देवा मरुत. इत्यादयः इनके भेद जैसे, 'तुषिताः—साध्याः' 'इन्द्रो मरुता-न्मघवा—सूरः—सूर्य—अर्यमा-हाहा-हूहूः तुम्बुरुः इत्यादि, 'अनुचराः' जैसे विष्णुके अनुचर, जय—विजय—प्रभृति रुद्रके अनु-

चर, नन्दिकेश्वर आदि, इसी प्रकार—असुरपर्याय दैत्यदानव इत्यादि—इनके भेद-वलि नमुचि आदि, असुरके अनुचर कूष्माण्ड-मुण्ड—आदि, इस भाति सब स्थानमें जानना, इनकेभी 'दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम्' आदि बाधकको स्मरण करावेंगे 'अत्राधिताः' इस वक्ष्यमाणसे स्वर्ग आदि १९ अपने भेद और पर्यायके सहित पुल्लिङ्ग हैं, १ स्वर्गपर्याय जैसे, 'स्वर्ग—नाक, त्रिदिव' इत्यादिक 'द्यौदि-वौ द्वे स्त्रियां, क्लीबे त्रिविष्टपम्' यह बडा बलवान् बाधक है इसके बिना पुल्लिङ्ग हैं, २ 'यागो यज्ञः' वा 'मखः क्रतुः' इनके भेद—अग्निष्टोम—वाजपेय आदि इनको बाधकत्व कहेंगे ३ अद्रिः गिरिः वा पर्वत, इनके भेद—जैसे मेरु सहाद्रि-आदि इनके मध्यमे अपवाद हैं सो शैलवर्गमें कह चुके हैं, ४ 'मेघः' घन वा बादल ये इत्यादि पर्याय हैं, भेद आवर्त आदि—'अत्रस्य तु अत्र मेघः' यह क्लीब पाठ बाधक है, ५ अब्धिः—समुद्रका पर्यायभेद क्षीरोद आदि, ६ द्रुः वृक्षः शाखी आदि पर्याय और वट पीपल आदि भेद हैं, यहांभी कहीं रूपभेद आदिसे 'पाटला, शिशापा' आदिमें अपवाद कहा है ७ 'कालः दिष्ट. समयः' इस प्रकार पर्याय है और मास आदि भेद है ८

भव इत्यादिभूतं इत्यादिते कहे किं  
 यालोमैते किसी शब्दके सुखसे लिङ्गज्ञान  
 के हेतु, भिन्न कान्तादि क्रमसे कहते हैं  
 १ रुका राक्षसपुरी, २ शफालिका शूङ्का  
 मेद वा वृक्षमेद—( निगुडी—निरसा यह  
 प्रसिद्ध ) ३ टीका—कठिन पदकी  
 अगद्वया—४ रातकी—वृक्षमेद—( अंजना  
 यह प्रसिद्ध है ) ५ पजिका ( निशेध  
 पदकी व्याख्या ) ६ आढकी—गुरा  
 प्रसिद्ध है ॥ ७ ॥

सिग्रका सारिका द्विष्ठा  
 प्राचिकोल्का पिपीठिका ॥

तिन्दुकी कणिका मङ्गि

सुरङ्गाधिमाम्बय ॥ ८ ॥

१ सिग्रका वृक्षमेद २ सारिका  
 पक्षीमेद—वा मयना, ३ द्विष्ठा स्वरमेद वा  
 द्विचकी ४ प्राचिकोल्का पाचिका मी वमकी  
 मस्त्री वा पक्षिमेद इति स्यामी ५ सत्य  
 तजका समूह ६ पिपीठिका कीड़ेका  
 भेद—( पीटी—वा पीटा मी ) ७ श्वेय्या  
 सीति पिपीठिक ' यह व्यामीके मतसे  
 पुष्टिगामी है ८ तिन्दुकी वृक्षमेद  
 वा लम्बुका यह प्रसिद्ध है ९ 'कणिका'  
 परमाणु १० मङ्गि ' कुट्टिताका, भ  
 वा टोना ११ 'सुरङ्गा' रिज वा 'सुरङ्गा'  
 यह प्रसिद्ध है १२ गूधि सूक्ष्म—वा  
 व्यापनी १३ मङ्गि पत्तरी सिरा ॥ ८ ॥

पिच्छावितण्डाकाकिण्य  
 शूर्णी शानीद्रुणीदरु ॥

साविः कन्या सयाऽस्तन्दी

नामी राजसभापि च ॥ ९ ॥

१ 'पिच्छ' शोमर यह प्रसिद्ध है २

'वितण्डा' बादमेद, ३ 'काकिण्य' वा  
 काकिणी' पणका चौया माग वा कौडी,

४ 'शूर्णी' वा शूर्णी, शूर्णिका, शानी  
 शण' पटविशेष है 'द्रुणा' कर्णमञ्जोका

वा कच्छी दरु मृच्छजाति ॥ १ सावि  
 दान और अवसानका कहते हैं २ 'कन्या'

प्रावरणान्तर—वा दूसरा किन्तीना ३ 'भा  
 सन्दी' आसनका मेद—वा भेत्ताका आसन

वा कुर्सी, ४ 'नामी वा नामि' शरी  
 रिका भगविशेष—वा टोडी, ५ राजसभा,

राज्ञी समाराज्योकी समा वा कचहरी  
 यह प्रसिद्ध है ॥ ९ ॥

शस्त्री चर्चरी पारी होरा

छदा च सिध्मला ॥ लासा

लिप्ता च गण्डवा गृध्रसी

घमसी मसी ॥ १० ॥

१ 'शस्त्री' बाजाकी म—वा साज

यह प्रसिद्ध है २ 'चर्चरी' करार  
 वा हाथका शब्द—वा दर्दकीडा, कर्दक

बाज पटत ३, 'कर्मसी' छोटा घरा,  
 ४ 'पारी' वा मारी हाथीके पावरती रसी,

‘तु’ शब्दान्त और ‘रु’ शब्दान्त पुलिग हैं, जैसे हेतुः सेतुः—धातुः मन्तुः—तन्तुः इत्यादि—कुरुः—मेरुः—किंशारुः—इत्यादि, कशेरु आदि उपलक्षण हैं, दारु, श्मश्रु प्रभृतिका तिनमें कशेरुः अस्थिविशेष वा तृणविशेष, जतु लाक्षा वा लाही ॥ १३ ॥

कपणभमरोपान्ता यद्यदन्ता  
अमी अथ ॥ पथनयसटोपान्ता  
गोत्रारण्याश्चरणाद्वयाः ॥ १४ ॥

क-प-ण आदि ६ वर्ण उपान्ते अन्त्य के समीपमें हैं जिनके वे तैसे यदि ये क आदि वर्णषट्क उपान्त अदन्त हो तो पुलिग में होते हैं जैसे अक, लोकः, स्फटिकः, शुल्क-बल्क आदि तो पहिले ही बाधित हैं और प्लोप माप पृक्ष आदि पोपान्त हैं वर्पा आदि शब्द तो पहिले ही बाधित हैं पाषाण गुण किरण आदि णोपान्त शब्द, विपाण आदि से बाधित हैं, कौस्तुभ-दर्भ-शलभ-आदि मोपान्त हैं, कुसुम्भ आदिसे बाधित हैं होम ग्राम व्यायाम-गुल्म, आदि मोपान्त, ‘पद्मादे-र्वा पुसि’ इत्यादि से बाधित हैं, झर्झर सीकर सीर-प्रभृति रोपान्त है अजिर आदिक बाधित हैं, रादिवर्ण षट्क उपान्त शब्द अबाधित हैं तौ पुलिग हैं यहा ‘यद्यदन्ता’ इस पूर्वोक्तका सम्बन्ध नहीं

है अथादित्वसे पकारोपान्त जैसे यूप-वाष्प-कलाप आदि बाधित हैं थकारो-पान्त-वेपथु-रोमन्य-आदि नोपान्त-इन धन-भानु-आदि-वनादि तो बाधित हैं योपान्त आय-व्यय-जायु-तन्तुवाय आदि, मृगया आदि तौ बाधित हैं, सोपा-न्त रस-हास-आदि, विस आदि बाधित हैं टोपान्त घट-पट-आदि, किरीट आदिको बाधितत्व कहा है, गोत्र वशमें आख्या सज्ञा है जिनकी वे गोत्रारण्य ऋपिसज्ञक हे गोत्रके आदि पुरुष ये ये प्रवराध्यायमें पढ़े हैं और ये अन्य अपत्यप्रत्ययके विना गोत्र वाचित्वसे लोकमें प्रसिद्ध हैं वे पुलिग हे जैसे भर-द्राजः गोत्रमस्माकम्, इसप्रकार कश्यप वत्स प्रभृति, चरणके और वेदशाखा की नामवाली सज्ञा पुलिग हैं, जैसे कठ, बहूचः इत्यादि ॥ १४ ॥

नाम्न्यकर्तरि भावे च धञ्जञ्  
इणवाथुचः ॥ ल्युः कर्तरीमनि-  
ज्ञभावे को धोः किः प्रादितोऽ-  
न्यतः ॥ १५ ॥

नाम सज्ञामें और अकर्तरि च कारके मावमात्रमें भी विहित घञ् आदि सात प्रत्ययान्त पुलिग हैं, भावे च इस चकारसे असख्यामें भी घञ् गृहीत है



असिःसङ्ग-नन्दक आदि मेद, (इत्यादी  
बाध ) १ 'क्षर' बाणमेद नाराध आदि,  
-इषुर्भिद्योरिति विशपो दर्शित ' १०  
'भारि' शत्रुमेद आततायी आदि १११।

करगणद्वेष्टयोर्द सकण्ठकेषु

मयस्त्वना ॥ अन्नाहान्ता  
द्वेष्टमदा रात्रान्ता प्राग  
सख्यका ॥ १२ ॥

१ 'क्षर' राजप्रहणके योग्य भाग,  
,रश्मि' और 'पाणि' 'दीधिति' १५ आ  
दि को तो पुस्त्य बाधित है, २ 'गण्ड'   
कपोल वा गाल, 'ओष्ठ' वा दंतच्छद,  
दशमवसन आदि तो रूपमेदसे बाधित  
है, १ 'दो' प्रवेष्ट 'मुनबाहोस्तु द्वयो  
रिति विशेष' दंत दण्ड मेद' ज्वम,  
'कंठः गळ' 'समीपगळमेदेषु कण्ठ त्रिषु  
मिदुर्वुधा' इति शाश्वत 'केश कच' व  
बार, ( बाळ, 'नख' कररुह-नखोऽब्जी  
इत्यादिना बाधित 'स्तन' कुच ये सब  
यथा-सम्भव समेद और पर्व्याय पुँल्लिङ्गा  
हैं १ 'अह' अहश्च ये ह अन्त्य जिनके  
वे पुँल्लिङ्ग हैं जैसे अह' पूव पूर्वोद्ध,  
अह पर पराद्ध द्वेष्टनी समाहते द्वेषह  
-१५४मेव निष मिश्रय पुँल्लिङ्ग ॥ जैसे  
सौराष्ट्रिक, मुहा गरळ 'निष' पुँल्लि और  
बदीबने काकोठ हे इत्यादि बाधित है

रात्रान्ता यह समासान्तके एफदेशका  
अनुकरण है, इसी प्रकार आगेमी 'रात्र'  
शब्द है अन्तमें जिनके व जो प्राक्  
असंख्यावाचक शब्द हों तो पुँल्लि है,  
जैसे अहश्च रात्रिद्याहारात्र सर्वरात्र'  
पूर्वरात्र वर्षोरात्र अवररात्र प्राक् अस्-  
रूपका यह क्यों कहा पचरात्र, गणरात्र  
इनमें दोष होगा, पुँल्लिरात्रको अर्ध-  
रात्रि पाठसे स्वीकृत्यमी है ॥ १२ ॥

श्रीवेष्टाद्याश्च निपाता अ  
सन्नन्ता अबाधिता ॥ कशेरुज  
तुवस्तुनि हिंसा तुलुवि  
रामकाः ॥ १३ ॥

१ 'धीवष्ट' आदि ये निर्मास हैं अर्थात्  
द्रव वा गोमूत्र-वा सारवाचक हैं, व पुँल्लिङ्गा  
हैं धीवेष्ट 'सरल' वा घृणकाष्ठ 'धीविष्ट'  
मी कहीं पाठ है, आद्यशब्दसे धीवास,  
धृकभूप आदि, च शब्दसे गुग्गुल आदि,  
१ 'असन्त, असन्त' पुँल्लिङ्गा हैं असन्त  
जैसे, अगिरा, वेवा - 'चन्द्रमा'  
असन्त जैसे 'कृष्णवर्मा मयवा' आदि  
'अबाधिता' क्यों कहा अप्सरस, जम्बो-  
कसा, सुमनसा, इमं वय, इदं लोम,  
'तुलुवि' तुलु ये दोनों मित्र अर्थात्  
अंतमें हैं जिनका व तुलुविरामका' कण्ठसे  
है, कशरु जतु-वस्तु, इनको छोड़कर

पाटा पीढा, १० धटः तुला वा तराजू, ११ खटः अन्धकूप आदि—वा कफ—  
वा तृण ॥ १७ ॥

कोट्टारघट्टहट्टाश्च पिण्डगो-  
ण्डपिचण्डवत् ॥ गडुः कर-  
ण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो  
घुणः ॥ १८ ॥

१ कोट्टः, दुर्ग—पुर—किला—गढ वा  
कोट्टार., २ अरघट्टः,—कूपभेद—महाकूप  
वा उसके ऊपर बँधा जलके निकालनेका  
काष्ठ वा अरहट—पुरवट, तवघट्टः घाटाइ  
यहा प्रसिद्ध है, ३ हट्ट क्रयविक्रयका  
स्थान वा हटिया बाजार यह प्रसिद्ध है,  
४ पिंडः—मिट्टी आदिका समूह, ५ गोंडः  
नाभिः वा नीचजातिभेद, ६ पिचण्डः—  
वा पिचिण्डः उदर वा पेट, पिचण्ड  
वत् यहाके वत् शब्दसे गडवादि शब्द  
भी पुँल्लिंग हैं यह बोधित होता है, ७  
गडुः—गलगडः, ८ कारण्डः—वास आ-  
दिका बना माण्डका भेद वा पिटारी वा  
पुष्पमाजन, ९ लगुडः—वास आदिका  
दण्ड वा लाठी, १० वरण्डः—मुखका  
ग वा वदनकी व्यथा, ११ किणः—  
सकी गांठिका भेद—वह भी जो  
तावडा, लाठी आदिके चलानेसे

हाग आदिमें ( घडा ) स्पष्ट है, वग  
और चिह्नको भी “किण” कहते हैं,  
१२ घुणः, काटका काँडा वा धुन यह  
प्रसिद्ध है ॥ १८ ॥

दृतिसीमन्तहरितो रोमन्थोद्गी-  
यबुद्बुदाः ॥ कासमर्दोऽर्बुदः  
कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ १९ ॥

१ दृति, चामका दोना वा मसरु  
( मिस्तीका ), २ सीमन्त, केशवेश वा  
चूडा गूँथाहुआ, ३ हरित, पलाशवर्ण  
वा हरियर प्रसिद्ध है, ४ रोमन्थ, पशु  
जो जुगालीया चर्वग करते हैं ( वा  
पागुर , ) ५ उद्गीय, सामवेद, ६  
बुद्बुद, जलका विकार, ७ कासमर्द  
वा काशमर्दः गुल्मभेद वा रोगभेद, ८  
अर्बुद, दशकोटि, ९ कुन्द, पुष्पविशेष  
वा औजार रखनेका पात्र वा शिल्पभांड,  
१० फेन, जलविकार, ११ स्तूप,  
वटक आदि, ये ये और यूप वा यूपक  
वा “ यूप ” भी बरा पूजा आदिके  
नाम हैं ॥ १९ ॥

आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणप-  
क्षुरकेदराः ॥ पूरक्षुरप्रचुक्राश्च  
गोलहिं गुलपुद्गलाः ॥ २० ॥

वञ्जन्त जैस, 'प्रासीदन्ति मनास्यमिन् प्रा-  
साद , प्रास्यसे इति प्रास , विद्सि अने-  
न क्त्वं , प्रपतसि अस्मादिति प्रपात'  
मात्रमें जैसे, 'पाक त्याग ' अथ जैसे  
'जय ' जय , नय , अण् जैसे, कर , गर ,  
छव , पूव , नङ् जैसे 'यज् प्रथ या  
ज्या' यहाँ पुंस्त्व वाचित है, नङ् उपलब्ध  
क्षण है, 'स्वपो नन्' स्वप्न , णप्रत्यय  
जैसे 'न्याद ' घप्रत्यय जैसे, उरच्छद  
अयुज् जैसे, 'वेपथु ' स्यु प्रत्यय कर्त्तामें  
मंपादित्वसे पुंलिङ्गमें होता है, जैसे नन्दन ,  
रमण , मधुसूदन मात्रमें प्रयु आदिस  
जो इमनिच् है, सो पुंलिङ्ग है, जैसे  
प्रयोर्मात्र प्रथिमा, स्रदिमा, भाव एसा  
क्यों कहा, 'वृणोतीति वरिमा पूष्णी' यहाँ  
का माप यह शब्द देहली दीपकन्यायसे  
पूर्व और परमें सम्बन्ध होता है, मात्रमें  
क प्रत्यय जैसे आत्सूय , प्रत्य , प्रादित  
और अम्यत से पर जो पुंस्यक वातु है  
उत्तम विहित जो क्रिप्रत्यय है सो पुंलिङ्ग  
है 'दारूपो णि' दारूप और भारूप  
मी धातु पुंस्यक है, प्रादित , जैसे 'प्रधि  
निधि आदि' अम्यतः, जैसे 'जलधि'  
'इधुभिस्तु द्वयोर्विति वाञ्छित्य है' ॥ १५ ॥

दन्द्देऽश्ववटवाश्ववटवा न  
समाहृते ॥ कान्त सूर्येन्दु

पर्यायः पूर्वोऽयं पूर्वकोपि च ॥ १६ ॥

इ-समाहारस्तत्काले अम्यत्र समास  
द्वन्द्वसङ्गर्भे, 'अश्ववटवौ' पुंसि है, भाप  
उदाहरण दत्त हं 'अश्ववटवौ मटवाश्वमश्व-  
वटवौ' इसी रीतिसे अश्ववटवान्, अश्ववट  
वे इत्यादि प्रयोगसे, समाहारे तु 'अश्ववट  
वम्' यह लीव है; सूर्य, चन्द्रके पर्याय  
पूर्वक कान्तशब्द पुंसि है, जैसे 'सूर्यका  
न्त अर्ककान्त चद्रकान्त, इन्दुकान्त,  
सोमकान्त अयस् वा अयोवाचक  
अर्थात् लोहवाचक पूर्वक मी कान्त  
शब्द पुंसि है, जैसे 'अयस्कान्त लोह  
कान्त' ॥ १६ ॥

वटकश्चानुवाकश्च रत्नकश्च कुट्ट-  
ङ्गका ॥ पुरखो न्युरख' समुद्रम  
विटपट्टघटाः खटा ॥ १७ ॥  
अब पुंलिङ्ग क्तिप् पर्यन्त अनुक्तमपि  
अकरान्तादि क्रमसे कहा है, १ वटक-  
पिटकमेद वा ( वरा ), २ अनुवाक-  
पदक अश्वयव वा माग, ३ रत्नक-  
वा कमरा प्रसिद्ध है, ४ कुट्टक वा कुट्ट  
गकः वृक्षज्याका समूह, ५ पुरख माग-  
का अश्वयव, ६ पुंखा, न्यूरख , मी साम  
पदमे घटा ओकार, ७ समुद्रः-ममु  
ट वा टिम्बा, ८ टिम्बा पूर्वक वा टा ९ पट  
काष्ठ आदि कता आमनविशेष वा

इत्यादि, १० रुधिरं, शोणित रक्तं, ११ मुख, वदन वक्त्रं, १२ अक्षि-नयन, नेत्र, १३ द्रविण, धन, इस इत्यादि, १४ बल शक्ति सैन्य आदि, शक्तिमें जैसे बल शुष्मा-मेत्यादि सैन्यं चक्रमित्यादि ॥ २२ ॥

फलहेमशुलबलोहसुखदुःख-  
शुभाशुभम् ॥ जलपुष्पाणि  
लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥  
॥ २३ ॥

१ फल फलमात्र—कपित्थ, इस इत्यादि, 'हठ' भी, २ हेम, सुवर्ण, कनकं, इस इत्यादि, ३ शुल्ब, ताम्र, इस इत्यादि, ४ लोह, कालायस, इस इत्यादि, ५ सुख शर्म, शात, इस इत्यादि, ६ दुःख तु कृच्छ्रं, कष्ट, ७ शुभ—कल्याण, कुशल, इस इत्यादि, ८ अशुभ, अकल्याण, ९ जलपुष्पाणि—कुमुद—कमल—कह्लार—उत्पलानि आदि, १० लवणं, सैन्धव, इस इत्यादि, ११ व्यञ्जनं, तेमन, निष्ठान, इस इत्यादि, व्यञ्जनविशेषसे दधि—तक्र—आदिका ग्रहण है, १२ अनुलेपनं, कुंकुम आदि, यहा बाधितादन्यत् ऐसा क्यों कहा, आकाशो, विहायाः, द्यौः, अटवी अरण्यानि इस इत्यादि, इसी प्रकार अ-  
भ्यत्र भी विचारना चाहिये ॥ २३ ॥

कोट्याः शतादिसंख्याऽन्या  
वा लक्षा नियुतं च तत् ॥  
द्व्यच्चक्रमसिसुसन्नन्तं यदना-  
न्तमकर्तारि ॥ २४ ॥

कोट्याः कोटिशब्द के विना जो शत आदि संख्या है वह क्लीबमें होती है। लक्षशब्द वा विकल्पसे क्लीबमें है पक्षमें स्त्रीलिङ्ग है, तत्शब्दसे लक्षका पर्याय नियुत यह अर्थ है, उदाहरण जैसे, 'नियुत—शत—सहस्रं—अयुतमित्यादि असन्त—इसन्त—उसन्त—और अनन्त जो द्व्यच्च वा द्विस्वर हैं वे क्लीबमें हैं, असन्त जैसे, पयः, मनः, इसन्त जैसे, सर्पिः, ज्योतिः, उसत जैसे, वपुः, यजुः, अनन्त जैसे, चर्म, शर्म, साम, नाम, इत्यादि इसीसे क्लीबत्व सिद्ध था आगे जो मर्मशब्दका उपादान है सो इसके अनित्यत्व ज्ञापनके अर्थ है, तिससे, '( गुणान्व-कारशोकेषु तमो राहौ पुमानयमित्यादि सिद्धम् )' अकर्तारि अर्थमें कर्त्तासे अन्यत्र जो अनात अन यह अतमें जिसके हैं वे क्लीब हैं जैसे, गमन, मरण, दान, करण, वरण, अकर्तारि क्यों कहा, इधमव्रश्चनः कुठारः मदयतीति नंदनः

॥ २४ ॥

१ आतप, सूर्यका प्रकाश वा उजि  
पाछा, २ नामि, राजा विशेष-वा क्षमिमे  
क्षमियवाचि नामिद्यम् पुल्लिग हे, ३  
कुणप' उत्ती प्रकार कुणप-शवमेद  
सक्तप्राण' ४ क्षुर-केशवपनद्रव्य-  
नाइका राज- (छुरा) वा पशुकी खुरी, ५  
केदर, व्यवहारका द्रव्य वा पदार्थ, ६  
पूर जलप्रवाह, ७ क्षुरप्र, वाणका मेद-  
'क्षुरप्र' मी, ८ पुक्त, शाकका मेद, ९  
गोळ, कृत्तपिच वा गोळ, १ हिङ्गुळ,  
रागद्रव्यका मेद वा रक्तवर्ण, ११ पुद्गळ-  
वा पुद्गळः आत्मा ॥ २०५ ॥

वेतालमल्लमल्लाय पुरोडाशो  
ऽपि पाटिश' ॥ कुलमापो रमसश्चिव  
सकटाह' पतद्वह ॥ २१ ॥

१ वेताल, भूताधिकृतशव-२ मल्ल  
विशेष-३ शिपका अनुचर ४ द्वारपाल,  
२ मल्ल, माल, ४ पुरोडाशः वा पुरोडा-  
३ मल्ल, बाहुपुत्रकुमल वा माल प्रसिद्ध,  
(सु) हविर्मेद ५ पाटिश अक्षमेद ६  
कुलमाप वा कुलमास' अर्द्ध स्थिष यव-  
वा कुलित माप ७ रमस'-१ हर्ष-२  
वेग-३ उत्सुकता-४ वा पूर्वापर-  
विचार ८ सकटाह कटाहके सदित  
कटाहशब्द मी पुल्लिग हे, कराही यह

प्रसिद्ध हे, ९ पतद्वह', निष्ठीवनपात्र  
वा पीकदान ॥ २१ ॥

॥ इति पुत्रिगसप्रहः ॥

द्विहीनेऽन्यच्च खारभ्यपर्ण  
श्वभ्रहिमोदकम् ॥ शीतोष्णमां  
सरुधिरमुखासिद्रविण बलम्  
॥ २२ ॥

द्विहीने स्त्री और पुरुषसे हीन न्युं  
सक्तता अधिकार हे वा 'ह्रिकण'  
पर्यन्त, श्लोकद्वयसे प्रधानकरक निर्दिष्ट  
छादि शब्द २६-अपने पर्यायोंक सहित  
नपुंसक हैं, यहाँ अयत् इस वाक्यसे  
जो भिन्न हैं वे स्त्रीय हैं यह सावना  
मका अर्थ कहा 'वकारसे बल आभूष-  
णका संग्रह है, १ खम् इद्रिय, २ व्योम  
वा देह-३ शून्य-४ अन्न-किन्दु, ५  
पुर, ६ स्वर्ग, ७ सुखमी जेसे, छिद्रं नमः  
वियत् इत्यादि २ अरव्य-विषिमं-  
काननं-इस इत्यादि, ३ पर्ण पत्र वा  
पत्ता दल इस इत्यादि, ४ श्वभ्रे इ  
पाताळ, ५ हिमं, प्राण्येय, ठण्ड, ६ उदक  
जल-नीर-पानी-इस इत्यादि, ७ शीतं,  
शीतलं, इस इत्यादि, ८ उष्णं-सिम-  
इस इत्यादि, 'शीतोष्ण गुणे' शीत  
तद्वति त्रिपु, ९ मांसं, पिहितं, तत्सं वे

इत्यादि, १० रुधिरं, शोणित रक्त, ११ मुख, वदन वक्त्र, १२ अक्षि-नयन, नेत्र, १३ द्रविणं, धन, इस इत्यादि, १४ बल शक्ति सैन्य आदि, शक्तिमें जैसे बल शुष्मा-मेत्यादि सैन्यं चक्रमित्यादि ॥ २२ ॥

फलहेमशुलबलोहसुखदुःख-  
शुभाशुभम् ॥ जलपुष्पाणि  
लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥  
॥ २३ ॥

१ फल फलमात्र—कपित्थ, इस इत्यादि, 'हल' भी, २ हेम, सुवर्ण, कनकं, इस इत्यादि, ३ शुल्व, ताम्र, इस इत्यादि, ४ लोह, कालायस, इस इत्यादि, ५ सुख शर्म, शात, इस इत्यादि, ६ दुःख तु कृच्छ्र, कष्ट, ७ शुभ—कल्याण, कुशल, इस इत्यादि, ८ अशुभ, अकल्याण, ९ जलपुष्पाणि—कुमुद—कमल—कह्लार—उत्पलानि आदि, १० लवणं, सैन्धव, इस इत्यादि, ११ व्यञ्जनं, तेमन, निष्ठान, इस इत्यादि, व्यञ्जनविशेषसे दधि—तक्र—आदिका ग्रहण है, १२ अनुलेपनं, कुंकुम आदि, यहा बाधितादन्यत् ऐसा क्यों कहा, आकाशो, विहायाः, द्यौः, अटवी अरण्यानि इस इत्यादि, इसी प्रकार अन्यत्र भी विचारना चाहिये ॥ २३ ॥

कोट्याः शतादिसंख्याऽन्या  
वा लक्षा नियुतं च तत् ॥  
द्व्यच्चक्रमसिसुसन्नन्तं यदना-  
न्तमकर्तारि ॥ २४ ॥

कोट्याः कोटिशब्द के विना जो शत आदि संख्या है वह क्लीबमें होती है, लक्षशब्द वा विकल्पसे क्लीबमें है पक्षमें स्त्रीलिङ्ग है, तत्शब्दसे लक्षका पर्याय नियुत यह अर्थ है, उदाहरण जैसे, 'नियुत—शत—सहस्रं—अयुतमित्यादि असन्त—इसन्त—उसन्त—और अनन्त जो द्व्यच्च वा द्विस्वर हैं वे क्लीबमें हैं, असन्त जैसे, पयः, मनः, इसन्त जैसे, सर्पिः, ज्योतिः, उसत जैसे, वपुः, यजुः, अनन्त जैसे, चर्म, शर्म, साम, नाम, इत्यादि इसीसे क्लीबत्व सिद्ध था आगे जो मर्मशब्दका उपादान है सो इसके अनित्यत्व ज्ञापनके अर्थ है, तिससे, '( गुणान्व-कारशोकेषु तमो राहौ पुमानयमित्यादि सिद्धम् )' अकर्तारि अर्थमें कर्त्तासे अन्यत्र जो अनात अन यह अतमें जिसके हैं वे क्लीब हैं जैसे, गमन, मरण, दान, करण, वरण, अकर्तारि क्यों कहा, इधमवश्चनः कुठारः मदयतीति नदनः ॥ २४ ॥

प्रान्त् सलोपश्च शिष्टैरात्रं  
प्राक्संख्ययान्वितम् ॥ पात्रा  
यदन्तरेकार्या दिगुलक्ष्यानु  
सारत् ॥ २५ ॥

त्रांतं क्लीबमें हैं जैसे पात्र—वह्नित्र—  
मित्र—वस्त्र—गात्र—यत्रम् ये इत्यादि,  
सकार और लकार उपधा अंत्यसे  
पूर्ववर्ण है जिनके वे क्लीबमें हैं सोपच  
जैसे, पुंसं, विसं, अंचतमसं, लोपच  
जैसे, कुलं, मूलं इस इत्यादि शिष्ट यह  
जो प्रागुक्तसे भिन्न है वह और वह  
प्रागुक्तमी जो अन्वाहित है सो भी  
त्रांतादिक क्लीबमें है, शिष्ट क्यों कहा  
पुत्र—वृत्र—ईस—कंस—पनस—शाला-  
काळ—गळ—संख्यापूर्वन रात्रशब्द  
क्लीबहै ( रात्राद्वाहा पुंसि ) इस-  
सूत्रमें पुंत्व प्राप्त या उसका यह अप-  
वादहै, त्रिरात्रं, पंचरात्रं, संख्याया यह क्यों  
कहा, अर्धरात्रः मध्यरात्रः पात्र आदि  
अदन्तशब्दोंसे ओ एकार्य त्रिगु समास  
है वह क्लीब है, पंचरात्रं आदि पदसे  
अतुर्पुंगु लक्ष्यानुसारत—अर्थात् शिष्ट-  
प्रयोगके अनुसार, इससे पंचमूली  
त्रिओकी इत्यादि अपवाद है, एकार्य  
क्यों कहा पंचरूपाळ पुरोडाश  
दिगु यह तद्वितार्थहै ॥ २५ ॥

दन्द्दैकत्वाव्ययीभावौ पय  
सख्याव्ययात्परः ॥ पष्ठषा  
इच्छायावहूनां चोद्विच्छाय सहती  
समा ॥ २६ ॥

१ दन्द्दसमासका एकत्व और अ-  
व्ययीभाव समास क्लीबमें है, दन्द्दैक्यं  
जैसे पाणिपादं, शिरोम्रीं मार्दङ्गि-  
पाणर्विन्मू, अव्ययीभाव जैसे, अवित्रि-  
ययाशक्ति, उपगग, संख्या और अव्य-  
यसे परे जैसे, विपर्यं, कापर्यं, स्वरूपा,  
व्यवादिते किं, धर्मपयं योगपयः यह  
समासांतका अनुकरण है, समासमें  
पठ्ठी विभक्त्यन्तसे परे जो छायाशब्द है  
सो क्लीब है, वहमी बहुतोंकी स्वभिनी  
होय तो जैसे, 'बीनाम्, पक्षिणां छाया  
विच्छायम्, इक्षुणां छाया इक्षुञ्जयं,'  
वहूनां ऐसा क्यों कहा कुञ्जस्य छाया  
कुञ्जच्छाया, ना स्त्रियां यह तो कहेंगे  
सहती समूहविषयमें सत्र शब्द क्लीबहै,  
यहमी पष्ठषा, इसका अनुवर्तन करते  
हैं, जैसे दासीनां समा दासीसमं, वृष-  
समं, रक्षसमं, स्त्रीसमम् इत्यादि, सहती  
ऐसा क्यों कहा दासीनां समा दासी  
समा, दासीगृहं, यह अर्थ है ॥ २६ ॥

शालायापि परा राज्ञामनु  
भ्यार्थादराजकात् ॥ दासी

सभं नृपसभं रक्षःसभामिमा  
दिशः ॥ २७ ॥

शालार्थं अर्थात् गृहार्थ-अपिशब्दसे समुदायार्थ भी जो सभाशब्द है वो अराजकात् राजशब्दसे वर्जित और राजा मनुष्य अर्थात् राजार्थक राजपर्याय और अमनुष्यार्थक रक्षः आदि शब्दसे और षष्ठ्यन्तसे परे होय तो क्लीबमे है '(शाल-गृहमर्थोऽभिधेयौ यस्याः सा शालार्था ) राजपर्यायसे जैसे, इनसभ, प्रभुसभ, अमनुष्यार्थसे जैसे, रक्षःसभ, पिशाचसभ, अराजकात् क्यों कहा, राजसभा 'राज पर्यायके ग्रहणसे यहां नहीं हुआ, चन्द्र-गुप्तसभा, राजविशेष यह है' पष्ठबाः यह क्यों कहा, नृपतिविषयसभा नृपतिसभा 'नृणां पतिर्यस्यां सा चासौ सभाचेति' वा नृपतिसभा, अमनुष्यार्थात् यह क्यों कहा-दासीसभा, दासीना शाला इत्यर्थः। इमा दिशः, यह दासीसभ इस आदि क्रमसे उदाहरणहैं, तिनमें दासीसभ यह समुदाय ही अर्थमे है, शेष दो शाला और सहति अर्थमे है ॥ २७ ॥

उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्र-  
काशने ॥ कोपज्ञकोपक्रमादि-  
कन्थोशीनरनामसु ॥ २८ ॥

१ उपज्ञा और उपक्रमान्तके आदि-  
त्वके प्रकाशनमें उपज्ञान्त और उपक्र-  
मान्त यह समास क्लीबमें होता है, '(उप-  
ज्ञायते' इति उपज्ञा॥ को ब्रह्मा तस्य उपज्ञा  
कोपज्ञं प्रजा ॥ कस्योपक्रमः कोपक्रमं  
लोकः)' प्रजापतिने प्रथम बनाया था  
इससे उसीने आदिमें प्रजाको जाना  
था, यह अर्थ है, उन्हीं नरोंके मध्यमें  
षष्ठ्यन्तसे पर कन्था क्लीबमें है, जैसे सौ-  
शमीना कन्था सौशमिकन्यम्, उशीन-  
रदेशवाचीसे अन्यत्र दाक्षिकन्थानामसु  
यह क्यों कहा, वीरणकथा ॥ २८ ॥

भावे नणकचिद्भ्यो न्ये समूहे  
भावकर्मणोः ॥ अदन्तप्रत्ययाः  
पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः ॥ २९ ॥

चकार इत्सज्ञक है जिसका वह चित्  
है, 'नश्च णश्च कश्च चिच्च नणकचित्तः  
तेभ्योऽन्ये' अर्थात् इनसे भिन्न जो 'तव्य,  
क्त,' आदि अदन्तधातुप्रत्यय भावमे  
विहित हैं वे क्लीबमें हैं, तिनमें धातु प्रत्यय  
जैसे, भवितव्य, भाव्य, सहित, भुक्तं,  
नणकचित् क्यों कहा, प्रश्नः, न्यादः,  
आखूत्थः, वेपथुः, नणक यह घञ्का  
उपलक्षण है, पाकः, भावे क्यों कहा  
'कर्ममे दोष होगा, जैसे 'कर्तव्यो धर्म-  
समूहः,' समूह अर्थमें, 'जैसे भिक्षाणां



समूहो भिक्षु, गार्मिण, औपगव, फार्क, भावमें अदन्त जैसे, गोर्मावः गोत्वं, शुचे र्मावः शौच, कर्मणि जैसे, सुकलस्य कर्म शौकस्यम्, राज्ञः कर्म राज्य, चौर्य्य, 'तल्ल प्रत्ययफा तो स्त्रीत्व कहा है, पुण्य और सुदिनशब्दसे परा, विद्वित्समासान्त अहन् शब्द ईश्वरमें है, अह्नाहन्त इस पुंस्त्वका अपवाद है, पुण्याह, सुदिनाह, सुदिन शब्द प्रशस्तार्थक है ॥ २९ ॥

क्रियाव्ययानां भेदकान्ये  
[ कृत्वे प्युक्त्यतोत्के ॥ चोष  
पिच्छ गृहस्थूण तिरीटं मर्म  
योजनम् ॥ ३० ॥

क्रिया और अव्ययोंका भेदक वा विशेषण छीव और एकत्रचनमें होते हैं, क्रियाविशेषण जैसे, भयं पचन्ति, सुख तिष्ठन्ति योगिन, सखीसं नायन्ति घाटा, अव्यय विशेषण जैसे, रम्य स्त्र सुखद प्रातः, अय कितने कठस्वरसे कहा है उभयं साममे, तोटकं वृत्तभदः चोषे, छाये फलका दोष वा साउपल केज आदिके फलको मी काई करता है ' मोष और पेन्मी २ पिण्ड गुण्डा- वा मोरफो पोंड-वा चूरा-वा सांगल वा दात्मछीरु-वा परम्परा आदि,

उक्त उक्त्य और मुक्त, १ गृहस्थूण चरका खम्भा वा धून्ही, २ तिरीटं, बैठन वा शिरोभूषण, ३ मर्म, सन्धि स्थान वा इक्षियोंके जोड़का स्थान, ४ योजनं को शचतुष्टय वा चार कोश ॥ ३० ॥

राजसूय बाजपेय गद्यपद्ये  
कृतौ कवेः ॥ माणिक्यमा  
प्यसिन्दूरचीरचीवरपिञ्जरम्  
॥ ३१ ॥

१ राजसूय और २ बाजपेय य २ पद्यके भेद हैं, '(राज्ञा अतात्मक सोम सूपतेऽत्र राजसूयं बाज पेष्टी सुर पीयत वा पेयमत्र बाजपयम्)' १ गद्य, २ पद्य ये कवेः कृतौ अर्थात् कविकीर्ति निरुद्धन्द रचनाका गद्य, और पादसम्पत्की रचनाका पद्य, कव कृतौ ऐसा कथो कहा, गद्या बाक्, पद्या पद्यति, १ माणिक्य, रत्नका भेद, '(मणिके मणिद्रूप स्ये मगरे मर्भ माणिक्यं,)' २ माष्य पदार्थविशेष वा विवरण, '(पुत्रायो वर्ण्यते यत्र वाक्ये सूत्रानुसारिमि। स्पन्दानि च वर्ण्यन्ते माष्य माष्यरिणो विदुरिति,)' ३ सिन्दूर, रक्त वा छाउपूर्ण, ४ चीर वस्त्रम्, ५ चीवर मुनिगासः वा बज्र, १० पंजर वा पिञ्जरम्, पद्यादि बन्धनागार वा पिञ्जरा ॥ ३१ ॥

लोकायतं हरितालं विदलं  
स्थालवाहिकम् ॥

१ लोकायत, चार्वाकशास्त्र, २ हरि-  
ताल, धातुभेद, ३ विदल, वासका बना  
पात्रभेद, ४ स्थाल, पात्रभेद वा थार वा  
हाडी अन्नपात्र, पाकपात्र आदि, ५ वाहिक  
कं, कुकुम वा देशभेद उस देशका उत्पन्न  
कुकुम बाह्यम् भी, 'बहुदेशे भव बाह्य'

इति नपुसकलिंगसप्रहः ॥

पुन्नपुंसकयोः शेषोऽर्धचर्चि-  
प्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥

अब चिकस शब्दपर्यन्त पुंसि  
और क्लीबमें हैं, उक्तसे भिन्नशेष है जैसे  
शंख और पद्म ये २ दो निधिवाचक  
पुँलिंग हैं, कम्बु नलिनका वाची तौ पुन्न-  
पुसकलिंग हैं तैसे अत्रत्य शब्दभी पर्याय  
वाचित है उसके पर्यायसे भिन्न हैं तो पुन्न-  
पुसक लिंग होते हैं, १ अर्धचर्चः अर्धचर्च  
आधी ऋचा वेदभाग, ३ पिण्याक, तिळकी  
खल, कंटक रोमहर्ष वा रोमांच ॥ ३२ ॥

मोदकस्तण्डकश्टकशाटकः क-  
र्पटोऽर्बुदः ॥ पातकोद्योगच-  
रकतमालामलका नडः ॥ ३३ ॥

१ मोदक, भक्ष्यभेद वा ( लड्डू )  
२ तण्डक उपतापविशेष वा रोगविशेष,  
३ टक वा तङ्क, अश्मदारण वा पत्थर  
गठनेकी टाकी, ४ शाटक. पटभेदः वा

शाडी प्रसिद्ध है, ५ कर्पटः वा कर्पटः  
"वाजे पढते हैं खर्वटः" स्थानभेद वा  
वस्त्रभेद, ६ अर्बुदः, सख्याभेद वा दश-  
कोटि, ७ पातक ब्रह्महत्यादि, ८ उद्योग  
उत्साह, ९ चरकः वा वरकः वैद्यशास्त्र  
भेद, "करकः यह भी पाठ है इसका  
स्यूतवस्त्र अर्थ है," १० तमाल. वृक्ष भेद  
(तमाखू) प्रसिद्ध है ११ आमलकः वा आ-  
मालकः धात्रीफल वा ओंवला प्रसिद्ध है  
१२ नडः भीतरी बिल—वा तृणभेद ३३ ॥

कुष्ठं मुण्डं शीधु बुस्तं क्ष्वे-  
डितं क्षेम कुट्टिमम् ॥ संगमं  
शतमानार्मशम्बलाव्ययताण्ड-  
वम् ॥ ३४ ॥

१ कुष्ठ—रोगभेद, २ पुष्कर वा कमल,  
३ मुण्ड शिरः, ४ शीधु, मद्य, ५ बुस्त  
भूजा मांस वा कटहल आदिके फलका  
सार भाग—'कहीं पुस्त वा शस्त पाठ  
है कहीं बुस्त वा तुस्तभी पाठ है' ६  
क्ष्वेडित, बीरकाकिशसिंहनाद-क्षेमकुशल  
'क्षेमोऽस्त्रीलब्धरक्षणे, मोक्षको भी, ' ८  
कुट्टिम गचका भेद, संगम सयोग, ९ शत  
मान मानभेद, १० अर्म अक्षिरोग, ११  
शम्बल वा सम्बल—वर्णका भेद, १२  
अव्यय—स्वरादिनिपात वा विकार-  
रहित, १३ ताण्डव वा ताण्डव्य-  
नाचका भेद' ॥ ३४ ॥

कविय कन्दकार्पास पारा  
वार युगधरम् ॥ यूपं प्रमीव  
पात्रीवे यूप धमसचिह्नसी  
॥ ३५ ॥

१ कविय-तोवडा छगाम वा धागडोर,  
२ कन्द, कमखिनीकी जड़ वा मूल वही  
कत्ते यह पाठ है, ३ कार्पास, 'कार्पास' वा  
कपास वा रुई वस्त्रका कारण आदि,  
४ "पारावार," वारं नदा आदिफे दोनो  
पारको क्रमसे पारं और अवार कहते हैं, ५  
युगधरं-कूबरं वा रथके नूआके काठका  
पुत्र करनेवाला काष्ठ वा पर्वत मेदआदि,  
६ यूपं, वा यूपं यज्ञाङ्गमेद, -अथवा यय  
पशु बाँधनेका काष्ठमेद ७ प्रमीव दृग्गती  
पैरुम् वा क्षरोखा-मुखशाला छिडकी  
आदि, ८ पात्रीवे वा 'पात्रीव वा यज्ञ  
पात्ररुध मेद, ९ यूपं वा नूपं-माण यह  
प्रसिद्ध है, (मुद्रामलकयूपस्तु प्राहीपि-  
च ३३ के वित इति उक्त विधये) १० धमस  
चिह्नसी य२ दो पात्रम् है ॥ ३५ ॥  
अर्धचादी घृतादीनां पुंस्त्वाय  
वदिक ध्रुवम् ॥ तमोक्तमिह लो  
कावे तद्येइस्त्यस्तु शेषयत् ॥ ३६ ॥

अर्धचादी इ० पुमपुंसकृष्णार्यमे  
धृताधिकोको पागिनिआधिकोने पुस्त्व  
आदि कला है, ये लो वन्मे प्रसिद्ध वैदिक  
है इव हेतु उ० वहा मही कहा और मातुषः, तस्य स्त्री मातुली, 'पुस्मिने वर्त

लोकमें हैं लो व शेषयत् अर्थात् उक्तसे  
मिन्न शेषहैं उनके समान शिष्टप्रयोगके  
अनुसार प्राण है, ॥ ३६ ॥

इति पुमपुंसकसमहः ॥

अथ स्त्रीपुंशेषसमहः ॥

स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुः षट्  
पदोरगाः ॥ जातिमेदा पुमा  
ख्याश्च स्त्रीयोगी सह मल्लकः ३७ ॥  
अपत्यप्रत्यय अन्तमें हैं त्रिनके  
वे शब्द स्त्री और पुंस्त्रियामें होतेहैं जैसे  
'उपगो अपत्य पुमान् औपगव उपगो  
अपत्य स्त्री औपगवी, वेदेह, वेदेही,  
गार्म्य, गार्गी' 'द्विचतु पदपदोरगाः'  
द्विपद-चतुष्पद-और पदपदवाची और  
पुत्रगवाची जाति मेद स्त्रीपुंन है, तिनमें  
द्विपदजातिमेद जैसे 'मामुपः पुमान् मा  
नुयी स्त्री गोप-पुमान् स्त्री गोपी, माक्षणी  
माक्षणी शूद्र, शूद्रा, अजादि मानकर टापू  
है, 'चतुष्पद' जैसे, 'मृग, मृगी इयः  
इयी' पदपद मेद जैसे, 'मैगा मगी,  
मशिका, मक्खी, शिला, सिमारी, छत्रा म-  
क्षी पिपीलिका चिरटी' 'उरग जैसे, उर  
ग उरगी, नाग, नागी' 'स्त्रीयोगे-सह  
पुमान्वाः अर्थात् स्त्रीपाचकशान्क योग  
से पुत्रायक शब्द स्त्री और पुंस्त्रियामें होते  
हैं, जैसे इन्द्रः इन्द्राणी, 'मातुर्जाता  
है, तस्य स्त्री मातुली, 'पुस्मिने वर्त

मान मातुलः स्त्रीयोगसे स्त्रीत्वमे भी हैं,  
'शूद्रस्य स्त्री शूद्री,' मल्लक, आदिभी स्त्री-  
पुसमें हैं मल्लकः स्त्रीमें तौ मल्लिका पुष्प-  
मल्लिका भेद हैं ॥ ३७ ॥

ऊर्मिर्वराटकः स्वातिर्व-  
र्णको ज्ञाटलिर्मनुः ॥ मूषा-  
सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी  
कटी कुटी ॥ ३८ ॥

मुनिः यती इंगुदी—बुद्ध पिपालवृक्ष-  
भेद, पलाश आदि 'ऊर्मिः तरग, यह भी  
पाठ है,' २ वराटकः कौडी स्त्रीलिङ्गमें  
वराटिका, ३ स्वाति नक्षत्र, ४ वर्णक  
चन्दन—विलेपन, ५ जाटलि, 'ज्ञाटलिः  
वा पाटलिः' भी पाठ है, पलाशवृक्षके  
सदृश है, ६ मनुः स्वायम्भुव आदि—वा  
मन्त्र, ७ मूषा, धातु गलानेका पात्र—वा  
घरिआ, ८ सृपाटी, परिमाण भेद,  
'सृपाटः वा स्त्री, सृपाटी वा असृपाटी,  
रुधिरकी नदी, ९ कर्कन्धूः, वेरवृक्ष, १०  
यष्टि, लाठी, ११ शाटि, पटभेद—वा  
शाडी, १२ कटि और कट. स्त्री कटि.,  
वा कटी, देहका अवयव वा कमर, १३  
पु० कुटि., स्त्री कुटि. वा कुटी, गृह-  
विशेष वा पत्तोंका घर, यहा मूषा  
नकारान्त है ॥ ३८ ॥

इति स्त्रीपुंशेषसप्तग्रहः ॥

अथ स्त्रीनपुंसकशेषः ॥  
स्त्रीनपुंसकयोर्भावक्रिययोः प्य-  
ञ्जकाचिच्च वुञ् ॥ औचित्य-  
मौचिती मैत्री मैत्र्यं वुञ् प्रागुदा-  
हृतः ॥ ३९ ॥

भावक्रिययोः अर्थात् भाव और कर्म  
अर्थमें वर्तमान प्यञ् प्रत्यय और वुञ्  
कहीं स्त्री और नपुंसकमें वर्तते हैं,  
तिनके मध्य प्यञ् प्रत्ययका उदाहरण  
जैसे, औचित्य यह, 'उचितस्य भावः  
औचित्य,' और 'औचितीभी,' मित्रस्य  
कर्म मैत्र्यं मैत्री वा 'इसी प्रकार वार्द्धक,  
वार्द्धका, सामग्र्य सामग्री, आर्हत्य, आर्ह-  
न्तो' वुञ् प्रत्ययतौ वैरमैथुनिकादि-वुनइस  
भौति पहिले कहा है, जैसे मिथुनस्य भावः  
कर्म वा मैथुनिका मैथुनिक भी' ॥ ३९ ॥

षष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेनाछा-  
याशालासुरानिशाः ॥ स्याद्वा  
नृसेनं श्वनिशं गोशालमितरे च  
दिक् ॥ ४० ॥

तत्पुरुषसमासमें षष्ठ्यन्त पष्ठी विभ-  
क्त्यन्त प्राक्पद हैं जिनके ऐसे षष्ठ्यन्त  
प्राक्पद सेना आदि शब्द स्त्री और नपु-  
ंसकमें होवै, उदाहरण जैसे, नृणां सेना  
नृसेन, वेति विकल्पसे नृसेना भी, इतरे  
भिन्न पदभी इसीप्रकार उदाहरण, कर  
ना चाहिये, श्वनिशं, गोशाल, यवसुर  
यवसुरा, कुड्यस्य छाया कुड्यच्छाय

कुष्ठपञ्चाया वा पष्ठीबहुवचनान्तसे पूर्व  
पदकी छाया हो तो छीबहीमें होव ऐसा  
पहिछे दिखाया है ॥ ४० ॥

आद्यभन्तोच्चरपदो द्विगुभ्या  
प्राप्ति नञ्च ह्रस्व ॥ त्रिसद्व च  
त्रिसद्वी च त्रितक्ष च त्रित  
स्यापि ॥ ४१ ॥

आद्यन्त उच्चरपत् और अद्यन्त उच्चर  
पद द्विगुसमास पुंलिङ्गमें नहीं हैं, किन्तु  
स्त्रीनपुंसकमें होते हैं अद्यन्त उच्चरपदका  
जो भन्त नकार है उसका ह्रस्व अर्थात्  
छोपमी होता है, ( आप्—आ—अन् )  
आद्यन्तात्पदका उदाहरण जैसे त्रिसद्व  
यह तिस अद्व समाह्वना त्रिसद्व त्रिस  
द्वी मी, अद्यन्तोच्चरपद, जैसे त्रयस्तक्षणा-  
समाह्वनास्त्रितक्ष, त्रितक्षी च तक्षन्  
शब्दका अन्त नकार छुप्त है ॥ ४१ ॥

॥ इति स्त्रीनपुंसकशय ॥

अथ त्रिलिङ्गशेषसम्प्रदाहः ॥

त्रिपु पात्री पुनी वादी पेदी  
कुनलदादिमी ॥

पात्र भाति और दाहिम शब्दोंत  
त्रिलिङ्ग है, पात्र, पात्री पात्र आदि, पुनी  
पुत्र पुट्ट का पत्र—टी—ट, पुत्र मट्टीका  
बना दम्पा वा औषध पकानेका पात्रमे  
दूध भातिके पीनका पात्र लोमा भाति  
पाटी, बाट—टी—ट रास्ता—ना मार्ग, पेद  
टी वा टा—ट पत्र—छा, फनी—ही, यह

पटारा वा पेटारीका नाम है, कुनल छी-  
उत्पल कमल मोती—आदि, दाहिम—  
मी—म, दाहिम्य वृक्ष वा बनार ॥

इति त्रिलिङ्गशेषसम्प्रदाहः ॥

परं छिगे स्वप्रधाने द्वन्द्वे  
तत्पुरुषपि तत् ॥ ४२ ॥

द्वन्द्वैकत्वका और अन्वयीभाव समा-  
सका छिग पहिछे कह चुके हैं, स्वप्रधाने  
अर्थात् उभयपद प्रधान इतरेतररूप द्वन्द्व  
समासमें और तत्पुरुष समासमें मी  
जो ( पर ) परपदस्य छिग है  
वही छिग होता है तब द्वन्द्वसमासमें  
जैसे कुम्भकुटमयूर्यामिने, मयूरकुम्भकुटा-  
मिमौ, तत्पुरुषसमासमें जैसे, चाय्येनाथौ  
चाय्यार्थ, सर्पाद्वीति सर्वर्माति सर्व-  
मय, वाय्यथ, कुडविप्र कुर्त्तनिधि,  
पूय्यकुल, विप्रकुल, मास्यका कुल,  
इत्यादि ॥ ४२ ॥

अर्थात् प्राचलप्राप्तापन्नपूर्वा  
परोपगाः ॥ तद्वितार्थी द्विगु  
संख्यासर्वनामसद्वन्तकाः ॥ ४३ ॥

उक्त तत्पुरुषरु छिगका अपवाद कहा  
है, अर्थ इस पदसे, अयाता अयात्  
अर्थशब्द है अन्तमें त्रिमफे से परो-  
पगा, परगामी चाय्यछिग है, अर्थ जिते  
द्विजायायं द्विजार्थ स्य, द्विजाया यवायू  
द्विजाय पय, 'मास्यार्थ—र्था य, 'अर्थेन  
निम्नमासोविशय्यछिगाद्येतिदत्तप्यम्

यह वार्तिक भी है 'प्राचलप्राप्तापन्नपूर्वा-  
परोपगा.)' पर विशेष्यको जाते हैं यह  
अर्थ है, प्रादि पूर्व जैसे, अतिक्रातो माला-  
मतिमालो हारः, अतिक्राता मालामतिमा-  
लेयम्, अतिमालमिद, अवक्रुष्टः कोकिल-  
या अवकोकिलः अलपूर्वपद जैसे, अल  
कुमार्यै इत्यलकुमारिरय, अलकुमारिरियम्  
अलकुमारि इद, अलब्धजीविक. —का-क्र,  
प्राप्तजीविको द्विजः प्राप्तजीविका स्त्री प्रा-  
प्तजीविकामिद, इसी प्रकार आपन्नजीवि-  
कः, 'तद्विताथो द्विगुः' अर्थात् तद्वित अ-  
र्थमें द्विगुसङ्गक समास वाच्यलिंग है, पचक-  
पालः—ल-ला, पुरोडाशः सख्याशब्द  
सर्वनामसङ्गक और तदन्तमी परलिंग  
माजी है, सख्या जैसे, एकः पुमान्, एक  
कुल, द्वौ पुमासौ, द्वे स्त्रियौ, कुले च "त्रयः  
पुरुषाः तिस्रः स्त्रियः त्रीणि कुलानि, एवं  
चत्वारः चतस्रः चत्वारि" षट्सङ्गकोंको  
कहते हैं, विंशति आदिकोंका लिंगद्वितीय  
काण्डमें कह चुके हैं, और शत आदिकोंका  
तौ नपुंसकके सप्रहमें कह चुके हैं, सर्वनाम  
जैसे सर्वो देशः सर्वा नदी सर्व जल इसी  
प्रकार परः पुमान् 'सख्यान्तक जैसे ऊन-  
त्रयः । ऊनतिस्र ऊनत्रीणि' सर्वनामान्त  
जैसे परमसर्व परमसर्वा परमसर्वम् ४३॥

बहुव्रीहिर्दिङ्नाम्नामुन्नेयंतदु-  
दाहृतम् ॥ गुणद्रव्यक्रियायोगो-  
पाधयः परगामिनः ॥ ४४ ॥

अदिङ्नाम्नाम् अर्थात् दिशावाचक  
शब्दसे भिन्न नामवालोंका बहुव्रीहि

समासमें अन्यलिंग होता है इसके उदा-  
हरण आपसे आप विचारना चाहिये  
जैसे, 'बृद्धा भार्या यस्य स बृद्धभार्य.' बहु-  
धन. बहुधना बहुधन अदिङ्नाम्ना ऐसा  
क्यों कहा, दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशो-  
रन्तराल दक्षिणपूर्वा गुणयोगसे द्रव्ययो-  
गसे और क्रियायोगसे जो उपाधी अर्थात्  
विशेषण हैं उसके धर्ममें जो प्रवृत्तशब्द है  
वे धर्मोंके लिंगयोग होधैं गुणयोगसे जैसे,  
शुक्लः पटः—शुक्ला—शुक्ल, गन्धवती पृथ्वी  
गन्धवान् अश्मा गन्धवत् कुसुम, द्रव्यके  
योगसे जैसे दण्डी दण्डिनी स्त्री,  
दण्डि कुल, क्रियायोगसे जैसे याचकः  
याचिका याचकम् आदि ॥ ४४ ॥

कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याः कर्त-  
रि कर्मणि ॥ अणाद्यन्तास्तेन र-  
त्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः ॥ ४५ ॥

असंज्ञामें जहा कर्ता अर्थमें कृत्सङ्गक  
प्रत्यय हैं वे वाच्यलिंग हैं जैसे करोतीति  
कर्ता पुमान्, कर्त्री स्त्री, कर्तृ कलत्रं  
कुर्वन्-ती—त्, असंज्ञायां क्यों कहा प्रजा-  
हरिः, कर्तरि क्यों कहा कृतिः, कर्म  
अर्थमें और कर्ता अर्थमें वर्तमान कृत्य  
प्रत्यय परगामी होते हैं कर्ममें जैसे मव्यः  
(तरुः)—व्या—व्य, गन्तव्यः (ग्रामः)—  
व्या—व्य, कर्त्तव्या भक्तिः, कर्त्तामें जैसे  
वसतीति वास्तव्योऽय वास्तव्या सा  
वास्तव्यं तत्, कर्त्तरि कर्मणि क्यों कहा  
भाव अर्थमें तो एधितव्य त्वया तेन रत्तु

इस इत्यादि अर्थमें अण् आदि तक्षितप्रत्ययान्त और माना अर्थके कहनेवाले वा अनेकार्थके विशेषभूत विशिष्ट होनेसे वाच्यछिग हैं जैसे कुसुम्भेन रक्ता छाटी कौसुमी कौसुम्भ पट कौसुम्भ नास, हेम-हेमी-म, एन्द्र-न्द्री-न्द्र 'तेन रक्तं रागात्' इससे अण् होता है और रक्ता अर्थ इसके आदि शब्दसंस्थुराया आगतो माधुरोऽयं वा माधुरीयं आदि अणाच्यन्ता इस इत्यादि पदसे ग्रामे मवा ग्राम्य पुनान्, ग्रामे मवा ग्राम्या स्त्री आदि, यद्वा यत् प्रत्यय होता है॥४९॥

पदसंज्ञकास्त्रिषु समा युष्मद् स्माच्चिह्नव्ययम् ॥ परविरोध शेष तु शेषं शिष्टप्रयोगतः ॥ ४६ ॥

पदसंज्ञका अयात् पान्त और नास्त संख्या, तथा कतिशब्द भी त्रिषु समा वा स्त्रीनों छिगमें तुल्य होते हैं और निरयही बहुत्व अर्थमें वर्तमान हैं इस कारणसे बहुवचनान्त हैं जैसे पङ्क्ति, पङ्क्ति, पङ्क्तिमि, पङ्क्तिमरेतामि, कति पुमांस, कति स्त्रिय, कति कुटानि, युष्मद् और अस्मद् शब्द तथा सिङ्गस्तपद-और अव्ययवाचक शब्द-ये सब त्रिभिन्न और समा न हैं, युष्मद् शब्द जिस त्वं स्त्री त्वं पुमान् त्वं पठत्रं आसद् शब्द जैसे आयां पुमांसी-आयां स्त्रियौ, आयां क-त्र, सिङ्ग जैसे, स्पाठी मरति, घटी मरति पात्र

मरति इसी प्रकार द्वारा मरन्तीत्यादि, अव्यय जैसे, उच्चैः द्वारा उच्चैः स्त्री उच्चैः कलत्रं उच्चैः प्रासाद इत्यादिपरमि रोपे विप्रतिपक्षेवाविधियोंके परस्पर विरोधमें परछिगानुशासन होता है जैसे मानुष-शब्द क-य-ण-म-म-र इस प्रागुक्तविधि से पुंस्त्व ही प्राप्त था, द्वि चट्ट, पट्टपद इस उत्तरोक्त स्त्रीपुंसविधिकानुसंधय किया है, जैसे मानुषोऽयं, मानुषीय, शेष जो नहीं कहा गया नाम आदि वह शिष्ट महाक-विप्रयोग और माध्यकार आदिके प्रयोग से जानना चाहिये, यद्वा अनुसन्धयौक छिग शिष्टप्रयोगसे जानने योग्य हैं, छिगा विचारक शास्त्र न करना चाहिये क्योंकि छिगाज्ञान ओक वा संसारसे जान पड़ता है यह माध्यकारका मत है ॥ ४६ ॥

इति छिगादिसप्तहर्षा ॥ ९ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासन ॥ सामान्यकाण्डस्तृतीयं साङ्ग पत्र समर्थित ॥ ४७ ॥

इसप्रकार अमरसिंहकृत नामलिङ्गानुशासनमें सामान्य तृतीयकाण्डसाङ्गनिरूपण करा ॥ ४७ ॥

इति श्रीमुरदायादवास्तव्यवेदितराग स्यन्तप्रभाषाटीकासहित नामछिगानुशासने सामान्यकाण्डस्तृतीय समाप्त

इत्यमरकोशं संपूर्णः ॥

पुस्तक मित्रनेत्रा छिगाना-धमराज श्रीकृष्णदास,

भीरेइधर" रवीन्द्र-पन्थासन-वर्ष

# \* जाहिरात \*

## कोष-ग्रन्थाः ।



| नाम  | को०  | रू०  | आ०   |
|--|------|------|------|
| अमरकोश-मूल-छोटे अक्षरका गुटका.   | .... | .... | ०-४  |
| अमरकोश-सटीक. ....  | .... | .... | १-०  |
| अमरकोश-भाषाटीकासमेत । शब्दानुक्रमणिकासमेत ग्लेज  |      |      | १-८  |
| ” तथा रफ कागज ....   | .... | .... | १-६  |
| अनेकार्थध्वनिमंजरी-भाषामे सुगम है.   | .... | .... | ०-२  |
| <b>भाषीनाममाला-</b> ( छद्मद्व भाषाकोष ) इसको जोधपुर-निवासी रामसनेही साधु भावनदासजी महाराजने विशेष कर अमरकोष तथा हैम-विश्व-व्याडि-धरणि-मेदिनी आदि अनेक कोषोंका सार लेके अपूर्व ग्रन्थ बनाया है । इसमें संस्कृत तथा भाषामें प्रचलित प्रायः सभी शब्द आये हैं  |      |      |      |
|  |      |      | १-०  |
| <b>शब्दार्थचिन्तामणि-</b> यह कोषग्रन्थ बहुतही उत्तम और बृहत् है. इसमें अकारादि क्रमसे शब्द लिखे हैं व पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग लिखनेके उत्तर शब्दोंकी व्युत्पत्ति व सिद्धिके लिये पाणिनि व्याकरणके सूत्र तथा शब्दोंके अर्थ व उनके लिये अनेक कोषोंके प्रमाण तथा विशिष्ट शब्दोंमें अनेक ग्रन्थोंसे उदाहरण भी दियेगये हैं, यह ग्रंथ ४ जिल्द व ३१९३ पृष्ठोंमें है । हरएक विषयके विद्वानोंको अवश्य अपने पास रखने योग्य है |      |      |      |
|  | .... | .... | १२-० |



## काव्य-ग्रन्था ।



नाम

की० पृ० भा०

|  |      |
|--|------|
| अमरुसप्तक-शृङ्गार और वदन्तपर काव्य दो टीकासहित   | ०-१० |
| अश्वघाटीकाव्य-मायाटीकासमेत   | ०-१  |
| प्रतुसहारकाव्य-काळिदासकृत और चौरकविहृत्-चौरप-<br>आक्षिकाकाव्य । इसमें पद्मनुवर्णनादि रावकुमार नाम<br>देवर्तदनसिंहकृत छन्दोबद्ध मायाटीका है   | ०-४  |
| कामाक्षिस्तुतिशतक-मूककविविरचित   | ०-४  |
| कलिविहङ्गमन-मायाटीकासमेत । तथा कलिप्रभाव माया<br>टीकासमेत । इसमें-कलियुगप्रभाववर्णन है   | ०-१  |
| किरातार्जुनीयकाव्य-सटीक । गेब कागजका दाम   | १-१९ |
| ” तथा रफ कागजका  | १-८  |
| कुमारसम्भव-महाकवि काळिदासकृत और मञ्जिनायकृत संजी<br>वनीटीकासमेत । इसमें-पार्वतीजीकी उत्पत्ति, ब्रह्माजीकी<br>वारकासुरसे क्लेशित देशोंको शिक्षा, मदनदहन, रतिविजय,<br>पार्वतीके तपका उद्दय, पार्वतीका शिवजीसे विवाह करमेके<br>निमित्त हिमवान्के पास सप्तशयियोंको भेजकर विवाहका<br>निश्चय और शिव-पार्वतीजीका विवाह विधिपूर्वक वर्णित है | १-४  |
| कृष्णलीलामृतकाव्य  | ०-९  |
| कृष्णकर्णामृतकाव्य-( बडाही मजिहमदे )   | ०-४  |
| कार्त्तिककण्ठाभरण-कार्त्तिकगोपाळदास विरचित । मरोचमीय<br>टीका तथा अमरेश्वरीय टिप्पणीसहित । इसमें मुनैगप्रयास<br>रत्नदशक, तोटकरान दशक आदि दश दशक हैं । और  |      |

श्रीकृष्ण भगवान्की स्तुतिके साथ २ ऐसी उत्तम कविता है  
कि पंडितोंका मन मुग्ध होजाताहै । .... ०-५

गीतगोविंद-राधाविनोदसमेत-भाषाटीकासहित । इसमें  
जयदेवगोस्वामिकृत अतिरालत सस्कृतमें रागमय राधाकृ-  
ष्णकी प्रमयभक्तिके गानेकां चीजें विद्यमान हैं । गानविद्या  
जाननेवालोंको अवश्य सग्रह करना चाहिये । यह भगवान्को  
अत्यन्त प्रिय है. .... १-०

गीतगोविन्द-मूलमात्र. .... ०-२

गुरुपीयूषलहरी-गुरुनानकसाहबका वर्णन .... ०-६

घटकपरकाव्य-भाषाटीकासमेत. .... ०-२

दशकुमारचरित्र-(सस्कृत) .... १-८

दशकुमारचरित्र-भाषाटीकासमेत छपरहाहै.

दृष्टान्तशतक-दोहा-भा० टी० इसके श्लोक दोहोंमें यह  
विचित्रता है कि पूर्वार्द्धमें दृष्टान्त और उत्तरार्द्धमें दार्ष्टान्त  
क्रमसे कहेगयेहैं. .... ०-२॥

नलोदयकाव्य-सटीक-इसमें-महाराजा नल और दमयन्तीका  
रोचक चरित्र वर्णित है. .... ०-१२

पद्यमुक्तावली-इसके श्लोकोंके आदिमें क्रमसे स्वर व्यञ्जनोंके  
अक्षर आते हैं । यद्यपि छोटा है किन्तु देखने योग्य है. .... ०-१॥

पञ्चतन्त्र-मूलमात्र । विष्णुशर्माकृत नीतिशास्त्र .... १-८

पञ्चतन्त्र-विष्णुशर्माकृत और प०ज्वालाप्रसादजीमिश्रकृत सुबोध  
भाषाटीकासमेत । यह मित्रमेद, मित्रसंप्राप्ति, काकोल्लकीय,  
लब्धप्रणाश, अपरीक्षितकारक इन पांच तन्त्रोंमें नीतियुक्त  
सर्वोत्कृष्ट है. .... २-०

मर्तृहरिशवक—नीति शृंगार तथा केस्य भाषाटीकासमेत ।

इसके नीतिशतकमें निन्दाप्रशंसा धिक्छाप्रशंसा मानशौर्य-  
प्रशंसा, दुर्जननिन्दा, सुजनप्रशंसा धैर्यप्रशंसा, दैवप्रशंसा,  
कर्मप्रशंसा और शृंगारशतकमें—पशुवधवर्णन, दुर्भिरज-  
वर्णन, स्त्रीपरित्यागप्रशंसा, यौवनप्रशंसा कामिनीग्रहण,  
सुविरक्त और वैराग्यशतकमें—तृष्णाधिकार, मदनविह्वलन,  
विषयोक्ता रूपतिरस्कार, दुर्जनपुरुषोक्ती निन्दा हास्यका वर्णन,  
मोगपद्धति, कामनिर्बेदताका स्वरूप इत्यादिका वर्णन देख-  
नेही योग्य है

१-०

मक्तिरत्नावली—श्रीमद्भागवतोद्धृत स्तुतिसंग्रह ..

०-४

भामिनीविलास—प० महावीरप्रसाद द्विवेदीकृत भाषाटीका  
सहित । इसमें—प्रस्ताविकविलास, शृंगारविलास, कल्या-  
णविलास, तथा शान्तविलासादि अत्यंत रोचकलिप्य हैं पण्डितोंके  
देखने योग्य है

१-०

भोजप्रबन्ध—मूळ । कविप्रशस्तकृत । जाका चरित्र  
रचनीतिसंबंधी मछी मति वर्णित है

०-७

भोजप्रबन्ध—प० स्वामसुन्दरलाल त्रिपाठीकृत भाषाटीकासमेत

१-०

भोज और कालिदास—भाषाटीकासमेत । राजा भोज और  
कालिदासके आनुषंगिकी उत्तमोत्तम कथाका संग्रह है

०-१४

भगार्भगनिषेध—भाषाटीकासमेत । इसमें भागकी निन्दाका  
खण्डन मछी मति किया है

०-२

मारुतिस्वयं—सटीक । जोधपुरनिवासी मित्यानन्दशास्त्रीजीने  
हनुमान्जीकी लोकोत्तरमहिमाको कथितपद्योंमें वर्णन किया  
है । कवितामें यह विचित्रता है कि, पद्योंके आदिके अक्ष

|   |      |
|---|------|
| रोमें रामरक्षा स्तोत्र सम्पूर्ण आगया है जो कि विद्वानोंके देखनेर्हा योग्य है । साथही जोधपुर वैदिक पाठशालाके प्रधानाध्यापक पंडित भगवतीलालजीने इसकी ऐसी सरल टीका की है कि, कविता स्पष्ट समझमें आजाती है. ....       | ०-५  |
| मूर्खशतक-भाषाटीकासमेत. ....   | ०-१  |
| मेघदूतकाव्य-सटीक. ....  | ०-६  |
| मेघदूतकाव्य-कालिदासकृत-सान्वय मल्लिनाथी टीका और भाषाटीकासमेत । इसमें-मेघका वर्णन अवलोकन करने योग्य है. ....   | ०-८  |
| रघुवंशमहाकाव्य-कालिदासकृत-मल्लिनाथकृत सजीवनी टीका और टिप्पणीसमेत । इसमें राजादिलीपसे लेकर लव कुश तथा अग्निवर्णके चरित्रतक १९ सर्ग हैं । इसकी महिमा कौन नहीं जानता ? विद्यार्थियोंको परमोपयोगी है पक्की जिल्द .... | १-८  |
| "तथा सादी जिल्द . . .   | १-४  |
| रघुवंशमहाकाव्य-सटीक तथा रामकृष्णारव्यविलोम-काव्य-सटीक-ये दोनोंका एक गुटका है. महीन अक्षर. ....  | ०-१० |
| रघुवंशमहाकाव्य-विद्यावारिधि ५० ज्वालाप्रसादजीभिश्चकृत सान्वय भाषाटीका पदयोजना तात्पर्यार्थ और सरलार्थसहित ग्लेजकागज ....  | ३-८  |
| " तथा रफ कागज.....  | ३-०  |
| १ रघुवंशमहाकाव्य-(केवल पाच सर्ग) उपरोक्त अलङ्कारोंसे युक्त भाषाटीकासमेत. ....   | १-४  |
| रघुवंशमहाकाव्य-सटीक सर्ग १ से ५ तक. ....  | ०-४  |
| रघुवंशमहाकाव्य-सटीक सर्ग ६ से १० तक ....  | ०-४  |

मर्तुहरिशतक—नीति शृंगार तथा वैराग्य भाषाटीकासमेत ।

इसके नीतिशतकमें निन्दाप्रशंसा विद्वत्प्रशंसा मानशौर्य-  
प्रशंसा, दुर्जननिन्दा, सुजनप्रशंसा भैरवप्रशंसा, दैवप्रशंसा,  
कर्मप्रशंसा और शृंगारशतकमें—पद्मवर्णन, दुर्भिक्ष-  
वर्णन, स्त्रीपरित्यागप्रशंसा, यौवनप्रशंसा कामिनीप्रह्म,  
सुस्त्रिक्त और वैराग्यशतकमें—तृष्णाधिकार, मदनविह्वलन,  
विषयोक्ता रूपतिरस्कार, दुर्जनपुरुषोंकी निन्दा हास्यका वर्णन,  
मोगपद्धति, कामनिर्देताका स्वरूप इत्यादिका वर्णन देख-  
नेही योग्य है

१-०

भक्तिरत्नावली—श्रीमद्भागवतोद्भूत स्रुतिरसग्रह

०-४

भामिनीविलास—५० महावीरप्रसाद द्विवेदीद्वारा भाषाटीका  
सहित । इसमें—प्रस्ताविकविलास, शृंगारविलास, कृष्णा  
विलास, तथा शान्तविलासादि अत्यंत रोचकविषय हैं पण्डितों  
को देखने योग्य है

१-०

भोजप्रबन्ध—मूल । कविद्वारा रचित । जाका अरिप्र  
राजनीतिसंबंधी मछी मूर्ति वर्णित है

०-७

भाजप्रबन्ध—५० स्वामिसुन्दरदास त्रिपाठीद्वारा भाषाटीकासमेत

१-०

भोज और कालिदास—भाषाटीकासमेत । राजा भोज और  
कालिदासके आश्चर्यकी उत्तमोत्तम कथाका संग्रह है

०-११

भगवद्भगवनिषेध—भाषाटीकासमेत । इसमें मांगकी निन्दाका  
खण्डन मछी मूर्ति किया है

-२

मारुतिस्तव—सटीक । जोधपुरनिवासी मित्ररामदासाजीजीने  
हुनुमानजीकी जोधपुरमहिमाको उचितपद्योंमें वर्णन किया  
है । कवित्तम यह मिश्रितता है कि, पद्योंके आदिके अक्ष-

शृंगारादिनवरसनिरूपण—भापाटीकासमेत । इसमें—शृंगारका  
अतीव चमत्कारी वर्णन है तथा शृंगार, वीर, कृष्ण,  
अद्भुत, हास्य, मयानक, वीभत्स, रौद्रका सूक्ष्म वर्णन और  
शातरसका विस्तारमें वर्णन हैं .... ०-४

सौन्दर्यलहरी—सटीक । इसमें—देवीकी भक्तिमय स्तुति है.... ०-३

हितोपदेश—मूलमात्र । विष्णुशर्मप्रणीत .... ०-७

हितोपदेश—विष्णुशर्मप्रणीत और स्वर्गीय प० बलदेवप्रसाद  
मिश्रकृत भापाटीकासमेत । इसमें—नीतिसम्बन्धी कथा  
अतिबोधदायक लाभकी रीति इत्यादि वर्णन मलीप्रकार  
किया गया है । ऐसा हितोपदेश आजतक कहीं नहीं छपा १-४

### चम्पू-ग्रन्थाः



|                               |      |      |
|-------------------------------|------|------|
| आनन्दवृन्दावन चम्पू—सटीक ...  | ..   | २-८  |
| नृसिंह चम्पू ...              | ...  | ०-३  |
| भागवतचम्पू—सटिप्पण, ...       | ..   | १-८  |
| भार्गवचम्पू—सटिप्पण, ....     | .... | ०-८  |
| रघुनाथविजयचम्पू—सटिप्पण, .... | ..   | ०-८  |
| रामायणचम्पू ....              | ...  | ०-१२ |
| श्रीनिवासचम्पू—सटिप्पण, ....  | .... | १-४  |

### संस्कृतनाटक-ग्रन्थाः ।



अभिज्ञानशाकुन्तल—नाटक । महाकविकाळिदासकृत—दुष्यंत  
राजा और कण्वकन्या शकुन्तलाका चरित्र..... १-४

| नाम   | की० पृ० आ० |
|---|------------|
| राससकाव्य—संस्कृतटीका और मापाटीकासहित   | ०-२        |
| रामकृष्णविलोमकाव्य—संस्कृतटीकासमेत  | ०-४        |
| राधाविनोदकाव्य—मापाटीकासमेत   | ०-२        |
| रमाशुकसवाद—संस्कृत मूल व प्रत्येक छोककी कविचर्मे टीका व मापाटीकासमेत । अति मनोरञ्जक काव्य है  | ०-२        |
| ललितरामचरित्र—काव्यसंगीत  | १-०        |
| वसन्तश्रुतक—सटीक—संस्कृत । इसमें—वसन्तकालका वर्णन बड़ाही रोचक है  | ०-३        |
| विद्वन्मोदतरंगिणा काव्य—चिरंजीव मट्टाचार्यरचित गद्यपद्य विपूषित । इसमें—सबशास्त्र और सर्व संप्रदायोंका सिद्धान्त दिखायाहै विद्वानोंको अतीवोपयोगीहै  | ०-४        |
| विद्यासुन्दर और चौरपद्याशिका—मापाटीकासहित   | ०-४        |
| शिशुपालवध—( माघकाव्य ) मछिनाथकृत टीकासहित । इसमें—नारदजीको भगवद्दर्शन, शिशुपालवधार्थ उद्धव बलराम तथा श्रीकृष्णको निर्मलग्न, द्वारका समुद्रवर्णन और रेवतपर्वतवर्णनादि २० सर्गमें अपूर्व काव्यहै । विपार्थी लोग पढ़के इसके द्वारा प्रसंगोपात्त उदाहरण दे सकेहैं | २-८        |
| शिशुपालवध—( माघकाव्य ) पूर्णव ९ सर्गमें । विपार्थी लोगोंके लिये योग्यहै   | १-४        |
| श्रीरामगीतगोविन्द—सटीक । पं० जयदेवस्वामीकृत गीत गोविन्दके अनुसार इसमें भी सीतारामजी मफिकी गानेकी अलिखित संस्कृतमें रागमय चीजें वर्णित हैं   | ०-८        |
| शृंगारतिलक—मापाटीकासहित । इसमें—शृंगाररसका अपूर्व वर्णन है  | ०-४        |

